प्रकाशकीय वक्तव्य

कुछ ही वर्ष पहले हमने प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक ठाकुर दलजीतसिंहजी द्वारा लिखित "यूनानी सिद्धयोगसगह" नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया था, जिसका आशातीत समादर वैद्य-समाज तथा सर्वसाधारण पाठको के बीच हुआ। किन्तु, इस प्रकाशन के बाद भी हम यह बराबर अनुभव करते रहे कि यदि यूनानी चिकित्सा पर राष्ट्रभाषा मे कोई योजनाबद्ध, सुन्दर, सरल एव अधिकृत ग्रथ भी प्रकाशित किया जाय तो हमारे वैद्यसमाज का अपने देश मे ही प्रचलित, परिवर्द्धित एक अन्य चिकित्सा-पद्धति की जानकारी से बडा हित-साधन हो। अतएव आज इस ग्रथ को हिन्दी भाषाभाषी पाठको तथा वैद्य-समाज के सम्मुख लेकर उपस्थित होते हुए हम मे अपार हर्ष का सचार हो रहा है।

ठाकुर दलजीतसिंहजी अरबी-फारसी के बडे अच्छे पडित और इन भाषाओ मे लिखित यूनानी चिकित्सा-शास्त्र के सुविज्ञ यशस्वी वैद्य है। इसके अतिरिक्त आप सस्कृत के भी पण्डित है और अयुर्वेद-शास्त्र के ज्ञाता निपुण वैद्य भी। अत इस विषय पर विचार करने और लिखने का आपको पूरा आ[illegible] है [illegible] विषय पर अनभिज्ञ, पल्लवग्राही लेखको द्वारा लिखित पुस्तको से सर्वसाधारण एव अन्य चिकित्सक महानुभावो के बीच भ्रम का सचार हो सकता है, ऐसे ग्रथो के प्रकाशन मे वहुत सतर्कता की आवश्यकता है। हमे विश्वास है कि ठाकुर दलजीत सिंहजी द्वारा प्रणीत ग्रथो मे वैसी किसी [illegible]त बातो का समावेश नही होगा।

आज हिन्दी हमारी राष्ट्रभाष[illegible] आसन पर आसीन है। अत यह हमारी वर्तमान पीढी की शिक्षा-दीक्षा का माध्यम भी होने जा रही है। इसलिये आवश्यक है कि हिन्दी मे ऐसे सभी प्रमुख विषयो पर ग्रथ प्रकाशित हो जो किसी समय जनसाधारण के बीच समादृत थे और जिनसे लोकोपकार के कार्य होते रहे हो। कहना नही होगा कि यूनानी चिकित्सा-पद्धति का प्रचार इस देश मे कभी आधुनिक एलोपैथी की तरह ही व्यापक एव लाभदायक था। आज भी इस देश के एक बडे जनसमुदाय की चिकित्सा का यह प्रमुख अग बना हुआ है और इसमे इतने अच्छे हकीम मौजूद है जो इस पद्धति से निदान करके भी रोगो को दूर करने मे चमत्कार दिखलाते है।

इसी विचार से प्रेरित होकर हमने इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। आशा है, इससे हमारे वैद्यबन्धु और साधारण जन उचित लाभ उठा कर हमारे श्रम की सार्थकता सिद्ध करेगे।

कलकत्ता
१५-१२-५३

व्यवस्थापक
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि०

लेखक की प्रस्तावना

यूनानी वैद्यक सबधी प्रामाणिक, तुलनात्मक एव यूनानी विद्यालयो के पाठ्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ग्रन्थनिर्माण का जो सकल्प आज से कुछ वर्ष पूर्व मैने किया था, उसी के अभिपूर्ति स्वरूप यूनानी ग्रन्थमाला के एक पुष्प के रूप मे प्रस्तुत ग्रन्थ का अवतरण हुआ है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प **यूनानी द्रव्यगुणविज्ञान** से प्रारभ होकर प्रस्तुत ग्रन्थ तक पहुँचा है। इसके बीच के पुष्प जो अद्यावधि प्रसिद्ध हो चुके है, निम्न है—**यूनानी सिद्धयोग-संग्रह, यूनानी वैद्यक के आधारभूत सिद्धान्त (कुल्लियात)** पूर्वार्ध और **यूनानी चिकित्सा विज्ञान पूर्वार्ध**। यूनानी चिकित्सा विज्ञान पूर्वार्ध (प्रथम भाग) के अब तक प्रकाशित इस अतिम पुष्प मे निदान-चिकित्सा के आधार भूत सिद्धान्तो का समावेश हुआ है। अस्तु, यूनानी चिकित्सासार से पूर्व इसका अवलोकन वा अध्ययन अनिवार्य है। इसके तीन भाग ...ार होगे। इसका दूसरा भाग ज्वरविपयक होगा।

ज्वरविपय का यूनानी मे सर्वाधिक प्रामाणिक एव प्रसिद्ध ग्रन्थ विद्वद्वर **शैखुर्रईस बूअलीसीना** लिखित **हुम्मयात कानून** हे, जो उनके सुप्रसिद्ध **अल्कानून** ग्रन्थ का ज्वर पर लिखा गया, एक सुविस्तृत भाग (ज्वराध्याय) है और अधुना यह प्राय भारतीय सभी यूनानी विद्यालयो के पाठ्यक्रम मे मौलिक अरबी भाषा के रूप मे अथवा उर्दू अनुवादरूप मे समाविष्ट है। इसी का मैंने सरल हिंदी भाषान्तर किया है। इसे यूनानी-चिकित्सा-विज्ञान उत्तरार्ध प्रथम खण्ड के रूप मे प्रकाशित करने का मेरा विचार है। इस उत्तरार्द्ध भाग के अगले दो खण्ड शेष अन्य सर्व रोग निदान-चिकित्सादि विपय सवलित होगे, जिनमे यूनानी मत से, स्थान-स्थान पर आयुर्वेदीय एव एलोपैथी मत से भी तुलना करते हुये आशिर पाद समस्त रोगो का निदान-चिकित्सा आदि सविस्तर वा विशद रूपेण वर्णित होगी। पुनश्च इस बात का पूरा ध्यान रखा जायगा कि यह यूनानी विद्यालयो के पाठ्यक्रम को पूरा कर सके तथा यूनानी वैद्यक विपयक कोई आवश्यक बाते छूटने भी न पाएँ।

इस ग्रन्थ के उत्तरार्ध प्रथम खड अर्थात् **'हुम्मयात कानून'** के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशनार्थ जब मैने **श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि०** के अध्यक्ष **श्रीमान् पं० रामनारायणजी वैद्य शास्त्री महोदय** को पत्र लिखा, तब आपने उसे स्वय देखने की इच्छा प्रकट की। सुतरा इसकी पाडुलिपि आपके अवलोकनार्थ सेवा मे प्रेपित की गई। स्वय अवलोकनोपरात आपने उसे **श्रीमान् यादवजी त्रिकमजी**

आचार्य महोदय के पास भेज दिया। इसे अवलोकनोपरांत श्री महाराज का यह विचार हुआ कि यह एक विषय (ज्वर) पर लिखा हुआ ग्रन्थ अति विस्तृत है। अस्तु, इसे कभी फिर प्रकाशित किया जाय। आपके मत मे इस समय एक ऐसे यूनानी-चिकित्सा ग्रन्थ की आवश्यकता है जिसमे अति सक्षेप मे यूनानी मत से आशिर पाद समस्त रोगो का निदान-चिकित्सा आदि सरल हिंदी मे वर्णित हो। अत श्रीमान् प० रामनारायणजी ने मुझे श्री महाराज के सुझाव एव निर्देशानुसार एक ऐसे स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखने का शुभादेश दिया। उस आदेश को सहर्ष शिरोधार्य कर उसी के अनुसार मैंने इस **यूनानी चिकित्सासार** ग्रन्थ का प्रणयन किया, जिसमे यूनानी मत मे आशिर पाद समस्त रोगो का अति सक्षेप एव सरल हिन्दी मे निदान-चिकित्सा आदि वर्णित है।

यह ग्रन्थ आगे लिखे जाने वाले और प्रकाशित होने वाले विस्तृत यूनानी चिकित्साविज्ञान ग्रन्थ के उत्तरार्ध भाग १, २ और ३ का सुसार सग्रह है, यदि ऐसा कहे तो कोई अत्युक्ति नही। अस्तु, उन ग्रथो के प्रकाशित होने पर भी इस ग्रथ की उपादेयता एव महत्त्व किसी प्रकार कम नही होगा, अपितु वढेगा ही। कारण यह उनसे सर्वथा भिन्न एव स्वतत्र रचना है।

ग्रन्थ के अन्त मे **'ज्वराधिकार'** और **'यूनानी चिकित्सा-सार के योगपाठादि'** ऐसे दो परिशिष्ट इसलिये लगाये गये है, जिसमे ग्रथ सभी दृष्टियो मे सर्वागपूर्ण हो। इसी दृष्टि से ग्रथ के अन्त मे इस ग्रन्थ मे आये विषयो की विस्तृत हिन्दी एव अग्रेजी वर्णानुक्रमणिका दी गई है।

ग्रन्थ कैसा है, इस सबध मे मैं स्वय कुछ न कहकर पाठको के ऊपर छोडता हूं। फिर भी इतना कहना आवश्यक समझता हूँ कि इस प्रकार का ग्रन्थ अभी तक हिन्दी मे प्रकाशित नही हुआ है अर्थात् इस विषय मे अब तक प्रकाशित ग्रन्थो मे यह अपने ढग का प्रथम ग्रथ है।

इस पुस्तक की प्रसिद्धि का सर्वाधिक श्रेय परम आदरणीय आचार्य प्रवर आयुर्वेद मार्तण्ड, आयुर्वेद वाचस्पति श्रीमान् यादवजी त्रिकमजी आचार्य महोदय को है जिनकी सत्प्रेरणा एव सत्परामर्श से मैं इस ग्रन्थ को इतना शीघ्र एव इतने सुन्दर रूप मे आपके समक्ष रखने मे समर्थ हुआ। श्री महाराज की मुझ पर बडी कृपा रहती है। यह आप ही के कृपा-कटाक्ष का फल है कि मुझ अकिंचन के द्वारा यूनानी ग्रन्थमाला के रूप मे यूनानी वैद्यकीय साहित्य विषयक वैद्य समाज की अभूतपूर्व सेवा हो रही है। यदि श्री महाराज की मेरे ऊपर ऐसी ही कृपा भविष्य मे भी बनी रही तो आशा है कि थोडे समय मे ही मैं यूनानी वैद्यकविषयक प्रत्येक साहित्य का अवतरण राष्ट्रभाषा हिन्दी मे करने मे सफल मनोरथ होऊँगा।

इसके वाद इस ग्रन्थ के प्रकाशन का अधिकाधिक श्रेय **श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के सचालक श्रीमान् प० रामनारायणजी वैद्य शास्त्री को है,** जिन्होने मेरे द्वारा प्रणीत साहित्य को समय-समय पर नि सकोचभाव से एव इतने सुन्दर रूप मे प्रकाशन का मानो व्रत ही ले रखा है। यदि आपकी ऐसी ही प्रवृत्ति आगे भी वनी रही तो आशा है कि यूनानी वैद्यक विपयक अनेकानेक और नवीन एव उत्तम साहित्य वैद्य समाज के समक्ष अवतीर्ण होते रहेगे।

इस ग्रन्थ की प्रेस लिपि, विपय-सूची एव विषयो की वर्णानुक्रमणिका आदि तैयार करने मे मेरे कनिष्ठ भ्राता कविराज रामसुशील सिह शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य ए० एम० एस०, रिसर्च स्कॉलर (हि० वि० वि०), भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री वलदेव आयुर्वेद विद्यालय, वडागाँव, लेखक **'पाश्चात्य द्रव्यगुणविज्ञान'** (एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका, हिन्दी), वात्स्यायन कामसूत्र के हिन्दी टीकाकार तथा कतिपय अन्य ग्रन्थो के सहायक लेखक ने मेरी वडी सहायता की है। इसके लिये मै उनका भी आभार मानता हूँ। आप आयुर्वेद-जगत् के एक उदीयमान सिद्धहस्त लेखक एव अनुभवी चिकित्सक है। आपने आयुर्वेद के अतिरिक्त सस्कृत मे शास्त्री, अग्रेजी मे वी० ए०, अरवी मे मौलवी और फारसी की अतिम परीक्षा 'कामिल' और हिन्दी मे 'विशारद' आदि परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की है।

इस ग्रन्थ के लिखने मे मुझे अनेक अरवी, फारसी, उर्दू, सस्कृत, हिन्दी तथा अँगरेजी आदि ग्रन्थो से वहुमूल्य सहायता मिली है। अत उन ग्रन्थकारो के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना मै अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। सचित्र आयुर्वेद के सहायक सपादक श्रीमान् प० सभाकान्तजी झा वैद्य शास्त्री मेरे कम धन्यवाद के पात्र नही है, जिन्होने इस ग्रन्थ के इतना सुन्दर प्रकाशन का प्रवध किया और आद्योपान्त इसका प्रूफ सशोधन किया। आप ही के परिश्रम का यह फल है कि यह ग्रन्थ इतना सुन्दर प्रकाशित हुआ है।

ग्रन्थ के सकलन करने, भापानुवाद करने तथा पुस्तक के क्रियात्मक रूप देने आदि कार्यो मे मैने यावच्छक्य यत्न किया है। तथापि अनावधानता, प्रमाद आदि के कारण अनेक त्रुटियाँ रहनी सभव है। अतएव विद्वान् चिकित्सको (वैद्य, हकीम तथा डॉक्टरो) और सहृदय पाठकवृन्द से विनम्र निवेदन है कि वे केवल त्रुटियो की ओर ध्यान न देकर, गुणो की ओर ध्यान देवे, और लेखक के उत्साह को वढावे। अपरच यदि कोई आवश्यक त्रुटि इस ग्रन्थ मे दृष्टिगत हो, तो उसे मुझे अवश्य सूचित करे, जिसमे अगले सस्करण मे उसका सशोधन कर दिया जाय।

श्री चुनार आयुर्वेदीय औषधालय
तथा
आयुर्वेदानुसधान कार्यालय, चुनार।

निवेदक—
दलजीत सिह

यूनानी चिकित्सासार की

अध्यायानुक्रमणिका

परिशिष्ट--१

परिशिष्ट--२

संकेताक्षरों का विवरण

अ०	अरबी
फा०	फारसी
यू०	यूनानी
उ०	उर्दू
हिं०	हिन्दी
स०	सस्कृत
अ०	अगरेजी
रो०	रोमन
ले०	लेटिन

टिप्पणी—सहायक वा प्रमाण ग्रन्थो की सूची यूनानी चिकित्सा-विज्ञान पूर्वार्धं खण्ड मे अवलोकन करे ।

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

यूनानी चिकित्सा-सार

ऊर्ध्वजत्रु रोगाधिकार १

मस्तिष्क-शिरोरोगाध्याय १

(शिरोरोग)

(अम्राजुर्रास या अम्राजेसर)

नाम—(अ०) अम्राजे दिमाग, (सं०) शिरो रोग, (हि०) सिर के रोग, (अं०) डिज़ीज़ेज ऑफ दि ब्रेन (Diseases of the Brain)।

वक्तव्य—यहां मस्तिष्क रोग (शिरोरोग) विषयक उल्लिखित सामान्य चिकित्सा-सूत्र संक्षेप में लिख दिये जाते हैं, जिनसे प्रत्येक मस्तिष्क रोग में यथास्थान काम आवें।

शिरोरोग विषयक सामान्य चिकित्सासूत्र—शिर (मस्तिष्क) बाह्याभ्यन्तर ज्ञानेन्द्रियों तथा ज्ञान एवं कर्म का उद्गमस्थान है तथा मस्तिष्क-शक्तियों के द्वारा ही मनुष्य स्वयरचिकर, हिताहितकर तथा उत्कृष्ट एवं निकृष्ट वस्तुओं एवं कर्मों मे विवेक कर सकता है। इसीलिये उसकी गणना आजाए रईसा व शरीफा (उत्तम एवं श्रेष्ठाङ्ग) मे की जाती है। अस्तु, यदि कोई रोग मस्तिष्क मे प्रगट हो तो उसकी चिकित्सा की ओर पूरा ध्यान देना चाहिये। उदाहरणत. यदि गर्मी, सर्दी, खुश्की और तरी इन चतुर्गुणो मे से किसी गुण के प्रकोप से कोई रोग उत्पन्न हो तो केवल किसी अनुकूल जलवायु एवं आहारसेवन तथा प्रकृतिपरिवर्तन (शमन) का यत्न करना चाहिये। यदि रोग का कारण दोष हो, तो रक्तजमे कीफाल (सराम्) नाम्नी सिरावेधनोपरात प्रकृति परिवर्तन (दोषसशमन) करें। परन्तु दोषत्रय (अखलात सलासा) के प्रकुपित होने की दशा मे या किसी एक दोष के प्रकोप के समय सम्यक् दोषपाचनोपरात निःशेष शुद्धि करें। पुन दोषशमन का यत्न करें। यदि किसी दोष के प्रकोप के साथ ही रक्तप्रकोप के लक्षण भी पायें जायें, तो प्रथम कीफाल नाम्नी सिरा का वेध करायें, पुनः यथावत् शोधन करें। यदि दोष का प्रकोप सम्पूर्ण शरीर

मे हो तो सर्वप्रथम सम्पूर्ण देह को दोष से शुद्ध करें। पुनः अगविशेष का शोधन करे। जबकि रोग का चरमारोहकाल बहुत दूर हो, तब मालिश के तेल (अभ्यग) परिषेक और प्रलेप के द्वारा दोष का पाचन करे। जबकि उरोफुफ्फुस पर किसी तीव्र दोष के गिरने की आशका न हो और न फुफ्फुस मे किसी रोग के उत्पन्न होने का भय हो, तो गण्डूष के द्वारा मस्तिष्क का शोधन कराना उचित है तथा प्रमाथी आघ्राण ओषधि, प्रसेक और नस्य ओषधि का उपयोग कराएँ, जिसमे दोष नीचे उतर आएँ। शिरकी ओर चढनेवाले दोषो को नीचे की ओर आकृष्ट करने के लिये वस्तियो एव फलवर्तियो का उपयोग तथा पॉव आदि का बॉधना पर्याप्त होता है। आनुषगिक अग के शोधनार्थ उक्त अग की विशिष्ट ओषधियो का उपयोग करे। यदि मस्तिष्क के आवरणो मे कोई व्याधि प्रगट हो, तो शीतल जल पीना या उससे कुल्ली करना अतीव अहितकर है।

१——सुदाअ——शिर शूल

नाम—(अ०) सुदाअ; (फा०) दर्दे सर, (स०) शिर. शूल, (हि०) सिर का दर्द, सिरदर्द, (अ०) केफालॅल्जिया (Cephalalgia), हेडेक (Headache)।

टि०—अरबी सुदाअ शब्द का धात्वर्थ भेदन करना या फाडना है। सिर-दर्द मे सिर फटता हुआ प्रतीत होता है। इसलिये इसे सुदाअ नाम से अभि-धानित कर दिया गया और अधुना यूनानी वैद्यक मे 'सुदाअ' सज्ञा विशेषतया सिरदर्द के अर्थ मे प्रयुक्त होती है।

हेतु और भेद—प्रत्येक दर्द (वेदना) चाहे सिर मे हो या शरीर के किसी अन्य भाग मे, सूए मिजाज मुख्तलिफ या तफर्रुक इत्तिसाल (विश्लेष) के उपस्थित होने अथवा दोनो के एक ही समय मे प्रकट होने से उत्पन्न होता है। सूएमिजाज (विप्रकृति) के सोलह प्रसिद्ध भेद हैं, जिनमे से आठ मुफरद व मुरक्कब साजिज (अमिश्र और सम्मिश्र सादा अर्थात् अदोषज) और आठ मुफरद व मुरक्कब माद्दी (अमिश्र और समिश्र दोषज) है। प्राचीनो के मत से चतुर्गुणो (कैफिय्यात अरबआ) मे से प्रत्येक गुण की दो अवस्थाये होती है —साजिज (सादा वा अदोषज) और माद्दी (दोषज)। जब कोई गुण (कैफिय्यत) माद्दा वा दोषविरहित अर्थात् केवल बाह्य प्रभाव से अथवा उष्ण वा शीत औषधाहार आदि के प्रयोग से प्रगट होता है तब उसे यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे साजिज कहते हैं। जब उसके साथ विकारी अग के भीतर चतुर्दोष याने अख्लात अरबआ मे से कोई दोष विद्यमान होता हे, तब उसको माद्दी के नाम से अभिहित करते हैं। जब सिरदर्द का हेतु मस्तिष्क के भीतर

होता है तब उसको सुदाअ दिमागी या असली कहते हैं। जब सिरदर्द किसी अन्य अग के अनुबध से हो, तब सुदाअ शिरकी कहलाता है।

हेतु भेद से शिरःशूल के कुल निम्न अट्ठाईस भेद होते हैं-(१)सुदाअ हार्र साजिज, (२) सुदाअ बारिद साजिज, (३) सुदाअ दम्वी, (४) सुदाअ सफरावी, (५) सुदाअ बलगमी, (६) सुदाअ सौदावी, (७) सुदाअ रीही, (८) सुदाअ शिर्की, (९) सुदाअ सुद्दी, (१०) सुदाअ वरमी, (११) सु० जर्बानी, (१२) सु० जोफ दिमागी, (१३) सु० हिस्स दिमागी, (१४) सुदाअ युबसी, (१५) सु० जिमाई, (१६) सु० खमारी, (१७) सु० शम्मी, (१८) सु० जरबी व सकती, (१९) सु० तफर्रुक इत्तिसाली, (२०) सु० तजअ्जुई, (२१) सु० नौमी, (२२) सु० सहरी, (२३) सु० दूदी, (२४) सु० नजली, (२५) सु० अरजी, (२६) सु० बोहरानी, (२७) शकीका (आधा शीशी) और (२८) असाबा (अनतवात)।

आगे इनमे से प्रत्येक का क्रमश सक्षिप्त निदान-चिकित्सादि दिया गया है। यहाँ पर शिर शूल के इन समस्त भेदो मे प्रत्येक चिकित्सक को जिस सामान्य चिकित्सोपदेश को दृष्टिगत रखना चाहिये, उसका सक्षेप मे विवरण किया जाता है।

(१) शिर शूल के अनेक भेदो मे आराम करना, चेष्टा और सभाषण से परहेज करना, कम खाना, जल कम पीना, मद्य का सर्वथा परित्याग कर देना, दोनो हाथ-पॉवो को अत्यत उष्ण जल मे रखना तथा उनको मलना, कब्ज (विबध) को दूर करना, सर्वोत्तम उपाय हैं। (२) गरम पानी का परिषेक (तरेडा) करना भी शिर शूल के अनेक भेदो मे गुणकारी है। (३) दोषज शिर शूल मे यथासभव दोष को शरीर के निम्न भागो की ओर आकृष्ट करना उत्तम उपाय है। इसके लिये हाथ-पॉव को बॉधना, मलना या धोना या पिडलियो पर सीगी खिचवाना पर्याप्त है। सिर को दबाना ठीक नही। (४) शिर शूलरोगी को वमन कराना अतीव अहितकर है। किन्तु आमाशय के अनुबध से होनेवाले शिर शूल मे यह अहितकारक नहीं है। (५) इसी प्रकार शिर'शूलरोगी को विशेषत खॉसी की दशा मे अम्ल पदार्थो का वाह्यातरिक उपयोग हानिकारक होता है। पर यदि आमाशय के अनुबध से शिर शूल उत्पन्न हुआ हो, तो कोई हर्ज नही। (६) इसी प्रकार शिर शूल की दशा मे वाष्प या आध्मान (अफरा) उत्पन्न करनेवाले औषध या आहार का कदापि उपयोग न करायें। (७) शिर के पिछले भाग पर शीतल ओषधियो का प्रयोग या शिर के किसी भाग पर स्वापजनन द्रव्यो का उपयोग सर्वथा वर्जित है। पर यदि उनके विना चारा न हो तो निवारण द्रव्यो के साथ उनका उपयोग विहित है। (८) शिर

शूल की दशा मे या ऐसे समय जबकि मस्तिष्क मे वेदना की अनुकूलता हो, मैथुन एव चिन्ता आदि उत्तेजनाओ से बचना आवश्यक है। (९) यदि शिर शूल के साथ प्रसेक (नजला) भी हो तो शिर के ऊपर तैल आदि नहीं लगाना चाहिये। प्रत्युत् प्रकृति-मार्दवकरण, प्रकृतिपरिवर्तन एव शिर (मस्तिष्क) बलवर्धन का ध्यान रखना चाहिये। (१०) अन्य रोग के कारण होनेवाले शिर शूल मे प्रथम उस रोग का उपाय करे। (११) हकीमो ने सिर की पीडा मे अफीम आदि का लेप लगाने की मनाही की है। अत्यन्त आवश्यकता होने पर केसर या बाबूना के साथ इसका प्रयोग कर सकते हैं। (१२) सिर की पीडा मे यदि सिर के ऊपर अर्कगुलाब डालना हो तो इतना डालें कि सिर भीगा रहे, नहीं तो हानि करेगा। (१३) सिर की पीडावाले को नकसीर फूटना अच्छा है, अस्तु, उसे बन्द नही करना चाहिये। पर यदि अधिक रक्त निकलने से कमजोरी की आशका हो, तो उसे अवश्य बन्द करना चाहिये। सिर के रोगो मे नाक या कान से मवाद (दोष) का निकलना बहुत अच्छा है।

चिकित्सा-सूत्र—अदोषज या सादा सिरदर्द मे केवल प्रकृति को साम्यावस्था पर ले आने की आवश्यकता होती है और इसी से शिर दर्द जाता रहता है। दोषज वा माद्दी के दो स्वरूप होते हैं —(१) या तो वह केवल मस्तिष्क मे होता है या (२) सपूर्ण शरीर मे। प्रथम अवस्था मे केवल मस्तिष्क की शुद्धि के उपरात प्रकृति को साम्यावस्था पर (प्रकृतिस्थ) लाया जाता है। दूसरी अवस्था मे प्रथम शरीर का, पुन मस्तिष्क का शोधन करके प्रकृति परिवर्तित की जाती है।

जब सिरदर्द असली होता है अर्थात् उसका हेतु मस्तिष्क से सबध रखता है, तब केवल मस्तिष्क के सुधार की आवश्यकता होती है। परतु जब दर्द शिरकी (अनुबधजनित) होता है, तब जिस रोग के कारण यह दर्द होता है, उसकी चिकित्सा की जाती है। उसके नष्ट होने पर सिरदर्द नष्ट हो जाता है। पर यदि सिर दर्द अति उग्र हो, तो उसकी शाति का उपाय भी करना चाहिये।

अदोषज शिरः शूल

सुदाअ हार्र साजिज (अदोषज उष्ण शिर शूल)

टिप्पणी—इस प्रकार के केवल सर्दी वा केवल गर्मी आदि से होनेवाले सिरदर्द को पाश्चात्य वैद्यक मे न्युरॉल्जिक हेडेक (Neuralgic Headache) कहते हैं।

हेतु—अधिक गर्मी, देर तक धूप मे या अग्नि के समीप रहना, अधिक दौडना या चलना, कोलाहल, उष्ण पदार्थो का सूंघना, उष्ण औषध या आहार का सेवन आदि इसके हेतु होते हैं।

लक्षण—शिर की त्वचा का उष्ण स्पर्श, कण्ठ और नासिका की रूक्षता, तृष्णाधिक्य, शीतल पदार्थो के सेवन या शीतल वायु के स्पर्श से रोग शांति इसके लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) नीबू का रस ५ तोला या (२) शर्बत नीबू २ तोला या (३) जल मे भिगोये हुए १५ दाने आलूबोखारे का निथरा हुआ पानी या (४) जल मे भिगोए हुये २ तोले इमली का निथरा हुआ पानी या (५) शर्बत अनार २ तोला, १० तोला अर्क गावजबान या ७ तोला अर्क कासनी या ५ तोला अर्क गुलाब या ५ तोला अर्क केवडा मे मिलाकर पीने से इस रोग मे उपकार होता है। (६) १० माशा सूखी धनिया को सम भाग चीनी के साथ चूर्ण बनाकर जल के साथ खाने से लाभ होता है। (७) ६ माशे सफेद चदन को हरे धनिया के रस या खाली पानी मे घिसकर मस्तक पर लेप करने या (८) २ माशे कपूर को १ तोले सफेद चदन के साथ अर्क गुलाब या हरे धनिया के रस मे घिसकर गुलाब का इत्र मिलाकर सूँघने से बहुत लाभ होता है। (९) १ तोला सफेद पोस्ते के दाना को तीक्ष्ण सिरका मे पीसकर मस्तक पर लेप करने या सूँघने से शीघ्र लाभ होता है। (१०) ५ तोले हरी मेहदी के पत्ते को सिरका मे पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है। (११) बकरी के दूध मे कपडा तर करके सिर के ऊपर रखने या नाक या कान मे डालने से इस रोग मे उपकार होता है। (१२) मीठे कद्दू का तेल या (१३) बनफ्शा का तैल नाक या कान मे डालने अथवा सिर के ऊपर अभ्यङ्ग करने से भी इसमे लाभ होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला, अर्क गावजबान १० तोला के साथ खिलाने या (२) अतरीफल उस्तूखूदूस ९ माशा, अर्क गुलाब १० तोला के साथ देने से अद्भुत लाभ होता है। या (३) अनोशदारू बारिद ६ माशा, अर्क नीलूफर या अर्क बादियान प्रत्येक १० तोला के साथ खिलाने से गरम सिर दर्द आराम होता है तथा मस्तिष्क बलवान् होता है। या (४) कुर्स मुसल्लस २ नग आँवला या पोस्ते के रस मे घिसकर मस्तक पर लेप करने से लाभ होता है। यदि कब्ज भी हो तो (५) अतरीफल जमानी ९ माशा (६) अतरीफल मुलय्यिन ७ माशा या (७) गुलकद आफताबी ४ तोला रात्रि मे सोते समय १० तोला कोष्ण अर्क गावजबान के साथ खिलाने से सिरदर्द आराम होता और कब्ज (विबध) दूर हो जाता है।

सिद्ध योग—अतरीफल कश्नीजी १ तोला खिलाकर ऊपर से ६ माशे खीरा-ककडी के बीजो का शीरा, १० तोला अर्क शाहतरा मे निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें।

सुदाअ वारिद साजिज (अदोषज शीत शिर शूल)

हेतु—अधिक शीत लगना, शीतल वायु मे भ्रमण करना या शीत जल मे अवगाह स्नान करना, अत्यत शीतल पदार्थो का सेवन आदि ऐसे सिरदर्द के निदान-कारण होते है।

लक्षण—सिर और मस्तक की त्वचा शीतल प्रतीत होती है। उष्ण वायु या अग्नि के पास या धूप मे बैठने से सुखानुभव होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) चाय या (२) कहवा पीना लाभकारी है। अथवा (३) गेहूँ की भूसी ३ तोला जल मे पकाकर ६ माशा मिश्री मिलाकर पीने से बडा उपकार होता है। (४) गुलबनफ्शा ९ माशा या (५) सौंफ ७ माशा जल या अर्क मकोय १५ तोला मे उबालकर २ तोला शर्बत उस्तूखुद्दूस मिलाकर पिलाने से बहुत लाभ होता है। (६) राई या (७) लौंग ३ माशा या (८) दालचीनी ५ माशा गरम पानी मे पीसकर मस्तक और कनपटियो पर पतला लेप करने से बहुत लाभ होता है। (९) केसर १ माशा या (१०) सोठ ३ माशा बारीक पीसकर गोघृत मे मिलाकर नस्य लेने से शीघ्र लाभ होता है। (११) कस्तूरी या (१२) अबर का सूँघना भी लाभकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) बनारसी आमले का मुरब्बा १ नग ७ तोला अर्क गावजबान के साथ खिलाने या (२) इयारज लूगाजिया ९ माशा, १० तोला अर्क गावजबान या १० तोला अर्क सुदाब के साथ खिलाने से उपकार होता है। या (३) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (४) अतरीफल सनाई ९ माशा १० तोला अर्क गावजबान के साथ या (५) अतरीफल कबीर ७ माशा, ७ तोला अर्क गावजबान के साथ खिलाना गुणकारी है। (६) कुर्स मुसल्लस २ नग मेहदी के रस मे घिसकर मस्तक पर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

सिद्ध प्रयोग—(१) गुल बनफ्शा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, हसराज ४ माशा, अजीर विलायती ३ नग, अर्क गावजबान १५ तोला मे क्वाथ करके छानकर २ तोला शर्बत उस्तूखुद्दूस मिलाकर पिलाये। (२) ऊष्मस्वेद—गुल-बाबूना, गुलबनफ्शा, उस्तूखुद्दूस, सूखी हुई सुदाब की पत्ती, सौंफ की जड, अफसतीन प्रत्येक १-१ तोला। सब ओषधियो को जल मे उबालकर चादर ओढकर निर्वात (बद) गृह मे बफारा लेवें। इससे सर्दी का सिरदर्द जिसमे तीव्र प्रसेक (नजला) होता है, शीघ्र लाभ होता है। (३) केसर १ माशा, जुदबेदस्तर १ माशा को गरम पानी मे पीसकर नस्य लेने से सर्दी का सिरदर्द विशेषरूप से आराम हो जाता है। (४) लौंग ३ माशा, राई ६ माशा, दालचीनी ३ माशा

सूखी सुदाव की पत्ती १ तोला, उस्तूखुद्दूस १ तोला, हींग के पानी (घोल) मे पीसकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से उपकार होता है।

दोषज शिरः शूल

सुदाअ दम्वी

नाम—(अ०) सुदाअ दम्वी, (फा०) दर्दसर खूनी; (उ०, हि०) खूनी (खूनका) दर्दसर, (स०) रक्तज शिर शूल, (अ०) कन्जेस्टिव्ह हेडेक (Congestive Headache), हाइपर्मिक हेडेक (Hyperemic Headache)।

वक्तव्य—दोषज शिर शूल (सुदाअ माद्दी) के ये पाँच भेद होते हैं—(१) सुदाअ दम्वी, (२) सुदाअ सफरावी, (३) सुदाअ वल्गमी, (४) सुदाअ सोदावी ओर (५) सुदाअ रीही। यहाँ पर इनमे से प्रत्येक का क्रमश वर्णन किया जाता है।

हेतु—जलवायुजन्य रक्त दुष्टि (रक्तोद्वेग), अर्शोजात रक्त, आर्तवावरोध, मास-अडा प्रभृति रक्तवर्द्धक आहार का अधिक सेवन आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—शिरोगौरव, सर्वांग वेदना, चेहरे एव नेत्र का लाल होना, मुख का स्वाद मीठा होना, इसके प्रमुख लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि शारीरिक शक्ति एव अवस्था अनुकूल हो तो सर्वप्रथम सरारू सिराका वेधन (फस्द) करे या पिडलियो पर पछने लगवाकर सींगी खिचवायें या सिर के पीछे सींगी लगवाये और थोडा ही रुधिर निकाले। इसके वाद प्रकृतिपरिवर्तन (सशमन) का उपाय करे। अस्तु, (१) उन्नाव ९ दाना या (२) आलूवोखारा १५ दाना या (३) वर्ग शाहतरा ९ माशा जल मे क्वाथ करके २ तोला शर्वत उन्नाव या २ तोला शर्वत नीलूफर मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (४) २ तोला इमली को १५ तोला अर्क गावजवान मे भिगोकर २ तोला शर्वत आलूवोखारा मिलाकर पीना लाभकारी है। (५) सफेद चदन १ तोला या (६) सूखा धनियाँ १ तोला अर्क गुलाव और सिरका मे पीसकर पतला लेप करना गुणकारी है। (७) हरे कुलफे का रस १० तोला मे गुलरोगन ६ माशा और स्त्री का दूध ६ माशा मिलाकर नस्य लेने से वहुत लाभ होता है। (८) ५ तोला हरा धनियाँ के रस मे गुलरोगन १ तोला और सिरका ३ माशा मिलाकर सूँघने से भी उपकार होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) माजून चोपचीनी ६ माशा अर्कमुण्डी १० तोला के साथ खिलाना लाभकारी है।

वक्तव्य—यदि शोधनोपरात भी रक्तदोप की इतनी प्रगलभता हो कि उससे

सरसाम उत्पन्न होने का भय हो और सिरदर्द की अत्यत तीव्रता हो, तो निम्नलिखित तिला या लेप का प्रयोग बहुत गुणकारी होता है।

तिला का योग—हरे धनियाँ की पत्ती का रस १ तोला, हरे काहू की पत्ती का रस १ तोला मे सफेदचदन १ तोला पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर मस्तक पर पतला लेप करने से लाभ होता है। परीक्षित है।

प्रलेप योग—गुलबनफ्शा १ तोला, गुल नीलूफर १ तोला, शियाफ मामीसा ६ माशा, जौ का आटा और मूँग का आटा प्रत्येक एक-एक तोला, गुल बाबूना, गुलसुर्ख, रसवत मक्की, सफेद चदन प्रत्येक ६-६ माशा, मीठे कद्दू का गूदा १ तोला—समस्त ओषधियो को हरे धनिये के रस मे पीसकर गुलरोगन, अगूरी सिरका और अर्क गुलाब मिलाकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से रक्तज शिर शूल आराम होता है। परीक्षित है।

सिद्ध योग—हिम जो रक्तज शिर शूल मे परीक्षित है तथा शोधनोपरात प्रयुक्त किया जाता है। उन्नाव विलायती ५ दाना, पित्तपापडा ५ माशा, गुलनीलूफर ५ माशा, सफेद चदन ५ माशा—समस्त ओषधियो को १२ तोला अर्क शाहतरा मे रात्रि मे भिगो देवें। प्रात काल छानकर २ तोला शर्वत उन्नाव मिलाकर पिला देवें। यदि रक्त मे पित्त मिला हो, तो निम्न योग को प्रयोग मे लेवें।

शीतजनन (तबरीद्) योग—गुल नीलूफर ६ माशा, चदन का बुरादा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना अर्क शाहतरा मे मलकर, ६ माशा खीरा-ककडी के वीज का शीरा, ६ माशा छिले हुए काहू के वीज का शीरा योजित करके २ तोला शर्बत-नीलूफर मिलाकर पिलाना अतीव गुणकारी है।

हिमका योग जो रक्तज शिर शूल मे अतीव गुणकारी है, सिरावेध और सींगी के पश्चात् उपयोग किया जाता है। ५ दाने उन्नाब का शीरा १० तोले अर्क नीलूफर मे निकाल कर खट्टे-मीठे उभय अनार का २ तोला शर्बत, १ तोला चंदन का शर्बत मिलाकर पिलावें। परीक्षित है। यदि कब्ज हो तो इन शर्वतो की जगह शर्वत तुरजबीन मिलाकर पिलाने से उसका निवारण होता है।

हिम जो ऐसे शिर शूल मे लाभकारी है जिसके साथ भ्रम (दौराने सर) एव हृत्स्पदन भी हो। हडका मुरब्बा एक नग चाँदी के वर्क के साथ प्रथम खिला कर ऊपर से ५ तोला अर्क केवडा और १० तोला अर्क गावजबान मे ७ माशा सूखे धनियाँ का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत अनार, १ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर ४ माशा तुख्मबालगू (तूतमलंगा) का प्रक्षेप देकर पिलाने से उपकार होता है।

सुदाअ सफरावी

नाम—(अ०) सुदाअ सफरावी, (फा०) दर्दसर सफरावी, (उ०) सफरावी दर्दसर; (स०) पित्तज शिर शूल, (अं०) बिलिअस हेडेक (Bilious Headache)।

हेतु—कभी उष्ण एव मधुर पदार्थो के पुष्कल सेवन से या ऋतुजन्य उष्णता के कारण पुष्कल पित्तोत्पन्न होकर उसका कुछ भाग आमाशय मे टपकता है और आमाशय से तीक्ष्ण वाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर प्रवृत्त होते है, जिससे सिरदर्द उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—चेहरा, जिह्वा और नेत्र का वर्ण पीला होता है। मुख तिक्त एव कण्ठ शुष्क होता है। प्यास अधिक लगती है। नाडी द्रुतगामिनी होती है। मूत्र उष्ण और उसका रग पीला होता है। कभी-कभी मूत्र आने मे किंचिद् दाह भी होता है। निद्रा नही आती है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आवश्यक शोधन के उपरात सशमन (प्रकृति परिवर्तन) करें। अस्तु, (१) २ माशा मीठे बिहीदाने का लुआब या (२) १० तोला अर्क नीलूफर मे ९ माशा काहू के बीज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलफर मिलाकर पिलायें। या (३) शर्बत आलूबोखारा २ तोला या (४) शर्बत इमली २ तोला या (५) खट्टे अनार का शर्बत २ तोला या (६) कागजी नीबू का शर्बत २ तोला अर्क कासनी १० तोला या अर्क गावजबान १० तोला मे मिलाकर देने से उपकार होता है। या (७) सिरका १ तोला, गुलरोगन ५ तोला, अर्क गुलाब १५ तोला, तीनो को मिलाकर उसमे कपडा तर करके चँदिया (सिर) पर रखने से लाभ होता है। अथवा (९) चदन ९ माशा, कपूर ३ माशा या हरा या सूखा धनियाँ २ तोला अर्क गुलाब मे पीसकर सिर के ऊपर लेप करना या मस्तक और कनपटियो पर पतला लेप करना गुणकारक है। (९) कद्दू या खीरा का तैल या (१०) बनफ्शा का तैल या (११) नीलूफर का तैल चँदिया (सिर) पर मलना या नाक और कान मे टपकाना लाभकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) जुवारिश आमला ७ माशा अर्क गावजबान १२ तोला के साथ खिलाना या (२) जुवारिश तमर्राहिंदी १ तोला अर्क नीलूफर १० तोला के साथ खिलाना या (३) जुवारिश तमर्राहिंदी १ तोला अर्क नीलूफर १० तोला के साथ खिलाना आशु प्रभावकारी है। (४) खमीरा गावजबान सादा या अबरी १ तोला अर्क बहार १२ तोला के साथ खिलाना या (५) दवाउल्मिस्क बारिद ५ माशा, अर्क गावजबान १२ तोला के साथ देना भी लाभकारी हुआ करता है। (६) जब कब्ज के लक्षण प्रगट हो तो सफूफ

बनफशा ९ माशा या (७) शर्बत अनार ३ तोला कोष्ण अर्क मकोय १० तोला के साथ प्रात -सायकाल पीना पित्तज और रक्तज शिर शूल मे भी लाभकारी है। (८) मुफर्रेह् कश्नीजी ९ माशा, अर्क नीलूफर ७ तोला के साथ खिलाने से वाष्प-जनित पित्तज शिर शूल मे आशातीत लाभ होता है। (९) आमले का मुरब्बा एक नग, चाँदी का वर्क १ नग मे लपेटकर प्रात.काल खिलाने और रात्रि मे सोते समय बडे हडका मुरब्बा १ नग पानी से धोकर १ नग चाँदी का वर्क लपेटकर खिलाना भी गुणकारी है।

सिद्ध योग—(१) पैत्तिक दोष के वाष्प तथा आमाशय के अनुवन्ध से होने वाले शिर शूल मे निम्न योग गुणकारी है—५ माशा जरिश्क बेदाना का शीरा, ५ माशा सूखे धनिये का शीरा, अर्क कासनी ७ तोला, अर्क नीलूफर ८ तोला मे निकाल कर शर्बत तमर्राह्दी ३ तोला और अर्क गुलाब ३ तोला योजित करके पिलावे। (२) प्रलेप—हरे कुलफे के पत्र १ तोला, शियाफ मामीसा १ तोला, दोनो चन्दन (सफेद और लाल) १ तोला, गुलाब का फूल १ तोला, सुपारी १ तोला, शुद्ध अफीम ६ माशा—समस्त द्रव्यो को सिरका मे पीसकर गुलरोगन मिलाकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से इस प्रकार के शिर शूल मे अतीव लाभ होता है।

अपथ्य—गरम और मीठे पदार्थ से परहेज करें। लाल मिर्च, मास, चाय, लहसुन, प्याज, अडा, मछली आदि और तैल की पकी हुई वस्तुयें नही खावें।

पथ्य—दर्द की दशा मे आहार न देवे। दर्द शान्त होनेपर हरी तरकारियो मे से पालक, कुलफा, तोरई, शलगम, चुकदर, कद्दू, टिंडे आदि के रसा के साथ चपाती खिलावे। मूँग की दाल, पाव रोटी, दूध, दही, मक्खन, मलाई, सेब, अनार, सतरा, आड़ू आदि खिला सकते है। भोजन के साथ नीबू और इमली की खटाई गुणकारी है।

सुदाअ बल्गमी

नाम—(अ०) सुदाअ बल्गमी; (फा०, उ०) दर्दसर बल्गमी; (स०) कफज शिर शूल, (अ०) क्रॉनिक हेडेक (Chronic Headache) कटारल हेडेक (Catarrhal Headache)।

कभी आमाशय मे श्लैष्मिक द्रव सचित होकर पाचन विकार उत्पन्न कर देते है तथा वायु उठकर मस्तिष्क की ओर जाते और शिर शूल का कारण होते ह।

हेतु—वादी, गुरु, विष्टभी और दीर्घपाकी पदार्थो का सेवन, चिरकारी कब्ज, कम चलना-फिरना और जल या वर्फ का अत्यधिक सेवन आदि इसके कारण है।

लक्षण—इन्द्रियाँ शिथिल एव अस्थिर होती है। तबीअत बोझिल रहती है

शिर मे बोझ अधिक प्रतीत होता है। मुँह और नथुनो से पुष्कल द्रव स्रावित होता है। नाडी की गति मद हो जाती है। मूत्र श्वेत एव साद्र (गाढा) होता है। भूख-प्यास कम मालूम होती है। गरमी पहुँचने से दर्द मे आराम मालूम होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम यह देखना चाहिए कि रोगजनक दोष सपूर्ण शरीर मे प्रगल्भ है या केवल मस्तिष्क (शिर) मे, उसका यथेष्ट—यथा प्रमाण शोधन करने के उपरात दोष-शमन का यत्न करें। दर्द की दशा मे रोगी को निर्वात उष्ण गृह मे आराम से लिटाये और (१) गेहूँ की भूसी एव नमक कपडे की पोटली मे बाँध कर टकोर (सेंक) करें। (२) उस्तूखुदूस ६ माशा या १ तोला अर्क बादियान ११ तोला मे क्वाथ करके २ तोला मिश्री मिलाकर चाय की भाँति पीने से उपकार होता है। (३) दालचीनी ३ माशा या (४) लौंग ३ माशा या (५) काली मिर्च ३ माशा जल मे पीसकर मस्तक और कनपटियो पर लेप करने से शिर शूल आराम होता है। (६) केसर १ माशा और जुन्दबेदस्तर २ माशा पीसकर हुलास (नस्य) की भाँति प्रयोग करने अथवा (७) नकछिकनी ३ माशा या (८) मग्ज रीठा ३ माशा और जुदबेदस्तर १ माशा के साथ नसवार लेने या २ तोला अर्क सुदाब मे पीसकर नस्य लेने से कफज शिर शूल आराम होता है। (९) तमाकू का नसवार लेने से मस्तिष्क साद्र द्रव्यो से शुद्ध हो जाता है। (१०) कस्तूरी या (११) अबर या (१२) चमेली का फूल सूँघने और (१३) चमेली या (१४) बाबूना का तेल सिर पर मलने से कफज सिरदर्द जाता रहता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) हब्ब इयारज १ माशा या (२) हब्ब शबयार १ माशा, अर्क बादियान ७ तोला के साथ रात्रि मे सोते समय सेवन करने से मस्तिष्क की शुद्धि होती है और कफज शिर शूल आराम होता है। (३) अतरीफल सनाई ९ माशा या (४) अतरीफल मुलय्यिन ७ माशा रात्रि मे सोते समय सेवन करने से चिरकारी कफज शिर शूल जाता रहता है। (५) माजून दबीदुल्वर्द १ तोला अर्क बादियान ७ तोला के साथ खिलाने से रोग का नाश होता है।

सिद्ध योग—प्रसेकयुक्त सर्दी के सिरदर्द मे लाभकारी क्वाथ—अतरीफल कश्नीजी १ तोला प्रथम खिलाकर ऊपर से उन्नाब ५ दाना, मुलेठी ४ माशा, गुल-बनफशा ६ माशा, १५ तोला अर्क गावजबान मे क्वाथ करके मिश्री मिलाकर पिलाये अथवा निम्न क्वाथ पिलाये—बर्ग शाहतरा (पित्तपापडा) ४ माशा, उन्नाब ५ दाना, छिली हुई मुलेठी ४ माशा, तुख्म खतमी ६ माशा, सबको जल मे क्वाथ करके २ तोला शर्बतनीलफर मिलाकर पिलाये। (२) कफज शिर शूल, कास,

प्रसेक और ज्वर के लिये परीक्षित क्वाथ योग—गुल बनफशा ६ माशा, सौंफ ४ माशा, खतमी के बीज ६ माशा, पित्तपापडा ६ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोडा १० दाना, छिली हुई मुलेठी ४ माशा, सब द्रव्यो को १५ तोला अर्क गावजबान मे क्वाथ बनाकर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर पिलाने से बहुत लाभ होता है। (३) अवरुद्ध नजलाहर लेप—बबूल का गोद ३ माशा, कतीरा ३ माशा, काहू के बीज ६ माशा, पोस्ता का दाना ६ माशा, दम्मुल अख्वैन ६ माशा, गुलाब का फूल ६ माशा, शुद्ध अफीम २ माशा, केसर २ माशा, समस्त द्रव्यो को कूटकर अडे की सफेदी मे मिलाकर एक गोल छिद्रयुक्त कागज पर चिपका कर कनपटी पर लगाएँ। इससे कठिन कफज शिर शूल आराम होता है।

वक्तव्य—इस प्रकार का दर्द बहुधा प्रसेक एव प्रतिश्याय के साथ हुआ करता है। अतएव चिकित्सा मे इसका ध्यान विशेष रूप से रखना चाहिये तथा प्रसेक और प्रतिश्याय जैसी चिकित्सा जिसका आगे वर्णन होगा, की जाय।

अपथ्य—यथासभव जल कम पिएँ। बर्फ का सेवन न करें। आलू, अरवी, उडद की दाल, दूध, दही, मक्खन आदि कफकारक पदार्थो से परहेज करें। जब तक भली भाँति उदर शुद्धि न हो जाय, भोजन न करें (उपवास करें), भूख से कम खायें और भोजन करने के बाद तुरत ही न सो जाया करे।

पथ्य—बकरी या मुर्गी के बच्चे का मासरस (शोरबा) चपाती से खिलायें। मूँग की दाल, अरहर की भुनी हुई खिचडी, पाव रोटी, यखनी, अडा आदि खायें और भोजनोत्तर दस-पन्द्रह मिनट तक लघु भ्रमण करें।

सुदाअ सौदावी

नाम—(अ०) सुदाअ सौदावी, (फा०) दर्दसर सौदावी, (उ०) सौदावी दर्दसर, (स०) वातजन्य शिर शूल, (अ०) क्रॉनिक हेडेक (Chronic Headache)।

लक्षण—जिह्वा, चेहरा और नेत्र श्यावयुक्त होता है। नीद नही आती। नाडी बारीक (क्षीण) चलती है। मुख, नथुना और मस्तिष्क रूक्ष होता है। आरभ मे मूत्र श्वेत वर्ण का होता है। रक्तज और पित्तज शिर शूल के समान इसमे तीव्र वेदना नही होती।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम सपूर्ण शरीर का शोधन करके पुन खास मस्तिष्क का शोधन करना चाहिये। तदुपरान्त मस्तिष्क के शमन (साम्यानुवर्तन) और बलवर्धन का उपाय करना चाहिये। अस्तु, (१) उस्तूखुद्दूस १ तोला पानी या अर्क गावजबान मे क्वाथ करके २ तोला मिश्री मिलाकर पिलाये। इसी प्रकार (२) गावजबान पत्र, (३) बिल्लीलोटन की पत्ती, (४) शाहतरा

पत्र (पित्तपापडा), (५) बस्फाइज फुस्तुकी, (६) अफतीमून विलायती, (७) उन्नाव विलायती और (८) अजीर विलायती आदि का यथाप्रमाण यथाविधि क्वाथ करके पिलाने से भी सौदावी सिरदर्द आराम होता है। (९) कस्तूरी या (१०) अम्बर सूँघने अथवा कस्तूरी को जल मे घिसकर नस्य लेने से भी लाभ होता है। (११) रोगन वनफ्शा या (१२) रोगन बाबूना सिर पर मलने या उसमे कपडा भिगो कर सिर पर रखने से उपकार होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला, १० तोला अर्क मकोय के साथ या (२) अतरीफल सनाई ३ माशा १० तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से लाभ होता है। (३) हब्ब शिफा १ माशा ताजे जल के साथ सेवन करने या जल मे घिसकर मस्तक पर पतला लेप करने से बहुत लाभ होता है। शिर शूल के समस्त भेदो मे लाभकारी एव परीक्षित है।

सुदाअ रीही

नाम—(अ०) सुदाअ रीही या असवी, (फा०) दर्दसर रीही; (उ०) रीही दर्दसर, (अ०) न्युराल्जिक या नर्वस हेडेक (Neuralgic or Nervous Headache)।

लक्षण—दर्द एक स्थान मे सीमित नहीं होता, प्रत्युत् जिधर रीह (वायु) गति करती हुई जाती है, सिर के उसी भाग मे पीडा होने लगती है। सिर मे बोझ नहीं होता, अपितु तनाव मालूम होता है। कान बोलते और सनसनाते है। गरमी लगने से दर्द शान्त होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) तुख्म करफ्स, (२) बिरजासिफ, (३) सातर फारसी, (४) सोआ, (५) अजवायन और (६) सौंफ—इनमे से प्रत्येक का यथाप्रमाण यथाविधि शीरा, क्वाथ या चूर्ण कल्पना करके देने से उपकार होता है। इसी प्रकार (७) मर्जज्जोश, (८) सुदाब के पत्र, (९) इक्लीलुल्मलिक—इनमे से प्रत्येक के यथाप्रमाण और यथाविधि बनाये हुए क्वाथ का परिषेक शिर के ऊपर करना भी लाभकारी है। (१०) ताजे सुदाब का रस या (११) सौफ के ताजे पत्र का रस या (१२) नकछिकनी ३ माशा या (१३) कस्तूरी आदि सूँघने या नस्य लेने से रीही सिरदर्द आराम होता है। (१४) केसर १ माशा या (१५) सफेद मिर्च ३ माशा के साथ केवल जल या हरी नकछिकनी के रस मे पीसकर नस्य लेने से वायु का उत्सर्ग होता है। (१६) जुदबेदस्तर १ माशा, काली मिर्च २ माशा के साथ पीसकर (नस्य) नसवार की भाँति उपयोग करने से शीघ्र लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) जुवारिश कमूनी १ तोला, १० तोला अर्क बादियान के साथ खिलाने अथवा (२) जुवारिश पुदीना २ तोला या (३) जुवारिश दालचीनी ९ माशा १० तोला अर्क सौफ के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

सिद्ध योग—वायुजन्य शिर.शूल के लिये परीक्षित क्वाथ योग—जीरा ३ माशा, साजिज हिन्दी ३ माशा, सातर २ माशा, कड के वीज २ माशा—इनका १५ तोला अर्क बादियान मे क्वाथ करके ४ तोला गुलकद मिलाकर खिलाने से कब्ज दूर होता है और शिर शूल आराम हो जाता है। (२) नस्य जो वातज शिर शूल के लिये परीक्षित है—एलुआ २ माशा, नकछिकनी २ माशा, केसर २ माशा, सफेद मिर्च २ माशा, कस्तूरी १ माशा—इन सब द्रव्यो को मर्जञ्जोश या सौफ के रस मे घोटकर नस्य लेने से बहुत उपकार होता है। (३) नस्य —जुदवेदस्तर १ माशा, कस्तूरी १ माशा, सफेद मिर्च १ माशा, समस्त द्रव्यो को चमेली के तैल मे मिलाकर नस्य लेने से वायु का उत्सर्ग होता है।

सुदाअ शिर्की

नाम—(अ०) सुदाअ शिर्की, (फा०, उ०) दर्दसर शिर्की, (अ०) रिफ्लेक्स हेडेक (Reflex Headache)।

वक्तव्य— इस प्रकार का दर्द अन्यान्य दूपित (विकृत) अगो के अनुवन्ध से हुआ करता है। इसके अनेक भेदोपभेद है। पर अधिकतया यह निम्न दस प्रकार का होता है—

(१) शिर्की मेदी जो मेदा वा आमाशय के अनुबन्ध से हो, (२) शिर्की कबिदी जो कबिद याने यकृत् के अनुबन्ध से हो, (३) शिर्की तिहाली जो तिहाल याने प्लीहा के अनुबन्ध से हो, (४) शिर्की मिअवी जो मिआऽ याने अन्त्र के अनुवन्ध से हो, (५) शिर्की रहमी जो रहम याने गर्भाशय के अनुवन्ध से हो, (६) शिर्की हाजिजी जो (हजाव हाजिज) के अनुबन्ध से हो, (७) शिर्की सुलबी जो पृष्ठ वा रीढ के अनुबन्ध से हो, (८) शिर्की मराकी जो मराक (उदर की त्वचा और उसके नीचे की झिल्ली एव पेशी आदि) के अनुवन्ध से हो, (९) शिर्की कुलवी जो कुलिया याने वृक्क के अनुवन्ध से हो और (१०) शिर्की साकी या अतराफी जो पिडलियो या हस्त-पाद के अनुबन्ध मे हो।

सुदाअ शिर्की मेदी

नाम—(अ०) सुदाअ शिर्की मेदी, (फा०, उ०) दर्दसर शिर्की मेदी, (अ०) गैस्ट्रिक हैडेक (Gastric Headache)।

वक्तव्य—इसके भी यद्यपि अनेक भेद होते हैं, तथापि प्राय यह निम्न (सात) प्रकार का होता है। (अ) शिर्की मेदी सादा जो आमाशय के अदोषज विप्रकृति (सूएमिजाज सादा) से उत्पन्न होता है। इसके यह दो अवातर भेद होते हैं—(१) दर्दसर शिर्की मेदी हार्र साजिज जो केवल आमाशयगत उष्णता से हो और (२) शिर्की मेदी बारिद साजिज जो केवल आमाशयगत शीत से हो। (ब) शिर्की मेदी माद्दी जो आमाशय के दोषज विप्रकृति से उत्पन्न होता है। दोषोल्वणता के विचार से इसके यह तीन अवातर भेद होते हैं—(३) शिर्की मेदी सफरावी, (४) शिर्की मेदी बलगमी और (५) शिर्की मेदी सौदावी। (स) शिर्की मेदी रीही जो आमाशयगत वायु (रियाह) से उत्पन्न होता है। (द) शिर्की जोफ मेदी या शिर्कीमेदी जोफफमी याने जो आमाशयिकद्वार के दौर्बल्य से उत्पन्न होता है।

लक्षण—सुदाअ शिर्की मेदी सादा मे आमाशय खाली हो तो सिरदर्द मामूली होता है। किन्तु भोजन के उपरात जब आमाशय परिपूर्ण एव गौरवयुक्त (बोझिल) हो जाता है, तब दर्द बढ जाता है। सुदाअ शिर्की मेदी माद्दी मे दोष की प्रगल्भता के विचारानुसार जिस दोष की उल्बणता होती है, उसके विशिष्ट लक्षण पाये जाते हैं। सुतरा पित्तज मे मिचली आती है, नेत्र पीला होता और आमाशय मे मरोड रहता है। मुख का स्वाद तिक्त प्रतीत होता है और प्यास अधिक लगती है तथा पैत्तिक वमन के पश्चात् वेदना शान्त हो जाती है। कफज मे शिर शूल से पूर्व अजीर्ण एव कुपचन दोष होता है। अम्लोद्गार आते, आध्मान होता, उत्क्लेशाधिक्य एव पुष्कल लालास्राव होता है। श्लैष्मिक वमन के उपरात वेदना हलकी हो जाती है। सौदावी मे आमाशय के अन्दर दाह एव जलन होती है। क्षुधा अधिक लगती है। तीक्ष्ण सौदावी वमन से दर्द हलका हो जाता है। सुदाअ मेदी रीही मे सिरदर्द से पूर्व आमाशय मे भी दर्द होता है। दर्द सिर की चोटी मे हुआ करता है। जब आमाशयगत दर्द जाता रहता है, तब सिरदर्द भी जाता रहता है। वादी पदार्थो के सेवन से दर्द मे वृद्धि हो जाती है। सुदाअ जोफ मेदी मे प्रात काल निहारमुँह और खाली पेट के समय दर्द मे विशेष रूप से वृद्धि हो जाती है।

उपचार वा चिकित्सा

दर्दसर शिर्की मेदी मे ३ तोला सिकजबीन और ६ माशा लवण को आध सेर गरम पानी मे मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन कराये। तदुपरात निम्न योग उसे सेवन करायें।

(१) सात माशा जुवारिश जालीनूस मे १ रत्ती मण्डूर भस्म मिलाकर

रोगी को प्रात' सायकाल खिलाये और ऊपर से १२ तोला अर्क सौफ मे ५ माशा सौंफ, ५ माशा अनीसून और ३ माशा कुसूस के बीज का शीरा निकालकर और २ तोला गुलकद मिलाकर पिलायें।

(२) अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ९ माशा या अतरीफल कश्नीजी २ तोला सोते समय रात्रि मे खिलाये। जब आमाशय का सुधार हो जाय, तब मेधाजननार्थ (मस्तिष्क को बलवान् बनाने के अर्थ) प्रात काल ५ माशा खमीरा गावजबान अबरी और सायकाल जुवारिश मस्तगी या अनोशदारू प्रत्येक ५ माशा खिलाये।

यदि आमाशयविकार के साथ वातनाडीदौर्बल्य भी हो, तो जदवार १ माशा, ऊदसलीब १ माशा खमीरा गावजबान १ तोला मे मिलाकर खिलायें और ऊपर से १२ तोला अर्कसौफ मे कुसूस के बीज और सौफ प्रत्येक ५ माशा तथा गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाने का शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलाये।

वक्तव्य—अन्यान्य अगो के अनुबन्ध से होनेवाले शिर शूल (दर्दसर शिर्की) के अन्य भेदो के विस्तारपूर्वक विवरण करने के लिये इस सक्षिप्त सुसारसग्रह-ग्रथ मे स्थान निकालना तो कठिन है, फिर भी सक्षेप मे इतना लिख देना आवश्यक है कि उनके उपचारक्रम मे उन्ही सिद्धातो और नियमो को दृष्टिगत रखना चाहिये, जिनके आधार पर आमाशयानुबधी शिर शूल (दर्दसर शिर्की मेदी) का उपचार किया गया। अर्थात् प्रधान अवयव मे जिस दोष की प्रगल्भता हो, प्रथम उस दोष का यथाविधि शोधन करे। पुन प्रधान अवयव के प्रकृति परिवर्तन (साम्यानुवर्तन) का प्रकृतिस्थ करने का यत्न करे। परन्तु इसके साथ ही अनुबन्धी (सबधित) अवयव को बलवान् बनाने का ध्यान रखे। सुतरा प्रधान अवयव मस्तिष्क के जिस भाग के सम्मुख स्थित होगा, उसी भाग मे वेदना होगी। अस्तु, यदि गर्भाशय के अनुबध से शिर शूल उत्पन्न हो, तो दर्द सिर के पूर्व भाग बल्कि मूर्धा वा ब्रह्मरध्र (याफूख) के मध्य मे होगा। यदि वृक्क के अनुबध से हो तो सिर के पश्चाद् भाग मे दर्द होगा। यदि प्लीहा के अनुबध से हो तो सिर के वाम भाग मे वेदना होगी। यदि यकृत् के अनुबध से हो तो सिर के दक्षिण भाग मे वेदना होगी। यदि हजाब हाजिज व मराक के अनुबध से हो तो सिर के अग्र भाग मे मस्तक के पास वेदना होगी। इसी प्रकार यदि दोनो पिडलियो या दोनो हस्तपादो के अनुबध से हो तो रोगी को ऐसा प्रतीत होगा, मानो कोई वस्तु च्यूँटी की भाँति गति करती हुई सिर की ओर चढती है।

सुदाअ जोफे दिमागी

नाम—(अ०) सुदाअ जोफे दिमागी, (उ०) दर्दसर जोफे दिमागी; (स०) मस्तिष्क दौर्बल्यजनित शिर शूल, (अं०) ऍनीमिक हेडेक (Anaemic Headache)।

हेतु—इस प्रकार का सिरदर्द मस्तिष्क की दुर्बलता अथवा उसमे रक्त की न्यनता के कारण हुआ करता है। मानसिक श्रम की अधिकता, अधिक स्त्री-सहवास और सदा बना रहनेवाला प्रसेक (नजला) आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—ज्ञानेन्द्रियो की मलिनता, मानसिक क्रियाओ का ह्रास, जरासी आवाज सुनने या किसी सुगध के सूँघने से सिरदर्द हो जाना आदि इस प्रकार के सिरदर्द के लक्षण हैं।

असस्पृष्ट द्रव्योपचार—ताजे फल विशेषकर (१) ताजा सेव या (२) ताजा अगूर या (३) नासपाती या (४) अनार आदि का सेवन अथवा इनका ताजा रस निकाल कर देना लाभकारी है। (५) वनारसी आमले का मुरब्बा, (६) सेव का मुरब्बा चॉदी या सोने के वर्क के साथ खिलाकर ऊपर से शर्वत सेव या शर्बत अनन्नास और अर्क गावजवान पिलाना गुणकारी हे। (७) सात दाना छिले हुए वादाम को समतोल मिश्री के साथ रात्रि मे सोते समय खिलाना भी गुणकारक है। (८) मुफर्रहात एव मुकव्वियात। यथा—अबर, इत्रहिना और सेव आदि सूँघना भी लाभकारी है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—अनोशदारू लूलुइ ५ माशा, अर्क सौफ और अर्क गावजवान प्रत्येक पॉच तोला के साथ सेवन करें। या (२) दो चावल जवाहर मोहरा खमीरा गावजबान अवरी जवाहर वाला या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाला के साथ देवें। या (३) २ चावल लोह भस्म खमीरा सदल और अनार के रस के साथ देवे। (४) खमीरा गावजवान अवरी जवाहर वाला ५ माशा या (५) खमीरा अवरेशम हकीम ईर्शदवाला ३ माशा या (६) खमीरा मर्वारीद ५ माशा या (७) खमीरा सदल जवाहर वाला ५ माशा अर्क गावजवान या अर्क अवर के साथ देने से ऐसे सिरदर्द मे वहुत लाभ होता है। (८) रोगन लवूब सब्आ सिर पर लगायें।

पथ्यापथ्य—शारीरिक और मानसिक कार्यो की अधिकता से वचे। यथा प्रमाण शीघ्रपाकी आहार का सेवन करें। अम्ल और तीक्ष्ण पदार्थो के सेवन से परहेज करें।

सुदाअ (कुव्वत) हिस्स दिमागी

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का शिर शूल मस्तिष्क की सवेदना वढ जाने से

प्रगट होता है। अतएव मस्तिष्क दौर्बल्य जनित सिरदर्द की भाँति सामान्य कारण से भी मस्तिष्क को कष्ट प्रतीत होता है और वह शिर.शूल पीडित हो जाता है। किन्तु मस्तिष्क की समस्त क्रियायें यथावत् होती हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) गुरु और सान्द्र आहार, जैसे—बासी रोटी पानी मे भिगोकर खाने अथवा (२) वकरे का (कल्ला व पायचा) सेवन करने से मस्तिष्क की सवेदना कम हो जाती है, विशेषकर उस समय जबकि पाचन-शक्ति निर्बल न हो। पाचन-शक्ति दुर्बल होने पर शीतल शाक (तरकारियाँ), जैसे (३) हरा काहू या (४) हरा कुलफा या (५) हरा धनिया सेवन करायें तथा स्वापजनन पदार्थ—जैसे (६) अफीम, (७) लुफाह, (८) धनिया और काहू का लेप करायें। ऐसे ही (९) रोगन खशखाश या (१०) रोगन काहू का सिर पर लगाना लाभकारी है। (११) शर्बत खशखाश पिलाना भी गुणकारी है।

सुदाअ युब्सी (खफा)

नाम—(अ०) सुदाअ युब्सी; (उ०) दर्देसर खुश्की, (स०) रूक्षता-जन्य वा वातज शिर शूल, (अं०) इण्ड्योरेटिव हेडेक (Indurative Headache)।

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का शिर शूल रूक्षता से उत्पन्न होता है। रूक्षता से प्रकृति का बिगडना (सूए मिजाज याबिस), बाह्य रूक्षता उत्पन्न करने वाले (असरात) अर्थात् गरम वायु और लू आदि तथा उष्ण लेपो का प्रयोग, आर्तवशोणित एव प्रसवशोणित का अधिक स्रावित होना या जल कम पीना या जल का परित्याग कर देना तथा रूक्ष आहार का सेवन आदि इसके हेतु हैं। तीव्र सशोधन अर्थात् शारीरिक द्रवो की प्रचुरता से उत्सर्गित हो जाने के पश्चात् अथवा जागने और मस्तिष्क से नजला एव नकसीर के पश्चात् सिर दर्द होना तथा शिर का शून्य एव खाली मालूम होना तथा मुख का शुष्क होना आदि इसके लक्षण हैं।

उपचार—मस्तिष्क् दौर्बल्य की भाँति उपचार करे। रोगन बादाम या लबूब सब्आ का शिरोऽभ्यग करे तथा नाक और कान मे भी टपकाये।

सुदाअ जिमाई

नाम—(अ०) सुदाअ जिमाई, (उ०) ददसर जिमाई; (स०) मैथुनज शिर शूल, (अं०) क्वायटस हेडेक (Coitus Headache)।

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का शिर शूल अति मैथुन के कारण होता है। अति शुक्रस्राव से रूक्षता उत्पन्न होना या मस्तिष्क की ओर वाष्प का

प्रकोप (हैजान) या वातनाडी-दौर्बल्य आदि इसके कारण है। इसके पूर्व अतिमैथुन का होना अर्थात् यह अतिमैथुन के पश्चात् होता है तथा रोगी के शरीर का रूक्ष एव दुर्बल होना आदि इसके लक्षण है। यह भी वस्तुत सुदाअ खफा की तरह होता है।

असस्तृष्ट द्रव्योपचार—इसमे मैथुन का सर्वथा परित्याग करा देवें। इसके उपाय प्राय वही है जिनका उल्लेख सुदाअ युब्सी मे किया गया है। अतर केवल यह है कि इसमे (मुरत्तिवात) का उष्णता लिये हुए होना मुनासिब है तथा इनमे मस्तिष्क बलवर्धन का अधिक ध्यान रखना चाहिये, जैसे—(१) दूध, (२) ताजा मक्खन और घी का उपयोग लाभदायक है। (३) तीतर या चकोर या (४) चिडा (चटक) आदि के मास का आहार रूपेण उपयोग सात्म्य है। (५) एक नग मुर्गी के अडे की अधभुनी जर्दी मीठा मिलाकर खाना तथा (६) मीठे वादाम का मग्ज १ तोला या (७) चिलगोजे का मग्ज ७ माशा या (८) अखरोट का मग्ज २ तोला इनमे से प्रत्येक का उपयोग गुणकारी है। इसी प्रकार (९) वकरे आदि पशुओ के मस्तिष्क अलग-अलग अतीव गुणकारी है। (१०) सालमसिश्री ३ माशा, घिसकर २ तोला विही के मुरब्बा मे मिलाकर एक नग चाँदी का वर्क लपेट कर खाना और ऊपर से ९ तोला माउल्लहम (मासार्क) मे २ तोला मीठे अनार का शर्वत या २ तोला सेब का शर्वत मिलाकर पीना परीक्षित है। इसी प्रकार (११) जहर-मोहरा खताई ४ जौ या (१२) नीले रग का वशलोचन २ माशा पीसकर २ तोले बनारसी आमले के मुरब्बा मे मिलाकर खाने और ऊपर से ७ तोला अर्क गुलाब या ७ नग मीठे वादाम के मग्ज का शीरा मे २ तोला शर्वत अनार मिलाकर ७ माशा तुख्म शर्वती का प्रक्षेप देकर पीने से शीघ्र लाभ होता है। तथा (१३) गाय के ताजे दूध का सेवन गुणकारी है। (१४) रोगन वनफशा कान मे डालना और (१५) गुलरोगन वृक्क एव वृषणो पर मर्दन करने से भी उपकार होता है तथा (१६) उष्ण जल का स्नान भी गुणकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मुरब्बाये सालमसिश्री १ तोला या (२) मुरब्बा गजर २ तोला या (३) मुरब्बा शलजम २ तोला—इनमे से अलग-अलग प्रत्येक को ७ तोला माउल्लहम (मासार्क) या ९ तोला अर्क बेदमुश्क के साथ खाने से शीघ्र लाभ होता है। (४) लबूब कबीर ९ माशा या (५) लबूब सगीर १ तोला, एक तोला शीरा बादियान के साथ देने से लाभ होता है। परीक्षित है।

सुदाअ खुमारी

नाम—(अ०) सुदाअ खुमारी, (उ०) दर्देसर खुमारी; (स०) मद्य-

पान जनित (मद्यज) शिर.शूल ; (अ०) एलको हॉलिक हेडेक (Alcoholic Headache) ।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का शिर शूल सदा मद्यसेवनोपरात हुआ करता है, विशेषकर नूतन, (नाकिस) या शुद्ध एव तीक्ष्ण मद्य के पीने से प्रगट हो जाता है। मद्यसेवनोत्तर शिर शूल उत्पन्न होने तथा कभी-कभी उत्क्लेश या हृल्लास अर्थात् मिचली आना इसके लक्षण है।

असस्पृष्ट द्रव्योपचार--सर्वप्रथम आमाशय की शुद्धि के लिये (१) तीन तोले सिकजबीन सादा मे गरम पानी मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन करा देना चाहिये। तदुपरात बलवर्धन के लिये (२) शर्बत अनार ३ तोला या (३) शर्बत बेह ३ तोला या (४) सिकजबीन ३ तोला मे ४ तोला अर्क गुलाब और शीतल जल मिलाकर पिलाना लाभकारी है। इसके बाद भी यदि उबकाई और मिचली कष्ट देवे तो किसी कदर नरम आहार खिलाकर एक घडी के पश्चात् वमन करा देने से अवशिष्ट दोष उत्सर्गित होकर आमाशय शुद्ध हो जायगा तथा सिर दर्द भी जाता रहेगा। यदि वमन या विरेचन के लिये कोई निषेधक हो तो (५) शर्बत हुम्माज ३ तोला या (६) शर्बत लीमूँ २ तोला, ५ तोला अनार या अगूर के रस या ठढे पानी मे मिलाकर पिलाना मद्य को हज्म करता है तथा शिर की ओर बाष्प चढने को रोकता है। इसके अतिरिक्त (७) सूखा धनिया और सम भाग चीनी इन दोनो को कूटकर चूर्ण बनाकर ठढे पानी से खिलाना वाष्पोत्पत्ति रोकने के लिये परीक्षित है। (८) गुल बाबूना ५ तोला, गुल बनफ्शा ३ तोला, नमक १ तोला--सबको जल मे उबालकर उक्त जल मे पैर रखना और ऊपर से नीचे की ओर मलना शिर से बाष्प को आकृष्ट करता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला या (२) मुफर्रह कश्नीज ७ माशा खिलाकर ऊपर से २ तोला शर्बत लीमूँ पानी मे मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (३) मुफर्रह बारिद ९ माशा (खुमार) नष्ट करने के लिये गुणकारी है।

सुदाअ शम्मी

नाम--(अ०) सुदाए शम्मी, (उ०) दर्दसर शम्मी, (स०) दुर्गंधजन्य शिर शूल, (अ०) ऑल्फैक्टरी हेडेक (Olfactory Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का सिरदर्द तीक्ष्ण दुर्गंध या सुगन्ध या उष्ण द्रव्य, जैसे कस्तूरी और फर्फ्यून आदि के सूँघने से हुआ करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--यदि उष्ण द्रव्यो के सूँघने से सिरदर्द उत्पन्न हुआ हो तो (१) कपूर या (२) गुलबनफ्शा या (३) गुलनीलूफर का केवल

सूँघना पर्याप्त होगा। यदि उष्णता के साथ रूक्षता भी रोग का कारण हुई हो तो (४) रोगन बनफ़्शा या (५) रोगन नीलूफर का नस्य लाभकारी होगा। (६) चदन सूँघने से भी लाभ होता है। इसके अतिरिक्त सिर के ऊपर (७) कोष्ण जल का परिषेक और (८) सिर का सूँघना तथा उसमे वर्ति तर करके नासिका मे रखने से भी उपकार होता है।

सुदाअ किर्मी

नाम—(अ०) सुदाअ दूदी, (उ०) दर्दसर किर्मी, (स०) क्रिमिज शिर शूल, (अ०) वर्मिनल हेडेक (Verminal Headache)।

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का सिर दर्द मस्तिष्क के प्रान्तो मे सान्द्र एव दूषित दोष के सचय और नाथुनो एव मस्तक के अन्दर अस्थ्यवकाश मे क्रिमियो के उत्पन्न हो जाने से होता है। दर्द सदा मस्तक मे नथुनो के अतिम आसन्नवर्ती भाग मे होता है। दर्द के साथ उस स्थान मे अत्यन्त खुजली भी होती है। नासिका से दुर्गन्ध आती है। सिर हिलाने, चलने-फिरने या चेष्टा करने से दर्द मे तीव्रता एव वृद्धि होती है। पूर्ण विश्रान्ति की दशा मे दर्द कम या बिल्कुल नही होता।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—मस्तिष्क को दुष्ट दोषो से शुद्ध करने के उपरान्त (१) आडू की पत्ती का रस या (२) एलुवा या (३) अफसंतीन मे से किसी एक को जल मे पीस कर नाक मे टपकायें (नस्य देवें)। इसके अतिरिक्त (४) हीग और कपूर को गुलरोगन या तारपीन के तेल मे घिसकर नस्य देने से नासागत क्रिमि मरते और निकलते हैं। इसके लिये यह सफल औषध है। (५) रीठा को जल मे घिसकर दो-तीन बूंद नाक मे टपकाने से भी लाभ होता है। यदि रोग नष्ट हो जाने के उपरान्त नासिका से दुर्गन्ध आना शेष रहे तो (६) छडीला को बिना पानी के हुक्का मे तमाकू की तरह पीना और धूम्र नथुनो से निकालना चाहिये। इसमे (७) तीन माशा मुलीम को नीम के ताजे पत्तो के रस मे पीस कर या शरीफा के पत्तो के रस का नस्य देने से क्रिमि नि सरित हो जाते हैं। रोगी के सामान्य स्वास्थ्य के सुधारने का भी यत्न करना चाहिये। यदि वह दुर्बल हो तो उसे बल्य औषधियो का उपयोग कराना चाहिये।

संसृष्ट द्रव्योपचार—नस्य जो क्रिमिज शिर शूल को नष्ट करने के लिये परीक्षित है—पीला एलुआ २ माशा, रसवत पीत २ माशा और इयारज फैंकरा २ माशा सबको हरे नीम के पत्तो के रस मे घिसकर और ३ माशा मुलीम मिलाकर नस्य देने से मस्तिष्कगत क्रिमि नष्ट होते और नि सरित हो जाते हैं। बडा ही गुणकारी योग है।

वक्तव्य--इस रोग मे थका देनेवाले व्यायाम, गुरु और गरिष्ट भोजन कम करना, गरम और मीठे पानी से स्नान करना और इसे देर तक सिर के ऊपर डालते रहना परमोपकारी उपाय है ।

सुदाअ जरबी व सक्ती

नाम--(अ०) सुदाअ जर्बी (व सक्ती व तफर्रुक इत्तिसाली), (उ०) दर्दसर जर्बी (सक्ती) ; (सं०) अभिघातज शिरशूल, (अं०) ट्रॉमटिक-हेडेक (Traumatic Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का सिरदर्द सिर के ऊपर आघात लगने या गिर पडने से अथवा खोपडी की हड्डी टूट जाने से या मस्तिष्क को आघात पहुँचने से हुआ करता है। यदि आघात-प्रतीघात (जर्बा व सक्ता) तीव्र हो तो रोगी मूर्च्छित हो जाया करता है। जर्बा व सक्ता का अन्तर--मारने से लगे चोट को जर्बा और गिरने से लगे को सक्ता कहते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--यदि कोई बात निषेधक न हो तो सबसे पूर्व (१) सरारू सिरा का वेधन करें और (२) गुलरोगन सिरका मे मिलाकर सिर पर लगाये। आतरिक रूप से (३) उन्नाब १८ दाना और अमलतास ५ तोला का काढा पिलाकर प्रकृति को मृदु करना उक्त अवस्था मे अतीव गुणकारी है।

सिद्ध योग (१) **प्रलेप**--गिल अरमनी १ तोला, एलुआ २ तोला, मूँग का आटा १ तोला, मैंदा लकडी २ तोला, गुलाब का फूल २ तोला, हरी मेहदी के पत्र ५ तोला, बाबूना ४ माशा, चिरायता ४ माशा--समस्त द्रव्यो को कूटकर हरे बेदसादा के पत्र के रस मे गूँध कर लेप करने से बहुत उपकार होता है। (२) यदि चोट लगने या गिर पडने से मस्तिष्क मे शोथ आ गया हो, तो उसके लिये निम्नलिखित क्वाथ अनुभूत है--उस्तूखुद्दूस ९ माशा को १ तोला अर्क मकोय मे उबाल कर मधु मिलाकर पिलाने और उपरिलिखित प्रलेपयोग मे गुलनार और गुलाब पुष्प प्रभृति जैसे सग्राही द्रव्य मिलाकर लेप करने से सिरदर्द आराम होता और मस्तिष्क मे शोथोत्पत्ति रुक जाती है।

सुदाअ तजअजुई

नाम--(अ०) सुदाअ तजअ्जुई ; (उ०) दर्दसर जुंबिशी ; (अं०) कन्कस्सिह्व हेडेक (Concussive Headache)।

हेतु और लक्षण--इस रोग का कारण सिर के ऊपर आघात लगने या धमक पहुँचने से (जौहर दिमाग) का हिल जाना है। विस्मृति नेत्र के तले अँधेरा आ जाना और कभी-कभी समस्त प्रकार की सुगधियो को एक ही अनुभव करना आदि इसके लक्षण है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—इसमे रोगी को विल्कुल आराम से लिटाये रखे। सर्वप्रथम यदि कोई निषेधक न हो तो दोष को प्रतिलोम (इमाला) करने के लिये (१) वासलीक या हफ्त अदाम का सिरावेध कराये। तदुपरात (२) ४ तोला अमलतास को कासनी के फाडे हुए १० तोला रस मे मिलाकर प्रकृति मार्दव के लिये मिलायें। पुनः (३) चदन या (४) सुपारी या (५) गिल अरमनी या (६) काई या (७) जौ का आटा पानी मे पीसकर लेप करने से वहुत लाभ होता है। यदि ज्वर और शोथ भी हो तो (८) गुलरोगन या (९) रोगन बनफ्शा या (१०) स्त्री दुग्ध मे किंचित् रसवत् घोलकर कर्ण और नासिका मे टपकायें तथा सपूर्ण शिर पर अभ्यङ्ग करे। रोगनिवृत्त होने के उपरान्त मस्तिष्क को वल प्रदान करे।

सिद्ध योग (१) प्रलेप—जो इस प्रकार के दर्दसिर को नष्ट करता है—सफेद चदन १ तोला, लाल चदन १ तोला, सुपारी १ तोला, गिल अरमनी १ तोला, रेवदचीनी १ माशा, जौ का आटा २ तोला, वाकला का आटा २ तोला—सबको कूटकर हरी काई मे मिलाकर लेप करे। (२) गुल वनफ्शा, गुल नीलूफर, गुल खतमी, गुलावपुष्प प्रत्येक एक तोला के क्वाथ से पाशोया करे। जब मस्तिष्क मे शोथ हो गया हो और ज्वर न हो उस अवस्था मे निम्न प्रलेप योग लाभ करता है—(३) गुलनार फारसी १ तोला, समूचा मसूर २ तोला, गुलाब का फूल १ तोला, अनार का छिलका १ तोला, मेहदी के हरे पत्र ५ तोला, चिरायता १ तोला, फिटकिरी १ तोला—सबको कूटकर अनार के हरे पत्र के रस मे गूंधकर लेप करने से शोथ और सिरदर्द आराम होता है। परीक्षित है।

सुदाअ बैजी व खौजी

नाम—(अ०) सुदाअ बैजी, सुदाअ खौजी, (उ० हि०) सारे सिर का दर्द, खोपडी का दर्द; (अ०) ऑर्गेनिक हेडेक (Organic Headache), हेल्मेट हेडेक (Helmet Headache)।

हेतु—मस्तिष्क की तीनो झिल्लियो (वहिराभ्यतरिक) मे से किसी एक झिल्ली के नीचे दुष्ट दोष या साद्र बाष्प अवरुद्ध हो जाया करते हैं जो गौरव एव उद्वेष्टन के कारण अपने दूषित गुणो के द्वारा वेदना उत्पन्न करते हैं। दोष के विचार से कभी ये वाष्प रक्तज, कभी कफज, पित्तज या सौदावी होते हैं।

लक्षण—रोगजनक दोष के लक्षण के अतिरिक्त इसमे निम्न लक्षण साधारणतया पाये जाते हैं। साधारण वा मामूली कारण से दर्द बढ जाता है, जिसके दौरे तीव्र होते हैं। मस्तिष्क की दुर्वलता के कारण रोगी जोर के शब्द, प्रत्युत् सामान्य बातो के श्रवण से कष्ट पाता है। तीव्र प्रकाश से भी उसे कष्ट होता

है। उसे सदैव नीरवाधकार और एकातप्रिय होता है। वह विश्राम और शाति चाहता है। दौरे के समय रोगी अपने नेत्र नहीं खोल सकता। रोगी सदा यह अनुभव करता है, मानो कोई उसके सिर पर हथौडे मार रहा है या किसी चीज से सिर को फाड रहा है। रोगी दर्द की तीव्रता के कारण नेत्र खोलने मे असमर्थ होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम रोगजनक दोष का निर्णय करने के पश्चात् प्रगल्भ दोष का यथावत् शोधन करें याने दोष-पाचन और विरेचन से शरीर को शुद्ध करे। पुन विशिष्ट अग की शुद्धि करके प्रकृतिपरिवर्तन (सशमन) और मस्तिष्क बलवर्धन का यत्न करे। अस्तु, यदि रोगजनक दोष उष्ण हो तो साहब खुलासा के मतानुसार (१) पीली हडका वक्कल ७ माशा, (२) गुलबनफ्शा ६ माशा, गुलकदशकरी २ तोला मे मिलाकर कुछ काल पर्यन्त खिलाने से बहुत लाभ होता है। (३) अफीम ४ रत्ती, (४) एक माशा केसर के साथ सिरका मे पीसकर मस्तक पर लेप करने अथवा (५) कपूर १ माशा, (६) सफेद चदन ४ माशा अर्क गुलाब मे पीस कर मस्तक पर लेप करने से भी इस प्रकार का दर्द अवश्य आराम हो जाता है। इसी प्रकार (७) मग्ज रीठा ३ माशा एक माशा केसर के साथ पीसकर हुलास की भाँति उपयोग करने से लाभ होता है। (८) गुलबाबूना ७ तोला, (९) गुलनीलूफर १० तोला छ सेर पानी मे उबालकर सिर के ऊपर परिषेक करने से लाभ होता है। (१०) दम्मुल अख्वैन ६ माशा, बबूल का गोद ४ माशा, अफीम ४ रत्ती—सबको गरम पानी या सिरका मे पीसकर गोल छिद्र युक्त कागज पर लगाकर कनपुटियो पर चिपकाने से शीघ्र लाभ होता है।

यदि रोगजनक दोष शीतल हो तो साहब खुलासा के मतानुसार (११) काबुली हड ९ माशा, उस्तूखुद्दूस ६ माशा के साथ १५ तोला अर्क गुलाब मे क्वाथ बनाकर गुलकद असली मिलाकर पीना आशुलाभकारी है। इसी प्रकार (१२) मुर-मक्की ३ माशा, केसर १ माशा और अफीम ४ रत्ती—इनको नमक के पानी मे पीसकर मस्तक और कनपुटियो पर लेप करना या (१३) चुकदर के रस के कुछ बूंद नाक या कान मे टपकाना भी गुणकारी है। इसी प्रकार (१४) कस्तूरी का सूँघना शिर को शक्ति प्रदान करता है। यदि तीव्र वेदना के कारण आवाज बन्द हो जाय तो (१५) शिर पर गरम पानी का परिषेक गुणकारी होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) हब्ब हिंदी १ गोली प्रातः-सायकाल ताजे पानी से खिलाने से दर्दसर बैजा व खौजा दूर होता है।

सिद्धयोग—(१) रक्तज दर्दसर बैजा व खौजा के उपयोगी प्रलेप—शियाफ मामीसा ५ माशा, जौ का आटा १ तोला, मटर का आटा १ तोला, गुलबनफ्शा

१ तोला, सबको हरी कासनी के रस मे पीसकर लेप करने और घटे-घटे पर बदलते रहने से इस प्रकार का दर्द आराम होता है। (२) बलगमी वैजा के लिये चमत्कारी प्रलेप योग—मटर का आटा ३ तोला, जौ का आटा ३ तोला, एलुआ १ तोला, मुरमक्की १ तोला—सबको महीन पीसकर सिरका मे गूंधकर चमेली के तेल मे मिलाकर सिर के ऊपर लेप करे। (३) अजरूत १ तोला, सफेद चन्दन ४ तोला, अफीम ४ माशा—सबको हरे काहू के रस मे पीसकर पतला लेप करने से शीघ्र लाभ होता हे।

वक्तव्य—दर्दसर वैजी व खोजी वहुधा सर्द ही हुआ करता है। प्रारम्भ मे यदि उष्ण भी हो, तो यदि शीघ्र उपचार न किया जाय तो अत मे सर्दी के दर्द मे परिवर्तित हो जाता है। अतएव इसका उपचार कफज शिरशूल के सिद्धान्तानुसार करना चाहिये।

सुदाअ निस्फी, शकीका

नाम—(अ०) सुदाअ निस्फी, सुदाअ शकीका, शकीका, (उ०, हि०) आधासीसी, आधे सिरका दर्द, (स०) अर्धावभेदक, (अ०) हेमिक्रेनिया (Hemicrania), माइग्रेन (Mygraine)।

यह आवेग या दौरे से होने वाला सिर दर्द है जो साधारणत आधे सिर मे ओर कभी समस्त सिर मे होता है।

हेतु—सपूर्ण शरीर या शरीर के किसी एक अग से वाष्प उठकर सिर के दुर्बल भाग मे स्थान ग्रहण करते है अथवा विकृत दुष्ट दोष या साद्र वायु सचित हो जाते है। रोगजनक दोष प्राय धमनियो मे होता है।

लक्षण—जो दोष प्रगल्भ होता है उसके लक्षण पाये जाते हैं। यदि वायु इस रोग का कारण हो तो सिर हलका होता है। किसी प्रकार का बोझ प्रतीत नही होता। पर विकारी दिशा की ओर अधिक उद्वेष्टन प्रतीत होता है। कान बोलते और सनसनाते है। उष्ण एव वायुजनक पदार्थ के सेवन से दर्द बढ जाता है।

अससृष्ट द्रव्योपचार—रोगजनक दोष का निर्णय हो जाने के पश्चात् प्रगल्भ दोष का शोधन करे और मस्तिष्क को बलवान् बनाने का अधिक यत्न करें। पर रक्तज और पित्तज मे यदि अवस्था अनुकूल हो तो सराऊ या मस्तक अथवा नासिका की अन्य सिराओ का वेधन बहुत गुणकारी है। (१) आलूबोखारा १५ दाना या (२) इमली ३ तोला, १५ तोला जल या अर्कनीलूफर मे भिगोकर ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्वत गुलाव मिलाकर पिलाने से असीम लाभ होता है। (३) सिरका ३ माशा या (४) गुलरोगन १ तोला मे (५) एक माशा

अफीम मिलाकर मस्तक पर लेप करना या (६) कपूर १ माशा या (७) सफेद चदन ६ माशा हरे धनिये या कुलफा के रस मे पीसकर पतला लेप करने और सूँघने से शीघ्र लाभ होता है। यदि नीद न आती हो तो (८) सफेद पोस्ता का दाना १ तोला; अर्क गुलाब मे घोटकर सिर के ऊपर लेप करने से नीद आती और सिर-दर्द जाता रहता है। (९) स्त्री के दूध मे रोगन बनफ्शा मिलाकर नाक मे टपकाने से बहुत उपकार होता है। (१०) कासनी के बीज १ तोला या (११) सूखा धनिया २ तोला जल मे पीसकर ६ माशा सिरका और ५ तोला रोगन नीलूफर मिलाकर कपडा तर करके चंदियॉ पर रखना और सूखने न देना उष्ण अर्धावभेदक को नष्ट करता है।

अर्धावभेदक का उत्पादक दोष यदि शीतल कफात्मक या सौदावी हो, तो सामान्य और विशेष शुद्धि के उपरान्त जालीनूस के मतानुसार (१२) कबूतर की बीट किंचित् जल मे पीसकर मस्तक पर लेप करने से सर्दी से होने वाला अर्धावभेदक तुरत आराम हो जाता है। (१३) कबाब चीनी ४ माशा या (१४) नकछिकनी ४ माशा जल मे पीसकर नस्य लेने से लाभ होता हे। (१५) मग्ज रीठा को जल मे घिसकर नाक मे टपकाने से बडा लाभ होता है। इसी प्रकार (१६) ६ माशा कलमी शोरा अकेले या (१७) तीन माशा पीपल के साथ पीसकर दर्द के विपरीत दिशावाली नासिका मे नस्य देने से भी अतीव लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला, १० तोला अर्क सौफ के साथ खाने से वायुजन्य अर्धावभेदक आराम होता है। (२) हब्ब शिफा १ माशा, ७ तोला अर्क सौफ के साथ खाने से वायुजन्य एव उष्ण अर्धावभेदक नष्ट होता है। (३) गुलकद आफताबी २ तोला मे २ माशा रूमी मस्तगी मिलाकर प्रात काल सेवन करने से शीतल अर्धावभेदक अवश्य नष्ट होता है। (४) कुर्स मुसल्लस १ माशा, मेहदी के रस मे घिसकर मस्तक पर पतला लेप करने से शीतल अर्धावभेदक दूर हो जाता है।

सिद्ध योग--हिम वा फांट जो उष्ण अर्धावभेदक मे प्रयुक्त किया जाता हे गुलबनफ्शा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोडा १० दाना, खतमी के फूल ४ माशा, शाहतरा (पित्तपापडा) ६ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, बिहीदाना ३ माशा--समस्त द्रव्यो को २० तोला अर्क कासनी मे भिगोये और प्रात काल थोडा उबाल कर ३ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें। (२) अर्धावभेदकहर नस्य (सऊत)--अफीम १ माशा, जुदबेदस्तर २ माशा, कालीमिर्च ३ माशा, केसर २ माशा समस्त द्रव्यो को गाय के मक्खन मे पीस कर नस्य लेवें। (३) अर्धावभेदक के लिए परीक्षित--हरी मेहदी के पत्र, मुरमक्की, ऐलुआ, रसवत् मक्की

रसवत् हिंदी, बबूल का गोद, निशास्ता, सफेद अजरूत, सुक्कुल्मिस्क, कतीरा, सुपारी, पोस्त कुदुर, गुलनार फारसी, अकाकिया, दम्मुल् अख्वेन, गियाफ़ मामीसा प्रत्येक ३ माशा, अफीम ६ माशा, केसर २ माशा समस्त द्रव्यो को कूटकर हरी मेहदी की पत्ती के रस मे गूँध कर टिकिया बना लेवे। आवश्यकता पडने पर एक टिकिया अडे की सफेदी से मिलाकर गोल छिद्रयुक्त कागज पर लगाकर कनपुटी की धमनियो पर चिपकाये, आधा सीसी का दर्द तुरत जाता रहेगा।

इसाबा---दर्दे अबरू

नाम--(अ०) इसाब , (उ०) दर्द अबरू, भौ का दर्द , (स०) अनन्त वात, भ्रूपीडा , (अ०) टिक् डोलरो (Tic Douloureuse)।

हेतु--यह दर्द कभी दोनो भौओ और कभी एक भौ मे प्रगट हुआ करता है। उष्ण दोषो के वाष्पो का चढना या दर्द के स्थान मे किसी दोष का आवृत या अवरुद्ध हो जाना या दोषविरहित उष्णता की उपस्थिति आदि इसके हेतु है।

इसाबा और शकीका मे यह अन्तर है कि इसाबाजन्य कष्ट सूरज डूबने के बाद बहुत कम तो हो जाता है, पर सम्यक् नष्ट नही होता तथा रात्रि मे सिर बोझिल रहता है। परन्तु दोपहर के बाद प्रातःकाल तक रोगी को शकीका का कोई प्रभाव ज्ञात नही होता। जालीनूस ने एक और अन्तर का उल्लेख किया है कि शकीका सिर की लम्बाई मे होता है और इसाबा चौडाई मे। रोगी को नेत्र खोलने मे कठिनाई और बोझ प्रतीत होना और पट्टी बाँधने के स्थान अर्थात् भौओ मे प्रगट होना आदि इसके लक्षण है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--कब्ज (विष्टब्धता) की दशा मे प्रकृतिमार्दव (मृदु-विरेचन) के उपरान्त रोग यदि गर्मी से हो तो (१) यवमड या (२) माउल जुब्न पिलाने और (३) कपूर गुलरोगन मे घोलकर नस्य देने से बहुत लाभ होता है। यदि प्रतिश्याय के अवरुद्ध होने से वेदना प्रगट हुई हो तो (४) ८ माशा सनाय मक्की को ७ तोला अर्क गुलाब मे क्वाथ कर पिलाने तथा (५) छिली हुई मुलेठी ७ माशे का काढा अकेले या ५ माशा कासनी के योग से पिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार (६) बाबूना का उबाल कर गाढा-गाढा मस्तक पर लेप करने से असीम उपकार होता है। इसके अतिरिक्त (७) करपस के फूल सूख कर पीस लेवे और कपडे मे बाँध कर सुँघाये। छीके आकर लाभ होगा। यदि अधिक उपचार अपेक्षित हो तो उष्ण शिरःशूलवत् चिकित्सा करे। अम्ल औषधियाँ जिनमे अनारदाना, आलूबोखारा या इमली या सिरका आदि डालकर बनाये हो तथा यवमड एव (माउल्जुब्न) आदि इस रोग मे लाभकारी होते है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--उष्ण शिरःशूलवत्।

वक्तव्य--यदि छीक अधिक आये तो गुलाव के फूल का जीरा पीसकर नस्य लेने से वन्द हो जाती है।

हिस्स दिमाग

नाम--(अ०) हिस्स दिमाग; (उ०) खारिश दिमाग, (अ०) इर्रिटेबिलिटी ऑफ दि ब्रेन (Irritability of the Brain)।

इस रोग मे सिर मे दर्द नही होता, अपितु रोगी अपने मस्तिष्क मे खुजली अनुभव करता है। जब तक उसके मस्तिष्क को मलते रहें या उष्ण जल से परिषेक करें और सिर को धोयें या खुजलाते रहें, तब तक रोगी को सुखानुभ्व होता है।

हेतु--सपूर्ण शरीर वा शरीर के किसी विशिष्ट अग मे से किसी तीक्ष्ण कण्डूजनक दोष के वाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर चढते हैं, जो न्यून प्रमाण मे होने के कारण सिरदर्द तो नही उत्पन्न करते, प्रत्युत् उनकी तीक्ष्णता एव उष्णता से यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम सपूर्ण शरीर अथवा विशिष्ट अग से रोगजनक दोष का शोधन करके मस्तिष्क की ओर वाष्प चढने से रोकना चाहिए। अस्तु, (१) १ तोला मीठे बीहीदाना का लुआव या (२) ९ माशा छिले हुए काहू के बीजो का शीरा, १० तोला अर्क सौंफ मे निकाल कर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। या १० तोला अर्क नीलूफर या पानी मे निकाला हुआ (३) ९ माशे ईसवगोल का लुआव या (४) ६ माशा कनौचा के बीज का लुआब १ तोला शर्बत बनपशा या २ तोला शर्वत खशखाश मिलाकर पीने से शीघ्र लाभ होता हे। इसी प्रकार (५) तरबूज का रस १५ तोले मे १ तोला मिलाकर पीने से उपकार होता हे। (६) सिरका या (७) गुलरोगन मे कपडा तर करके सिर पर रखने या (८) १० तोला गुलबनफ्शा या (९) १० तोला गुलनीलूफर या (१०) १० तोला गुलबाबूना जल मे उबाल कर सिर के ऊपर परिषेक करना लाभकारी उपाय हैं। इसी प्रकार (११) रोगन वनफ्शा या (१२) बकरी का दूध सिर के ऊपर मलना लाभकारी है। (१३) जौ का आटा या (१४) गुलाव का फूल या (१५) सुदाव के पत्र इनमे से प्रत्येक को अलग-अलग पीसकर पोटली मे बॉधकर सिर के ऊपर सेक करने से शीघ्र लाभ होता है।

सिद्ध योग (१) सेक--जो मस्तिष्क के कण्डू को दूर करता हे--जौ का आटा १ तोला, सफेद चदन १ तोला, सफेद खतमी १ तोला और गुलाव के फूल, १ तोला--सवको सिरका मे पकाये और कुनकुना से टकोर करें। (२) चर्ण

जो मस्तिष्क की खुजली के लिये लाभकारी एव परीक्षित है--नीले रग का वश-लोचन १ तोला, सूखा धनिया २ तोला, पित्तपापडा के बीज २ तोला--समस्त द्रव्यो को कूटकर सबके बराबर चीनी मिलाकर उसमे से ९ माशा प्रति दिन १० तोला अर्क शाहतरा के साथ पीने से मस्तिष्क की खुजली अवश्य दूर होती है ।

दूसरा प्रकरण

सरसाम

नाम--(अ०) **सरसाम**, (उ०) **सरसाम, वर्म दिमाग**, (अं०) **सेरिब्राइटिस** (Cerebritis), **मेनिन्जाइटिस** (Meningitis) ।

वक्तव्य--सरसाम का धात्वर्थ (सर--शिर, मस्तिष्क, साम--शोथ, सूजन) मस्तिष्क की सूजन है। इस रोग मे मस्तिष्क के आवरण (झिल्लियाँ) या केवल मस्तिष्क और कभी दोनो शोथयुक्त हो जाते है। सशोथ और अशोथ भेद से यह रोग दो प्रकार का होता है--(१) **सरसाम हकीकी** जिसमे मस्तिष्क और उसके आवरण शोथयुक्त होते है और (२) **सरसाम गैर हकीकी** जिसमे वे शोथयुक्त नही, अपितु मस्तिष्क की ओर दूषित वाष्प चढकर सान्निपातिक अवस्था उत्पन्न कर देते है जिसमे रोगी प्रलाप करता और बडबडाता है। शोथजनक दोष के विचार से यद्यपि सरसाम हकीकी के यह चार अवान्तर भेद होते है--(१) सरसाम दम्वी या करानीतुस (शुद्ध फ्रानीतुस), (२) सरसाम सफरावी या करानीतुस खालिस, (३) सरसाम बलगमी या लीसर्गुस और (४) सरसाम सौदावी या लीसार्गुस, तथापि इनमे से प्रथम दो भेदो को कोई **सरसाम हार्र** और अतिम दोनो को **सरसाम बारिद** भी कहते है। सरसाम का आयुर्वेदोक्त सन्निपात ज्वरो मे अन्तर्भाव हो सकता है। पाश्चात्य वैद्यक मे मस्तिष्क शोथ तथा मस्तिष्कावरणशोथ उभय परस्पर भिन्न रोग माने जाते है। अत मस्तिष्क शोथ को सेरिब्राइटिस या फ्रीनाइटिस (अ० फ्रानीतुस) और मस्तिष्कावरण शोथ को मेनिन्जाइटिस तथा दोनो की सूजन को सेरिब्रोमेनिन्जाइटिस और सरसाम गैर हकीकी को डेलीरियम् (प्रलाप) कहते है।

सरसाम हार्र (उष्ण सरसाम)

नाम--(अ०) **सरसाम दम्वी, फ्रानीतुस**, (उ०) **वरम दिमाग गर्म, खूनी सरसाम**, (हिं०) **रक्तज सरसाम**, (अं०) **ॲक्यूट सेरीब्राइटिस** (Acute cerebritis) ।

(अ०) सरसाम सफरावी, फ्रानीतुस खालिस, (उ०) **शदीद सरसाम**;

(हि०) पित्तज सरसाम , (अ०) ॲक्यूट मेनिन्‌जाइटिस (Acute Meningitis) ।

हेतु और लक्षण—यह रोग प्राय रक्तज या पित्तज हुआ करता है। इनमे से रक्तज सरसाम (सरसाम दम्वी) मे निरतर ज्वर एव शिरोगौरव होता है। चेहरे, जिह्वा एव नेत्र का लाल (सुर्ख) होना, हँसना तथा अश्रुस्राव आदि इस रोग के प्रधान लक्षण है। पित्त के सरसाम (सरसाम सफरावी) मे ज्वराधिक्य एव रक्तज सरसाम की अपेक्षया इसमे शिर का हलका रहना, अनिद्रा, नासिकाशोष एव कण्ठशोष, चेहरा, जिह्वा तथा नेत्र का पीला होना एव क्रोध आदि इसके प्रधान लक्षण है। परन्तु, विवेक एव बुद्धिभ्रंश, अविराम ज्वर, हृदय की धडकन, श्वास एव नाडी की गति त्वरित होना प्रभृति दोनो मे मिलने वाले सम्मिश्र लक्षण हैं।

चिकित्सा-सूत्र—सरसाम रोग मे जब बुद्धि मे विकार आने लगे तथा कोई बात निषेधक न हो तो कीफाल या अकहल अथवा बासलीक मे से किसी का सिरा-वेध कराना या पिंडलियो पर पछने लगाकर सींगी लगवाना तथा हाथ-पॉव बॉधना और मलना, पादस्नान (पाशोया) करना और बस्ति देना जीवन-रक्षा के उत्तम उपाय है। गर्म या शीतल पदार्थ सुँघाना तथा सिर को शक्ति देने का ध्यान रखना जरूरी है। अनिद्रा एव ज्वर इस रोग के प्रधान लक्षण है। अतएव, ज्वर का ध्यान रखते हुए रोगी को नींद लाने का यत्न करना चाहिए। कभी-कभी सरसाम के रोगी मे नींद की प्रगल्भता होती है। अतएव, मूत्र जारी करने का उपाय करना चाहिए। सरसाम रोगी का मुँह टेढा हो जाना तथा नेत्रो से अश्रु बहना विशेषत एक नेत्र से या जलवत् मूत्र आना असाध्यतासूचक लक्षण है। सरसामरोग मे जगारवत् हरे रग का वमन होना, आक्षेप उत्पन्न हो जाना मरण-सूचक चिह्न है। नेत्र का भीतर धँस जाना, कृच्छ्रश्वास वा अविच्छिन्न श्वास और विड्मूत्रता भी मरणसूचक लक्षण है। यदि शोथ मस्तिष्क के भीतर उत्पन्न हो जाय तो सामान्यत चार दिन के भीतर रोगी मर जाता है। यदि इससे बच निकले तो जीवन की आशा हो सकती है। सभी प्रकार के सरसाम मे असम्बद्ध भाषण और सताप की विद्यमानता समान रूप से पाये जाने वाले (सम्मिश्र) लक्षण है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—इन उभय भेदो की चिकित्सा मे केवल इतना ही अन्तर है कि रक्तज मे दोषविलयन और शमन की अधिक आवश्यकता होती हे तथा बहुत शीतल पदार्थो से परहेज आवश्यक होता है। इसके विपरीत पित्तज मे सताप और पित्त की तीक्ष्णता के शमन का अधिक प्रयास करना चाहिए। यदि कोई बात निषेधक न हो तो रक्तज मे कीफाल एव बाहलीक का सिरावेध करना

और पित्तज मे दोषपाचन औषधि आदि मिलाकर विरेचन देना आवश्यक हुआ करता है। चिकित्साकाल मे रोग एव रोगी की अवस्था तथा रोग के उपद्रवो को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। अस्तु।

(१) ताजे तरबूज के एक पाव स्वरस मे मिश्री मिलाकर पिलाना बहुत गुणकारी है। (२) १० तोले अर्क नीलूफर या अर्क कासनी मे १ तोला इसबगोल का लबाव निकाल कर २ तोला शर्बत खशखाश या उतना ही शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाना भी गुणकारक है। (३) आलूबोखारा १० दाना या (४) इमली ३ तोला, अर्क गावजबान १५ तोला या अर्क गुलाब १५ तोला मे भिगोकर विना मले उसके ऊपर का निथरा हुआ पानी छानकर २ तोला मीठे अनार का शर्वत मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (५) ९ माशा कुलफा के बीज का शीरा या (६) १ तोला मीठे कद्दू के बीज की गिरी का शीरा या (७) १ तोला खीरा-ककडी के बीज की गिरी का शीरा या (८) २ तोला तरबूज के बीज की गिरी का शीरा, इनमे से किसी एक पर ९ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पीने से अतीव लाभ होता है। (९) हरे काहू के पत्र दो छटॉक या (१०) हरे सोआ के पत्र दो छटॉक या (११) पोस्ते की डोडी पॉच तोला या (१२) कद्दू एव खीरा-ककडी का कतरा हुआ गूदा आदि जल मे उबालकर गुलरोगन मिलाकर शिर के ऊपर धरने से शीघ्र उपकार होता है। (१३) गुलबनफ्शा या (१४) गुलनीलूफर या (१५) गुल दावूना, इनको जल मे उबालकर उस जल मे पैर रखने तथा उनको मलने से भी उपकार होता है। इसी प्रकार (१६) इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) या (१७) गेहूँ की भूसी या (१८) वेर की हरी पत्ती के साथ जल मे उबाल कर पॉच तोला गुलरोगन या रोगन वनफशा मिलाकर शिर एव ग्रीवा के ऊपर धरने (परिषेक करने) तथा पाशोया (पादस्नान) करने से भी वडा लाभ होता है। (१९) पाँच तोला गुलरोगन को दो तोला सिरका, ऽ। अर्क गुलाव या हरी कासनी अथवा हरे कुलफा के स्वरस मे मिलाकर उसमे कपडा भिगोकर चदिया पर रखने तथा उसे शुष्क न होने देने (निरतर तर रखने) से वडा लाभ होता है। (२०) रोगन वनफ्शा या (२१) रोगन नीलूफर या (२२) रोगन कद्दू या (२३) स्त्री का दूध शिर के ऊपर मर्दन करने या नाक मे टपकाने से शीघ्र लाभ होता है। (२४) शुद्ध कपूर २ माशा या (२५) सफेद चन्दन ६ माशा अर्क बेदमुश्क मे घिसकर गुलाव का इत्र या चमेली का इत्र अथवा खस का इत्र १ माशा मिलाकर सुँघाने से असीम उपकार होता है।

सिद्ध उपाय—मूँग का आटा ऽ।, शुद्ध गोदुग्ध ऽ। दोनो को गूँधकर तवे पर छोडें। जब एक ओर से पक जाय, तब दूसरे कच्चे ओर गुलरोगन लगा लेवे।

पुन शिर को भी गुलरोगन से तर करके उक्त रोटी को उसके ऊपर बाँधे। कई बार यह प्रयोग करने से सरसाम आराम हो जाता है। उसके लिये यह सिद्ध भेषज है। इसके अतिरिक्त बनफ्शा, भूसी दूर किया हुआ जौ और इक्लीलुल्-मलिक के क्वाथ से परिषेक करना तथा शर्बत बनफ्शा पिलाना मुवैदी के सिद्ध प्रयोगो के अतर्भूत है।

ससृष्ट द्रव्योपचार (योगचिकित्सा)--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला को अर्क गावजबान १० तोला के साथ खिलाना सरसाम गैर हकीकी के लिये सिद्ध औषधि है। (२) अतरीफल कबीर ९ माशा को १० तोला अर्कगुलाब के साथ खिलाना सरसाम बलगमी को नष्ट करने के लिये परीक्षित एव गुणकारी है। (३) इयारज फैकरा ३ माशा या इयारज लूगाजिया ३ माशा को ७ तोला अर्क सोंफ के साथ खिलाने से सरसाम बलगमी के दोष का निर्हरण करता है। (५) हब्ब अफतीमून १ माशा को प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क बादियान १२ तोला मे ३ तोला शर्बत बादरजबूया मिला करके मिलाना सरसाम सौदावी के लिये साहब रुमूज का परीक्षित है। यदि सरसाम हार्र मे विरेक हो रहे हो, तो (६) कुर्स तबाशीर काबिज १ माशा, ५ तोला अर्क कासनी, ५ तोला अर्क बादियान के साथ उपयोग करने से उपकार होता है।

उष्ण सरसामोपयोगी सिद्ध योग

(१) अर्क नीलूफर, अर्क मकोय और अर्क केवडा प्रत्येक ५ तोला, इनमे ३ माशा बिहदाना शीरी का लबाब तथा ४ माशा कुलफा के बीज, ४ माशा काहू, ६ माशा मीठे कद्दू के बीज की गिरी इनका शीरा निकालकर शर्बत नीलूफर मिलाकर और ४ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलाने से सरसाम सफरावी मे उपकार होता है। (२) अर्क गावजबान मुरक्कब ५ तोला और अर्क नीलूफर १० तोला, इनमे ६ माशा तरबूज के बीज का शीरा और १ तोला इसबगोल का लबाब निकालकर उसमे ४ माशा तुख्म बालगू (तूतमलगा) का प्रक्षेप देकर पिलाने से पैत्तिक सरसाम आराम होता है। (३) मीठे कद्दू के बीज का मग्ज ३ तोला, खीरा-ककडी के बीज का म ज ३ तोला, तरबूज के बीज का मग्ज ३ तोला, कुलफा के काले बीज ३ तोला ; सब द्रव्यो को कूट-छानकर चूर्ण बनावे। इसमे से १ तोला प्रति दिन यवमड के साथ खिलावें। यह उष्ण (रक्तज एव पित्तज) सरसाम के लिये सिद्ध औषध है। (४) खीरा का ताजा छिलका ५ तोला, कद्दू का ताजा छिलका, मकोय की हरी पत्ती, बेदमुश्क की हरी पत्ती, सफेदचदन, नीलूफर, काहू के बीज, तरबूज के बीज का मग्ज। समस्त द्रव्यो को सिरका

और अर्क गुलाब से पीसकर गुलरोगन एव शुद्ध कपूर मिलाकर शिर के ऊपर लेप करने से खालिस पैत्तिक सरसाम मे उपकार होता है। (५) रक्तज एव पित्तज सरसाम नाशक आघ्राण औषध (लखलखा) —सफेद और रक्तचदन १ तोला को अर्कगुलाब मे घिसकर शुद्ध कपूर मिलाकर तथा ताजा खीरा का स्वरस, हरे धनिये का स्वरस, रोगन बनफ्शा, रोगन नीलूफर और गुलरोगन मिलाकर आघ्राण औषध (लखलखा) की भाँति उपयोग करने तथा इसी को नाक मे सुडकने से उक्त रोग मे उपकार होता है। यह परीक्षित है।

सरसाम बारिद (शीत सरसाम)

नाम—कफज सरसाम , (अ०) सरसाम बलगमी, लीसुर्गुस, (उ०) वरम दिमाग सर्द , (अ०) क्रॉनिक सेरीब्राइटिस (Chronic Cerebritis)।

सरसाम सौदावी : (अ०)सरसाम सौदावी, लीसार्गुस , (उ०) खफीफ सरसाम , (अ०) क्रॉनिक मेनिन्जाइटिस (Chronic Meningitis)।

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का सरसाम श्लैष्मीय या सौदावी दोष की उल्वणता से होता है। सौदाकी उल्वणता से होने वाले सरसाम मे रोगी घबडाता, बहकता, बडबडाता, व्याकुल एव चिंतित रहता और रोता है। जिह्वा, कण्ठ और मस्तिष्क ही नही, अपितु उसके समस्त शरीर मे रूक्षता रहती है। नेत्र भीतर की ओर धँस जाते है। ज्वर हलका, किन्तु चौथे दिन बारीके दिन तीव्र होता है। नाडी कठिन, कसीर एव मुतफावुत होती है। कफज सरसाम मे ज्वर मृदु किन्तु अविसर्गी होता है। तन्द्रा और विस्मृति का प्राबल्य होता है। मुख से अधिक लालास्राव होता है। नाडी अजीम और मुतफावुत होती है।

चिकित्सासूत्र—यदि रोगी को नींद नही आवे तथा ज्वरमोक्ष के लक्षण (बोहरानी अलामात) भी न पाये जायँ, तो यथासभव ऐसे उपाय करने चाहिए, जिससे रोगी को निद्रा आ जाय और वह सो जाय। अतएव , शर्बत खशखाश या श्वेत खशखाश के बीज का शीरा अथवा पोस्ते की समूची डोडी का काढा पिलाने से रोगी को निद्रा आ जाती है। इसी प्रकार रोगन खशखाश या रोगन काहू का शिरोऽभ्यग या नाक मे सुडकना उष्ण सरसाम मे गुणकारी है तथा निद्रा उत्पन्न करता है। पोस्ते की डोडी के क्वाथ का शिर के ऊपर परिषेक भी निद्राकारक है।

कभी प्रकृति के दुर्बल होने से तथा शीतल वाष्प मस्तिष्क की ओर चढने से गभीर निद्रा का जोर होता है। यदि मोक्ष (बोहरान) के लक्षण नहीं पाये जायँ, तो रोगी के जगाने के आवश्यक उपाय काम मे लाये जायँ। यदि रोग

अवरोह काल (घटने की दशा) मे हो और प्रलाप शेष हो, तो उक्त अवस्था मे स्त्री के दूध या बकरी के दूध का शिरोऽभ्यग तथा सूखने पर उष्ण जल एव अन्यान्य उपयोगी औषधियो के काढे का परिषेक गुणकारी है। इस प्रयोग का बारबार उपयोग करने से सम्यक् लाभ हो जायगा।

कभी ऐसा होता है कि सरसाम दम्वी सरसाम बलगमी की ओर स्थानान्तरित हो जाता है और इस दशा मे कुछ दोष कण्ठ एव जिह्वा के ऊपर गिरता है, जिससे रोगी किसी प्रकार का शब्दोच्चार नही कर सकता है। वाणी सर्वथा बन्द हो जाती है। उक्त अवस्था मे गुल बाबूना, इक्लील-ुल्मलिक, गुलबनफशा, गेहूँ की भूसी आदि से क्वाथ कल्पना करके शिर एव ग्रीवा के ऊपर उससे परिषेक करना तथा बाष्प स्वेद लेना, रोगन बाबूना जैसे दोष-विलयन कोष्ण किये हुए तेलो का अभ्यङ्ग करना बहुत गुणकारी है।

सरसाम मे देहशुद्धि तथा मलावरोध निवारण के लिए विरेचन देने की अपेक्षया वस्ति का उपयोग कही अधिक श्रेयस्कर एव समीचीन है। मस्तिष्कगत दोषो को शरीर के निम्न भाग की ओर आकृष्ट करने के लिये पिडलियो पर पछने लगाकर सीगी लगाना, लवण के महीन चूर्ण वा कोष्ण बालुका (रेत) से तलुवो को मलना या पाशोया करना अथवा हस्त-पाद बाँधना उत्तम उपाय है।

उपचार-चिकित्सा

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि कोई निषेधक न हो तो सौदावी सरसाम मे प्रथम सिरावेध उचित है। तदुपरात सौदापाचन और विरेचन के पश्चात् मस्तिष्क मे शीत एव तरावट पहुँचाने तथा प्रकृति परिवर्त्तन (शमन) का उपाय करना चाहिए। इस हेतु (१) १० तोला यवमड मे जो बहुत अम्ल न हो ऐसा २ तोला सिकजबीन मिलाकर पिलाना उचित है। इसी प्रकार (२) १० तोला छेने के पानी मे ३ तोला शर्बत आलबोखारा मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। इनके अतिरिक्त (३) मुर्गी या (४) कबूतर का वध करके उसका ताजा गरम-गरम रक्त रोगी के शिर पर डालना और (५) उसका उदर विदीर्ण करके तथा उसे अन्त्र आदि से शुद्ध करके गरम-गरम रोगी के शिर पर बाँधना और शीतल होने तक बाँधे रखना तथा आवश्यकतानुसार बारबार इसका प्रयोग करना, इनमे से प्रत्येक पृथक्-पृथक् उत्तम उपाय है। (६) ५ तोला गुलरोगन को २ तोला सिरका और पाव भर अर्कगुलाब मे मिलाकर उसमे स्वच्छ वस्त्र का टुकडा या स्पज का टुकडा तर करके शिर के ऊपर धारण करने से शीघ्र उपकार होता है। इसी प्रकार (७) रोगन बनफ्शा ३ तोला या (८) रोगन बाबूना ३ तोला मे सिरका और खतमीका लुआब मिलाकर शिर के ऊपर उसमे भिगोई हुई रुई या

वस्त्रखड धारण करना—फाहा रखना या (९) वकरी के दूध मे कपडा तर करके शिर के ऊपर धारण करना लाभकारी एव परीक्षित है।

सरसाम बलगमी मे यदि कोई निषेधक न हो तो, सरारू नाम्नी सिराका वेध करना तथा दोषपाचन एव विरेचन के उपरात मस्तिष्क को बल प्रदान करना तथा प्रकृति परिवर्तन (सशमन) करना आवश्यक है। प्रतिदिन प्रात काल (१) रूमी मस्तगी २ माशा या (२) उस्तूखुद्दूस ४ माशा पीसकर २ तोला मधु-घटित गुलकद मे मिलाकर खिलाना गुणकारी है। इसी प्रकार (३) जुदबेद-स्तर १ रत्ती या (४) लौग १ माशा या (५) जदवार खताई १ माशा, इनमे से प्रत्येक को अलग-अलग पीसकर १ तोला खमीरा गावजवान अबरी मे मिलाकर खिलाने से शीघ्र लाभ होता है। शोथ के प्रारभ मे (६) सिरका (७) गुल-रोगन मे मिलाकर शिर पर लगाने से उपकार होता है। तीन दिन के बाद (८) वनफलाण्डुघटित शुक्त (सिरकाए अन्सल) मे गुलरोगन और जुदबेदस्तर मिलाकर शिर पर अभ्यग करें और (९) १ तोला अकरकरा को २ तोला सफेद मिर्च और १ तोला बूरए अर्मनी के साथ मैदा के समान महीन पीसकर जैतून के तेल मे मिला कर सपूर्ण शरीर पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। (१०) सोआ के हरे पत्र ऽ। पाव भर या (११) मकोय के हरे पत्र ऽ। पाव भर या (१२) पोस्ते की डोडी १० तोला, इनमे से प्रत्येक को पृथक्-पृथक् लेकर जल मे उबालकर गुलरोगन मिलाकर शिर के ऊपर परिषेक वा तरेडा करने एव बाष्प-स्वेद करने से उक्त रोग मे लाभ होता है तथा यह परीक्षित है। इस रोग मे विस्मृति (भूल) का प्राधान्य होता है। अतएव, रोगी को मलमूत्र के लिये सचेत करते रहना चाहिए तथा बस्तिस्थान के ऊपर परिषेक करना आवश्यक है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अनीसून, तुख्म करफ्स और गुठली निकाला हुआ मुनक्का इनका काढा करके इस काढे के साथ २ तोला इयारज लूगाजिया खिलाने से शीत, स्वाप (सुन्नता) एव कम्प की दशा मे बहुत उपकार होता है। (२) गुठली निकाले हुए मुनक्का के शीरा के साथ ७ माशा अतरीफल कबीर खिलाने से सरसाम बलगमी मे लाभ होता है। यह परीक्षित है। (३) मस्तिष्क सशोधनोपरात मस्तिष्क को बल देने तथा हृदय को प्रफुल्लित करने के लिये १ तोला खमीरा गावजवान अबरी या सादा ७ तोला अर्क गावजवान के साथ खिलाना अनुपम भेषज है। (४) १ तोला माजून फलासफा १० तोला अर्क गावजवान के साथ देने से इस रोग मे शीघ्र लाभ होता है। इसी प्रकार १ तोला माजून फलाफली का सेवन भी गुणकारी है।

शीत सरसामोपयोगी सिद्ध योग

(१) सौदावी और बलगमी उभय प्रकार के सरसाम के लिये सिद्ध क्वाथ

योग--गुलबनफ्शा ६ माशा, गुल नीलूफरा ६ माशा, विलायती अजीर ३ दाना, बादरजबूया ६ माशा, उस्तूखुद्दूस ६ माशा, खतमी के बीज ६ माशा, खुब्बाजी ६ माशा, लिसोढा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ११ दाना, मुलेठी ६ माशा, इनका अर्क गावजबान १० तोला और अर्क सौफ १० तोला मे क्वाथ करके छान लेवे। पुन. इस क्वाथ मे ३ तोला शर्वत बनफ्शा मिलाकर पिलावे। कफज सरसाम मे परीक्षित सिद्ध प्रलेप योग--जुदबेदस्तर ३ माशा, अकरकरा १ तोला, पुदीना १ तोला, हाशा १ तोला, नमाम १ तोला, नतरून ५ तोला। समस्त द्रव्यो को उष्ण जल मे पीसकर बनपलाण्डुघटित सिरका (सिर्कए अन्सल) और जैतून का तेल मिलाकर लेप करे। (३) सरसाम सौदावी तथा मस्तिष्क की रूक्षता के लिये लाभकारी प्रलेप योग--कद्दू के बीज का मग्ज १ तोला, तरबूज के बीज की गिरी १ तोला, नीलूफर १ तोला, बनफ्शा १ तोला, स्त्री वा बकरी के दूध मे पीसकर लेप करे। (४) सरसाम बलगमी के लिये आशुफलदायक परिषेक योग--गुल बाबूना १ तोला, इक्लीलुल्मलिक १ तोला, मर्जञ्जोश १ तोला, हरे रैहाँपत्र ५ तोला, पुदीना के हरे पत्र ५ तोला, सोआ के हरे पत्र ५ तोला, गुल-बनफ्शा १ तोला, मुलेठी १ तोला और बादरजबूया १ तोला। समस्त द्रव्यो को जल मे उबालकर, इस कोष्ण काढे से शिर परिषेक करे।

सरसाम मजाजी

नाम--(अ०) सरसाम मजाजी सरसाम गैर हकीकी; (उ०) झूठा सरसाम, (अ०) डेलीरियम (Delirium)।

हेतु और लक्षण--कभी ऐसा होता है कि इतर अगो मे तीव्र बलवती व्याधियाँ प्रगट होती है अथवा सतत (मोहरिका) एव नियतकालिक (बारीके) ज्वर उत्पन्न होते है, जिनके कारण सपूर्ण शरीर अथवा विशिष्ट स्थान से वाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर चढते है तथा अपने दूषित गुण से प्रलाप एव बुद्धिभ्रश आदि जैसे सरसामी लक्षण उत्पन्न करते है। मस्तिष्क सर्वथा शोथरहित होता है। इसको 'सरसाम मजाजी' या 'गैर हकीकी' कहते है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--कारण को दूर करना (निदान परिवर्जन) और जिस अग के अनुबध से ये उपद्रव उत्पन्न हुए हो, आवश्यकतानुसार उसकी शुद्धि एव प्रकृति परिवर्तन करना तथा बलवर्धन एव शीतजनन का यत्न करना जरूरी है। इस हेतु (१) उक्त अवस्था मे १५ तोला अर्क नीलूफर मे ३ तोला इमली भिगोकर १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। या (२) १५ तोला अर्क गावजबान मे १५ दाना आलूबोखारा भिगोकर ऊपर से निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से उपकार होता है।

या (३) १५ तोला अर्क सौंफ मे ९ माशा छिले हुए काहू के बीजो का शीरा बना करके मीठे अनार का शर्बत २ तोला मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार (४) शुद्ध कपूर ३ माशा, अर्क बेदमुश्क या अर्क गुलाब मे मिलाकर सूँघना गुणकारी है। (५) रोगन नीलूफर मे सिरका और अर्क गुलाब मिलाकर उसमे कपडा भिगोकर शिर पर धारण करने से उत्तम फल होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) इस रोग मे अर्क गुलाब १० तोला या अर्क गावजबान ७ तोला या अर्क बेदमुश्क ५ तोला के साथ प्रति दिन २ तोला अतरीफल कश्नीजी खिलाने से उपकार होता है। (२) पैत्तिक गैर हकीकी सरसाम मे अर्क गावजबान ९ तोला के साथ १ तोला जुवारिश अनारैन खिलाने से उपकार होता है। (३) खमीरा गावजबान अवरी १ तोला या खमीरा गावजबान सादा २ तोला अर्क गुलाब ५ तोला तथा अर्क बेदमुश्क २ तोला के साथ देने से सताप का नाश होता है तथा हृदय एव मस्तिष्क को बल प्राप्त होता है। (४) मस्तिष्क को बल देने एव हृदय को प्रफुल्लित करने के लिये दोषानुसार ७ तोला अर्कगावजबान के साथ ५ माशा दवाउल्मिस्क हार या वारिद खिलाने से लाभ होता है।

तीसरा प्रकरण

माशिरा

नाम—(अ० या तिब्बी) माशिरा, (स०) मुखगत विसर्प, (उ०) वरम चेहरा, (अ०) फेशियल इरिसिपेलस (Facial Erysipelas)।

हेतु—एक प्रकार का शोथ जो पित्तमिश्र रक्त से उत्पन्न होता है। इसी कारण इसमे अधिक तीक्ष्णता होती है। यह शोथ बहुधा चेहरे और मस्तक पर, परन्तु कभी शिर के बहिराभ्यतरिक सभी भागो मे उत्पन्न हो जाता है, प्रत्युत् कभी इससे भी बढकर वक्ष (सीना) की ओर बढता है।

लक्षण—पहली अवस्था मे मुँह लाल हो जाता, नेत्र बाहर की ओर उभरे होते, जी मिचलाता, उकाइयाँ आती, तृष्णाधिक्य, बेचैनी, वेदना और सतापवृद्धि होती है। दूसरी अवस्था मे रोगी को ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसके शिर की अस्थियाँ फटकर भिन्न हुई जाती है। उपर्युक्त लक्षण तीव्ररूप मे व्यक्त होते है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—इसका उपचार भी रक्तज शिर शूल एव रक्तज सरसाम की भाँति करना चाहिए। यदि कोई बात निषेधक न हो तो सरारू से अपेक्षाकृत कुछ अधिक प्रमाण मे रक्त निकाले। तदुपरात (१) खट्टे अनार का रस ५ तोला या (२) मीठे अनार का रस ७ तोला मे ४ माशा वशलोचन के

चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलाये। इसी प्रकार (३) ५ तोला अर्क गुलाब मे १ तोला कुलफा के काले बीजो का शीरा निकालकर २ तोला सिकजबीन सादा मिलाकर पिलाना भी गुणकारी है। इसी प्रकार (४) इमली ३ तोला या (५) आलूबोखारा १५ दाना १५ तोला अर्क गावजबान या जल मे भिगोकर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर मीठे या खट्टे अनार का शर्बत २ तोला मिलाकर ३ माशा पिसे हुए वशलोचन के चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलाना कृत प्रयोग है। तथा (६) लाल चदन १ तोला या (७) सफेद चन्दन १ तोला ७ तोला हरे धनिये के रस मे घिसकर शिर तथा मस्तक पर पतला लेप करना अथवा (८) हरे कासनी का रस ९ तोला या (९) हरे कुलफा का रस ९ तोला या (१०) हरे मकोय का रस ९ तोला या (११) अर्क गुलाब ऽ। पाव भर मे शुद्ध सिरका ५ तोला और गुलरोगन १५ तोला या रोगन नीलूफर १५ तोला सब या इनमे से कुछ को मिलाकर शिर के ऊपर फाया (तूलपिचु) रखना तथा इसे शुष्क न होने देना आशुप्रभावकारी उपाय है। (१२) कपूर ३ माशा, अर्क गुलाब मे घिसकर चेहरे और शिर पर मलना आशुफलप्रद है। यदि मलावरोध दूर करना तथा प्रकृति को मृदु करना अभीष्ट हो, तो फलो के रस मे ४ तोला तरजबीन मिलाकर देना भी गुणकारी है। परतु, यह स्मरण रहे कि जब प्रकृतिमार्दवकर का उपयोग करे तो चदनद्वय या सुपारी और अकाकिया या रसवत और गिल अरमनी आदि हरे धनिया या कुलफा या काहू और मकोय के स्वरस मे पीसकर वक्ष (छाती) के ऊपर लेप कर देना चाहिए, जिसमे यहाँ पर दोष (माद्दा) न गिरे।

ससृष्ट द्रव्योपचार—सम्यक् शुद्धि के उपरात कुर्स तबाशीर मुलय्यिन ३ मा० प्रतिदिन ७ तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिकजबीन सादा के साथ खिलाना चाहिए। यह परीक्षित है।

मुखगत विसर्पोपयोगी सिद्ध योग

(१) कपूर कैंसूरी २ माशा, वशलोचन ७ माशा, तर्बूज के बीज का मग्ज ७ माशा, कद्दू के बीज का मग्ज ७ माशा, गिल अरमनी ७ माशा, सफेद चदन ७ माशा, सूखा धनिया ७ माशा—इनको कूट-पीसकर गोलियाँ बनाये। इसमे से प्रतिदिन २ माशा प्रथम खाकर काहू के छिले हुए बीजो का शीरा, खीरा-ककडी के बीजो का शीरा, छिले हुए जौ का शीरा, इसबगोल का लुआब प्रत्येक ७ माशा ताजे जल मे निकाल कर सादा सिकजबीन मिलाकर पीना परम प्रयोगकृत है।

(२) **अनुभूत प्रलेप**—लाल चदन ३ माशा, गिल अरमनी ४ माशा, शियाफ मामीसा ४ माशा, रसवत् मक्की ४ माशा, खडिया मिट्टी ४ माशा, कपूर कैसूरी १ माशा—इनको हरी कासनी, मकोय और काहू की पत्तियो के स्वरस मे पीसकर शुद्ध सिरका मिलाकर लेप करे।

चौथा प्रकरण

सदर व दवार

नाम--सदर (अ०) सदर, (स०) समोह, मोह, (हि०, उ०) आँखो के सामने अँधेरा छा जाना। (अ०) गिड्डिनेस (Giddiness)।

दवार (अ०) द (दु) वार, (स०) भ्रम, मोह, (हि०) चक्कर, सिर घूमना (चकराना), चक्कर आना, (उ०) दौराने सर, (अ०) वर्टिगो (Vertigo)।

हेतु और लक्षण--जब अप्रकृत वा विकृत दोष या वाष्प और वायु (रियाह) स्वय शिर वा मस्तिष्क मे उद्भूत होकर अथवा अन्यान्य अगो से मस्तिष्क की ओर चढकर अप्रकृतगति करते है, तब ओज (रूह) भी उनके विपरीत चेष्टा करता है। इन दोनो के सघर्ष से यह रोग उत्पन्न हो जाता है अथवा श्लैष्मिक दोषो के सचय से यह रोग उत्पन्न हुआ करता है। इस रोग को उत्पन्न करने वाला दोष कभी तो मस्तिष्क और कभी आमाशय मे होता है। कफज रोग मे नाडी की मदता, शिरोगौरव, मुख मे पानी आना, तृष्णा की न्यूनता, (हवास का मुकद्दर होना) तथा अतिनिद्रा आदि लक्षण होते है। इसका उत्पादक दोष तो बहुधा श्लेष्मा होता है, परतु कभी अन्यान्य दोष भी इसके उत्पादक हुआ करते है। प्रत्येक दोष को उनके विशिष्ट लक्षणो के द्वारा जाना जा सकता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--जनक दोषो का शोधन करने के उपरात यदि रोग का हेतु सौदावी बाध हो तो (२) नीबू चूसना या धनिये का माज १० तोला पीसकर यथावश्यक चीनी मिलाकर प्रतिदिन खिलाना या एक सप्ताह तक प्रति दिन (३) गुलाब का शर्बत २ तोला जल मे घोलकर पीना लाभकारी उपाय है। इसी प्रकार (४) सूखे धनिये के मग्ज १ तोला को एक रात-दिन सिरका मे भिगोकर सूखने के उपरात पीसकर लगभग चीनी मिलाकर तीन-चार दिन तक शुद्ध जल के साथ सेवन करने से उपकार होता है। इसके अतिरिक्त (५) ७ माशा खशखाश के बीज का शीरा या (६) ३ माशा सूखे धनिये का शीरा मीठा मिलाकर पीने से अद्भुत लाभ होता है। गर्मी के सदर व दवार रोग मे (७) ९ माशा सफेद चदन अर्क गुलाब मे पीसकर पीने से उपकार होता है। किन्तु, इसके साथ (८) रेंड की पत्तियो के काढे से हाथ-पैर धोया करें। तीन दिन तक इसका प्रयोग चालू रखने से सम्यक् लाभ होगा। मस्तिष्क दौर्बल्य के कारण हो तो (९) आँवले का मुरब्बा एक नग (१०) सेब का मुरब्बा (फलखण्ड) १ तोला सेवन कराएँ। (११) उक्त व्याधि के समस्त भेदो मे सूखे धनिये का चबाना और आहारो मे पुष्कल मिलाना असीम गुण करता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) भ्रम (दवार) रोग मे १ तोला खशखाश के बीजो के शीरा के साथ ३ माशा अनोशदारु लूलुई का उपयोगी अनुभवपूत भेषज है। (२) पित्तदृष्टि के कारण उत्पन्न हुए भ्रम और समोह (सदर व दवार) रोग मे ७ तोला अर्क बादियान के साथ १ तोला जुवारिश तबाशीर का उपयोग गुणकारी एव आमाशयबलदायक (दीपन) है। (३) माजून कश्नीज या (४) माजून दबीदुलवर्द या (५) मुफर्रेह कश्नीजी प्रत्येक ७ माशा अलग-अलग २ तोला शर्बत सदल एव ८ तोला अर्क नीलूफर के साथ सेवन करने से भ्रम एव समोह रोग मे बडा लाभ होता है।

भ्रम और समोहोपयोगी सिद्ध योग

(१) हरीरा--मीठे बादाम की गिरी ११ दाना, बिनौले की गिरी ५ माशा, सफेद पोस्ते का दाना ५ माशा, छिला हुआ धनिया ३ माशा, गेहूँ की भूसी ३ तोला। सब द्रव्यो को अर्क सौंफ मे पीसकर छान लेवें और अग्नि के ऊपर रखकर पकावे तथा २ तोला मिश्री, ६ माशा मीठे बादाम का तेल और ३ तोला गोघृत मिलाकर सुखोष्ण पीवें। यह मस्तिष्क बलदायक (मेध्य) तथा भ्रम और समोहनाशक तथा सिद्ध औषधि है।

(२) चिरज भ्रमरोगनाशिनी गुटिका--लौंग ६ दाना, सनायमक्की १ तोला, जीरा ३ माशा, छोटी इलायची के बीज ३ माशा, नरकचूर ३ माशा, जटामासी २ माशा, चीनी २ तोला--इन सबको कूट-छानकर २ तोला शुद्ध मधु मे गूँधकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनायें। इसमे से १ तोला रात्रि मे सोते समय उष्ण जल से लेवे। परीक्षित है।

(३) सिद्ध गुटिका--हलीला काबुली का छिलका ३ माशा, निशोथ ५ माशा, गारीकून १ माशा, उस्तुखुद्दूस ३ माशा, लाहौरी नमक १ माशा--इन सबको कूट-पीसकर कुछ वटिकाये बनाकर खिलाये और प्रतिदिन उक्त प्रमाण की औषधि की गोलियो के उपयोग से मस्तिष्क दुष्टभूत दोष से शुद्ध हो जाता है।

(४) आमाशयिक भ्रमरोगोपयोगी क्वाथ योग--प्रथम जुवारिश अनारैन १ तोला खाकर ऊपर से छोटी-बडी इलायची का दाना ६-६ माशा, कासनी बीज ६ माशा, सूखा धनिया ४ माशा सबको अर्कसकोय मे क्वाथ करके २ तोला शर्बत अनार या शर्बत जरिश्क मिलाकर पीने से इस रोग मे लाभ होता है।

(५) आमाशयिक भ्रम-समोहरोगोपयोगी प्रलेप योग--जटामासी १ तोला, रूमीमस्तगी १ तोला, एलुआ २ तोला, मुरमक्की ४ तोला, गुलाब के फूल ४ तोला--सब द्रव्यो का चूर्ण बनाकर रोगन मस्तगी मे पिघलाये हुए पीले मोम

मे मिलाकर प्रलेप बनाये। इसमे से यथावश्यक कपडे के एक टुकडेपर लगाकर आमाशय के ऊपर चिपका दिया करे।

(६) भ्रम और समोहनाशक चूर्ण—पोस्ता के दाने १ तोला, धनिया ५ तोला, छिले हुए काहू के बीज १ तोला, तरबूज के बीज १ तोला सबको बारीक कूटकर सबके बराबर या यथावश्यक मिश्री का चूर्ण मिलाकर प्रति दिन ६ माशा चूर्ण, ५ तोला अर्क गुलाब के साथ सेवन कराये।

अपथ्य—इस रोग मे निम्न पदार्थो से परहेज करे। इस्पद, शैलम (गदुम दीवाना) लोबिया, तरामिरा, लहसुन, प्याज, तिल का तेल, मधु, अखरोट तथा अन्य समस्त बाष्पोत्पादक वस्तुओ से तथा इनके अतिरिक्त सिर की ऊँचाई से नीचे की ओर देखना और घूमनेवाले पदार्थो की ओर दृष्टि करना भी अहित-कारक है।

पाँचवाँ प्रकरण

सुबात

नाम—(अ०) सुबात, कूमा, (स०) अतिनिद्रा, तामसी निद्रा, तमोभवा निद्रा, (सु०), सन्यास (च०), (उ०) ख्वाबे गफलत, (अ०) कोमा (Cooma)।

हेतु और लक्षण—इस रोग मे 'रोगी इतनी गहरी नींद मे सोता है कि उसको बडे मुश्किल से जगाया जा सकता है। सादी या दोषज शीतल विप्रकृति, शीतल एव स्वापजनन पदार्थो का अधिक सेवन आदि इसके हेतु है। नाडी काठिन्य एव नाडी का मुस्कावुत एव वक्फादार होना, शरीर एव चेहरे के रग का हरिताभ दृष्टिगत होना, शिर के अग्र भाग तथा पलको मे गौरव की प्रतीति होना, प्रायश नथुनो से प्रगाढ द्रव का स्राव होना और जिह्वा का पिच्छिल द्रव से आलिप्त पाया जाना आदि इसके प्रधान लक्षण है।

साध्यासाध्यता—यदि रोगी के नेत्र की श्यामता अकस्मात् लुप्त हो जाय, श्वास कम आये और रोगी किसी प्रकार जगाया न जा सके, तो अति शीघ्र काल-कवलित हो जाता है। कभी रोगी मृगी, सन्यास, पक्षवध या अर्दित से आक्रान्त हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—दोषज वा अदोषज शीतल विप्रकृति मे रोगोत्पादक दोष का शोधन करने के उपरात प्रकृति परिवर्तन (सशमन) एव मस्तिष्कबलवर्धन (मेधाजनक) का यत्न करे। रोगी के सिर को ऊँचा रखे।

रक्तज मे सिरावेध और कफज मे वस्ति करें। प्रसेक आदि हो तो उसका उपचार करें।

चिकित्साक्रम—सिर के अदोषज शीतल विप्रकृति मे उष्ण औषधियो से प्रकृति परिवर्तन (सशमन) करे। आतरिक रूप से दावउल्मिस्क ७ माशा, १० तोला अर्क सौंफ के साथ देवे। सिर के ऊपर ५ तोले सुदाव के काढा का परिषेक करे। रोगन वान, कुष्ठ तैल या जुदबेदस्तर, जगली प्याज, मवीजज, अकरकरा प्रत्येक एक माशा १० तोला सिरका मे पीसकर सिर के ऊपर लगाये। यदि स्वापजनन ओषधियो के पुष्कल उपयोग से यह रोग हो तो उनका त्याग करके उनकी विशिष्ट चिकित्सा करे।

दोषज की दशा मे दोषानुसार शोधन करें। अस्तु, रक्तज मे सरारू या साफिन सिरा का वेधन करे। पिडलियो पर पछने लगवायें या खाली सीगी लगवाएँ। कनपुटियो पर जोक लगवाये और सरसाम तथा रक्तज शिरशूल मे लिखित ओषधियो का उपयोग करे। कफज की दशा मे २ तोला साबुन आध सेर जल मे घोलकर इससे अथवा निम्न योग से तुरत वस्ति करे—

गोखरू सोआ, बाबूना, सनाय मक्की प्रत्येक २ तोला, सौफ और मुलेठी प्रत्येक १० माशा मेथी, तुख्म करफ्स प्रत्येक ७ माशा, उशक और गुग्गुल प्रत्येक १॥। माशा, सकबीनज २ रत्ती—सबको ऽ३ पानी मे डालकर पकाये। जब एक सेर रह जाय, तब छानकर इसमे बूरए अरमनी और सेधा नमक प्रत्येक १॥। माशा घोलकर जैतून का तेल ३ तोला मिलाकर यथाविधि वस्ति करे। कर्फ्युन और जुदबेदस्तर प्रत्येक १ माशा, रोगन कुस्त या रोगन बलसा ६ माशा मे मिलाकर शिरोऽभ्यङ्ग करे। अथवा सोआ, नमाम, मर्जञ्जोश, हाशा, बिरजासफ, सातर, अकरकरा, वच, कलौंजी, हर्मल प्रत्येक सम भाग को जल मे उबालकर इससे शिर के ऊपर परिषेक करें, या जुदबेदस्तर, अकरकरा, मवीजज कोही, सफेद प्याज प्रत्येक ६ माशा को यथावश्यक सिरका मे पीसकर सिरे के ऊपर लेप करे। गेहूँ की भूसी और सेंधा नमक को पोटली मे बाँधकर गरम करके इससे टकोर करे। जुदबेदस्तर, कालीमिर्च, कलौजी प्रत्येक १ माशा को महीन पीसकर नस्य देवे।

पीने के लिये निम्न योग देवे —

क्वाथ—जो कफज सन्यास मे गुणकारी है—सोफ ७ माशा, सौफ की जड, करफ्स की जड, उस्तुखुद्दूस प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, पीला अजीर ३ दाना रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर २ तोला शहद मिलाकर पिलाये। यदि कुछ दिन मे लाभ न हो तो इसी योग मे ७ माशा सनाय मक्की मिलाकर रात्रि मे भिगो देवे। प्रात काल मल छानकर ५ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, खाड ४ तोला, तरजबीन ४ तोला और गुलकद

४ तोला मिला-छानकर ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलावे। यदि १० बजे तक विरेक न आये तो शर्बत दीनार ४ तोला ; १२ तोला अर्क सौफ मे मिलाकर कुनकुना पिलाये। दूसरे दिन खमीरा गावजबान १ तोला चॉदी के एक वर्क मे लपेटकर प्रथम खिलाये और ऊपर से ५ दाना उन्नाव १२ तोला अर्क गावजबान मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनपशा मिलाकर ओर ५ माशा रेहाँ के बीज का प्रक्षेप देकर पिलाये। यदि इससे भी लाभ न हो तो हब्ब इयारज आदि खिलाकर विरेचन करावे।

शोधनोपरान्त दवाउल्मिस्क आदि से प्रकृति परिवर्तन (शमन) करे।

वाष्पीय एव सरसाम की दशा मे सरसाम के अनुसार २ तोला गुलरोगन, १० तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिरका मे कपडा भिगोकर तालू पर रखे। पाशोया कराये और शर्बत उस्तूखुद्दूस २ तोला या अतरीफल कश्नीजी १ तोला सेवन करे। मस्तिष्क के अन्यान्य आगिक व्याधियो की दशा मे इनकी विशिष्ट चिकित्सा करे।

अपथ्य—चना, मसूर की दाल, कद्दू, ककडी, पालक, कुलफा, हिलवाना, बफ, अफीम, भाग, मद्य आदि अहितकर है।

पथ्य—मुर्गी का बच्चा, तीतर, बटेर, बकरी का मास, मूँग और अरहर की दाल, चाय, दूध, गाजर, चुकदर, करेला, मीठा घुइयॉ, बादाम का मग्ज, अखरोट का मग्ज, छुहारा आदि।

छठा प्रकरण

सहर—वेख्वाबी

नाम—(अ०) सहर, अरक, बेदारख्वाबी, (स०) अनिद्रा, निद्रानाश, वैकारिक प्रजागरण, प्रजागरणविकार, (उ०) बेख्वाबी, मर्ज बेदारी, नीद न आना, (अ०) इन्सॉम्निआ (Insomnia)', विजिलन्स (Vigilance), एग्रिप्नीआ (Agrypnoea)। इसमे रोगी को नीद नही आती। यदि आती भी है तो व्यग्र स्वप्न आकर नीद खुल जाती है।

हेतु और लक्षण—अनिद्रा रोग उष्णता एव रूक्षता से उत्पन्न हुआ करता है। यह कभी अदोषज (सादा) होता है और कभी दोषज। पित्त या सौदा की उल्वणता इसके प्रधान हेतु हैं। नेत्र, नासिका और जिह्वा का खुश्क होना, सिर एव इन्द्रियो मे लाघव, गर्मी तथा खुश्की दोनो के एकत्र होने की दशा मे शिर के भीतर दाह एव पाक की प्रतीति होना और तृष्णा प्रभृति लक्षण व्यक्त होते हैं।

पित्तज मे पित्त और सौदावी मे सौदा की उल्वणता के लक्षण विद्यमान होते हैं। ज्वर, वेदना, अपचन और रक्तविषमयता आदि मे इनकी उपस्थिति पाई जाती है।

साध्यासाध्यता—अनिद्रा रोग यदि दीर्घकाल तक बना रहे तो इसकी चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिये। कारण कभी-कभी लगातार जागते रहने से उन्माद, मालीखोलिया, हृत्स्फुरण, शुष्क कास और अन्यान्य घातक रोग उत्पन्न होने की आशका होती है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—सर्व प्रथम रोग के मूलभूत कारण को मालूम करके दूर करे। इस रोग मे परिषेक, नस्य, तैलाभ्यङ्ग और स्नान आदि से मस्तिष्क का स्नेहन करना इसके प्राय भेदो मे लाभकारक है। किन्तु ज्वरावस्था या उष्णवाष्पजनित अनिद्रा मे शिर के ऊपर तेल का अभ्यग नही करना चाहिये। प्रत्युत् पाशोया और हाथ-पैर का सवाहन उक्त अवस्था मे लाभकारी है। अदोपज (सादा) रूक्ष विप्रकृति या यदि दोषज हो तो रोगजनक दोष का यथाविधि-शोधन करके शमन (प्रकृति परिवर्तन) करें। अस्तु, कद्दू या कुलफा का साग अथवा काहू के पत्र पकाकर खाने से खूब नींद आती है। सफेद चदन, सूखा धनिया और काहू के बीज प्रत्येक ६ माशा, ५ तोला अर्क गुलाब मे पीसकर १ तो० गुलरोगन मिलाकर इसमे कपडा तर करके शिर के ऊपर रखे। मस्तिष्क की रूक्षता दूर करने के लिये शिर के बाल मुॅडवाकर उसके ऊपर बकरी का दूध दुहवाना बहुत गुणकारी है। रोगन लबूब सबआ और काहू का तेल दोनो बराबर-बराबर मिलाकर शिरोऽभ्यङ्ग करना और जिमाद ख्वाब आवर (निद्राकर लेप) या अलुमुनव्विम का मस्तक पर लेप करना भी गुणकारी है। ५ दाने मीठे बादाम का मग्ज, कद्दू के बीज की गिरी, हिनवाना के बीज की गिरी, छिले हुए काहू के बीज और निशास्ता प्रत्येक ३ माशा, मिश्री २ तोला, पावभर बकरी के दूध मे पीसकर हरीरा बनाकर पिलाने से भी लाभ होता है। किसी सौदावी रोग के कारण अनिद्रा होने पर उस रोग की चिकित्सा की ओर ध्यान देवें। सौदा की उल्वणता नष्ट करने के लिये बकरी का दूध ७ तोला शर्बत उन्नाव २ तोला मिलाकर प्रात पी लिया करे। तीन दिन तक इतना ही पीकर दूध १ तोला और शर्बत १–१ माशा प्रतिदिन बढाते रहें। जब दूध की मात्रा ४१ तोला और शर्बत मात्रा ४ तोला तक पहुँच जाय, तब फिर उसी प्रकार १–१ तोला दूध और थोडा-थोडा शर्बत घटाकर प्रथम मात्रा तक पहुँचायें और तीन दिन तक सेवन करके त्याग देवें। इस क्रम के सपूर्ण पालन से रोग अवश्य चला जाता है। दूसरे समय अपराह्न मे खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा खाकर अर्कशीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला और शर्बत उन्नाव ४ तोला मिला

पी लिया करे । रोग आराम होने के पश्चात् मस्तिष्क को बल प्रदान करने के लिये खमीरा गावजबान जवाहर वाला ५ माशा रात्रि मे सोते समय खा लिया करे । बकरी का दूध या बादाम का तेल पिडलियो और पैर के तलुओ पर मर्दन करने से भी नीद आती है । तुलसी के ताजे पत्र सूंघने और सोये के पत्र सिरहाने रखने से भी इस रोग मे उपकार होता है । कब्ज के कारण हो तो कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि मे सोते समय पाव भर दूध के साथ देवे । पाचनविकार हो तो उसका उचित उपाय करे अनिद्रान्तक उपयोगी प्रलेप योग--(१) पोस्ता के दाने और विजयाबीज प्रत्येक १ तोला को ऽ। गोदुग्ध मे पकाये । शीतल होने पर पैर के तलुओ पर मले । (२) भाग के पत्र २ तोला यथावश्यक बकरी के दूध मे पीसकर पैर के तलुवो पर मेहदी की भाँति लेप लगाना भी गुणकारी हे । (३) खुरासानी अजवायन के बीज, पोस्ता के दाने, काहू के बीज, व कद्दू के बीज की गिरी प्रत्येक ३ माशा, तीन तोला गुलरोगन मे पीसकर शिर के ऊपर लेप करें ।

अनिद्राहर परिषेक—गुल बनफ्शा, गुल नीलूफर, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, पोस्ते की डोडी, छिले हुए जौ प्रत्येक १ तोला, कद्दू और धनिये के पत्र २-२ तोला--सबको जल मे पकाकर इससे शिर के ऊपर परिषेक करें ।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी खिचडी, शूरबा, यखनी, दूध, साबूदाना, हरीरा, यवमड, हरे शाक--कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई आदि का उपयोग करे । अनार, अगूर, सेव, अमरूद आदि भी लाभदायक होते हैं ।

अपथ्य—उष्ण पदार्थ, जैसे--लाल मिर्च, बैगन, सिरका आदि से परहेज करें । मछली, आलू, गोभी आदि वादी पदार्थ भी सेवन न करे । अति अध्ययन, धूप मे चलने-फिरने और अधिक चिन्ता एव ध्यान के कार्यो से परहेज करे । अति मैथुन से भी बचे ।

सातवाँ प्रकरण

जुमूद व शुखुस

नाम--(अ०) जुमूद, आख्जि, मुद्रिक , (स०) स्तब्धता, स्तभता, (उ०) हवास बाख्तगी, देखुदी , (अ०) एक्सटेसी (Ecstacy) ।--(अ०) शुखूस, कालूखूस , (स०) नेत्रस्तब्धता ; (उ०) हक्का बक्का और बेखबर हो जाना , (अ०) कटालेप्सी (Cootalapsy) ।

परिचय--इस रोग मे रोगी की सवेदना और चेष्टा शक्ति सहसा नष्ट हो

जाती है तथा वह जिस दशा मे रहता है, स्तभित होकर उसी दशा मे रह जाता है अर्थात् यदि खडा हो तो खडा और बैठा हो तो बैठा ही रह जाता है ।

सापेक्ष निदान—जुमुद और सुबात का अतर—सुबात (अतिनिद्रा) रोग मे रोगी के नेत्र ढँके रहते है तथा रोगी धीरे-धीरे अचेत होता है । परतु जुमूद मे रोगी के नेत्र साधारणत खुले रहते है और वह सहसा स्तभित होकर निश्चेष्ट एव नि सज्ञ हो जाता है ।

जुमूद और सकता का अतर—सक्ता (सन्यास) रोगी मृतकवत् चित्त पडा रहता है, परतु उसके कठ से कोई वस्तु नीचे उतर सकती है । इसके विपरीत जुमूद रोगी जिस दशा मे हो उसी दशा मे स्तब्ध हो जाता है तथा उसके कठ से कोई वस्तु नीचे नही उतर सकती ।

हेतु—इस रोग का कारण मस्तिष्क के पश्चात्कोष्ठ (वल सुवख्खर) मे साद्र सोदावी दोष की उल्वणता हुआ करती है जो शीतल एव कच्चे फलो के खाने से तथा वर्फ के पानी से स्नान करने या उसके पीने या अवगाह-स्नान करने से उत्पन्न हो जाता है । अर्थात् सौदात्मक या श्लैष्मिक दोष के कारण पश्चान्मस्तिष्क से अवरोध (सुद्दा) उत्पन्न हो जाता है जो रूह नफ्सानी को अग-प्रत्यग की ओर जाने से रोकता है जिससे रोगी पर आत्मविस्मृति की-सी दशा व्याप्त हो जाती है । इसका प्रारभ प्राय शिर वा पृष्ठ पर आघात लगने, मादक द्रव्यो के पुष्कल उपयोग करने तथा तीव्र मानसिक आघात से हुआ करता है ।

लक्षण—रोगी एक ही दशा मे पडा रहता है । नेत्र यदि खुले हो तो खुले ही रहते है और यदि बन्द हो तो बन्द ही रहते है । दाये-बायें किसी प्रकार की चेष्टा नही कर सकता न तो बोल-चाल सकता है और न कुछ खा-पी सकता है ।

साध्यासाध्यता—इस रोग का परिणाम क्वचित् ही साघातिक होता है परन्तु कभी-कभी यह रोग मृगी मे परिवर्तित हो जाता है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रक्तज मे सरारू सिरा का वेध कराये और पिड-लियो पर पछने लगवाये । गुदवर्ति के द्वारा कब्ज दूर करना लाभकारी है । कफ और सौदाजन्य रोग मे प्रथम शोधनार्थ वस्ति एव गुद वर्तिका उपयोग समीचीन है । कुछ चैतन्य होने के उपरात शमन (प्रकृति परिवर्तन) का यत्न करना चाहिये । अस्तु, (१) चाय या कहवा, (२) अफ्तीमून ९ माशा या (३) उस्तू-खुदूस १ तोला घूँट-घूँट करके पिलाना लाभकारी है । (४) जुदबेदस्तर ६ माशा ५ तोला रोगन सुदाव से मिलाकर सिर पर मलना, (५) फर्फ्यून ९ माशा को ५ तोला रोगन मजञ्जोश या ५ तोला रोगन चमेली मे पीसकर सिर के ऊपर मलना भी गुणकारी है । (६) सोठ ३ माशा या (७) कालीमिर्च ३ माशा

या (८) नकछिकनी या (९) केसर २ माशा कालीमिर्च के साथ पीसकर नस्य करना भी लाभदायक है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) हव्व इयारज १ माशा, अफ्तीमून के काढे के साथ देने से मस्तिष्क की शुद्धि होती है। दोषशमनार्थ (२) खमीरा गावजबान (३) खमीरा अबरेशम ९ माशा या (४) दवाउल्मिस्क हार्र ५ माशा या (५) मुफर्रेह कबीर ६ माशा या (६) मुफर्रेह मोतदिल ७ माशा अर्क गावजबान या अर्क सौंफ १० तोला के साथ खिलाना पर्याप्त है।

पथ्य—लघु शीघ्रपाकी आहार, जैसे पक्षियो का शूरबा आदि देवे। माउल् अस्ल, चने का यूष, चपाती, कलिया, चकोर और कबूतर का शूरबा, अरहर की पतली दाल गरम मसाला डालकर चपाती के साथ देवे।

अपथ्य—कद्दू, हिनवाना, खीरा-ककडी, तुरई, चावल, मसूर की दाल खट्टी और अधिक मीठी वस्तुयें, भटा और गोमास आदि से परहेज करें।

आठवाँ प्रकरण

निस्याॅ—विस्मृति

नाम—(अ०) निस्याॅ (धात्वर्थ भूल), फक्दुज्जाकिर , (स०) विस्मृति, विस्मरण; (उ०) फरामोशी, भूल, (अ०) ऐम्नेसिया (Amnesia) ऐम्नेस्टिया (Amnestia)।

परिचय—इस रोग मे रोगी कोई नवीन बात याद नही रख सकता या जो बातें उसको पहले से स्मरण होती है, उनको भूल जाता है। अथवा पुन समय पर सपूर्ण स्मरण करके क्रमबद्ध नही कर सकता अथवा उनसे यथावत् निष्कर्ष नहीं निकाल सकता।

हेतु—पश्चान्मस्तिष्कगत सर्दी एव तरी या सर्दी एव खुश्की अथवा मस्तिष्क के मध्य भाग मे सर्दी एव तरीकी उल्वणता या मस्तिष्क के अग्र भाग की पैत्तिक या अदोषज उष्ण विप्रकृति इस रोग के मूल हेतु है। कभी-कभी अभिघात, किसी विषय मे अत्यधिक चिन्तना एव तल्लीनता, सदा बना रहने वाला प्रसेक एव प्रतिश्याय मस्तिष्क दौर्बल्य और मस्तिष्क के आवयविक विकार, जैसे—शोथ, लीसर्गुस आदि और एक विशेष प्रकार की रक्त विषमयता जो अस्वच्छ दुर्गंधित वायु मे दीर्घकाल तक रहने से होती है। इत्यादि इसके हेतु हुआ करते है।

लक्षण—रोगी किसी बात को स्मरण नहीं रख सकता। जो बाते उसको स्मरण होती हैं, वह भी भूल जाती हैं। अस्तु, श्रवण की हुई बातें और

देखे हुए स्वरूप समय पडने पर स्मृतिपट पर नही आते। स्वप्न देखता है, पर सुबह तक भूल जाता है, सर्दी और तरीकी प्रगल्भता की दशा मे रोगी का अधिक सोना, सिर के पश्चाद्भाग मे गौरव एव बोझ अनुभव करना, नासिका से पुष्कल स्राव होना और बातो का बहुत थोडी देर स्मरण रहने के पश्चात्। सर्वथा या न्यूनाधिक भूल जाना इसके लक्षण है। सर्दी और खुश्की के प्रकोप की दशा मे निद्राल्पता, कण्ठ और नासिकाशोथ, कृच्छ्वाकता, कब्ज, कभी सिर का पीछे की ओर खिचना और कण्ठावरोध आदि लक्षण पाये जाते है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम रोग के कारण भूत दोष का शोधन करे। तत्पश्चात् दोषशमन का यत्न करे। अस्तु, यदि सर्दी और तरी विस्मृति के कारण-भूत हो तो (१) ८ माशा काबुली हड का चूर्ण शहद मे मिलाकर सेवन करे। (२) युवा दुम्बा का मास पकाकर खाये। (३) गो घृत स्मरणशक्तिवर्धक हे। यदि सर्दी और खुश्की विस्मृति का कारण भूत हो तो निदान परिवर्जनोपरात (४) पुराने जैतून के तेल का सिर के पिछले भाग के ऊपर अभ्यङ्ग करे, विशेषकर (५) पपडी नमक के साथ असीम गुणकारी है। इसी प्रकार (६) रोगन पिश्ता मे किंचित् (७) कस्तूरी मिलाकर या (८) रोग बाबूना का नस्य करना भी लाभकारक है। (९) रोगन बादाम से गद्दियाँ तर करके सिर के पश्चाद्भाग के ऊपर रखना सर्वोत्तम उपाय है।

ससृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) हब्ब जुदवेदस्तर १ माशा, ७ तोला अर्क गावजबान के साथ या (३) सफूफ हिफ्ज १ तोला या (४) माजून बलादुर ३ माशा या (५) माजून फलासफा ५ माशा (६) माजून हिफ्ज १ तोला या (७) माजून वज ७ माशा, अर्क उस्तुखुद्दूस या अर्क मुडी ७ तोला के साथ खिलाने से सर्दी एव तरीजन्य विस्मृति रोग आराम होते है। सर्दी एव खुश्कीजन्य विस्मृति रोग मे निम्न योग गुणकारक है--(८) मुरब्बा अजीबील २ तोला, मुरब्बा हलीला १ नग या (९) माजून लबूब १ तोला या (१०) माजून हाफिजुल्अक्ल १ तोला ७ दाने मीठे बादाम के मग्ज के शीरा या २ तोला मीठे कद्दू के बीज की गिरी के शीरा के साथ खिलावें।

पथ्य--बकरी का मास, चपाती, मुर्गी के बच्चे का शूरबा, दूध खसका, घी मे भुना हुआ बकरी का भेजा, कुलफा, पालक, कद्दू, अखरोट, बादाम, चिलगोजा, मुनक्का आदि।

अपथ्य--शीतल जल का स्नान, शीतल वायु, धनिया, प्याज का अतिसेवन, अति स्त्रीसहवास, दिवास्वप्न आदि।

--०--

नौवाँ प्रकरण

मालीखोलिया और जुनून

नाम—मालीखोलिया (अ०) मालीखोलिया, मालिनखोलिया, (उ०) मालीखोलिया, वहम, वसवास, (अ०) मेलन्कोलिया (Melancholia)।

जुनून--(अ०) जुनून, (फा०) दीवानगी, (उ०, हि०) पागलपन, (स०) उन्माद, (अ०) इन्सेनिटी (Insanity)।

वक्तव्य—मालीखोलिया जो शुद्ध मालिनखोलिया (मेलिन्खोलिया) हे एक यूनानी भाषा का योगिक शब्द (मालिन् या मेलन=श्याम=खोलिया या कोलिया=पित्त=कृष्ण पित्त) है यह सोदा या विदग्ध पित्त से उत्पन्न होता है, अतएव उक्त सज्ञा से अभिहित किया गया। मालीखोलिया का ही एक परिवर्द्धित स्वरूप जुनून है। अस्तु, प्राचीन यूनानी हकीमो ने जुनून को मालीखोलिया के ही विविध प्रकार माने हैं। मालीखोलिया का रोगी प्राय शात रहता है ओर जुनून का उद्दड एव उत्तेजित। इस रोग का रोगी मानवता की श्रेष्ठता को खोकर पशु बन जाता है। वह इहलोक और परलोक दोनो के काम का नही रहता। बुद्धि और विवेक से शून्य हो जाता है। प्रारभ मे यह चिकित्स्य होता है, किन्तु पुराना होने पर दुश्चिकित्स्य एव असाध्य हो जाता है।

हेतु—प्रकृति में सौदा की प्रगल्भता और उसकी ओर से बेपरवाही, अधिक चिता, अर्श और आर्तव शोणितका अवरोध, अति मैथुन, शारीरिक श्रम की अधिकता उष्ण स्थान मे दीर्घ काल पर्यत रहना, लवण, क्षार और तीक्ष्ण पदार्थो का सेवन अम्लपदार्थ का पुष्कल सेवन, सकीर्ण अँधेरी जगह मे निवास करना, काले पोशाक एव कृष्ण पदार्थो को दृष्टि के सामने रखना और किसी दोष का विदग्ध होकर सौदा में परिणत हो जाना इस रोग के उत्पादक कारण है।

लक्षण—रोगी की चिता भय और दुष्टता मे परिवर्तित हो जाती है अर्थात् वह वहमी हो जाता है। चेहरे पर पिलाई या कलाई अभिभूत हो जाती है। नेत्र मलिन और प्रभाहीन और त्वचा रूक्ष हो जाती है। रोगी व्याकुल और व्यग्र रहता और प्रत्येक वस्तु से भय खाता हे। यकृत् और आमाशय के स्थान पर बोझ की शिकायत करता है। कब्ज होता है। यदि रक्त मे दाह होने के कारण उत्पन्न हुआ हो, तो रोगी विरागपूर्वक हँसमुख एव प्रसन्न रहता हे। पित्त मे दाह (एहराक) होने से हुआ हो तो सदा अशिष्ट, भयङ्कर, विवेक शून्य, आकुल और व्यग्र रहता हे ओर अधिक बक-झक करता है। ऐसे रोगी को नीद कम आती है। यदि कफ के दाह के कारण उत्पन्न हुआ हो, तो रोगी सदैव

शिथिल, मद और आलस्य युक्त होता तथा एक स्थान में बैठा रहना पसन्द करता है। यदि सौदा के दाह के कारण उत्पन्न हुआ हो तो रोगी सदैव भयभीत रहता और डरता है तथा वह सदैव दुष्ट चिंतनाओं से अभिभूत रहता है। कभी-कभी रुदन करता और अनुनय-विनय करता (गिडगिडाता) है।

जुनून मालीखोलिया का ही परिवर्धित स्वरूप है। इसलिये कि मालीखोलिया खिल्त (दोष) या प्रकृत सौदा के विदग्ध होने से और जुनून अप्रकृत सौदा के विदग्ध होने से उत्पन्न होता है। अस्तु, जुनून की चिकित्सा भी हेत्वनुसार मालीखोलिया के समान करनी चाहिए। परन्तु जुनून मे मस्तिष्क की तरावट और शीतलता का ध्यान रखना चाहिये। चिकित्सा में सर्व प्रथम रोगी को नीद लाने का यत्न करे, अस्तु।

उपचार—रोगी को प्रवात एव प्रकाशयुक्त खुले स्थान में रखे। खुशबू सुँघायें। प्रति दिन भोजन से पूर्व स्नान करायें और हर सभव उपाय द्वारा उसको निश्चित एव प्रसन्न रखे। रोग के मूल कारण का पता लगाकर उसे दूर करने का यत्न करे। मस्तिष्क के स्नेहन और अनिद्रा निवारण के लिये कद्दू और काहू का तेल बराबर-बराबर मिलाकर अथवा रोगन लबूब सबआ का शिरोऽभ्यङ्ग करे।

अत्यन्त आवश्यकता होने पर यदि रोगी बलवान् हो तथा पन्द्रह वर्ष से अधिक और पचास वर्ष से कम आयु का हो तो रक्तज मालीखोलिया मे बासलीक या हफ्त अदाम सिरावेध के द्वारा यथाप्रमाण रक्तमोक्षण करे। अर्शोजात रक्त के अवरुद्ध हो जाने की दशा मे भी सिरावेध लाभकारी है। यदि इसका कारण आर्तव शोणित का अवरोध हो तो साफिन सिरा का वेधन लाभकारी होता है। सिरा-वेधनोत्तर तीन दिन निम्न तबरीद का योग देवे–(१) खमीरा गावजबान १ तोला चाँदी के एक वर्क मे लपेट कर खिलायें और ऊपर से उन्नाव ५ दाना, १२ तोला अर्क गावजबान में पीसकर और शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर तथा ७ माशा समूचे रेहाँ के बीजो के प्रक्षेप देकर पिलाये। तदुपरात कुछ दिनतक प्रात काल निम्न योग पिला दिया करें–(२) मुफर्रेह बारिद ५ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क कासनी मे ३ माशा जरिश्क और ५ दाना आलू-बोखारे का शीरा निकाल-छानकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलाये और सायकाल आमले का एक मुरब्बा पानी से धोकर चाँदी का वर्क लपेटकर आलूबोखारा ५ दाना, सूखा धनिया ३ माशा, कुलफा के बीज ३ माशा पानी मे पीस-छानकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाये।

रोगनिवृत्ति न हो तो यह मुञ्जिज का योग ७–८ दिन पिलाकर विरेचन देवें––(४) अफतीमून विलायती ५ माशा, बसफाइज फुस्तुकी ५ माशा, वर्ग

गावजबान ५ माशा, गुल गावजबान ५ माशा, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम ५ माशा, गुलबनफशा ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, सूखा नकोय ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, पित्तपापडा ७ माशा, कासनी के बीज ७ माशा, गुल नीलूफर ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, आलूबोखारा ५ दाना, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, बिल्लीलोटन ५ माशा, इन्हे रात्रि को गरम पानी मे भीगो देवे । प्रात काल मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये । आठ दिन के बाद इसी योग मे वर्ग सनाय मक्की ७ माशा, इमली ४ तोला मिलाकर रात्रि मे भिगो देवे । प्रात काल यवासशर्करा ४ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर देवें । एक-एक दिन के अन्तर से इसी प्रकार तीन विरेचन देवें और बीच के दिन सिरावेधोत्तर देने को लिखा हुआ तवरीद (शीतजनन) का योग देवें । यदि पित्तगत दाह के कारण हुआ हो तो सिरावेध अनपेक्षित है । केवल उस्तूखुद्दूस और बादरजबूया को छोडकर शेष भिगोने के उपरिलिखित द्रव्य प्रात काल उपयोग कराये (बकरी के दूध का शिरोऽभ्यङ्ग कराये) और उपर्युक्त मुफर्रेह बारिद वाला या आमला मुरब्बा वाला योग मे से किसी एक को सायकाल पिलाये । दोष शोधन की आवश्यकता हो तो यही मुञ्जिज का योग सात-आठ दिन पिलाकर उसीमे उपरिलिखित विरेचन औषधियाँ मिला कर आवश्यकतानुसार दो-तीन विरेचन देवे । सशोधनोपरात बलवर्धन के अर्थ खमीरा सदल तुर्श ७ माशा या खमीरा सदल सादा ७ माशा या खमीरा गावजबान जवाहर वोला ५ माशा या मुफर्रेह बारिद ८ माशा या खमीरा मरवारीद ५ माशा या दवाउल्मिस्क बारिद जवाहरवाली ७ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाववाला ५ माशा मे से ही कोई एक औषधि ४ रत्ती लाजवर्द मग्सूल मिलाकर खिलायें । यदि आवश्यकता पडे तो बकरी का दूध ७ तोला से आरभ कराकर एक तोला प्रतिदिन बढाते जायँ । जब ४१ तोला तक पहुँच जाय तो इसी प्रकार एक-एक तोला दूध प्रतिदिन घटाकर प्रथम मात्रा पर आ जायँ । फिर इसका भी परित्याग करा देवे । मिठास के लिये इसमे २ तोला शर्बत उन्नाव आरभ मे मिलाकर धीरे-धीरे बढाकर ४ तोला तक सम्मिलित करें ।

यदि एहतराक कफ के कारण हो तो निम्न योग देवें——कासनी की जड ७ माशा, सौफ की जड ५ माशा, पित्तपापडा ७ माशा, चिरायता ७ माशा, करफ्स की जड ७ माशा, इजखिर की जड ७ माशा, सौफ ७ माशा, हस-राज ५ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, छिली हुई मुलेठी ६ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, अजीर जर्द ३ दाना, गुलाब के फूल ५ माशा——सबको रात्रि मे जल मे भिगोकर प्रात काल उबाल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर साफ करके पिलाये । १५ दिन तक इसे पिलाकर इसी योग मे सनाय मक्की ७ माशा

मिलाकर रात्रि मे भिगोये। प्रात काल मल-छानकर इसमे अमलतास का गूदा ५ तोला, खमीरा बनफ्शा ४ तोला, शकर सुर्ख ४ तोला, यवासशर्करा ४ तोला और ५ दाना मीठे बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें। दूसरे दिन तवरीद का नुसखा देवे। बाद मे मुजिज का नुसखा ४–५ दिन पिलाकर दो विरेचन हब्ब इयारज के साथ बिना अमलतास के गूदा और मीठे बादाम के शीरा के देवें।

यदि केवल सौदा की उल्वणता ही इस रोग का कारण हो तो ७ माशा पित्त-पापडा, ७ माशा चिरायता, ७ माशा मुडी, ७ माशा सरफोका, ७ माशा काली हड, उन्नाव ५ दाना, लाल चदन ७ माशा या उशबा मगरबी ७ माशा रात्रि मे गरम पानी में भिगो देवे। प्रात काल छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलाये। २१ दिन तक लगातार यह योग सेवन कराके अर्क मत्बूख हफ्तरोजा ८ तोला सप्ताह पर्यन्त देवें। एक बोतल मे यह अर्क ७ मात्रा होता है। एक मात्रा प्रतिदिन प्रात काल देना चाहिये। सम्यक् शुद्धि के पश्चात् हृदय को उल्लसित और मस्तिष्क को बल देने के लिये खमीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला ५ माशा या मुफर्रेह शैख्रुर्रईस ५ माशा या मुफर्रेह सूसवरी या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाववाला मे ४ रत्ती जलाजवर्द मग्सूल और ४ चावल भर पिसी हुई मोती मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

माउल्जुब्न इसके प्रत्येक भेद मे लाभकारी होता है। अस्तु, इसका उपयोग चैती (फसल रबीअ) मे कराया जाय, तो अत्युत्तम हो। वरन् आवश्यकता होने पर प्रत्येक ऋतु मे विहित है।

माउज्जुब्न-कल्पना और सेवन की विधि—इसके लिये एकरग लाल युवती बकरी सर्वोत्तम है। वरन् एकरग श्याम, स्वस्थ निर्दोष, जो दो बच्चो से अधिक न जनी हो और चालीस दिन से कम और तीन-चार महीने से अधिक का बच्चा न रखती हो लेवें। कुछ दिन पूर्व से ही इसको हरा मकोय या हरा पित्तपापडा या हरा धनिया या हरा सौफ या हरी कासनी या हरा कुलफा आदि मे से या शीतल शाको में से जिसके हरे पत्र समय पर उपलब्ध हो सके, उसको खिलाना प्रारभ करे। माउज्जुब्न के सेवनकाल मे भी बकरी को इसी प्रकार के पत्ते खिलाते रहे। पुन ताजा दूध दुहकर कलईदार देगची मे डालकर मद और हलकी अग्नि पर दो-तीन जोश देवें। पूरा जोश आते समय अगूरी सिरका या कागजी नीबू या सिकजबीन १–१ तोला डाले और अजीर की ताजी लकडी लेकर उसके सिरे पर से चार टुकडे करके इससे दूध को चलाते रहे। जब दूध फट जाय, तब चूल्हे पर से उतार कर तीन तह की हुई साफी से छान लेवे। अब यह वस्त्रपूत माउज्जुब्न ७ तोला, दो तोला शर्बत उन्नाव या शर्बत नीलूफर मिला कर तीन दिन तक पिलायें। तदुपरात १–१ तोला माउज्जुब्न और थोडा

शर्बत प्रतिदिन बढाते जायँ। जब माउज्जुब्न की मात्रा ४ तोला और थोडा उन्नाव या शर्बत नीलूफर की मात्रा ४ तोला तक पहुँच जाय, तब इसी प्रकार १-१ तोला माउज्जुब्न और थोडा-थोडा शर्बत प्रति दिन कम करके प्रथम मात्रा पर पहुँच जायँ। फिर तीन दिन उक्त मात्रा अर्थात् ७-७ तोला सेवन करके इसका सेवन त्याग देवें। या अर्क शीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला, शर्बत उन्नाव ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलाये। कब्ज निवारण के लिये माजून उश्वा १ तोला रात्रि मे सोते समय कुनकुना दूध के साथ खिलायें।

अफतीमून विलायती १ तोला कपडे से पोटली बाँधकर पावभर गोदुग्ध मे पकाकर २ तोला मिश्री मिलाकर कुछ दिन प्रात काल पिलाने से भी बहुत उपकार होता है। उत्तेजना को शात और तृष्णा को बन्द करने के लिये शर्बत गुडहल ४ तोला, शर्बत अजीव ४ तोला, शराबुस्सालहीन ४ तोला, शर्बत रगतरा ४ तोला सिकजबीन लीमूँ ४ तोला, शर्बत अनार ४ तोला, शर्बत सदल ४ तोला, प्रभृति मे से कोई, शर्बत गावजबान ९ तोला, अर्क बेदमुश्क २ तोला और अर्क केवडा मे मिलाकर पिलाना चाहिये।

मालीखोलिया और जुनून के लिये लाभकारी चूर्ण योग—सफेद चदन ६ माशा, सूखा धनिया २ तोला, स्याह कुलफा के बीज ६ माशा, पिसी हुई जहर मोहरा खताई ६ माशा, वशलोचन ६ माशा, गावजबान ६ माशा, सबके बराबर मिश्री इनको कूट छानकर चूर्ण बनावे। इसमे से १ तोला चूर्ण प्रात काल अर्क गावजबान के साथ फॉक लिया करें।

अपथ्य—स्त्रीसहवास से सर्वथा परहेज करे। बाष्पोत्पादक वस्तुये लहसुन, प्याज, मसूरी की दाल, बैगन, वाकला, मटर आदि न देवे और बादी एव गुरु तथा विष्टभकारक पदार्थ, जैसे-आलू, अरवी, गोभी, आदि से परहेज करे। श्रम, आयास, सकीर्ण और अँधेरे स्थान मे रहने तथा काले वस्त्र पहनने से परहेज करे। अधिक चाय पीने और नमकीन तथा खारी वस्तुओ के अतिसेवन से बचें।

पथ्य—विरेचन के दिन तीसरे पहर केवल मूँग की नरम खिचडी देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य दिन हलके और शीघ्रपाकी आहार, जैसे-बकरी का शूरबा चपाती के साथ देवें या खसका, खीर, मुर्गी के बच्चे का शूरबा पोलाव, हरे शाक, कुलफा, कद्दू, पालक, तुरई, मूँग या अरहर की दाल आदि दे सकते है, या फलो मे सेब, अगूर, अनार, बादाम, शहतूत आदि देवे।

दसवाँ प्रकरण

काबूस

नाम—(अ०) काबूस, जागूत, (हि०) स्वप्न में डरना, भयानक स्वप्न, (स०) कुस्वप्न, (अं०) नाइटमेयर (Nightmare), इन्क्युबस (Incubus)।

यह एक स्वप्न की अवस्था है जिसमे रोगी को भयानक और डरावने स्वरूप दृग्गोचर होते है और ऐसा मालूम होता है कि किसी ने ऊपर से गिरा दिया या कोई सीने पर चढ बैठा है। इस दशा में उसका साँस घुटकर रुक जाता है और न वह बोल सकता है और न चेष्टा कर सकता है। इत्यादि।

हेतु—इस रोग का प्रधानतम कारण मस्तिष्क का दुर्बल होना और उक्त अवस्था मे सान्द्र दोष (कफ, सौदा या रक्त) के बाष्प आमाशय की ओर से उठकर मस्तिष्क की ओर चढते और उस पर दबाव डालते हैं। कभी बाह्य शीत, अत्यधिक चिता और व्यग्रता, शारीरिक या मानसिक परिश्रम भी दुर्बल मन (वा मस्तिष्क) के पुरुषो मे यह रोग उत्पन्न कर देते है।

लक्षण—रोगी नीद की दशा मे आधी रात्रि वा अतिम रात्रि के समय अत्यत भयानक स्वप्न देखता है और इस दशा में कठिनाई से साँस लेता है। न बोल सकता है न हिल सकता है और उसे ऐसा अनुभव होता है मानो किसी भारी चीज ने सीना को दबा लिया है। रक्त की प्रगल्भता होने पर सपूर्ण शरीर या चेहरा, जिह्वा और नेत्र लाल होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक दोप को उसके विशिष्ट लक्षण से पहिचान सकते हैं।

उपचार—पाचन का सुधार करे। यदि कब्ज हो तो कुर्स मुलय्यिन ५ अदद या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि मे सोते समय खिला दिया करे और प्रात काल यह नुसखा पिलाये—जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, १२ तोला अर्क सौंफ में पीसकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर यदि उदर कठोर हो तो ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर कुछ दिन पिलायें। भोजनोत्तर नमक सुलेमानी १ माशा या हब्ब पपीता ३ गोली या जुवारिश जालीनूस ७ माशा कुर्स खुब्सुल्हदीद २ टिकिया मिलाकर खिला दिया करें।

रक्तज मे यदि उचित हो तो कीफाल, अकहल, सरारू या हफ्त अदाम सिराका वेधन कराये और पिंडलियो पर सींगी और पछने लगाये। आहार कम देवे और मत्बूखफवाके या हलीला का विरेचन देवें या यह योग देवे—उन्नाब ५ दाना

गुलबनफ्शा ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, सनायमक्की ७ माशा, रात्रि मे उष्ण जल में भिगोकर प्रात काल क्वाढा बना छानकर उसमे अमलतास का गूदा ३॥ तोला, गुलकद २ तोला घोलकर ६ माशा बादाम का तेल मिलाकर पिला देवे। तत्पश्चात् उन्नाव के शीरा और अर्क शाहतरा से तबरीद करे, सिर के ऊपर गुलरोगन और सिरका लगाये।

कफज मे मुजिज बलगम और सौदावी मे मुजिज सौदा कुछ दिन पिलाकर यथाविधि दो-तीन विरेचन देकर मस्तिष्क और आमाशय का शोधन करे। उदर कृमिजन्य मे १ माशा कमीला २ तोला गुलकद मे मिलाकर कुछ दिन खिलाये या ७ माशा अतरीफल दीदान खिलाये। यदि वातनाडियो के किसी कष्ट के कारण हो तो नीद लाने के लिये रोगन लबूब सबआ या रोग बनफ्शा का शिरोऽभ्यङ्ग करे। उस्तूखुद्दूस २ तोला और मिश्री २ तोला कूट-छानकर चूर्ण बना कर ६ माशा प्रतिदिन रात्रि मे सोते समय ताजे पानी से खिलाना भी गुणकारी है।

पथ्य—चपाती, बकरी का शूरबा, अरहर या मूँग की भूनी हुई दाल, मुर्गा, तीतर या बटेर का भूना हुआ मास, तरकारियो मे से शलगम, चुकदर, पालक आदि चपाती के साथ खिलाये। अदरक का मुरब्बा या भोजनोपरात जीरा मिली हुई पुदीना की चटनी भी गुणकारी है।

अपथ्य—बादी, गुरु और विष्टम्भी एव दीर्घपाकी वस्तुएँ, जैसे गोभी, मटर, आलू, अरवी, उडद की दाल और वाष्पजनक पदार्थ, जैसे प्याज, लहसुन और मसूर की दाल आदि से परहेज करें। चित्त न लेटकर किसी करवट से सोया करें।

वक्तव्य—यूनानी हकीमो के मत से यह रोग मृगी, सन्यास (सक्ता) और मालीखोलिया का पूर्वरूप है, किन्तु जनसाधारण इसे भूतावेश समझते है।

ग्यारहवाँ प्रकरण

सरअ

नाम—(अ०) सरअ, (उ० हि०) मिर्गी, (स०) अपस्मार; (अ०) एपिलेप्सी (Epilepsy)।

वक्तव्य—अरवी सरअ शब्द का अर्थ गिरना है।

यह एक प्रसिद्ध और भयङ्कर रोग है जो दौरा के साथ (आवेगपूर्वक) हुआ करता है। इस रोग के दौरा मे रोगी के कर्म और ज्ञानेन्द्रियाँ अनियन्त्रित हो जाती हैं और रोगी मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पडता है। उसकी ऐच्छिक

मासपेशियो में उद्वेष्टन होकर हस्त-पाद टेढे हो जाते हैं और उनमें अनियन्त्रित चेष्टाएँ होने लगती है, रोगी के मुख से आवेग की दशा में कफ याने झाग निकलते है।

भेद—स्थानसश्रय एव व्यक्ति भेद और हेतु के विचार से इसके विविध भेद होते है। अस्तु, यदि उसका माद्दा (दोष) मस्तिष्कगत हो तो (१) सरअ दिमागी[1], यदि आमाशय में हो तो (२) सरअ मेदी[2] और यदि हस्त-पाद में हो तो (३) सरअ अतराफी[3] कहते है। इसके अतिरिक्त इसके कई अन्य भेद भी है, किन्तु उक्त तीन भेद अधिक प्रसिद्ध है। इस रोग की उत्पत्ति कफज दोष से, प्राय सोदावी से और कभी-कभी पित्तज दोष से होती है। शुद्ध रक्त भी क्वचित् इस रोग का कारणभूत होता है। परन्तु श्लैष्मिक और पैत्तिक रक्त से प्राय. इसकी उत्पत्ति देखी जाती है।

हेतु—मस्तिष्क के कोष्ठो और वातनाडी के स्रोतो में किसी सान्द्रीभूत दोष या वाष्प या विषमयावस्था से अपूर्ण अवरोध प्रगट होकर इस रोग को उत्पन्न करता है। चिरकाल तक प्रसेक और प्रतिश्याय का बना रहना, स्निग्ध एव शीतल आहारो का पुष्कल उपयोग, अन्न से उदर के पूर्ण रहने की दशा में आयास करना, अधिक मानसिक श्रम, स्त्रियो मे आर्तव विकार, युवाओ मे अति स्त्रीसहवास, हस्तमैथुन का व्यसन, अति मद्यपान, मस्तिष्क शोथ, अत्यधिक शोक एव चिता, शिशुओ में उदरकृमि एव दन्तोद्भेद, अकस्मात् भयभीत हो जाना, सौदावी रोग, आतशक, सन्धिशूल, वातरक्त प्रभृति रोगो मे से किसी की विद्यमानता इसके निदान-कारण है।

लक्षण—इस रोग मे दो प्रकार के लक्षण पाये जाते है—(१) पूर्वरूप और (२) आवेगकालीन लक्षण। पूर्वरूप रोग से कुछ काल पूर्व प्रगट होते है। उनमे शिर शूल, शिरोघूर्णन, कर्णक्ष्वेड, समोह, बुद्धिविभ्रम, इन्द्रियो की मलिनता, सूक्ष्म ज्वर, दुर्गन्धानुभव, उद्वेष्टनपूर्वक शिर का स्कन्ध की ओर झुक जाना, शरीर के किसी भाग मे सुरसुराहट प्रतीत होकर उसका मस्तिष्क तक पहुँच जाना अवश्यमेव होनेवाले इसके पूर्वरूप है।

आवेगकालीन लक्षण—साधारणतया रोगी चिल्लाकर और मूर्च्छित होकर धराशायी हो जाता है। उसके हस्त-पाद ऐठ जाते और अँगुलियाँ

१—पाश्चात्य वैद्यक मे इसे इडिओपैथिक एपिलेप्सी (Idio pathic Epilepsy) कहते है।

२—सरअ मेदी को गॅस्ट्रिक एपिलेप्सी (Gastric Epilepsy) और

३—सरअ अतराफी को रिफ्लेक्स (Reflex Epilepsy) कहते है।

टेढी हो जाती है। उनमे अनियमित चेष्टाये होने लगती हैं। नेत्रगोलक ऊपर चढ जाते हैं। चेहरा भयकर नील, रक्त या पीला हो जाता है। हृदय धडकने लगता है और साँस कठिनाई से आता है। मुख से झाग आने लगते हैं। साँस के साथ खर्राटे का शब्द होता है। कभी जिह्वा दाँतो के मध्य आकर कट जाती है। कभी-कभी अचेतावस्था मे ही मल-मूत्र और वीर्य का उत्सर्ग हो जाता है। पुन एक ओर के हस्त-पाद मे झटका-सा लगकर आक्षेप दूर हो जाता है। रोगी लम्बे साँस लेने लगता है और कुछ काल पर्यंत अचेत पडा रहता है। जब चेतनावस्था मे आता है तब प्राय इन्द्रियाँ पूर्णतया यथावत् नही होती। प्रत्युत् क्लान्ति, शिर शूल या शिरोभ्रम एव दौर्बल्य अनुभव करता है। इस रोग मे दौरा साधारणत ५ या १० मिनट तक रहता है। क्वचित् इससे अधिक काल तक भी रह सकता है। किसी-किसी रोगी मे इस प्रकार का आवेग (दौरा) नियतकालिक हुआ करता है। किन्तु प्राय रोगियो मे आवेग का कोई नियत काल वा समय नही होता। आवेगो की न्यूनाधिकता रोगी के वल और दोषो की न्यूनाधिकता पर निर्भर होती है।

निदान—सरअ दिमागी मे उपर्युक्त लक्षण के अतिरिक्त शिरोगौरव, समोह एव भ्रम, मस्तिष्क दौर्बल्य और बुद्धिविभ्रम आदि मानसिक लक्षण अधिक पाये जाते हैं। सरअ मेदी मे आमाशय मे दाह एव कम्प होता, गला घुटता और नथुने फूल जाते हैं। कभी रोगी चिल्लाने लगता है और विवशता की दशा मे मल-मूत्र का उत्सर्ग हो जाता है। सरअ अतराफी मे हस्त-पाद से शीतल वायु (रीह) मस्तिष्क की ओर जाती है। नेत्र मे अश्रु आ जाते हैं। रोगी का वर्ण श्यामता युक्त हो जाता है। जृम्भा और अङ्गमर्द होना, हस्त-पाद की अँगुलियाँ मुड जाती और इच्छा न रहते हुए भी मूत्रोत्सर्ग हो जाता हे।

दोषानुसार कफज मे शरीर ढीला और श्वेत होता, मदसज्ञता होती और आवेग के समय झाग (फेन) अधिक पाये जाते हैं। सौदावी मे हृत्स्पदन, कृशता, भ्रम एव चिता और फेन (झाग) की अम्लता पाई जाती है। रक्तज मे आवेग-काल मे चेहरा लाल होता है। ग्रैवेयी सिराये फूल जाती हैं और प्राय नकसीर फूट जाती है। पैत्तिक दोष से क्वचित् ही मृगी उत्पन्न होती है। उक्त अवस्था मे चेहरा और नेत्र पीला हो जाता है। आवेग अल्पकालिक होता है; किन्तु बेचैनी और तिलमिलाहट अधिक होती है, इत्यादि।

उपचार—आवेग पूर्व कालीन चिकित्सा—जब रोग के आवेग का कोई पूर्वरूप प्रगट हो यथा—जिस स्थान से सुरसुराहट उठकर मस्तिष्क तक पहुँचती है, उस स्थान पर सुरसुराहट आरम्भ हो जाय तो उससे ऊपर एक रूमाल या कपडा आदि कसकर बाँध देवें। वहाँ तीव्र शैत्य या उष्णता पहुँचाये या दग्ध (दाग) कर देवे या

जोर से चुटकी लेवे। दोनो हाथो को गरम पानी मे रखना, उछलना, कूदना, उच्च शब्द से पढना, वस्ति देना और वमन करना आदि आवेग पूर्वकालिक उत्तम उपाय है। यदि आक्षेप आरम्भ हो गया हो तो आक्षेपग्रस्त अवयव को वलपूर्वक खींचकर अपने पूर्व स्थान पर ले आवें। यदि चेहरा एक ओर फिर गया हो तो उसको दोनो हाथो से पकडकर सीधा करें। कब्ज हो तो वस्ति करे। सरअमेदी मे वमन कराना भी गुणकारी है।

आवेगकालीन चिकित्सा—जब आवेग प्रारभ हो गया हो तब रोगी को सुखपूर्वक चारपाई या भूमि पर लिटा देवें। किन्तु शिर को किंचित् ऊँचा रखे। गले, सीना और उदर के बधन को ढीला कर देवे। जिह्वा के रक्षार्थ दाँतो के मध्य कागज या कपडे आदि की गद्दी या कोई काग आदि रख देवे, जिसमे जिह्वा कटने से सुरक्षित रहे। सिर और चेहरे पर शीतल जल आदि के छीटे देवें। जब रोगी अचेत हो जाय, तो उसी प्रकार लेटा रहने देवें। चेतनावस्था मे आने पर कभी रोगी पागलो की तरह चेष्टायें करने लगता है। अतएव उसकी सुरक्षा का ध्यान रखे।

आवेग के समय जुदबेदस्तर १ माशा, ऊदसलीब १ माशा, सुदाब के पत्र ३ माशा—इनको २ तोला प्याज के अर्क मे पीसकर नाक मे टपकायें। पलास-पापडा ३ माशा, या कडवी तुरई के बीज ३ माशा या तितलौकी के बीज ३ माशा इनमे से जो समय पर मिल सके उसे जल मे पीसकर नस्य देवें। जुदबेदस्तर और ऊदसलीब १-१ माशा, अर्क सौफ ३ तोला मे पीसकर कण्ठ मे टपकाये। कलौजी, सोठ, मुरमक्की, जुदबेदस्तर, काली मिर्च, इन्द्रायन का गूदा—इनमे से जो समय पर मिल सके, उसे पानी मे पीसकर नस्य देने से भी दौरे की अवस्था दूर होती है। मनुष्य की खोपडी की हड्डी ४॥ माशा और चीनी ४॥ माशा बारीक चूर्ण बनाकर कुछ दिन निरतर खिलाने से प्रभावत गुणकारी है। आक्षेप निवारण के लिये बाबूना का तेल, कुष्ठ का तेल, गुलरोगन मे से कोई गरम तेल हाथ-पॉव पर मलकर अँगुलियो को सीधा करना चाहिए।

आवेगमध्यकालीन चिकित्सा—रोग का आवेग समाप्त होने के तुरत बाद रोगी को कुछ काल तक उसी प्रकार पडा रहने देवें। इसके उपरान्त भी कुछ घण्टे तक उसकी देख-भाल करें, जिसमे रोगी औन्मादिक चेष्टा न कर सके। तदुपरात शिर शूल आदि आवेगजनित उपद्रव शमन करें। रोग के मूल कारण को मालूम करके और दृष्टि मे रखकर चिकित्सा करे, यथा—यदि दतविकार, फिरग, आमवात, अतिव्यवाय, हस्तमैथुन या अन्त्रकृमि आदि के कारण हो तो उन रोगो की विशिष्ट चिकित्सा करें।

रोगनिवृत्ति की दशा मे प्रथम कुछ यह योग प्रात -सायकाल पिलाना चाहिये—

जदवार १ माशा, ऊदसलीब १ माशा महीन पीसकर खमीरा गावजबान जदवार-ऊदसलीब वाला ७ माशा मे मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कुसूस के बीज ३ माशा अर्क सौंफ १२ तोला मे पीस-छानकर शीरा निकालें और ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिलायें।

चिकित्सासूत्र—रोगजनक दोष को मालूम करके उसका यथाविधि पाचन करें और तदुपरात उसका शोधन करें। इसके साथ ही जिस अग के अनुबध से रोग उत्पन्न हुआ हो उसका भी ध्यान रखें, यथा सरअ दिमागी मे मस्तिष्क का, मेदी मे आमाशय (मेदा) का, इसी प्रकार अतराफी (हस्त-पाद) आदि मे उन-उन अगो का ध्यान रखें।

चिकित्साक्रम—यदि श्लैष्मिक दोषों का सचय इस रोग का कारण हो तो श्लेष्मा का शोधन करें। अस्तु, प्रथम इस श्लेष्मपाचन योग का सेवन प्रारभ करें। कफज मृगी के लिये श्लेष्मपाचन योग—गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, बादरजबूया ५ माशा, ऊद-सलीब ५ माशा, अजीर जर्द ३ दाना, सौंफ ७ माशा, जूफाए खुश्क ५ माशा, अनीसून ५ माशा, गावजबान ५ माशा, जदवार ३ माशा, सौंफ की जड ७ माशा, बेख करफ्स ७ माशा, बेख इजखिर ७ माशा, हसराज ७ माशा, छिली हुई मुलेठी ५ माशा कासनी की जड ७ माशा—इनको रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात काल मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलायें। सात-आठ दिन यही योग पिलाकर विरेचनार्थ आठवें या नवें दिन इसी मे सनाय मक्की, छिली और बीच की हड्डी निकाली हुई सफेद निशोय, गुलाब के फूल ७–७ माशा मिलाकर रात्रि मे यथा विधि भिगोयें। प्रात काल अमलतास का गूदा ५ तोला, यवास शर्करा, लाल शक्कर, खमीरा बनफ्शा प्रत्येक ४ तोला, बादाम का तेल ६ माशा मिलाकर पिलायें।

विरेचन के दूसरे दिन तबरीद का यह योग देवें—जदवार १ माशा, ऊद-सलीब १ माशा महीन पीसकर खमीरा गावजबान १ तोला मे मिलाकर चाँदी का एक वर्क लपेट कर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, सौंफ ६ तोला और अर्क मकोय ६ तोला मे पीसकर शीरा निकालकर खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिलायें।

दो विरेचन इसी प्रकार देकर तीसरे विरेचन मे हब्ब इयारज ९ माशा, बादाम के तेल मे स्नेहाक्त करके रात्रि मे सोते समय अर्क गावजबान के साथ खिलाये। प्रात काल विरेचन का योग अतिरिक्त अमलतास और रोगन बादाम के पिलाये। विरेचन से खाली होने के उपरात शक्ति के लिये माजून फलासफा या माजून

जवीव या अतरीफल उस्तूखुद्दूस या खमीरा गावजबान, जदवार ऊदसलीववाला या दवाउल्मिस्क, हार्र जवाहरवाला या जुवारिश जालीनूस प्रत्येक ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा मे से कोई एक औषधि कुर्स खब्सुलू हदीद १ टिकिया और कुर्स मर्जा जवाहर वाला १ टिकिया मिलाकर कुछ दिन प्रात.काल खिलाये। सायकाल हब्व सरअ २ गोली ताजे जल के साथ खिलाये। जदवार, ऊदसलीव १–१ माशा महीन पीसकर खमीरा गावजबान सादा १ तोला या खमीरा गावजबान जदवार ऊदसलीववाला ७ माशा मे मिलाकर निरतर दीर्घकाल तक सेवन कराने से असीम लाभ होता है।

मस्तिष्क शुद्धि के लिये यह वटीयोग भी गुणकारी है। मुजिज के साथ हब्व इयारज के स्थान मे देना या अकेला पानी के साथ देने से ये वटिकाये मस्तिष्क से श्लेष्मा और साद्रीभूत सौदा का निर्हरण करती है—पीला एलुआ ३॥ माशा, गारीकून ३॥ माशा, सफेद निशोथ ३॥ माशा, कालादाना १॥ माशा, सकमूनियाए मुशव्वी ४ रत्ती, इन्द्रायन का गूदा ७ माशा—कूट-छानकर शहद मे मिलाकर चना वरावर गोलियाँ बनायें। इसमे से ६ माशा रात्रि मे सोते समय अर्क सौफ के साथ खिलायें या हब्व इयारज की सेवन विधि की तरह मुजिज के योग के साथ देवें।

यदि शोक एव चिन्ता के कारण सौदावी दोष की प्रगलभता होकर इस रोग की उत्पत्ति का कारण भूत हो तो रोगी को प्रसन्न और प्रफुल्लित रखें। कोई ऐसा कार्य न होने दे जिससे रोगी को आघात एव दु ख पहुँचे। मुफर्रेहात का उपयोग करायें। दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाला ५ माशा या माजून चोवचीनी मुकव्वी ५ माशा, अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला, शर्वत उन्नाव ४ तोला के साथ कुछ दिन खिलाये। यदि आवश्यकता पडे तो निम्न योग पिलाये—कासनी की जड ७ माशा, सौंफ की जड ५ माशा, पित्तपापडा ७ माशा, चिरायता ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, हसराज ५ माशा, मुलेठी ५ माशा, उन्नाव ५ दाना, उस्तूखुद्दूस ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो देवें। प्रात काल मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये। पद्रह दिन तक यही योग पिलाकर कफज अपस्मार (सरअ वलगमी) मे लिखे विरेचन योग का उपयोग करायें। दो विरेचन के उपरान्त तीसरा विरेचन हब्व इयारज का विना अमलतास और वादाम के तेल मिलाये देवे और वीच मे तवरीद का योग देते रहें। विरेचन से खाली होने के वाद दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली ५ माशा, अर्क मुरक्कव मुसफ्फी खून १२ तोला, शर्वत उन्नाव ४ तोला के साथ देवें।

रक्तज और पित्तज मे यह योग देवें—गुलवनफ्शा, गुलाव का फूल, नीलूफर

का फूल, पित्तपापडा पत्र, गावजवान, चिरायता, ऊदसलीव, विल्लीलोटन, फरजमुश्क के वीज प्रत्येक ७ माशा, पोट्टलिका वद्ध कुसूस के वीज ५ माशा, सौंफ ६ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात काल मल-छानकर ४ तोला खमीर वनपशा घोलकर पिलायें। दोषपाचनोपरान्त आवश्यकतानुसार एक या दो सप्ताह के पश्चात् यथोक्त विधि से विरेचन आदि करायें।

वक्तव्य— कृमिज अपस्मार मे इस योग मे १ माशा कमीला मिलाकर सेवन करे।

विरेचन से खाली होने के पश्चात् सरअ दिमागी (मानसिक अपस्मार) मे जदवार और ऊदसलीव प्रत्येक १ माशा, खमीरा गावजवान ऊदसलीववाल ५ माशा मे मिलाकर प्रात काल खिलाया करें। रात्रि मे अतरीफल उस्तूखुदूस या अफतीमन या माजून नजाह् ९ माशा सेवन करायें। सरअ मेदी (आमाशयविकारज अपस्मार) मे आमाशय का सुधार करें। मण्डर भस्म १ रत्ती जवाहर वाला प्रवाल भस्म (कुश्ता मर्जा जवाहर वाला) १ रत्ती, दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा मे मिलाकर प्रात काल खिला दिया करें और रात्रि मे जुवारिश कम्नी मुसहिल या जुवारिश ऊद तुर्श या मुलय्यिन ७ माशा या माजून कलकलानज का उपयोग करा दिया करें। कब्ज होने पर मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि मे सोते समय जल के साथ खिला दिया करें।

सरअ अत्राफी मे माजून जवीव १ से १॥ तोला या निम्न माजन सेवन करायें—केसर ४ माशा, हब्बुल्गार ९ माशा, नागरमोथा ९ माशा, तज ९ माशा, इक्लीलुल्मलिक ९ माशा, जटामासी ४ तोला, इजखिर मक्की ४ तोला, चिरायता ३ तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ८ तोला, इल्कुल् वुत्म ८ तोला—समस्त द्रव्यो को कूटकर तिगुने मधु मे मिलाकर यथाविधि माजून वनायें। इसमे से ४ माशा प्रतिदिन खिलाया करें।

स्त्रियों को यदि गर्भाशय विकार और आर्तवदोष के कारण हो तो उसका समीचीन उपाय करें। रोगन सोसन या रोगन वनपशा का शिरोऽभ्यङ्ग करें।

साध्यासाध्यता—यह रोग वहुधा साघातिक होता है। क्वचित् ही कोई रोगी अच्छा होता है। किन्तु मृत्यु कभी-कभी वहुत देर मे होती है। विशेषकर जवकि रोग का आवेग वहुत लवे अतर के वाद होता है। फिर भी क्वचित् ही कोई रोगी जरावस्था तक पहुँचता है।

अपथ्य—इसमे अधिक शीतल और अधिक उष्ण वस्तुओ का सेवन अहितकर है। तीव्र वायु मे बैठना, ऊँचे स्थान एव चद्रमा के प्रकाश मे देर तक रहना, चर्खो या हिडोले मे झूलना, घूमती हुई चीजो पर दृष्टि स्थिर करने का यत्न करना और उनको ध्यानपूर्वक देखना, वहते पानी को दृष्टि जमाकर देखना हानिकारक

है। युवानो मे अति व्यवाय या अधिक हस्तमैथुन भी अहितकर है। वादी गुरु एव विष्टभी और आध्मानकारक वस्तुओ का सेवन न करें। क्रोध एव शोकजनक कार्य से बचना अनिवार्य समझें। दुग्ध एव कफकारक पदार्थो, जैसे–उडद की दाल, कचालू, गोभी आदि से परहेज करे। मछली, बैगन, कद्दू, चावल शलगम, मूली, लहसुन, प्याज, मटर, मसूर की दाल, अमरूद–, ये सब पदार्थ अहितकारी है।

पथ्य—शुद्ध वायु मे रहना, प्रात-सायकाल वायु सेवन के लिये भ्रमण करना लघु-शीघ्रपाकी आहार का सेवन, चपाती, बकरी का शूरवा, मुर्गा, तीतर और बटेर का भुना हुआ मास, भुनी हुई अरहर और मूग की दाल, कूर्मा या भुना हुआ कीमा गरम मसाला आदि मिलाकर देवे। पुदीना की चटनी आदि भी लाभकारी है।

बारहवाँ प्रकरण

सक्ता

नाम—(अ०) सक्त, (उ०) सक्ता, बेहोशी मिस्ल मुर्दा, (स०) सन्यास, (अ०) ऐपोप्लेक्सी (Apoplexy)।

इस रोग मे समस्त चेष्टायें और सवेदनायें अकमात् नष्ट हो जाती है और रोगी मृतक की भाँति अचेत पडा रहता है। केवल श्वासोच्छ्वास और हृदय की चेष्टाये शेष रहती है, किन्तु वह भी अति मद होती है। रोगी देखने मे सर्वथा मृतकवत् प्रतीत होता है।

हेतु—इस रोग मे मस्तिष्क मे सुद्दा ताम्मा पड जाने के कारण रूह (ओज) के आवागमन के मार्ग सर्वथा अवरुद्ध हो जाते है। कफ, रक्त या सौदा से मस्तिष्क की धमनियो मे रक्त का सचय (इम्तिलाऽदिमाग) होकर मस्तिष्क के कोष्ठो मे या सुद्दा ताम्मा होता है। मस्तिष्क मे अत्यत शीत या आघात लगने या सिर के बल गिर पडने या दूषित वाष्प या विषसयावस्था से मस्तिष्क का सकोच होकर उसमे अवरोध उत्पन्न हो जाता है। क्योकि यह रोग अधिकतया कफ से होता है। किन्तु रक्त से भी अधिक होता है और सौदा से कम होता है। अतएव यहाँ केवल सक्ता बल्गमी (कफज सन्यास Serous Apoplexy) और सक्ता दम्वी (रक्तज सन्यास—Sanguinous Apoplexy) का ही वर्णन किया जाता है।

पूर्वरूप—कभी मूल व्याधि से पूर्व निम्नलिखित पूर्वरूप प्रगट हुआ करते हैं—बार-बार शिर शूल होना, भ्रम, कर्णनाद, दृष्टिदोष, नासागत रक्तपित्त (नकसीर), हृल्लास, स्वभाव का चिडचिडापन, स्मृतिदोष और कभी अर्दित का होना, ये लक्षण देखने मे आते हैं। रोगाक्रान्त होने से पूर्व रोगी आलस्ययुक्त होता है। शरीर की मासपेशियाँ फडकती हैं। रोगी निद्रावस्था मे दाँत पीसता है।

रोग की घटना की रीति—यह तीन प्रकार से घटित होता है—(१) रोगी अकस्मात् अचेत होकर गिर पडता है। इसका चेहरा साधारणतया लाल या क्वचित् पीला होता है। सांस खर्राटे से लेता है, (२) अकस्मात् कठिन शिर शूल होकर पक्षवध हो जाता है। उत्क्लेश, हृल्लास एव मूर्च्छा होती, नाडी अत्यत दुर्बल—मद चलती जो कठिनतापूर्वक अनुभव होती है, आदि और (३) अकस्मात् पक्षाघात हो जाता है और रोगी धीरे-धीरे सर्वथा अचेत हो जाता है।

लक्षण—रोगी मृतकवत् सर्वथा अचेत पडा रहता है, जगाने से बिलकुल नहीं जागता। साँस कठिनतापूर्वक एव खर्राटे से लेता है। मुख मे फेन होता है। हाथ-पाँव शीतल होते हैं। नेत्र पथराये हुए, कभी दोनो पुतलियाँ विस्फारित एव सज्ञाशून्य होती है। दाँती लगी होती है। अचेतावस्था मे ही मल-मूत्र का उत्सर्ग हो जाता है। निगलने की शक्ति कम या नष्ट हो जाती है। उक्त अवस्था से कभी रोगी चेतनावस्था मे आकर बुद्धिदोष या पक्षवध से आक्रात हो जाता है और कभी इसी दशा मे परलोक सिधार जाता है।

इस रोग का आवेग ५ मिनट से लेकर साधारणतया ७२ घटे तक रहता है। रोगी कभी कुछ ही क्षण मे चल बसता है। यदि रोगी २४ घटे तक जीवित रहे और श्वास मे अधिक खर्राटा हो, तो रोगनिवृत्ति की आशा कम रहती है। कफज सन्यास मे शरीर शिथिल चेहरा पिलाई लिये श्वेत होता है। मुख से पुष्कल झाग (फेन) आता है। रक्तज संन्यास मे चेहरा श्यामता लिये लाल होता है। ग्रैवेयी शिरायें रक्त से पूर्ण होती है और ललाट पर स्वेद निकलता है।

सापेक्ष निदान—मृत और संन्यास—कभी-कभी श्वास की गति और नाडी की गति भी प्रतीत नही होती और मृत एव सन्यास रोगी मे अतर नही रहता। ऐसी दशा मे रोगनिर्णय की विधि यह है कि रोगी के नथुनो के समीप बारीक धुनी हुई रूई या कबूतर अथवा किसी और पक्षी का अत्यत कोमल पर (पख) इस प्रकार रखा जाय कि वायु एव आसन्नवर्ती मनुष्यो का श्वास उसे गतिशील न कर सके, फिर ध्यानपूर्वक देखे। यदि रूई या पर के रोयें मे गति प्रतीत होती हो तो अभी रोगी जीवित है। इसी प्रकार अँधेरे स्थान मे सन्यास रोगी की पुतलियो को

खोलकर देखने से दीपक के प्रकाश एव उजाले मे देखने वाले के रूप की परछाई (प्रतिबिब) मालूम होती है। परीक्षा की अन्य विधि यह भी है कि चॉदी या तॉबे का अत्यत पतला एव हलका कटोरा लेकर थोडा-सा पानी या पारा उसके अदर डालकर रोगी के उर.स्थल पर रखे। यदि पारा या पानी मे गति प्रतीत हो तो रोगी को जीवित समझें। मृगी और मूर्च्छा से तथा मादक द्रव्यजनित नशा से इसका निदान इस प्रकार करते है कि मृगी के रोगी के मुख से आवेग के समय झाग आता और हाथ-पॉव मे आक्षेप होता है। मूर्च्छा साधारणतया युवती, कोमल प्रकृति और अपतन्त्रक पीडित ललनाओ को होती है, जो कुछ ही क्षणो मे दूर हो जाती है। मद्यपान जनित नशा मे मुख से मद्य की गध आती है और दोनो नेत्रो की पुतलियॉ एक समान होती है। यदि रोगी बहुत बलपूर्वक जगाया जाय तो हूँ-हॉ कर सकता है। अहिफेनजनित मूर्च्छा मे रोगी जोर-जोर से खर्राटे से श्वास लेता है और जगाने से जाग पडता है।

उपचार—जब इस रोग के होने की आशका हो तब शारीरिक और मानसिक श्रम समप्रमाण मे करे। स्त्रीसहवास से भी यावच्छक्य परहेज करे। मद्यसेवन का सर्वथा परित्याग कर देवें। कब्ज नही होने देवे। मलत्याग बलपूर्वक न करे। भ्रम और शिरःशूल के लक्षण प्रगट होते ही रक्तमोक्षण और विरेचन के द्वारा शोधन करें।

रोगी की गर्दन और सीने का बन्धन खोलकर सिर को ऊँचा रखे। रोगी के रहने का स्थान शीतल रखें और वहॉ कोलाहल न होने देवे। रोगी अचेत हो तो—काश्मीरी पत्ता ३ माशा, कायफल ३ माशा, जुदबेदस्तर १ माशा, कस्तूरी १ माशा—सबको महीन पीसकर नलकी के द्वारा नासिका मे फूंके। गेहूँ की भूसी और नमक दोनो की पोटली बॉधकर गरम करके सिर को सेके। अथवा बाबूना का फूल १ तोला, बिरजासफ १ तोला, सातर फारसी १ तोला, सूखा पुदीना १ तोला, छडीला १ तोला, अकरकरा १ तोला—सबको जल मे क्वाथ करके छानकर लोटे की टोटियो के सिर के ऊपर डाले। यदि रोगी का मुख खुल सके तो तिर्याक फारूक १ माशा एक तोला शहद मे मिलाकर रोगी के तालू और जिह्वा पर मर्दन करें। रोगन शिफा का कोष्ण शिरोऽभ्यङ्ग करे। अथवा सिर के बाल कतरवा कर जुदबेदस्तर ६ माशा, राई ६ माशा दो तोले सिरका मे पीसकर कुनकुना गरम करके सिर के ऊपर लेप करें और नमदा की टोपी पहनाकर लोह का टुकडा गरम करके सिर के ऊपर रखें। यदि सभव हो तो दवाउल्मिस्क मोतदिल ३ माशा एक तोला अर्क सौंफ मे घोलकर कण्ठ के भीतर टपकायें। यदि इन उपायो से रोगी चैतन्य न हो तो निम्न बस्ति देवें—गारीकून ३ माशा, सफेद निशोथ ५ माशा, चुकदर के पत्र ५ माशा, रेंडी की गुद्दी ५ माशा, कतूरियन दकीक

५ माशा, सोआ के पत्र ५ माशा, सूरजान ५ माशा, वस्फाइज फुस्तुकी ७ माशा, मक्की सनाय ९ माशा, कडकी गिरी ९ माशा, उन्नाव ९ दाना, लिसोडा ११ दाना—सबको ऽ१।। जल मे क्वाथ करें। अर्धावशेष रहने पर छानकर २ तोला अमलतास की गुद्दी, खाँड २ तोला, रेंडी का तेल २ तोला, मीठे बादाम का तेल ३ माशा, जवाशीर २ रत्ती, गुग्गुल ४ रत्ती, बुरए अरमनी २ माशा मिलाकर वस्ति करें। यदि रोगी सचेत न हो जाय तो जुदवेदस्तर १ माशा, अदरक १ माशा, जरावद २ माशा महीन पीसकर २ तोला शहद मिलाकर दिन मे दो-तीन वार चटायें। चार-पाँच दिन खाना-पीना सर्वथा बन्द रखें और उसके स्थान मे शहद २ तोला अर्क सौंफ १० तोला मे क्वाथ करें। जब अर्धावशेष रह जाय तब पिलाये। यदि अधिक दुर्वलता प्रतीत हो तो चौथे-पाँचवें दिन कबूतर के बच्चा का शूरवा देवें। पाँचवें दिन से यह मुजिज पिलायें—सौंफ ७ माशा, सौंफ की जड ७ माशा, करफस की जड ७ माशा, इजखिर की जड ७ माशा, कबर की जड ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, हसराज ५ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, पीला अजीर ५ दाना—रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात काल मलछानकर ४ तोला शहद मिलाकर पिलायें और सायकाल ३ माशा इत्रफिलाए कबीर खिलायें। नो दिन यही योग पिलाकर दसवें दिन प्रात कालिक योग मे विरेचनार्थ सनाय मक्की ५ माशा मिलाकर योग के द्रव्यो को रात्रि मे भिगो देवे। प्रात -काल क्वाथ करके छानकर अमलतास की गुद्दी ५ तोला, खाँड ४ तोला, यवासशर्करा ४ तोला, गुलकद ४ तोला मिलाकर छान लेवें और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलाये। नौ-दस बजे तक यदि विरेक न आये तो शर्वत दीनार ४ तोला, शर्वतवर्दमुकर्रर ४ तोला, अर्क सोफ १५ तोला मिलाकर कुनकुना करके थोडा-थोडा पिलायें। अगले दिन तवरीद का योग विना तुख्म रेहाँ के पिलायें। तीसरे दिन पुन हव्व इयारज ९ माशा चाँदी के एक वर्क मे लपेटकर १२ तोला अर्क गावजवान के साथ चार घडी रात्रि शेष रहे, तब रोगी को उठाकर फँकाकर शयन करा देवें। प्रात काल विरेचन का यही योग विना अमलतास और बादाम के मग्ज के शीरा के साथ देवे। यदि इससे भी कुछ दोष शेष रहे तो चार दिन मुजिज का योग और पिलाकर एक और विरेचन देवें। सम्यक् शुद्धि के उपरात वलवर्धनार्थ खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाब वाला ५ माशा चाँदी के एक वर्क मे लपेट कर प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क शाहतरा ६ तोला, अर्क कासनी ६ तोला, शर्वत बनफशा २ तोला के साथ कुछ दिन देवें या मर्जा जवाहर वाला एक टिकिया खमीरा गावजवान जवाहर वाला ५ माशा मे मिलाकर प्रात काल देवें और सायकाल खुब्सुलहदीद (मण्डूर) एक टिकिया दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली ५ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा मे मिलाकर खिलाय।

रक्तज सन्यास मे दोनो बाहो पर कीफाल या सरारू सिरा का वेधन कराना या दोनो स्कंधो पर सीगी लगवाना या रोगी की दोनो पिडलियो और बाहो पर कोई पटका या दुपट्टा इसलिये बाधना जिसमे सिर की ओर न्यूनतर रक्त जाय तथा उसकी हथेलियो और तलुओ पर खूब बलपूर्वक सवाहन करना एव वस्ति देना लाभकारी उपाय है।

कफज सन्यास—मे वमन कराना, नस्य देना, सिर के ऊपर परिषेक प्रलेप, और मालिश आदि करना और बल्य एव उत्तेजक औषधियो का सेवन लाभकारी उपाय हैं।

जब बल्य आहारो के अति सेवन या मद्यपान और मास के अतिसेवन से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तब अचेतावस्था मे दोनो हाथो की सरारू सिरा का वेधन करने से और रोगी के बलानुसार रक्त ग्रहण करने और पिडलियो पर सींगी लगाने तथा बाहु और पिडलियो को रूमाल से कसकर बाँधने से, तलुओ और हथेलियो की मालिश करने से लाभ होता है।

अपथ्य—आवेगनिवृत्ति से और विरेचन से खाली होने तक यदि रोगी की शक्ति इतनी हो कि वह क्षुधा सहन कर सके तो कोई आहार न देवें, जल एव आहार के स्थान मे केवल मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) का देना ही पर्याप्त होता है। विरेचन के उपरात कद्दू, हिनवाना, खीरा, ककडी, तुरई, चावल आदि शीतल पदार्थो से परहेज रखे।

पथ्य—आवेगनिवृत्ति के उपरात पाँच दिन तक मध्वाम्बु पर ही रखे अर्थात् २ तोला मधु, १२ तोला अर्क सौंफ मे क्वाथकर अन्न और जल के स्थान मे देवे। यदि रोगी क्षुधा के ऊपर धैर्य न रख सके तो कबूतर या बकरी का शूरबा गरम मसाला डालकर पिलाये। शाकाहारी को मूँग या मोठ की दाल पकाकर केवल उसका यूष पिलाये। विरेचनोपरात बकरी के मास का शूरबा, अरहर की पतली दाल गरम मसाला आदि डालकर चपाती के साथ खिलावे। तीतर-बटेर का शूरबा या यखनी देना और मासार्क (माउल्लहम) पिलाना भी गुणकारी है। प्रथम क्षुधा से अत्यल्प भोजन देवे। ज्यूँ-ज्यूँ स्वास्थ्य लाभ होता जाय, भोजन का प्रमाण धीरे-धीरे बढाते जाएँ।

तेरहवाँ प्रकरण

वातव्याधि

इस्तिर्खाऽ फालिज' लकवा और राअ्शा

इस्तिर्खाऽका धात्वर्थ ढीला होना या लटक पडना है। परन्तु यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे उस रोग को कहते है जिसमे शरीर वा शरीर का कोई मुख्य भाग या अग, जैसे कोई हाथ या पैर शिथिल वा ढीला हो जाता हे और चेष्टादायिनी शक्ति निर्बल वा नष्ट हो जाती हे अर्थात् निश्चेष्टता एव नि सज्ञता का उक्त प्रभाव किसी मुख्य अग तक ही सीमित होता हे।

नाम—(अ०) इस्तिर्खाऽ, शलल, (उ०) शल्ल होना, झूला मारना; (स०) एकागवात, घात, वध, (अ०) पैरेलिसिस (Paralysis), पाल्सी (Palsy)।

फालिज का धात्वर्थ दो टुकडे करनेवाला है। यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे उस रोग को कहते हैं जिसमे स्वतत्र हकीमो के विचार से सिर के सिवाय शरीर का आधा भाग (दाहिना या बायाँ) लबाई मे वा वातग्रस्त वा ढीला हो जाता और उसकी चेष्टा एव सवेदना शक्ति विकृत वा नष्ट हो जाती है।

नाम—(अ०) फालिज, (उ०, हि०) अधरग, (स०) अर्द्धाङ्ग, पक्षवध, पक्षाघात, (अ०) हेमिप्लीजिया (Hemiplegia)।

फालिज, इस्तिर्खाऽ और अबुबल्किया का अर्थान्तर—प्राचीन यूनानी हकीमो ने फालिज और इस्तिर्खाऽ मे कोई भेद नही किया है, परतु उत्तरकालीन हकीमो ने इनमे यह भेद किया है कि वे इस्तिर्खाऽ को सामान्य और फालिज को विशेष मानते हैं अर्थात् फालिज को इस्तिर्खाऽका वह भेद मानते हैं जो शरीर के आधे भाग मे लबाई के रुख मे हो। यदि सिर के सिवाय शरीर के दोनो ओर अर्थात् सपूर्ण शरीर मे हो तो उसे अबुबल्किया (वा सकात) कहते हैं।

नाम—(अ०) अबुबल्किया, सकात, (स०) सर्वांगवात, (अ०) जेनेरल पैरेलिसिस (General Paralysis)।

इस्तिर्खाऽ जिस्म अस्फल मे कटि के नीचे का आधा भाग वातग्रस्त हो जाता हे और रोगी से चला-फिरा नही जाता।

नाम—(स०) ऊरुस्तम्भ, पगुत्व, (अ०) पैराप्लेजिया (Paraplegia)।

लकवा का धात्वर्थ उकाब (एक पक्षी) है जिसका चेहरा टेढा और बाछे विस्फारित होती हैं। यूनानी वैद्यक मे उस रोग को कहते हैं जिसमे साधारण-

तथा चेहरा के एक ओर की पेशियाँ वातग्रस्त होकर (उकाब के सदृश) मुख टेढा होकर एक ओर दाई वा दाई दिशा को झुक जाता है और रोगी एक ओर की ऑख पूर्णतया बद नही कर सकता और न मुख के दोनो होठ पूर्णतया मिला सकता है।

नाम—(अ०) लकवा (उ०, हि०) लकवा, (स०) अर्दित, (अ०) फेशियल पैरेलिसिस (Facial Paralysis)।

राअ्शा किसी अग के कॉपने (कम्पन) को कहते है।

नाम—(अ०) राअ्शा; (स०) कम्पवात, (अ०) कोरिया (Chorea)।

उपर्युक्त रोगो के हेतु एव चिकित्सा-सूत्र लगभग एकही-से है। अतएव प्राय यूनानी वैद्यकीय ग्रथो मे एक ही स्थान मे इनका वर्णन किया गया है। अस्तु, मै भी इनका नीचे एक ही स्थान मे वर्णन करना उचित समझता हूँ।

हेतु—ये रोग शरद् ऋतु मे अधिक हुआ करते है और शीत प्रकृति के लोग विशेषत दुर्बल, वृद्ध और अधिक अवस्था के लोग जिनके शरीर मे कफ की अधिकता होती है, इन रोगो से पीडित होते है। प्राय शीतल वायु के लगने, शीतल जल अधिक पीने से या सन्यास वा मृगी रोग से आक्रान्त होने तथा स्त्रियो मे अपतन्त्रक एव गर्भधारण के पश्चात् ये रोग हो सकते है। कभी सुषुम्नाविकार से भी ये रोग हो जाते है। यदि युवाओ को पक्षवध हो जाय तो अधिक काल तक उपचार करने से कठिनतापूर्वक आराम होता है। सन्यास (सक्ता) होने के पश्चात् यदि पक्षवध हो तो भी आराम होने की कम आशा होती है। कम्पवात मे ऐच्छिक और अनैच्छिक चेष्टाये अस्त-व्यस्त हो जाती है। यह मस्तिष्क और सुषुम्ना के दौर्बल्य से उत्पन्न होता है। अति तमाकू के सेवन, अति मैथुन, अति चाय और मद्यसेवन से भी किसी-किसी को कम्पवात हो जाता है। जराज (वृद्धावस्था) मे कम्पवात असाध्य होता है।

लक्षण—यदि स्वास्थ्य की दशा से आधा शरीर या कोई विशेष अग सुन्न पड जाय या कभी-कभी फडकता रहे या जागने के पश्चात् शीतल प्रतीत हो तो पक्षाघात होने की सभावना होती हे। विशेषकर शीतकाल मे अथवा जिस समय उत्तरी वायु चलती हो या लक्षण व्यक्त हो तो इस रोग के प्रगट हो जाने का स्पष्ट प्रमाण है। कभी अकस्मात् सन्यास के साथ ही पक्षवध हो जाता है। कभी एसा होता है कि रोगी प्रात काल सोकर उठता है तो मद-मद सिरदर्द की शिकायत करता है। फिर एक-दो वमन होकर तुरत पक्षवध हो जाता है।

चेहरे पर भुरभुराहट प्रतीत होती है, मूत्र श्वेत एव साद्र (गाढा) हो जाता है, मुख का आस्वाद फीका होता हे। लकवा मे चेहरा किसी भाँति टेढा हो जाता है। मुँह का कोना दाहिनी या बायी ओर खिचकर टेढा हो जाता हे। विकृत दिशा के हस्त-पाद पक्षवध मे निष्क्रिय हो जाते हैं। इस्तिर्खाऽ जिस्म अस्फल (ऊरुस्तम्भ) मे कटि से नीचे का भाग निश्चेष्ट एव सज्ञाशून्य हो जाता है। यदि विकारी हस्त-पाद को उठाकर छोड देवें तो स्वयम् गिर पडता है। रोगी की चेतना मे अतर पड जाता हे। पाचनशक्ति विकृत हो जाती हे तथा कब्ज होता हे। विना सहारा के चलना-फिरना, उठना-बैठना कठिन हो जाता हे।

उपचार—फालिज, लकवा और इस्तिर्खाऽ (अगघात) रोग के लक्षण व्यक्त होने पर रोगी को कोमल शय्या के ऊपर सुखपूर्वक किसी करवट अँधेरे कमरे मे लिटाये रखें। रोगी के समीप जलती हुई अँगेठी रखें। शीतकाल मे गरम कपडे पहना-ओढाकर निर्वात स्थान मे रखे। कब्जनिवारण के लिये वस्ति देना, रोगीको आश्वस्त करना आदि लाभकारी उपाय हैं। प्रारभ मे तीव्र औषधि का उपयोग न करें। कब्जनिवारण के लिये केवल वस्ति करना और अन्न-जल के स्थान मे कम से कम तीन दिन और अधिक से अधिक सप्ताह पर्यन्त केवल मध्वाम्बु (माउलअस्ल) देना और उसके साथ अर्क दालचीनी सम्मिलित करते रहना बहुत ही गुणकारी उपाय है। अस्तु, पहले सात दिन तक शहद २ तोला और अर्क गावजवान १२ तोला पका कर पिलाते रहे। आठवें दिन यह मुजिज देवें—

सौंफ, सौंफ की जड, करफस की जड प्रत्येक ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, हसराज ७ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, अजीर जर्द ५ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, खुबाजी के बीज ७ माशा, गावजबान ५ माशा, रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर खमीरा वनफशा ४ तोला, मिलाकर पिलाये। आठ नौ दिन तक उक्त योग सेवन कराकर दसवे दिन सनाय मक्की ७ माशा, सफेद निशोथ ७ माशा रात्रि मे पूर्वोक्त योग मे मिलाकर भिगो देवे और प्रात काल अमलतास की गुद्दी ५ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, यवासशर्करा ४ तोला, शकर सुर्ख ४ तोला और गुलकद ४ तोला तथा ५ दाना मीठे बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर विरेचन देवे और अगले दिन तबरीद का योग देवें। पुन पाँच दिन तक मुजिज का योग पिलाने के बाद मग्ज बादाम और अमलतास का गूदा के विना उपर्युक्त विरेचनीय योग के साथ ९ माशा हब्ब इयारज का विरेचन देवे। विरेचन का कार्य समाप्त होने के पश्चात् रोगन सुर्ख या रोगन कलाँ या रोगन सब्ज

की कोष्ण मालिश करायें। कुनकुना रोगन खफाश की मालिश भी पक्षवध मे गुणकारी है।

विरेचन से खाली होने के उपरात बलोत्पत्ति के लिये प्रात' काल मर्जा जवाहरवाला एक टिकिया, खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा मे मिलाकर और सायकाल अथवा प्रात -साय दोनो समय कुर्स खुब्सुलहदीद १ टिकिया, अतरीफल उस्तूखुद्दूस ५ माशा मे मिलाकर सेवन कराना और भोजनोत्तर दवाउल्मिस्क हार्र ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा सेवन कराना गुणकारी हे। अथवा माजूनसीर उलवीखा वाली ५ माशा या माजून इजाराकी २ माशा या हब्ब इजाराकी २ गोली खिलाना या माजून फलासफा ७ माशा मे १ माशा जुदबेदस्तर पीस-मिलाकर खिलाना भी गुणकारी है।

हब्ब कुचला १ गोली भोजनोत्तर या शोधनोपरात हब्ब सम्मुल्फार १-१ गोली प्रात -साय भोजनोत्तर सप्ताह पर्यंत खिलाएँ। गोली खाने के तीन दिन बाद खाँड या मिश्री का पानक (शर्बत) पिलाने से रोगी को खुलकर वमन और विरेचन होकर शरीर दोषो से शुद्ध हो जाता है। मास से परहेज करें। भोजन अलोना (बिना नमक के) करते रहें।

लौंग का तेल और जायफल का तेल प्रत्येक ६ माशा परस्पर मिलाकर ५ बिन्दु नाक मे टपकाने या पीला एलुआ १ माशा, बूरए अरमनी १ माशा और कलौंजी १ माशा कूट छानकर चुकदर के रस मे घोलकर नाक मे टपकाने से भी पक्षवध एव अर्दित मे लाभ होता है। बीरबहूटी १ नग के सिर और पैर उखाडकर पानके बीडा मे रखकर कुछ दिन खिलाने या ५ तोला मध्वाम्बु के साथ १ माशा भाग खिलाने या चीते वा सिह की चर्बी विकारी अग के ऊपर मलने से भी उपकार होता है। गोदती भस्म १ टिकिया ५ माशा माजून योगराज गगल मे मिलाकर खिलाने से भी कुछ दिन मे लाभ होता है। जुदबेदस्तर, इयारज फैकरा प्रत्येक २ तोला कूट-छानकर चूर्ण बनाकर ३॥ माशा प्रति दिन रात्रि मे सोते समय ताजे पानी के साथ खिलाने से भी लाभ होता है।

गोली का योग जो कफज पक्षवध, अर्दित, कम्पवात और एकागवात आदि मे गुणकारी है--अकरकरा, गोलमिर्च और पीतल प्रत्येक ३ माशा, पीपलामूल ६ माशा, सोठ और शुद्ध बच्छनाग प्रत्येक १ तोला--सबको कूट-छानकर गुड और गोघृत मे मिलाकर मूँग के बराबर गोलियाँ बना लेवे। इसमे से २ गोली प्रति दिन रात्रि मे सोते समय ताजे पानी के साथ खिलायें। शोधनोपरात इसका उपयोग करना चाहिये।

कम्पवात (राअ्शा) यदि शीतजन्य हो तो जुदबेदस्तर, अकरकरा, हीग ३-३ माशा, ४ तोला जैतून के तेल मे मिलाकर मर्दन करें। यदि कफाधिक्यजन्य

हो तो वपक्षवध के सदृश मुजिज पिलाकर विरेचन देवें और तीव्र औषधियो के सेवन से वचे । शोधनोपरात रोगन कुस्त (कुष्ठतैल) या रोगन सुर्ख या रोगन सीर या रोगन कुचला मे से किसी एक तेल का कुछ दिन कुनकुना मर्दन करायें। शुद्धि के वाद माजून फलासफा, या माजून इजाराकी या माजून लना और दवाउल्मिस्क हार्र आदि गोदन्ती भस्म के साथ देने से वडा उपकार होता हे ।

यदि मद्य, चाय और तमाकू के अति सेवन तथा अति व्यवाय से यह रोग हुआ हो तो रोग के मूलभूत हेतु का परित्याग करायें और मस्तिष्क एव वातनाडियो को वल प्रदान करने वाले आहार-ओषध, जैसे—हव्व आसाव २ गोली या हव्व खास १ गोली मक्खन मे मिलाकर प्रात काल खिलायें और सायकाल कुश्ता तिला जदीद १ टिकिया या कुश्ता तिला कलॉ २ चावल, लवूवकवीर ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा मे मिलाकर खिलायें। रात्रि मे कुर्स मर्जा जवाहर वाला एक टिकिया, खमीरा गावजवान जवाहर वाला ७ माशा मे मिलाकर खिलाये । इसमे माजून राअ्शा या हवूव राअ्शा का उपयोग भी गुणकारी हे ।

अपथ्य—इन रोगो मे दीर्घपाकी, गुरु एव आध्मानकारक पदार्थ, जैसे—गोभी, उडद की दाल, अरवी, कचालू आदि और शीतल पदार्थ, जैसे—कद्दू, हिनवाना, गन्ने का रस आदि अहितकारक हैं । शीतल जल-वायु से वचना चाहिये । सुगध द्रव्यो का शिर के ऊपर मलना और सूँघना तथा खट्टी वस्तुओ का सेवन इन रोगो मे अहितकर हे। मानसिक श्रम से यथाशक्य वचें । जव तक पर्याप्त विरेचन होकर दोष शुद्ध न हो जाय, सिवाय माउल्अस्ल (मध्वाम्बु) के कोई आहार न खायें न पियें । अन्न और जल के स्थान मे केवल उपर्युक्त मध्वाम्वु के योग का वारवार सेवन पर्याप्त होता है ।

पथ्य—सात दिन तक सिवाय माउल्अस्ल के अन्न-पान बिल्कुल न देवे । यदि दुर्वलता एवं क्षुधा अधिक मालूम हो तो जगली कवूतर का शूरवा या मूँग का यूष गरम मसाला आदि डालकर पिलायें। मुजिज के दिनो मे भी यही आहार देवे । यदि दुर्वलता अधिक हो तो रोटी का छिलका (पपडा) निकालकर शूरबा या मूँग के यूष मे भिगोकर खिलाये । विरेचनोपरात वकरी का मास, अरहर या मूँग की दाल, वकरी या मुर्गे का भुना हुआ मास, मेथी का साग या करेला, अडा, सूजी का विसकुट, चाय और कहवा आदि सेवन कराये । रोग के आरम्भ मे जितना सहन हो सके उतना अधिक उपवास कराने से रोगी को रोग से उतना ही शीघ्र आरोग्य लाभ हो जाया करता है । फलो मे खजूर, खूवानी, अजीर, वादाम आदि का सेवन भी गुणकारी हे ।

वक्तव्य—कफ कम्पवात के लिये भी उपर्युक्त उपाय लाभकारी है। परन्तु कम्पवात मे इतना अनाहार रहना और उपवास करना अनिवार्य नही

है। अपितु शूरवा चपाती भूख से कम देते रहना चाहिये। अति चाय एव मद्यसेवनजन्य और अति मैथुनजन्य कम्पवात मे चाय और कहवा से परहेज करावे।

चौदहवाँ प्रकरण

तशन्नुज और तमद्दुद व कुजाज

नाम—(अ०) तशन्नुज (धात्वर्थ सिकुडना), (उ०, हि०) ऐंठन, (स०) आक्षेप, आक्षेपक, (अं०) कन्वल्शन (Cenvulsion)।

नाम—(अ०) तमद्दुद (धात्वर्थ खिचाव या तनाव), कुजाज (धात्वर्थ सिकुडना या सूखना); (उ०, हि०) धनुकबाय, चाँदनी, (स०) अपतानक, धनुर्वात, धनुस्तम्भ; (अं०) टेटनस (Tetanus), ट्रिस्मस (Trismus)

तशन्नुज—का अर्थ खिचावट है। यह रोग जब ग्रीवा, हँसली और कटिकी पेशियो मे होता है तब इसे कुजाज कहते हैं। जब किसी अग की वातनाडियाँ और पेशियाँ दोनो ओर से खिचकर उस अग को सीधा तान देती हैं तब इस रोग को तमद्दुद कहते हैं। तमद्दुद वस्तुत एक प्रकार का तशन्नुज ही होता है जिसमे पेशियाँ एक ओर खिचने के स्थान मे दोनो ओर खिच जाती हैं।

भेद—हेतु भेद से तशन्नुज चार प्रकार का होता है—(१) तशन्नुज इम्तिलाई (दोषसचय जन्य), (२) तशन्नुज युब्सी (रूक्षता जन्य), (३) तशन्नुज रीही (वायुजन्य) और (४) तशन्नुज ईजाई (कष्ट जन्य)। व्यक्ति स्थान भेद से कुजाज के यह चार भेद होते हैं—(१) कुजाज कुद्दामी या अमामी (अन्तरायाम अपतानक—Emprosthotonos) जिसमे शरीर सामने की ओर झुक जाता है, (२) कुजाज खल्फी (वहिरायाम अपतानक कुब्ज—Opisthotonos) जिसमे शरीर पीछे की ओर अकड जाय, (३) कुजाज जानिवी (पार्श्वायाम अपतानक—Pleurothotonos) जिसमे शरीर अकडकर एक पार्श्व की ओर झुक जाता हे और (४) कुजाज मुस्तकीम (दण्डापतानक—Orthotonos) जिसमे शरीर अकडकर विल्कुल सीधा हो जाता हे। परन्तु हेतु दृष्ट्यानुसार भी तशन्नुज की भाँति इसके यह चार भेद होते है—(१) कुज़ाज इम्तिलाई, (२) कुजाज युब्सी (३) कुजाज रीही और (४) कुज़ाज ईजाई या जरवी (अभिघातज) जो अपेक्षाकृत अधिक होता है।

हेतु—अभिघात, वातनाडीगत दवाव, वातनाडी शोथ, कतिपय रोग, जैसे मृगी, सन्यास ओर मस्तिष्क शोथ आदि, मूत्रविषमयता, अति मद्यसेवन जनित विषमयता, कुपीलुसेवनजनित विषमयता, वालको मे उदरकृमि और दन्तोद्भेद, भय, कब्ज और वस्त्यश्मरी आदि, पुरुषो मे हस्तमैथुन, अति मैथुन आदि, स्त्रियो मे आर्तवविकार और गर्भधारण का समय तथा विषधर जतुओ के दशजन्य विषप्रभाव, अतिशीत एव खुनाक (कण्ठ-शोथ), या सरसाम, पार्श्वशूल और सशोधन आदि इसके हेतु होते है।

लक्षण—तशन्नुज मे कुछ या समस्त ऐच्छिक-अनैच्छिक पेशियाँ सत्वर एव वारी-वारी से ऐंठती है और अकस्मात् हलकी मूर्च्छा होकर हाथ-पाँव और शरीर की अन्य पेशियाँ सिकुडकर शरीर कडा हो जाता हे। नेत्रगोलक ऊपर को घूम जाते है। चेहरा लाल और कुछ देर वाद नीला हो जाता हे और श्वास कठिनता-पूर्वक आता है। कुज्जाज मे ग्रैवेयी पेशियाँ नीचे को खिचकर कठिन हो जाती हैं। रोगी ग्रीवा मे वेदना एव कठोरता अनुभव करता हे और ग्रीवा को इधर-उधर नहीं फेर सकता। तदुपरात सिर पीछे को खिच जाता है और जवडे वन्द हो जाते है अर्थात् दाँती लग जाती हे। कभी-कभी शरीर तीर या धनुष की भाँति अकड जाता हे। परन्तु हाथ-पाँव की हथेलियाँ, नेत्र और जिह्वा की पेशियाँ आक्षेपग्रस्त नहीं होती। भौंहें सिकुडकर नेत्र उभर आते है और उनसे अश्रु जारी हो जाता है। मुख के किनारे खिचकर दाँत निकल आते है। रोगी वोलने मे असमर्थ होता हे, किन्तु चेतना और सज्ञा ठीक होती हे। निद्रा नही आती, कब्ज होता है। रोगी से वार्तालाप करने या उसे स्पर्श करने से या शय्या के घर्षण से या वायु के स्पर्श से रोग का दौरा होने लगता है। प्रथम दौरा शीघ्र होता और शीघ्र दूर हो जाता है। पर अतत दौरे शीघ्र-शीघ्र होते और आक्षेपमय अवस्था पेशियो मे देर तक वनी रहती हे। जव कुजाज के दौरे शीघ्र-शीघ्र पडें और देर मे शात हो तो परिणाम अशुभ होता है।

सापेक्ष निदान—तमद्दुद और तशन्नुज—तशन्नुज मे अग एक ओर को, पर तमद्दुद मे वह दोनो ओर खिचकर तन जाता है। तमद्दुद और कुज्जाज—तमद्दुद सामान्य हे और कुजाज विशेष अर्थात् तमद्दुद का वह विशिष्ट रूप जिसमे शरीर ऐंठ कर बिल्कुल सीधा हो जाता हे, कुजाज कहलाता है।

उपचार—मल कारण को ज्ञात कर दूर करने का यत्न करें। यदि किसी रोग के कारण हो तो उसकी चिकित्सा की ओर ध्यान देवे। यदि श्लैष्मिक द्रवो की अधिकता से हो तो कफ का मुजिज (श्लेष्मपाचन) पिलाकर विधिवत् दो-तीन विरेचन देवें। वे सभी उपाय जिनका उल्लेख फालिज और लकवा

के प्रकरण मे हो चुका है, आवश्यकतानुसार काम मे लावे। विरेचन द्वारा श्लेष्मा का शोधन करने के उपरात निम्न गोलियाँ कुछ काल पर्यंत खिलाते रहे।

गोली का योग—अकरकरा, हीग,जवाशीर और मीठा कुट प्रत्येक ३ माशा, जुदबेदस्तर १॥ माशा, काली मिर्च १ माशा—सबको कूट-छानकर आवश्यकतानुसार मधु मे गूँधकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनाये। इसमे से ३-३ गोलियाँ प्रात -सायकाल जल के साथ खिलाये। कब्ज न होने देवे। कब्ज निवारण के लिये कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि मे सोते समय दूसरे-तीसरे दिन खिलाते रहे।

जुदबेदस्तर, फर्यून और शिलारस प्रत्येक ४ माशा—सबको महीन पीसकर २ तोला सफेद मोम, ४ तोला रोगन सोसन या ४ तोला एरण्ड तैल मे मिलाकर विकारी अग के ऊपर मर्दन करे। रूक्षताजन्य तशन्नुज और तमद्दुद मे स्निग्ध उपायो का उपयोग करें। माउज्जुब्न देवे अथवा बकरी का दूध बढा-घटाकर जैसा कि जुनून के प्रकरण मे लिखा जा चुका है, उपयोग करायें। स्निग्ध (तर) और पतले आहार, जैसे यवमड आदि देवे।

आवेगकालिक उपचार—रोगी को पीठ के बल सीधा लिटायें। सिर और वस्ति किसी भाँति ऊँचा रखे। ग्रीवा, कठ और वक्ष के कपडो का बन्धन खोल देवे। यदि कोई सकीर्ण वस्त्र धारण किये हो तो उसे ढीला कर देवे। रोगी के समीप कोलाहल न होने देवें। आक्षेपग्रस्त अग को धीरे-धीरे कोई गरम तेल मलकर सीधा करते जायँ। नौशादर ३ माशा, चूना १ तोला पानी मे मिलाकर रोगी को सुँघाये। वस्ति मे मूत्र सचित हो तो शलाका द्वारा उसका उत्सर्जन करे। हलके विरेचन या वस्ति के द्वारा कोष्ठ की शुद्धि करे।

वस्ति का योग—देशी साबुन १ तोला, नमक ३ माशा, साबुन बारीक कर और नमक पीसकर २ सेर गरम पानी मे मिलाकर वस्तियन्त्र से यथाविधि वस्ति देवे। अनिवार्य आवश्यकता होने पर पाशोया करे। रोग का दौरा रुक जाने के पश्चात् विरेचन देवें। विरेचनोपरात बल-प्राप्ति के लिये कुर्स मर्जा जवाहरवाला १ टिकिया, खमीरा गावजबान जवाहरवाला ७ माशा मे मिलाकर प्रात काल खिलावें और खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा, कुश्ता तिला जदीद १ टिकिया मिलाकर सायकाल खिलाये अथवा माजून मुकव्वी व मुमसिक ४ रत्ती, माजून फलासफा ७ माशा मे मिलाकर खिलाने या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा मे खुब्सुल्हदीद १ टिकिया मर्जा (प्रवाल) १ टिकिया मिलाकर खिलाने और बाबूना का तेल, गुलरोगन, मस्तगी का तेल और कुष्ठ तैल आदि मे से किसी तेल का विकारी अग के ऊपर मर्दन करने से लाभ होता है।

अपथ्य—शीत और शीतल जल एव वायु के उपयोग से तथा वादी एव गुरु पदार्थ जैसे-गोभी, आलू, अरवी, उडद की दाल, मटर आदि के सेवन से परहेज करे।

पथ्य—रोग के लक्षण घटने और दौरा रुकने के पश्चात् आवश्यकतानुसार लघु एव पतला आहार, जैसे—यखनी या अरहर-मूँग की दाल या मुर्गा वा बकरी का शूरवा अकेला या चपाती के साथ देवें। शाको मे करेला या मेथी वा पालक का साग और फलो मे से वादाम, अजीर, खूबानी और खजूर आदि दे सकते है।

पन्द्रहवाँ प्रकरण

खदर या सुप्तता

नाम—(अ०) खदर, (उ०, हि०) सुन्नवहरी, सुन्न हो जाना, (स०), स्वाप, सुप्तता, स्पर्शाज्ञता, (अ०) अनस्थेशिया (Anaesthesia)।

एक वातव्याधि जिसमे विकारी स्थल सुन्न हो जाता है अर्थात् उसकी सवेदना शक्ति विकृत वा नष्ट हो जाती है और रोगी को उक्त स्थल (वा अग) मे चीटियो के रेंगने और सूइयो के चुभने की-सी अवस्था अनुभूत होती हे। यह रोग प्राय फालिज और लकवा से पूर्व होता है। कभी उनके साथ और कभी उनके विना भी प्रगट होता है। वस्तुत यह फालिज और इस्तिर्खाऽ का ही एक भेद है जिसमे केवल अग की सवेदना नष्ट हो जाती है। जब चेष्टा भी नष्ट हो जाय तो उसे इस्तिर्खाऽ के नाम से अभिहित करते है।

हेतु—इनके हेतु भी वही होते है जिनका उल्लेख फालिज के प्रकरण मे हो चुका है। पर कभी सौदावी दोष से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—जिस स्थान वा अग मे यह रोग होता है उसकी सवेदना नष्ट हो जाती है अर्थात् उक्त स्थान पर चुटकी लेवे या काटे तो कोई कष्ट अनुभव नही होता परतु अग चेष्टा करने मे समर्थ होता है। कभी-कभी चेष्टा मे भी विकार प्रगट हो जाता हे। किन्तु चेष्टा सर्वथा नष्ट नही होती। दोषो के प्रकोप से होने पर इसमे अलग-अलग दोष के लक्षण भी देखे जाते है।

उपचार—कफज मे फालिज (पक्षवध) के समान चिकित्सा करें। सर्दी से हो तो उष्ण तेलो की मालिश करे, और अग को सेके। उष्ण ओषधियो को जल मे क्वाथ करके उसका अग के ऊपर परिषेक करे। रक्तज हो तो किसी स्थानीय चिकित्सक के निर्देश से सिरावेध कराये। सौदाजन्य होने पर सौदा का शोधन करें। शोधनोपरात माउज्जुब्न और स्निग्ध औषधियो (मुरत्तिवात)

का उपयोग कराये। प्रारम्भ मे यह नुसखा देते है--माजून खद्र ७ माशा प्रात-काल खिलाकर पित्तपापडा, चिरायता, सरफोका, मुडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, काली हड, उशबा मगरवी ७-७ माशा रात्रि मे जल मे भिगोकर प्रात-काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलायें। सायकाल सफूफ खद्र ७ माशा खिलाकर निगद बावरी १ तोला, कालीमिर्च ५ दाना जल मे पीस-छानकर पिलाये। विकारी अग के ऊपर यथा प्रमाण कोष्ण जिमाद खद्र का मर्दन करें। यथावश्यक अकरकरा को मद्य मे पीसकर किंचित् जैतून का तेल मिलाकर मर्दन करना भी गुणकारक है।

यह चूर्णयोग भी लाभकारक है--दरूनज अकरबी, नरकचूर, रूमी-मस्तगी, कैंची से कतरे हुए अबरेशम का चूरा (गुब्बार), बूजीदान, बिल्ली-लोटन के बीज, गावजबान, छोटी इलायची प्रत्येक ३ माशा, जदवार खताई, ऊदगर्की १-१ माशा, ऊदसलीब, तज, दालचीनी, फिरजमुष्क के पत्र, जटामासी प्रत्येक २ माशा, मीठा सुरजान ४ माशा, वहमन सुर्ख व सफेद प्रत्येक ६ माशा, सबके बराबर मिश्री कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमे से ७ माशा चूर्ण १२ तोले अर्क सौफ के साथ प्रात काल फँका देना चाहिए।

अपथ्य—अम्ल, वादी, गुरु और आध्मानकारक पदार्थो से परहेज करना चाहिये। कफकारक वस्तुये और आलू, अरवी, मटर, गोभी, मसूर की दाल आदि न खाये। जल में भीगने एव शीतल जल के स्नान और शीतल वायु के झोके से और जल पीने से, चावल और बर्फ के सेवन से, दही, छाछ, अचार आदि से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी, पतला, भूख से कुछ कम, बलानुसार आहार देवे। बकरी के मास या मुर्गा का शूरबा चपाती के साथ या करेला की तरकारी या अरहर वा मूँग की दाल और घी जितना पच सके देना चाहिए।

नेत्ररोगाध्याय (अमराजुल्ऐन)-२

नाम—(अ०) अम्राजुल्ऐन , (फा०) अमराजे चश्म, (हि०) आँख के रोग, (स०) नेत्ररोग, (अ०) डिजीजेज ऑफ दि आई (Diseases of the eye) वैद्यक का सर्वप्रथम प्रयोजन स्वास्थ्यरक्षण है। अतएव प्रथम यहाँ नेत्र के स्वास्थ्यरक्षा का वर्णन किया जाता है।

नेत्रीय स्वास्थ्यरक्षण

नेत्र की स्वास्थ्यरक्षा का मूलभूत सिद्धान्त यह है कि नेत्राहितकरो से परहेज किया जाय और नेत्रहितकरो का ग्रहण किया जाय, जिसमे नेत्र का वर्तमान स्वास्थ्य स्थिर रहे और नेत्र के भावी रोग एव उपद्रव से शाति रहे। नेत्र की वास्तविक रक्षा प्रथमत इस बात पर निर्भर करती है कि प्रथम नेत्र की मूलभूत प्रकृति को मालूम करें। नेत्र की आधारभूत प्रकृति उष्ण-स्निग्ध (हार्र-रतब) है। पर वस्तुत यह मानसिक प्रकृति (मिजाज दिमागी) के अधीन हुआ करती है। सुतरा नेत्रगत लालिमा, स्रोतोविस्फार, उष्णस्पर्श और सत्वर गतिशील होना नेत्रगत उष्णता के लक्षण हैं। नेत्र की नीलवर्णता, स्रोतोसकोच, शीतस्पर्श, गति की मदता, नेत्रगत शीतलता के लक्षण है। इसी प्रकार नेत्रो का उभार और मृदुस्पर्श नेत्रगत स्निग्धता और नेत्र की रूक्षता और उनका सकुचित एव अन्दर को धँसा होना नेत्रगत रूक्षता के लक्षण है। यह भी स्मरण रहे कि प्रत्येक व्यक्ति के नेत्र की दशा उसकी वय, प्रकृति और बलानुसार भिन्न-भिन्न होती है। अस्तु, प्रकृति-वय और बलानुसार नेत्र के वर्तमान स्वास्थ्य का स्थिर रखना ही स्वास्थ्य-रक्षक का कर्तव्य-कर्म है। सुतरा इस प्रयोजन के लिये अहितकर पदार्थो से बचना और हितकर पदार्थो का ग्रहण करना आवश्यक है।

नेत्राहितकर

धूलि-कणादि, अधिक धूम्र, उष्ण या अधिक शीतल वायु, अति व्यवाय, मादक द्रव्यो का सेवन, आमाशय को सान्द्रीभूत करने वाले और बाष्पोत्पादक पदार्थो का सेवन, प्रकाशमय एव चमकीले पदार्थो का अधिक देखना, बारीक अक्षरो का अधिक अध्ययन, अधिक रोना, शोक एव क्रोध, (अस्र व मगरिब) के मध्य मात्रा से अधिक लेखनकार्य करते रहना, आमाशय और मस्तिष्क के विकार, नेत्र मे किसी औषधि का अनावश्यक प्रयोग आदि नेत्र के स्वास्थ्य के लिये अहितकर है।

नेत्रहितकर

स्वच्छ और निर्मल जल से नेत्र-प्रक्षालन करना, हरियाली और बगीचो की सैर करना, चद्रमा का दर्शन, बहता पानी देखना, लघु और अनुष्णाशीत आहार

का यथाप्रमाण सेवन, तैल का शिरोऽभ्यङ्ग करते रहना और सोते समय अजन लगाकर सोना नेत्र की दृष्टि के लिये उपयुक्त एव लाभकारी है।

नीचे नेत्र रोगो मे से केवल उन प्रचुरता से होने वाले रोगो का वर्णन किया जाता है जिनकी चिकित्सा सहज और सुलभ है। कतिपय ऐसे रोग जो दुश्चिकित्स्य है अथवा जिनकी चिकित्सा असभव है अथवा शल्यकर्म के बिना जिनका आराम होना असभव है, ऐसे कठिन एव असुविधाजनक नेत्र रोगो का वर्णन यहाँ नही किया गया है।

१—जोफे बसर

नाम—(अ०) जोफुल् बसर, (उ०) जोफे बसारत, (स०) दृष्टि-दौर्बल्य, (अ०) ऐस्थीनोपिया (Asthenopia)।

इस रोग मे दृष्टि कमजोर हो जाती है जिससे बारीक अक्षर नही पढे जाते और साधारण दूरी की चीजें भली भाँति दिखाई नही देती।

हेतु—नेत्र की पेशी और वातनाडी तथा मस्तिष्क की दुर्बलता, मानसिक कार्यो तथा अध्ययन की अधिकता, बारीक वस्तुओ को ध्यानपूर्वक देखना, अति व्यवाय, तीव्र कब्ज, प्रसेक और प्रतिश्याय या मानसिक रोगो मे चिरकाल तक फँसा रहना, शीतल एव गलीज पदार्थो का पुष्कल उपयोग, तमाकू एव अन्यान्य मादक द्रव्यो का अतिसेवन, शुक्र मेह और वृद्धावस्था आदि तथा शिरके ऊपर आघात लगना और शरीर से रक्त निकलकर अधिक दुर्बलता का होना आदि इसके प्रधान हेतु है।

लक्षण—दूर की वस्तुये भली भाँति नजर नही आती। बारीक अक्षर अच्छी तरह पढे नही जाते। थोडी देर लिखने-पढने या कोई नजर का काम करने से नेत्र थक जाते है और उनके सामने अँधेरा आ जाता है। पुस्तक पढते-पढते अक्षरो पर दृष्टि नही जमती और उसके अक्षर मिले-जुले, गतिशील एव नाचते हुए दिखलाई पडने लगते है। नेत्र से पानी बहने लगता है, शिर मे हलका-सा दर्द होता है। कभी-कभी दृष्टि धुँधली हो जाती है।

चिकित्सा—मूल कारण को ज्ञातकर दूर करे। देरतक और बारीक वस्तुओ के देखने का काम त्याग देवे। नेत्र को आराम देवें। धूलि-कण तथा मैल-कुचैल से नेत्र को स्वच्छ रखे। अधिक रोने और अधिक सोने तथा चमकदार पदार्थो पर दृष्टि जमाने से तथा अधिक उष्ण एव शीतल वायु से परहेज करे। यदि तमाकू, सिगरेट या मद्य प्रभृति अन्यान्य मादक द्रव्यो के अतिसेवन से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो इनका परित्याग कर देवे या सेवन कम कर देवें। प्रसेक और प्रतिश्यायजन्य हो तो इनकी चिकित्सा करें। गुरु एव विष्टम्भी आहार के सेवन

से हो तो इनका सेवन त्याग देवे। कब्ज हो तो अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि मे खिला दिया करें। यदि इसके साथ शिर-शूल, शिरोभ्रम और वादी हो तो अतरीफल कश्नीजी १ तोला रात्रि मे सोते समय खिला दिया करें। प्रात काल मस्तिष्क को वल देने के लिए खमीरा गावजवान जवाहरवाला ५ माशा, मजो जवाहरवाला १ टिकिया मिलाकर खिलायें। मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा मे वनासी आमले का मुरब्बा १ नग, चाँदी के एक वर्क मे लपेटकर प्रथम खिलाये और ऊपर से ५ दाने मीठे वादाम का मग्ज, छिले हुए काहू के वीज ३ माशा, मीठे कद्दू के वीज का मग्ज ३ माशा--इनको १२ तोला अर्क गावजवान मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्वत नीलूफर या ८ तोला शर्वत वनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और कुहलुल् जवाहर या सुर्मा नूरुल्ऐन या कुहलसद्फ या कुहल रोशनाई मे से कोई एक सुर्मा (अजन) प्रात-सायकाल नेत्र मे लगाये। मस्तिष्क की रूक्षता दूर करने के लिए ३ माशा विहीदाना और ३ माशा गावजवान ६ तोला अर्क गावजवान मे भिगोकर लुआव निकालें और छिले हुए काहू के वीज ३ माशा, मीठे कद्दू के वीज का मग्ज ३ माशा, १२ तोला अर्क गावजवान मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्वत वनफ्शा मिलाकर प्रात-सायकाल पिलाये। रात्रि मे सोते समय एक नग हडका मुरब्बा धोकर खिला दिया करें। रोगन कद्दू, रोगन काहू या रोगन लवूब सवआ मे से किसी तेल का शिरोऽभ्यङ्ग करे। हरे सौंफ का रस निकालकर उसमे पीली हडका छिलका घिसकर सलाई से लगाने से नेत्र को शक्ति प्राप्त होती है। ४ दाना मसीकृत समूचा अखरोट, १० दाना मसीकृत, पीली हड की गुठली, ५ दाना कालीमिर्च--इनको हरे सौंफ के रस मे खरल करे। जब सुर्मा की भाँति वारीक हो जाय तब सुखाकर रखे और प्रात सायकाल नेत्र मे अजन करे।

अन्य सुर्मा—बन्दूक से छूटी हुई सीसे की गोली १ तोला, काला सुर्मा १ तोला, मोती १ माशा हरे सौफ के रस या अर्क सौफ मे खरल करके सुर्मा की भाँति वारीक करके रखें और प्रात-सायकाल नेत्र मे अजन करे।

हरीरा मग्ज वादाम वाला—वादाम का मग्ज ५ दाना, मीठे कद्दू के वीज की गिरी ३ माशा, तरवूज के वीज की गिरी ३ माशा, निशास्ता ३ माशा, ववूल का गोद ३ माशा, सफेद पोस्ते का दाना ३ माशा, काहू के छिले वीज ३ माशा, इनको जल मे पीसकर २ तोला मिश्री मिलाकर अग्नि के ऊपर रखे। जब किसी भाँति गाढा हो जाय तब उतारकर पिलाये। यह नेत्र्य, नेत्रज्योतिवर्धक एव मेधाजनक है।

अपथ्य—मानसिक परिश्रम, अम्ल, वादी एव आध्मानकारक वस्तुओ, जैसे गोभी, उडद की दाल, अरवी, मटर आदि, तेल के पके हुए पदार्थ, लहसुन,

प्याज, मछली, मसूर की दाल और बैंगन आदि से परहेज करें, लालमिर्च कम खाये। चमकीले पदार्थो की ओर ध्यान से न देखें और अति स्त्री-सहवास, मादक पदार्थ और साधारण नेत्राहितकर वस्तुओ से बचे।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार, जैसे—चावलो का खसका, खिचडी, चपाती, बकरी का शूरबा, दूध, मक्खन, मलाई, शाको मे कद्दू, तुरई, अरहर, मूँग की दाल और फलो मे अनार, मीठा अगूर, बादाम, चिलगोजा आदि सेवन कराये। प्रात. सायकाल हरियाली की ओर भ्रमण के लिये जाना, शीतल जलावगाह और शीतल जल मे नेत्र खोल रखना इस रोग मे गुणकारी उपाय है।

२— कुम्न:

नाम—(अ०) कुम्न' (धूम्रदर्शन), (उ०, हि०) धुध व गुब्बार, (स०) धूम्रदर्शन, (अ०) एम्बलीओपिया (Amblyopia)।

वक्तव्य—कुम्न सज्ञा से इन तीन रोगो का ग्रहण होता है—(१) धुध (धूम्रदर्शन—जुल्मतेबसर)—इसमे शुष्काक्षिपाक की भाँति नेत्र मे ललाई एव अस्वच्छता उत्पन्न हो जाती है। समस्त पदार्थ धुँधले एव धूमिल दिखाई देते है। नेत्रकण्डू होता है और रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके नेत्र पहले से वडे हो गये है। (२) पलक का भारीपन जिसमे पलक के अन्दर साद्र वायु सचित होकर गौरव (भारीपन) उत्पन्न कर देती है। जागने पर रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके नेत्र मे वालू के कण (रेत) वा मिट्टी पड गई है। (३) कनीनिका पटल के पीछे पूयसचित हो जाना (कमूलुल्मिद्द)।

हेतु—प्रथम भेद का कारण सौदावी वाष्पका चढकर नेत्र की ओर आना और चाक्षुषी ओज (रूह) को मलिन कर देना है। द्वितीय भेद का कारण प्राय साद्र वाष्प होते है, जो नेत्र के पटलो के नीचे आवृत होते है। तृतीय भेद मे कनीनिका मे व्रण उत्पन्न होकर उसका विदीर्ण हो जाना या तीव्र नेत्राभिष्यद या उग्र शिर शूल का प्रगट होना इसके हेतु है।

लक्षण—उपर्युक्त लक्षणो के अतिरिक्त (१) धीरे-धीरे दृष्टि बहुत कम हो जाती है। यहाँ तक कि रोगी दैनिक कार्य, निकटवर्ती पदार्थो के दर्शन और विभिन्न वर्णो के पहचानने मे विवश हो जाता है। प्रकाश से घबराता और शिर शूल होता है, इत्यादि।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूलभूत कारण को दूर करें। यदि रोग का हेतु सौदावी वाष्प हो तो सौदावी नेत्राभिष्यन्द के उपाय काम मे लेवे और दोषपाचन एव (तरतीब) के उपरात यथा विधि सौदा का सामान्य और विशेष शोधन करे। तदुपरात—(१) हरी धनियाँ को यवकुट करके नेत्र के

ऊपर बाँधे, (२) ५ माशा सूखा धनिया को १२ तोला अर्क मकोय मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलफर मिलाकर पिलायें। इसी प्रकार (३) छिले हुए जौ ३ तोला (४) समूचा पोस्ते की डोडी २ तोला, दोनो को क्वाथ कर उससे नेत्र को धोयें और वफारा देवे और सौदावी नेत्राभिष्यद के उल्लिखित अन्य असंसृष्ट द्रव्य काम मे लेवे।

ससृष्ट द्रव्योपचार—शोधनोपरात (१) सोते समय नेत्र मे बासलीकून कबीर सलाई से लगावे। इसी प्रकार (२) जरूर अस्फर या (३) शियाफ अहमर लय्यिन या (४) शियाफ गोरा यथा विधि सेवन करें और सौदावी नेत्राभिष्यद मे वर्णित अन्यान्य प्रलेप, पतले लेप और परिषेक आदि योगो का व्यवहार करें। लघु एव बल्य आहार देवे। गुरु एव आध्मानकारक पदार्थो से परहेज करे। कब्ज न होने देवे।

३—रमद।

नाम—(अ०) रमद, (फा०) आशोवचश्म, (उ०, हि०) आँख दुखना, आँख आना, (स०) नेत्राभिष्यन्द, (अ०) ऑफ्थैलमिया (Ophthalmia) कन्जक्टिवायटिज (Conjunctivitis)।

इस रोग मे नेत्रगोलक के ऊपर और पपोटो के अन्दर आवरण करनेवाली झिल्ली शोथयुक्त हो जाती है।

वक्तव्य—प्राचीन यूनानी हकीमो मे उष्ण नेत्राभिष्यद को रमद और शीतल नेत्राभिष्यद को 'तकद्दुर' या 'तखस्सुर' के नाम से अभिहित किया है। परन्तु, शैख बूअलीसीना एव स्वतन्त्र यूनानी हकीमो ने नेत्रावरक झिल्ली के शोथ को चाहे वह उष्ण हो या शीतल, 'रमद हकीकी' (वास्तविक नेत्राभिष्यन्द) के नाम से अभिहित किया है और नेत्र की केवल लालिमा या मलिनता की जो नेत्रावरक झिल्ली के विना शोथ के होती है, 'तकद्दुर' या 'तखस्सुर' लिखा है और इसे हकीकी नही अपितु, मजाजी रमद के नाम से अभिहित किया है। क्योकि, इसमे नेत्र के अन्दर धूएँ या धूलिकणादि के क्षोभ से शोथरहित केवल ललाई उत्पन्न हो जाती है। हाँ, तकद्दुर कभी वास्तविक नेत्राभिष्यद का पूर्वरूप होता है और जव यह बढ जाता है, तव रमद (नेत्राभिष्यद) हो जाता है।

भेद—विभिन्न हेतु और लक्षण के विचार से रमद हकीकी के कई भेद होते हैं। परन्तु, यहाँ उनमे से कतिपय आवश्यक एव प्रधान भेदो का वर्णन किया जाता है—

शैख बूअलीसीना के मत से रमद के दो भेद होते है—(१) रमद हकीकी

(नेत्रा-वरक शोथ) अर्थात् सशोथ नेत्राभिष्यद और (२) रमद मजाजी अर्थात् अशोथ नेत्राभिष्यद (तकद्दुर)। तकद्दुर को अँगरेजी मे हाइप्रीमिया ऑफ, कञ्जक्टाइवा (Hypremia of Conjunctiva) कहते है।

जर्जान और एलाकी के मत से रमद के तीन भेद होते हैं—(१) तकद्दुर (२) रमद जईफ और (३) रमद कवी (शदीद)।

जालीनूस—ने दोषानुसार इसके चार भेद लिखे हैं—(१) रमद दम्वी (रक्तज नेत्राभिष्यद—Purulent Conjunctivitis or Opthalmia),

(२) रमद सफरावी (पित्तज नेत्राभिष्यद—Mucopurulent Conjunctivitis)।

(३) रमद बलगमी (कफज नेत्राभिष्यद—Acute catarrhal Conjunctivitis)।

और (४) रमद सौदावी (सौदावी नेत्राभिष्यद—Follicular Conjunctivitis)।

इनमे से प्रथम और द्वितीय को रमद हार्र (उष्ण नेत्राभिष्यद) और तृतीय एव चतुर्थ को रमद बारिद (शीतल नेत्राभिष्यद) कहते हैं।

इनके अतिरिक्त इसके कतिपय निम्न भेद और भी है, जैसे—रमद नजली (प्रतिश्यायजन्य नेत्राभिष्यद—Acute catarrhal Conjunctivitis), रमद शिर्की, वर्दीनज (रक्तजाधिमन्थ—Epidemic Conjunctivitis) रमद सूजाकी आदि।

हेतु—धूएँ या धूलिकणादिका नेत्र से क्षोभ उत्पन्न करना, तीव्र, उष्ण एव शीत, बालको मे दन्तोद्भेद, किसी उष्ण वा शीतल दोष का प्रकोप या वृद्धिगत होना, किसी कठोर वस्तु का नेत्र मे पडना आदि इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण—रमद् मजाजी (तकद्दुर, तखस्सुर) मे नेत्र के अन्दर साधारण लालिमा और सूजन होती है तथा नेत्र से अश्रु भी बहते हैं। इसमे नेत्रावरक झिल्ली मे सूजन नही होती। केवल नेत्र मलिन (अस्वच्छ) होता है। रमद् हकीकी मे रमद मजाजी की अपेक्षया सभी लक्षण तीव्र होते हैं। अस्तु, यदि रक्तदोष इसका हेतुभूत हो, तो शरीर मे रक्त की प्रगल्भता के सामान्य लक्षण के साथ नेत्र मे ललाई एव शोथ अधिक होता है। नेत्र से अश्रु अधिक बहते हैं। कनपुटियो मे दर्द की टीसे उठती हैं। प्राय चैती (रबी) की ऋतु मे युवाओ को यह रोग अधिक होता है। इसमे चाक्षुषी सिराएँ उभरी हुई और दोष से परिपूर्ण नजर आती हैं। रमद् सफरावी मे दम्वी (रक्तज) की अपेक्षया उग्र लक्षण होते हैं अर्थात् इसमे सूजन और खटक अधिक होती है। किन्तु, तनाव और स्राव आदि कम होते हैं। नेत्र मे ललाई भी कम होती है। रोगी के मुख

का स्वाद तिक्त होता हे और पित्तप्रकोप के अन्यान्य लक्षण विद्यमान होते है। रमद् वल्गमी मे सूजन अधिक होने के कारण नेत्र मे अत्यधिक भारीपन मालूम होता हे और नेत्र से मल एव जलस्राव अधिक होता हे। ललाई बहुत कम होती है। प्रात काल नींद से उठने पर पलक चिपके हुए होते है। मुख का स्वाद फीका होता है और कफप्रकोप के अन्यान्य लक्षण पाये जाते है। इस प्रकार का नेत्राभिष्यद प्राय बालको और वृद्धो को हुआ करता हे। रमद सौदावी इसमे नेत्र मे, शुष्कता एव गौरव होता है। नेत्र के सम्मुख अँधेरा-सा छाया रहता है। परन्तु, नेत्र लाल नही होते, अपितु पलक लाल होते है। सौदा-प्रकोप के अन्यान्य लक्षण विद्यमान होते है। प्राय खरीफ की ऋतु मे इस प्रकार का नेत्राभिष्यद होता है। रमद् नजली मे नला (प्रसेक) का कष्ट होता है। रमद् शिरकी मे जिस अग के अनुवन्ध से यह रोग होता हे, उसमे कोई विकार पाया जाता हे। वर्दीनज अत्युग्र प्रकार का नेत्राभिष्यद है। इसमे शोथ की अधिकता से नेत्रगत कृष्णभाग ढँक जाता है ओर सभी लक्षण अत्युग्र होते है। रोगी नेत्र नही वन्द कर सकता। कभी शोथगत तनाव से चाक्षुषी सिराएँ फट जाती है, जिससे नेत्र से रक्त आने लग जाता हे। नेत्र गहरा लाल हो जाता है। प्राय यह रोग महामारी के रूप मे फैलता है।

रात्रि के समय नेत्राभिष्यद के सभी भेद उग्र एव अत्यत कष्टदायक होते है। जिस नेत्राभिष्यद रोग मे पुष्कल अश्रुस्राव हो, वह शीघ्र आराम होता है। पलको का परस्पर चिपकने लगना दोषपाकारभ और नेत्र से गाढे द्रव एव मल का निस्सरित होना सम्यक् दोषपाक के लक्षण है।

चिकित्सासूत्र—नेत्राभिष्यद मे अधिक प्रकाश से परहेज करना चाहिए। यदि सभव हो तो अँधेरे स्थान मे रहना चाहिए अथवा नेत्र के आगे या ऊपर हरा कपडा रखना चाहिए अथवा हरा ऐनक (चश्मा) लगाना चाहिए। धूलि-कण एव धूम्र से भी नेत्र की रक्षा करनी चाहिये। उग्रावस्था मे विरेचन से पूर्व कोई ओषधि नेत्र मे नही लगानी चाहिए। पर यदि हेतु साधारण ‘अल्प हो तो दो-तीन दिन वीतने पर बिना शोधन के भी नेत्र मे औषध का उपयोग कर सकते है। हेतु सवल होने की दशा मे शोधन से पूर्व समस्त पिच्छिल (लुआबदार) द्रव्य, जैसे शियाफ अब्यज आदि का सेवन वर्ज्य है।

चिकित्सा मे सदैव मार्दवकारक एव वाष्प, प्रतिलोमकारक ओषधियॉ तथा दोषविलोमकारक उपाय ग्रहण करने चाहिए। गुरु एव वादी आहार, अम्ल, एव लवण पदार्थ और मास सेवन नही करना चाहिए। अधिक मिष्ट पदार्थो का पुष्कल उपयोग भी वर्जित है। सिर या कान मे कोई तेल भी नही डालना चाहिए। यथासभव स्वाप्जनन द्रव्यो का उपयोग नही होना

चाहिए। किन्तु, उग्र वेदना होने पर इनका उपयोग करने मे कोई हर्ज नही है।

चिकित्साक्रम--साधारण गर्मी से होनेवाले नेत्राभिष्यद मे निम्न शीतजनन (तबरीद) उपाय लाभकारी होते है। बिहीदाना ३ माशा जल से भिगोकर लबाब निकाले। उन्नाव ५ दाना और तरबूज के बीज की गिरी ३ माशा जल मे पीस-छानकर उक्त लुआब और शर्बत नीलूफर २ तोला मिलाकर प्रातः सायकाल पिलायें और बकरी का दूध सिर के ऊपर मलें तथा यह लेप लगाये--रसवत, भुनी हुई फिटकिरी काली हड, गिल अर्मनी, लाल चन्दन प्रत्येक ३ माशा, अफीम और केसर प्रत्येक ६ रत्ती जल मे पीस कर बाहर नेत्र के पलको के ऊपर या नेत्रमडल चतुर्दिक लेप करें। लोधपठानी ३ माशा, कपूर १ माशा कूट-छानकर दो पोटलियाँ बाँधकर पोस्ते की डोडी के पानी मे तर करके नेत्र के ऊपर फेरे। यदि इन साधारण उपायो से लाभ न हो और नेत्राभिष्यद का कारण कोई बलवान् उष्ण दोष हो तो किसी स्थानीय चिकित्सक के परामर्श से अनुकूल दिशा की सरारू-सिराका वेधन करे अथवा दो दिन तक कान के पीछे और गुद्दी पर ७–७ जोके लगाये। शोधन की अपेक्षा होने पर मुन्जिज का निम्न योग सप्ताहपर्यंत पिलायें--गुलमुण्डी ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, गुलनीलूफर ५ माशा, गावजवानपत्र ५ माशा, गुलबनफ्शा ७ माशा, पित्तपापडा (पत्र) ७ माशा, सौफ ७ माशा, इनको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलाये। आठवे दिन इसीमे मस्तिष्क-शिरोरोग मे वर्णित विरेचन ओषधियाँ योजित कर विरेचन देवे। दूसरे-तीसरे विरेचन मे पीली हडका छिलका ७ माशा और काली हडका छिलका ७ माशा भी मिलाकर देवे तथा हब्ब हलीला या हब्ब बनफ्शा से मस्तिष्क का शोधन करें। शोधनोपरात यदि दोष शेष रहे, तो अतरीफल जमानी या अतरीफल कश्नीजी ७ माशा खिलाते रहे। बल-प्राप्ति के लिये बनारसी आमले का मुरब्बा १ नग पानी से धोकर एक चाँदी का वर्क लपेटकर प्रात काल खिला दिया करें या खमीरा गावजवान जवाहरवाला ५ माशा या मुफर्रेह बारिद २ माशा खिलाया करें। शियाफ अब्यज पानी मे घिसकर नेत्र के अन्दर लगाये। हब्ब स्याह पानी मे घिसकर नेत्र के बाहर पलको पर लेप करें या चश्मी पानी मे घिसकर लगायें। रात्रि मे सोते समय ७ टिकिया कुर्स जमानी खिला दिया करें।

यदि सर्दी एव प्रसेक (नजला) के कारण नेत्राभिष्यद हो तो यह योग देवे--गुलबनफ्शा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिटोरा ९ दाना, मुडी ७ माशा, इनको ऽ।। जल मे क्वाथ करके छानकर ८ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रात काल पिलाये। रात्रि मे सोते समय अतरीफल जमानी ७ माशा या अतरीफल कश्नीजी १ तोला खिलायें। कब्ज हो तो अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलायें या हडका मुरब्बा

१ नग जल से धोकर रात्रि मे सोते समय खिला दिया करे। नेत्र की चिपक एव टीस के लिये हड, बहेडा और आमला प्रत्येक ३ माशा रात्रि मे जल मे भिगोकर प्रात काल ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर उससे नेत्र धोये। पठानी लोध और पीली हडका छिलका प्रत्येक ६ माशा, भुनी हुई फिटकिरी ३ माशा और अफीम १ माशा महीन पीसकर मलमल के कपडे मे पोटली बाँधकर पानी मे भिगोकर थोडी-थोडी देर के पश्चात् नेत्रोपर फेरते रहे। कुर्स मुसल्लस का कनपुटी पर लेप करे। हब्बस्याह या हब्बसुर्ख पानी मे घिसकर नेत्र के पलको के ऊपर लेप करें। पाह गुजराती, पठानी लोध, भुनी फिटकिरी और रसवत प्रत्येक ३ माशा अफीम १ माशा बारीक पीसकर २ तोला गरम किये हुए गोघृत मे मिलाये और नेत्र के बाहर पलको के ऊपर लेप करे।

यदि कफ या सौदा दोष की उल्वणता से नेत्राभिष्यद हो तो यह मुञ्जिज पिलाकर विरेचन देवे—उस्तूखुदूस ५ माशा, बिल्लीलोटन पत्र ५ माशा, मुडी के फूल ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, पित्तपापडा के पत्र ७ माशा, बनफशा के फूल ७ माशा, सौफ ७ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर १०–१५ दिन पिलायें। विरेचन के दिन मस्तिष्क-शिरोरोग वर्णित विरेचन ओषधियाँ योजित कर विरेचन देवे। दूसरे-तीसरे विरेचन मे हडो की योजना करें। हब्ब इयारज या हब्ब शवयार से मस्तिष्क का शोधन करें। शोधन और रोग के आराम होने के बाद मेधाजननार्थ (मस्तिष्क बलवर्धनार्थ) अतरीफल बादियान ७ माशा या अतरीफल शाहतरा ७ माशा, या मुफर्रेह बारिद या खमीरा गावजबान जवाहर वाला ७ माशा या खमीरा गावजबान सादा १ तोला चाँदी के एक वर्क मे लपेटकर अथवा एक नग आमले का मुरब्बा चाँदी के एक वर्क मे लपेटकर कुछ दिन खिलाये। एक नग मुडी का फूल समूचा निगलने से एक वर्ष पर्यत और दो-चार निगलने से दो-चार वर्ष पर्यत आँखे नही दुखने आती। इसी प्रकार अनार की बन्द कली सप्ताह या बुधवार को सूर्योदय से पूर्व अनार के वृक्ष के समीप जाकर दाँत से समूची कली कुतरकर निगल लेने से कई वर्ष तक नेत्राभिष्यद रोग नही होता। जिन शिशुओ की आँखे आये दिन दुखने आती है, उनके लिये निम्न योग बहुत गुणकारी हे—मुडी के फूल सूखा धनिया, सौफ, बडी इलायची प्रत्येक ५ तोला, सबको महीन पीसकर गोघृत मे भून लेवे। पुन २० तोला चीनी की चाशनी करके सबको मिलाकर हलुआ के सदृश बना लेवे। इसमे से ६ माशा से १ तोला तक प्रतिदिन खिलायें। यदि शोधन अपेक्षित हो, तो आठ-दस दिन मुंजिज मिलाकर विरेचन देवें।

रक्तजाधिमन्थ (वर्दीनज) की चिकित्सा उष्ण नेत्राभिष्यद की भाँति करें। नेत्राभिष्यद और रक्तजाधिमन्थ (वर्दीनज) एव शुक्ल के लिये परमो-

पयोगी पोटली योग---पठानी लोध, फिटकिरी, मुरदासग, हल्दी, जीरा प्रत्येक ४॥ माशा, अफीम, नीलाथोथा प्रत्येक २ रत्ती, कालीमिर्च ४ दाना, सबको पीसकर पोटली बाँधकर पोस्ते की डोडी के पानी मे भिगो देवें और आँख के ऊपर फेरते रहे। कभी इसमे २ रत्ती कपूर भी योजित करते हैं।

पथ्य---किंचित् मिर्च युक्त वा बिना मिर्च के बकरी का शूरवा, टिंडे या तुरई का रसा, मूग की दाल और प्रसेक एव प्रतिश्याय न होने की दशा मे घी और चीनी के साथ चपाती देवें।

अपथ्य---खट्टे, मीठे, गरम और अफारा उत्पन्न करनेवाले आहार तथा दूध, दही से परहेज करायें। चाय, मद्य, तमाकू आदि आदि उत्तेजक द्रव्य उपयोग न करायें। लिखने-पढने और मानसिक कार्यों से तथा शीतल वायु मे चलने-फिरने और शीतल जल से स्नान करने से परहेज करायें।

वक्तव्य---नेत्राभिष्यद मे नेत्र के भीतर मल सचित न होने देवे। हाथ से नेत्र को वारवार न मले। वारीक मलमल का पुराना धुला हुआ कपडा हल्दी मे रग कर अथवा नीम के पत्तो को जल मे पीस कर उसमे कपडा रगकर हाथ मे रखे। जब जल साफ करना हो, तब इस कपडे से धीरे-धीरे साफ करे।

४---जुसात मुल्तहिमा

नाम---(अ०) जुसात मुल्तहिमा, (उ०) आँख की खुश्की, (स०) शुष्काक्षिपाक; (अ०) Zerosis of the conjunctiva,

(अ०) रमद याबिल, (उ०) खुश्क आँख दुखना, (स०) शुष्काक्षिपाक, (अ०) जीरॉफ्थल्मिया (Zerophthalmia)।

हेतु और लक्षण---नेत्रगत चिरज कण्डू के कारण पपोटो की श्लेष्मल ग्रथियाँ विलीन होकर द्रवोद्रेक नहीं होता, जिससे नेत्र मे शुष्कता एव मलिनता होकर दृष्टि दुर्बल हो जाती है। रोगी नेत्र को यथावत् गति नही दे सकता और सोने के बाद नेत्र का खोलना कठिन हो जाता है।

अससृष्ट द्रव्योपचार---(१) १ तोला इसबगोल के लवाव मे गुलरोगन मिलाकर नेत्र मे आश्चयोतन करना और उसमे रूई की गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर बाँधना शीघ्र प्रभावकारी है। इसी प्रकार (२) ३ माशा विहीदाने के लवाव मे रोगन बनफशा मिलाकर आश्च्योतन करना या (३) अलसी के लबाव मे स्त्री का दूध मिलाकर नेत्र के भीतर बूँद-बूँद टपकाना और (४) रोगन कद्दू का नस्य लेना भी गुणकारी है।

सिद्धयोग---दोषविलयन एवं मार्दवकरण परिषेक योग-मेथी, अलसी

और खतमी के बीज प्रत्येक १ तोला, इक्लीलुल्मलिक ३ तोला --सबको जल मे पकाकर सिर और नेत्र के ऊपर परिषेक (तरेडा) करे। परीक्षित है।

५--जफरा--नाखूना

नाम--(अ०) ज (जु) फर, (उ०, हि०) नाखु (खू) ना, (स०) अर्म, (अ०) टेरीजियम् (Pterygium)।

वर्णन और लक्षण --एक त्रिकोणाकार या अर्धचद्राकार सुर्खीमायल मासमय उभार (पर्दा वा झिल्ली) नेत्र के शुक्लास्तर पर प्राय भीतरी और क्वचित् बाहरी नेत्रकोण मे उत्पन्न हो जाता है। यह बढकर कभी कनीनिका को ढँक लेता है।

हेतु--रेतीले स्थान मे जहाँ आँधी अधिक चलती है, नेत्र मे धूलि-कण के पडने और नेत्राभिष्यद रोग मे असावधानी एव अपथ्यपालन के कारण तथा मसूर की दाल, लहसुन, मछली, प्याज आदि बाष्पजनक पदार्थों के पुष्कल उपयोग से और नेत्राभिष्यद एव कनीनिकागत क्षत के उपरात भी यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा--प्रथम निदान परिवर्जन करे। नेत्र मे कुहल ब्याज या कुहल गुलकुजद या वासलीकून कबीर रात्रि मे सोते समय लगावे। भुना हुआ नीला थोथा सुर्मा की भाँति महीन पीसकर सलाई से केवल नाखूनो के ऊपर लगाने से भी लाभ होता है। हल्दी का पुटपाक कर (भुलभुलाकर) सम भाग भुनी फिटकिरी मिलाकर सुर्मा की भाँति पीस लेवे और रात्रि मे सोते समय सलाई से लगावे। अथवा नौसादर २ माशा, कलमी शोरा १ तोला, सिरस के बीज २ दाना, कालीमिर्च १२ दाना, नीला थोथा ४ रत्ती--सबको पीसकर वर्ति बना लेवे और प्रतिदिन एक वर्त्ति पानी मे घिसकर नाखूना के ऊपर लगाये। खाने के लिये प्रात अतरीफल उस्तूखुद्दूस ७ माशा और सायकाल अतरीफल जमानी ७ माशा अर्क बादियान के साथ देवे। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो शस्त्र-कर्म (ऑपरेशन) करायें।

अपथ्य--हर प्रकार के वादी, आध्मानकारक, अम्ल और उष्ण पदार्थ आदि।

पथ्य--लघु एव शीघ्रपाकी पदार्थ, जैसे--शूरबा, चपाती, कद्दू, पालक, तुरई आदि हरे शाक, अरहर और मूँग की दाल के साथ खिलाये। फलो मे अगूर और खट्टा अनार दिया जा सकता है।

६--तर्फा--अर्जुन

नाम--(अ०) तर्फ, (उ०) ऑख का खूनी नुक्ता (विंदु), (स०) अर्जुन, (अ०) एकिमोसिस (Ecchimosis)।

हेतु, लक्षणादि--नेत्र के ऊपर आघात लगने या बलपूर्वक खाँसने, चिल्लाने या वमन करने से शुक्लास्तर के नीचे कोई बारीक सिरा फटकर किंचित् रक्त बह कर जम जाता है, जिससे रक्त या श्यामतायुक्त रक्त विन्दु बन जाता है। नेत्र के शुक्ल भाग पर एक श्यामतायुक्त लाल रग का धब्बा या विदु मालूम होता है।

चिकित्सा--इसकी चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देना जरूरी है। क्योकि, कठोर हो जाने पर इसका निवारण दुस्तर हो जाता है। कभी-कभी इसमे कोथ उत्पन्न होकर व्रण बन जाता है, जिससे अधिक कठिनाइयो का सामना करना पडता है।

पहले निदान परिवर्जन करे। दो-तीन दिन मे यह स्वयमेव शोषित होकर रोग जाता रहता है। यदि दो-तीन दिन मे आराम न हो, तो गरम रूई से आँख के ऊपर सेक करे और पट्टी बाँध देवें। प्रारभ मे केवल कबूतर या बत्तख का ताजा गरम-गरम रक्त अकेले या गिल अरमनी के साथ अथवा स्त्री का दूध दिन मे तीन बार उसके ऊपर टपकाये। अत मे कुदुर, उशक, मुरमकी और केसर प्रत्येक १ माशा उक्त रक्त मे पीस-मिलाकर नेत्र के भीतर डालें। यदि हेतु बलवान् हो तो किसी स्थानीय हकीम के परामर्श से सिरावेध (फस्द) आदि के द्वारा शोधन करे। नेत्र मे डालने के लिये यह आश्च्योतन लाभकारी है---नौशादर, नमक लाहौरी, कुदुर प्रत्येक १ माशा बारीक पीसकर जल मे विलीन करके नेत्र के भीतर टपकाये। इससे चिरकारी अर्जुन आराम होता है।

सिद्ध प्रयोग--अर्जुनोपकारी धूपनयोग--लाल पत्थर के टुकडे को अग्नि मे खूब गरम करे। फिर निकालकर राख से साफ करके उसके ऊपर उत्तम मद्य छिडके और नेत्र को उसके सामने खुला रखे। इससे आँसू जारी हो जायेगे और इसके एक-दो बार के प्रयोग से अर्जुन रोग का सर्वथा नाश हो जायगा।

अर्जुनहारी वर्ति--मैनसिल ५ माशा, अजरूत, मामीरान, शादनज, एलुआ, चाँदी का मैल प्रत्येक १॥ माशा, चीनी ३ माशा---समस्त द्रव्यो को बारीक पीसकर अडे की सफेदी मे मिलाकर वर्ति बनायें। आवश्यकतानुसार इसमे से एक वर्ति थोडा जल मे घिसकर एक-दो बूँद नेत्र के भीतर टपकाये।

पथ्य---बकरी का शूरबा, कद्दू, तुरई, टिडा, पालक, मूग की दाल आदि।

अपथ्य--अम्ल, तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थ और लिखने-पढने से परहेज करना चाहिए।

७---सबल---जाला

नाम--(अ०) सबल, (हि०, उ०) जाला, (स०) सिराजाल, (अ०) पैनस (Pannus)।

वर्णन—इस रोग मे नेत्र की बाहरी सिराओ के फूलने और उनके मध्य बारीक शाखाओ के उत्पन्न होने से एक पर्दा-सा बन जाता है, जिससे दृष्टि मद (धुँधली) हो जाती है।

हेतु—चिरज पोथकी (रोहे) या उपपक्ष्म (पडवाल) से कनीनिका के ऊपर निरतर घर्षण वा क्षोभ होना, दूषित एव साद्र रक्त से नेत्रगत सिराओ का परिपूर्ण होना, तीव्र अभिघात, आयास की अधिकता तथा फिरग, सूजाक आदि रोग इसके हेतु है।

लक्षण—नेत्र लाल होता है। उसमे क्षोभ एव वेदना प्रतीत होती है। दीपक एव सूर्य के प्रकाश से उसे कष्ट होता है। अत मे कनीनिका के ऊपर एक जाला-सा मालूम होता है।

भेद—इसके ये तीन भेद होते है—रतब (आर्द्र—Pannus Tenuis), याबिस (शुष्क–Pannus Siceus) और मुस्तह्कम (दृढ–P crassus) इनके लक्षण—रतब मे निरतर छीके आती है। नेत्र से आँसू जारी रहते है तथा वेदना एव खर्जू होता रहता है। याबिस मे नेत्र से आँसू नही आते। खर्जू कम होता है। कनीनिकापटल खुरदरा एव धुँधला होता है। मुस्तह्कम मे पर्दा मोटा होकर नेत्र के कृष्ण भाग को ढँक लेता है। दृष्टि जाती रहती है।

चिकित्सा-सूत्र—रोगी को स्वच्छ एव अँधेरे कमरे मे रखे। नेत्र के आगे काला ऐनक लगायें। यदि रोगी बलवान् हो तो प्रथम मस्तिष्क की शुद्धि के लिये सरारूसिरा का वेधन करे। पीछे मस्तक एव नेत्रकोणीय सिरा का वेधन करे। अथवा कम से कम ग्रीवा और कर्ण के पीछे जोके लगवाये तथा ग्रीवा के पीछे गुद्दी पर सीगी लगायें। दोष पाचनोपरात विरेचन देवे। दोष शुद्ध हो जाने के उपरात नेत्रलेखनीय अजन (सुर्मा) लगाये तथा छिक्काकारक नस्य लेवे। प्रत्येक मास मे दोषपाचन एव विरेचन का उपयोग करना चाहिये तथा साद्र एव आध्मानकारक आहार से परहेज करना चाहिये।

यह रोग बहुधा रोहो के कारण होता है। अतएव चिकित्सा मे उनका भी ध्यान रखना चाहिये। सबल याबिस (शुष्क सिराजाल) मे औषधि डालने से पूर्व एव पश्चात् स्नान करना और नेत्र को गरम पानी से बफारा देना बहुत ही गुणकारक है। यदि सिराजाल के साथ नेत्राभिष्यद भी हो तो अधिक उष्ण एव अधिक शीतल ओषधियो का उपयोग करना चाहिये।

चिकित्सा-क्रम—कुछ दिन तक निम्नलिखित मुजिज प्रात -सायकाल देवे—हडका छिलका, आमला, नीम की छाल, पित्तपापडा, चिरायता, मुडी, खस, मेहदी के पत्र, अफतीमून, गुर्च प्रत्येक ७ माशा। सबका काढा बनाकर मल-छानकर २ तोला शहद मिलाकर पिलाये। दस दिन के बाद इसी योग से सनाय मक्की

७ माशा, गुलकद ४ तोला और अमलतास ४ तोला मिलाकर विरेचन देवें। विरेचनोपरात प्रात मर्जा जवाहरवाला २ रत्ती, खमीरा गावजवान जवाहरवाला ५ माशा मे मिलाकर और सायकाल अतरीफल कश्नीज या अतरीफल सगीर ७ माशा खिलाया करे। नेत्र मे नीम का फूल १ तोला छाया मे सुखाकर इसके बराबर कलमीशोरा मिलाकर बारीक पीसकर थोडा-थोडा लगायें।

दवाये खास--फिटकिरी ओर सुहागा सम भाग लेकर कूट-छान लेवें। पुन' पित्त से परिपूर्ण बकरे का पित्ताशय लेकर उसमे इसे भर देवें और बाहर से पित्ताशय को साफ करके उसका मुँह बन्द कर देवें और किसी स्थान मे लटका देवें। थोडी देर बाद जो सत्त्व परिस्रुत होकर सूख गया हो, उसे ले लेवें ओर औषधियुक्त पित्ताशय को फेंक देवे। उक्त सत्त्व मे से राई के दाने के बराबर एक बूँद जल मे विलीन करके सलाई से नेत्र के भीतर अजन करें। इससे अधिक प्रमाण मे इस औषधि का प्रयोग न करे; क्योकि उससे आँख लाल हो जायगी।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह नेत्रशुक्ल एव नेत्रार्म मे भी गुणकारी है। साद्र सिराजाल मे इसका विशेष रूप से उपयोग करना चाहिये।

कुहल सबल--लौंग १४ दाना, सिरस के बीज, खिरनी के बीज प्रत्येक ७ दाना, कलमीशोरा ३॥ माशा, आँबाहलदी ७ माशा सबको महीन पीसकर नेत्र के पीतर अजन करे। फूला एव जाला के लिये परीक्षित है।

पथ्य--बकरी का शूरबा, मूँग की दाल, कद्दू, टिडा, तुरई, चपाती आदि लघु एव शीघ्रपाकी आहार दे।

अपथ्य--मसूर, लोबिया, अरहर, लहसुन, प्याज, पनीर, अम्ल, गुरु एव उष्ण पदार्थ मानसिक श्रम, शीतल जलावगाह, धूप मे भ्रमण करना और अग्निसेवा आदि से परहेज रखे।

८--बयाजुल्ऐन।

नाम--(अ०) बयाजुल्ऐन, (फा०) गुलेचश्म, (उ० हि०) फूल, फूला, फूली, (स०) नेत्रशुक्ल (शुक्र), (अ०) ओपेसिटी ऑफ कॉर्निया (Opacity of Cornea)।

वर्णन और लक्षण--नेत्र के कृष्ण भाग वा कनीनिका पटल मे अभिघात, क्षत या पिडका के पश्चात् अवशेष रहे हुए चिह्न (कनीनिका के अपारदर्शक दाग) के कारण नेत्र मे शुक्लता उत्पन्न हो जाती है। इसमे नेत्र के कृष्ण भाग के ऊपर श्वेत बिन्दु या पर्दा दिखाई देता है। दृष्टि मद होती वा बिलकुल जाती रहती है। यदि शुक्ल कनीनिका के केन्द्र भाग पर न हो, तो इसका दृष्टि पर कोई प्रभाव नही पडता।

भेद--(१) हलका या पतला शुक्ल--(अ०) सहाब, गमाम, असर, (उ०) सफेदी, (स०) अव्रणशुक्ल, (अ०) नीव्यूला (Nebula)। (२) गभीरजात एव घन शुक्ल--(अ०) वयाजुलऐन, (फा०) गुले (बयाजे) चश्म, (उ०, हि०) फूल, फूला, फुली, (स०) सव्रण शुक्ल, (अ०) मेक्युला (Macula) (३) गभीरजात घन एवं उभरा हुआ शुक्ल--(अ०) वयाज समकिय्या, (उ०, हि०) गहरा उभारवाला फूला, टेट, (स०) अजकाजात, (अ०) ल्युकोमा (Leucoma)।

हेतु--चेचक एव नेत्राभिष्यद आदि मे पिटिकायें या शोथ होकर क्षत हो जाता है, जिसका चिह्न फूली के रूप मे शेष रह जाता है। रोहो और पडवाल के क्षोभ से भी कभी कनीनिका मे क्षत हो जाता हे। कभी आधा शीशी आदि तीव्र शिर शूल से भी कनीनिका मे क्षत होकर शुक्ला उत्पन्न हो जाती है।

साध्यासाध्यता--बालको मे यह साधारणतया चिकित्स्य होता है, किन्तु युवा एव अधेड अवस्था वालो मे दुश्चिकित्स्य होता है। चेचक से होनेवाला शुक्ल कष्टसाध्य होता है। जब शुक्ल कनीनिका केन्द्र के आसन्नभूत होता है, तव दृष्टि कम हो जाती है और कभी द्विधादृष्टि दोष हो जाता है। बालको के दोनो नेत्र मे शुक्ल हो जाने की दशा मे नेत्रगोलक मे शोथ उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा-सूत्र--यदि कनीनिकागत क्षत एव पिटका या नेत्राभिष्यद अथवा शिर शूल वा पोथकी आदि शुक्ल के मूलभूत हेतुओ मे से कोई हेतु इस रोग का कारण-भूत हो तो प्रथम उसके निवारण या चिकित्सा का यत्न करे। इस रोग मे सिरा-वेध एव विरेचन की तनिक भी आवश्यकता नही होती। तथापि यदि जाले और फूले को लेखन करनेवाली तीक्ष्ण औषधियो के उपयोग के कारण प्रचुर दोष के अतर्भरण की आशका हो तो सर्वप्रथम पूर्वविधानता स्वरूप यथा प्रकृति सिरावेध एव विरेचन के द्वारा सार्वाङ्गिक एव स्थानिक (सामान्य एव विशेष) शोधन-कर्म करे। तदुपरात यदि आवश्यकता प्रतीत हो तो मस्तिष्क की शुद्धि करे। विशेषकर यदि रोगी शिर शूल, प्रसेक या नेत्राभिष्यद से आक्रात होता रहता हो। पुन लेखनीय औषधियाँ नेत्र मे डालें। परतु यह ध्यान मे रखे कि जाले (अव्रणशुक्ल) मे कम तीक्ष्ण एव सव्रण शुक्ल मे अधिक तीक्ष्ण औषधियाँ उपयोग करे।

चिकित्सा-क्रम--अतरीफल कश्नीज साय-प्रात काल खिलाये। कुहल बयाज, कुहल गुलकुजद बराबर-बराबर मिलाकर सलाई से नेत्र मे लगाये। इसी प्रकार निरतर दो-तीन महीने चिकित्सा करने से प्राय लाभ हो जाता है। यदि नेत्र मे क्षोभ एव ललाई हो तो प्रथम उसे दूर करे। इस प्रयोजन के लिये शियाफ दीनारजून बकरी के दूध मे घिसकर लगाने और अतरीफल कश्नीजी रात्रि मे

खिलाने से उपकार होता है। जव क्षोभ दूर हो जाय, तव पुन. उक्त चिकित्सा-क्रम के अनुसार उपाय करते रहे। अथवा कलमीशोरा ५ माशा, मामीरान चीनी २ माशा, गेरू २ माशा, या समुद्रफेन, श्वेत मरिच, भुनी फिटकिरी, सफेद काशगरी प्रत्येक ३ माशा पीसकर प्रात -सायकाल सुरमे की भाँति नेत्र मे एक-एक सलाई लगाया करें।

पथ्य—शूरबा, चपाती, तुरई, कुलफा, पालक आदि शीघ्रपाकी आहार लाभकारी है।

अपथ्य—शीतल वायु-सेवन, मानसिक श्रम, शीतल जलावगाहन, अग्नि और धूप, सेवा और अम्ल पदार्थ, जैसे दही, छाछ, इमली, नीबू आदि तथा बादी वस्तुओ से आरोग्य होने के पश्चात् कुछ काल तक परहेज करे।

९—अशा—शबकोरी

नाम—(अ०) अशा, (फा०) शबकोरी, (हि०, उ०) रतौंधी, अँधराता, (स०) नक्तान्ध्य, (अ०) निक्टेलोपिया (Nycta lopia) नाइट ब्लाइडनेस (Night blindness)।

इस रोग मे रोगी को रात्रि मे और अँधेरे मे कुछ दिखाई नही देता।

हेतु—साधारण शारीरिक दौर्बल्य या नेत्र के ऊपर तीव्र सूर्यरश्मियो का पडना, स्निग्ध-शीतल पदार्थो का पुष्कल उपयोग, आमाशय एव मस्तिष्क के अन्दर साद्र दोष का सचय जिससे साद्र वाष्प उठकर नेत्र मे जाते और चाक्षुषी ओज को साद्रीभूत कर देते है। परतु दिन के समय सूर्य के प्रकाश एव गरमी आदि के कारण इन बाष्पो के विलीन होने से ओज मे मलिनता का अभाव रहता है, जिससे दिन मे दिखाई देता है। इसके विपरीत रात्रि की वायु शीतलतर एव साद्र होती है तथा शाति एव अधकार हो जाता है जिससे ये बाष्प साद्रीभूत होकर दृष्टि मे वाधा उत्पन्न करते है। कभी दीर्घकाल तक प्रकाशमान, उज्ज्वल एव चमकदार वस्तु को नेत्र के समक्ष रखने से भी नेत्रद्रव साद्रीभूत हो जाते है और चाक्षुषी ओज की सूक्ष्मता (लताफत) कम होकर यह दोष उत्पन्न हो जाता है। कभी ऐसे लोग जो सदा शुष्क (रूक्ष) अन्न सेवन करते है और किसी प्रकार का स्नेह वा मास सेवन नहीं करते, इस रोग के आखेट हो जाते है। दृष्टिपटल (Retina) का शोथ और उसके प्रकाश-ग्रहण की न्यूनता, इस रोग के प्रधान हेतु होते है।

लक्षण—रोगी दिन मे देख सकता है, किन्तु सायकाल और रात्रि मे नही देख सकता।

लक्षणों द्वारा हेतुनिर्णय—यदि, आम शयस्थ वाष्प इस रोग के हेतु हो, तो खाली पेट होने पर रोग मे कमी और भोजनोत्तर अधिकता जान पडती

है। यदि मस्तिष्कगत बाष्प इसके कारण हो तो शिर मे गौरव एव शूल और ज्ञानेन्द्रियो की मलिनता पाई जाती है। नेत्र मे दोष रहने से रोगी की दशा एकसमान रहती है। ग्रीष्म की अपेक्षा शरद् ऋतु मे यह रोग अधिक होता है और उष्ण पदार्थों के सेवन से लाभ प्रतीत होता है।

साध्यासाध्यता—उष्ण स्थानो मे ग्रीष्म और वर्षाकाल मे यह रोग होता है। इस रोग की अवधि छ मास तक है। यदि इसके पश्चात् भी आराम न हो तो प्राय यह रोग असाध्य होता है। कभी यह महामारी के रूप मे भी फैल जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि रोगी बलवान् हो और उसमे रक्त की प्रगल्भता हो तो सरारू सिरा का वेधन करे। यदि रोग का कारण कफ हो तो कफ विरेचन और हब्ब इयारज से उसका शोधन करे। तदुपरात द्रवाकर्षण और शोषण के लिये दोषशोधनीय गण्डूषो एव नस्यो का उपयोग करें और सर्व प्रकार ओज मे तारल्य एव सूक्ष्मता उत्पन्न करे। यदि इस प्रकार लाभ न हो तो नेत्रकोणीय सिरा का वेधन करे और गुद्दी (पश्चान्मस्तिष्क) पर सीगी लगाये। दोष-विलयन ओषधियो के क्वाथ से बफारा देवे। तीक्ष्ण मसालायुक्त आहार सेवन कराये। बल्य औषधाहार का उपयोग करे। नेत्र मे लेखनीय अजन लगाये। और (१) नौसादर तथा भुनी हुई फिटकिरी दोनो बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर सुर्मा की भाँति अजन करे या (२) सफेद प्याज या (३) आदी का रस २–३ बूँद नेत्र के भीतर आश्च्योतन करे। (४) देशी साबुन और काली मिर्च बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर प्रति दिन रात्रि मे सोते समय नेत्र मे लगाने से अद्भुत लाभ होता है। (५) कालीमिर्च रोहू मछली के पित्त मे पीसकर सलाई से नेत्र मे लगाने से सत्वर लाभ होता है। (६) शलगम का वाष्प लेना, (७) जुदबेदस्तर या (८) कस्तूरी का सूँघना भी लाभकारी है। आतरिक रूप से (९) अफसतीन रूमी ७ माशा या (१०) सातर फारसी ७ माशा क्वाथकर ३ तोला सिकजबीन मिलाकर पीना या (११) जूफाए खुश्क ५ माशा या (१२) सुदाब ५ माशा या (१३) सौफ ७ माशा पीस-छानकर १ तोला शहद मिलाकर चाटना या (१४) दाल चीनी का चूर्ण ५ माशा १२ तोला अर्क सौफ के साथ सेवन करना लाभकारी उपाय है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—शोधनोपरात (१) अतरीफल सगीर ७ माशा या (२) अतरीफल कबीर ७ माशा अर्क गावजबान १२ तोला के साथ अथवा (३) शर्बत अफसतीन ३ तोला या (४) शर्बत जूफा ३ तोला, अर्क अफसतीन ६ तोला, अर्क सौफ ६ तोला मे मिलाकर पिलाना गुणकारक है। आमाशयोद्भूत बाष्प की दशा मे (५) हडका मुरब्बा १ नग या (६) आमला का मुरब्बा १ नग चाँदी

के वर्क मे लपेटकर उपयोग करना लाभकारी है। बलवर्धनार्थ (७) लोहभस्म २ चावल दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या (८) खमीरा गावजम्वन अवारी जवाहरवाला ५ माशा मे मिलाकर १२ तोला अर्क गावजवान के साथ उपयोग करे।

सिद्धयोग--(१) एक माशा गोलमिर्च को बकरी के पित्त मे और १ माशा आँवाहल्दी को नीबू के रस मे भिगोकर सुखाये। तदुपरात ७ माशा सगवसरी को चार बार अग्नि के ऊपर लाल करके नीबू के रस मे बुझाये और खिरनी के बीज की गिरी तथा चमेली की कली प्रत्येक ७ माशा--सबको सोफ के रस मे खरल करके सुर्मा तैयार करें और यथाविधि सेवन करे। रतौंधी और जाले के लिये लाभकारी है।

पथ्य--शीघ्रपाकी आहार और शाक, हीग, पुदीना और राई आदि मिलाकर सेवन करे।

अपथ्य--उडद की दाल और बैगन प्रभृति जैसी गरिष्ठ वस्तुओ से परहेज करें।

१०--जहर-रोजकोरी

नाम--(अ०) जहर, (फा०, उ०) रोजकोरी; (हि०) दिनौंधी; (स०) दिवान्ध्य, (अ०) हेमीरलोपिया (Hemeralopia), डे-ब्लाइड्नेस (Day blindness)।

वर्णन एवं लक्षणादि--रतौंधी के विपरीत इसका रोगी दिन मे कुछ देख नहीं सकता, किन्तु सायकाल, रात्रि एव बदली के अँधियारी मे भली भाँति देख सकता है। रतौंधी के विपरीत इसमे चाक्षुषी ओज अत्यत सूक्ष्म एव तरलीभूत हो जाता है जो दिन के स्वाभाविक प्रकाश एव उष्णता के प्रभाव से सूक्ष्म एव तरल होकर दिनौंधी का कारणभूत होता है। परतु रात्रि की अँधियारी एव सर्दी से वह प्रगाढीभूत हो जाता है, जिससे रात्रि मे रोगी भली भाँति देख सकता है।

हेतु--महीन अक्षरो का अध्ययन, ऊँची आवाज से पढना, सूर्यरश्मि या ग्रहण लगे सूर्य की ओर देर तक देखना, मस्तिष्क दौर्बल्य और उष्ण विप्रकृति आदि इस रोग के हेतुभूत है। प्राय वृद्ध एव रूक्ष प्रकृति पुरुषो को यह रोग होता है। कजी आखोवाले भी इस रोग से अधिक आक्रान्त होते है और असाध्य होते है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम निदान परिवर्तन करें। यह रोग सहज हो तो वह असाध्य है। रूक्षता की दशा मे स्नेहन का यत्न करे। यदि दोष का सचय हो तो सिरावेध एव विरेचन द्वारा उसका शोधन करे। शमन और बल-

वर्धन के लिये उष्ण शिर शूल की चिकित्सा को ध्यान मे रखे। अस्तु, मस्तिष्क के स्नेहन और वलवर्धन के लिये (१) लडकी वाली स्त्री का दूध २ माशा, गुल-रोगन २ माशा, कद्दू का तेल २ माशा मिलाकर नस्य देवे। (२) बादाम का तेल और मक्खन मिलाकर सिर के ऊपर अभ्यङ्ग करे। (३) शीतल जल मे अवगाहन-स्नान करना और उसमे नेत्र खोल देने या (४) सफेद सुर्मा और वशलोचन बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर रोगन खशखाश मे मिलाकर नेत्र मे लगाने से भी उपकार होता है। इसके अतिरिक्त आतरिक रूप से नेत्र एव मस्तिष्क के स्नेहन के लिये (५) ९ तोला अर्क गुलाब मे ५ माशा कुलफा के बीजो का शीरा निकाल कर या (६) ६ माशा बिहीदाने का लुआब या (७) १ तोला इसबगोल का लुआब या (८) ७ माशा सफेद पोस्ता के दाने का शीरा या (९) ५ माशा छिले हुए काहू के बीजो का शीरा अर्क गाजर और अर्क गावजबान प्रत्येक ६ तोला मे निकालकर शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। (१०) जितना पच सके उतना गाय के दूध का सेवन भी लाभकारी है। (११) चाक्षुषी ओज के प्रगाढी भवन के लिये २ चावल अफीम खिलाना भी गुणकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—मस्तिष्क को बल प्रदान करने के लिये (१) खमीरा गावजबान अवरी जवाहरवाला ५ माशा या (२) खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा दो चावल प्रवाल भस्म मिलाकर अर्क गाजर ६ तोला, अर्क गावजबान ६ तोला, शर्बत उन्नाव २ तोला मिलाकर उपयोग करें। (३) वरूद हस्रम या (४) शियाफ वर्दी यथोक्त विधि के अनुसार सेवन करे।

सिद्ध योग—(१) इन्किबाब—बाबूना, बनपशा, खतमी इनके क्वाथ करके बफारा लेवे। (२) बुरूद हस्रम जो दिनौंधी के अतिरिक्त नेत्रकण्डू, शुक्ल, सिराजाल, पक्ष्मशात, अर्जुन और नेत्रस्राव के लिये भी लाभकारी है—सगबसरी १ तोला, पीली हडका छिल्का, सोठ, हलदी (जर्द चोब) प्रत्येक ६ माशा, पीपल, मामीरान चीनी प्रत्येक ४ माशा, नमक हिंदी १ माशा—सबको पीस-छानकर कच्चे अगूर के रस की २० दिन तक भावना देवें। पुन छाया मे सुखाकर खूब महीन खरल करके अजन (सुर्मा) की भाँति नेत्र के भीतर लगाये।

पथ्य—मुर्गी के बच्चे का शूरबा, उडद की दाल, अधभुना अडा और धनिया, मक्खन, घी, दूध, मलाई आदि बल्य एव रक्तसाद्रकर आहार तथा फलो मे केला, अजीर आदि दिये जा सकते हैं।

अपथ्य—लवण, अम्ल और तीक्ष्ण (कटुक) पदार्थो से परहेज करे। मद्यपान, अतिमैथुन, सूर्य की ओर ध्यानपूर्वक देखना हानिकर है। लाल मिर्च, गुड और गरम मसाला से भी परहेज जरूरी है।

— ० —

११—कजा—नेत्रशल्य

नाम—(अ०) कजा, कजाउल्ऐन, (उ०, हिं०) आँख मे कुछ पड जाना; (स०) नेत्रशल्य, (अ०) फॉरेन बॉडी इन् दी आई (Foreign body in the eye) ।

वर्णन और हेतु—तीव्र वायु के चलन से कभी-कभी सूक्ष्म कीट-पतग आदि जानवर आँख मे पड जाते है । कभी रेत, ककड, शीशा का कण, कोयला, लोहा या तृण आदि के कण नेत्र के भीतर पडकर पलको मे चिपक जाते है या कनीनिका के ऊपर जम जाते है ।

लक्षण—नेत्र मे अत्यत क्षोभ, वेदना एव खटक मालूम होती हे। नेत्र लाल हो जाता है। नेत्र से ऑसू बहता है। रोगी नेत्र खोलकर देख नही सकता। पलक को उलटकर देखने से पडी हुई वस्तु दिखाई देती है।

चिकित्सा—किसी पात्र मे कुनकुना पानी भरकर उसमे चेहरा प्रविष्ट कर नेत्र खोल देवे। यदि इस उपाय से पडी हुई वस्तु न निकले तो पलक उलटकर स्वच्छ रुई या किसी नरम और स्वच्छ कपडे से उस वस्तु को निकाल देवे । या गिशास्ता बारीक पीसकर सलाई से भली-भाँति नेत्र के भीतर लगाये। थोडी देर मे नेत्रशल्य को मोचने या बारीक सलाई के द्वारा तुरत निकाल देवें । यदि सूई या लोहे का कण हो तो नेत्र के समीप चुवक ले जावे । इससे वह स्वयमेव उससे चिपट जायगा । यदि मार्ग मे चलते-चलते नेत्र मे कीट-पतग आदि पड जायँ, तो तत्काल दो-चार पग पीछे हटे आगे न बढें । इस उपाय से उसी समय वह कीडा बिना प्रयास के निकल आयेगा । कब्ज हो तो उसे दूर करने के लिये अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि मे खिलाये । यदि उसके कष्ट से नेत्र दुखने आ जाय तो तीन-चार दिन अतरीफल शाहतरा ७ माशा, अर्क मुण्डी १२ तोला और शर्बत उन्नाब ४ तोला के साथ खिलाये तथा नेत्र के भीतर स्त्री दुग्ध के कुछ बूंद टपकायें अथवा शियाफ अब्यज पानी मे घिसकर लगाये। बरूदकाफूरी या कुहल काफूर अजन की भाँति नेत्र मे लगायें । यदि नेत्र मे अन-बुझा चूना पड जाय तो नेत्र को तत्काल धोकर रेडी या जैतून के तेल के बूँद डाले तथा शीतल जल की गद्दी नेत्र के ऊपर रखे । इस दशा मे १ तोला सिरका मे १० तोला पानी मिलाकर नेत्र धोने से भी लाभ होता है। हकीम आजम खॉ के मत से कभी नेत्र मे मकडी के जाले की तरह का एक द्रव उत्पन्न होकर खटकता हे और ऐसा प्रतीत होता है मानो नेत्र मे कोई वस्तु पड गई हो । उसके लिये निम्न योग परम गुणकारी है—समुद्रफेन, सगवसरी, हरा तूतिया, छिला हुआ चाकसू सम भाग बारीक पीसकर नेत्र के भीतर डाले ।

अपथ्य—नेत्र के भीतर यदि कोई शल्य पड जाय तो उसे हाथ से नही मलना चाहिये और न रूमाल से उसे निकालने का यत्न करना चाहिये। यदि वह शल्य कठोर हो तो नेत्र मलने से भीतर क्षत पड जाने की आशका होती है। दो-तीन दिन लहसुन, प्याज आदि उष्ण, तीक्ष्ण एव वाष्पकारक पदार्थो से परहेज रखें।

पथ्य—अभ्यासानुकूल बकरी का शूरवा, चपाती, कद्दू, पालक, कुलफा, मूंग या अरहर की दाल, शलगम, आलू, चुकदर, तुरई आदि देवें।

१२—जर्बुल्ऐन—नेत्राभिघात

नाम—(अ०) जर्बतुल् (जर्बुल्) ऐन, (उ०, हि०) आँख पर चोट लगना, (स०) नेत्राभिघात, नेत्रक्षत, (अ०) कन्ट्युजन ऑफ दि आई (Contusion of the eye)।

हेतु और लक्षण—कभी नेत्र के ऊपर अभिघात लगने से भौं या पपोटे पर क्षत हो जाता है। कभी मस्तक, कनपटी, नेत्र या भौं के ऊपर तीव्र आघात लगने से दृष्टि नष्ट हो जाती है या नेत्रगोलक बैठ जाता है। आघात लगने के पश्चात् कभी शोथ उत्पन्न हो जाता है, रक्त बहता है। कभी क्षत के बिना नेत्र लाल हो जाता या नीलाहट-सी छा जाती है। पानी बहता है। नेत्र मे तीव्र शूल होता है। रोगी नेत्र नहीं खोल सकता।

चिकित्सा—मस्तक, भौं या नेत्र के ऊपर तीव्र आघात लगे तो २ तोला सूजी के आटे का हलुआ लेकर ३ माशा पठानी लोध और ३ माशा आँवा हल्दी बारीक पीसकर उसमे मिला लेवें और गरम करके स्वच्छ पोटली मे बाँधकर नेत्र को पोटली से सेकने के पश्चात् यही हलुआ गरम करके तुरत नेत्र के ऊपर बाँध देवें। यदि आघात के प्रभाव से भौ या नेत्र पर शोथ या लाली उत्पन्न हो जाय तो मुर्गी के एक अडे की सफेदी और जर्दी मे १ तोला गुलरोगन मिलाकर रूई या दूसरे नरम कपडे मे लत करके नेत्र के ऊपर रखे। यदि नेत्र मे तीव्र शूल हो तो शियाफ अव्यज स्त्री के दूध मे घिसकर नेत्र मे टपकायें और रसवत १ माशा, गिल अरमनी १ माशा, दम्मुल्अख्वैन १ माशा, केसर १ माशा, कपूर २ रत्ती, अफीम २ रत्ती—सबको बारीक पीसकर अडे की सफेदी मिलाकर चोट के स्थान पर लेप कर देवे। यदि चोट के स्थान मे रक्त जम जाय और वह स्थान काला पड जाय तो झाऊ की लकडी लेकर जलायें और जो पानी उससे निकले उसको चोट के स्थान पर मलें, यदि वेदना तीव्र हो और शोथ उत्पन्न हो जाय तो १ तोला पोस्ते की डोडी पानी मे क्वाथ करके उसमे कपडा तर करके कोष्ण टकोर करें और कनपटी पर जोक लगायें। मलावरोध दूर करने के लिये अतरीफल जमानी ७ माशा या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा रात्रि मे खिला दिया करें।

अपथ्य—लिखने-पढने और सीने-पिरोने का काम न करें। धूप मे और आँच के सामने बैठने से परहेज करें। अम्ल वस्तुयें सेवन न करें। अधिक मसालादार, उष्ण एव तीक्ष्ण पदार्थों के सेवन से भी परहेज करे।

पथ्य—लघु शीघ्रपाकी आहार देवें। कद्दू, पालक, तुरई, बकरी के कलिये मे डालकर चपाती के साथ देवे। अरहर, मूँग की दाल, खश्का, खिचडी, मक्खन, विस्कुट, पावरोटी, सेव, अगूर इत्यादि अभ्यासानुकूल खिलाये।

१३—दम्आ—नेत्रस्राव।

नाम—(अ०) दम्अ, (उ०) ढलकए चश्म, ढलका; (स०) नेत्रस्राव; (अ०) एपिफोरा (Epiphora)।

इस रोग मे रोगी के नेत्र से सदा अश्रु स्रावित होते रहते है और नेत्र हर समय तर (क्लिन्न) रहता है। कभी अनैच्छिक रूप से आँसू जारी हो जाते है।

हेतु—इस रोग का मूलभूत हेतु मस्तिष्क का द्रवो से परिपूर्ण होना है। कभी यह रोग नेत्राभिष्यद पोथकी, उपपक्ष्म तथा अन्यान्य नेत्र रोगो का परिणाम होता है। वृद्ध पुरुषो मे द्रवातिरेक के अतिरिक्त नेत्र शक्ति का दौर्बल्य भी इसका हेतु होता है।

लक्षण—जिन रोगो से यह व्याधि उत्पन्न होती है वे इससे पूर्व विद्यमान होते है। द्रवो की प्रगल्भता की दशा मे यदि रक्त प्रकुपित हो तो नेत्र लाल होगा। अश्रु उष्ण एव गाढे होगे। यदि कफ की प्रगल्भता हो, तो अश्रु शीतल एव मल की प्रचुरता होगी। यदि पित्त की प्रगल्भता हो तो अश्रु पतले और उष्ण होगे।

चिकित्सा—यदि मस्तिष्क या नेत्र के ऊपर बाहरी गरमी या सर्दी का प्रभाव हुआ हो तो गरमी की दशा मे काहू के बीज ९ माशा हरे धनिया के रस मे पीसकर मस्तक और भौ के ऊपर लेप करे या पीला रसवत ३ माशा रोगन नीलूफर मे घिसकर नेत्र के ऊपर लेप करे। सर्दी की दशा मे पीला एलुआ, हरे मकोय के रस मे पीसकर नेत्र के ऊपर लगाये। या शिब्व यमानी १ माशा दो वार परिस्लुत किये हुए अर्क गुलाब मे पीसकर नेत्र मे लगाये। यदि भीतरी दोष इसके हेतु हो तो दोषानुसार शोधन करके काबुली हडकी गुठली ६ माशा, हरा माजू ३ माशा, नमक इदरानी ३ माशा या हरा माजू ६ माशा, जटामासी ६ माशा पीसकर नेत्र मे लगायें।

यदि रोगजनक दोष कफ हो तो उसके शोधन के अनन्तर अतरीफल उस्तूखद्दूस ७ माशा से १ तोला तक रात्रि मे सोते समय १२ तोला अर्क गावजवान के

साथ खा लिया करें या अतरीफल कश्नीजी ७ माशा से १ तोला तक रात्रि मे सोते समय १२ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करें। यदि प्रसेक एव मस्तिष्क दौर्बल्य के कारण हो तो अतरीफल कबीर ७ माशा अर्क गावजवान १२ तोला के साथ सेवन करें। यदि पाचन दोष से हो तो मण्डूरभस्म २ रत्ती जुवारिश जालीनूस ७ माशा मे मिलाकर प्रात और अतरीफल उस्तूखुद्दूस ७ माशा सोते समय उपयोग करायें।

नेत्रस्राव की प्रायश दशाओ मे नेत्र मे कुहलुल्जवाहर का लगाना और हब्ब स्याह एव हब्ब सुर्ख का लेप और सफूफ दमआ का आन्तरिक उपयोग बहुत गुणकारी होता है।

यदि इन उपायो से कुछ लाभ न हो तो यथावश्यक यथाप्रमाण अपेक्षित दोष का सिरामोक्षण करें या कुछ दिन मुंजिज पिलाकर विरेचन के द्वारा हब्ब इयारज आदि से मस्तिष्क का शोधन करें और शुद्धि के उपरात अतरीफलो का सेवन करायें।

अपथ्य—अम्ल और वादी पदार्थों से परहेज करायें। नेत्र को धूलिकण आदि से सुरक्षित रखें। वादी, गुरु एव दीर्घपाकी वस्तुयें जैसे उडद की दाल, आलू, अरवी, मटर, गोभी इत्यादि सेवन न करें।

पथ्य—चपाती, वकरी का शूरवा, कम मिर्च की अरहर, मूंग की दाल और शीतल शाक, जैसे—टिंडा, तुरई, कद्दू आदि तथा पालक का साग भूख से थोडा कम खायें।

१४—बद्का

नाम—(अ०) बद्क (उ०, हि०) आँख की फुसी, (स०) पर्वणी अलजी। (अ०) फिलक्टिन्यूल (Phlyctenule)।

(अ०) रमद बुस्री, (उ०) फुसीदार आँख दुखना, (स०) पर्वणीमय नेत्राभिष्यद (अ०) फिलक्टिन्यूलर कञ्जङ्क्टिवाइटिज (conjuncti-vitis)।

नेत्र के शुक्लास्तर के ऊपर बडे या छोटे कोया की ओर कभी नेत्र के कृष्ण भाग के चतुर्दिक् एक या कई छोटी-छोटी पिडिकायें निकल आती हैं जो प्राय श्वेत पर यदि दोष रक्त हो तो ललाई लिये होती हैं।

बद्का मोरसरज और तर्फा का अन्तर—नेत्र के शुक्लास्तरगत पिटिका (फुसी) साधारणतया श्वेत चर्बी के रग की होती है, बद्का और जब कनीनिका पटल के फट जाने से अगूरी पर्दा चींटी के सिर के बराबर बाहर निकल आती है,

तब उसे मोरसरज कहते है। नेत्रशुक्लास्तरगत कृष्णाभ रक्त बिंदु को तर्फा कहते हैं।

हेतु—नेत्र की अस्वच्छता और स्वास्थ्यरक्षा के नियमो का उल्लघन इसके हेतु हैं। बालको को यह रोग अधिक होता है और प्राय हुम्मयात हसबा के पश्चात् हो जाया करता है। पर कभी प्रतिश्याय से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—नेत्र लाल एव वेदनापूर्ण होता है। उससे आँसू बहते है। प्रकाशासह्यता एव शिर शूल होता है। नेत्र खोलकर देखने पर उसमे पिटिका या विस्फोट (फोला) दृष्टिगत होता है। रक्तज मे नेत्र का रग कालाई लिये लाल और कफज मे सफेदी लिये होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—दोषोल्बणता की दशा मे यथावत् शोधन करें और (१) पीला रसवत ४ रत्ती लडकीवाली (कन्याप्रसूता) स्त्री के दूध मे घिसकर प्रात सायकाल नेत्र के भीतर आश्च्योतन करे अथवा (२) केसर को अर्क गुलाब मे घिसकर नेत्र के भीतर टपकाये। वद्का वल्गमी मे (३) हलदी को पानी मे घिसकर नेत्र के भीतर आश्च्योतन करने अथवा नेत्र के चतुर्दिक् लेप करने से उपकार होता है। वद्का दम्वी मे (४) अजरूत ४ रत्ती को अडे की सफदी मे मिलाकर नेत्र के भीतर टपकाने अथवा उसपर लेप करने से लाभ होता है। शेष रक्तज या कफज नेत्राभिष्यद की भाँति चिकित्सा करे।

१५—कुरूहुल्ऐन—नेत्रगतव्रण

नाम—(अ०) कुरूहुल्ऐन, (उ०) आँख का जख्म, (स०) नेत्रव्रण; (अ०) अल्सर ऑफ दि कॉर्निया (Ulcer of the Cornea)।

नेत्र के कनीनिकापटल पर पिडकाये उत्पन्न हो जाती है जिससे नेत्रशूल एव नेत्रस्राव होता है। जब ये पिडकाये पककर फट जाती है, तब उक्त स्थान पर व्रण बन जाते और पीव आती है।

हेतु—तीक्ष्ण एव दाहक दोष, नेत्र के ऊपर आघात लगने या नेत्र मे कुछ चुभ जाने से यह रोग होता है। चिरज नेत्राभिष्यद, चेचक या तीक्ष्ण सुरमा वा औषधियो की उपयोग से भी नेत्र मे पिडकायें उत्पन्न होकर व्रण बन जाते है।

लक्षण—यदि पिडका नेत्र के शुक्लास्तर पर हो तो नेत्र मे तीव्र शूल होता और आँसू आते है। यदि वह अगूरी पर्दे मे हो तो नेत्र के शुक्लास्तर मे रक्तबिंदु प्रतीत होता है। यदि व्रण कनीनिका पटल मे हो तो नेत्र के कृष्ण भाग मे

रक्तबिंदु दृग्गोचर होता है। यदि व्रण निम्नस्थ पटलो मे हो तो वह नेत्र से दिखाई नही देता, प्रत्युत् नेत्रशूल आदि से उसके होने का प्रमाण मिलता है। अतत जब वह फट जाता है, तब उससे पीब आने लगती है।

साध्यासाध्यता—यदि रोग उग्र हो अथवा उसकी उचित चिकित्सा न की जाय, तो दृष्टि नष्ट हो जाती है।

चिकित्सा—सर्वप्रथम शोधन और शमन करें। अस्तु, कीफाल की फस्द खुलवायें और प्रत्येक सप्ताह मे एक बार खुलवाते रहें। दोष को विलोम करने के लिये साफिन की फसद लेना और पिंडलियो पर सींगी लगाना लाभकारी है। फस्द के उपरात सताप की दशा मे इमली के फाट मे कफप्रकोप की दशा मे इयारिजात से उनका शोधन करें। यदि वेदना शात न हो तो स्त्री का दूध नेत्र मे टपकायें अथवा शियाफ अब्यज अफ्यूनी लडकीवाली स्त्री के दूध मे घिसकर आश्च्योतन करें और इसी मे रुई भिगो कर नेत्र के ऊपर रखें। जब वेदना शात हो तो अलसी और मेथी का लबाब नेत्र मे टपकायें और ऊपर से कपडे की गद्दी रखकर बाँध देवें या नेत्र के ऊपर अडे की जर्दी और केसर का लेप करे। जब श्वेत रग का पूय प्रगट हो तो बकरी का दूध और मेथी का लबाब मिला हुआ मध्वम्बु (माउल्अस्ल) टपकायें तथा जरूर अजरूत छिडकें।

जरूर अजरूत—निशास्ता ६ माशा, शोधित अजरूत २ माशा, सफेद कलई २ माशा कूट-छानकर जरूर (अवचूर्णन) बनायें। इसके उपयोग से व्रण शुद्ध हो जाता है। पूय से व्रण शुद्ध हो जाने पर शियाफ कुंदुर का उपयोग करें जिसका योग निम्न है—अजरूत, निशास्ता, बबूल का गोद, कुदुर, सफेदा काशगरी प्रत्येक ३ माशा बारीक पीसकर मुर्गी के अडे की सफेदी मे मिलाकर वर्ति (शियाफ) बनाये और नेत्र मे लगायें। अथवा शख सोख्ता, शादनज मग्सूल पीसकर छिडके। व्रणपूरण के उपरात यदि व्रण का कोई चिह्न शेष रहे, तो पुरानी गली हुई अस्थि अर्क गुलाब मे पीसकर लगाये।

अपथ्य—रोगी को उच्च स्वर, वमन, बलवती चेष्टा, छिक्काजनक द्रव्यो से तथा लिखने-पढने के काम से बचना चाहिए। रोगी का सिरहाना नीचा नही होना चाहिये। इसके अतिरिक्त उष्ण एव मधुर साद्र आहार, अम्ल और अधिक मसालेदार आहार से परहेज करना चाहिये।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी और बल्य आहार सेवन कराये, जैसे—कद्दू, पालक, तुरई, अरहर, मूंग की दाल, खिचडी, पावरोटी, सेब, अजीर आदि।

———

१६—हुजूजुल्ऐन

नाम—(अ०) हुजूजुल्ऐन, (उ०) आँख का उभर आना; (स०) पुर सूत नेत्रगोलक, (अ०) एक्सॉफ्थल्मॉस (Exophthalmos)।

इस रोग मे नेत्रगोलक (आँख का ढेला) बाहर की ओर उभर आता है।

हेतु—रीही वा दोषिक माद्दा से नेत्र का परिपूर्ण हो जाना, भीतर की ओर से किसी रसौली (अर्बुद) आदि का दबाव पडना, नेत्र के ऊपर अभिघात लगना, नेत्र की पेशियो एव बधनियो का वातग्रस्त होना, या टूट जाना, तीव्र शिर शूल या वमन होना, कब्ज की दशा मे बलपूर्वक कुथन करना, प्रसव के समय स्त्री का जोर लगाना, गला घुट जाना, सरसाम, फुफ्फुस शोथ, खुनाक आदि इसके हेतु है।

लक्षण—(१) नेत्र की पेशियो एव बधनियो के छिन्न हो जाने की दशा मे दृष्टि सर्वथा नष्ट हो जाती है। (२) वायुसचयजनित मे नेत्र बिना बोझ के फूला हुआ होता है। (३) दोषसचयज मे नेत्र फूलने के साथ गौरव भी होता है। (४) इन्जेगाती मे यद्यपि नेत्रगोलक बडा मालूम नही होता तथापि रोगी को नेत्र के भीतर से बाहर की ओर उद्वेष्टन एव तनाव मालूम होता है और प्रगाढ अश्रु स्रावित होते है। (५) घातित (इस्तिर्खाऽ) मे न नेत्रगोलक बडा होता है और न आँसू बहते है। किन्तु नेत्रमे अनैच्छिक चेष्टाये प्रारभ हो जाती है।

चिकित्सा—यदि रोग साधारण हो तो प्राय बाह्य उपचार ही पर्याप्त होता है। पर यदि रोग बलवान् हो तो दोषानुसार सपूर्ण शरीर का शोधन करना आवश्यक एव उपकारी होता है। अस्तु, यदि नेत्रगोलकक्षय सामान्य और हेतु अल्प हो तो साधारणतया नेत्र के ऊपर पट्टी बाँधना और सदैव उसको बन्द रखना, पीठ के बल सोना और भोजन मे कमी करना ही रोगनिर्मूलक (रामबाण) उपचार है। परन्तु यदि हेतु बलवान् हो और दोषसचय अधिक हो तो दोषानुसार सरारू सिराका वेधन दोषानुसार शोधन वरन् कम से कम दोषहरण के लिये गुद्दी पर जोक या सीगी लगवाना और नेत्र के ऊपर हर समय पट्टी बाँधे रखना आवश्यक है। इसके उपरात (१) शीतल जल या (२) पोस्त अनार के काढे से सिर के ऊपर परिषेक करना या (३) अर्कगुलाब मे सिरका मिलाकर उसमे गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखना और उसको बाँध देना अथवा इसी प्रकार (४) पोस्त अनार के क्वाथ से धारना और उसमे गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखना भी लाभकारी है। इन्जेगाती मे निदानपरिवर्जन के बाद (५) सुर्मा या (६) सीसा का टुकडा गद्दी पर रखकर विकारी नेत्र पर बाँधना और रोगी को पीठ के बल

सोने का आदेश करना तथा (७) गुलनार के क्वाथ से नेत्र के ऊपर धारना अथवा (८) हरे माजू को शीतल जल मे पीसकर नेत्र के ऊपर लेप करना लाभकारी उपाय है। इस्तिखाई मे हब्ब इयारिज द्वारा शोधन और अगघात (इस्तिखा) के उपायो को ध्यान मे रखने के साथ (९) राई को बारीक पीसकर नस्य लेने से लाभ होता है। यदि यह रोग मस्तिष्क शोथ फुपफुसशोथ या कण्ठशोथ (खुनाक) आदि के कारण प्रगट हुआ हो तो मूल व्याधि की चिकित्सा करें। आवश्यकतानुसार समीचीन प्रकार के योग तथा शियाफ सुमाक आदि का उपयोग करें।

सिद्ध योग--पीला एलुआ, पीला रसवत, अकाकिया, बडकी दाढी प्रत्येक ६ माशा--सबको हरे मकोय के रस मे पीसकर लेप करें और उस पर रूई की गद्दी रखकर बाँधें तथा रोगी को चित्त सुलायें। यह नेत्र के उभार एव हुजूज को नष्ट करता है।

१७--नतूउल्कर्निया

नाम--(अ०) नतूउल्कर्निय , (उ०) कॉर्निया का उभर आना, टेंट, (अ०) स्टैफिलोमा ऑफ दि कर्निया (Staphyloma of the cornea), केराटोकोनस (Keratoconus)।

इस रोग मे तारकापटल मलिन (अस्वच्छ) होकर इतना ऊपर को उभर आता है कि पलको के बाहर चला जाता है। यदि यह रोग शोथ के कारण हो तो पाश्चात्य वैद्यक मे उसे 'स्टैफिलोमा' और यदि बिना शोथ के हो तो 'केराटोकोनस' या 'कोनिकल कॉर्निया' कहते है।

हेतु--खिल्त रीही का तारका के नीचे सचित हो जाना आदि। तारका के मृदु या क्षतयुक्त होने या छिद जाने के कारण पीछे से अगूरीपर्दे आदि का दबाव पडने से यह रोग हो जाया करता है।

लक्षण--तारका उभरी हुई एव तनी हुई होती है। कभी तो सपूर्ण तारका बाहर को उभर आती है और कभी उसका मध्यभाग उभरकर शक्वाकार (मखरूती) हो जाता है। क्षोभ होकर नेत्र साधारणतया शोथयुक्त एव वेदनायुक्त हो जाता है। उभरी हुई तारका की नोक क्षतयुक्त होकर प्राय फट जाती है और अतत नेत्र नष्ट हो जाता है।

चिकित्सा--कफज नेत्राभिष्यद की भाँति साद्र दोष का शोधन करके (१) रसवत या (२) हलदी आदि का उपयोग करे। या नेत्राभिष्यद मे लिखित (३) जरूर अस्फर या (४) शियाफ अहमर का उपयोग करे। (५) शलगम या (६) इक्लीलुल्मलिक के काढे से नेत्र मे बफारा देवें या परिषेक करे और

(७) गुल बाबूना या (८) सुद्दाब के पत्र को अर्क सौफ मे पीसकर नेत्र के ऊपर लेप करें, कब्ज नही होने देवे ।

अपथ्य—अम्ल, आध्मानकारक एव गरिष्ठ पदार्थो से परहेज करें।

१८—बुसूरुल्कर्निया

नाम—(अ०) वसूरुल्कर्निय, (उ०) आँख की फुसियाँ, (स०) अलजीमय तारकाशोथ, (अ०) फिलक्टिन्युलर केरेटायटिस (Phlyctenular Keratitis)

इस रोग मे नेत्र के तारकापटल पर एक वा अधिक पिडकायें निकल आती है। नेत्र के शुक्लास्तर पर निकली हुई इस प्रकार की पिडकाओ को 'वद्का' कहते है।

हेतु—पित्तमय वा सौदामय रक्त का प्रकोप और कभी तीक्ष्ण पतले केवल पित्त का नेत्र के पटलो मे अन्तर्भूत होना तथा वद्का रोग मे वर्णित कारण इसके हेतुभूत है।

लक्षण—नेत्र लाल एव तीव्र शूलयुक्त होता हे। पुष्कल अश्रुस्राव होता है। प्रकाशासह्यता होती है। नेत्र को खोलकर देखने पर तारकापटलके ऊपर प्याजी रग की घेरायुक्त पिडका वा विस्फोट दृग्गोचर होता है।

अन्तर—पिडका (बुसर) और व्रण (कर्हा) मे प्रारभकालीन भेद यह है कि पिडका प्रारभ मे लाल बिदु के सदृश और व्रण रग मे सफेद, वेदनापूर्ण एव भयपूर्ण होता है।

असस्रृष्ट द्रव्योपचार—यदि रोगी सहन कर सके तो प्रारभ मे बासलीक की फस्द खोले या कम से कम भरी सीगी लगायें अथवा पित्त विरेचनीय औषध पिलाकर शोधन करें तथा सतापहरण के लिये शीतल औषधियाँ सेवन करायें। तदुपरात (१) इसबगोल या (२) बिहीदाने का लबाब अर्क गुलाब या हरे धनिये के रस मे मिलाकर नेत्र के भीतर आश्च्योतन करने या उसमे गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखने से लाभ होता है और (३) लडकीवाली स्त्री का दूध, अडे की सफेदी या हरे मकोय के रस मे मिलाकर इसमे से कुछ बूँदें नेत्र के भीतर टपकाने से प्रत्येक दशा मे लाभ होता है।

सस्रृष्ट द्रव्योपचार—प्रारभ मे (१) शियाफ अव्यज सादा या (२) शियाफ तुफाह लडकीवाली स्त्री के दूध मे घिसकर नेत्र के भीतर डालने से उपकार होता है। तदुपरात दोष को शुद्ध करने और पिडकाओ के रोपण के लिये (३) शियाफ

अव्यज अफ्यूनी अथवा (४) शियाफ अव्यज कुदुरी या (५) शियाफ कुदुर लड़की वाली स्त्री के दूध मे घिसकर नेत्र के भीतर कतिपय वार आश्च्योतन करने से उपकार होता है। इसके अतिरिक्त आतरिक रूप से उपयुक्त प्रकार के अतरीफलो का उपयोग जारी रखना भी लाभकारी है।

१९—मोरसरज।

नाम—(अ०) मोरसरज, सुकूतुल्कज्हिय्य, (उ०, हि०) काली फूली, स्याह फूला, (स०) तारकाभ्रंश, (अं०) आइरिडॉप्टोसिस (Iridoptosis) प्रोलॅप्स ऑफ दी आयरिस (Prolapse of the Iris)।

वक्तव्य—मोरसरज मोरसर (फा०मोर=च्यूंटी, सर=सिर) का अरवी कृत शब्द है। यह एक रोग है जिसमे कनीनिका के फट जाने से नेत्र का अगूरी पर्दा च्यूंटी के सिर के वरावर वाहर निकल आता है। इससे आगे अनुक्रम से वर्धमान तारकाभ्रंश रोग को क्रमश रासुज्जुवावी (मक्खी के सिर के वरावर), इनवी (अगूर के वरावर), तुफाही (सेव के वरावर) और मिस्मारी या फलकी (तुफाही कुहना)।

हेतु और लक्षण—नेत्र के ऊपर अभिघात लगने या व्रण वा पिडका उत्पन्न होने से तारकापटल फट जाता है और उसके नीचे से अगूरी पर्दा वाहर उभर आता है, जिसको मोरसरज कहते हैं।

ससृष्टासंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के हेतुओ पर विचार करने के उपरात तुरत कतिपय कर्कशतारहित सग्राही औषधियाँ, जैसे शादन मग्सूल, रौप्यमाक्षिक (अक्लीमियाए नुक्रा) और मसीकृत किरमाला या (२) सफेदा कलई वारीक पीसकर अथवा (३) जरूर अक्सीरैन या (४) शियाफ आवार या (५) शियाफ अख्जर आदि का उपयोग करे। नेत्र के भीतर औषधि डालकर और नेत्रगुहा के वरावर स्वच्छ रूई की एक गद्दी नेत्र के ऊपर रखकर ऊपर से साफ पट्टी वॉध देवे। यदि गद्दी के ऊपर रुपया के वरावर सीसा का एक गोल टुकडा या पिसा हुआ सुर्मा एक रुपये के वरावर गोलीसी थैली मे डालकर गद्दी के ऊपर वॉध देवे तो अधिक लाभकारी होता है। इन उपायो से लाभ न होने पर शस्त्रकर्म ही इसका अतिम उपाय है।

२०—हिवल—द्विधादृष्टि ।

नाम—(अ०) हिवल, (फा०) कजवीनी, (उ०) भैंगापन, भैंगा होना, (स०) द्विधादृष्टि, (अ०) स्क्विन्ट (Squint), स्ट्रेबिस्मस (Strabismus) ।

यह नेत्र का एक प्रसिद्ध रोग है जिसमे नेत्र का कृष्ण भाग (हदका) नासिका और दूसरी कनपुटी की ओर फिर जाती है तथा रोगी को एक-एक पदार्थ दो-दो दीखता है ।

हेतु और लक्षण—नेत्रगोलक की चेष्टादायिनी पेशियो मे आर्द्र या शुष्क (रूक्ष) आक्षेप उत्पन्न हो जाता है या घात हो जाता है अथवा नेत्र द्रव वा पटल अपने स्थान से हिल जाते हैं । कभी कारानीतुस, अपस्मार आदि उग्र व्याधियाँ भी इस रोग के हेतु होते हैं । बाल्यकाल, दृष्टिदौर्बल्य, दूर दृष्टि, ज्वर, दौर्बल्य अन्त्रकृमि और जलशीर्ष भी इसके हेतु होते हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि रूक्ष आक्षेप या करानीतुस आदि तीव्र रोग इस रोग के निदान भूत हो तो निदान परिवर्जन के पश्चात् मस्तिष्क के स्नेहन एव बलवर्धन का यत्न करें। सुतरा (१) सात दाने मीठे बादाम के मग्ज का शीरा या (२) ३ माशा मीठे कद्दू के मग्ज का शीरा ७ तोला अर्क गावजबान मे निकालकर ६ माशा मीठे बादाम का तेल मिलाकर पिलाने से उपकार होता है । (३) स्त्री का दूध या (४) गदही का दूध आँख, कान और नाक मे टपकाना लाभकारी है । (५) १ तोला मीठे बिहीदाने के लबाब और (६) २ तोला इसबगोल के लबाब मे १० तोला अर्क गुलाब और ५ तोला गुलरोगन मिलाकर उसमे गद्दी तर करके आँख के ऊपर रखना और कपडा या इस्पज तर करके मस्तक, कनपुटी और सिरके ऊपर रखना अतीव लाभकारी उपाय है । (७) ७ तोला गुलबाबूना के काढे मे तिल का तेल मिलाकर परिषेक करना, (८) रोगन बनफ्शा २ तोला सिर पर मलना या नाक मे सुडकना लाभकारी है । यदि तर आक्षेप अपस्मार या अगघात रोग का कारण हो तो प्रत्येक कारण को यथाविधि निवारण करे ।

२१—इत्तिसाअ

नाम—(अ०) इत्तिसाअ, इन्तिशार, (उ०, हि०) पुतली फैल जाना, (अ०) मिड्रिएसिस (Mydriasis) ।

२२—जीक

नाम—(अ०) जीक, जीक सुक्वा, (उ०, हि०) पुतली का तग (सकुचित) हो जाना, (अ०) माइओसिस (Myosis)।

वक्तव्य—इन उभय रोगो की निदान-चिकित्सा विस्तारभय मे यहाँ नही लिखी गई।

२३—नजूलुल्माऽ

नाम—(अ०) नजूलुल्माऽ, कतरवता, (उ०, हि०) मोतियाबिंद, पानी उतरना, (स०) लिङ्गनाश, (अ०) कैटरैक्ट (Cataract)।

इस रोग मे नेत्र का मोती (Crystaline lens) या उसको आवरण करनेवाली झिल्ली दोनो मे मलिनता उत्पन्न हो जाने के कारण क्रमश. दृष्टि कम होकर अतत सम्यक् दृष्टि नष्ट हो जाती है।

भेद—(१) अभ्रवत् (गमामी), (२) पारदीय (जैवकी), (३) गच या चूर्णवत् (जस्सी), (४) आकाशीय (आस्मानूजूनी), और (५) विकीर्ण (मुन्तशिर)। इसके अतिरिक्त सात अन्य भेद—काचवत् (जुजाजी), ओलावत् (अव्यज वर्दी), हरित, पीत, रक्त, सुनहला और काला।

हेतु—सिर के ऊपर अभिघात लगना, नेत्र मे कठिन सर्दी लगना, अतिशय आयास, सूक्ष्म वस्तुओ के देखने का कार्य, अति मैथुन, विशेपकर भोजन पचने के बीच मे स्त्री सहवास करना, सपूर्ण शरीरगत द्रवो की वृद्धि, तीव्र शिर शूल, अर्धावभेदक, तीव्र छर्दि आदि इसके हेतु हैं। यह रोग साधारणतया वृद्धो को हुआ करता है।

लक्षण—रोग के प्रारभ मे नेत्र के सामने कल्पित भुनगे, जैसे मच्छड, मक्खी आदि उडते हुए दिखाई देते हैं। जो विशेष करके इस रोग का पूर्वरूप हुआ करता है। अस्तु, इस प्रकार के कल्पित पदार्थो का दिखाई देना और साथ ही दिन-व-दिन दृष्टि मे कमी और मलिनता उत्पन्न होना मोतियाबिंद का प्रारभ और उसकी पूर्वभूमिका ही हुआ करती है। प्रकाश फटा हुआ एव विकीर्ण दृग्गोचर होता है। इसके उपरात प्रत्येक वस्तु दुगुनी दिखाई देती हे और नेत्र के सामने हर समय जाला-सा प्रतीत होता है। दीपक बहुत बडा दिखाई देता है। चद्रमा को देखने पर एक के स्थान मे कई दिखाई देते हैं। दृष्टि क्रमश कम होकर बिल्कुल जाती रहती है। अत्यन्त प्रकाशमय पदार्थो के सिवाय रोगी अन्य किसी वस्तु को देख नही सकता। अन्त मे केवल धूप और छाँह को पहिचान सकता है अथवा दिन-रात का भेद समझ सकता है।

कतिपय अन्वेषको ने लिखा हे कि जव कल्पित पदार्थो का दीखना

(ख्यालाते चश्म) निरतर छ मास तक स्थिर रहे और दृष्टि क्रमश न्यून होती जाय, तो समझ लेना चाहिये कि मोतियाबिंद अवश्य हो जायगा।

रोग की प्रगति और परिणाम—यह रोग उत्तरोत्तर बढता रहता है और अतत. दृष्टि सर्वथा नष्ट हो जाती है। साधारणतया रोगारभ से लेकर छ. मास से एक वर्ष तक दृष्टि नष्ट हो जाती है। यदि बहुत पूर्व इस रोग का निदान हो जाय तो इसको थोडा-बहुत रोका जा सकता है। परन्तु जब यह बद्धमूल हो जाता है, तब इसका नाश करना दुस्तर होता है, और इसका अतिम उपाय शस्त्रकर्म ही है।

चिकित्सासूत्र—प्रारभ मे जबकि दृष्टि सर्वथा नष्ट न हुई हो, अति शीघ्र सम्यक् दोषपाक के पश्चात् हब्ब इयारिज तथा अन्यान्य विरेचन से दोष का शोधन करे। यदि रोगी सहन कर लेवे और उसे सात्म्य हो जाय, तो निरतर विरेचन देवे। वरन् सप्ताह मे एक बार इयारिज फैकरा अन्यान्य मस्तिष्क सशोधक औषधियो के साथ अवश्य खिलाये। यदि सतापवृद्धि की आशका हो, तो इयारिजात के साथ अतरीफल की योजना करें। सशोधनोपरात अवशिष्ट रहे दोषो के शोधन करनेवाले गण्डूष और नस्य का उपयोग करे। कुहल बासलीकून और शियाफ मरारात का उपयोग करे और निरतर अतरीफल, खमीरा और दवाउल्मिस्क आदि का सेवन करें। तथा प्रारभ मे कनपुटी की धमनी पर दहनकर्म करें (दाग देवें), जिसमे वह दग्ध हो जाय। दग्ध स्थल पर तीन दिन हराम मग्ज मर्दन करे। इसके बाद तिल के तेल मे रूई भिगोकर लगावे। दाग से जितना अधिक द्रव स्रावित हो उतना ही उत्तम है। यह कर्म प्राय लाभ पहुँचाता है। चिकित्साकाल मे नेत्राहितकर उपाय और औषधियो से परहेज करे। कब्ज न होने देवें, रूक्ष आहार सेवन कराये। उदाहरणत पक्षियो के मास के कबाब, गरम मसालायुक्त भुना हुआ कलिया, सूखी रोटी आदि, सान्द्र पदार्थ एव मछली के मास, दूध और उसके योग, तर फलो, सान्द्र मास, मद्य, सिरावेध, शृग, अतिमैथुन और अन्यान्य मस्तिष्क दौर्बल्य कारक द्रव्यो और उपायो से परहेज करे। यदि जल के स्थान मे मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) का अभ्यास डाले, तो अतीव हितकर है। जब रोग बद्धमूल हो जाय, दृष्टि नष्ट हो जाय, तो बिना शस्त्रकर्म के अन्य उपाय नही है। यह कर्म भी मस्तिष्क एव शरीर शोधनोपरात करना चाहिये और पूर्वोक्त पथ्य-पालन भी अनिवार्य है।

चिकित्साक्रम—प्रारभ मे मुजिज देकर मुसहिल हब्ब इयारिज से मस्तिष्क का शोधन करें। मुजिज का योग—उस्तूखुदूस ५ माशा, बिल्लीलोटन के पत्र ५ माशा, मुण्डी के फूल ९ माशा, गुलबनफ्शा ६ माशा, सौंफ और खतमी के

बीज प्रत्येक ६ माशा, उन्नाव ५ दाना, गावजबान ४ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात काल क्वाथकर छान लेवे और २ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर पिलावें। दो सप्ताह के पश्चात् अमलतास का गूदा ६ तोला, तुरजबीन ४ तोला, सनाय मक्की पत्र ९ माशा, ७ दाना बादाम की गिरी का शीरा मिलाकर विरेचन देवे। दूसरे और तीसरे विरेचन मे हुडो की भी योजना करें और यथाविधि रात्रि मे ७ माशा हब्ब इयारिज खिलावे। तीन विरेचनो के उपरात प्रात काल मर्जा जवाहरवाला २ रत्ती, १२ तोला खमीरा गावजबान के साथ सेवन करें, रात्रि मे २ तोला अतरीफल कश्नीजी १२ तोला अर्क सौंफ के साथ सेवन करें। और नेत्र मे कुहल साबून या दवाएँ, नुज़ूलुल्माऽ लगाते रहें। इस प्रकार मोतियाबिंद के प्रारभ मे प्राय लाभ होता है। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो शस्त्रकर्म करायें।

२४—सर्तानुल्ऐन

नाम—(अ०) सर्तानुल्ऐन, वर्मुल्क़र्निया, (उ०) आँख का सर्तान, वरम कर्निया, (स०) तारकागत अर्बुद, (अ०) कैन्सर ऑफ दी आई (Cancer of the eye), केराटाइटिस (Keratitis)।

वर्णन, हेतु आदि—यह एक प्रकार का शोथ है जो नेत्र के तारकापटल पर होता है और प्राय इसकी उत्पत्ति का हेतु शिर शूल हुआ करता है। इसका सादृश्य (सर्तान) के साथ होता है। यद्यपि यह शोथ साधारणतया दुश्चिकित्स्य समझा जाता हे, तथापि वेदनाशमन और उपद्रव तथा लक्षण को कम करने का यत्न करना चाहिए।

चिकित्सा—(१) मुर्गी के अडे की जर्दी कतीरा मिलाकर नेत्र के ऊपर रखना और (२) अडे की सफेदी स्त्री के दूध से मिलाकर नेत्र मे टपकाना लाभकारी उपाय हैं। इसी प्रकार (३) असारून, (४) शीह (किरमाला), (५) कुदुर, (६) बोल और (७) एलुआ इनमे से प्रत्येक पृथक्-पृथक् सुर्मा और लेप की भाँति उपयोग करने से शोथ को विलीन करते हैं।

२५—गरब

नाम—(अ०) गरब, अफीलूस, (उ०) आँख के कोये का नासूर, (हि०) अश्रुकोष का नासूर, (स०) नेत्रनाडी, (अ०) फिस्च्युला लॅक्रिमॅलिस (Fistula lachrimalis)।

यह नेत्र के भीतरी कोण का नासूर है जिससे अनैच्छिक रूप से आँसू बहते

रहते है। प्रथम भीतरी नेत्रकोण मे एक छोटा-सा फोडा होता है जिसको यूनानी मे अफीलूस कहते है। पुन जब वह फूटकर नासूर बन जाता हे तब उसको गरब कहते है।

हेतु--आर्द्र ऋतु मे बालको और आर्द्र (स्निग्ध) प्रकृति के मनुष्यो मे यह रोग अधिक पाया जाता है। कभी नेत्रप्रणाली के रोग से भी यह हो जाता है।

लक्षण--यह नासूर विभिन्न प्रकार का होता है। अस्तु, कभी तो नेत्र के बाहरी भाग मे और कभी पपोटा के नीचे होता हे। कभी यह नाक के भीतरी ओर और कभी नेत्र की ओर फूटता हे। उक्त दशा मे नाक या ऑख से पूयमय द्रव उत्सर्जित होता रहता है। विशेष कर नेत्र को दबाने से यह द्रव भली भॉति प्रगट होता है। यदि यह रोग पुराना हो जाय तो उक्त दूषित द्रव से नाक की कुर्री और कभी नेत्र विकृत एव नष्ट हो जाता है।

चिकित्सा--प्रारभ मे सिरावेध एव विरेचन द्वारा शोधन करे। अस्तु, रक्त प्रकोप की दशा मे कीफाल की फस्द खुलवायें, गुद्दी पर सीगी लगवाये, वरन् यथाप्रकृति विरेचन के द्वारा दोषो का शोधन करे। स्थानीय रूप से प्रथम दोष-विलोमकर औषधियो का उपयोग करे। यदि शोथ विलीन न हो, तो लडकी वाली स्त्री के दूध मे केसर घिसकर लगाये, या मेथी का स्वरस नेत्र के भीतर आश्च्योतन करे या मेथी और अलसी पीसकर लगाये। जब व्रणशोथ पक जाय, तब उसको फोडने के लिये १ रत्ती कुदुर को २ रत्ती कबूतर के बीट मे गूँधकर लगाये या अजीर को सिरका मे घिसकर लगाये। जब फोडा फूट जाय, तब घाव करने के लिये रूई को शहद मे लथ करके घाव के भीतर रखे और घाव को इस्पज और मधुवारि (माउल्अस्ल) से स्वच्छ करके निम्न वर्तिका प्रयोग करे--२ तोला शहद को अग्नि के ऊपर रखे, जब गाढा हो जाय, तब समुद्रफेन और माजू प्रत्येक १ माशा खूब बारीक पीसकर उसमे मिलायें और इसमे बत्ती तर करके नासूर के भीतर रखे। यदि नासूर का मुंह बन्द हो जाय और शोथ अधिक हो तो ६ माशा तुख्म मरो को २ तोला दूध मे पकाकर ६ माशा केसर मिलाकर उस पर लगाये। जिसमे उसका मुँह खुल जाय।

सिद्धयोग--मरहम गरब--कुदुर, बोल, शोधित अजरूत, दम्मुल्अख्वैन, सफेदा काशगरी प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा, सबको महीन पीसकर ३ तोला गुलरोगन मे १ तोला मोम पिघलाकर उक्त ओषधियो के महीन चूर्ण को मिलाये। इसमे थोडी-सी रूई लथ करके नासूर के ऊपर रखें। इससे नेत्रनाडी शुद्ध होकर भर जाती है।

पथ्यापथ्य--नेत्राभिष्यदवत्।

नेत्रवर्त्मगत रोग (अम्राजुल् अज्फान)

१——इस्तिर्खाउल् जफन ।

नाम—(अ०) इस्तिर्खाउल्जफन, (हि०, उ०) पपोटे (पलक) का ढीला हो जाना, (अ०) टोसिस (Ptosis) ।

इस रोग मे नेत्र का ऊपरी पलक ढीला होकर लटक जाता हे और ऊपर की ओर कठिनाई से उठ सकता हे ।

हेतु—पलक की वातनाडियो मे द्रव का आ जाना, नेत्राभिष्यद, अर्दित, या पक्षवध, पलक की पेशियो की कण्डराओ का छिन्न हो जाना आदि इसके हेतु हैं ।

लक्षण—द्रव की दशा मे तर वस्तुओ का रोग से पूर्वसेवन और कण्डरा का छिन्न होना और अन्यान्य पूर्वोक्त व्याधियो के कारणभूत होने मे प्रत्येक रोग के भिन्न-भिन्न लक्षणो का प्रगट होना निदान के साधनभूत होते हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—छिन्न कण्डरा को असाध्य समझें। यदि अर्दित और पक्षवध इस रोग का हेतुभूत हो तो मूल व्याधि की चिकित्सा करें। द्रवजन्य व्याधि मे मुजिज वलगम देने के पश्चात् मुसहिल वलगम से उसका शोधन करे। विशेष शुद्धि हेतु हब्ब इयारिज उपयोग करें। मस्तिष्क की शुद्धि के लिये उपयुक्त प्रकार के गण्डूष और नस्य का उपयोग करें। पलको के ऊपर सग्राही एव उपशोषण ओषधियो का उपयोग करें। अस्तु, इस दशा मे सशोधन के उपरात (१) पीला एलुआ, (२) अकाकिया, (३) रसवत, (४) मुरमकी (बोल), (५) हरा माजू इनमे हर एक अलग-अलग अथवा यथाप्रमाण एक साथ हरे मकोय के रस मे पीसकर पलक और मस्तक के ऊपर लेप करे। इसी प्रकार (६) फिटकिरी २ रत्ती २॥ तोला अर्क गुलाब मे घोलकर थोडी-थोडी देर बाद नेत्र मे आश्च्योतन करते रहने से उपकार होता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार—रोगकाल मे प्रति दिन (१) अतरीफल सगीर १ तोला या (२) अतरीफल कबील ९ माशा १२ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करना लाभकारी हैं। इसी प्रकार शोधनोपरात उष्ण जुवारिशे, जैसे (३) जुवारिश जालीनूस ७ माशा या (४) जुवारिश जजबील ७ माशा या (५) जुवारिश कमूनी ९ माशा अकेला या १२ तोला अर्क सौंफ के साथ उपयोग करना तथा (६) माजून फलासफा ७ माशा अकेले या ६ तोला अर्क सौंफ और ६ तोला अर्क मकोय के साथ सेवन करना लाभकारी है ।

पथ्यापथ्य—तीतर, बटेर, गौरैया या मुर्गी का बच्चा आदि मे से किसी एक का मास गेहूँ की फतीरी रोटी के साथ खिलाये, तर एव स्निग्ध पदार्थों से परहेज करे ।

———

२—इल्तिसाकुल्अज्फान

नाम—(अ०) इल्तिसाकुल् अज्फान, (उ०, हि०) पलको का चिपक जाना; (स०) अपरिक्लिन्नवर्त्म, पिल्स, (अं०) एङ्किलोब्लेफेरॉना (Ankyloblepharona)।

इस रोग मे पलक कभी तो आपस मे और कभी शुक्लास्तर एव तारकापटल से चिपक जाते है।

हेतु—नेत्राभिष्यद, नेत्र और वर्त्मगत व्रण, पोथकी, सिराजाल या अर्जुन आदि के विधिविहीन शस्त्रकर्म या आमाशय से तीक्ष्ण दोष का आरोहण करना या मस्तिष्क से तीक्ष्ण दोष का अवरोहण करना और बालको मे द्रवातिरेक आदि इसके हेतुभूत है।

लक्षण—उपर्युक्त हेतुओ का प्रगट होना और प्रसेक की दशा मे मस्तिष्क मे उद्वेष्टन और नेत्र मे शूल आदि प्रतीत होना और बाष्पारोहण की दशा मे उदर एव उर' कोष्ठ मे से किसी रोग से आक्रात होना निदान का साधनभूत होता है।

असस्नृष्ट द्रव्योपचार—रोग के असली कारण को दूर करे, यदि हेतु की तीव्रता की दशा मे दोनो पलको के अत्यत रूक्ष हो जाने का भय हो तो रक्त के प्रकोप की दशा मे सराल्की फस्द खोलने और उपयुक्त प्रकार के शोधन एव शमन करने के उपरात (१) लडकी वाली माता का दूध या (२) इसबगोल का लवाब या (३) अर्क गुलाब के कुछ बिन्दु अकेले या सबको एक मे मिलाकर नेत्र के भीतर टपकाने या उनमे नरम स्वच्छ धुनकी हुई रुई का फाहा तर करके पलको के बीच मे रखना अत्यत गुणकारी होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—शोधन के बाद (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ उपयोग करने से उपकार होता है। इसी प्रकार व्रणरोपण के लिये (३) शियाफ अब्यज लडकीवाली स्त्री के दूध मे घिसकर नेत्र के भीतर डालने या (४) जरूर अब्यज पलको पर छिडकने से भी लाभ होता है। इसी प्रकार शियाफ सुमाक भी गुणकारी है। कब्जनिवारण का ध्यान रखें। हेतु के अनुसार पथ्यापथ्य का आदेश करे।

———

३—शत्रा

नाम—(अ०) शत्र', (हिं०) पलको का परस्पर न मिलना, (स०) शशकर्नेत्रत्व, शशकीय, नेत्रच्छद, (अं०) लैग्ऑफ्थल्मॉस (Lagophthalmos)।

इस रोग मे पलक सिकुडकर बाहर या भीतर की ओर मुडकर इतने छोटे हो जाते है कि परस्पर मिल नही सकते और रोगीके नेत्र सोते-जागते शशक नेत्रवत् थोडे-बहुत खुले रहते हैं। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक मे ऐन अर्नबिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक मे लैगऑफ्थल्मॉस कहते है। कभी ऐसा होता है कि ऊपर का पलक सिकुड जाता है और नीचे का बाहर की ओर उलट (बहिर्वलित हो) जाता है। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक मे शत्रः खारजिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक मे एक्ट्रोपिऑन (Ectropion) कहते हैं। कभी निचला पलक भीतर की ओर मुड (अन्तर्वलित हो) जाता है। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक मे शत्रः दाखिलिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक मे एन्ट्रोपिऑन (Entropion) कहते हैं।

हेतु—जन्म से ही पलको का छोटा होना, उनका छिन्न हो जाना, नेत्र-वर्त्मोत्थापनी पेशी का आक्षेप, पलक के किसी भाग का त्रुटित होना या उसमे कठिन एव अक्काल व्रण का उत्पन्न होना अथवा ग्रन्थिरोग या अर्बुद या मस्सा व अधिमास का उत्पन्न हो जाना, व्रणरोपण होने पर उद्वेष्टन एव आक्षेप उत्पन्न होना या आघात-प्रतिघात से आक्षेप उत्पन्न होना आदि इसके हेतु है।

लक्षण—सहज शशकीय नेत्रच्छद का जन्मत प्रगट होना और शेष भेदो मे पूर्वोक्त हेतुओ एव रोगो की विद्यमानता, और दोषज आक्षेप एव आक्लेदजनित अगघात मे रोग का सहसा प्रगट होना, पलको का आक्लेद से परिपूर्ण होना और उनमे भारीपन एव उद्वेष्टन का प्रतीत होना तथा रूक्ष द्रव्यो से लाभ प्रतीत होना प्रभृति लक्षणो की विद्यमानता, परतु इसके विपरीत रूक्ष आक्षेप मे रोग का क्रमश होना, पलक का कृश एव क्षीण प्रतीत होना आदि लक्षण निदानसाधक होते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूल हेतु को दूर करे। अस्तु, यदि इस रोग का प्रकाश पलक को काटने एव प्रमाण से अधिक सी देने या व्रणरोपण द्वारा पलक के सकुचित हो जाने से हुआ हो तो पलक की त्वचा को सीवन या अगूर आने के स्थान से पुन भेदन करके उसमे कोई मासरोहण मलहर, जैसे—मरहम अब्यज या बासलीकून रखे। यहाँ तक कि खाली स्थान तक मास उत्पन्न हो जाय। सहज शशकनेत्रत्व यद्यपि असाध्य माना गया है, तथापि उक्त उपाय लाभदायक हो सकता है। यदि रोग का हेतु अधिमास या मसक या अर्बुद या सोलुल आदि हो तो उक्त अवस्था मे उपयुक्त सशोधन के पश्चात् उनके विशिष्ट शस्त्रकर्म उपादेय होते है। अगघात एव आक्षेपजन्य शशकनेत्रत्व मे आक्षेप एव अगघात की चिकित्सा लाभकारी होती है। दोषज शशकनेत्रत्व मे शोधनोपरात

(१) जगारको किसी ठीकरीपर रखकर भून-पीसकर विकारी अगपर लगायें। इसी प्रकार (२) गरम पानी की भाफ देवें या (३) गुलरोगन मे रूई तर करके रखने से लाभ होता है। यदि रोग का हेतु पेशी का घातित होना हो तो (४) अका-किया या (५) कोल को कूट-छानकर विलायती मेंहदी के पत्ते के रस मे गूँधकर पलक पर लेप करते रहें। लाभदायक सिद्ध होगा।

ससृष्ट द्रव्योपचार—सशोधनोपरात अगवातज एव दोषज शशकनेत्रत्व मे (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ प्रतिदिन सेवन करते रहने से,लाभ होता है। विशेष शोधन के लिये (३) हब्ब इयारिज या (४) हब्ब शबयार यथाप्रमाण यथाविधि सेवन करने से उपकार होता है।

४—शिर्नाक

नाम—(अ०) शिर्नाक, (अ०) कञ्जविटओमा (Conjunctioma)।

हेतु और लक्षण—यह एक वसामय प्रवर्धन अर्थात् चर्बीला उभार है जो नेत्र के ऊपरी पलक मे उभरा हुआ मालूम होता है और ग्रन्थि (ओकदा) या अर्बुद की भाँति हिलाने से अपने स्थान से हिलता नही, अपितु त्वचा के नीचे चिपका हुआ होता है। ऊपरी पलक भारी और मोटी हो जाती है। अतएव उसे खोलने एव चेष्टा करने मे कठिनाई होती है और नेत्र सदा क्लिन्न (तर) रहता है। प्रकाश की ओर देखने से अश्रु बहते और छीके आती है। इस रोग का हेतु सान्द्र दोष होने से यह रोग प्राय बालको और स्निग्ध प्रकृतिवालो को और जिन्हें प्राय प्रसेक एव प्रतिश्याय विकार रहता हो, उनको हुआ करता है।

चिकित्सा—प्रथम कफज नेत्राभिष्यद की भाँति शोधन करे तदुपरात (१) पीला रसवत या (२) केसर हरे मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना गरम लेप करे या (३) मेथी ३ माशा पीसकर गुलरोगन मे मिलाकर विकारी स्थान के ऊपर लेप करे। शोधनोपरात प्रथम जरूर अस्फर फिर जरूर अग्बर और फिर वासली-कून अकबर नेत्र मे लगाये। गाढे, गरु एव आध्मानकारक पदार्थो से परहेज करे।

५—ओकदा

नाम—(अ०) ओक्द, (उ०) गिरह, (हि०, स०) ग्रन्थि, (अ०) मोलस्कम (Molluscum)।

हेतु और लक्षण—इस रोग मे नेत्र के ऊपरी पलक मे एक छोटी-सी श्वेत ग्रंथि या रसोली (अर्बुद)-सी बन जाती है और हिलाने से त्वचा के नीचे इधर-उधर गतिशील होती है। इसका हेतु भी सौदावी सान्द्र दोष होता है जिसका तरल भाग विलीनीभूत होकर शेष भाग कठोर हो जाता है।

चिकित्सा—(१) गरम पानी से धारना और (२) मोम को गुलरोगन मे पिघलाकर पतला लेप करना, इसी प्रकार (३) मेथी का लबाब या (४) अलसी का लबाब थोडे गुलरोगन मे मिलाकर लेप करना लाभकारी है। नरमी आ जाने के बाद सूजन उतारने के लिये मरहम दाखिलयून या किसी और सूजन उतारने-वाले मरहम का प्रयोग उचित है। यदि ग्रन्थि चिकित्सा साध्य न हो तो उक्त अवस्था मे सौदा के शोधनार्थ माउज्जुब्न पिलाये। उसके बाद सौदाविलयन लेप और पतले लेप लगायें।

पथ्यापथ्य—सान्द्र एव सौदाकारक आहार से परहेज करे।

६—शारमुन्कलिब व शारजाइद

नाम—(अ०) शारमुन्कलिब, (हि०, उ०) पडवाल, परवाल, (स०) (अ०) ट्रिकियासिस (Trichiasis)। (अ०) शारजाइद, (हि०), (स०) उपपक्ष्म, (अ०) डिस्टिकियासिस (Distichiasis)।

शारमुन्कलिब मे पलको के बाल अन्तर्वलित और उनकी पक्ति अनियमित होती है। शारजाइद मे पूर्वसिद्ध पक्ष्मपक्ति के समान एक और अतर्मुखी पक्ष्म-पक्ति भी होती है।

हेतु और लक्षण—इस रोग की उत्पत्ति के हेतु दूषित द्रवो से उत्पन्न होने-वाले दूषित बाष्प और ऐसे दूषित प्रकार के द्रवो की पलको मे विद्यमानता या किसी-किसी के मतसे स्रोतो के छिद्र का टेढा स्थित होना आदि है और हर एक भेद अर्थात् जाइद या मुन्कलिब के लक्षण प्रकट हैं। पोथकी, चिरज पक्ष्मप्रात शोथ आदि भी इसके हेतु हुआ करते है। इस रोग से दृष्टिदौर्बल्य, सिराजाल, नेत्रस्राव, नेत्रकण्डू और ललाई आदि उपद्रव भी उत्पन्न हो जाया करते है।

चिकित्सा—दूषित द्रवो के उत्सर्ग के लिये दोषपाचन और विरेचन (नेत्रा-भिष्यद चिकित्सा मे वर्णित) का उपयोग कराये। फिर प्रात काल अतरीफल उस्तूखुदूस ७ माशा और रात्रि से बडे हड का मुरब्बा एक नग खिलाते रहे। साव-धानीपूर्वक मोचने से बाल उखाडकर उनकी जड मे सोने की सूई से दाग देव

(दहनकर्म करे) और विदग्ध (मसीकृत) ताम्र को सात बार गरम करके हर बार हरे धनिये के रस मे बुझाकर महीन पीस लेवें और बाल उखाडने के उपरात उनकी जडो मे लगावें। अथवा नौशादर को बकरी के पित्त मे मिलाकर बाल के स्थान मे लगावे। कुहल गुलकुजद या कुहल काफूर प्रात-सायकाल नेत्र मे लगाना भी लाभकारी है। इस रोग मे अधिक काल तक औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

पथ्य—कम मसाले का बकरी के मांस का शरबा, मूग की दाल चपाती के साथ खाये। मूग की भुनी हुई खिचडी, फलो मे अनार, अगूर, सेब आदि भी खा सकते हैं।

अपथ्य—चटपटे, गरम और उत्तेजक आहार से परहेज करें। धूप मे अधिक चलना-फिरना और लिखना-पढना भी अहितकर है।

७—इन्तिशारुल् अह्दाब।

नाम—(अ०) इन्तिशारुल् अह्दाब, (उ०, हि०) पलको का झड जाना, (अ०) पाइलोसिस (Pilosis)। (अ०) सुकूतुल्अह्दाब, (उ०, हि०) पलको का गिर जाना, (अ०) मैडेरोसिस (Madarosis)।

हेतु—सरसाम और हुम्मयात मोहरिका से पोषणीय तत्त्व का कम हो जाना, पलको के स्रोतो का विस्तीर्ण वा सकुचित हो जाना, चेचक या क्षत अथवा जलने से स्रोतो का अवरुद्ध हो जाना, पलको मे शोथ, बालचर, व बादखोरा, पक्ष्मशात, सौदावी, पैत्तिक वा श्लैष्मिक दुष्ट दोष का पलको में सचय, जलोदर अथवा रक्त का पतला हो जाना आदि इस रोग के हेतु होते है।

लक्षण—पलको के बाल थोडे या सारे झड जाते है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूल हेतु को ध्यान मे रखकर चिकित्सा करे। अस्तु, (१) पौष्टिकता की कमी की दशा मे रोगी को पौष्टिक आहार देवें और शोणितोत्क्लेशक औषधियो का स्थानिक प्रयोग करे। यदि आक्लेद की अधिकता रोग का हेतु हो तो (२) कफविरेचन और हब्ब इयारिज से मस्तिष्क और शरीर की शुद्धि करें। दोषाकर्षक गण्डूष एव नस्य का प्रयोग कराये। (३) यदि बालो के पुष्टिदोष से यह रोग हुआ हो तो प्रथम शोधन करें, तदुपरात रोमसजनन सुर्मो का उपयोग करें और सशमनार्थ रोगन बनफशा या रोगन कद्दू का शिरोऽभ्यङ्ग करे। (४) प्याज का रस लगाने से पलको के बाल उग आते है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—सरसाम और हुम्मयात मोहरिक के पश्चात् होनेवाले दौर्बल्य मे (१) खमीरा मरवारीद ५ माशा या (२) खमीरा गावजवान अवरी जवाहरवाला ५ माशा या (३) खमीरा अवरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा या (४) आमले का मुरब्बा १ नग धोकर चाँदी का वर्क लपेट कर खिलाये और ऊपर से अर्क गावजवान १२ तोला या अर्क मुडी १२ तोला शर्बत उन्नाव २ तोला या शर्बत उस्तूखुद्दूस २ तोला या शर्बत सेव २ तोला मिलाकर पिलायें और कुहल मामीरान या कुहल लाजवर्द का उपयोग कराये। शेष दशाओ मे कारणानुसार उपयुक्त योग का प्रयोग कराये।

८—जर्बुल्अज्फान और जर्बुल्ऐन

नाम—(अ०) जर्बुल् अज्फान, जर्बुल्ऐन, हिक्कतुल्ऐन, खुशूनतुल्अज्फान, (हि०, उ०,) कुकुरे, रोहे, कुयुआ, (स०) पोथकी, (अं०) ट्रैकोमा (Trachoma)। ग्रेन्युलर लिड्स (Granulaı lıd)।

वक्तव्य—किसी-किसी ने जर्बुल्ऐन (हिक्कतुल्ऐन,) जर्बुल्अज्फान और खुशूनतुल्अज्फान को एक दूसरे से पृथक् रोग लिखा है, पर वस्तुत ये तीनो एक ही रोग के अलग-अलग नाम हैं। इस रोग मे नेत्र के पलको विशेषकर ऊपरी पलको के भीतरी स्तर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं, जिससे हर समय न्यूनाधिक खुजली होती रहती है और प्राय आँसू भी जारी रहते हैं।

भेद—प्राय इसके निम्न ३ भेद होते हैं—(१) जर्ब मुन्त्रसित (फैले हुए रोहे), इसमे दानो के सिवाय पलको के अन्दर किसी प्रकार खुरदरापन, कठोरता एव ललाई होती है। (२) जरब हसफी (राजिकावत्), इसमे दाने अत्यत सूक्ष्म और सफेदी लिये अन्हौरियो के सदृश होते हैं। (३) जरब तीनी या सूकूसीस (अजीर वत्), इसमे दाने अजीर के दानो के समान परस्पर चिपके हुए होते हैं। इनके नीचे का भाग अर्थात् जड गोल और ऊपर के सिरे तीक्ष्ण एव नोकदार होते हैं। स्व-रचित 'किताव फाखिर' नामक ग्रथ मे राजी ने तीनी के स्थान मे तिब्नी (घास के सदृश) लिखा है। किसी-किसी ने इसका एक चतुर्थ भेद जर्ब अस्वद भी वर्णन किया है। इसमे दानो की रगत स्याहीमाटाल होती है और उन पर खुरड बँधे हुए होते हैं। यह अधमतम भेद है। किसी-किसी ने जर्ब अस्वद के स्थान मे इसका चतुर्थ भेद 'वर्दी' लिखा है जिसमे दाने वर्द अर्थात् ओले के समान सफेद रग के होते हैं। वर्द को पाश्चात्य वैद्यक मे कॅलाझिऑन (Chalazıon) और सस्कृत मे लगण कहते हैं।

हेतु—क्षारीय कफ या उष्ण वाष्प और कभी-कभी पतला पित्त या विदग्ध दूषित सौदामय रक्त भी इसका हेतु होता है।

लक्षण—पलको मे खुजली, दाह एव सूजन होती है। अधिक मलने से जलस्राव होने लगता है। पलको का रग लाल हो जाता है और वे फूल जाती हैं। रोगी को प्रकाशासह्यता होती। प्रात.काल सोकर उठने पर नेत्र चिपके हुए होते हैं।

परिणाम—यह रोग यदि पुराना हो जाय तो शीघ्र वा देर मे दृष्टि को हानि पहुँचाता है। कभी-कभी नेत्रगोलक के ऊपर होनेवाले निरतर क्षोभ के कारण रक्तसचय हो जाता है जो बढकर तारका के ऊपर भी छा जाता है जिससे सिराजाल रोग उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—इस रोग मे नेत्र की रक्षा आवश्यकीय है। अस्तु, धूलिकण और तीव्र आँधी से नेत्र की रक्षा करें। इसी प्रकार तीव्र प्रकाश भी नेत्र के लिये अहितकर है। इससे बचते रहे। यदि आवश्यकता हो तो हरा या (गुल्वारी) ऐनक लगाकर तीव्र प्रकाश मे आ सकते हैं।

आमाशय और मस्तिष्क की शुद्धि करें। रक्त के प्रकोप की दशा मे सरारू सिरा का वेधन करें और कनपुटियो पर जोक लगवाये। शेष दोषो की प्रगल्भता की दशा मे दोषपाचन औषध (मुजिज) देकर शोधन करे। मलावरोध न होने देवें। नेत्र मे लगाने के लिये दोषविलयन और नेत्र की विशिष्ट औषधियो का उपयोग करें।

चिकित्साक्रम—आमाशय और मस्तिष्क की शुद्धि के लिये रात्रि मे सोते समय अतरीफल शाहतरा ७ माशा, अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला और शर्बत उन्नाव २ तोला के साथ खिलायें। नेत्र की शुद्धि के अर्थ अधकुटा त्रिफला १।। तोला रात्रि से पाव भर जल मे भिगोयें और प्रात काल उस पानी से नेत्र को धोये। पिडकाओ को नष्ट करने के लिये पलको को उलटकर पिडकाओ (दानो) के ऊपर मिश्री की डली लेकर रगड दिया करे। नौसादर, सातर फारसी, बबूल का गोद प्रत्येक एक माशा कूट-छानकर सिरका मे पीसकर छाँहमे सुखाकर सुर्मा की भाँति नेत्र मे लगाये अथवा शियाफ तूतिया (नवीन) पलको को उलटकर दानो पर लगायें। कुहल काफूर, सुर्मा जाफरानी, अक्सीरजरब, शियाफ जरब और वरूद काफूरी मे से किसी एक का लगाना भी अतीव गुणकारी है।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार देवे, जैसे—बकरी का शूरबा, कद्दू, तुरई, चुकदर और पालक आदि के शाक के साथ अथवा अरहर और मूँग की दाल के साथ गेहूँ की चपाती देवे। फलो मे अगूर और मीठा अनार दिया जा सकता है।

अपथ्य—आहारत समस्त उष्ण, उत्तेजक एव आध्मानकारक पदार्थसे परहेज

करें। दही, छाछ जैसे अम्ल आहार एव पेय से भी परहेज करे। नेत्र को धोये और उसे धलि-कण एव तीव्र प्रकाश से सुरक्षित रखे।

९--सुलाक़।

नाम--(अ०) सुलाक, रमदजफ्नी, (उ०, हि०) बाम्हनी, (स०) पक्ष्मशात, (अ०) ब्लीफॅरायटीज (Blepharitis)।

इस रोग मे पलको के किनारे (प्रान्त) मोटे एव लाल हो जाते है और उनमे खुजली हुआ करती है। फलत धीरे-धीरे पलको के बाल गिर जाते हैं और उनके किनारे क्षतयुक्त हो जाते है। इस रोग को बगलगद् भी कहते है।

हेतु--एक प्रकार का नमकीन गाढा दूषित एव अक्काल दोष इसका हेतुभूत होता है जो नेत्राभिष्यद और तीक्ष्ण रक्तमय बाष्प के कारण प्रकाश मे आता है। अश्रुग्रन्थियो का शोथ, नासाप्रणाली का सकोच और धूएँ आदि से भी यह रोग हो जाता हे।

लक्षण--पलको के किनारे लाल शोथयुक्त एव व्रणयुक्त हो जाते है। नेत्र से स्राव होता रहता है। पलको के बाल झड जाते हैं। दृष्टि विकृत हो जाती है। प्रात काल उठते समय पलक परस्पर चिपके होते हैं।

चिकित्सा--पलको को प्रति दिन प्रात काल उष्ण जल से धोकर स्वच्छ कर लिया करे। सुमाक और पीली हडका छिलका प्रत्येक १ तोला, अर्क गुलाब ६ तोला मे रात्रि मे भिगोकर प्रात काल छानकर उसमे कपडा भिगोकर पलक के ऊपर रखवाये और पॉच बूँद नेत्र के भीतर आश्च्योतन करें (टपकाये)। कुलफा की हरी पत्ती ६ माशा पानी मे पीसकर १ तोला, गुलरोगन मिलाकर सोते समय पलक के ऊपर लेप करें।

यदि रोग पुराना हो तो दोषशोधनोपरात प्रात काल अतरीफल उस्तूखुदूस ५ माशा और सोते समय अतरीफल जमानी ७ माशा खिलाये और सफेदा जस्त १ माशा, कपूर १ माशा, नीम का हरा कोपल ७ नग, आमले का स्वरस ४ माशा--सबको पीसकर जल से २१ बार धोये हुए ९ माशा गोघृत को उसमे मिलाकर प्रात -सायकाल नेत्र के भीतर और पलक के ऊपर लगाये।

पथ्य--बकरी के सालन, पालक, चुकदर, शलगम आदि के शाक के साथ गेहूँ की चपाती खायें। मूँग और अरहर की दाल भी खा सकते है। अगूर, सेव और नासपाती भी दी जा सकती है।

अपथ्य--नेत्र को तीव्र प्रकाश, धूये और धूल-कण आदि से सुरक्षित रखे।

अधिक उष्ण और मसाले युक्त चटपटी वस्तुओ, आध्मानकारक गौर वादी आहारो से परहेज करे। दूध, दही और छाछ भी अहितकर है।

१०--कमलुल्अज्फान

नाम--(अ०) कमलुल्अज्फान, (उ०, हि०) पलको मे जूएँ पडना; (अ०) ट्रा एसिस (Trnsis)।

हेतु--मलिनता, मुख और नेत्र न धोना, कफज दूषित द्रवो का पलको मे सचय आदि इसके हेतु हैं।

चिकित्सा--शुद्धता और स्वच्छता विशेषत मुख और पलको को धोकर स्वच्छ रखना और (१) नमक या (२) सोआ के वीज जल मे उबालकर उससे पलको को धोना, (३) एलुआ ३ माशा या (४) गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना पीसकर पलको पर लेप करना लाभकारी हैं। (५) ३ माशा सफेद फिटकिरी वारीक पीसकर पलको पर मलने से भी लाभ होता है।

११--शईर

नाम--(अ०) शईर (उ०, हि०) बिलनी, अजनहारी, गुहाजनी, गुहेरी, (स०) अञ्जननामिका , (अ०) हार्डिओलम् (Hardıolum), स्टाई (Stye)।

इस रोग मे ऊपर या नीचे के पलक के किनारे पर जौ (शईर) के वरावर लवोत्तर शोथ या फुसी निकल आती है। अगरेजी हार्डिओलम भी जौ (शईर) का पर्यायवाचक शब्द है।

हेतु--सौदाजन्य साद्र रक्त इस रोग का प्रधान हेतु है जिसका कारण आहार-दोष, अजीर्ण वा कुपचन या रक्तदोष होता है।

लक्षण--पलक की जड मे प्रथम खुजली एव ललाई होती है। इसके वाद वहाँ पर फुसी वन जाती है जिसमे साधारणतया पीव जड जाती है और जिसका मुँह पलक के किनारे पर होता है। यह सख्या मे एक और कभी अधिक भी होती है। कभी एक के वाद दूसरी निकलती रहती है और इसकी सख्या प्राय सात तक पहुँचती हे। पलक मे वेदना और शोथ होता हे।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रक्तके प्रकोप की दशामे सरारू सिराका वेधन कराये या प्रकृत्यनुसार विरेचन एव हब्ब इयारिज से उसका शोधन करें और (१) हलदी

या (२) लौंग या (३) कालीमिर्च या (४) रसवत या (५) एलुआ को स्वच्छ जल या अर्क गुलाव या हरी कासनी, मकोय या धनिये के स्वरस मे घिसकर गुहेरी पर लगायें। (६) खजूर की गुठली के चूर्ण को गुलरोगन के साथ लेप करने से भी उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—जब गुहेरी मे पीव पड जाय तब शस्त्रकर्म द्वारा या जब वह पककर फट जाय तब उसको स्वच्छ करके उसपर यह औषधि लगायें—गुलनार, रसवत, दम्मुल्अख्वैन, सफेद सुर्मा, सफेदा समभाग लेकर खूब बारीक पीसकर रेशमी कपडे मे छानकर गुहेरी पर लगायें अथवा जरूर अस्फर या मरहम दाखिलयून लगायें। जब बार-बार गुहेरी निकले तो रोगी को विरेचन देकर कुछ दिन तक अर्क मुसफ्फा खून ७ तोला, शर्बत उन्नाव २ तोला मिलाकर प्रात -सायकाल पिलाया करें अथवा निम्न योग देवें—बनफ्शा, उस्तूखुद्दूस, मुण्डी, चिरायता, पित्तपापडा प्रत्येक ५ माशा—सबको भिगो और मल-छानकर २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर प्रात -सायकाल पिलाया करें। साद्र और वाष्पकारक आहार से परहेज करायें। यदि नेत्र मे ललाई एव वेदना उत्पन्न हो जाय, तो नेत्राभिष्यदवत् चिकित्सा करें।

कर्णरोगाध्याय (अम्राज़ुल्उज़्न) ३

नाम—(अ०) अम्राजुल्उज्न ; (फा०) अम्राजे गोश, (उ०, हि०) कान की बीमारियाँ (रोग), (स०) कर्णरोग, (अ०) डिजीजेज ऑफ दी ईयर (Diseases of the ear) ।

कर्ण की स्वास्थ्यरक्षा

कर्ण मे मलसचय न होने पाये, इसका सदा ध्यान रखना चाहिये । इस हेतु आठवे-दसवे दिन कानो का मैल साफ कराते रहना चाहिये । परन्तु मैल निकलवाने के लिए नुकीले एव तीक्ष्ण शस्त्र का प्रयोग कदापि न करना चाहिए । कान को शीतल वायु के झोको से और बचाना चाहिये । स्नान करते समय इस बात की सावधानी रखनी चाहिये कि पानी कान के भीतर न चला जाय और उसके भीतर रह न जाय, इसलिये स्नान के बाद कान को रूई के फाहा से साफ कर लेना चाहिये । सप्ताह मे एक बार कडुए बादाम का तेल कान मे डालने से भी उसकी रक्षा होती है । इसके अतिरिक्त कान मे शोथ एव पिडकाओ की उत्पत्ति से उसकी रक्षा करना आवश्यकीय है । यदि उनके होने की आशका हो तो शियाफ मामीसा सिरका मे घोलकर कान मे टपकाये । कुपचन एव इम्तिलाऽ से और विशेषत ऐसी दशा मे सोने से बचे । अधिक बोलना, बहुत ऊँचा शब्द सुनना, तीव्र चेष्टा करना, अधिक स्नान, नित्य मादक द्रव्य सेवन करना, ये सारे कर्णाहितकर उपाय हैं । कान मे डालने वाली औषधि का उष्ण होना जरूरी है ।

१—वज्उल्उज्न

नाम—(अ०) वज्उल्उज्न, (फा०) दर्दे गोश, (उ०, हि०) कान का दर्द, (स०) कर्णशूल, (अ०) ओटॅल्जिया (Otalgia) ।

हेतु—(१) विप्रकृति (उष्ण या शीत दोष), (२) शोथ, (३) पिडका, (४) कान मे व्रण आदि हो जाना (तफर्रुक इत्तिसाल), (५) कर्णगत शल्य, (६) शीत, (७) किसी दाँत का सडा-गला हो जाना और (८) आमवात या सधिवात आदि रोग ।

वक्तव्य—जैसा कि वारवार वतलाया जा चुका है, विकृति के ये दो भेद होते हैं—(१) दोपज और (२) अदोपज । पुन इनमे से प्रत्येक के ये चार

अवातर भेद होते है अर्थात् अदोषज (साजिज) उष्ण होती है या शीतल अथवा स्निग्ध वा रूक्ष। इसी प्रकार दोषज विप्रकृति भी रक्तज या पित्तज अथवा कफज वा सौदावी चार प्रकार की होती है। अस्तु, हेतु भेद से कर्णशूल अनेक प्रकार का होता है।

लक्षण—कान मे तीव्र वेदना होती है जिसके साथ टीसें होती है। यदि गर्मी से हो तो कान लाल होता है। यदि गर्मी अदोषज हो तो दर्द के साथ टीसें एव भारीपन नहीं होता। दोषज होने पर यह दोनो लक्षण पाये जाते है। यदि सर्दी से हो तो सिर मे भारीपन और दर्द होता है। यदि कफ दोष इसका हेतु हो तो अतिनिद्रा एव नथुनो की तरी भी पाई जाती है। यदि शोथ, पिडका या व्रण इसका हेतु हो, तो देखने पर ये दृष्टिगत होगे और कान मे ललाई एव जलन होगी।

चिकित्सासूत्र—कर्णशूलके समस्त भेदो मे गरम पानी का परिषेक (तरेडा) सेक और वफारा लाभकारी है। इस रोग मे हर प्रकार के मास से परहेज अनिवार्य है। यथासम्भव स्वापजनन द्रव्यो (अफीम) आदि सुन्नता उत्पन्न करनेवाली वस्तुओ से परहेज करें। आवश्यकता पडने पर यदि अफीम का प्रयोग अपेक्षित हो तो उसे दूध मे घोलकर डालें। अफीम की अपेक्षया खाकस्तर अफीम अधिक गुणकारी है। सर्वप्रथम दर्द कम करने का उपाय करें।

चिकित्सा क्रम—यदि दर्द तीव्र हो तो प्रथम उसे कम करनेका उपाय करें। दर्द कम करने के लिए निम्नलिखित दो योग गुणकारी है—(१) अफीम २ रत्ती, कपूर ४ रत्ती, दोनो को स्त्री, भेड या वकरी के दूध मे घोलकर कान मे टपकायें। (२) कडवे वादाम का तेल ५ बूंद, नीम का तेल ५ बूंद, सुखदर्शन के पत्ते का रस ५ बूंद डालना भी लाभकारी होता है।

जव दर्द कुछ कम हो जाय तव मूल हेतु का पता लगाकर उसकी चिकित्सा करे। अस्तु, यदि कान मे फुसी या घाव हो तो उसका उपचार करें (कर्णव्रण देख)। यदि कर्णगूथ या कर्णशल्य इसका हेतु हो तो उसका उपचार (जिसका वर्णन यथास्थान किया गया है) करें। यदि सडे-गले दॉत से हो तो उसे निकाल देवें। यदि कान मे पानी पडने के कारण हो तो सलाई पर रूई लगाकर कान मे फिरायें और उसके वाद कडवे वादाम का तेल डाले। यदि कान से कीडे पडने से दर्द हो तो कपूर १ माशा, स्पिरिट ६ माशा मे विलीन करके दो-तीन बूंद कान मे डाले और दूसरे दिन कान को साफ कर लेवें।

यदि सादा गरमी से कान मे दर्द हो तो यह लेप लगाने से लाभ होता है—लाल और सफेद वदन, छिले हुए काहू के वीज प्रत्येक ३ माशा, सवको हरे धनिये

के रस और थोडा अर्क गुलाब मे पीसकर कान के चारो ओर लेप करें। यदि गरमी अधिक हो तो १ माशा कपूर भी योजित करे। उक्त अवस्था मे निम्न योग पिलाना लाभकारी है--३ माशा बिहीदाने का लबाब, ५ दाने उन्नाब का शीरा, ३ माशा तरबूज के बीज के मग्ज का शीरा जल मे निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर पिलाये। गरम, खुश्क पदार्थो एव अतिचेष्टा से परहेज करे। शीतल आहार देवे।

यदि रक्त पित्त के प्रकोप से कान मे दर्द हो तो निम्नयोग देवे---इमली ३ तोला, आलूबोखारा ७ दाना, गुलबनफ्शा, नीलूफर, खतमी प्रत्येक ४ तोला, उन्नाव ५ दाना, लिसोडा ११ दाना सबको अर्क मकोय और अर्क गावजबान प्रत्येक १० तोला मे भिगोकर शर्बत बनफ्शा या शर्बत नीलूफर २ तोला मिलाकर पिलाये।

हर प्रकार की गरमी के कर्णशल मे इस बफारे का प्रयोग करना चाहिए---गुलाब का फूल, खैरू के फूल, धनिया, काहू के बीज, पोस्ते की डोडी, हरा मकोय, छिला हुआ जौ प्रत्येक १ तोला, सबको जल मे उबाल कर कान मे बफारा लेवें तथा निम्न तेल कान मे डाले---गुलरोगन ४ तोला और मीठे बादाम का तेल २ तोला पुराना तीक्ष्ण सिरका १४ तोला मे मिलाकर पकाये। जब सिरका जलकर तेल शेष रह जाय, तब उतारकर रखे। यह तेल कान मे डाले। आहार मे यवमड, कद्दू, कुलफा आदि अकेले या मुर्गी के बच्चे के साथ पकाकर उपयोग करें।

यदि सादा सर्दी से कान मे दर्द हो तो निम्न औषधियो का उपयोग करे--शीतल एव वायुजन्य कर्णशूलमे लाभकारी क्वाथयोग---उस्तूखुद्दूस,गुलबनफ्शा, अनीसूँ प्रत्येक ५ माशा, सौफ ७ माशा सबको उबालकर गुलकद असली या मधु २ तोला मिलाकर पिलायें। वाष्पस्वेद (इन्किबाब) जो शीतल एव वायुजन्य कर्णशूल मे लाभकारी है--गुलबाबूना, अफसतीन, इकलीलुल्मलिक प्रत्येक १ तोला आध सेर गोदुग्ध मे उबालकर बफारा लेवे। प्रलेपयोग जो शीतल कर्णशूल मे प्रयुक्त होता है---रेंड की जड और सोठ प्रत्येक ३ माशा, अफीम १ माशा सबको जल मे पीसकर कुनकुना गरम करके कान मे चारो ओर लेप करे। सेक जो शीतल एव वायुजन्य कर्णशूल मे लाभकारी है---गेहूँ की भूसी और बाजरा प्रत्येक १ तोला, ननक ६ माशा पोटली मे बाँधकर और गरम करके कान के चतुर्दिक टकोर करे।

यदि सौदा या कफ के प्रकोप से कान मे दर्द हो तो निम्न औषधियो का उपयोग करे---वाष्पस्वेद (इन्किबाब) जो सोदा एव कफज कर्णशूल मे लाभकारी हे--खतमी के फल, बाबूना के फूल, इक्लीलुल्मलिक, अलसी, कनौचाके बीज, पुदीना, मर्जञ्जोश, हसराज प्रत्येक ६ माशा, जूफाखुश्क ३ माशा, सबको जल मे उबालकर यथाविधि बफारा लेवें। रोगन (तेल) जो दोषज शीतल कर्णशूल को नष्ट

करता है—हरी मूली का रस ४ तोला, तिल का तेल १० तोला मिलाकर पकावे। जब रस जलकर तेल शेष रह जाय, तब छानकर रखें और आवश्यकतानुसार कान मे डालें। परिषेक (नतूल) जो दोषज शीतल कर्ण-शूल मे लाभकारी है—बाबूना, खतमी, पुदीना समभाग लेकर उबालकर कुनकुना गरम कानपर धारे। कतूर जो तीव्र कर्णशूल मे गुणकारी है—जुदवेदस्तर ४ चावल, अफीम की भस्म १ रत्ती, बाबूना के तेल मे घोलकर कान मे टपकाये।

पथ्य—मूंग या अरहर की दाल, कुलफा, तुरई, कद्दू, करेला, बकरी का शूरबा, चपाती आदि शीघ्रपाकी आहार सेवन करें।

अपथ्य—अधिक शीतल वायु से परहेज करायें। आलू, कचालू, उड़द की दाल, लहसुन, प्याज आदि गरिष्ठ वस्तुयें नहीं खिलावे।

२—वस्खुल्उज्न

नाम—(अ०) वस्खुल्उज्न, मुह्एवस्खी, (उ०, हि०) कान का मैल, कान मे मैल भर जाना, (स०) कर्णवर्च, कर्णगूथ (क), (अ०) वैक्स इन दी ईयर (Wax in the ear)।

हेतु—धूलि-कण, कान की स्वच्छता का ध्यान न रखना, प्रसेक और प्रतिश्याय आदि।

लक्षण—कान मे भारीपन एव कण्डू प्रतीत होता है। विभिन्न प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं और ऊँचा सुनाई देने लगता है।

चिकित्सा—सुहाता गरम किये हुए कडवे बादाम के तेल के कुछ बूँद प्रतिदिन रात्रि मे कुछ दिन तक कान मे डालें और प्रात काल केवल उष्ण जल का बफारा देवें या उष्ण जल की पिचकारी करे। इस प्रकार जब मैल नरम हो जाय तब फिर किसी चतुर कानमैलिये से सावधानी पूर्वक मैल निकलवा देवें। गरम पानी मे किंचित् सनलाइट साबुन घोलकर कान मे उसकी पिचकारी कराने से भी मैल निकल जाती है। यदि प्रसेक एव प्रतिश्याय हो तो उसकी चिकित्सा करें।

३—कजाउल्उज्न

नाम—(अ०) कजाउल्उज्न, (उ०, हि०) कान मे कुछ पड जाना, (स०) कर्णशल्य, (अ०) फॉरेन बॉडी इन दी ईयर (Foreign body in the ear)।

कभी मच्छड, च्यूँटी आदि जैसे सूक्ष्म जीव और कभी बालको के खेल-कूद की दशा मे कोई ककड, मटर या गेहूँ का दाना, रत्ती, छोटी कौडी या पेंसिल का टुकडा कान मे पड जाता है या कान मे पारा गिर जाता है। कभी कान मे कीडे पड जाने से भी इसी प्रकार का कष्ट अनुभव होता है।

लक्षण--कान मे दर्द होता है। कान के भीतर कोई वस्तु प्रतीत होती है। कीडे या किसी जीव के पड जाने के कारण हो तो कान के भीतर से दुर्गंध आती है। कभी-कभी स्वयमेव या पिचकारी करने से कीडे निकलते हैं। कभी-कभी कान से पीप और रक्त मिला हुआ निकलता है।

चिकित्सा—यदि कान मे प्रविष्ट हुई वस्तु दिखाई देती हो तो यथासभव सलाई या मोचने से उसे धीरे-धीरे निकाल लेवे। यदि वह दिखाई न देती हो तो खाली पिचकारी कान के छिद्र मे रखकर उस वस्तु को खीचे। यदि इस प्रकार सफलता नही मिले तो कुनकुना पानी की पिचकारी करे। इतने पर भी नही निकले तो कान मे शहद के कुछ बिदु डाल देवे। एक-दो दिन मे वह वस्तु निकल आयेगी। यदि कान मे पानी चला गया हो तो तिल का तेल कुनकुना करके कान मे बूँद-बूँद करके डाले अथवा गेहूँ या सौफ के डठल का एक सिरा कान मे डालकर दूसरे सिरे के द्वारा पानी को चस लेवे या सलाई पर रूई लगाकर कान मे डाले और फिर रूई को फेक देवें। इसी प्रकार दो-तीन बार करे अथवा खाली पिचकारी से पानी को खीच लेवे।

यदि ककडी कान मे प्रविष्ट हुई हो तो दूध को कुनकुना गरम करके कान मे डाले। यदि प्रविष्ट होने वाली वस्तु अनाज की किस्म से हो तो तिल का तेल या जैतून का तेल कुनकुना करके डाले। पुन छीक लाने की औषधि सूँघे। जब छीक आने लगे तब मुख और नाक बन्द कर लेवे, जिसमे कान मे छीक का जोर पडकर वह वस्तु निकल पडे। यदि कान के भीतर गरम वायु प्रविष्ट हुई हो अथवा उसमे कृमि उत्पन्न हो गये हो तो करेला का रस अथवा एलुआ पानी मे घोलकर कान के भीतर टपकाये। बाद मे कुनकुना पानी से पिचकारी करे। कब्ज होने पर अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा सेवन करायें।

—०—

४--कर्हतुल्उज्न सैलानूल्उज्न

नाम—(अ०) कर्हतुल्उज्न, सैलानुल्उज्न, (फा०) कर्हा गोश, (उ०, हि०) कान बहना, (स०) कर्णपाक, कर्णस्राव, (अ०) ओटोरिया (Otorrhoea)। पुराना होने पर इसे 'नासूरुल्उज्न' और पाश्चात्य वैद्यक मे

'क्रॉनिक ओटोरिया (Chronic otorrhoea) कहते हैं। इस रोग मे कान की बाहरी नाली की झिल्ली मे सूजन होकर पीव आती है।

हेतु—रक्त प्रकोप या रक्तदुष्टि के कारण प्रथम कान मे सूजन होती है या कोई फुसी उत्पन्न होती है। जब यह सूजन या फुन्सी दब नहीं जाती, प्रत्युत् पककर फूट जाती है, तब इससे व्रण बन जाता है। कण्ठमाला, सर्दी और शिशुओ मे दाँत निकलने पर भी यह रोग हो जाता है। प्राय यह रोग शिशुओ को होता है। कभी चेचक, कण्ठशोथ (खुनाक) लाल ज्वर आदि सक्रामक रोगो से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—कान से न्यूनाधिक पीव बहती रहती है। कान मे साधारण दर्द, खुजली और भारीपन प्रतीत होता है। प्रारभ मे सूक्ष्म ज्वर भी हो जाता है। कान का छिद्र लाल एव शोथयुक्त हो जाता है। कभी श्रवणविकार भी हो जाता है। यदि घाव कान के भीतरी भाग मे बढ जाय तो दौरानेसर विकार अवश्य होता है। कभी पीप कान के पिछले अस्थिप्रवर्धन मे प्रविष्ट हो जाती है जिससे भयानक प्रकार का शोथ या फोडा उत्पन्न हो जाता है। यदि मस्तिष्क मे प्रविष्ट हो जाय तो उसका परिणाम सरसाम होता है। रोहिणी (खुनाक ववाई), चेचक, लाल ज्वर आदि से यह रोग होने पर इससे पूर्व ये रोग होते हैं।

चिकित्सा—पहले नीम के पत्ते २ तोला और शहद १ तोला पानी मे उबाल-कर इससे कान मे बफारा देवें। पुन नीम के पत्ते १ तोला, सौंफ १ तोला, शहद २ तोला, जल १० तोला मे उबाल-छानकर उससे कुनकुना गरम पिचकारी करें अथवा नीमकी पत्ती का रस १० तोला या नीम का तेल २ तोला, शहद २ तोला मे मिलाकर कान मे पिचकारी करें और कान धोने के बाद अजरूत ३ माशा २ तोला शहद मे मिलाकर इसमे बत्ती लथ करके कान मे रखे। जब ३-४ दिन मे इन उपायो से कान भली भाँति शुद्ध हो जाय, तब आक्लेद सुखाने के लिये कपडे की बारीक बत्ती बनाकर शहद से आप्लुत करके बारीक पिसी हुई फिटकिरी या सुहागा उस पर छिडककर कान मे रखे और प्रात सायकाल बदलते रहे। अथवा पीली कौडी जलाकर उसकी राख बारीक पीसकर नलकी के द्वारा कान मे फूँके। प्रात-सायकाल अतरीफल उस्तूखुद्दूस ५ माशा या अतरीफल जमानी या कुर्स जमानी ७ टिकिया खिलाकर अर्क सौंफ १२ तोला मे शर्बत बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिलायें। आराम होने के बाद रोगन बाबूना कुनकुना गरम करके कान मे टपकायें। कब्ज हो तो कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि मे सोते समय कुनकुना पानी से सप्ताह मे दो बार देवे।

पथ्यापथ्य—कर्णशूलवत्।

५—वरमुल्उज्न वरमगोश

नाम—(अ०) वरमुल्उज्न, वज्उल्उज्नहार वरमी, वज्उल्उज्न बुसूरी, (फा०) वरमगोश, (उ० हि०) कान की सूजन, (स०) कर्णशोथ, (अ०) ओटायटिस मीडिया (Otitis Media)। चिरकारी कर्णशोथ को (यूनानी वैद्यक मे 'वज्उल्उज्न बारिद वरमी' और पाश्चात्य वैद्यक मे क्रॉनिक ओटायटिस (Otitis) कहते है।

वर्णन—इस रोग मे मध्य एव अन्त कर्ण और कान की झिल्ली मे शोथ हो जाता है। कभी कर्णगुहा मे एक वा अनेक पिडकाये उत्पन्न हो जाती है।

हेतु—कान मे क्षोभ होना, शीत लगना, कान मे जोर से पिचकारी करना, लाल ज्वर, आमवात, वातरक्त, कण्ठमाला, प्रकृतिविकार (दोषवैषम्य) आदि।

लक्षण—कान मे भारीपन, जलन, दर्द एव टीस होती है और उसके भीतर लाली एव सूजन हो जाती है। रोगी विभिन्न प्रकार के शब्द सुनता है तथा ज्वर से आक्रात हो जाता है। यदि दर्द तीव्र हो तो कभी आक्षेप या प्रलाप भी हो जाता हे। नन्हे शिशु इस रोग से पीडित होने पर प्राय रोते रहते और कान मे ऊँगली डालते है।

परिणाम और उपद्रव—प्राय यह रोग अच्छा हो जाता है। पर कभी सरसाम मे परिणत होकर भयकर रूप ग्रहण कर लेता है। कभी इससे अर्दित रोग हो जाता है। शिशुओ मे उग्ररूप धारण करने पर आक्षेप हो जाता है और प्राय मृत्यु उपस्थित होती है।

चिकित्सा—तीव्र रोग मे कान के पीछ जोक लगवाये और यह तबरीद का नुस्खा पिलाये—१० तोला अर्क मकोय मे ३ माशा बिहीदाने का लबाब, ५ दाने उन्नाब का शीरा, ३ माशा काहू के बीज का शीरा और ५ माशे सूखे धनिये का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाये। तीन दिन इसका उपयोग करके गुलबनफशा, गावजबान, उस्तूखुद्दूस, पित्तपापडा, मकोय प्रत्येक ६ माशा, उन्नाब ५ दाना रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये। चार-पॉच दिन पिलाकर इसीमे सनाय मक्की ७ माशा और पोस्त अमलतास ४ तोला मिलाकर विरेचन देवे और विरेचन के पश्चात् तबरीद का नुस्खा पिलाये तथा गुलरोगन या बादाम का तेल कुनकुना गरम करके कान मे टपकाये, या मुर्गी के अडे की सफेदी समभाग गुलरोगन मिलाकर दो-चार बिंदु कुनकुना गरम करके कान मे टपकायें या शियाफ अब्यज को स्त्री के दूध या अडे की सफदी मे घिसकर कुनकुना गरम करके कान मे टपकाये।

या मुर्गी के अण्डे की सफेदी मे समभाग गुलरोगन मिलाकर दो-चार बिन्दु कुनकुना गरम करके कान मे टपकायें या शियाफ अव्यज को स्त्री के दूध या अण्डे की सफेदी मे घिसकर कुनकुना गरम करके कान मे टपकाये।

प्रलेप—बनफशा, रसवत, खतमी के पत्र, मकोय, लाल चदन, अमलतास का गूदा सबको बराबर-बराबर लेकर हरे मकोय के रस मे पीसकर कान के चारो ओर कुनकुना लेप करें।

चिरज कर्णशोथ मे दोषपाचनोपरात हब्ब इयारिज से शोधन करें। पुरानी सूजन को उतारने के लिये उशक को गुलरोगन मे घोलकर कुनकुना गरम करके कान मे टपकायें या मुर्गी के अडे की सफेदी को गुलरोगन मे मिलाकर कुनकुना कान मे टपकायें। दर्द कम करने और सूजन उतारने के लिये यह लेप गुणकारी एव कृतप्रयोग है—खतमी के बीज, गुलबाबूना, गेरू प्रत्येक ६ माशा, अफीम, केसर, प्रत्येक १ माशा, हरे मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना (गरम) लेप करें। ओषधि जो सूजन न उतरने की दशा मे कर्णशोफ को पकाने ओर उसे फाडने के लिये उपादेय एव कृतप्रयोग है—सफेद प्याज का रस, मेथी का लबाब और अलसी का लबाब परस्पर मिलाकर कुनकुना गरम करके कान मे टपकायें।

पथ्यापथ्य—कर्णशूलवत्।

६—हिक्कतुल्‌उज्न, कुलाउल्‌उज्न

नाम—(अ०) हिक्कतुल्‌उज्न, कुलाउल् (बुसूरुल्) उज्न, (उ०, हि०) कान की खुजली, कान की फुसियाँ, (स०) कर्णकण्डू, कर्णगत पामा, (अ०) प्राइटिस ऑरियम् (Pruritis Aurium), एक्जेमा ऑफ दी ईअर (Eczema of the ear)।

वर्णन एवं लक्षण—इस रोग मे कान के भीतर या बाहर इतनी खुजली होती है कि रोगी का हाथ सदा कान ही की ओर रहता हे और जितना अधिक खुजलाये, कष्ट उत्तरोत्तर बढता जाता है। कभी-कभी कान के भीतर या बाहर छोटी-छोटी फुसियाँ उत्पन्न होकर खुजली, जलन एव दर्द उत्पन्न करती हैं।

हेतु—किसी तीक्ष्ण एव क्षारीय तत्त्व का अन्तर्भरण वा प्रवृत्त होना, कान मे मल का सचय होना मकडी आदि का सोते समय कान के ऊपर फिर जाना।

चिकित्सा—प्रथम कान को मलादि से शुद्ध कराये। पुन यदि केवल खुजली हो तो ३ माशा अफसतीन को १ तोला सिरका मे उबाल-छानकर कुछ बूँद कान मे टपकाये या कडवे बादाम का तेल ५ बूँद, पाँच बूद सिरका मे मिलाकर कान मे डाले। यदि कान मे फुसियाँ भी हो तो २ तोला नीम के पत्तो को पाव भर पानी मे उबालकर कुनकुना पिचकारी करे और मरहम काफूर मे बत्ती लथ करके कान

मे रखें। पीने के लिये—अतरीफल शाहतरा ७ माशा, अर्क शाहतरा १२ तोला और शर्बत उन्नाब २ तोला के साथ देवें। यदि कब्ज हो तो अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या हब्ब कब्जकुशा २ गोली देवे। यदि कान पर मकडी मली गई हो और उसके कारण खुजली या फुसी वा विस्फोट हो गये हो तो अमचूर को पानी मे पीसकर कान के ऊपर लेप करने से लाभ होता है।

पथ्यापथ्य—कर्णशूलवत्।

७—दीदानुल्उज्न

नाम—(अ०) दीदानुल्उज्न, (फा०) दीदान गोश, (उ०, हि०) कान मे कीडे पडना, (स०) क्रि (कृ) मिकर्ण (क); (अ०) वर्म्स (मैगॉट्स) इन दी ईअर (Worms maggots in the ear)।

हेतु और लक्षण—कभी व्रण आदि के कारण कान मे क्रिमि उत्पन्न हो जाते है। उक्त अवस्था मे कान मे खुजली एव गुदगुदी होती है। कभी कृमि भी निकलते है।

चिकित्सा—(१) एलुआ ओर सकमूनिया गरम पानी या सिरका मे घोल-कर अथवा (२) नीम की हरी पत्ती का रस, मूली का रस और प्याज का रस प्रत्येक ७ माशा मे ३ माशा सकमूनिया घोलकर दो-चार बूँद कान मे टपका`। इसी प्रकार (३) स्त्री के दूध मे नौसादर घोलकर या (४) शरीफा की पत्ती का रस या (५) आडू की पत्ती का रस या (६) पुदीना का रस या (७) तारपीन का तेल या (८) मिट्टी का तेल कान मे डालने से कीडे निकल जाते हैं।

८—इन्फेजारुल्उज्न

नाम—(अ०) इन्फेजारुल्उज्न, (उ०, हि०) कान से खून बहना; (स०) कर्णगतरक्तस्राव, (अ०) ओटोर्‌हेजिया (Otorrhagia)।

हेतु—रक्तसचय या अभिघात के कारण किसी रग का मुँह खुल जाना, इसका हेतु है। कभी बोहरान या प्रसेकाधिक्य के कारण भी कान से रक्त जारी हो जाता है।

चिकित्सा—बोहरानी मे जब तक मूर्च्छा या शक्ति-ह्रास का भय न हो रक्तस्राव बद नही करना चाहिये। आघात-प्रतिघात-जन्य कर्णगत रक्तस्राव बुकरात के मत से घातक है। इनके अतिरिक्त अन्यान्य प्रकार के रक्तस्राव मे शीत सग्राही औषधियो के द्वारा उपचार करना चाहिये।

९—सिक्लसमाअत

नाम—सहज बाधिर्य (अ०) समम; (फा०) मादरजाद करी; (उ०) पैदायशी बहिरापन; (अ०) कोफोसिस (Kophosis)।

जन्मोत्तर (अ०) इक्तिसाबी ,

बिल्कुल बहिरापन (अ०) वक्र, त्ररी , (फा०) करीगोश , (उ०, हिं०) बहिरापन , (स०) बाधिर्य, बधिरत्व, (अ०) सर्डिटी (Sardity) डेफ्नेस (Deafness) ।

ऊँचा सुनना, कम सुनना (अ०) तरश, सिक्ल समाअत , (फा०) गिरानी गोश , (अ०) पॅराकुसिस (Paracusis) ।

वर्णन—इस रोग से रोगी को कम या बिल्कुल सुनाई नही देता । इनके अस्थायी-स्थायी और सहज एव जन्मोत्तर ऐसे दो भेद होते है । यह रोग बुढापे मे तो स्वयमेव बिना किसी बाह्य कारण के दौर्बल्य (शक्तिहीनता) एव नाडीगत रूक्षता के कारण उत्पन्न हो जाता है ।

हेतु—कभी-कभी कान मे मैल भर जाने या किसी तीव्र एव उच्च शब्द से कान के पर्दे पर आघात पहुँचने, जैसे तोप का शब्द या बिजली की कडक से, कडी सर्दी लगने या मस्तिष्क की दुर्बलता या किसी सान्द्र दोष के कान मे सचित होने से भी यह रोग हो जाता है । कभी पैत्तिक एव तीव्र ज्वरो मे भी यह रोग हो जाता है ।

लक्षण—तरश मे रोगी को ऊँचा सुनाई देता है । कभी उसको विभिन्न प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं । वकर मे श्रवणशक्ति त्रुटित या नष्ट हो जाती है । समम मे तो रोगी सर्वथा बहिरा हो जाता है ।

चिकित्सा—सहज बाधिर्य असाध्य है । बूढो का बहिरापन भी क्वचित् ही आराम होता है । जन्मोत्तर और इसके अतिरिक्त अन्य कारणो से हुआ बहिरापन यदि चिरकालिक न हो तो सरलता से आराम हो सकता है । दोषज बाधिर्य मे यथावत् शोधन करे । अस्तु, कफज मे कफ पाचन और शोधन देवे—

राई १ तोला, हाशा १ तोला, पुदीना १ तोला, पीसकर २ तोला शहद मिला कर उबालें और इससे गण्डूष करे । कुन्दुश ३ माशा, एलुआ ३ माशा, कलौजी ३ माशा पीसकर नाक से नस्य देकर छीक लावे और रोगन मुफीद कान मे डाले । पित्तज मे, जैसा कि पित्त ज्वरो के पश्चात् होता है, पित्तविरेचन औषधि पिलाकर पित्त का शोधन करे । शोधनोपरात दवाउर्रुम्मान कुनकुना करके कान मे डाले । यदि कान मे मलसचय (कर्णगूथ) होने से यह रोग हो तो वस्खुलउज्न के प्रकरण मे लिखित उपाय करें । यदि अभिघात के कारण नाडी फट गई हो तो यह असाध्य है । यदि केवल आघात पहुँचा हो तो रोगन अजीब कुनकुना करके कान मे डाले और टकोर करे । यदि रक्त के जम जाने या पीप से हो तो कर्णशूल की भाँति उपचार करें । यदि कान मे कोई घाव भर गया हो या मस्सा

उत्पन्न हो गया हो तो शस्त्र के द्वारा घाव को शुद्ध करे। मस्से पर दाहक औषधि लगाकर उसे काट डाले। यदि अन्य रोगो से हो तो उनकी चिकित्सा करे।

पथ्य—मुर्गी के बच्चे या बकरी का शूरबा, पालक, कद्दू, कुलफा, तुरई, डिटा आदि लघु आहार देवें।

अपथ्य—आलू, अरवी, कचालू, गोभी, उडद की दाल आदि वादी एव गरिष्ठ आहार से परहेज करे।

१०—तनीन व दवी

नाम—(अ०) तनीन, दवी, सफीर; (उ०, हि०) कान बजना, (स०) प्रणाद, कर्णनाद, क्ष्वेड; (अ०) टिन्नायटिस (Tinnitis), टिन्नायटिस ऑरियम् (T Aurium)।

वक्तव्य—दवी—वायु का शब्द या मक्खी की भनभनाहट, तनीन—मच्छर या तम्बूरा का शब्द, सफीर—सीटी का शब्द। यदि शब्द वारीक एव तीव्र सुनाई दे तो उसे तनीन मोटे ओर नरम शब्द को दवी और सीटी के समान शब्द को सफीर कहते है।

वर्णन—इस रोग मे मस्तिष्क के भीतर वायु एव बाष्प की प्रगलभता होने से वायु और वाष्प मस्तिष्क के भीतर घूमते हैं जिससे कान मे विविध प्रकार के शब्द सुनाई देते है।

हेतु—अजीर्ण, रूक्षता, मस्तिष्क की दुर्बलता, एव शक्ति हीनता, रक्ताल्पता, गरिष्ठ एव वादी पदार्थ का अति सेवन किसी तीक्ष्ण दोष का सचय और उससे बाष्प उठकर मस्तिष्क मे घूमना, कान मे पीप या कीडे पड जाना।

लक्षण—कान मे विभिन्न प्रकार के वारीक या मोटे शब्द सुनाई देते है और श्रवणशक्ति मे कुछ अतर हो जाता है।

चिकित्सा—यदि मस्तिष्क मे मलभूत दोष सचित हो और सिर मे भारीपन हो तो उसका शोधन करें। उक्त प्रयोजन के लिये गुलबनफ्शा ७ माशा, हसराज ५ माशा, सौफ ५ माशा, सौफ की जड ७ माशा, उस्तूखुदूस ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, गावजबान ५ माशा, सनाय मक्की ५ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात काल मल-छानकर खमीरा बनफशा १ तोला मिलाकर पिलायें। इसी प्रकार उक्त योग को प्रात भिगोकर सायकाल पिये। दस दिन के पश्चात् उक्त योग को भिगोकर गुलकद ४ तोला, खमीरा बनफशा ४ तोला और मैग्नीशिया सल्फास ४ तोला मिलाकर पिलायें। इससे ६–७ विरेक हो जायेंगे। तदुपरात दूसरे दिन वरमगोश (कर्णशोथ) मे लिखित तवरीद का योग देवें। इसके वाद प्रात सायकाल अतरीफल उस्तूखुदूस ७ माशा, अर्क

बादियान १२ तोला के साथ दिया करें। यदि इससे भी अधिक शोधन की आवश्यकता हो तो सोते समय हुब्ब इयारिज ७ माशा, १२ तोला अर्क गावजबान के साथ दिया करे। यदि रूक्षता के कारण हो तो रोगन लब्ब सबआ, रोगन कद्दू, रोगन बादाम या बकरी का दूध कुछ बूंद कान मे टपकायें। तथा मग्ज बादाम ५ दाने, मग्ज तरबूज ३ माशा, पोस्ता का दाना ३ माशा, मग्ज कद्दू, निशास्ता और बबूल का गोंद प्रत्येक २ माशा, काहू के छिले हुए बीज ३ माशा, मिश्री २ तोला, गोदुग्ध १० तोला मे पीस-छानकर २ तोला गोघृत से बघारकर प्रात पिला दिया करें। बादाम का तेल और कद्दू का तेल बराबर-बराबर मिलाकर सिर मे लगायें तथा नाक मे टपकायें। रोगोत्तर दौर्बल्य से यह रोग हो तो खमीरा गावजबान अबरी जवाहरवाला ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा १० तोले अर्क गावजबान के साथ प्रात -सायकाल खिला दिया करे। यदि पाचन-दोष एव आमाशयस्थ वाष्प के कारण हो तो मण्डूरभस्म २ रत्ती ७ माशा, जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर १२ तोले अर्क बादियान के साथ प्रात -सायकाल खिलाये। गरिष्ठ एव बादी पदार्थो से परहेज करायें। कब्ज हो तो हुब्ब कब्जकुशा ३ गोली सोते समय रात्रि मे पाव भर गोदुग्ध के साथ खिलायें। पाशोया करें। व्रण की चिकित्सा यथास्थान वर्णित की गई है।

पथ्य—विरेचन के दिन अपराह्न काल मे मूँग की नरम खिचडी देवें। अन्य दिन मे बकरी का मास, मूँग-अरहर की दाल, चपाती, खशका बकरी के मास के कबाब और पुदीना की चटनी आदि के साथ देवें। पालक, कद्दू, टिंडा, तुरई, कुलफा प्रभृति लघु एव शीघ्र पाकी आहार भी दे सकते हैं।

अपथ्य—अधिक उष्ण तथा बादी एव बाष्पकारक पदार्थो, जैसे—लहसुन, प्याज, आलू, गोभी, बैंगन, मसूर की दाल आदि से परहेज करे। आयास, स्त्री सहवास और अधिक भाषण, तमाकू और मद्य सेवन तथा धूप से भी परहेज करना चाहिये।

११—औराम अस्लुल्उज्न

नाम—(अ०) बारीतूस, फूजिश्ला, नबातुल्उज्न, औराम अस्लुल्उज्न, (हिं०, उ०) कनपेड, कण्ठा, गलसूआ, कर्णमूल, (स०) कर्णमूलशोथ, (अ०) पैरोटायटिस (Parotitis), मम्प्स (Mumps),।

वक्तव्य—किसी-किसी यूनानी वैद्यकीय ग्रन्थ मे **औराम मगाबिन** मे ही इसका वर्णन कर दिया गया है। मगाबिन के निम्न अर्थ होते हैं—(१) कर्णपश्चात्, (२) कक्ष, और (३) वक्षण। अस्तु, इन स्थानो मे होनेवाली सूजन को औराम मगाबिन कहना चाहिये।

वर्णन—बारीतूस कर्णमूलशोथ को कहते है। यह मूल व्याधि तो भयकर होता है, परतु बोहरानी या उपद्रव रूप होने पर भयकर नही होता।

हेतु—अन्यान्य शोथो की भाँति यह भी रक्तज, पित्तज, कफज और सौदाजन्य ऐसे चार प्रकार का होता है और प्राय शिशुओ को हुआ करता है।

लक्षण—रक्तज मे कान के पीछे सूजन, ललाई, भारीपन, जलन एव रगो मे तनावट प्रतीत होती है पित्तज मे भारीपन अपेक्षाकृत कम, किन्तु जलन एव गर्मी अधिक प्रतीत होती है, कफज मे शोथ ढीला एव पोला, भारीपन अधिक और रग सफेदी लिये होता है। सौदाजन्य शोथ कठिन प्रतीत होता है।

वक्तव्य—अधुना यह सक्रामक माना जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—इन शोथो मे अन्यान्य शोथो के विपरीत दोष विलोमकारी औषधियो का उपयोग अविहीत है। क्योकि मस्तिष्क के सान्निध्य के कारण इस प्रकार के उपाय भय से खाली नही है। आवश्यकता होने पर इसमे (१) पछना या (२) जोक लगवाये अथवा (३) अलसी को गुलरोगन के साथ पीसकर अथवा (४) जौ का आटा गरम पानी मे पीसकर रोगन बनफशा मिलाकर लेप करने से सूजन उतरती है। यदि सूजन न बैठे तो (५) गेहूँ के आटा को पीले अजीर के काढे मे पकाकर रोगन जैतून मिलाकर कुनकुना लेप करे। इससे वह पक जाता है। (६) शिशुओ के कनपेड मे रसवत का लेप अत्यत गुणकारी है। (७) कूटा हुआ इसबगोल सिरका और गुलरोगन के साथ लेप करने से इस प्रकार के शोथ मे उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उचित सशोधन के पश्चात् (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला ६ तोला अर्क शाहतरा ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून और २ तोला शर्बत तूत स्याह के साथ सेवन करने से सभी प्रकार का कनपेड आराम होता है। इसी प्रकार (३) अतरीफल शाहतरा ९ माशा, ६ तोला अर्क उशबा, ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून और २ तोला शर्बत उन्नाब के साथ सेवन करने से सौदाजन्य कनपेड मे विशेष उपकार होता है। इसी प्रकार सम्यक् सशोधनोपरात हृदय तथा मस्तिष्क को बलवान बनाने के लिए (४) खमीरा गावजबान, अबरी जवाहरवाला ५ माशा या (५) खमीरा मरवारीद ५ माशा, अर्क गावजबान १२ तोला और मिश्री २ तोला मिलाकर सेवन करने से उक्त लाभ होता है। शिशुओ मे वयानुसार औषध प्रमाण कम करके इन औषधियो का उपयोग करे।

———

नासारोगाध्याय (अम्राजुल् अन्फ) ४

नाम—(अ०) अम्राजुलअन्फ, अम्राजेद्दीनी , (उ०, हि०) नाक की बीमारियाँ (रोग) , (स०) नासारोग , (अ०) डिजीजेज ऑफ दी नोज (Diseases of the Nose) ।

१—नज्ला व जुकाम ।

नाम—(अ०) नजल, (फा०) रेजिश , (उ०) नजला , (स०) प्रसेक , (अ०) कॅटार (Catarrh) ।

(अ०) जुकाम, (फा०) चाइश , (उ०, हि०) जुकाम, ठढ लगना, सर्दी होना , (स०) प्रतिश्याय , (अ०) कोराइजा (Coryza), कोल्ड इन दी हेड (Cold in the head) ।

वर्णन—इस रोग मे मस्तिष्क के अगले दोनो कोष्ठो से मलभूत तीक्ष्ण एव दाहकारी दोष खिचकर नथुनो या कठ की ओर गिरता हे । जब यह नाक मे गिरता है, तब जुकाम और जब कण्ठ मे गिरता हे तब नजला कहलाता हे। किसी-किसी ने इसका समावेश मस्तिष्क-शिरोरोग मे और किसी ने नासारोग मे किया हे ।

भेद—हेतु के विचार से इसके ये दो भेद होते है--(१) उष्ण (हार्र) एव (२) शीत (वारिद) । दोष के विचार से इसके ये चार भेद किये गये है--(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदाजन्य । परतु सताप के विचार से रक्तज एव पित्तज जुकाम व नजला उष्णजुकाम व नजला के तुल्य होता हे और दोनो की चिकित्सा समान है । शीत के विचार से कफज एव सौदाजन्य जुकाम व नजला शीतल जुकाम व नजला के तुल्य है और इन दोनो की चिकित्सा समान हे । तात्पर्य यह कि अतत इसके पूर्वोक्त दो ही भेद हुये और चिकित्सा मे इन्ही दोनो का विचार किया जाता है ।

हेतु—प्राय यह रोग मस्तिष्क के दोषज या अदोषज शीत वा उष्ण विप्रकृति से उत्पन्न होता है । कभी चतुर्दोषो के साद्र वाष्प मस्तिष्क मे अवरुद्ध (बद) होकर भी इस रोग को उत्पन्न करते है जो बाहरी सर्दी के लग जाने या गरम सर्द हो जाने से मस्तिष्क के भीतर अवरुद्ध हो जाते है । धूप मे चलने-फिरने या किसी गरम मसालेदार आहार के खाने से, बडे बाल सिर पर रखने और बोझ उठाने से पित्त अधिक होकर कफ से मिलकर जुकाम या नजला उत्पन्न करता हे । कभी शीतल जल से स्नान करने तथा शीतल वायु मे नग्न सिर करके सोने और बर्फ या

दही आदि शीतल पदार्थो के अति सेवन से मस्तिष्क मे कफ की अधिकता होकर नजला व जुकाम हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु के आरभ मे अर्थात् वसत ऋतु मे जबकि ऋतु परिवर्तन होता है, ये रोग अधिक होते हैं। मस्तिष्क दौर्बल्य विशेषत अतिमैथुन वा मानसिक श्रम की अधिकताजन्य मस्तिष्क दौर्बल्य से दूसरे-तीसरे दिन मस्तिष्क मे थोडी गर्मी या सर्दी लगने से इनका दौरा हो जाता है।

लक्षण—सर्दी आदि लग जाने के तुरत बाद शरीर आलस्ययुक्त हो जाता, अगमर्द होता और काम करने को जी नही चाहता और नाक मे क्षोभ प्रतीत होता है। हाथ-पाँव, कनपुटी और मस्तक मे जकडन एव सूक्ष्म बोझल प्रकार का दर्द होने लगता है। सिर गर्म होता है और सिर मे हलका दर्द होता है। बारबार छीकें आती है और कुछ कालोपरात नाक से पानी सरीखा पतला क्षोभकारक द्रव बहने लगता है। यदि सर्दी के कारण हो तो द्रव श्वेत एव गाढा निकलेगा तथा क्षोभ एव जलन कम होगी या नाक बद होगी और सपूर्ण चेहरा मे दर्द होगा। यदि गर्मी के कारण हो तो द्रव पतला एव नमकीन निकलेगा, चेहरा, और नेत्रलाल होगे। कण्ठ मे क्षोभ और नाक मे जलन होगी। प्यास बारबार लगेगी और नाक के नथुने लाल होगे। मूत्र का रग पीला होगा। साधारण दशाओ मे जबकि रोग उपद्रवरहित हो, तीसरे या चौथे दिन रोग की तीव्रता कम हो जाती है और रोगी एक ही सप्ताह के भीतर बिल्कुल स्वस्थ हो जाता है। जब रोग-जनक दोष सम्यक्रूपेण नष्ट नही होता, तब बारबार नजला और जुकाम का आक्रमण होता है तथा रोग चिरकारी रूप धारण कर लेता है। उस दशा मे नाक की भीतरी झिल्ली शोथयुक्त होकर स्थल हो जाती है। उसकी नाक प्राय बहती रहती है और साधारणतया मस्तिष्क भी दुर्बल हो जाता है।

साक्षेप निदान—रोमान्तिका और मसूरिका के प्रारभिक प्रतिश्याय या दुष्टप्रतिश्याय (नजला बबाइय्या—इन्फ्ल्युएन्जा) से इसका निदान करना जरूरी है। अस्तु, रोमान्तिका और मसूरिका के प्रारभ मे शीत एव कम्पपूर्वक ज्वर होता है। परतु नजला और जुकाम मे ऐसा नही होता। इसके अतिरिक्त रोमान्तिका साधारणतया छोटे शिशुओ को निकलती है। दुष्टप्रतिश्याय मे सामान्यतया प्रारभ मे ही तीव्र ज्वर हो जाता है। परतु नजला और जुकाम मे प्राय ज्वर नही होता (तीव्रावस्था मे सूक्ष्म ज्वराश होता है)। यदि होता हे तो कम और तीन दिन के पीछे दुष्टप्रतिश्याय मे साधारणतया गले मे तीव्र दर्द भी होता है।

चिकित्सासूत्र—प्रारभ मे जुकाम व नजला को बन्द नही करना चाहिए। प्रत्युत् यथा सभव दोषो (द्रवो) त्सर्ग मे सहायता करके मस्तिष्क की शुद्धि होने

देना चाहिये तथा तीक्ष्ण बाष्पो के रोकने और आमाशय एव, मस्तिष्क की बल-प्राप्ति का यत्न करना चाहिये। रोगी को आदेश करें कि वह जल एव भोजन का सेवन कम करे तथा शीतल जलवायु से सुरक्षित रहे। सिर मे तेल नही लगाये। दिन मे विशेष कर भोजन करके नही सोये। दूध, घी और अम्ल पदार्थो का सेवन कम करे। प्रारभ मे स्नान और मास सेवन से परहेज करे। पर अत मे इनके सेवन करने मे कोई हर्ज नही है। नाक मे अत्युष्ण जल डालने से लाभ होता है। नजला और जुकाम मे यदि पतले दोष (द्रव) उत्सर्गित हो तो उनको गाढा और यदि गाढे दोष उत्सर्गित हो तो उन्हे पतला करके उत्सर्गित करना चाहिये।

जिसको प्राय जुकाम व नजला हुआ करता है, उसका मस्तिष्क दुर्बल हो जाता है। अतएव मस्तिष्क के बलप्रदान करने का विशेषरूप से ध्यान रखना चाहिये। यदि कब्ज हो तो उसको दूर करना चाहिये।

प्रारभिक प्रतिश्याय मे अधिक छीक आना अहितकर है, परतु दोषपाचनोपरात दोषोत्सर्ग के लिये उपकारी है। इसी प्रकार प्रारभ मे स्नान भी हानिकर है; परतु दोषपाचनोपरात लाभकारी है। हॉ, ज्वरावस्था मे अविहित है।

चिकित्साक्रम—साधारण जुकाम और नजला मे तो चिकित्सा की कोई आवश्यकता नही, केवल साधारण सावधानी एव परहेज से यदि तीन दिन मे यह रोग दूर न हो तो चिकित्सा की ओर ध्यान देवें। सर्व प्रथम मूल कारण का पता लगाकर उसे दूर करें।

यदि सर्दी के कारण जुकाम व नजला बारिद (शीतल प्रसेक एव प्रतिश्याय) हो तो सर्दी से बचना आवश्यक है। यथाशक्य पानी कम पीना चाहिये। रात्रि मे कम्बल या खोल ओढकर सोना, सिर को स्वच्छ एव गरम कन्टोप से ढॉके रखना, शीतल जल नही पीना और सोते समय गरम-गरम चाय पीना लाभकारी है। प्रारभ मे निम्न योग लाभकारी है—

गुलबनफशा ७ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, गेहूँ का चोकर ७ माशा, मिश्री २ तोला जल मे पका-छानकर पिलाये। यदि कफज कास भी हो तो उसमे छिली हुई मुलेठी ५ माशा की योजना करे। यदि शुष्क हो तो ९ दाने लिसोढा और मिला लेवें। यदि कफ अधिक हो तो रेशम का कोया ३ माशा, जूफाखुश्क ३ माशा योजित करे और मिश्री के स्थान मे २ तोला शहद मिलाये। यदि बद शीतल नजला (प्रसेक) हो तो ५ माशा उस्तूखुद्दूस मिलाये। यदि कफ के चिमटने के कारण हिचकी आती हो तो १ माशा जदवार पीसकर १ तोला खमीरा गावजबान मे मिलाकर और चॉदी के वर्क से

आवेष्टित करके उक्त काढे के साथ देवे। यदि सिर दर्द हो तो कनपुटी और मस्तक पर कुर्स मुसल्लस जल मे घिसकर लेप करें।

यदि गर्मी के कारण जुकाम व नजला हार्र (उष्ण प्रसेक एव प्रतिश्याय) हो तो विहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना पानी मे पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाये। यदि सिर मे दर्द हो तो उसमे ३ माशा छिले हुए काहू के बीजो या ३ माशा मीठे कद्दू के बीजो के मग्ज का शीरा मिलाकर सेवन कराये। यदि मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण हो तो ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर देवें और इससे पूर्व खमीरा गावजबान जवाहरवाला ७ माशा या खमीरा गावजबान अबरी जवाहर वाला ५ माशा खिला दिया करे। दूसरे समय निम्नलिखित हरीरा मग्ज बादाम वाला पिलाये--

५ दाना मीठे बादाम के बीज का मग्ज, ३ माशा मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, ३ माशा, तरबूज का मग्ज, ३ माशा निशास्ता, ३ माशा बबूल का गोद, ३ माशा छिले हुए काहू के बीज, ३ माशा सफेद पोस्ते का दाना पानी मे पीसकर २ तोला मिश्री मिलाकर अग्नि पर रखे। जब किंचित् गाढा हो जाय तब २ तोला गोघृत से बघार कर पिला दिया करे। यदि गरम नजला सीना पर गिरता हो और खाँसी हो तो गोद १ माशा, कतीरा १ माशा, सत मुलेठी १ माशा पीसकर १ तोला खमीरा गावजबान मे मिलाकर और चाँदी का वर्क लपेट कर काढे के साथ देवे। यदि कण्ठ से रक्त आता हो तो गेरू १ माशा, सगजराहत १ माशा पीसकर, १ तोला खमीरा खशखाश मे मिलाकर उपर्युक्त योग के साथ देवे। यदि नजला अत्यधिक उष्ण एव तीक्ष्ण हो तो ३ माशा बिही दाने का लबाब, ५ दाने उन्नाव और ३ माशा कद्दू के मग्ज का पानी मे निकाला हुआ शीरा २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाये।

जब सर्दी और गर्मी दोनो के लक्षण पाये जायें तो निम्न योग देवे--गुलबनफ्शा ७ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी के बीज ७ माशा पानी मे पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाये। कभी शर्बत बनफ्शा के स्थान मे २ तोला शहद मिलाते हैं।

चिरज प्रसेक (नजला मुज्मिन) मे आमाशय और मस्तिष्क का सुधार करे और हब्ब जदवार २ गोली या बरशाशा ६ रत्ती, खमीरा गावजबान अबरी ५ माशा या खमीरा गावजबान १ तोला मिलाकर गावजबान ५ माशा, गुलगावजबान ३ माशा, उन्नाब ५ दाना जल मे काढा करके २ तोला शहद मिलाकर खिलाये, सोते समय हब्ब इयारज ५ माशा या अतरीफल कश्नीजी ९ माशा दूध या अर्क गावजबान के साथ सेवन करे। नाक मे तेल लगायें तथा गरम नमकीन पानी कण्ठ और नाक मे लगाये।

यदि मस्तिष्क अधिक दुर्बल हो तो प्रवाल भस्म १ रत्ती या कुश्ता मर्जां जवाहर वाला २ चावल, १ तोला खमीरा गावजबान मे मिलाकर देवे। यदि आमाशय और अन्त्र दुर्बल हो तो लोह भस्म १ चावल और मण्डूर भस्म १ रत्ती, ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर देवे।

यदि दुष्टप्रतिश्याय (नजला ववाइय्या—इन्फ्ल्युएन्जा) हो या क्षा येय कफ के कारण हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, खुव्वाजी के बीज ७ माशा सबको जल मे पका-छानकर खमीरा वनफशा मिलाकर पिलाये।

पथ्य—तीन-चार दिन मूग की दाल या पालक की तरकारी या बकरी के मास के शूरवा के साथ चपाती खाये, परतु साथ मे घी कम हो।

अपथ्य—दूध, दही, घी, मक्खन, आलू, अरवी, भिडी, वैगन, टमाटर, उडद की दाल और समस्त अम्ल, साग एव गरिष्ठ आहारो से तथा वर्फ और अधिक शीतल जल से परहेज करे। मानसिक श्रम और स्नान से भी वचे।

२—रुआफ

नाम—(अ०) रुआफ, (उ०, हि०) नकसीर फूटना, नाक से खून आना, (स०) नासागत रक्तपित्त; (अ०) एपिसटॉक्सिस (Epistaxis)।

वर्णन—नाक की सिराओ के रक्त से परिपूर्ण होकर फटने से नाक से जो रक्त वहने लगता है उसे 'रुआफ' कहते है।

हेतु—कभी-कभी यकृत् की ऊष्मा, सक्रामक ज्वर और शिशुओ मे कुक्कुर-कास एव उदरकृमि, सिर या नाक पर आघात लगना, सर्पदश, रक्तज और पित्तज ज्वर, तीव्र रोगो का बोहरान, नासार्श, नासागत व्रण और पिडका रक्तगत तीक्ष्णता, रक्तसचय, स्त्रियो मे आर्तवरोध आदि इस रोग के हेतु होते है। नवयुवती लडकियो को मासिक धर्म प्रारभ होने के पूर्व कभी-कभी नकसीर फूटती है। बोहरानी नकसीर प्राय सरसाम, सन्यास, फुफ्फुसशोथ, पार्श्वशूल, शीतला आदि रोग की दशा मे फूटा करती है।

लक्षण—कभी केवल नथुने से रक्त बहता है, विशेषत यकृद्रोग मे दाहिने से और प्लीहा के रोगो मे बाये नथुने से आता है। यदि हेतु वलवान् हो तो दोनो नथुनो से धार-बॉधकर रक्त बहता है और देर तक जारी रहता है। कारण वलवान् न होने पर थोडी देर जारी रहकर वद हो जाता है।

निदान—यदि नकसीर मे रक्त सहसा बडे प्रमाण मे निकल जाय और नकसीर फूटनेसे पूर्व सिर मे अत्यत दर्द हो तथा कोई तीव्र रोग विद्यमान हो अथवा सिर पर आघात लगा हो, तो समझ लेना चाहिये कि मस्तिष्कगत धमनियो के

फट जासे से नकसीर फूटी है जिसका कारण रक्त की प्रगल्भता या बोहरान अथवा अभिघात है। इस प्रकार की नकसीर मे मानसिक क्रियाओ मे भी न्यूनाधिक विकार उत्पन्न हो जाता है। फलत सरसाम, भ्रम, सन्यास और बुद्धिविभ्रम भी कभी इससे उत्पन्न होता है तथा इस प्रकार की नकसीर दुश्चिकित्स्य होती है। रुआफ (नकसीर) बोहरानी सदा बोहरान के दिन उपस्थित होती है। नकसीर मे कभी धमनी और कभी सिरा से रक्त निकलता है। इन दोनो मे यह अतर है कि धामनिक रक्त स्वच्छ-लाल एव पतला होता है। इसके विपरीत सिराज रक्त अपेक्षाकृत गाढा एव स्याही मायल होता है। यह रोग कभी आवेग-पूर्वक भी होता है। विशेषकर ऐसी स्त्रियो मे जिनका मासिक धर्म वन्द हो।

चिकित्सासूत्र—जो नकसीर तीव्र ज्वरो एव मानसिक रोगो मे बोहरान के दिन (बोहरान स्वरूप) उपस्थित हो, उसको कदापि वन्द न करे, क्योकि यह आरोग्यसूचक है। परतु जब इससे असाधारण दौर्वल्य एव मूर्च्छा उत्पन्न हो जाय, तब उसका समीचीन उपाय करना चाहिये। नकसीर फूटने पर निम्नलिखित उपाय काम मे लेवे—(१) रोगी का गरेबा ढीला करके उसे इस प्रकार बैठाये कि उसका सिर किंचित् पीछे को झुका हो। पुन उसे कई बार लबे-लबे (ऊर्ध्व) सास खीचने का आदेश करें। इससे प्राय नकसीर रुक जाती है। यदि इससे लाभ न हो तो (२) सिर के ऊपर शीतल जल धारे। उसके पाँव मे गरमी पहुँचाये और नथुनो को हाथ से वन्द रखे या १ रत्ती कपूर को थोडे दूध मे पीसकर और स्वच्छ रुई के ऊपर लगाकर उसे नाक के भीतर ठूस देवे।

चिकित्साक्रम—(१) रक्त की प्रगल्भता की दशा मे आवश्यकता होने पर सरारू सिरा का वेधन करे। (२) सिर और मस्तक पर ठढा पानी डाले। (३) दम्मुल्अख्वैन १ माशा, बारहसिघा सोख्ता महलूल १ माशा, वशलोचन १ माशा महीन पीसकर १ तोला शर्बत अजवार मिलाकर चटाये। ऊपर से ४ माशा बीख अजवार, ४ माशा विलायती मेहदी के बीज, ४ माशा पोस्ते का दाना और ४ माशा तुख्म बारतग पानी मे इसका शीरा और ३ माशा बिहीदाने का लवाब निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलाये। (४) १ माशा कपूर और ६ माशा सफेद चदन पानी मे पीसकर मस्तक पर लेप करे। (५) मुलतानी मिट्टी का नाक पर लेप करे। यदि इस पर भी बन्द न हो तो सिर के वाल कतरवाकर वकरी का दूध सिर के ऊपर डलवाये। (६) गेरू १ माशा, सगजराहत १ माशा, दम्मुल अख्वैन १ माशा पीसकर अर्क कासनी १२ तोला और अर्क बेद सादा १२ तोला के साथ, २ तोला शर्बत अजवार या २ तोला शर्बत केवडा मिलाकर पिलाये।

यदि गर्मी और खुश्की के कारण नकसीर हो तो बादाम का तेल और कद्दू के तेल का शिरोऽभ्यन्ग करें तथा नाक मे टपकायें । यह औषधि भी गुणकारी है–– कपूर १ माशा, २ दाने बादाम का मग्ज पीसकर १ तोला गोघृत मिलाकर नस्य लेवें और निम्न औषधि पियें––तुरम वारतग, तुरम खुर्फा स्याह, और तुख्म काहू प्रत्येक ६ माशा सवका पानी मे शीरा निकालकर २ तोला शर्वत नीलूफर मिलाकर १ माशा बबूल के गोद और १ माशा कतीरा के महीन चूर्ण का प्रक्षेप देकर प्रात -सायकाल पिलायें। सिर और मस्तक पर शीतल जल डाले और मस्तक पर वर्फ रखें।

यदि इन उपायो से लाभ न हो, तो कधे, पिडल और गुद्दी के ऊपर खाली सींगी लगवायें। यदि दाहिने नथुने से रक्त जारी हो तो प्लीहा पर सीगी लगवायें।

यदि शिशुओ को उदरकृमि और स्त्रियो को आर्तवरोध आदि के कारण नकसीर फूटती हो तो उक्त उपायो से रक्त वन्द करके मूल व्याधि की चिकित्सा करें। कभी यकृत्, प्लीहा और वृक्क के रोगो मे इन अगो से रक्त ऊपर चढकर नाक से जारी हो जाता है। उसके लिये भी प्रथम नकसीर वन्द करने के उपर्युक्त उपाय करें। पुन मूल व्याधि की ओर ध्यान देवें।

नकसीर के लिये अहितकर––(१) रोगी का चित्त (उत्तान) लेटना, (२) लौंग के फूलो का निरतर सूँघना, (३) नहरी पुदीना का अधिक सेवन या सूँघना, (४) वलपूर्वक सूँघना और (५) अम्ल तथा उष्ण पदार्थो का सेवन।

पथ्य––साबूदाना, यवमड, खिचडी, कद्दू, तुरई, टिडा, पालक, शलगम, रगतरा नाशपाती, अनार, तरबूज इत्यादि शीतल आहार देवे।

अपथ्य––मास, अडा, लहसुन, प्याज, गुड, तीक्ष्ण मसाला, तेल, लिखने-पढने, धूप मे चलने और अग्निसेवा आदि से परहेज करे।

३––खशम

नाम––(अ०) खशम, बुत्लाऽश्शम्म, (हि०) सूँघने की शक्ति जाती रहना, (स०) घ्राणाज्ञान, (अ०) अनोज्मिया (Anosmia)।

वर्णन––इस रोग मे रोगी की आघ्राणशक्ति त्रुटित वा नष्ट हो जाती है तथा रोगी सुगन्ध और दुर्गन्ध मे भेद नही कर सकता है।

हेतु––नासार्श, नासागत कैन्सर (सर्तान) या अन्यान्य शोथ इसके प्रधान हेतु है। कभी चिरज प्रसेक और प्रतिश्याय तथा अन्यान्य मानसिक रोगो मे दीर्घकाल पर्यत फँसे रहने के कारण आघ्राण नाडियो (पेशी-ततुओ) के समीप पुष्कल कफसचय से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—रोगी सुगध और दुर्गन्ध मे भेद नही कर सकता और कहता है कि उसे किसी प्रकार की गध का ज्ञान नहीं होता। यदि नासार्श या नासाशोथ या नासागत कैन्सर हो तो प्रकाश मे देखने से मालूम हो जाता है। चिरज प्रसेक की दशा मे लिखे भारीपन नेत्र के पलको मे भुरभुराहट प्रतीत होती है।

चिकित्सासूत्र—नासार्श, नासाशोथ और नासागत कैन्सर होने की दशा मे उनकी चिकित्सा करनी चाहिये। यदि चिरज प्रसेक से हो तो प्रथम कफोत्सर्ग का उपाय करना चाहिये। जब कफोत्सर्ग हो जाय तब नाडी एव मस्तिष्क को बलप्रदान करनेवाली औषधियो का उपयोग करे।

चिकित्साक्रम—यदि चिरज प्रसेक एव आक्लेद की अधिकता के कारण यह रोग हुआ हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी के बीज ७ माशा, गावजबान ५ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर मल-छानकर २ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर प्रात - सायकाल सेवन करे। (२) रात्रि मे सोते समय हब्ब इयराज ७ माशा सप्ताह मे दो बार दिया करे। (३) सेंधा नमक २ माशा, बूरए अरमनी ३ माशा, मर्जञ्जोश ३ माशा पानी मे उबाल कर छानकर पिचकारी से नाक धोवाएँ। आठ-दस दिन के प्रयोग से जब कफोत्सर्ग हो जाय तब लोह भस्म १ चावल, प्रवाल भस्म २ रत्ती, जुवारिश जालीनूस ७ माशा मे मिलाकर १२ तोला अर्क बादियान के साथ और अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ शाम को उपयोग करे।

पथ्यापथ्य—बख्रुल्अन्फ (नासादौर्गन्ध्य) वत्।

४—बख्रुल्अन्फ।

नाम—(अ०) बख्रुल (नत्नुल) अन्फ, (उ०) फीनस, (हि०) नाक से दुर्गन्ध आना, (स०) अपीनस, पीनस, पूतिनस्य, (अं०) ओजीना (Ozaena)।

वर्णन—रोगी के नाक से अन्य लोगो को दुर्गन्ध मालूम होती है।

हेतु—प्राय यह रोग प्रतिश्याय एव प्रसेक के बिगाडने (पीनस) से होता है। कभी नाक पर चोट लगने या नाक मे घाव होने से यह रोग हो जाता है। कभी रक्तविकार के रोग, जैसे, फिरग, कण्ठमाला, चेचक आदि मे रक्तदुष्टि से यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। बालक और स्त्रियाँ इस रोग का आखेट अधिक हुआ करती है।

लक्षण—नाक से दुर्गन्धित और कभी रक्तमिश्र द्रव उत्सर्गित होता रहता है। प्राय द्रव शुष्क होकर नाक से छिछडे-से निकलते रहते हैं।

छिद्रो के कारण नाक वद रहती है, रोगी मुख से साँस लेता है और उसके साँस से दुर्गन्ध आती है। परतु, स्वय रोगी को दुर्गन्ध का ज्ञान नहीं होता, क्योकि उसकी आघ्राण शक्ति त्रुटित या नष्ट हो जाती है। रोग के पूर्व प्रतिश्याय एव प्रसेक का होना और उसकी चिकित्सा की अनियमितता आदि इसके लक्षण हैं। जव रोग पुराना हो जाता है या फिरङ्ग जन्य होता है, तव कभी नाक की हड्डी गलकर नाक वैठ जाती है और कभी क्रिमि पड जाते हैं।

चिकित्सा—नाक को स्वच्छ रखें। गरम पानी मे थोडा नमक मिलाकर इससे दिन मे कई वार नाक को धो लिया करे और कद्दू के तेल, गुलरोगन या चमेली के तेल के कुछ बूँद नाक के भीतर टपका दिया करें। जीरा, सोठ, काली मिर्च प्रत्येक १ तोला कूट-छानकर ४ तोला गुड मे मिलाकर गोलियाँ वनाये और प्रात-सायकाल २-२ माशा खिलाये। यदि हरी तितलौकी मिल सके, तो इसका रस उत्तम वरन् सूखे कद्दू को पानी मे उवालकर उसके कुछ विंदु नाक मे टपकाये अथवा हरी तुलसी की पत्ती के रस मे नमक मिलाकर कुछ विंदु नाक मे टपकाये। यदि इन उपायो से लाभ न हो, तो निम्नलिखित दोषपाचन (मुजिज) योग कुछ दिन पिलाकर विरेचन देवे और हब्ब इयारज से भी मस्तिष्क का शोधन करे।

दोष-पाचन योग—गुलवनफ्शा ७ माशा, वीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड, सौंफ, सौंफ की जड, छिली हुई मुलेठी, खुब्बाजी के वीज प्रत्येक ७ माशा, हसराज, गावजबान और उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५ माशा सवको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात काल पका-मल-छानकर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर ८–१० दिन पिलाये। नवे या ग्यारहवें दिन विरेचनीय ओषधियाँ अर्थात् सनायमक्की के पत्र और सफेद निसोथ प्रत्येक ७ माशा और गुलकद, तरजवीन और (शकर सुर्ख) प्रत्येक ४ तोला और मिलाकर एक विरेचन सादा और दो विरेचन हब्ब इयारज के साथ देवे। प्रत्येक विरेचन के वीच वाले दिन तबरीद का योग देवे और नीम की पत्ती, कायफल, लौंग प्रत्येक ३ माशा, जुदवेदस्तर ५ माशा, सवको वारीक पीसकर कपडे मे छानकर नस्य की भाँति सुघाएँ। यदि कब्ज हो तो १ तोला लऊक सपिस्ता खियार शबरी १२ तोला कुनकुना अर्क वादियान के साथ रात्रि मे सोते समय पिलायें या कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया ताजे पानी से खिला देवे। विरेचनोपरात फौलाद भस्म १ टिकिया जुवारिश जालीनूस ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा के साथ

कुछ दिन तक खिलायें। नागरमोथा, सातर, जटामासी, गुलाब का फूल और लौंग प्रत्येक ३ माशा आवश्यकतानुसार हरे पुदीना के रस मे पीसकर वत्ती बनाकर उक्त औषधि मे लत करके प्रात-सायकाल नाक मे रखवायें। जब यह रोग पुराना हो जाय तब नीम की पत्ती, आड़ू की पत्ती और वायबिडग प्रत्येक १ तोला सबका काढा करके इससे रोगी को प्रात-सायकाल गण्डूष कराये, जिससे यदि कोई कृमि आदि पड गया हो तो निकल जाय। यदि नाक से क्रिमि निकले तो १ तोला तारपीन का तेल पाव भर कुनकुना पानी मे मिलाकर उससे पिचकारी के द्वारा नाक को धोवाये। मेउडी की पत्ती १ तोला, कपूर ३ माशा, कलौंजी ३ माशा सबको बारीक पीसकर टिकिया बनाकर ५ तोला गुलरोगन मे जला-छानकर रखे। प्रथम नाक को स्वच्छ करके इसका नस्य देवे। यह पूतिनस्य एव नासाकृमि मे लाभकारी है।

वक्तव्य—भोजनोत्तर शीघ्र ही सो जाना, चित्त लेटना और बाल कतरवाकर शीतल तेलो का शिरोऽभ्यङ्ग करना इस रोग मे अहितकर है।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार, जैसे—अडा, बिस्कुट, डबल रोटी, साबूदाना, बकरी का मास, अरहर और मूग की भुनी हुई दाल गरम मसाला डालकर देवे। चाय, रोटी, खिचडी, अगूर आदि यथाभ्यास खिलायें।

अपथ्य—लहसुन, प्याज, गोभी, बैगन, मूली, उडद की दाल, प्रभृति गरिष्ठ एव वादी पदार्थ और शीतल वायु एव शीतल पदार्थो के खाने-पीने से परहेज करे।

५—दीदानुल् अन्फ।

नाम—(अ०) दीदानुलअन्फ; (उ०, हि०) नाक के कीडे, (स०) नासाकृमि, (अ०) वर्मीज नेजाइ (Wormes nasi)।

वर्णन और हेतु—अन्यान्य साधारण कृमियो की भॉति मस्तिष्क वा नाक की जड मे भी कृमि दूषित कफ से उत्पन्न हो जाते हैं। साधारणत यह रोग स्निग्ध प्रकृति विशेषत बालको एव वृद्धो तथा ऐसे मलिन व्यक्तियो मे जो चिरज पूतिनस्य वा पीनस से आक्रात होते हैं, हुआ करता है।

लक्षण—प्रथम रोगी की नाक से अत्यत दुर्गन्ध एव रक्तमिश्र द्रव उत्सर्गित होता है, तत्पश्चात् कृमि भी निकलते हैं। नाक बैठ जाती है। नेत्र से ऑसू बहता है और उसमे घाव हो जाता है। ये कृमि

कभी नाक की ओर से छिद्र करके समीपवर्ती अगो मे चले जाते है। कभी ये मस्तिष्क मे जाकर मृत्यु का कारण होते है।

चिकित्सा—नासादौर्गन्ध्य (बख्रुल्अन्फ) और इसकी चिकित्सा समान है। निम्नलिखित योग भी इस रोग मे गुणकारी होते है —

(१) एलुआ या अफसतीन महीन पीसकर कडवे बादाम के तेल या तितलौकी के तेल या कूठ के तेल मे मिलाकर नाक मे टपकाएँ।

(२) नासाकृमिहर धूनी—प्याज के बीज ४ माशा, गदना के बीज ४ माशा, खुरासानी अजवायन के बीज ४ माशा पीसकर १ तोला मोम या बकरी की चर्बी मिलाकर अग्नि पर रखे और इसका धूआँ नाक मे लेवें।

(३) नासाकृमिघ्न नस्य—पीला एलुआ १ माशा, कपूर १ माशा और हींग १ माशा, हरे शरीफा के पत्ते का रस १ तोला और हरे आडू के पत्र का रस १ तोला मे पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर नाक मे टपकायें। गुलरोगन के स्थान मे तारपीन का तेल मिलाने से अधिक लाभ होता है।

(४) नाशाकृमिनाशक गण्डूष—शरीफा की पत्ती, नीम की पत्ती, आड की पत्ती, वायविडग प्रत्येक १ तोला, पानी मे पका-छानकर उससे गण्डूष कर। यह नासाकृमिहर, शोथ एव दतशूलहर है तथा दोष का उत्सर्ग करता है।

(५) १० छटॉक गरम पानी मे २॥ तोला तारपीन का तेल मिलाकर प्रात -सायकाल नाक के भीतर पिचकारी करें।

वक्तव्य—इस रोग से छुटकारा मिलने पर यदि रोगी की नाक मे घाव आदि शेप रह जाय, तो उक्त अवस्था मे नासाव्रण की चिकित्सा करे।

पथ्यापथ्य—पूसिनस्य (बख्रुल्अन्फ) वत्।

६—उतास

नाम—(अ०) उतास, (उ०, हि०) छीक आना, (स०) छिक्का, क्षवथु, (अ०) स्नीजिग (Sneezing)।

सामान्य रूप से कभी-कभी छीक आना स्वास्थ्य का लक्षण समझा जाता है। परतु, जब यह सीमा का उल्लघन कर जाता है, तब इससे लाभ के स्थान मे हानि की सभावना अधिक होती है।

हेतु—कभी-कभी धूप मे चलने या धूलि-कण या धूआँ अथवा तमाकू वा मिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थों की धाँस मे चले जाने से वारबार छींक आती है। कभी उष्ण प्रसेक के कारण मस्तिष्क मे गर्मी और खुश्की की प्रगलभता होकर मस्तिष्क

के भीतर तीक्ष्ण द्रव सचित हो जाता है और क्षोभ उत्पन्न करता है, जिससे अनैच्छिकरूप से छीक आना आरभ हो जाता है।

लक्षण—किसी तीक्ष्ण वस्तु की धास आदि से छीक आती हो, तो उस वस्तु को हटा देने से थोडी देर मे स्वय छीक बन्द हो जायगी। तीव्र धूप मे चलने से हो तो नेत्र की ललाई, नाक की जलन और नथुनो मे लाली होगी। प्यास अधिक होगी। प्रसेक के कारण हो तो नाक से गरम-गरम पिलाई लिये पतला द्रव निकलेगा।

वक्तव्य—शैख के मत से निम्नलिखित पाँच दशाओ मे अधिक छीक आना विशेप रूप से अहितकर हे—(१) प्रसेक और प्रतिश्याय के प्रारम्भ मे, (२) ज्वरो के प्रारम्भ मे, (३) फुफ्फुसशोथ और उर स्थ रक्तसचय में, (४) उष्ण प्रकृति एव मस्तिप्क वालो मे और (५) प्राय नकसीर से पीडित होनेवालो मे। निम्नलिखित चार दशाओ मे छीक आना हितकर है–(१) जवकि मस्तिष्क के भीतर वायु, वाष्प या थोडा दोप हो, (२) जवकि मस्तिष्क मे परिपक्व दोप हो, (३) प्रसवकाल मे ओर (४) हिक्का (हिचकी) मे। छीक आने की दशा मे नकसीर फूटना वहुत ही भयकर लक्षण है। छोटे शिशुओ को साधारणतया सर्दी लगने से छीक आया करती हे। उक्त अवस्था मे उसे सर्दी से वचाएँ, गरम टोपी पहनाएँ आर पाँव मे मोजा पहनाएँ। सिर को मलना और केसर या दालचीनी सुँघाना, लाभकारी होता हे।

चिकित्सासूत्र—नाक और मस्तिष्क के क्षोभ एव कष्ट-निवारण के लिये शामक ओषधियो का उपयोग करे। दोषसचय की दशा मे यथाप्रकृति दोष का शोधन करे। रोगी को चिन्तातुर कर देना या सहसा किसी काम मे लगा देना। श्वास और छीक को प्रयत्नपूर्वक रोकना और सामान्य हेतु की दशा मे नाक, कान और तालू को मलना या नाक को स्वच्छ कुनकुना पानी से धोना, अँगूठे और तर्जनी अँगुली के बीच नाक को बलपूर्वक दबाना तथा मुह खोलकर साँस या डकार लेने से साधारणतया छीक आना बद हो जाता है। इस रोग मे छिक्का-कारक ओपधियो के सूँघने से परहेज करना चाहिये।

चिकित्साक्रम—जब बारबार छीक आये तथा नाक मे जलन एव कष्टानुभव हो तब नाक को भली भाँति स्वच्छ करके गुलरोगन या कद्दू के तेल के कुछ विदु नाक मे टपकाये। यदि धूप मे चलना इसका हेतु हो तो ठढे पानी से स्नान करे। उष्ण प्रसेक के कारण हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना पानी मे पका-छानकर २ तोला शर्वत बनफ्शा और ३ माशा मीठे कद्दू के बीजो के मग्ज का शीरा मिलाकर प्रात सायकाल पिलाये और कद्दू का तेल ५ विदु नाक मे टपकाये तथा शिरोऽभ्यङ्ग करे। यदि नींद लाना आवश्यक हो

तो रोगन लबूब सब्आ का सिर पर अभ्यङ्ग करे और सेंधानमक २ तोला तथा वरएअरमनी २ माशा गरम पानी मे मिलाकर दिन मे तीन-चार बार इससे नाक धोवाया करे। गुलरोगन या बादाम का तेल नाक मे टपकाना, सिर के ऊपर कुनकुना पानी का परिषेक करना, सेव या अफीम सुँघाना और उक्त तेलो मे से कोई तेल कुनकुना करके ५ बिदु कान मे टपकाना भी गुणकारी है।

पथ्य—मामूली बकरी का शूरबा, चपाती, कद्दू, पालक, कुलफा, शलगम, टिंडा, तुरई आदि तरकारी देवे।

अपथ्य—धूलि-कण और धूप मे चलने-फिरने तथा तमाकू और मिर्च प्रभृति तीक्ष्ण द्रव्यो की धाँस से बचें। प्रसेक हो तो ठढे पानी से स्नान नही करे। मिर्च, लहसुन, प्याज गरम मसाला, तीक्ष्ण एव उष्ण द्रव्यो से तथा गुड एव तेल आदि के उपयोग से परहेज करे। आलू, अरवी, कचालू आदि गरिष्ठ वस्तुएँ सेवन नहीं करे।

७—जफाफुल्अन्फ, हिक्कतुल्अन्फ

नाम—(अ०) जफाफुल्अन्फ, (उ०, हि०) नाक की खुश्की (रूक्षता) (स०) नासाशोष, (अ०) राइनाइटिस सिक्का (Rhinitis Sicca), ड्रायनेस ऑफ नोज (Dryness of nose)।

(अ०) हिक्कतुल्अन्फ, (हि०, उ०) नाक की खुजली, (स०) नासाकण्डू, (अ०) प्रूराइटिस नेजाई (Pruritis Nasi)।

हेतु—मस्तिष्क की गर्मी और खुश्की से उष्ण व्याधियो एव पैत्तिक ज्वरो की दशा मे मस्तिष्कगत द्रव के विलीन हो जाने के कारण नासाशोष हो जाता है। मस्तिष्क या किसी अन्य अग मे तीक्ष्ण दोष के सचित हो जाने और उससे बाष्प उठकर नाक मे आवृत होने से नासाकण्डु हो जाता है। कभी-कभी प्रतिश्याय एव फुसियाँ भी इसका हेतु होती है।

लक्षण—गरमी और खुश्की के लक्षण पाये जाएँगे। सिर हलका होगा, प्यास अधिक होगी। धूप मे चलना या गर्मी मे काम करना अधिक कष्ट-दायक होगा। नाक के भीतर (सोजिश) एव खुजली मालूम होगी। ठढा पानी चुल्लू मे लेकर नाक मे नस्य करने से सुखानुभव होगा।

चिकित्सा—स्नेहनार्थ ३ माशा बेदाना, ६ तोला अर्क गावजबान मे भिगोकर लुआब निकाले और उन्नाब ५ दाना, मग्ज कद्दू, मग्ज तरबूज, छिले हुए काहू के बीज, तुख्म खुर्फा स्याह प्रत्येक ३ माशा, छ तोला अर्क गावजबान मे पीस-छानकर लुआब, और २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रात-सायकाल पिलाये और स्त्री के दूध

मे २ रत्ती कपूर घिसकर दो-चार बिंदु नाक मे टपका दिया करें या मग्ज कद्दू पानी मे पीस-छानकर लुआब और २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रात -सायकाल पिलाएँ ।

बलप्राप्ति के लिये आमले का एक मुरब्बा चाँदी के एक वर्क मे लपेटकर प्रात कालीन औषधि के साथ देवें तथा मुफर्रह् बारिद ५ माशा, १२ तोला अर्क गावजबान और २ तोला ले शर्वत उन्नाव के साथ देने से भी उपकार होता है।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, शलगम, चुकदर, टिंडा, ककडी आदि की तरकारी देवें तथा अगूर, सेव और सन्तरा आदि अभ्यासानुकूल देवें।

अपथ्य—भुने हुए चने, लालमिर्च, गरम मसाला और गरम-खुश्क पदार्थ, मछली, बैंगन, लहसुन, प्याज, उडद और मसूर की दाल प्रभृति इस रोग मे अहितकर है। मानसिक परिश्रम कम करें। धूप मे चलने-फिरने से बचे।

८—बवासीरुल्अन्फ

नाम—(अ०) बवासीरुल्अन्फ, (उ०, हि०) नाक की बवासीर, (स०) नासार्श, (अ०) पॉलिपस नेजाई (Polypus Nası) ।

वर्णन—इस रोग मे नाक के नथुनो के भीतर मस्से (अर्श) उत्पन्न हो जाते है ।

भेद—(१) मस्सा श्वेत, कोमल और वेदनारहित होता है। इसमे द्रव बिल्कुल नही बहता। यह कफ से उत्पन्न होता और सुखसाध्य होता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे 'म्युकस पॉलिपस (Mucous Polypus) कहते है। (२) जिसमे मस्सा (अकुर) ततुल एव रक्तवर्ण का होता है। इसमे वेदना और किंचित् कठोरता होती है। यह कष्टसाध्य होता है। यह रक्तज होता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे फाइवस पॉलिपस (Fıbrous Polypus) कहते है। (३) जिसमे मस्सा स्याही-मायल रग का कठोर होता है। इसमे कठोरता के साथ कठिन दर्द भी होता है। यह सौदावी दोष से उत्पन्न होकर दुश्चिकित्स्य होता है, विशेषत जबकि इसके साथ पीला द्रव नाक से वहे तो यह अधिक दु साध्य एव भयावह होता है।

हेतु—प्रसेक एव प्रतिश्याय का निरतर बना रहना, पूतिनस्य का होना, नाक स्वच्छ न करना तथा मलिन रखना अर्थात् मलिन दोष इस रोग के हेतु है।

लक्षण—नाक के भीतर गुदार्शवत् अकुर (मस्सा) उत्पन्न हो जाता है जिससे साँस लेने मे रुकावट होती है। इससे प्राय पानी और कभी रक्त बहता है और

रोगी को प्राय प्रतिश्याय की शिकायत रहती है। मस्सा जितना बडा होता है, साँस लेने में उतना ही कष्ट होता है। कभी अकस्मात् मस्सा बढ जाने के कारण नाम का नथुना उभर कर चेहरा बेडौल हो जाता है और रोगी गुनगुना कर बोलता है। कभी यह बढ कर नाक का छिद्र बन्द कर देता है और कभी नाक और तालू से बाहर भी दृगोचर होने लगता है। जब इसका दबाव मस्तिष्क तक पहुँचता है, तब मानसिक क्रियाओ मे विकार आ जाता है।

चिकित्सा—कफज और सौदावी मे प्रथम यह दोषपाचन ओषधि (मुजिज) पिलाये—गुलबनफ्शा, पित्तपापडा पत्र, खतमी के बीज, सोंफ प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, गावजबान ८ माशा, सूखा मकोय ५ माशा। सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगो देवे और प्रात मल-छान कर ४ तोला गुलकन्द मिला कर पिला देवें। नवे दिन उक्त योग मे अमलतास का गुदा ४ तोला, तुरंजबीन ४ तोला, सनाय मक्की पत्र ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा और ७ दाने मग्ज बादाम का शीरा मिलाकर पिलावें। इसके दूसरे दिन तबरीद पिलाये। तीसरे दिन इसी योग मे काली हड, पीली हड और काबुली हड प्रत्येक ७ माशा और मिलाकर पिलाना आरम्भ करें और रात्रि मे सोते समय हब्ब इयारज ७ माशा गोघृत से स्नेहाक्त करके १२ तोला अर्क गावजबान के साथ दिया करे। इसी प्रकार एक-एक सप्ताह के अतर से दो और विरेचन देवे। विरेचनोपरान्त २ रत्ती प्रवाल ७ माशा अतरीफल उस्तूखुद्दूस मे मिला कर १२ तोला अर्क बादियान के साथ दिया करें।

यदि रक्त की प्रगल्भता हो तथा रोगी बलवान हो तो सरारू सिरा का वेधन करे और गुद्दी पर जोक लगवाये। तदुपरान्त निम्न तबरीद देवे—३ माशा बिहीदाने और ४ माशा गावजबान का लबाब तथा ५ दाने उन्नाब का शीरा पानी मे निकालकर २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिला देवे।

उपर्युक्त सशोधन के उपरान्त १ तोला अतरीफल उस्तूखुद्दूस, १० तोला अर्क गावजबान के साथ प्रति दिन सेवन करे। या अतरीफल शाहतरा ४ माशा, अर्क मुसफ्फीखून बनुस्खा कलाँ के साथ २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर दिया करे।

सशोधनोपरान्त निम्न ओषधियो का स्थानिक प्रयोग करे—

(१) जगार ३ माशा महीन पीसकर १ तोला शहद मे मिला कर उसमे रुई लथ करके नाक के भीतर रखे। इसके प्रयोग से जलन मालूम होती है। यदि जलन असह्य हो तो किंचित् घी लगा देवे। चार-पाँच दिन के प्रयोग से जलन भी प्रतीत नही होती। (२) जगार १ माशा फिटकिरी ४ माशा महीन पीस कर इसमे बत्ती लथेड कर नाक मे रखे। (३) नासार्शहर मलहर—मोम १० तोला, गीला बिरोजा १ तोला, १॥ तोला गुलरोगन मे गलाकर जगार

नीला थोथा, बोल, पीला, एलुआ, भुना हुआ सुहागा, भुनी हुई फिटकिरी और सेंदूर प्रत्येक २ माशा पीसकर मिला देवें और उपयोग करें।

यदि उक्त उपायो से कोई लाभ न हो तो सावधानीपूर्वक शस्त्रकर्म के द्वारा इसका छेदन करे और अवशिष्ट भागपर मूलोत्पाटन के लिये उपर्युक्त ओषधियो मे से कोई ओषधि लगा देवे।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, खिचडी, कद्दू, तुरई, कुलफा, टिंडा, पालक आदि की तरकारी देवे।

अपथ्य—गरिष्ट, बादी और वाष्पकारक पदार्थो से तथा गुड और तेल से परहेज करें।

९—एह्तिबासुश्शैफिल्अन्फ

नाम—(अ०) एह्तिबासुश्शैफिल् अन्फ, (उ० हि०) नाक मे कुछ अटक जाना, (स०) नासागतशल्य; (अ०) फॉरेन बॉडी इन दी नोज (Foreign body in the Nose)।

वर्णन—इस रोग मे नाक के भीतर कोई शल्य (जैसे मटर, चना आदि का दाना) फँस जाता है।

हेतु—यह रोग प्राय बालको को होता है। कभी पतग, मच्छड या जोक आदि कीट भी अज्ञानावस्था मे नाक के भीतर जाकर अटक जाते और महान् कष्ट का कारण बनते है।

लक्षण—जिस ओर के नथुने मे कोई शल्य होता है उसमे दर्द एव कष्ट का अनुभव होता है तथा उस ओर से प्राय द्रव बहता रहता है। कभी-कभी खाने-पीने के समय कोई वस्तु नाक मे चली जाती है जो प्राय उच्छू या छीक आकर निकल जाती है पर क्वचित् वहॉ अटककर कुथित हो जाती है और विराग, अनिद्रा, अरुचि, कृच्छ्र-श्वास, पीतवर्णता आदि उपद्रव की जनक होती है। इतना ही नही, प्रत्युत् उससे कभी व्रण बन जाता है, जिसके साथ ज्वर भी हो जाता है।

निदान—हेतु की विद्यमानता और घटना से इस रोग का निदान सरलता से हो सकता है।

चिकित्सासूत्र—मुख और जिस ओर के नथुने मे शल्य अटका हो उसके विपरीत ओर के नथुने मे से बलपूर्वक सॉस बाहर निकाले। ऐसा करने से प्राय अटकी हुई वस्तु (शल्य) निकल जाती हे अथवा छिक्काजनक ओषधियो के महीन चूर्ण का नस्य लेवें। दूसरे नथुने और मुँह को बन्द करके बलपूर्वक छीकें। बालको मे किसी मोचने आदि से शल्य निकालने का यत्न करें। यदि ऐसा करना

कठिन हो तो बालक को पीठ के बल लेटाकर ऊपर से उसका मुँह बन्द करके प्रथम विकारी नथुने मे और फिर विपरीत ओर के नथुने मे जोर से फूंक मार देवे। ऐसा करने से भी प्राय शल्य निकल जाया करता है।

चिकित्साक्रम—छिक्काजनक ओषधियो, जैसे—कुदूश, राई, कालीमिर्च, जुदवेदस्तर या खर्बक आदि मे से किसी एक या अधिक को महीन पीस कर नाक मे फूंके।

१०—सुद्दए खैशूम

नाम—(अ०) सुद्दए खैशूम, सुद्दतुल्अन्फ, (उ०) नथुने का बन्द हो जाना, (स०) नासानाह, नासाप्रतिनाह, (अं०) राइनोक्लाइसिस (Rhinocliesis), नेजल ऑब्स्ट्रक्शन (Nasal Obstruction)।

हेतु और लक्षण—इस रोग का हेतु पिच्छिल दोष या अधिमास अथवा (खुश्क रेशा) हुआ करता है, मिन्मिनत्व इसका लक्षण है।

चिकित्सा—आवश्यकतानुसार सशोधन के उपरान्त (१) जुदबेदस्तर को बोल एव केसर के साथ या अकेले १ रत्ती प्रमाण मे पीसकर नस्य देने से उपकार होता है। इसी प्रकार (२) मरूवा के रस का नस्य भी लाभकारी है। इसी प्रकार (३) मवीजज, अकरकरा ओर राई के काढे का गण्डूष और (४) गरम पानी का नस्य भी लाभकारी उपाय है। अधिमास के कारण हो तो नासार्श मे वर्णित ओषधियाँ लाभकारी हो सकती है।

११—बुसूर व कुरूहुल्अन्फ

नाम—(अ०) वुसुरूल्अफ, कुरूहुल् अन्फ, (उ०) नाक की फुसियाँ और जख्म, (स०) नासागत पिडका, नासापाक, (अ०) पस्च्युल्स ऑफ दी नोज (Pustules of the Nose), अल्सर्स ऑफ दी नोज (Ulcers of the Nose)।

वर्णन—इस रोग मे नाक के भीतर फुसियाँ और कभी व्रण (घाव) हो जाता है। नासापाक के ये तीन भेद होते है—(१) शुष्क, (२) आर्द्र और (३) दुर्गंधित वा दूषित।

हेतु—तीक्ष्ण एव उष्ण दोष की प्रगल्भता, विश्लेष, वाष्पारोहण और प्रसेकका अतर्भरण आदि। शुष्कपाक विदग्ध सौदावी की प्रगल्भता से हुआ करता है। आर्द्रपाक रक्त की प्रगल्भता एव उष्ण नजला से हुआ करता है।

लक्षण एवं निदान—नाक के भीतर खुजली होती है। पिडका की दशा मे पिडका और व्रण की दशा मे व्रण पाये जाते हैं। न्यूनाधिक खिचावट, टीस और लाली भी विद्यमान होती है। शुष्क व्रण की दशा मे उसके ऊपर कठिन खुरण्ड पाया जाता है जो रह-रहकर निकला करता है। दूषित व्रण मे नाक से दुर्गंध आती है तथा नाक से पूयमिश्रित दुर्गन्धित द्रव निकलता है।

चिकित्सासूत्र—नाक की खुजली मे चन्दन, कपूर, गुलाब आदि सूँघना और सिरका आदि नाक के भीतर लगाना लाभकारी है। पिडका और व्रण मे आवश्यकतानुसार प्रगल्भ दोष का शोधन करना और रसवत, मुरदासग, सफेदा काश्गरी, गिल अरमनी आदि को हरे कुलफा के रस मे पीस कर नाक के ऊपर लेप करना गुणकारी है।

चिकित्साक्रम—नासाकण्डु मे ३ माशा पीला एलुआ पानी मे पीस कर रोगी को पिलाये तथा उसमे वत्ती लथ करके नाक के भीतर रखवाये। नासागत पिडका एव व्रण मे अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या हब्बा बनफ्शा या हब्ब इयारज ७ से ९ माशा तक रात्रि मे सोते समय १२ तोला अर्क गावजबान के साथ दिया करे और गुलरोगन, रोगन कद्दू, रोगन नीलूफर या मीठे बादाम के तेल मे थोडा हरे धनिया का रस अर्क गुलाब मिलाकर नाक मे टपकाये।

१२—हुर्क़तुल्अन्फ

नाम—(अ०) हुर्क़तुल्अन्फ, (उ०) नाक की जलन, (स०) नासागत सक्षोभ, (अ०) नेजल इरिटेशन (Nasal Irritation)।

हेतु और लक्षण—बाहरी तौर पर नाक मे गरमी पहुँचकर या आन्तरिक रूप से तीक्ष्ण उष्ण बाष्प या तीक्ष्ण दोष गिरकर नाक की जलन का कारण होते हैं।

चिकित्सा—(१) अर्क गुलाब मे चन्दन को घिस कर उसमे कपडा तर करके नाक के भीतर रखें, (२) अर्क गुलाब मे गुलरोगन मिलाकर नाक के भीतर टपकाये और (३) कद्दू के तेल मे लडकीवाली स्त्री के दूध मे मिलाकर नस्य देवे। (४) कपूर सूँघने से भी उपकार होता है। कभी-कभी गरम और क्षोभकारक बाष्प के मस्तिष्क मे सचित होकर नाक की ओर आने से इस प्रकार की जलन होती है, जिससे आँसू जारी हो जाते हैं। इसके लिये आहार के सुधार से दोष शमन की अपेक्षा हुआ करती है।

१३—औरामुल्अन्फ

नाम—(अ०) औरामुल्अन्फ, (उ०, हि०) नाक का वरम (सूजन); (स०) नासा दाह, दीप्त, नासाशोथ, (अ०) अॅक्यूट राइनाइटिस (Acute Rhinitis)।

(अ०) बुसुल्ल्अन्फ, (उ० हि०) नाक की फुसियाँ, (स०) नासागत पिडका (अ०) पस्च्यूल्जनेजाई (Pustules Nasi)।

हेतु—कभी साद्र एव उष्ण रक्त से नाक मे उष्ण शोफ और फुसियाँ उत्पन्न हो जाती है। कभी सौदावी एव कफ दोष से इसमे कठिन शोथ एव कठिन फुसियाँ उत्पन्न होकर मस्सो के रूप मे (सार्कोमा) दिखलाई दिया करती है और श्वास-प्रश्वास मे न्यूनाधिक वाधक होती है।

लक्षण—उष्ण शोथ मे उसके विशिष्ट लक्षण, यथा–उद्वेष्टन, टीस एव लालिमा व्यक्त होती है। कठिन शोथ मे ये लक्षण नही होते। किंतु प्रत्येक दशा मे स्वर मे अवश्य अन्तर हो जाया करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यथावश्यक शोधन के बाद (१) कद्दू का तेल या (२) नीलूफर का तेल सिरका या अर्क गुलाब मे मिला कर टपकाने से लाभ होता है। नाक के भीतरी शोथ के लिये (३) तरबूज के बीज के मग्ज को अर्क गुलाब मे घिस कर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है। रोगी के बलवान होने की दशा मे (४) सराल सिरा का वेध करना भी लाभकारी है। (५) किंचित् लवण मिश्रित पुराने सिरका मे कपडा तर करके तीन बार नाक मे रखने से बहुत लाभ होता है। रोगजनक दोष के शीतल होने पर (६) गुलरोगन या अगूरी सिरका मे पीत एलुआ घिस कर नाक के भीतर लगाने से अच्छा लाभ होता है। नाक के घाव पर दिन मे दो-तीन बार (७) मक्खन लगाने से उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उपयुक्त सशोधन के पश्चात् (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला, १२ अर्क गावजवान के साथ सेवन करने से उपकार होता है और विशेष शुद्धि की भाँति (२) हब्ब बनफ्शा या (३) हब्ब इयारज यथा प्रमाण यथा विधि उपयोग करना लाभकारी है। सतापशमन के लिये (४) सेव का मुरब्बा २ तोला या (५) गाजर का मुरब्बा २ तोला १२ तोला अर्क गावजवान के साथ २ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर उपयोग करने से अद्भुत लाभ होता है।

सिद्धयोग—जबकि नाक का बाहरी घाव विलीन न हो, तब उसको पकाने के लिये निम्न ओषधि का प्रयोग करे—कनौचा के बीज, रैहाँ के बीज, अलसी, मेथी, विलायती अजीर, सब बराबर-बराबर लेकर हरे मकोय के रस मे पीस कर किंचित् मधु मिला कर पकायें और सूजन पर लेप करें। जब व्रण शोथ पक कर

फूट जाय, तब शहद के पानी से धोये और व्रणरोपण के लिए मुरदासग आदि मलहर उपयोग करे। उष्ण शोथ मे आहारस्वरूप धोई हुई मूँग की दाल, पालक और कुलफा का साग, गेहूँ की रोटी, यवमड और शीतल शोथ मे इसके विपरीत उष्ण पदार्थ सेवन कराये।

मुखरोगाध्याय (अमराजुल्फ़म) ५

नाम—(अ०) अम्राजुल्फम, (उ० हि०) मुँह के रोग (बीमारियाँ), (स०) मुखरोग; (अ०) डिजीजेज ऑफ दी माउथ (Diseases of the mouth)।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यक मे मुखरोगो मे निम्न रोगो का अतर्भाव होता है—(१) ओष्ठ रोग, (२) मुख रोग, (३) जिह्वा रोग, (४) मूर्धा रोग, (५) दन्त रोग और (६) दन्तवेष्टगत रोग। आगे इनमे से प्रत्येक का अलग-अलग अनुच्छेदो मे क्रमश वर्णन किया गया है।

१—ओष्ठरोगानुच्छेद (अम्राजुश्शफत)

नाम—(अ०) अम्राजुश्शफत, (उ० हि०) होठो की बीमारियाँ (रोग), (स०) ओष्ठरोग, (अ०) डिजीजेज ऑफ दी लिप्स (Diseases of the Lips)।

१, २, ३—वरमुश्शफत, बुसूरुश्शफत, कुरूहुश्शफत

नाम—(अ०) वरमुश्शफत, (उ० हि०) होठ की सूजन, (स०) ओष्ठ-प्रकोप, ओष्ठशोथ, (अ०) इन्फ्लामेशन ऑफ दी लिप्स (Inflammation of the Lips)।

—(अ०) बुसूरुश्शफत, (उ०, हि०) होठ की फुन्सियाँ, (स०) कफज, पित्तज और सन्निपातज ओष्ठप्रकोप, (अ०) हर्पीज लेबिएलिस (Herpes Labialis)।

—(अ०) कुरूहुश्शफत; (उ० हि०) होठ का जख्म (घाव), (स०) ओष्ठ-व्रण, (अं०) अल्सर ऑफ दी लिप्स (Ulcer of the Lips)।

वर्णन—दोनो होठो पर और कभी एक ही होठो पर विशेषकर नीचे के होठो पर फुसियाँ निकल आती है। कभी इन फुसियो मे पीप पड कर व्रण बन जाते है जिन्हे 'कुरूहुश्शफ़त' कहते है। कभी दोष की प्रगल्भता के कारण होठो मे शोथ हो जाता है और उसमे जलन एव खुजली होती है। इसे 'वरमुश्शफत' कहते है।

हेतु—रक्त वा पित्त की तीक्ष्णता, पाचन-विकार, यकृत् की उष्ण विप्रकृति (यकृत् मे गर्मी बढ जाना), होठो का क्षोभ, सर्दी लगना या नजला गिरना अथवा मक्खी या च्यूँटी आदि का काटना इसके हेतु है। प्रत्येक दोष अपने विशिष्ट लक्षणो से पहिचाना जा सकता है।

लक्षण—विकारी होठ पर दाने या फुसियाँ निकल आती है, जो पीले रग की एव छोटी-छोटी होती है। इनके परस्पर मिलने से गुच्छा-सा बन जाता है, इनसे पीले रग का द्रव बहता है जो कभी-कभी निर्यासवत् जम जाता है और खुरण्ड-सा बन जाता है। कभी-कभी होठ पर केवल सूजन होती है। उक्त अवस्था मे होठ मे दर्द एव टीसे होती है और एक प्रकार की जलन मालूम होती है। कुरुहश्शफत मे पीप होती है और वरमुश्शफत मे होठ सूजे हुए होते है।

चिकित्सा—यदि किसी दोष के प्रकोप से यह रोग हो तो अनुकूल दोष के तत्त्व का शिरोवेध एव विरेचन द्वारा शोधन करे। यदि अन्य कारण से हो तो मूल हेतु को ज्ञात करके दूर करने का यत्न करें। पाचन-विकार हो तो उसका सुधार करें। यकृत् मे ऊष्मा बढ गई हो तो उसका समुचित प्रतीकार करे। कब्ज नही होने देवे। सुतरा कब्ज निवारण के लिये अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या कुर्श मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि मे सोते समय पाव भर दूध के साथ खिला दिया करे। अफतीमून विलायती १ तोला रात्रि मे गरम पानी मे पोटली बाँध कर भिगो देवें और प्रात काल पका-छान कर २ तोला मिश्री मिला कर पिला दिया करे। सूजन के लिये यह लेप गुणकारक है—रसवत, गुलबाबूना और जौ का आटा प्रत्येक ६ माशा, सबको आवश्यकतानुसार अर्क गुलाब और मकोय की पत्ती के रस मे पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करे। फुसियो पर मरहम काफूर लगाये या सफेदा काशगरी ३ माशा, कपूर १ माशा, गिले अरमनी ३ माशा महीन पीसकर १ तोला मक्खन मे अथवा यथावश्यक इसबगोल के लबाब मे मिला कर फुसियो पर लगाये।

पथ्य—मूँग की खिचडी, दूध, डबल रोटी, कद्दू, तुरई, पालक, मूँग की दाल आदि।

अपथ्य—तेल, अम्ल, गुड, मसालेदार तीक्ष्ण, नमकीन और वादी एवं गरिष्ठ पदार्थो से परहेज करें।

४,५,६,७—अश्शोकाकुश्शफत व जफाफुश्शफत

नाम—(अ०) तशक्ककुश्शफत, (उ० हि०) होठ फटना, (स०) वातज ओष्ठ प्रकोप, (अ०) क्रैक्ड लिप्स (Cracked lips) ।

(अ०) तकश्शरुश्शफत, (उ० हि०) होठ छिलना, (स०) वातज वा मारुतज ओष्ठ प्रकोप, (अ०) चैप्ड लिप्स (Chapped lips) ।

(अ०) जफाफुश्शफत, (उ० हि०) होठ की खुश्की (रूक्षता), (स०) वातज ओष्ठ प्रकोप ।

(अ०) बयाजुश्शफत, (उ० हि०) होठ सफेद हो जाना ; (स०) ओष्ठ शौक्ल्य । (अ०) ल्युकोलेबियम (Leuco-labium) ।

वर्णन और हेतु—प्राय सर्दी के कारण होठ फट जाते है और दरार पडकर कभी उनसे रक्त भी बहने लगता है । कभी होठो पर रूक्षता हो जाती है । कभी रूक्षता के प्रकोप एव विदग्ध दोष के कारण भी होठ फट जाते हैं । कभी इसके साथ होठ के छिलके भी उतरते हैं, जिससे 'तकश्शरुश्शफ़ता' कहते हैं । कभी अग्निमान्द्य के कारण अपक्व श्लेष्मल द्रव रक्त मे मिलकर होठ को सफेद कर देते है, जिसे 'बयाजुश्शफता' कहते है ।

लक्षरण—चारो के लक्षण स्पष्ट हैं ।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगाकर दूर करे । पाचन ठीक न हो तो उसको ठीक करें । यकृत् मे ऊष्मा बढ गई हो तो उसका समीचीन प्रतीकार करे । फटे हुए या छिलका उतरे हुए होठो पर इसबगोल या विहीदाना अथवा रेशा खतमी इनके लबाब मे कपडा तर करके बारबार रखें अथवा समूचे इसबगोल को पोटली मे बाँध कर पानी मे भिगोकर बारबार होठ के ऊपर फेरे । दिन मे दो वार गाय का मक्खन लगाये या मरहम इस्फेदाज लगाये । सौदा का शोधन करे । रात्रि मे अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलाएँ । बयाज (ओष्ठशौक्ल्य) मे कफ का शोधन करे और प्रात काल फौलाद भस्म २ चावल, ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर और रात्रि मे अतरीफल उस्तूखुद्दूस ९ माशा खिलाये ।

पथ्यापथ्य—तकश्शुर और तशक्कुक मे ओष्ठगत पिडका-(बुसूर लब) की भाँति पथ्यापथ्य का पालन करे । बयाज लब (ओष्ठशौक्ल्य) मे सब्जियो एव जानवरो के कले पाचे से परहेज करे । और ऐसे आहार देवे जिनमे स्नेह एव पिच्छिलता कम हो । यथा—एक साला भेड के बच्चे का मास । मसालेदार आहार भी लाभकारी है ।

८—बवासीरुश्शफत

नाम—(अ०) बवासीरुश्शफत, बवासीर लब, (उ० हि०) होठ का बवासीर, (अ०) एपिथेलिओमा ऑफ दी लिप (Epithelioma of the lip)
(अ०) सर्तानुश्शफत, (उ०) होठ का सर्तान ; (अ०) कैन्सर ऑफ दी लिप (Cancer of the lip) ।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यो ने 'होठ के बवासीर' के विषय मे यह विवरण किया है कि इसका सघटनकारी तत्त्व (माद्दा) सतनि जैसा होता है। सुश्रुतोक्त रक्तज और मासज ओष्ठ-प्रकोप तथा वाग्भट (अष्टाग सग्रह) का अर्बुद होठ का सर्तान वा बवासीर ही ज्ञात होता है।

वर्णन और लक्षण—साधारणतया निचले होठ मे अगूर या तूत के बराबर तथा इनके सदृश नीले या काले रग का उभार उत्पन्न हो जाता है। कभी होठ फटकर मोटा हो जाता है और उसमे एक चट्ठा या घाव हो जाता है। कभी ऊपर का होठ भी इस रोग से आक्रात हो जाता है। कभी होठ मे गाठे-सी पड जाती है। ग्रीवा और निम्न हनुकी ग्रन्थियाँ फूल जाती है। कभी इनमे घाव हो कर मृत्यु हो जाती है। प्रारम्भ मे इसमे दर्द नही होता। पर अन्त मे तीव्र दर्द एव रक्तस्राव भी होता है।

हेतु—विदग्ध रक्त वा पैतिक दोष का होठो की ओर गिरना इसका हेतु होता है। जो पाइप या हुक्का की नै या खाने के तमाकू के निरतर होनेवाले क्षोभ से होठो की ओर गिरता और वहाँ इस रोग को उत्पन्न करता है।

चिकित्सा—सरारू और चहाररगकी फस्द खोलें। सौदा का शोधन करे। माउज्जुब्न का उपयोग करे और अतरीफल अफ्तीमून ९ माशा, १२ तोला अर्क सहतरा के साथ देवे। होठ पर मरहम जदवार लगाये।

वक्तव्य—इस रोग मे साधारणत ओषधियो से लाभ नही होता। अतएव विकारी अग का छेदन कर होठ को सी देना चाहिये।

पथ्यापथ्य—दुसूरुश्शफत की भाँति।

९—इख्तिलाजुश्शफत

नाम—(अ०) इख्तिलाजुश्शफत, (उ० हि०) होठ फडकना, (स०) ओष्ठस्फुरण, (अ०) लेबियोकोरिया (Labiochoria) ।

हेतु और लक्षण—यह रोग प्राय आमाशयिक द्वार के अनुबन्ध से प्रगट हुआ करता है और इसके साथ मिचली और हिचकी भी पाई जाती है। कभी-कभी

तीव्र व्याधियो मे वोहरान के अवसर पर यह प्रकट होता है और कभी मस्तिष्क के अनुवन्ध से। प्रथमोक्त मे इस प्रकार का ओष्ठस्फुरण वमन का पूर्वरूप समझा जाता है और अतिमोक्त दशा मे अर्दित या अपस्मार की भूमिका (पूर्व-रूप)। होठ के बारीक स्रोतसो मे रक्तसचय होने अथवा सान्द्र वायु से भी प्रकट होता है। अस्तु, प्रथम भेद मे मिचली और हिचकी तथा द्वितीय भेद मे वोहरान, तृतीय भेद मे मानसिक विकार और चतुर्थ भेद मे रक्त की प्रगल्भता तथा वायु के लक्षण पाये जाते है।

असंसृष्टद्रव्योपचार—यदि मिचली सम्मिलित हो तो निम्नलिखित असंसृष्ट वामक ओषधियो द्वारा वमन कराने से ओष्ठस्फुरण निवृत्त हो जाता है। अस्तु, (१) हर प्रकार का लवण ९ माशा की मात्रा मे गरम पानी मे घोल कर पेट भर पिलाना या (२) गन्ना चूसने के बाद गरम पानी पीना या (३) चार तोला सिकजवीन गरम पानी मे मिला कर पिलाने से वमन होता है। यदि मस्तिष्क विकार के कारण हो तो अर्दित और अपस्मार मे लिखित ओषधियाँ उपयोग कराएँ। रक्त के प्रकोप की दशा से कीफाल की फस्द खोले। यदि पुन आवश्यकता हो तो पाँच-छ दिन के बाद चहार रग या जिह्वाधोगासिरा से भी रक्त मोक्षण करे। तदुपरान्त पित्तपापडा आदि का काढा पिलाये। इसके अतिरिक्त अवरोधोद्घाटक ओषधियो विशेषत उपयुक्त कैरूतियो और बलवर्द्धक तेलो के उपयोग से इस दशा मे बहुत लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उपयुक्त सशोधन के पश्चात् रक्तज ओष्ठस्फुरण मे (१) अतरीफल शाहतरा ९ माशा, २ तोला शर्बत उन्नाब मिला कर १२ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून के साथ सेवन करने से लाभ होता है। वायुजन्य ओष्ठस्फुरण तथा इख्तिलाज मेदी इम्तिलाई मे उसको वमन और विरेचन से शुद्ध करने के पश्चात् बलप्रदान करने के लिये (२) जुवारिस अनारैन ७ माशा या (३) जुवारिश तमर्राहदी ९ माशा या (४) जुवारिश मस्तगी बनुस्खा कलाँ ९ माशा या (५) जुवारिश जालीनूस ५ माशा या (६) जुवारिश कमूनी १ तोला मे से कोई एक अकेले या ६ तोला अर्क गावजबान या बादियान और अर्क मकोय के साथ उपयोग करने से लाभ होता है। (७) मस्तिष्क के अनुबन्ध से होनेवाले ओष्ठस्फुरण मे अर्दित एव अपस्मार की चिकित्सा को ध्यान मे रखते हुए उपाय करे।

१०—तकल्लुसुश्शफतैन

नाम—(अ०) तकल्लुसुश्शफतैन, (उ०, हि०) होठ सिकुडना; (स०) ओष्ठाक्षेप, (अ०) लेबियोस्पैज्म (Labiospasm)।

इस रोग का कारण या तो कोई सहज दोष हुआ करता है अथवा दोष सचय या सशोधन जन्य आक्षेप। कभी-कभी यह अवस्था आसन्नमरण काल मे उपस्थित होती है। रोगी से प्रश्न करना चाहिये कि उसे कितने दिन से यह रोग हुआ है। उसके उत्तर से यह ज्ञात हो जायगा कि सहज है या जन्मोत्तर। यदि आक्षेपजन्य सिद्ध हो तो यह देखना आवश्यक है कि दोषज अर्थात् दोषसचय जनित है वा रूक्ष (सशोधन जनित)। इस प्रकार का भेद करने के लिये पूर्वगत हेतु का अध्ययन करना चाहिये। सहजरोग मे यदि रोगी वर्धनकाल एव शैशवावस्था मे हो तो खीचकर सीधा करने, धीरे-धीरे मलने और बाँधने से आराम होना सभव है। यदि दोषसचयजनित आक्षेप के कारण हो तो कफ का शोधन और गरम तेलो की मालिश से लाभ होगा। किन्तु सशोधन जनित आक्षेप की चिकित्सा असभवित है। साराश इस रोग मे आक्षेप के सभी उपाय एव उपदेश को अवश्य ध्यान मे रखना चाहिये।

११—तशक्ककुश्शदकैन

नाम—(अ०) तशक्ककुश्शदकैन, (उ०, हि०) बाछ फट जाना; (अ०) थ्रश (Thrush)।

हेतु और लक्षण—यह एक सक्रामक रोग है जो एक से दूसरे को लग जाता है। इसमे बाछो का रग श्वेत या सब्जीमायल (हरिताभ) हो जाता है और मुँह खोलने पर अधिक कष्ट अनुभव होता है। यह रोग साधारणतया बालको को मस्तिष्कीय क्षारीय प्रसेक के कारण या दूध की खराबी से हो जाता है और अधिकतया इस रोग के रोगी के गिलास आदि मे जल आदि पीना इस रोग का हेतु हुआ करता है।

वक्तव्य—सामान्यत यह रोग मुखकोण मे होठ के भीतर की ओर तथा जिह्वा के नीचे हुआ करता है, पर कभी-कभी यह कण्ठ, अन्नमार्ग तथा आमाशय तक भी फैल जाता है और उस समय निगलने, बोलने और साँस लेने मे कष्ट हुआ करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) माजू को सिरका मे पकाकर उससे गण्डूष (कुल्ली) करें। बालको मे (२) जोक लगवाना और (३) ग्रीवा के पीछे

पछने लगाना सिरावेध (फस्द) का स्थानापन्न एव लाभकारी है। (४) हजरुल् यहूद गुलरोगन मे घिसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—यथावश्यक उपयुक्त सशोधन के पश्चात् (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल शाहतरा ९ मशा १२ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ उपयोग करने से मस्तिष्कीय प्रसेक एव विदग्धदोष क्रमश उत्सर्गित होते, आमाशय की शुद्धि होती, दोषो की तीक्ष्णता एव उष्णता शमन होती है। इसी प्रकार आमाशय के अनुबध मे (३) जुवारिश जालीनूस ७ माशा अकेले या ६ तोला अर्क शाहतरा और ६ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करते रहने से बहुत उपकार होता है।

सिद्धयोग प्रलेप—(१) भारतीय सफेद कत्था और मुरदासग प्रत्येक ३ माशा बारीक पीसकर मक्खन मे मिलाकर बाछो पर लगाये। यह बाछो के फटने मे कृतप्रयोग एव लाभकारी है। (२) पीला रसवत और मुरदा सग सम भाग लेकर अर्क गुलाब मे घिसकर बाछो पर लेप करे।

पथ्यापथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार देवे। गर्म, खुश्क एव गरिष्ठ और मधुर पदार्थो से परहेज करें।

१२—औरामो अल्वज्हे व अल्हय्यत

नाम—(अ०) औरामो अल्वज्हे व अल्हय्यत, (उ०, हि०) चेहरा और जबडो का वरम (सूजन), (स०) मुख तथा हनुशोथ, (अ०) स्वेलिग आफ दी फेस एण्ड जॉज (Swelling of the face and jaws)।

यदि चेहरे की सूजन के साथ यकृद्दौर्बल्य के लक्षण प्रगट हो तो उसी का उपद्रव समझे। यदि प्रसेक (नजला) के लक्षण पाये जाएँ तो नजला को ही इसका हेतु समझे। पर यदि सूजन के साथ खुजली और जलन भी हो तो इसे मुखगत विसर्प (माशिरा) समझे।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आरजी शोफ के लिये (१) ९ माशा मकोय १० तोला अर्क कासनी मे काढा करके ४ तोला शर्बत बजूरी और ७ माशा खाकसी मिलाकर पिलाये। प्रसेकजनित शोथ मे (२) प्रसेक (नजला) की चिकित्सा पर्याप्त होती है। मुखगतविसर्प मे (३) सरारू की फस्द कराये। कपोलगत शोथ अधिकतया रक्तज और क्वचित् प्रसेकज होता है। रक्तज मे सरारू की फस्द के पश्चात् (४) ६ माशा बिहीदाने का लुआब, ४ तोला शर्बत

उन्नाव के साथ पिलाये। (५) मकोय या (६) गुल खतमी या (७) अमलतास के गूदे का लेप करे। वायु शीतल हो तो पीने की औषधि काढा के रूप मे देवे और प्रलेप की भाँति कतिपय सूजन उतारने वाली औषधियो, जैसे (८) बाबूना और (९) इक्लीलुल्मलिक आदि का उपयोग करे।

ससृष्ट द्रव्योपचार—मुखगत विसर्प एव प्रसेक रोग का हेतु होने की दशा मे यथाप्रकृति शोधन करने के पश्चात् मूल व्याधि की चिकित्सा ध्यान मे रखते हुए (१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला या (२) अतरीफल शाहतरा ९ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ उपयोग करने से लाभ होता है। यकृद्दौर्बल्य के क्रम मे (३) अनोशदारू सादा या लूलुवी ७ माशा ६ तोला अर्क बादियान और ४ तोला अर्क अवर के साथ उपयोग करने से उपकार होता है। जलोदर की दशा मे मूल व्याधि के उपचार को ध्यान मे रखते हुए (४) ६–६ तोला अर्क सौफ और बिरजासिफ मे ७ माशा सौफ और ३ माशा कुसूस के बीजो के निकाले हुए शीरा के साथ माजून दबीदुलवर्द ७ माशा और शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर सेवन करने से बहुत लाभ होता है। इसी प्रकार (५) १२ तोला अर्क बिरजासिफ मे ३ माशा कुसूस के बीज और ७ माशा सौफ के निकाले हुए शीरा के साथ माजून कलकलानज ७ माशा, शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर सेवन करने से इस रोग मे बडा उपकार होता है।

सिद्ध योग—(१) प्रसेकज शोथोपयोगी प्रलेप—नीम की पत्ती, जदवार गेरू, रसवत और लालचदन सबको बराबर-बराबर लेकर हरे मकोय के रस मे पीसकर यथाविधि कुनकुना लेप करे। प्रसेकज शोथहरी गण्डूष—झाऊ अकरकरा, मकोय और पोस्ते की डोडी प्रत्येक ४ माशा यथाविधि क्वाथ कर के गण्डूष कराये। उष्ण शोथोपयोगी रक्तज शोथ (मुखगतविसर्प) हारी प्रलेप—सफेद और लाल चदन, पीत रसवत, गिल अरमनी, छिला हुआ मसूर, सुपारी प्रत्येक ७ माशा सबको हरे मकोय, हरे कुलफा और हरे धनिया के रस मे पीसकर गुलरोगन और सिरका प्रत्येक १–१ तोला मिलाकर सूजन के ऊपर लेप करे।

पथ्यापथ्य—लघु, शीघ्रपाकी एव शीतल आहार, कद्दू, पालक और यवमण्ड, शर्बत अनार मिलाकर उपयोग करे।

मुख-जिह्वा-मूर्धरोगानुच्छेद २

नाम—(अ०) अम्‌रजुल्फम वल्लिसान वल्हनक, (फा०) अम्‌राज दहन व जबान व काम, (हि०) मुख, जिह्वा और तालू के रोग, (स०) मुखजिह्वामर्धारोग, (अं०) डिजीजेज ऑफ दी माउथ, टग एण्ड पैलेट (Diseases of the mouth, Tongue and palate)।

मुखरोग

१—कुलाउल्फम व आकिलतुल्फम

नाम—(अ०) कुलाअ, कुलाउल्फम् ; वरमुल्फम; (फा०) जोशश दहन, (उ०, हिं०) मुँह आना, मुँह पकना, मुँह फूलना, (स०) मुखपाक, (अ०) थ्रश (Thrush) स्टोमॉटायटीज (Stomatitis)।

(अ०) बुसूरुल्फम, बुसूर दहन, (उ०, हि०) मुँह के दाने, छाले या फुसियाँ, निनावा, (स०) मुखपाक, (अ०) ऑथी (Apthi), अफ्थज स्टोमॉटायटीज (Aphthous Stomatitis)।

(अ०) कुरूहुल्फम, (उ०, हि०) मुँह के जख्म (घाव), (स०) मुखव्रण, (अ०) अल्सरेटिह्व स्टोमॉटायटीज (Ulcerative Stomatitis)।

(अ०) आकिलतुल्फम, दब्बावा, फा०) खुरद दहन, (उ०, हि०) मुँह की सडन, मुँह सडना-गलना, (स०) महाशौषिर; (अ०) कैन्क्रम ऑरिस (Cancrum Oris), गैन्ग्रीनस स्टोमॉटायटीज (Gangrenous Stomatitis)।

वक्तव्य—उपर्युक्त सभी रोग एक ही जाति के (प्रकार के) है। अतएव इन सबका एक साथ एक ही स्थान मे वर्णन किया गया हे।

वर्णन—इन समस्त रोगो मे रोगी के मुख के भीतर होठ, जिह्वा, कपोल, तालू और कण्ठ आदि मे विशेष प्रकार की पिडकाये वा व्रण हो जाया करते हैं। यूनानी वैद्यक के मत से इन सभी रोगो मे उष्ण एव दूषित आमाशयस्थ वाष्प या ऐसी व्याधियो के प्रकोप से जिनमे दोष के भीतर दूषित एव दुर्गंधित पैत्तिक वातिक दोष (सफरावी मवाद्द) का ससर्ग हो जाता है, मुख एव कण्ठ आदि की श्लैष्मिक कला मे शोथ होकर पिडका एव व्रण उत्पन्न हो जाते हैं।

कुलाअ मे मुख और जिह्वा की झिल्ली के बाह्य स्तर मे व्रण होते है जो सफेद-सफेद धब्बो की तरह प्रारभ होकर फैलते जाते हैं। वरम फम मे मुख के भीतर की झिल्ली शोथयुक्त एव लाल हो जाती है।

कुरूहुल्फम मे जिह्वा के ऊपर, होठो के भीतर की ओर और बहुताश मे मसूढो के ऊपर गभीर नीलवर्ण (अर्गवानी रग) के व्रण हो जाते हैं, जिन पर मुलायम मटियाले रग का मल लगा रहता है। इस मल को साफ करने पर रक्त निकलने लगता है।

बुसूरुल्फम मे खाकस्तरी मायल या सफेद रग की छोटी-छोटी पिडकाये (फुसियाँ) मसूढो, जिह्वा, होठो और कपोलो के भीतर की ओर उत्पन्न हो जाती है, जो बिन्दुवत् दिखाई देती है ।

आकिलतुल्फम—जब कुलाअ उन्नति करके (बढकर) पुराना हो जाय और मुख मे दुर्गन्ध एव व्रण उत्पन्न हो जाय, तब उसको आकिलतुल्फम कहते है । यह एक प्रकार का तीव्र एव साघातिक व्रण है, जो साधारणतया कपोलो के भीतर की ओर उत्पन्न होकर अति शीघ्र फैल जाता तथा कपोल आदि को मृत कर देता है । प्राचीन-यूनानी हकीम कुलाअ (मुखपाक) के ही एक दुष्ट (खबीस) प्रकार मे इसका अतर्भाव करते है । अस्तु, जालीनूस इसको कुरूह खबीसा (दुष्ट व्रण) के नाम से अभिधानित करता है । कोई-कोई हकीम इसको 'ठव्वाबा' भी कहते है ।

भेद—हेतु के विचार से कुलाअ के कतिपय निम्न भेद होते है —कुलाअ हार्र दम्वी व सफरावी (रक्तज और पित्तज मुखपाक), कुलाअ बल्गमी (कफज मुखपाक), कुलाअ सौदावी (सौदाजन्य मुखपाक), कुलाअ आतशकी (फिरङ्गीय मुखपाक—(Syphilitic Stomatitis), कुलाअ सीमाबी (पारदीय मुखपाक—Murcurial Stomatitis) कुलाए अतफाल (शैशवीय मुखपाक—Infantile Stomatitis) इत्यादि ।

हेतु—यह रोग शिशुओ को विशेषकर उन शिशुओ को अधिक होता है, जिनको निकृष्ट और दूषित या बाजारू दूध दिया जाता है । इसके साधारण भेदो की उत्पत्ति अधिक उष्ण वा तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थ अथवा पैत्तिक दूषित दोष आदि से होती है । तमाकू, सिगरेट आदि का अति सेवन, कब्ज, अजीर्ण, बालको मे दन्तोद्भेद, किसी सडे-गले दाँत का मुख मे क्षोभ उत्पन्न करना, नाक वा कण्ठ की सूजन का मुख की ओर बढ जाना और रक्तविकार भी इस रोग के हेतु होते है । कभी-कभी पारा, रसकपूर, भिलावा आदि विष द्रव्यो के उपयोग अथवा कतिपय प्रकार के तीव्र विषमय रोगो, जैसे आतशक एव तीव्र ज्वर आदि से भी यह रोग हो जाया करता है ।

लक्षण और निदान—सादे भेद मे मुख के भीतर जलन एव दर्द होता है । खाने-पीने और बोलने मे कष्ट प्रतीत होता है । मुख से राल (लाला) बहती और दुर्गन्ध आती है । जिह्वा मल से आलिप्त होती है या उसपर सफेद रग के कण (दाने) या लाल रग के चट्ठे पडे हुए होते है, जिनको यदि साफ किया जाय तो लाल रग का घाव प्रगट हो जाता है । कभी-कभी न्यूनाधिक रक्त भी निकल आता है । बुसूरुल्फम मे तीव्र प्रकार का दर्द होता है । उष्ण मुखपाक (कुलाअ हार्रमे) मुख के भीतर कफज और सौदावी की अपेक्षया किञ्चित् अधिक उभरे हुए

धब्बे होते हैं। रक्तज मे उनका वर्ण (रगत) लाली लिये और पित्तज मे पिलाई लिये होता है। कफज मे घाव एव दानो (फुसियो) का रग सफेद होता है और दर्द कम होता है; किन्तु मुख से राल अधिक बहती है। सौदावी मे घाव की रगत स्याही मायल (कालाई लिये) होती है तथा उनमे जलन एव रूक्षता (खुश्की) होती है। फिरगीय मुखपाक मे घाव गोल लाली लिये ताम्रवर्ण के होते हैं और सदैव फिरग की द्वितीय कक्षा मे व्यक्त होते हैं और साधारणतया मुखकोण, तालू या जिह्वामूल के ऊपर कण्ठ मे होते हैं। पारदीय मुखपाक मे मुख का आस्वाद कषाय होता है ओर पुष्कल लाला स्राव होता है। मसूढे लाल एव सूजे हुए होते हैं। दाँत ढीले एव वेदनापूर्ण होते हैं तथा चबाने मे अत्यन्त कष्ट प्रतीत होता है। तीव्र विषमयता मे मसूढे गल जाते और दाँत गिर पडते हैं (महाशौषिर। आकिल-तुल्फम) मे कोई एक कपोल शोथयुक्त होकर चमकीला-सा हो जाता हे। उसके भीतर की ओर खाकस्तरी मायल दाग-सा प्रगट होकर फैलता जाता है, जो क्रमश गभीर रक्तवर्ण होकर स्याही मायल (कालाई लिये) हो जाता है। मुँह से तीव्र एव अप्रिय प्रकार की दुर्गन्ध आती है। पुष्कल लार बहती है, जिसके साथ तीव्र ज्वर भी हो जाता है, अतत कपोल गलकर उसमे छिद्र हो जाता है। दाँत गिर जाते हैं। होठ और हनु (जबडा) मृत हो जाते हैं। यदि सम्पूर्ण विकृत (दूषित) भाग का शीघ्र छेदन कर पृथक् न कर दिया जाय, तो थोडे दिन मे रोगी मर जाता है।

प्रगति और परिणाम—महाशौषिर बहुत करके साघातिक होता है। कभी-कभी प्रसेकीय (नजलावी) एव पैत्तिक-प्रकार का मुखपाक कण्ठ की ओर प्रसृत होकर अन्नमार्ग तथा आमाशय तक पहुँच जाता है। उक्त अवस्था मे रोगी को खाने-पीने मे बहुत कष्ट होता है तथा वह अत्यन्त दुर्बल हो जाता है। कभी-कभी उसको विरेक (दस्त) आने लगते हैं तथा रोग साघातिक रूप ग्रहण कर लेता है। परन्तु; ऐसा प्राय उस समय होता है जबकि चिकित्सा मे असावधानी की जाय।

चिकित्सा—निदान परिवर्जन करे। अत्यन्त तमाकू या सिगरेट पीने तथा गरम मसालेदार आहार आदि के सेवन से यह रोग (मुखपाक) हुआ हो तो इनका परित्याग कर देवे। अजीर्ण हो तो उसका उचित उपचार करें। मलावरोध हो तो कुर्स मुलय्यिन ४ टिकिया रात्रि मे सोते समय पाव भर कुनकुना गोदुग्ध के साथ सप्ताह मे दो बार सेवन करायें। किसी सडे-गले दाँत के कारण हो तो दाँत निकलवा देवे। बालको मे दन्तोद्भेद के कारण हो तो उसका उचित उपाय करे।

रक्तप्रकोप वा रक्त की अधिकता के कारण हो तो सराऊ, कीफाल या हफ्त

अदाम वा चहार रग आदि का सिरावेध (फस्द) करें या ठुड्ढी (चिबुक) के नीचे जोक लगवायें। मुँह की लाली और गरमी एव जलन आदि की अधिकता देखकर रक्तप्रकोप का ज्ञान करे और निम्न तबरीद (ठढाई) का योग पिलाये--

बिहीदाना ३ माशा, अर्क गावजवान मे भिगोकर लुआब निकाले और उन्नाव ५ दाना, कद्दू के बीज का मग्ज ३ माशा, तरबूज के बीज का मग्ज ३ माशा, काले कुलफा के बीज ३ माशा सबको अर्क गावजबान से पीसकर शीरा निकालकर उक्त लुआब मे मिलाकर ४ तोला शर्बत उन्नाव घोलकर प्रात सायकाल पिलाये। मेहदी के पत्ते पानी मे उबालकर उसमे १ माशा कपूर मिलाकर कुल्ली कराये। जहरमोहरा और कबावचीनी १-१ माशा, वशलोचन, सफेद कत्था, गुलाब का जीरा और छोटी इलायची १-१ माशा बारीक पीसकर मलमल के कपडे मे छानकर दिन मे दो-तीन बार मुँह मे थोडा-थोडा छिडके।

यदि क्षारीय कफ की अधिकता से हो तो छिली हुई, मुलेठी हसराज और गावजबान प्रत्येक ५ माशा, छोटी इलायची ३ माशा जल मे पका-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिलाये और मूली के बीज १ तोला, अकरकरा ६ माशा जल मे उबालकर गण्डूष (कुल्ली) कराये।

यदि सौदा के प्रकोप से यह रोग अर्थात् कुलाअ सौदावी हो तो प्रथम कुछ दिन ठढाई के उस योग का प्रयोग करे, जिसका उल्लेख प्रथम रक्तप्रकोप की चिकित्सा मे हो चुका है। यदि उससे कुछ भी लाभ मालूम न हो तो निम्न फांट का प्रयोग करे--पित्तपापडा, चिरायता, सरफोका, मुडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, कालीहड ७ माशा, उशबा मगरबी ७ माशा (शीत ऋतु मे) या लाल चदन ७ माशा (उष्ण ऋतु मे) और सूखा मकोय ५ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर दस ग्यारह दिन तक पिलाये। इसके बाद इस योग मे ५ माशा अफसतीन पोटली मे बाँधकर बसफाइज फुस्तुकी, काली हड, पीलीहड, काबुली हड प्रत्येक ५ माशा, सनाय मक्की ७ माशा बढाकर शाम को पहले की भाँति भिगो देवें और प्रात काल मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकद ४ तोला, तुरजबीन ४ तोला ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा योजित करके देवे। या केवल जोशाँदा अफ्तीमून कुछ दिन पिलाकर हब्ब अफ्तीमून से शोधन करे। माजू, गुलनार फारसी, सुमाक, सूखा धनिया प्रत्येक १ तोला पानी मे काढा करके उससे कुल्ली करायें। १ माशा भुना हुआ सुहागा बारीक पीसकर ४ माशा शहद मे मिलाकर रूई के फुरेरी से मुँह मे लगाये।

पित्तज मुखपाक (कुलाअ सफरावी) मे मत्बूख हलीला (हड के काढे) से दोष का पाचन एवं शोधन करे तथा माजू ६ माशा, फिटकिरी ३ माशा, मेहदी

की पत्ती २ माशा, कपूर ३ माशा, गुलाब का जीरा ७ माशा, सुमाक २ तोला, सूखा धनिया १ तोला, नीम की छाल ४ तोला सबको जल मे पका-छानकर इससे गण्डूप करे। तदुपरात वशलोचन, सफेद कत्था, गुलाब का फूल, सेवती का फूल, छोटी इलायची के दाने प्रत्येक १ माशा, कपूर ४ रत्ती सबको महीन पीसकर मुँह के भीतर छिडक दिया करे।

सूजाक या आतशक (फिरग) मे पारे के किसी योग के सेवन से यदि यह रोग (कुलाअ सीमाबी) हुआ हो तो उक्त योग का सेवन तुरन्त त्याग कर प्रथम मुख की चिकित्सा करे। अस्तु, चमेली के पत्र २ तोला, सहिजन की छाल १ तोला, बबूल की छाल १ तोला, नीला थोथा ४ रत्ती, जल मे उबालकर दिन मे चार बार इससे गण्डूष करे। २ दाने कजे की गिरी, ५ दाने कालीमिर्च पानी मे पीसकर २ तोला शर्वत उन्नाब मिलाकर पिये। कुलाअ आतशकी (फिरङ्गीय मुखपाक) मे फिरङ्ग की विशिष्ट चिकित्सा करे अर्थात् रक्तशोधन ओषधियो से दोषपाचन और मत्बूख हपतरोजा से शोधन करके जौहर मुनक्का का आतरिक उपयोग करे। कचनार की छाल, उशबा, चोबचीनी, मुरदासग आदि बारीक पीसकर उसका अवचूर्णन करे। विशेष विवरण आतशक के वर्णन मे देखे।

महाशौषिर (आकिलतुल्फम) मे व्रण को धोकर स्वच्छ करके तथा मृत भाग का छेदन करके सिरका, आबे सुमाक (सुमाक का रस), खट्टे अगूर के रस से गण्डूष कराये और फिरङ्गरोग की भाँति उपचार करे।

मुखगत पिडका एव मुखशोथ की चिकित्सा मुखपाक के समान करे।

पथ्य—कद्दू, टिडा, पालक, भिडी, आदि शाक, बकरी का शूरवा साबूदाना, खिचडी, चावल आदि।

अपथ्य—मछली, आलू, बैगन, मसूर की दाल, मेथी, लाल मिर्च, अधिक नमक, गरम मसाला, अम्ल, गुड, तेल आदि से परहेज करे।

२—कस्रत व किल्लत लुआब

नाम—(अ०) कसरते बुज़ाक, कस्रते लुआब, सैलानुल्लुआब, (उ०, हि०) बहुत थूक आना, बहुत थूकना, (स०) मुखस्राव, (अ०) टायलिज्म (Ptyalism), सैलिवेशन (Salivation)।

(अ०) किल्लते बुजाक, किल्लते लुआब, (उ०, हि०) थूक की कमी, मुँह सूखना, (स०) मुखशोष, (अ०) जीरोस्टोमिया (Zerostomia)।

वर्णन—कभी-कभी थूक (लाला) उत्पन्न करनेवाली ग्रन्थियो मे स्वाभाविक उत्तेजना की न्यूनता या अधिकता के कारण थूक न्यून वा अधिक उत्पन्न होने लगता है। इनमे से प्रथमोक्त अवस्था को 'किल्लते बुजाक' कहते है

जिसमे मुँह प्राय सूखा रहता है और अन्तिमोक्त अवस्था को 'कस्रते बुज़ाक' के नाम से अभिधानित करते है, जिसमे मुँह से प्राय लार (लाला) बहती रहती है। यह रोग शिशुओ को प्राय द्रव की अधिकता से होता है। पर कभी-कभी बडो को भी यह रोग हो जाता है।

हेतु—अन्त्र और आमाशय मे दूषित द्रव का सचित हो जाना, या केचुये उत्पन्न हो जाना या पचनविकार, आमाशयस्थ सतापवृद्धि आदि मुखस्राव (कसरते बुज़ाक) हेतु हैं। मुखपाक और महाशौषिर रोग मे भी मुँह से पुष्कल लार बहती है। कभी खनिज या उद्भिज् ओषधियो के पुष्कल उपयोग से तथा पारद के योगो के सेवन से भी यह रोग हो जाता है।

मुखशोष (क़िल्लते बुज़ाक)के हेतुओ मे ज्वर विशेषत आन्त्रिक सन्निपात ज्वर (टायफॉयड ज्वर), कतिपय प्रकार के विषद्रव्य, जैसे बेलाडोना और धतूर आदि के प्रभाव, किसी कारण से शारीरिक द्रवो का अतिनाश जैसा कि अतिसार एव मधुमेह आदि मे हुआ करता है। लालाजनक ग्रन्थियो के कतिपय जातीय रोग, जैसे कर्णमूलिक ग्रन्थिशोथ (कनपेड) अन्तर्भूत है।

लक्षण—मुखस्राव (कसरते बुज़ाक) मे मुँह से पुष्कल लार बहती है, रोगी के मुँह से प्राय लार टपकती रहती है। यदि रोगी उसको बारबार निगलता रहे, तो उसके साथ आमाशय मे वायु पहुँचकर आमाशय और उदर मे आध्मान हो जाता है। कभी-कभी इतनी लार बहती है कि रोगी के लिये बोलना और खाना-पीना तक कठिन हो जाता है। इसके साथ ही विविध हेतुओ मे से वर्तमान हेतु और उसके विशिष्ट लक्षण भी न्यूनाधिक अवश्य पाये जाते है।

मुखशोष (क़िल्लते बुज़ाक) मे मुँह शुष्क होता है। अहाराश दाँतो के बीच लगे रह जाते है और उनमे दुर्गन्ध आने लगती है। जिह्वा के ऊपर मल बैठा हुआ होता है और मुँह का स्वाद बहुत बुरा हो जाता है। भूख मर जाती है। भोजन चबाना और निगलना कठिन हो जाता है। पाचन भी प्राय बिगड जाता है। कभी-कभी मुँह इतना अधिक शुष्क होता है कि रोगी के लिये बात करना भी कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान हेतु के न्यूनाधिक लक्षण भी विद्यमान होते है।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उचित उपाय से उसके निवारण का यत्न करे। अस्तु, यदि आक्लेद वा द्रवातिरेक से मुखस्राव (कस्रते बुज़ाक) हो तो श्लेष्मा का पाचन करके शोधन करे और सग्राही गण्डूष कराये। मुख और जिह्वा के विशेष रोग मे उनकी विशिष्ट चिकित्सा करे। वातिक क्षोभ एव प्रत्यावर्तन जनित उत्तेजन की दशा मे सशमन ओषधियो का उपयोग गुणकारी होता है।

मुखशोष (किल्लते बुज़ाक) मे उत्तेजक द्रव्यो का उपयोग करें। जब-जब भोजन करे दाँत और मुँह को स्वच्छ कर लिया करें।

चिकित्साक्रम—यदि वातिक विकार (वातनाडी की विकृति) से मुखस्राव का रोग हो तो फिटकिरी २ माशा पाव भर पानी मे उबालकर उससे गण्डूष करे और प्रात काल माजून फलासफा ७ माशा १० तोले माउलअस्ल (१० तोले अर्क सौफ मे २ तोले शहद मिलाकर पकाये और छान लेवें) के साथ सेवन करे। यदि क्षोभकारक विषो के कारण मुँह की श्लेष्मल कला मे शोथ होने से लार अधिक आती हो अथवा मुखरोग के कारण मुख मे क्षोभ होने से लार अधिक बहती हो तो बबूल की छाल १ तोला, फिटकिरी २ माशा, गुलनार ६ माशा, समूचा मसूर ६ माशा, पोस्ते की डोडी ४ नग, सूखा धनिया ६ माशा सबको तीन पाव जल मे क्वाथ करे। जब चौथाई शेष रहे तब उतार कर छान लेवे और उससे गण्डूष करे। इससे मुख की सूजन (सोजिश दहन) दूर होने के पश्चात् मुखस्राव कम हो जायगा।

यदि पारा सेवन करने से मुँह आ गया हो और लार अधिक बह रही हो तो चमेली की पत्ती, बबूल की छाल, कचनार की छाल और हरा माजू प्रत्येक १ तोला ले, समस्त द्रव्यो को कूटकर आध सेर पानी मे पकाये। जब चौथाई पानी रह जाय तब उतार कर उससे गण्डूष करे। यदि यह रोग श्लैष्मिक द्रव एव आमाशय विकार से हो तो (१) गरम पानी मे नमक और सिकजबीन मिलाकर वमन कराये। तदुपरात (२) प्रात-सायकाल फौलाद भस्म २ चावल जुवारिश वस्वासा ७ माशा मे मिलाकर १० तोले अर्क बादियान के साथ खिलाये। (३) रात्रि मे सोते समय १ तोला अतरीफल उस्तूखुद्दूस सेवन करने का आदेश करे। यदि इससे थोडे दिन मे लाभ न हो तो फिर यथाविधि कफ का शोधन करे जिसकी विधि चिकित्सासूत्र के प्रकरण मे वर्णन की गई है। तदुपरात पुन ये ओषधियाँ सेवन कराये। यदि अन्त्रस्थ कृमियो के कारण पुष्कल लार बहने का रोग हो, तो क्रिमिरोग के प्रकरण मे लिखें अनुसार उनकी चिकित्सा करे। यदि अधिक लार बहने का रोग अन्य रोगो का परिणाम हो तो उनकी चिकित्सा करे।

मुखशोष (किल्लते लुआब) यदि द्रवो की अल्पता के कारण हो तो सन्तरा का रस ३ तोला, सेब का रस ३ तोला, नाशपाती का रस ३ तोला और माल्टा का रस ३ तोला मिलाकर पिला देवें। यदि बेलाडोना या धतूरा सेवन के कारण हो तो पुराना सिरका ४ तोले मे सातर और अफसतीन प्रत्येक ६ माशा पकाकर पिलायें। यदि लालावर्धक ग्रन्थियो के कारण हो तो सोठ ५ रत्ती और राई पीसकर खिलाये।

पथ्यापथ्य—मुखस्राव मे भृष्ट मास, कबाब कोपता, चाय, अण्डे, गेहूँ की

चपाती, अरहर और मसूर की दाल देवे। दूध, दही, शर्बत, फलो के रस और प्रवाही पदार्थो से परहेज करायें।

मुखशोष मे इसके विपरीत करे अर्थात् दूध, दही, लेमन, लाइमजूस, यवमड, कद्दू, तुरई, सतरा, मालटा आदि स्निग्ध तर पदार्थ अधिक देवें और भृष्ट मास, कवाव, चाय, अडे, मसूर की दाल से परहेज कराये।

३—बख्रुल्फम

नाम—(अ०) बख्रुल्फम, उफूनत फम, नतानतुल्फम; (उ०, हि०) मुँह से वदबू (दुर्गन्ध) आना, गदा दहनी, (स०) मुखदौर्गन्ध्य,, (अ०) ओरल सेप्सिस (Oral Sepsis), फीटर ऑरिस (Foeter oris)।

वर्णन—इस रोग मे मुँह से दुर्गन्ध आती है।

हेतु—दन्तनाडी और दन्तवेष्ट, उदरविकार, प्रसेक (नजला) दोष, गर्भाशय मे दुष्ट दोष का सचय, लहसुन, प्याज आदि दुर्गन्धित वस्तुओ का उपयोग और उर क्षत रोग इसके हेतु हैं।

लक्षण एव निदान—मुँह से इतनी दुर्गन्ध आती है कि रोगी के समीप बैठना कठिन हो जाता है। यदि मसूढा दबाने पर उससे पीप निकले तो इसका हेतु दन्तवेष्ट है। यदि अजीर्ण हो तो इसका हेतु उदरविकार है। इसी प्रकार दुर्गन्धित पदार्थो का उपयोग और उर क्षत की विद्यमानता मुखदौर्गन्ध्य के हेतु को प्रगट कर देता है।

चिकित्सा—यदि दन्तवेष्ट (कुरूह लिस्सा) इसका हेतु हो, तो उसकी चिकित्सा करे। यदि पाचनविकार हो तो भोजनोत्तर फौलाद भस्म २ चावल ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर खिलाये और मस्तगी, इलायची तथा लौंग मुख मे रखकर चवाये। रात्रि मे अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलायें। यदि अन्यान्य हेतु हो तो उनकी चिकित्सा करे। प्रत्येक दशा मे दाँतो की स्वच्छता दाँतून आदि से अवश्य करते रहे।

पथ्य—तुरई, कद्दू, टिडा, शलगम, पालक, मेथी, मूँग की दाल, गेहूँ की दलिया, चपाती आदि। कभी-कभी सब्जी, मास खायें।

अपथ्य—अधिक मास, मछली, अडे, दही, लस्सी और गरिष्ठ, गरम और वादी (आध्मानकारक) वस्तुओ से परहेज करे।

जिह्वा रोग

१—वुत्लानुज्जौक तथा नुक्सानुज्जौक

नाम—(अ०) बुत्लानुज्जौक, नुकसानुज्जौक, (हि०) स्वाद का ज्ञान नही होना, (स०) स्वादाज्ञान, अस्वादता, (अ०) एगूजिया (Ageusia), एगूस्टिया (Ageustia)।

वक्तव्य—इस (वुतुलानुज्जोक) रोग मे जिह्वा की स्वादग्रहणशक्ति नष्ट हो जाती है, जिससे उसे किसी वस्तु के स्वाद का ज्ञान नही होता। कभी-कभी स्वादेन्द्रिय की स्पर्शशक्ति भी नष्ट हो जाती है, जिससे वह शीत और उष्ण का अन्तर समझने मे असमर्थ होता है। नुक्सानुज्जौक मे वस्तु के स्वाद का ज्ञान तो होता है, परन्तु जितना होना चाहिए, उससे कम होता है।

हेतु—जिह्वागत नाडियो मे द्रवो का सचय इस रोग का हेतु हे। अफीम, कोकीन, गुडमार बूटी आदि स्वापजनन द्रव्यो का पुष्कल उपयोग, प्रसेक, उदर-विकार, किसी दोष की प्रगल्भता आदि।

लक्षण—बुत्लानुज्जौक मे यदि रोग साधारण हो तो वस्तुओ का स्वाद जितना मालूम होना चाहिये उससे कम मालूम होता है। नुक्सानुज्जौक मे यदि रोग तीव्र हो तो किसी प्रकार की वस्तु के स्वाद का ज्ञान नही होता। प्रसेक से यह रोग हुआ हो तो प्रसेक विद्यमान होगा। उदरविकार से हुआ हो तो मलावरोध, अम्लोद्‌गार, लालास्राव प्रभृति लक्षण पाये जायेंगे। अफीम, कोकीन आदि से यह रोग हुआ हो तो रोगी इससे पूर्व इनका उपयोग किया होगा।

चिकित्सा—प्राय यह प्रसेक (नजला), श्लैष्मिक द्रव या उदरविकार (आमाशयविकार) के कारण होता है। उक्त अवस्था मे गुलबनफशा, सौफ, सौफ की जड, हसराज, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाने सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिलाये। आठ-दस दिन के बाद विरेचक घटक (सनाय मक्की ७ माशा, गुलकद, तुरजबीन और अमलतास प्रत्येक ४ तोले) की योजना कर विरेचन देवे। तदुपरात ठढाई का योग पिलाये। इसी प्रकार तीन विरेचन और तीन ठढाइयाँ पिलाये। विरेचन के उपरात प्रातकाल फौलाद की भस्म १ चावल ७ माशे जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर १२ तोले बादियान के साथ और सायकाल ७ माशे माजून फलासफा १२ तोले अर्क पान के साथ देवे।

जिह्वा के ऊपर निम्नलिखित ओषधियो का उपयोग करे—(१) अकरकरा, मवीजज, राई प्रत्येक ६ माशा जल मे क्वाथ करके गण्डूष कराये। (२) अजवायन, राई, सेधानमक प्रत्येक ३ माशा कूटकर किंचित् सिरका मिलाकर मुँह मे रखवाये। (३) यदि प्रकृति मे उष्णता हो तो गुलाब के फूल १ तोला, सुमाक १ तोला जल मे पकाकर २ तोला सिकजबीन मिलाकर कुल्लियाँ करायें।

यदि अफीम या कोकीनजन्य हो, तो उनका परित्याग कराये और २ तोले अमलतास आधा सेर दूध मे पकाकर उससे कुल्लियाँ कराये। आहार मे दूध-घी अधिक देवें और फौलाद की भस्म १ चावल, ७ माशे माजून

फलासफा मे मिलाकर प्रात-सायकाल १२ तोले अर्क वादियान के साथ खिलाये ।

पथ्य—बकरी और पक्षियो का मास मसाला मिलाकर, मूँग, अरहर की दाल, चपाती, पुदीना, अनारदाना, अदरक की चटनी आदि ।

अपथ्य—गोभी, आलू, अरवी, कचालू, मसूर, उडद की दाल, मछली, दूध, दही से परहेज करें ।

२—फसादुज्जौक

नाम—(अ०) फसादुज्जौक, (हि०) सर्वथा एक ही स्वाद का वा अन्यथा स्वाद का ज्ञान होना, (स०) एक स्वादता वा अन्यथा स्वादता, (अ०) डिस्गूजिया (Disgeusia) ।

वक्तव्य—इस रोग मे सदा एक विशेष स्वाद का अनुभव होता रहता है या किसी वस्तु को चखते समय असली स्वाद के विपरीत स्वाद का अनुभव हुआ करता है। जैसे—मीठी वस्तु खाये तो वह उसको तिक्त या खरी मालूम होती है आदि।

हेतु—चतुर्दोषो मे से किसी एक दोष की प्रगल्भता इसका प्रधान हेतु होता है। सुतरा प्रगल्भ दोष का स्वाद अनुभूत होता रहता है ।

लक्षण—यदि हेतु वलवान् हो तो इस रोग मे हर समय प्रगल्भ दोष का स्वाद अनुभव होगा और यदि वलवान् नहीं, अपितु साधारण हो तो अन्यथा वा विपरीत स्वाद का अनुभव होगा । स्वाद से ही प्रगल्भ दोष का ज्ञान कर सकते है, यथा—तिक्त स्वाद से पित्त, मधुर से रक्त या मधुर कफ, लवण से लवणनिष्ठ कफ और फीके से कफ का ज्ञान होता है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रगल्भ दोष के शोधन के पश्चात् रक्तज एव पित्तज मे (१) १ तोला अनारदाना चबाना और जिह्वा के ऊपर मलना और (२) इमली ३ तोला या (३) आलूबोखारा ७ दाना पानी मे भिगोकर उससे कुल्ली करना तथा मुख के भीतर रखना परम गुणकारी है। कफज एव सौदावी मे (४) सरसो या (५) राई १–१ तोला पानी मे पीसकर मुँह मे रखना और बदलते रहना अतीव गुणकारी है ।

सिद्धयोग—अकरकरा, ऊद खाम, हलदी प्रत्येक ६ माशा, सवको सिरका मे शुद्ध करके और कालीमिर्च ३ माशा सवको कूटकर जीभ के ऊपर मले ।

३—सिवलुल्लिसान

नाम—(अ०) सिवलुल्लिसान, सिक्ल जबान , (उ०)हकलाना, हकलापन, लुकनते जबान , (अ०) स्टैमरिंग (Stammering) ।

वर्णन—इसमे रोगी अटक-अटककर बोलता है। पूरे वाक्य का उच्चारण ठीक-ठीक शीघ्रतापूर्वक नही कर सकता। इसको बोलचाल की भाषा मे 'हकलापन' कहते है ।

हेतु—कुछ लोगो को तो यह रोग जन्मत होता है, जो असाध्य है। परतु, कभी पक्षवध या आक्षेप वा सरसाम के कारण भी यह रोग हो जाता है। कभी-कभी शीतल एव स्निग्ध पदार्थो के अति सेवन से श्लैष्मिक द्रव उत्पन्न होकर जिह्वा की वातनाडियो मे प्रवेश कर जाते है, जिससे वे ढीली हो जाती और जिह्वा को चेष्टा करने से रोकती है तथा रोगी अटक-अटककर सभाषण करता है ।

लक्षण—यदि पक्षवध या आक्षेप वा सरसाम के कारण यह रोग हो तो ये रोग विद्यमान होगे। श्लैष्मिक द्रव के कारण यह रोग हो तो जिह्वा बोझल होगी। मुख से वारवार द्रव वहेगा। रोगी की प्रकृति श्लेष्मल होगी और कफ के अन्यान्य लक्षण पाये जायँगे ।

चिकित्सा—पक्षवध, आक्षेप या सरसाम से यह रोग हुआ हो, तो अपने प्रकरण मे लिखे अनुसार उसकी विधिवत चिकित्सा करें। श्लैष्मिक द्रव के कारण यह रोग हो तो बुत्लानुज्जौक के प्रकरण मे लिखी हुई विरेचन विधि के अनुसार इसमे भी विरेचन देवे तथा २ तोले सिकजबीन असली १५ तोले पानी मे मिलाकर उससे कुल्लियाँ कराये अथवा कालीमिर्च, राई, नौशादर, अकरकरा, लौंग और सोठ प्रत्येक ६ माशा सबको जल मे उबालकर उससे गण्डूष एव कुल्ली करायें। प्रात - काल ५ दाने बादाम का मग्ज २ तोले शहद मे घोटकर चटनी की भाँति चटा दिया करें। भोजनोत्तर मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनस मे मिलाकर प्रात काल खिलाये और सायकाल मर्जा जवाहर वाला १ टिकिया और मण्डूर भस्म १ टिकिया, ५ माशे अतरीफल उस्तूखुद्दूस मे मिलाकर खिला दिया करे। तिर्याक फारूकी १ माशा जीभ पर मलना और उतना ही १ तोला खमीरा गावजवान सादा या ७ माशा खमीरा गावजवान जवाहर वाला मे मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। इसी प्रकार मफासली ३ टिकिया प्रात काल ताजे पानी से खिलाना और गोदती भस्म १ टिकिया ताजे पानी या १ तोला शहद मे मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। भुना हुआ सुहागा १ माशा १ तोला शहद मे मिलाकर प्रात -सायकाल जीभ के ऊपर मलें ।

पथ्य—बकरी का मास, चपाती गरम मसाला मिलाकर देव। मूँग और

अरहर की दाल लहसुन डालकर तथा करेले की तरकारी प्रभृति देवे। अडा, बिस्कुट, अगूर, सेव, अनार आदि भी अभ्यासानुकूल दे सकते है।

अपथ्य—बादी, गरिष्ठ एव शीतल पदार्थो से परहेज कराये। गोभी, उडद की दाल, अरवी, शलगम, मसूर की दाल और दूध, दही तथा मछली आदि नही देवे।

४—वरमुल्लिसान व हुर्कतुल्लिसान

नाम—(अ०) वरमुल्लिसान, हुर्कतुल्लिसान, (उ०) जबान का वरम; (हि०) जीभ की सूजन, (स०) जिह्वाशोथ, जिह्वादाह, (अ०) ग्लोसायटीज (Glossitis), इरिटेशन ऑफ दी टग (Irritation of the Tongue)।

भेद—गरम और सर्द इसके दो भेद होते है। इनमे गरम रक्त एव पित्तजन्य ओर सर्द कफ एव सौदाजन्य होता है।

हेतु—तमाकू खाने और पीने का असाधारण व्यसन, आहारदोष, तीक्ष्ण मसालेदार आहार का सेवन, तीव्र ज्वर, फिरङ्ग, पारद सेवन, पान मे अधिक चूना खाना, अन्त्र, आमाशय के पाचन का दोष, दन्तरोग और अधिक गरम दूध पीना इसके हेतु है।

लक्षण—जिह्वा सूज जाती है। उसमे दर्द होता है और बोलने मे कष्ट होता है। मुँह से लार बहता है। ग्रीवा की सिराये फूलकर चेहरा रक्त वा नीलवर्ण हो जाता हे। बेचैनी के कारण ज्वर भी हो जाता है। उष्ण शोथ मे लक्षण तीव्र होते है। रक्त की प्रगल्भता की दशा मे जिह्वा कालाई लिये लाल होती है। उसमे बोझ एव खिचावट अधिक होती है। पित्तप्रकोप मे जिह्वा पिलाई लिये होती हे और उसमे दर्द एव जलन अधिक होती है। शीतल शोथ मे लक्षण कम तीव्र होते है। कफाधिक्य की दशा मे जिह्वा श्वेत होती है और पुष्कल लार बहता है। सौदाधिक्य की दशा मे जिह्वा काली होती है और उसकी झिल्ली शुष्क होती है।

चिकित्सा—प्रथम रोग के हेतु का पता लगाकर उसका निवारण करे और १ छटॉक रेंडी का तेल पाव भर गाय के दूध मे मिलाकर पिलाये। यदि रोगी उसे पी न सके तो १ छटॉक रेंडी का तेल और १ तोला साबुन डेढ सेर गरम पानी मे मिलाकर बस्ति देवे तथा गुलबनफ्शा ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, गुलाब के फूल ५ माशा, नीलूफर के फूल ५ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, कासनी के बीज ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढा ५ दाना, सूखी मकोय ५ माशा, कासनी की जड ७ माशा, सौंफ ७ माशा और गावजबान ५ माशा सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये।

अमलतास का गूदा ९ माशा, सूखा धनिया ५ माशा पाव भर गाय के दूध मे उबालकर उससे गण्डूष करायें। वेदना शमन के लिये बाहर से गले को सेकें। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो जीभ पर जोक लगवायें, सरारू की फस्द कराये और दोषानुसार मुजिज देकर विरेचन कराये।

पथ्यापथ्य—पतला और मृदु आहार, जैसे—दूध, यवमड, मूँग की दाल का पानी, मूँग की नरम खिचडी, गेहूँ का दलिया आदि खिलायें। मसाला और गरम आहारो से परहेज करायें। यदि रोगी को आहार देना आपत्तिजनक हो तो पोषण बस्ति के द्वारा अथवा नाक के द्वारा कण्ठ के भीतर रबड की नाली प्रविष्ट करके आमाशय के भीतर आहार पहुँचाने का यत्न करे।

५—शुकाकुल्लिसान

नाम—(अ०) शुकाकुल्लिसान, (उ०) जबान का फटना, (हि०) जीभ फटना, (स०) वातप्रकोपज जिह्वाकण्टक, (अ०) फिशर ऑफ दी टग (Fissure of the Tongue), क्रैक्ड ऑर फिशर्ड टग (Cracked or Fissured Tongue)। जिह्वा कतिपय स्थानो मे फट जाती है।

हेतु—मस्तिष्क की उष्ण या रूक्ष विप्रकृति, आमाशयगत तीक्ष्ण वाष्प अथवा विदग्धोद्गार (धूम्रोद्गार) युक्त अजीर्ण, तीक्ष्ण चटनी या अधिक मसालायुक्त आहार, पान मे अधिक चूना और तमाकू खाना आदि इस रोग के हेतु होते हे।

लक्षण—जिह्वा अनेक स्थलो मे फट जाती है। कष्ट के कारण, रोगी भलीभाँति बोल और खा-पी नही सकता। जिह्वा का रग लाल हो जाता है और प्यास अधिक लगती है। यदि उचित उपाय न किया जाय तो रोग बढकर जिह्वार्बुद (सरतानुल्लिसान) का रूप ग्रहण कर लेता है। यदि आमाशय के विकार या अजीर्ण के कारण यह रोग हो तो धूम्रोद्गार आते हैं। यदि मस्तिष्क की विप्रकृति के कारण हो तो मस्तिष्क मे गर्मी और खुश्की के लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा—निदान परिवर्जन करें। ज्वर की तीव्रता निवारण करने तथा वाष्पो को नष्ट करने के लिये ४ तोला रेंडी का तेल पिलाकर विरेचन कराये। या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलाकर कब्ज दूर करे और १ तोला अतरीफल कश्नीज खिलायें। जिह्वा की रूक्षता दूर करने के लिये स्निग्ध पदार्थो से स्नेहन करें। कतीरा और लिसोढा समभाग चूर्ण करके गोलियाँ बनाकर मुख के भीतर रखें। २-२ तोले इसबगोल और बिहीदाने के लुआब से कुल्लियाँ करायें तथा ३ माशा बिहीदाने का लुआब, ३-३ माशा मीठे कद्दू के बीज के मग्ज एव तरबूज के बीज का मग्ज का शीरा २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाये। यदि जलन अधिक हो तो पोस्ते की डोडी २ नग, समूचा इसबगोल ५ माशा, पोस्ते का

दाना ३ माशा, पाव भर अर्क गुलाब मे काढा करके उससे कुल्लियाँ कराये। यदि पान के चूना से जीभ फट जाय तो गरी का टुकडा या कसेरू चबाने या जीभ पर मक्खन मलने से ही लाभ हो जाता है तथा गोदनी की नरम शाखाओ की छाल लेकर कत्था लगाकर चबाने से भी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है। यदि जीभ अधिक फट गई हो तो सफेद कत्था, वशलोचन, सगजराहत बराबर-बराबर पीसकर मुँह के भीतर छिडके अथवा ३ माशा कुदुर पीसकर १ तोला सफेद मोम मे मिलाकर जीभ के ऊपर मले।

पथ्य—दूध, चावल, साबूदाना, फिर्नी, मूँग की खिचडी, गेहूँ का दलिया, कद्दू, टिडा, तुरई आदि।

अपथ्य—मास, लहसुन, प्याज, लाल मिर्च, गरम मसाला, बैगन, चाय, तेल और अम्ल से परहेज करे।

६—अजमुल्लिसान

नाम—(अ०) अजमुल्लिसान, इद्देलाउल्लिसाल, (उ०) जबान (जीभ) का बडा हो जाना (मुँह से बाहर निकल आना), (स०) जिह्वावृद्धि, (अ०) ग्लोसोसील (Glossocele), मैक्रोग्लोसिया (Macroglossia)।

हेतु—मस्तिष्कीय प्रसेक या कफ एव रक्त के प्रकोप से यह रोग होता है। वस्तुत यह शोथ नही होता, अपितु दोपातिरेक के कारण जिह्वा आयतन मे फूल जाती है या उसकी वातनाडियाँ कमजोर हो जाती है।

लक्षण—इस रोग मे जीभ फूलकर इतनी बडी हो जाती है कि वह मुँह मे नही समा सकती, प्रत्युत् बाहर निकल पडती है। यह रोग प्राय सहज (पैदायशी) होता है। जिह्वा की ऊपरी झिल्ली चिमड के सदृश कडी हो जाती है। पुष्कल लालास्राव होता है। यदि जीभ अधिक बढ जाय तो रोगी अपना मुँह बन्द नही कर सकता। यदि रोग रक्त के प्रकोप से होगा तो ललाई लिये नीलवर्ण की होगी और यदि कफज होगा तो जीभ सफेदी लिये होगी।

चिकित्सा—निदान हो जाने के बाद प्रगल्भ (प्रकुपित) दोष का शोधन करे। अस्तु, रक्त प्रकोप की दशा मे कीफाल एव जिह्वाधोगा सिरा का वेधन (फस्द) करे। खट्टे अनार का रस, नीबू का रस प्रभृति जैसी अम्ल वस्तुएँ जीभ पर मले, जिसमे द्रव का उद्रेक (स्राव) होकर दोष निकल जाय। कफप्रकोप की दशा मे कफ पाचनोपरात हब्ब इयारिज के द्वारा शोधन करे। तदुपरात कालीमिर्च, पीपल, सोठ, और सेंधानमक सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर जीभ के ऊपर मले। अलसी, मेथी प्रत्येक ७ माशा और अजीर ५ दाना

काढा करके इससे गण्डूष करायें। कफशोधनोपरात रोगी को माजून फलासफा ७ माशा या जुवारिश जालीनूस ५ माशा प्रात -सायकाल सेवन करायें।

७—सरतानुल्लिसान

नाम—(अ०) सरतानुल्लिसान, (उ०) सरताने जवान, (स०) जिह्वार्बुद, (अ०) कैन्सर ऑफ दी टंग (Cancer of the Tongue)।

वर्णन—यह एक साघातिक प्रकार का व्रण है जो जिह्वा के धरातल वा उसकी जड मे उत्पन्न हो जाता है।

हेतु—कभी-कभी पुष्कल तमाकू खाने या पीने, सडे-गले दाँतो का क्षोभ या जिह्वाशोथ एव जिह्वास्फटन के कारण जिह्वा पर व्रण उत्पन्न हो जाता है और समय पर उसका प्रतीकार नही किया जाता, तो वह अत मे जिह्वार्बुद के रूप मे परिणत हो जाता है तथा दुष्ट एव दुर्निवार्य (हठीला) रूप ग्रहण कर लेता है। फिरङ्ग रोगी इसके आखेट अधिक हुआ करते हैं।

लक्षण—इस व्रण के विशिष्ट लक्षण यह है कि इसका मध्य भाग गभीर और प्रात अनियमित रूप से उभरे हुए होते हैं। मुख से पुष्कल लाला एव दुर्गन्धित पदार्थ उत्सर्गित होता है। रोगी को खाने-पीने और बोलने मे अत्यत कष्ट अनुभव होता है और रोगी कुछ मास मे ही परलोक सिधार जाता है।

चिकित्सा—तीव्र वेदनावस्था मे बासलीक सिराका वेधन कराये। बारम्बार सौदा का शोधन करे।

सीसे (नाग) को रेशा खतमी के लबाब के साथ खरल मे आलोडन करे और दिन-रात्रि मे पाँच-छ बार जिह्वार्बुद के ऊपर लेप करे। ५ तोले गुलरोगन को गरम करके नीचे उतार लेवे। जब शीतल हो जाय तब ७॥ माशा साफ किया हुआ कमीला उसमे मिलाकर पतला लेप लगाते रहें।

पोस्त अनार, छिला हुआ मसूर, गेरू प्रत्येक १ तोला कूट-छानकर ६ तोला तीन वर्ष पुराना गुड मिलाकर लेप करें। जौहर मुनक्का १ चावल गुठली निकाले हुए एक मुनक्के के भीतर रखकर ५-५ तोले अर्क शीर एव अर्क माउज्जुन्न के साथ खिलायें।

८—जिफ्दिउल्लिसान

नाम—(अ०) जिफ्दिउल्लिसान; (उ०) तुदवा, तेदवा, (हि०) जिह्वा के नीचे की रसौली, (स०) उपजिह्वा, उपजिह्विका, (अ०) रेन्यला (Ranula)।

वर्णन—इस रोग मे जिह्वा के नीचे मेढक के सिर की आकृति की एक रसौली या ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। इसलिए अरवी और अगरेजी मे इसको क्रमश जिफ्दअ (मेढक) और रेन्यूला (मेढक) कहते है। इसमे जिह्वा की ललाई, शोथ की सफेदी और सिराओ की हरियाली परस्पर मिलकर मेढक की आकृति के समान होती है।

हेतु—यह रोग साद्र रक्त या पिच्छिल कफ से उत्पन्न होता है, जिसका कारण यह है कि जिह्वा के नीचे की ग्रन्थियो की नालियाँ बन्द हो जाती है। इसलिए यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—जीभ के नीचे मेढक और कभी-कभी अखरोट के वरावर रसौली हो जाती है, जिससे साँस लेने, निगलने और बोलने मे कष्ट होता है। रसौली वढ जाने पर कष्ट भी वढ जाता है। शोथ के वर्ण (रगत) से प्रगल्भ दोष का अनुमान किया जा सकता है। अस्तु, लाली एव जलन रक्ताधिक्य और उसकी सफेदी एव कडाई पिच्छिल कफ को लक्षित करती है।

चिकित्सा—रक्तप्रकोप की दशा मे सरारू की फस्द खोले, जोक लगवाये, शीतल विरेचन से शोधन करे। कफ के प्रकोप मे दोषपाचन (मुजिज) और विरेचन के द्वारा कफ का शोधन करे। शोधनोपरात नौशादर, भुनी फिटकिरी, वोल प्रत्येक ३ माशा, जगार १॥ माशा सिरका मे पीसकर वारवार लगाये या नौशादर ३ माशा और हरा माजू ३ माशा पीसकर जीभ पर मलते रहे। जव उसमे क्षोभ उत्पन्न हो जाय, तम विलायती मेहदी के पत्र, गुलनार, किशार कुदुर सिरका मे उवाल-छानकर इसका कवल धारण (मज्मजा) करे। जव रोगजनक दोष का उन्मूलन हो जाय, तब व्रण को अच्छा करने के लिए व्रणरोपण अवचूर्णन का उपयोग करे। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो शस्त्र-कर्म करे।

पथ्यापथ्य—जिह्वाशोथ के अनुसार।

९—खुशूनतुल्लिसान

नाम—(अ०) खुशूनतुल्लिसान, तशन्नुजुल्लिसान; (उ०) जबान का खुरदरा हो जाना (खिच जाना); (अ०) ग्लॉसोस्पैज्म (Glossospasm)।

हेतु और लक्षण—इसके हेतु वही सामान्य आक्षेप के हेतु होते है और उसी की भाँति इसके भी दो भेद है—(१) तशन्नुज माद्दी और (२) तशन्नुज याविस। इस रोग मे जीभ खिचकर छोटी हो जाती है। शेष तशन्नुज माद्दी एव तशन्नुज युव्सी मे उनके विशिष्ट लक्षण व्यक्त होते है।

चिकित्सा—इस रोग मे (१) रोगन वनफ्शा या रोगन कद्दू का कवल धारण (मज्मजा) करने से उपकार होता है। इसी प्रकार (२) इक्लीलुल्मलिक्,

(३) मर्जञ्जोश, (४) सोआ और (५) वाबूना आदि ओषधियो मे से जो उपलब्ध हो या विद्यमान हो, उसे पानी मे उबालकर कवल धारण (मन्मजा) करने (कुल्ली) से उस आक्षेप मे लाभ होता है, जो शीतल हेतुओ से उत्पन्न हुआ हो और जिस प्रकार इन ओषधियो के काढे से लाभ होता है, उसी प्रकार इनसे बने तेलो के गण्डूष करने एव कवल धारण करने से भी बहुत उपकार होता है। (६) कतीरा मुख मे धारण करने से मुख, कण्ठ और जिह्वा के सपूर्ण भागो की रूक्षता दूर होती है। इसी प्रकार (७) इसबगोल के लुआब का कवल धारण करने (८) आलूबोखारा मुख मे रखने और समस्त शीतल-स्निग्ध स्वरसो के गण्डूष मुख, जिह्वा और स्वरयन्त्र की रूक्षता को दूर करते हैं।

१०—रब्तुल्लिसान

नाम—(अ०) रब्तुल्लिसान, इल्तिसाकुल्लिसान, (उ०) जबान का बँधना (या जुडना), (अ०) टग टाई (Tonguen-tie), एङ्किलोग्लॉसिया (Ankyloglossia)।

वर्णन—इस रोग मे जिह्वा के नीचे की चुन्नट (सीवन) इतनी छोटी होती है कि जिह्वा नीचे की ओर जबडे के साथ लगी और बँधी रहती है। जब जन्मत जिह्वा के नीचे की चुन्नट होती ही नही, तब जिह्वा का बहुत-सा भाग मुख के निम्न फर्श के साथ जुडा हुआ होता है। उक्त अवस्था को पाश्चात्य वैद्यक और यूनानी मे क्रमश 'ऐङ्किलोग्लॉसिया' और 'इल्तिसाकुल्लिसान' कहते हैं।

हेतु और लक्षण—यह रोग सहज वा जन्मज होता है। शिशु को दूध पीने मे कष्ट होता है। जिह्वा मुख से बाहर नही निकल सकती और न उसमे भाषण की चेष्टा हो सकती है। अतएव, शिशु गूँगा (मूक) होता है और यदि बोले तो तुतलाता है।

चिकित्सा—इस रोग की चिकित्सा केवल शस्त्रकर्म के सिवाय और कुछ नही है। अस्तु, एक गोल नोकवाली कैंची से जिह्वा के नीचे की चुन्नट (लगाम जबान) को काट देते हैं।

११—जफाफुल्लिसान

नाम—(अ०) जफाफुल्लिसान, (उ०) जबान की खुश्की, (हि०) जीभ की रूक्षता, (स०) जिह्वा शोष; (अ०) ग्लॉसोट्रिकिया (Glossotrichia), इक्थियोसिस लिग्वी (Icthyosis Linguae)।

हेतु और लक्षण—इस रोग का हेतु गर्मी और खुश्की है जो साधारणतया पैत्तिक ज्वरो एव कण्ठशोथ (खुनाक) आदि मे प्रगट हुआ करती है। इसका एक और भेद भी है, जो जिह्वा के ऊपर पिच्छिल (लसदार) दोष जम जाने से उत्पन्न होती है। इन दोनो मे नैदानिकी लक्षण यह है कि प्रथम मे पीलापन, खुरदरापन और पित्त के अन्यान्य लक्षण प्रगट होते है और द्वितीय मे उसके धरातल पर पिच्छिल द्रव पाया जाता है तथा लाला लसदार हुआ करती है।

अससृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूल हेतु को दूर करे। अस्तु, प्रथमोक्त मे (१) इसवगोल के लुआब से कुल्लियाँ कराये, (२) कुलफा के बीज का शीरा या (३) कुलफा का रस या (४) तरबूज का रस और (५) खीरा के रस का कवल धारण करने और (६) बादाम के तेल को जीभ पर मलने से भी उपकार होता है। यदि आमाशय मे पैत्तिक दोष विद्यमान हो तो सशोधन और लुआबो से कुल्ली कराने के पश्चात् (७) इसबगोल ४ माशा, सिकजबीन तुफाही लीमूनी २ तोला के साथ देने से अद्‌भुत लाभ होता है। यदि मुँह मे वायु लगने से जिह्वा-शोष हो गया हो तो (८) कतीरा और शकर सम भाग लेकर मुँह मे रखने से लाभ होता है। द्वितीय भेद मे अर्थात् जिह्वा के ऊपर पिच्छिल द्रव जम जाने से हुए जिह्वाशोष मे (९) सिकजबीन चाटने, (१०) खाली पुदीना जीभ के ऊपर भली-भाँति मलने तथा (११) नीम की दातून के द्वारा जिह्वागत लसदार द्रव को साफ करते रहने से लाभ होता है।

वक्तव्य—जिन अससृष्ट द्रव्यो का शुकाकुल्लिसान के प्रकरण मे उल्लेख हो चुका है, वे भी इसमे लाभकारी हो सकते हैं।

१२—बजाजुल्लिसान

नाम—(अ०) बयाजुल्लिसान, (उ०) सफेदी जबान, (हि०) जीभ सफेद होना, जीभ की सफेदी, (स०) जिह्वाशौक्ल्य, (अ०) ल्यूकोप्लॉकिया लिग्वैलिस (Leukoplakıa Lınguolıs)।

हेतु और लक्षण—इस रोग का हेतु प्राय तमाकू का क्षोभ होता है और कभी फिरग के कारण यह रोग हो जाता है। वास्तव मे यह जिह्वा का एक प्रकार का चिरज शोथ है जिसमे जिह्वा की त्वचा कडी होकर उस पर सफेद रग के चट्ठे पड जाते हैं। कभी सारी जीभ सफेद हो जाती है। जब कुछ काल पश्चात् उसकी ऊपरी त्वचा शुष्क होकर उखड जाती है और सफेदी दूर हो जाती है तब नीचे से लाल-चमकीला धरातल निकल आता है। यदि त्वचा स्थान-स्थान से उतर जाय और स्थान-स्थान पर सफेद दाग (चिह्न) शेष रह जाएँ, तो उसको 'तकश्शुरुल्लिसान' कहते है। यदि इस रोग की चिकित्सा नही की जाय, तो

जिह्वा की त्वचा उतर जाने से उसका धरातल कोमल होकर व्रणित हो जाता है जिससे पुन जिह्वार्वुद रोग हो जाता है ।

चिकित्सा—(१) हर प्रकार के क्षोभकारक खाद्य-पेय से परहेज कराये, (२) शीतल आहार खाने को देवें, (३) मलावरोध नही होने देवे और (४) 'तकश्शुरुल्लिसान' मे वर्णित चिकित्सा को यहाँ भी काम मे लेवे । फिरङ्गजनित होने पर उसकी चिकित्सा करें ।

१३—हिक्कतुल्लिसान

नाम—(अ०) हिक्कतुल्लिसान, (उ०) जवान की खारिश, (हि०) जीभ की खुजली, (स०) जिह्वागत कण्डू, (अ०) इक्थियोसिस लिग्वी (Icthyosis Linguae) ।

हेतु और लक्षण—इसके हेतु वे तीक्ष्ण एव दाहकारी पदार्थ हुआ करते है, जो मस्तिष्क से जिह्वा की ओर गिरते है या वाष्प रूप मे आमाशय या सपूर्ण शरीर से उठकर उसकी ओर जाते है । सूरण आदि जैसे कुछ द्रव्यो के सेवन से भी यह रोग हो जाता है । इसमे जिह्वा लाल हो जाती है और रोगी हर समय उसे अपने दाँतो से खुजलाता रहता है । गरम पानी या गरम शूरवा के कवल धारण करने से किसी कदर शाति मिलती है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—दोषशोधन और सौदाविरेचन के उपरात (१) सादा सिकजबीन या (२) शर्बत नीलूफर या (३) शर्बत खशखाश प्रति दिन सेवन करने से उपकार होता है । तदुपरात (४) गरम पानी और (५) सिरका एव गुलरोगन का एक-एक करके क्रमश कवल धारण करने से बहुत लाभ होता है । इसी प्रकार (६) त्रिफला के काढे से कुल्लियाँ करना भी लाभकारी है ।

१४—तकश्शुरुल्लिसान

नाम—(अ०) तकश्शुरुल्लिसान, (उ०) जवान के छिलके उतरना, (अ०) सोराइसिस लिग्वी (Psoriasis Linguage) ।

हेतु और लक्षण—इस रोग के निज (दाखली) और आगन्तुक (खारजी) दो प्रकार के हेतु होते है । मद्य, खारी नदी का जल और तीक्ष्ण क्षारीय लवण आदि का सेवन प्रथम प्रकार मे और शरीर से तीक्ष्ण एव क्षोभक वाष्प का उठना द्वितीय प्रकार मे अतर्भूत होते है, जिनसे केवल जिह्वा ही नहीं, अपितु मुख के भीतर का धरातल और दाँतो के बीच का मास भी विदीर्ण हो जाता है । इसका लक्षण यह है कि जव रोगी अपने तालू और मुख को कपडे आदि से मलता है, तब वहाँ

से महीन और सफेद से छिलके उतरते हैं। परतु, इससे किसी प्रकार का दर्द आदि प्रतीत नही होता।

असस्पृष्ट द्रव्योपचार--(१) यदि रोगी स्तन्यपायी शिशु हो तो उसके मुँह को दूध पिलानेवाली स्त्री के दूध से धोये और दूध पिलानेवाली स्त्री का हेत्वनुसार चिकित्सा करे। (२) गुलाब के फूल और (३) गुलनार को सिरका मे उबाल कर उससे कुल्लियाँ कराने से उपकार होता है तथा (४) सुमाक को अर्क गुलाब मे भिगो और मल-छानकर उससे कवल धारण करना भी लाभकारी है। भोजन मे ऐसे रोगियो को (५) कच्चे अगूर का रस मिलाया हुआ आहार (हस्रमिय्य) या (६) सुमाक डाला हुआ आहार (सुमाकिय्य.), (७) यवमड, (८) मूँग की दाल आदि लाभकारी होती हैं। वे सभी उपाय जिनका उल्लेख तशक्ककुश्शफ्तैन मे किया गया है, इसमे भी लाभकारी हो सकती है।

दन्त-दन्तवेष्ट रोगानुच्छेद (अम्राजुल्अस्नान व अल्लिस) ३

नाम--(अ०) अम्राजुल्अस्नान व अल्लिस्स, (फा०) अम्राजे दर्दां व इराक, (हि०) दाँत और मसूढो के रोग, (स०) दन्त और दन्तवेष्टगत रोग, (अ०) डिजीजेज ऑफ दी टीथ एण्ड गम्स (Diseases of the teeth and Gums)।

दाँतो की स्वास्थ्यरक्षा

दाँतो को रोग एव कष्ट से बचाने और उनको दीर्घकाल तक स्थिर एव स्वस्थ रखने के लिये अधोलिखित उपदेश को ध्यान मे रखना चाहिए--(१) अधिक प्रमाण मे और थोडी-थोडी देर मे भोजन करने से अजीर्ण एव वाष्पोत्पत्ति होकर दाँतो को हानि पहुँचती है तथा (२) अत्यत उपवास कर भोजन करना या (३) भोजन के पश्चात् तुरत सो जाना या (५) भोजन के ऊपर अति मद्यसेवन। (५) पतले और गाढे आहार, जैसे दूध और मछली या अगूर और केले पाये एक साथ खाना दाँतो के स्वास्थ्य के लिये अहितकर है। (६) अत्यत लेसदार वस्तु जैसे रेवडी या सोहन हलुआ या सूखा अजीर चबाना और कडे पदार्थ जैसे बादाम आदि को बलपूर्वक तोडना, (७) अत्यत अम्ल एव शीतल और कठोर पदार्थ, जैसे बर्फ आदि का चबाना और खाना दाँतो के स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। (८) अधिक उष्ण एव शीतल पदार्थ का खाना विशेष कर उष्ण के बाद तुरत शीतल पदार्थ खाना और चबाना दाँतो के लिये परम अहितकर होता है। (९) भोजन करने के बाद चाँदी या सोने के उत्तम बारीक बने हुए दतमार्जनी (खिलाल) या नीम के तिनके से दाँतो के बीच के झरियो को भली भाति स्वच्छ कर लिया करें और भोजन के बाद खूब कुल्ली आदि कर लिया करे जिससे भोजन के कण दाँतो के बीच की झरियो मे अवशेष रहकर सड न जायँ और कोई रोग उत्पन्न

न कर देवे। सवेरे-शाम जरिश्क, पीलू वा नीम की शाखा के दातून से दाँतो को स्वच्छ करने से दाँत दृढ एव बलवान् होते है और मुख की दुर्गन्ध दूर होती है। हर एक लकडी से जो समय पर मिल जाय दातून नही करना चाहिये। इसलिए कि कतिपय लकडियाँ दाँतो के लिये विशेष रूप से अहितकर होती है। दातून सदैव ताजा और नरम प्रयोग करना चाहिए। सूखा, कडा या प्रयोग किया हुआ दातून कदापि उपयोग नही करना चाहिए। (१०) भोजन करने के बाद थोडा-सा पिसा हुआ नमक दाँतो पर मलकर कुल्ली करना और सोते समय (११) गुलरोगन या कोई और तेल दाँतो पर मलना दाँतो के स्वास्थ्य का रक्षक है।

दन्तरोग

१—वज्उल् अस्नान

नाम—(अ०) वज्उल् अस्नान, अलमुस्सिन्न, (फा०) दर्दे ददाँ, (उ०) दाँत का दर्द, (स०) दन्तशूल, दालन, शीतदन्त, (अ०) ओडनटैल्जिया (Odontalgia), टूथेक (Toothache)।

वक्तव्य—शैख आर जालीनूस के मतानुसार दाँतो मे स्पर्श एव सवेदन शक्ति विद्यमान होती है। अस्तु, मसूढो ओर दन्तगत वात-नाडियो की भाँति स्वय दाँत भी शूलाक्रात हो जाते हैं।

भेद—हेतु के विचारानुसार इस रोग के अधोलिखित तीन भेद होते है—(१) उष्ण (हार) जो सादा (अदोषज) उष्ण विप्रकृति या रक्तज एव पित्तज दोष के प्रकोप से होता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे 'ओडटैल्जिया' कहते हैं। (२) शीतल (बारिद) जो सादा (अदोषज) शीतल विप्रकृति या कफज एव वातज (रीही) दोष के कारण होता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे 'ओडटोडायनी (Odontodynae) कहते है। (३) कृमिज दन्तशूल (वज्उल् अस्नान दूदी) जो दाँतो मे कीडा लगने के कारण होता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे 'ओडटोनेक्रोसिस (Odontonecrosis) कहते है।

हेतु—सादा (अदोषज) उष्ण या शीतल विप्रकृति अथवा रक्त, पित्त, कफ और वायु (रीह) का प्रकोप इस रोग का हेतु होता है। इसके अतिरिक्त दाँतो के मलिन रखने और अजीर्ण के कारण तथा अधिक मधुर, अम्ल एव वादी पदार्थ के उपयोग के पश्चात् मुख को स्वच्छ न करने से कोथ उत्पन्न होता और दाँतो मे कीडा लगकर छिद्र हो जाता है तथा इससे भी दन्तशूल हो जाता है। सधिवात एव पारे के अति सेवन से भी दाँत दूषित हो जाते है जिससे यह रोग उत्पन्न

हो जाता है। कभी-कभी स्त्रियो को गर्भावस्था मे यह रोग हो जाता है। स्मरण रखना चाहिए कि मस्तिष्क के रोगो से साधारणत उसके आसन्नवर्ती अवयव भी आक्रात होते हैं। सुतरा जिनको प्राय प्रसेक एव प्रतिश्याय रहता है, वह इस रोग से अधिक आक्रान्त रहते हैं। अस्तु, मस्तिष्क की अवस्था का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये।

लक्षण—साधारणतया रात्रि के समय जब रोगी लेटकर सोने लगता है, किसी एक (विकारी) दाँत मे अति तीव्र प्रकार का शूल आरभ हो जाता है। कभी-कभी दर्द की टीसे इतनी तीव्र होती है कि रोगी को किसी करवट आराम नहीं मिलता। मुँह चलाने (हिलाने) से दर्द मे अधिकता होती है। दाँत के समीप के मसूढे मे सूजन होती है। कभी-कभी कपोल और चेहरा पर भी सूजन हो जाती हैं।

निदान—यदि दाँत का दर्द गर्मी (उष्ण विप्रकृति) से हो तो बहुत तीव्र और बेचैन कर देनेवाला होता है। ठढे पानी से आराम होता है। मसूढे मे भी न्यूनाधिक सूजन होती है। यदि वह सर्दी (शीतल विप्रकृति) से हो तो दर्द के साथ न टीस होती है, न चेहरे मे शोथ (सोजिश) होता है और न मसूढो मे शोथ होता है, यह साधारणतया ठढा पानी या किसी अन्य ठढी वस्तु सेवन करने से उत्पन्न होता है। गर्म वस्तुओ से इसमे आराम प्रतीत होता है। यदि दाँत हिलने और दर्द के साथ विकारी स्थान और सपूर्ण शरीर मे रूक्षता के लक्षण पाये जाते हो, नेत्र भीतर घुस (धँस) गये हो तो उक्त अवस्था मे रोग का हेतु खुश्की वा रूक्षता (रूक्ष विप्रकृति) हुआ करती है। आमाशय के अनुबन्ध से हो तो उसके साथ कुपचन, आमाशय मल से परिपूर्ण होना और रात्रि के भोजन के पश्चात् प्रगट होता है। यदि वायु (रीही माद्दा) से हो तो दर्द एक दाँत से दूसरे दाँत मे स्थानान्तरित होता रहता है। कर्ण या नेत्र के अनुबन्ध से हो तो उनमे भी कोई न कोई रोग विद्यमान होता है। यदि दर्द दाँतो की लबाई मे हो तो रोग-जनक दोष खास दाँतो के जौहर मे होता है। यदि गहराई मे हो तो दाँत के नीचे-वाली वातनाडी मे दर्द हुआ करता है। यदि कृमिदन्त के कारण दर्द हो तो विकारी दाँत मे कोई न कोई छिद्र अवश्य हुआ करता है। और यदि कृमिभक्षित दाँत के नीचे दर्द एव टीस प्रतीत हो तो रोजगनक दोष उनके मूल से हुआ करता है।

चिकित्सासूत्र—यदि दाँत दर्द के साथ हिलते भी हो तो देखना चाहिए कि उन्होने अपना स्थान तो नही छोडा और उनमे छिद्र तो नही है। यदि स्थान न छोडा हो तो दाँत को दृढ करने वाले मजन का उपयोग करें। यदि उनमे छिद्र हो तो रुई मे ओषधि लगाकर छिद्र मे भर देवे। यदि छिद्र वडा हो तो किसी दन्तचिकित्सक से भरवा लेवे। सडे-गले और अपना स्थान छोड देनेवाले दाँत

को निकलवा देना श्रेयस्कर होता है। परन्तु, मजबूत दाँत को केवल दर्द के कारण कदापि नही निकलवाना चाहिए।

चिकित्साक्रम—मूल हेतु का पता लगाकर उसे दूर करना चाहिये। दॉत के ऊपर मल वा किट्ट जमा हो तो उसे दॉत को निर्मल बनानेवाले मजन से मल कर स्वच्छ करे। अजीर्ण और आमवात इसके कारण हो तो उनकी चिकित्सा करे। यदि दोषज हो तो दोष का पाचन और शोधन करे। यदि दर्द गर्मी के कारण हो तो गुलरोगन मे कपूर विलीन करके अथवा तोला गुलरोगन मे कत्था और अफीम प्रत्येक चार रत्ती घोलकर दॉतो पर मले तथा हरे मकोय का रस, हरे धनिये का रस और हरे बारतग का रस सब बराबर-बराबर लेकर अथवा चमेली के पत्ते ६ माशा, पोस्ते की डोडी १ नग, सिरीस की छाल ६ माशा, अनार के जड़ की छाल ६ माशा इनके काढे से गण्डूष कराये। पीने के लिये निम्न योग देवे—उन्नाव ५ दाना, काहू के बीज, कुलफा के बीज, कद्दू के बीज की गिरी प्रत्येक ३ माशा सब को १२ तोला अर्क गावजबान मे पीस लेवे। पुन ३ माशा गावजबान को ५ तोले अर्क गावजबान मे भिगोकर लुआब निकाल कर उसमे मिलाये और २ तोला शर्बत बनफ्शा योजित कर प्रात -सायकाल पिलावे। दोषज दतशूल मे दोष के पाचन और शोधन के पश्चात् उक्त योग सेवन कराये।

यदि दर्द सर्दी से हो तो २ माशा कालीमिर्च महीन पीसकर ६ माशे मधु मे मिलाकर दॉतो पर लेप करे अथवा कबर की जड, दालचीनी, अकरकरा, कालीमिर्च और सोठ प्रत्येक २ माशा—सबको ५ तोले सिरका, पाव भर अर्क गुलाब या डेढ पाव सादे पानी मे उबाल कर गण्डूष कराये। तदुपरान्त काली मिर्च, अकरकरा, राई और सेंधानमक सबको बराबर-बराबर ले—पीसकर मजन बनाकर दॉतो पर मले। यदि साथ ही सौदावी या श्लैष्मिक दोष हो तो छिली हुई मुलेठी, गावजबान, हसराज, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५ माशा जलमे उबाल—छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रात सायकाल पिलाये।

यदि दॉत हिलते हो तो बबूल की छाल के काढे से गण्डूष कराये या सुनूने पोस्त मुगीलॉ (बबूल की छाल आदि से बना मजन) मलवायें। यदि इससे लाभ न हो और दॉत अपने स्थान से हट गये हो तो उन्हे उखडवा देवे। यदि दॉत मे क्रिमि पडने (कीडा लगने) और छिद्र हो जाने के कारण दर्द हो तो सम भाग कमीला, वायविडग और आडू के पत्ते के कुनकुने काढे से गण्डूष कराये और रोगन कमीला या अर्क अजीब या लौग वा दालचीनी के तेल मे रूई का फाहा तर करके विकारी दॉत के छिद्र मे रखे। यदि मसूढो मे पीव पड गई हो तो कपूर और नीलाथोथा १-१ माशा, नौशादर ४ रत्ती सब को १ तोला पानी मे घोलकर उसमे रूई का फाहा तर करके विकारी दॉत के ऊपर फेरें अथवा इस्पंद

सोख्तनी १ तोला को जल मे उबाल कर उससे गण्डूष कराये। यदि प्रसेकीय द्रव से दंतशूल हो तो ६ माशा सुनून तमाकू और १ तोला सुनूने पोस्त मुगीलाँ मिलाकर प्रात सायकाल और रात्रि मे दाँतो पर मले और मण्डूर भस्म तथा प्रवाल भस्म दो-दो रत्ती, ७ माशे अतरीफल उस्तूखुदूस मे मिलाकर प्रात -सायकाल खाया करे। यदि अन्यान्य अगो के अनुबन्ध से दन्तशूल हो तो उनकी चिकित्सा करें। दर्द के कारण यदि कपोलो पर सूजन हो तो सूखा मकोय और अमलतासका गूदा प्रत्येक १ तोला मकोय की पत्ती के रस मे पीस कर कुनकुना गरम करके लेप कराये। हर प्रकार के दन्तशूल मे गर्म या सर्द पदार्थ के सेवन से परहेज करे।

पथ्य—बकरी का शूरवा, चपाती, खिचडी, अरहर या मूँग की दाल, मेथी का साग, चुकदर आदि।

अपथ्य—अम्ल, तेल, गोभी, वैंगन, मटर, प्याज, लहसून, अरवी, आलू, कचालू और बर्फ आदि।

२—तहर्रुकुल् अस्नान

नाम—(अ०) तहर्रुकुल्, अस्नान, (फा०) जुबिशेददाँ, (उ०, हि०) दाँत हिलना, (स०) चलदन्त, (अ०) ओडन्टोसायसिस (Odontoseisis), लूज टीथ (Loose teeth)।

वक्तव्य—जव ५-६ वर्ष के वालको ओर वूढो को यह रोग हो तो उनकी चिकित्सा की आवश्यकता नही। क्योकि वालको के दूध के दाँत गिरकर पुन उत्पन्न हो जाते है आर वूढो को चिकित्मा से लाभ नही होता। कारण उनके मसूढे वहुत कमजोर हो जाते है।

हेतु—दन्तमूल मे पतले श्लैष्मिक द्रवो का सचय, सार्वदिक प्रसेक और प्रतिश्याय, मसूढो की सूजन, अभिघात (चोट), गोश्तखोरा और सार्वाङ्गिक दौर्बल्य।

लक्षण—पतले श्लैष्मिक द्रव और प्रसेक एव प्रतिश्याय मे मसूढे नरम और ढीले होते है। पुष्कल लार वहती है। शोथ और अभिघात मे टीस होती है। गोश्तखोरा और सार्वागिक दौर्बल्य मे उनके लक्षण होते है।

चिकित्सा—सुनूने मुगीलाँ प्रात ओर रात्रि मे सोते समय दाँतो पर मला करे। अथवा अकरकरा, कनेर, गुलनार, नागरमोथा, फिटकिरी, गुलाव के फूल, वालछड प्रत्येक ३ माशा सव को पीस कर मजन वनाये ओर सवेरे-शाम दोनो-वेला दाँतो पर मले।

यदि इन उपायो से लाभ न हो तो कफ का पाचन और शोधन करने के उपरान्त १ रत्ती मण्डूर भस्म ७ माशे जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर भोजनोत्तर सेवन कराये और प्रात -सायकाल सुनूने मुगीलाँ दाँतो पर मलवाया करें।

पथ्य—बकरी के मास का शूरबा, मूँग, अरहर, मसूर की दाल, मेथी, पालक प्रभृति अभ्यासानुकूल ।

अपथ्य—अम्ल, बर्फ, अधिक शीतल जल, और कठिन पदार्थो के सेवन से परहेज करें ।

३—हफ्र व कलह

नाम—(अ०) हफ्र व कलह, तगय्युर लौनेल्अस्नान, (उ० हि०) दॉतो की मैल, दॉतो का रग बदल जाना, (स०) दन्तकिट्ट, दन्तशर्करा, (अ०) टार्टार (Tartar), डिस्कोलोरेशन ऑफ टीथ (Discoloration of teeth) ।

वक्तव्य—कभी-कभी दॉतो पर मल जमकर उनका रग बुरा हो जाता वा बदल जाता है ।

हेतु और लक्षण—दॉत साफ न करना, दूषित आहार सेवन करना, आमाशय का ठीक तरह काम न करना, दूषित दोष का दॉत के भीतर प्रवेश करना इसके प्रधान हेतु हैं । दॉतो पर भूरे रग का मल जम जाता है । इसका रग हरा, काला या पीला हो जाता है जिसका कारण यह है कि जो दोष आमाशय मे सचित हो जाते हैं उनसे सान्द्र बाष्प उठकर दॉतो और उनकी जडो अर्थात् कठिन मल पर जम जाते हैं । उन बाष्पो को जब दातून और मजन आदि से साफ नही किया जाता तब वे हफर व कलह अर्थात् कठिन मल (शर्करा–पथरी) का रूप ग्रहण कर लेते हैं । प्रगल्भ दोषकी पहिचान जमे हुए मल के रग से की जाती है ।

चिकित्सा—प्रात दातून या मजन दॉतो पर मलें । भोजनोत्तर दॉत भलीभॉति साफ किया करे । सुनूने मुजल्ली दॉतो पर मले । कबर की जड, अफसन्तीन, मस्तगी और अकरकरा प्रत्येक ६ माशा पानी मे उबाल कर उससे कुल्लियॉ करे ।

यदि इस प्रकार लाभ न हो तो किसी चतुर दन्तचिकित्सक से दॉतो का मल (किट्ट) उतरवा देवे । यदि दॉत का रग स्वच्छ न हो तो पीला होने की दशा मे पित्त का और काला होने की दशा मे सौदा का शोधन करें । तदुपरान्त भोजनोत्तर ७ माशा जुवारिश जालीनूस सेवन करायें । दॉतो पर सुनून मुजल्ली मलें ।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, कुलफा, पालक, तुरई, सेब आदि अभ्यासानुकूल दे ।

अपथ्य—अम्ल, बर्फ, शीतल जल, एव अत्यन्त शीतल पदार्थो से परहेज करे ।

४—सरीरुल् अस्नान

नाम—(अ०) स (ज) रीरुल् अस्नान (फ़िन्नौम), (उ०, हि०) नीद मे दाँत पीसना, (स०) दन्त शब्द, (अ०) ओडन्टोप्रायसिस (Odontoprisis), ग्राइंडिंग ऑफ टीथ (Grinding of teeth)।

वर्णन—प्राय बालको मे साद्र वायु वा द्रव के कारण जबडो (हनुओ) की पेशियाँ दुर्बल एव ढीली हो जाती है और नीद की दशा मे उनकी ऊष्मा उन वायु एव द्रवो को विलीन नही कर सकती। अतएव साधारण-सा आक्षेप हो कर दाँत बजते है। कभी-कभी बूढो और स्त्रियो को इसी कारण यह रोग हो जाता हे।

हेतु—द्रव की अधिकता, सान्द्र वायु, उदरकृमि ओर अजीर्ण आदि। कभी यह रोग सन्यास, अपस्मार, आक्षेप और पक्षवधकी पूर्व भूमिका (पूर्व रूप) होती है।

लक्षण—रोगी नीद मे दाँत पीसता हे। प्राय उसके मुँह से लार भी बहती है। अँगडाइयाँ और जम्हाइयाँ अधिक आती है।

चिकित्सा—यदि द्रवातिरेक और वायु वा अग्निमान्द्य (आमाशय दौर्बल्य) के कारण यह रोग हो तो कफ का शोधन करने के उपरान्त लोह भस्म १ चावल ९ माशे माजून फलासफा मे मिला कर प्रात-सायकाल सेवन कराएँ और ऊपर से १० तोले अर्क सौफ मे २ तोले मधु मिला कर उबाल कर पिलाएँ तथा रात्रि मे हब्ब इयारिज ७ माशा या अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला खिलाते रहें तथा रोगन कुश्त (कुष्ठ तैल) या रोगन सोसन ग्रीवा पर मर्दन करें। यदि यह रोग उदर-क्रिमियो के कारण हुआ हो तो उसकी चिकित्सा करें।

पथ्यापथ्य—जरसुल् अस्नानवत्।

५—जरसुल् अस्नान

नाम—(अ०) जरसुल् अस्नान, जहावोमाएल् अस्नान, (उ०, हि०) दाँत कुद या खट्टे वा कोट होना, दाँतो की आब जाते रहना (स०) दन्तहर्ष, (अ०) रफनेस ऑफ टीथ (Roughness of teeth), ओडटोट्रिप्सिस (Odontotripsis)।

वर्णन—दन्त हर्ष (दाँत कुद होने) मे किसी खुरदरापन उत्पन्न करने वाले हेतु से दाँत सवेदना रहित एव सुन्न हो जाते है। दाँत के नीचे कोई वस्तु चबाने से इतना कष्ट होता है कि शरीर के रोगटे खडे हो जाते है। दाँतो की नजाकत (जहावो माएल् अस्नान) मे उनकी आब जाती रहती है और वे शीतल एव उष्ण स्पर्श सहन नही कर सकते।

हेतु—अम्ल, सग्राही और फीकी वस्तु के निरतर चबाने या आमाशय मे

अम्लता अधिक हो जाने से दाँतो की कुदी अर्थात् दाँत कोट होना और बर्फ आदि अत्यन्त शीतल द्रव्यो के सेवन या बारबार दाँत साफ कराने के कारण दाँत की आब जाते रहने से नजाकत रोग उत्पन्न होता है ।

लक्षण—दाँतो की कुदी मे दाँत खट्टे हो जाते है और वस्तुओ को चबाने से कष्ट अनुभव होता हे । दाँतो की नजाकत से भी वस्तुओ को चबाने से कष्ट अनुभव होता है और उष्ण एव शीत स्पर्श सहन की शक्ति नही रहती ।

चिकित्सा—दोनो मे प्राय गर्म वस्तुओ का सेवन लाभकारी होता है । सुतरा गर्म रोटी का निवाला (कवर) या गर्म कबाब दाँतो के नीचे दबाने से लाभ होता हे । २ तोले गुलकन्द असली मे ६ माशा सोंफ मिला पकाकर पिलाने से भी उपकार होता है । नमक, सातर कोही, जरावद तवील, शिब्ब यमानी (फिटकिरी) सबको बराबर-बराबर ले पीस कर दाँतो पर मलते रहने से भी लाभ हो जाता हे । कुछ काल चाँदी का छल्ला दाँतो मे रखने से लाभ होता हे । यदि इन उपायो से लाभ न हो तो कफका मुजिज (पाचन) पिलाकर शोधन करे । तदुपरान्त इयारिज फैकरा सेवन कराये और दाँतो पर मलवाये ।

पथ्य—बकरी के मास का शूरवा, चपाती, करेला, तुरई, मूँग, अरहर की दाल आदि ।

अपथ्य—अम्ल, बर्फ, आलू, भिडी, गोभी, उडद की दाल, टमाटर और अचार आदि ।

६—हिक्कतुल् अस्नान

नाम—(अ०) हिक्कतुल् अस्नान, (उ० हि०) दाँत की खुजली, (अ०) इरिटेशन इन टीथ (Irritation in teeth) ।

हेतु और लक्षण—यह रोग कभी-कभी दुष्ट गुणान्वित जल पीने या तीक्ष्ण एव क्षोभकारक आहार सेवन करने से हो जाया करता है । उष्ण एव क्षोभकारी दोषोत्पन्न खाद्य एव पेय का कुछ अश दन्तमूल की ओर गिर कर दाँत और मसूढो मे खुजली उत्पन्न कर देता है । यदि शरीर के शेष भाग मे भी यही दोष फैल गया हो तो और स्थानो मे खुजली प्रतीत हुआ करती है । इस प्रकार की खुजली से दाँतो मे यह अवस्था हुआ करती है कि जब तक रोगी उनको पीस-पीस कर खुजलाता न रहे, शाति नही मिलती ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—सौदा की शुद्धि के उपरान्त (१) अर्क गुलाब ओर सिरका या (२) सिकजबीन सादा या असली से कुल्लियाँ कराये । यदि रोगी की प्रकृति शीत लिये हो तो (३) सिरका मे मधु और चुडैल का तेल (कतरान) पका कर उसका कवल धारण करने और पतला लेप करने से लाभ होता है ।

उष्ण एव दोष-सशमनार्थ आतरिक रूप से (४) १० तोला तरबूज के रस मे २ तोला सफेद शकर मिला कर या (५) १० तोला कुलफा का रस या (६) १० तोला हरे कासनी का रस, ४ तोला सिकजबीन मिला कर पीने से लाभ होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—सोदा की शुद्धि के उपरान्त (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल जमानी ९ माशा अकेला या ६-६ तोला अर्क गावजबान और अर्क मुण्डी के साथ उपयोग करने से उपकार होता हे। विशेष शुद्धि के लिये (३) हब्ब अफ्तीमून, (४) हब्ब इयारिज यथा विधि सेवन करने से लाभ होता हे। उष्णता शमन और प्रकृति परिवर्तन के लिये (५) खमीरा आबरेशम हकीम इर्शादवाला ५ माशा या (६) खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाववाला ५ माशा अकेले या ५ तोला अर्क गजर ४ तोला, अर्क बादियान ३ तोला, अर्क अबर २ तोला ओर मिश्री मिलाकर सेवन करने से अद्भुत लाभ होता हे। दाँत को दृढ एव सक्षोभक द्रवो के उत्सर्ग के लिये (७) सुनून पोस्तमुगीलाँ वाला, (८) सुनून तम्बाकू मजन की भाँति दाँतो पर मलकर लगभग दो घटे तक कुल्ली न करना आर रात्रि मे भी सोते समय दाँत पर मलकर सो रहना अतीव गुणकारी हे।

पथ्य—शीतल ओर स्निग्ध आहार, जैसे छिली हुई मुँग की दाल, कद्दू, पालक, मुर्गी का बच्चा आदि का सेवन करे।

अपथ्य—तीक्ष्ण (कटुक), तिक्त और नमकीन पदार्थो से यावच्छक्य बचे।

७—तफत्तुत व तकस्सरुल् अस्नान

नाम—(अ०) तफत्तुल् अस्नान, तकस्सरुल् अस्नान, (उ० हि०) दाँतो का रेजा-रेजा होना, दाँतो का टूटना (अ०) ओडटोनेक्रोसिस (Odontonecrosis) केरीज ऑफ टीथ (Caries of teeth)।

हेतु और लक्षण—तफत्तुत और तकस्सुर मे केवल यह अतर है कि प्रथमोक्त मे दाँत से छोटे-छोटे कण पृथक् होते हैं और अतिमोक्त मे उससे बडे-बडे टुकडे टूट कर पृथक् होते हैं। कभी कभी इस का हेतु दाँत का प्रकृतिस्थ द्रव होता हे। पर कभी-कभी अत्यन्त रूक्षता से भी यह रोग हो जाता है। दोनो मे विभेद करने के लिये यह देखना आवश्यक हे कि दाँत बारीक, कृश एव रूक्ष है तथा रोगी दुर्बल, अत्यन्त श्रमशील या वृद्ध हे। यदि ऐसा हो तो समझ लो कि रोग का हेतु रूक्षता है। यदि इसके विपरीत हो, तो द्रव को रोगजनक दोष माना जायगा।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—द्रवातिरेक जनित तफत्तुत व तकस्सर मे दोष के स्राव को रोकना और अत्यन्त सग्राही द्रव्यो से दाँतो को बल प्रदान करना लाभकारी होता है। अस्तु (१) फिटकिरी, (२) नौसादर और (३) भसीकृत माजू आदि

हर एक अलग-अलग शहद मे मिला कर दाँतो पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। रूक्ष दोष मे जो कठिनतापूर्वक आराम हो सकता है, रोगी की प्रगलभता को रोकने के लिये स्निग्ध आहार, यथा--(४) यवमड,(५) कद्दू मिश्रित आहार (कईय्य) और (६) पालक युक्त आहार (इस्फानाखिय्य) सेवन करना और रूक्ष आहार से परहेज आवश्यक एव लाभकारी होता है। (७) इसबगोल का लुआब (८) मुर्गी के अडे की सफेदी (९) गदही के दूध प्रभृति स्निग्ध द्रव्यो मे से जो मिल जाय उसे कवल (मज्मजा--कुल्ली) की भाँति प्रयोग करने और (१०) रोगन वनफ्शा, (११) रोगन वादाम का अभ्यङ्ग करना तथा मुख मे धारण करना और (१२) गाय के मक्खन का लेप लाभकारी होता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार--द्रवातिरेक की दशा मे कफसशोधनोपरान्त(१)अतरी फल सगीर १ तोला या (२) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला उपयोग करते रहे और विशेष शुद्धि स्वरूप (३) हब्ब इयारिज विधिवत् सेवन करे। वे सभी योग और मजन आदि जिनका उल्लेख 'तहर्रुकुल् अस्नान' के प्रकरण मे किया जा चुका है, इस रोग मे भी लाभदायक हो सकते है। रूक्षता की दशा मे मस्तिष्क के रूक्ष रोग तथा रूक्षाक्षेप के उपायो को ध्यान मे रखें और स्नेहनार्थ (४) खमीरा गावजबान अवरी जवाहरवाला ५ माशा अकेले या लुआब विहीदाना, शीरा मग्ज कद्दूए शीशी प्रत्येक ८ माशा, शीरा उन्नाब ७ दाना, १२ तोले अर्क गावजबान मे तुख्म निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा या मिश्री मिला कर पिलाये। इसके अतिरिक्त 'तहर्रुकुल् अस्नान' के प्रकरण मे मसूढे की कमजोरी एव रक्ताल्पता के लिये उल्लिखित दाँत और मसूढो को बल प्रदान करने वाले योग--मजन और कवल आदि का आवश्यकतानुसार उपयोग करें।

पथ्यापथ्य--रोग के प्रधान हेतु के विचारानुसार पथ्यापथ्य स्थिर करे।

८--तजय्यदुल् अस्नान।

नाम--(अ०) तजय्यदुल् अस्नान, (उ०) दाँतो का बढ जाना; (स०) दन्तशोथ, (अ०) ओडन्टायटिस (Odontitis)।

हेतु और लक्षण--इसका हेतु यह है कि जहाँ दाँत साधारण आहार को ग्रहण करते है वहाँ उन दोषो (मवाद) को भी, जो उनकी ओर गिरा करते हैं, अपने भीतर स्थान दे सकते हैं, जिससे उनका आयतन एव स्थूलता अधिक हो जाती है। अस्तु, जब उनके ऊपर कोई माद्दा स्रावित होता है तब उससे परिपूर्ण हो कर वे शोथयुक्त हो जाते हैं, जिसके साथ कभी-कभी दर्द भी होता है और कभी नही होता। यदि दोष गर्म हो तो शोथ वेदनापूर्ण होता है। परन्तु, द्रवातिरेक

(खिल्त रतूवी) की दशा मे दर्द नहीं पाया जाता। कभी-कभी सूजे हुए दाँत इतने लम्बे हो जाया करते हैं कि दूसरे दाँतो से भी किसी वस्तु के चवाने मे वाधक हुआ करते हैं। इस प्रकार के वर्धित दाँत जन्मत अन्य सभी दाँतो की अपेक्षया अधिक कडे होते हैं। अथवा उनकी जड मे सूजन हुआ करती है या वह अपने केंद्र स्थान से ऊपर उखड आते हैं।

चिकित्सा—यदि उक्त शोथ के साथ दर्द भी हो तो (१) सरारू का सिरावेध करवाने और (२) उपयुक्त विरेचन से शरीर का शोधन करने और आहार के सुधार एव कमी से लाभ होता है। वेदना शमनार्थ (३) पोस्ते का दाना पडे हुए यवमड के सेवन से भी लाभ होता है। उक्त अवस्था मे दोषविलोम करण की भी आवश्यकता होती है। अतएव (४) सिरका मे मिलाये हुए मकोय के रस की अर्क गुलाव और गुलरोगन मे से किसी एक के साथ कुल्लियाँ लाभकारी होती हैं। यदि दाँतो की सूजन वेदनारहित हो तो दोषपाचनोपरान्त (५) मत्वूख अफ्तीमून से सामान्य शोधन और पुन (६) हब्ब इयारिज से मस्तिष्क की विशेष शुद्धि करना स्वास्थ्य का हेतु होता है। यदि कोई दाँत जन्मज कठोरता के कारण लवा हो गया हो, तो उसे दो अँगुलियो या किसी लोहे के यन्त्र मे पकड कर (७) रेती से रगड डालना श्रेष्ठतर होगा, जिसमे वह अन्य दाँतो के वरावर हो जाय। जड की सूजन से जो लम्बाई होती है उसके लिये (८) कीफाल का सिरावेध और उपयुक्त सशोधनो का व्यवहार आवश्यक है। यदि जड मे दोष सचित हो जाने के कारण दाँत उखड आया हो तो सर्वथा अलग हो जाने की दशा मे असाध्य होता है। परन्तु सम्वन्ध वना रहने पर (९) सरारू का सिरावेध एव दोष सशोधनोपरान्त (१०) शिव्व यमानी और (११) इन्द्रायन को सिरका मे उवाल कर उससे कुल्लियाँ करने और उखडे हुए दाँत को उसकी जड मे प्रविष्ट करके (१२) चाँदी या सोने के तार से वाँध देने से उसकी पुन स्थिरता एव जीवन का साधन वन जाता है। तदुपरान्त (१३) मस्तगी या (१४) शिव्व यमानी पीस कर जड़ मे छिडकने से जड मजवूत होती है और आगामी पतित होनेवाले दूषित दोष को ग्रहण नहीं करती।

९—तस्हीलो नबातेल् अस्नान

नाम—(अ०) तस्हीलो नवातेल् अस्नान, (उ०) दाँत आसानी से उगना, (हि०) दाँत सरलता से निकलना, (अ०) ईजी ओडनटायसिस (Easy Odontiasis)।

वालको के सहज दन्तोद्गम का उपाय यह है कि जव अगले दाँतो के प्रगट होने के लक्षण दिखाई पडे तव मसूढो को वसा एव मज्जा से तर रखा जाय, विशेष

कर (१) मुर्गी की वसा और (२) खरहे की मज्जा (मग्ज) मलने से बहुत शीघ्र दाँत निकलते हैं। इसके अतिरिक्त (३) मधु एव मक्खन या (४) बादाम का तेल या बत्तख की चर्बी से मसूढो को स्नेहाक्त करते रहने से भी बहुत लाभ होता है। एतत्कालीन वेदना नष्ट करने के लिये (५) मकोय का रस गुलरोगन मे मिला कर गरम-गरम मलने से लाभ होता है। किसी-किसी के मत से बालक के गले मे (६) सीप लटकाने या (७) रीछ या (८) घोडे या (९) कुत्ते का दाँत लटकाने से भी विशेष रूप से दाँत सहज मे निकल आते हैं।

दन्तवेष्टगत रोग

१—वरमुल्लिसा

नाम—(अ०) वरमुल्लिस्स, (उ०, हि०) मसूढो की सूजन, (स०) दन्तवेष्ट प्रकोप, (अ०) जिजिवाइटिस (Gingivitis)।

भेद—इस के निम्न तीन भेद होते हैं—(१) रक्तज, (२) पित्तज, (इन दोनो को उष्ण शोथ कहते हैं) और (३)कफज (इसको शीतल शोथ कहते हैं)।

हेतु—दन्तविकार, प्रसेक एव प्रतिश्याय, आमाशयिक वाष्प, पारदविषमयता, दन्तमूलगत रक्तस्राव, बालको मे दन्तोद्भेद, फिरङ्ग और कण्ठमाला आदि।

लक्षण—रक्तज मे लाली, एव दर्द और टीस होती है। पित्तज मे लाली एव दाह होता है, शोथ कम और दर्द अधिक होता है। कफज शोथ का रङ्ग सफेद और शीत-स्पर्श होता है और दर्द एव दाह कम होता है।

चिकित्सा—निदान परिवर्जन करे। गर्म (पित्तज और रक्तज) सूजन मे गुलनार, आर्दसूरद, तुख्मसूरद, लाल चन्दन, सुपारी, सुमाक, धनिया प्रत्येक ६ माशा, पानी मे उबालकर उससे कुल्लियाँ कराये। गुलनार, गुलाब के फूल, मसूर, मसीकृत सुपारी, माजू, सुपारी, प्रत्येक ३ माशा कूट-छान कर मसूढो पर मले और १२ तोला अर्क शाहतरा मे ३ माशे बिहीदाने का लुआब, ५ दाने उन्नाव और ३ माशे काहू के बीजो का शीरा निकालकर २ तोले शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो शोधन करे और पुन ये ही उपाय ग्रहण करे। कफज शोथ मे मध्वम्बु (माउल्अस्ल) से कुल्लियाँ करें और सुनूने तम्बाकू या सुनूने पोस्त मुगीलाँ दाँतो पर मल देवें। आवश्यकता होने पर शोधन करे।

पथ्यापथ्य—क्रुरूहलिस्सावत्।

२--कुरूह व नासूर लिस्सा

नाम—कुरूह (अ०) कुरूहुल्लिस्स, तकय्युहुल्लिस्स, (उ०) मसूढो से पीप आना, मसूढो के पुराने पीपदार जख्म, (स०) दन्तवेष्ट (क), (अ०) पायोरिया ऑल्विओलैरिस (Pyorrhoea Alveolaris) सप्यूरेटिव्ह जिन्जिवाइटिस (Suppurative Gingivitis) ।

नासूर (अ०) नासूरुल्लिस्स, तकय्यूह अवारी, (उ० हि०) मसूढो का नासूर, (स०) दन्तनाडी, (अ०) साइनस इन् दि गम्स (Sinus in the gums), रिग्स डिजीज (Rigg's disease) ।

वक्तव्य—जव दन्तमूल के चतुर्दिक् मसूढो के भीतर व्रण वनकर उससे पीप वहने लगती हे तव उन्हे **कुरूह लिस्सः** (दन्तवेष्ट) कहते है। जव ये व्रण वहुत पुराने एव दुर्गन्धयुक्त हो जाते है तव उन्हे **नासूरलिस्सः** (दन्तनाडी) के नाम से अभिधानित करते है। इसमे एक छिद्र वा नाली होती है जिसमे से पिलाई लिये एक प्रकार का द्रव (जर्दाव) वहा करता हे। इसका रोपण कठिन होता हे।

भेद—यद्यपि इस रोग का कोई विशिष्ट भेद नही है, तथापि जव व्रण मे शोथ एव दुर्गन्ध न हो तव उसको 'कर्हा सादा' और जव शोथ एव दुर्गंध अधिक हो तो तव 'कर्हा खवीसा' कहते है। जव ये व्रण दिनो दिन दूषित हो कर गलते जायँ तव उन्हें 'आकिल' या 'गोश्तखोर' कहते है।

हेतु—इस रोग का कारण साधारणतया पित्त या रक्त वा दूषित द्रव होता है, जिनमे विदग्ध सौदा की प्रगल्भता होती है। दाँतो को स्वच्छ न करने से उन पर मल जम जाता है और भोजन के कण दाँतो मे दूषित होकर इस रोग को उत्पन्न कर देते है। भोजन को भली भाँति चवाकर न खाना तथा मधुर भोजन का अतिसेवन भी इस रोग की उत्पत्ति मे सहायक होता है। वातरक्त और आमवातिक प्रकृति के लोगो को यह रोग अपेक्षाकृत अधिक होता है।

लक्षण—दन्तमूल के ऊपर पीले रग का प्रचुर कडा मल (हफ्र--शर्करा) होता है। कभी-कभी मसूढो से रक्त वहता हे। फिर उनमे पीप पड जाती है जो मसूढो को दवाने से भली भाँति प्रगट होती है। मुख से दुर्गन्ध आने लगती हे। दाँत सड कर हिलने लगते है और अन्त मे गिर पडते है। कभी-कभी यह रोग एक दाँत के मसूढो मे उत्पन्न हो कर उसीमे सीमित रहता है। पर प्रायश फैल कर समस्त मसूढो को आक्रान्त कर लेता है। चेहरे का रग प्राय मलिन होता है।

वक्तव्य—दन्तवेष्ट और दन्तनाडी एक अत्यत कष्टदायक, दुष्ट एव दुश्चिकित्स्य रोग है जो तीव्र प्रकार के उपद्रव प्रगट होने पर प्राय साघातिक सिद्ध होता है। परतु दाँत सडकर गिर जाने पर साधारणत रोग आराम हो जाता है। पुराना होने पर कभी-कभी इसके साथ (तप व दिक) भी हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—इस रोग मे मुख और दाँत को स्वच्छ रखना चाहिए तथा सग्राही एव जीवाणुनाशक ओषधियाँ सेवन करनी चाहिए, यदि दाँतो पर कठिन मल हो तो उसे दन्तचिकित्सक से साफ कराना चाहिए। यदि रोग का असर रक्त तक पहुँच गया हो तो रक्तशोधक ओषधियो का प्रयोग कराना चाहिये। यदि निरतर की जानेवाली चिकित्सा से लाभ न हो और उसका प्रभाव साधारण स्वास्थ्य एव अन्यान्य अगो पर पड रहा हो, तो पुन मसूढो का छेदन करवा देना अथवा दाँतो को निकलवा देना चाहिए।

चिकित्सा क्रम—२ तोले मिश्री के चूर्ण मिले हुए ५ माशे सौफ, ५ दाने उन्नाव और ३ माशे इलायचीदाना के शीरा के साथ १ तोला अतरीफल शाहतरा प्रात -सायकाल सेवन कराये, भोजनोत्तर ३ गोली हब्ब पपीता खिलायें। गुलनार, माजू, सुमाक, जौजुस्सरो, समूचा मसूर, ऊदसलीव, सूखा मकोय, धनिया, सफेद चन्दन प्रत्येक ९ माशा को अगूरी सिरका और अर्क गुलाव प्रत्येक १ पाव से पका छान कर इससे गण्डूष करायें। तदुपरान्त झाऊ और अकरकरा प्रत्येक ९ माशा, ममीरा ३ माशा, पीली हड ६ माशा, गुलाब के फूल, नौसादर, कबाबचीनी और समुद्रफेन प्रत्येक १॥ माशा, गुलनार और सुमाक प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा–समस्त द्रव्यो को कूट-छान कर चूर्ण वना कर रखे और मजन की भाँति लगवायें। दुष्टव्रण एव दन्तनाडी मे ताजा अनबुझा चूना १ तोला, पीला हडताल, लाल हडताल, सज्जी, जगार और अकाकिया प्रत्येक ६ माशा–सब को कूट-छान कर और तीक्ष्ण सिरका मे मिलाकर टिकिया वनाकर सुखायें और पीसकर व्रण के ऊपर अवचूर्णन करें (छिडके)। कुछ कालोपरान्त मुख को अर्क गुलाब आदि से धोये या जराबन्द मुदहरज को पीसकर मधु मे मिलाकर लेप करें। यदि आवश्यकता हो तो दोष का पाचन करके विरेचन देवें।

पथ्य—वकरी के मास का शूरबा, मूँग या अरहर की दाल, कद्दू, तुरई, करेला, मेथी का साग, पालक का साग, आदि।

अपथ्य—अरवी, आलू, बैगन, भिडी, आदि बादी पदार्थ तथा बर्फ एव अम्ल से परहेज करें।

३—लस्सा दामिय्या

नाम—(अ०) लस्स दामिय्य, स्करबूत, (उ०, हि०) मसूढो से खून आना, गोश्तखोरा, (अ०) ब्लीडिग गम (Bleeding gum), स्कर्वी (Scurvy)।

वर्णन—इस रोग मे मसूढे पिलपिले हो जाते है और उनसे रक्त वहता है तथा रोगी वहुत दुर्वल हो जाता हे।

हेतु—मसूढो की पोषण शक्ति का दौर्बल्य या रक्त-प्रकोप वा रक्तविकार इस रोग का साधारण हेतु है। पर किसी-किसी ने मसूढे की रगो की दुर्बलता और पोलापन को भी इसका उत्पादक कारण स्वीकार किया हे।

लक्षण—रक्त प्रकोप की दशा मे मसूढे लाल होते है और इससे भिन्न दशाओ मे सफेद एव विवर्ण (वदरग) होते है। यदि रक्तविकार इसका कारणभूत हो तो रक्त दुष्टि के अन्यान्य लक्षण पाये जायेंगे। यदि केवल रगो की दुर्बलता के कारण हो तो रगें रक्त से परिपूर्ण एव नीली होगी परन्तु, रक्तदुष्टि एव अधिकता के अन्यान्य लक्षण इसके साथ नही होगे। यदि किसी पारद के योग या किसी तीक्ष्ण ओषधि के सेवन से हो तो इससे पूर्व कोई ऐसी ओषधि सेवन की गई होगी। किसी दाँत आदि के हिलने वा खराबी से हो तो वह विद्यमान होगी।

चिकित्सा—रक्त की प्रगल्भता एव रक्तदुष्टि के कारण मसूढो से रक्तस्राव हो रहा हो, तो सिरावेध करायें और रक्तशोधक ओषधियाँ पिलाये। यदि केवल मसूढो की रगो की दुर्बलता से हो तो सग्राही ओषधियाँ लगायें और बलवर्धक-ओषधियाँ सेवन कराये। ६ माशा फिटकिरी महीन पीसकर एक बोतल पानी मे मिलाकर उससे कुल्लियाँ कराये। सूजन दूर करने और रक्तस्राव रोकने के लिये यह परम गुणकारी है। गुलबाबूना, इक्लीलुल्मलिक, अलसी और मेथी प्रत्येक ६ माशा सबको पानी मे उवालकर उससे कुल्लियाँ कराने और २ तोले पोस्ते की डोडी के काढे से सेक करने से लाभ होता है। यह मजन मसूढो पर मले—रूमी मस्तगी, हरा माजू, सफेद कत्था और भुनी हुई फिटकिरी प्रत्येक ३ माशा को कूट-छानकर मजन बनाये और आवश्यकतानुसार प्रात सायकाल मसूढो पर मलें। सुनूने पोस्त मुगीलॉ या सुनूने कलॉ या सुनूने तवाकू या सुनूने जर्द मे से कोई एक सुनून (मजन) आवश्यकतानुसार दाँतो और मसूढो पर मलने से लाभ होता है।

अपथ्य—उडद की दाल, अरवी, आलू, भिडी, मटर और बादी एव गलीज पदार्थ और शीतल जल के सेवन से परहेज करें।

पथ्य—बकरी के मास का शूरवा, चपाती, मूँग और अरहर की दाल, करेला, मेथी का साग, विस्कुट, पाव रोटी आदि अभ्यासानुकूल सेवन करें।

कण्ठान्न प्रणाली स्वरयन्त्र रोगाध्याय ६

नाम—(अ०) अम्‌राजुल्‌हलक वल्‌मरी वलहजर, (उ०) हलक वमरी व नरखरा की बीमारियाँ; (हि०) कण्ठ, अन्नप्रणाली और स्वरयन्त्र के रोग, । (अ०) डिजीजेज आफ दी थ्राट, ईसोफैगस एण्ड लेरिक्स (Diseases of the throat, Oesophagus and Larynx) ।

वक्तव्य—कण्ठरोगो की सिद्धान्तत सर्वोत्तम चिकित्सा सिरावेध (फस्द) है। यदि सशोधन अपेक्षित हो तो तात्कालिक आवश्यकता के लिये दोष-पाचन (मुजिज) के विना भी विरेचन दे सकते हैं। कण्ठरोगो मे कष्ट के समय हाथ-पाँव खीचकर बाँधना भी एक हितकर उपाय है।

कण्ठरोग

१—इस्तर्खाउल्लहात

नाम—(अ०) इस्तर्खाउल्लहात, सुकूतुल्लहात, (उ०) कौवा गिरना, घुडी पडना, कौवा लटक जाना, (स०) गलशुण्डिका, कण्ठशुण्डी, (अ०) इलॉङ्गेशन आफ दी युहव्युला (Elongation of the Uvula) ।

हेतु—रक्त प्रकोप के कारण उष्ण विप्रकृति या कफ प्रकोप के कारण स्निग्ध एव शीतल विप्रकृति की उत्पत्ति इसका हेतु है। यह रोग स्निग्ध प्रकृति के लोगो, विशेषत बालको को और रबीकी उष्ण स्निग्ध तथा शरद् की शीतल स्निग्ध ऋतु मे अधिक हुआ करता है और युवाओ की अपेक्षया बालक इससे अधिक आक्रात हुआ करते हैं। कभी इसके साथ ज्वर भी होता है। कभी-कभी कण्ठगत क्षोभ या पुरानी सूजन अथवा कफ की अधिकता से कण्ठ की झिल्ली ढीली होकर कौवा गिर पडता है।

लक्षण—कौवा ढीला और लबा होकर नीचे लटक जाता है। रोगी के कण्ठ मे किसी वस्तु के होने की प्रतीति होती है जिसके कारण कण्ठ के भीतर क्षोभ एव सुरसुराहट होकर बारबार शुष्क खाँसी उठती है जो साधारणतया चित्त लेटने पर आती है। कभी खाँसी की तीव्रता से इतना उत्क्लेश एव कष्ट होता है कि उससे वमन हो जाता है। निगलने मे रोगी को कष्ट अनुभव होता है। यदि शिशु इस रोग से आक्रात हो तो वह कृश और दुर्बल हो जाता है। जीभ को बाहर खीचकर रोगी के कण्ठ मे देखने पर कौवा स्पष्टत लटका हुआ दिखाई देता है।

निदान—रक्तज (उष्ण-स्निग्ध विप्रकृति) मे गर्मी, शोथ और लाली के साथ प्यास भी होती है और कभी ज्वर भी होता है। कफज मे कौए का रग

सफेद होता है, शोथ और प्यास कम होती है। परतु मुँह से पुष्कल लार बहती है। कौए की जड पतली और सिर मोटा दिखाई देता है। अन्य हेतुओ की विद्यमानता उनके निदान के लिये पर्याप्त है।

चिकित्सासूत्र——रोगी को साधारण स्वास्थ्य के ध्यान रखने का आदेश करे और ऐसी सभी बातो से वचने के लिये कह देवे जिनसे कण्ठ के भीतर क्षोभ होता है। प्रगल्भ दोप का यथाविधि पाचन और शोधन करने के उपरात छीक उत्पन्न करे और गलशुण्डी तथा उसकी जड के ऊपर सग्राही औषधियाँ लगायें।

चिकित्साक्रम——रक्तज मे सिरावेध करने के उपरात सिरका और अर्क गुलाव मिलाकर उससे गण्डूष कराये। अथवा पोस्त अनार, माजू, गुलनार फारसी, बबूल की छाल प्रत्येक १ तोला सबको १ एक सेर पानी मे उबालकर उससे गण्डूष करायें। इसी प्रकार विलायती मेहदी, गुलनार, गुलाब के फूल प्रत्येक ६ माशा के क्वाथ मे ४ तोले शर्वत शहतूत मिलाकर उससे गण्डूष कराने से भी लाभ होता है। निशास्ता को सिरका मे पीसकर अथवा मुलतानी मिट्टी को पानी मे पीसकर चँदिया पर लगाना लाभकारी उपाय है। गुलाव के फूल, हरा माजू, सुपारी, गुलनार और सुमाक प्रत्येक १ माशा को महीन पीसकर मलमल के कपडे मे छान कर छोटे चमचे मे रख कर उँगली से अथवा रूई के फाहा से गलशुण्डी पर लगाये अथवा दाँत मे लगाने की मिस्सी उँगली मे लगाकर उससे पतित (स्थानच्युत) गलशुण्डी को उठाये और मुलतानी मिट्टी तथा इसबगोल प्रत्येक १ तोला सिरका मे मिलाकर कपडे पर फैलाकर तालू के ऊपर लगाये।

कफज गलशुण्डी मे हब्ब इयारिज से शोधन करने के उपरात अजीर और राई प्रत्येक २ तोले को सेर भर पानी मे पका कर उससे गण्डूष कराये और भुनी हुई फिटकिरी ३ माशा को ६ माशा मधु मे मिलाकर गलशुण्डी पर लगाने से उपकार होता है। इसी प्रकार माजू का लेप भी लाभकारी होता है। गले मे रूमाल डाल कर ऊपर को उठाने से भी लाभ होता है।

पथ्य—गेहूँ की दलिया, यवमड, मूँग की दाल, बकरी का शूरवा आदि।

अपथ्य—अम्ल, तेल, आलू, गोभी, अरवी आदि बादी एव गरिष्ठ पदार्थो से परहेज करे।

२——वरमुल्लहात

नाम—(अ०) वर्मुल्लहात, (उ०) कौए की सूजन, (स०) गलशुण्डीशोथ; (अ०) यूव्हयुलाइटिस (Uvulitis)।

हेतु और लक्षण—इस रोग के विभिन्न हेतु होते है। यह भी कण्ठशोथ (खुनाक) एव मुखपाक की भाँति (१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज

(४) सौदावी और कभी (५) प्रसेकज (नजली) होता है। हेतुओ के निदान के लिये भी उन्ही साधनो का आश्रय लिया जाता है। अस्तु (१) रक्तज मे शोथ और शोथ स्थल लाल और (२) पित्तज मे पीला होता है। दोष की तीक्ष्णता के विचार से शोथ एव दर्द मे न्यूनाधिकता होती है। पित्तज मे मुख-शोष एव तृष्णाधिक्य होता है। (३) कफज मे शोथ का रग सफेद और वह नरम तथा वेदनारहित होता है। (४) सौदावी मे शोथ काला एव कठोर होता है। मुख अम्ल होता है।

चिकित्सा—(१) रक्तज मे रक्तज खुनाक की भाँति सिरावेध, विरेचन, लेप, गण्डूष और ठढाई का प्रयोग कराते है। धनिया और समूचा मसूर प्रत्येक १ तोला, कासनी और काहू के बीज प्रत्येक ६ माशा, हरी कासनी के पत्र, हरे मकोय के पत्र और हरे तूत के पत्र प्रत्येक ५ तोला--सबको ऽ१ एकसेर पानी मे उबाल-छानकर ५ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर गण्डूष करने और गुलाब के फूल, गुलनार, लाल चदन और कपूर सबको बराबर-बराबर लेकर सबको महीन पीसकर गलशुण्डी पर मलने से बडा उपकार होता है। (२) पित्तज गलशुण्डी शोथ मे पित्तज मुखपाक या खुनाक (कण्ठशोथ) की भाँति चिकित्सा करें। (३)कफज गलशुण्डीशोथ मे कफज मुखपाक या खुनाक की भाँति उपचार करे। (४) सौदावी गलशुण्डीशोथ मे माउज्जुब्न और सौदाकी विरेचनीय ओषधियाँ पिलाये। प्रत्येक दोष मे उसके उचितरीति से (खुनाक और मुखपाक मे उल्लिखित) सशोधन का ध्यान रखे। रक्तज मे गुद्दी पर जोक लगवाना या सीगी लगवाना भी लाभकारी होता है। (५) प्रसेकीय गलशुण्डीशोथ मे प्रसेक (नजला) को रोकनेवाली ओषधियो का उपयोग करे और हब्ब इयारिज आदि से मस्तिष्क का यथाविधि शोधन करे और गुलनार अकाकिया, पोस्ते का दाना और खुरासानी अजवायन बराबर-बराबर लेकर काढा बनाकर उससे गण्डूष करायें।

३—खुनाक

नाम—(अ०) खुनाक, (फा०) खब., बादजहर, (उ०) खुनाक, (अ०) अन्जाइना (Angina), सीनन् की (Cynanche), सोरथ्रोट (Sore throat)।

वर्णन—खुनाक का धात्वर्थ गला, घुटना या दम घुटना है। परतु यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे यह एक शोथ है जो कण्ठावयव अर्थात् गलान्तर्ग्रन्थि कण्ठ और स्वरयन्त्र के बाहरी या भीतर की पेशियो मे प्रगट होता है, जिससे रोगी को

श्वास लेना और खाना-पीना कठिन हो जाता है। इन सभी रोगो का अन्तर्भाव यूनानी वैद्य 'खुनाक' शब्द मे करते है।

शोथ के स्थान भेद और लक्षणो की तीव्रता के विचार से उसके निम्न चार भेद होते है —

(१) खुनाकमुत्लक—इसका वर्णन आगे होगा। (२) जुवह: यह एक दुष्ट प्रकार का खुनाक है जिसमे रोगी बोलने और निगलने की शक्ति नही रखता तथा पी हुई वस्तु नाक से निकल जाती है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे सिनन्की (Cynanche) कहते है। शैखुर्रईस जुवहा और खुनाक दोनो को एक ही मानते है। (३) खुनाक खानिका अर्थात् दम घोटनेवाला खुनाक। वस्तुत यह तीव्र प्रकार का जुवहा है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे सिनन्की सफोकेटिह्वा (Cynanche suffocative) कहते है। (४) खुनाक कलबी अर्थात् कुत्ते का खुनाक। यह एक अत्यन्त तीव्र प्रकार का खुनाक है, जिसमे रोगी कुत्ते (कलब–कुत्ता) की भाँति मुँह खुला रखता है और जीभ बाहर निकाले रखता है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसे सिनन्की मैलिग्ना (Cynanche maligna) कहते है। यह तथा जुवहा खुनाक के उभय भेद असाध्यतम होते है। इस प्रकार के तीव्र कष्ट से रोगी ३–४ दिन मे मर जाता है। इनकी चिकित्सा ठीक रक्तज और पित्तज खुनाक के समान करनी चाहिये। इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि यूनानी वैद्यक मे (१) गलान्तर्ग्रन्थिशोथ (वरम लौजतैन), (२) गलशुण्डीशोथ (वरम गल्समा), (३) कण्ठावयव शोथ और (४) स्वरयन्त्र पेशीशोथ सबको 'खुनाक' ही कहते है। अस्तु, नीचे इनमे से केवल खुनाक वा खुनाक मुत्लक का विवरण किया गया है।

खुनाक मुत्लक

नाम—(अ०) खुनाक मुत्लक, खुनाक लौजिय्य, वरम लौजतैन, कुरूह लौजिय्य, (उ०) गला पडना, लम्बे पडना, (स०) गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, गलान्तर्ग्रन्थिव्रण, (अ०) टॉन्सिलाइटिस (Tonsillitis), क्विन्जी (Quinsy), अन्जाइना टॉन्सिलैन्स (Anina Tonsillans)।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यकीय ग्रन्थो मे वरम लौजतैन का पृथक् वर्णन नही किया गया, प्रत्युत् खुनाक के प्रकरण मे ही इसका उल्लेख मिलता है तथा उसको खुनाक का एक हेतु बतलाया गया है। अस्तु, किसी-किसी यूनानी वैद्य (हकीम) ने लौजतैन (गलान्तर्ग्रन्थि) या उनके आसन्नवर्ती पेशियो के शोथ से होनेवाले खुनाक को खुनाक मुत्लक माना है। किन्तु शैख ने गलशुण्डीशोथ के प्रकरण मे गलान्तर्ग्रन्थिशोथ (वरम लौजतैन) की चिकित्सा भी लिखी है।

वर्णन—इस रोग मे गलान्तर्ग्रन्थियाँ सूज जाती है। निगलने मे कठिनाई होती है और कण्ठ के भीतर सक्षोभ की प्रतीति होती है। रोग की तीव्रता मे उनके भीतर व्रण होकर अङ्गमर्द और न्यूनाधिक ज्वर भी हो जाता है।

भेद—विभिन्न हेतु ओर दोष के विचार से इसके निम्न चार भेद होते है —(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदावी। यूनानी वैद्यक मे प्रथम दोनो को उष्ण और अतिम दोनो को शीतल व्याधि कहते है। पाश्चात्य वैद्यक मे उष्ण को 'अक्यूट' और शीतल को 'क्रॉनिक' कह सकते है।

हेतु—यूनानी वैद्यक के अनुसार इस रोग के उत्तेजक हेतुओ मे रक्त, पित्त, कफ और सौदा इन चतुर्दोषो का अन्तर्भाव होता है अर्थात् जव गलान्तर्ग्रन्थियो मे चतुर्दोषो मे से किसी एक वा अधिक दोष की प्रगल्भता होती हे तव उनमे शोथ उत्पन्न हो जाता है। दुर्गन्धित वायु सूँघने, सर्दी लगने या वर्षा मे भीगने से यह रोग हो जाता है। वाल्य और यौवनकाल मे यह रोग अधिक हुआ करता है। आमवात तथा अन्यान्य हुम्मयात अफिना भी इस रोग के हेतु होते है। कुछ कुटुव और व्यक्ति इस रोग के लिये अधिक अनुकूल होते है। किसी-किसी को यह रोग वारवार होता रहता है।

लक्षण और निदान—जिह्वामूल के समीप कण्ठ के भीतर वेदना एव कष्ट अनुभव होता है। निगलने मे कठिनाई एव दर्द होता हे। आसन्नवर्ती गुदद जाजिवा के शोथ से ग्रीवा मे हनुकोण के स्थान पर शोथ और दवाने पर मामूली-सा शोथ पाया जाता है। न्यूनाधिक जाडे से ज्वर चढ जाता है जो वालको मे विशेषकर १०३ तक या इससे भी अधिक हो जाता है। यदि शोथ अधिक हो तो पानी पीते समय कभी-कभी पानी नाक मे चढ जाता है। रक्त-प्रकोप की दशा मे मुख और जिह्वा का वर्ण लाल होता है, स्वाद मधुर, सिर और कण्ठ की सिराये रक्त से परिपूर्ण होती है। पित्तप्रकोप मे मुख शुष्क एव कडवा होता है। तृष्णाधिक्य, अनिद्रा और जिह्वा पीली होती हे। कण्ठ मे टीस पडती हे। दाह (सोजिश), गर्मी और वेचैनी पाई जाती है। परतु रक्तज की अपेक्षया तनाव कम होता है। कफज मे कण्ठ, चेहरा, जिह्वा और नेत्र का वर्ण सफेद होता है। शोथ अपेक्षाकृत अधिक होता है। प्रचुर लालास्राव होता है। तृष्णा, ज्वर, दाह और दर्द प्रभृति उपद्रव अपेक्षाकृत कम तीव्र होते है। गौरव एव उद्वेष्टन अधिक होता है, किन्तु मृदुता के कारण निगलने मे अधिक कठिनाई नही होती। रोगी साधारणत मुख खोलकर साँस लेता हे। सोते समय खर्राटे मारता हे और स्वर भारी हो जाता है। सौदा के प्रकोप की दशा मे शोथ स्याही मायल होता है। जिह्वा, नेत्र और कण्ठ का वर्ण—रग भी खाकी होता है। मुख शुष्क और स्वाद अम्ल होता हे।

परीक्षा—रोगी का मुँह भली भाँति खोलवाकर जीभ के ऊपर एक चमचा या जीभ को दवाने वाला एक विशेष यन्त्र (टग डिप्रेसर) रखकर नीचे दवाये और खूब स्वच्छ प्रकाश मे रखकर देखे। यदि सूजी हुई गलान्तर्ग्रन्थियाँ भली भाँति दिखाई नही देवे तो रोगी से आ-आ कहलावें। इससे ग्रन्थियाँ ऊपर उठकर भली भाँति दिखाई देने लगती हैं।

प्रगति और परिणाम—साधारणतया चार-पाँच दिन मे सूजन उतरकर सप्ताह दो सप्ताह मे आराम हो जाता है। रोग तीव्र होने पर पीप पडकर फोडा वन जाता है और अत्यधिक कष्ट का कारण होता है। कभी गलान्तर्ग्रन्थियाँ वढकर वहुत कडी हो जाती हैं तथा साँस लेने और निगलने मे कठिनाई होती है। दुर्वल युवती स्त्रियो और कण्ठमालायुक्त वालको मे प्राय ऐसा होता है। कभी गलान्तर्ग्रन्थियाँ वढकर कर्ण के आन्तरिक छिद्रो पर इतना दवाव डालती हैं कि रोगी वहिरा हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—कब्ज हो तो उसे दूर करे। गुलवनफ्शा घी मे भूनकर वधवाएँ अथवा उडद की कच्ची-पक्की रोटी पर गुलरोगन लगाकर गले पर वाहर की ओर वँधवाएँ ओर १ तोला गुलवनफ्शा पकाकर पिलाये। प्राय इन उपायो से आराम हो जाता है। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो यथाविधि दोष का पाचन और शोधन करे और रक्तज हो तो जोक लगवायें।

चिकित्साक्रम—यदि रक्तप्रकोप के कारण सूजन हो तो निम्नलिखित ठढाई सेवन करायें—अर्क शाहतरा ६ तोला और अर्क मुरक्कब फसाद खून ६ तोला मे ३ माशा विहीदाने का लुआव और ५ दग्ना उन्नाव तथा ३ माशा छिले हुए काहू के वीज का शीरा निकालकर १२ तोला शर्बत तूतस्याह मिलाकर पिलाये तथा पाव भर गाय के दूध मे २ तोला अमलतास का गूदा उवालकर उससे गण्डूष कराये। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो गले पर जोक लगवाये और यथा-विधि दोषपाचन (मुजिज) और विरेचन देकर उपरिलिखित उपाय करें। पित्तज मे १० तोला अर्क नीलूफर मे ३ माशा विहीदाने का लुआव और ३-३ माशा खीरा-ककडी के वीज एव काले कुलफा के वीज का शीरा निकालकर २ तोला शर्वत आलू मिलाकर पिलाने से तथा १० तोला हरे धनिये के रस मे ६ माशा पीला रसवत मिलाकर गण्डूष कराने से उपकार होता है। कफज मे अनीसून, सौफ, मस्तगी, वालछड प्रत्येक ५ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये और सायकाल १ माशा मस्तगी पीसकर २ तोला गुलकद मे मिलाकर खिलाये अथवा ७ माशा जुवारिश जालीनूस खिलाकर ऊपर से ६-६ तोला अर्क सोफ और अर्क पान २ तोला शर्वत तूत मिला-कर पिलाये और अजीर विलायती ७ दाना, मूली के वीज ७ माशा उवाल-छान-

कर उससे गण्डूष कराये। अमलतास का गूदा ९ माशा, गुलबाबूना, इकलीलुल्मलिक, गेरू, पीला एलुआ और जदवार खताई प्रत्येक ६ माशा--सबको हरे मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना गरम करके कण्ठ और गले पर लेप करे।

सौदावी मे उन्नाब ७ दाना, गुलबनफशा ७ माशा, छिली हुई मुलेठी और गावजवान प्रत्येक ५ माशा सबको उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर पिला देवे और प्रकृति को मृदु करने के लिए तीव्र बस्तियो का उपयोग करें। सूजन उतारने के लिये स्थानीय रूप से अलसी, धनिया, सूखा मकोय और पोस्ते की डोडी प्रत्येक ५ माशा सबको जल मे पका-छानकर ३ माशा पीला रसवत मिलाकर उससे गण्डूष कराये और गुलबाबूना, मेथी, अलसी, खतमी के बीज, सोआ बीज प्रत्येक ६ माशा और वर्ग कर्नब १ तोला सबको पानी मे कूट-पकाकर गुलरोगन और बत्तख की चर्बी १-१ तोला मिलाकर कुनकुना गरम करके गले पर लेप करे। प्रसेकीय मे जिसके साथ कण्ठ के भीतर (सोजिश) हो विहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना और लिसोढा ९ दाना पानी मे पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर पिलाये। यदि प्रसेकज (नजलावी) के साथ सूजन तो न हो, किन्तु पिपासा प्रभृति उपद्रव हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, गावजवान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा पानी मे पकाकर और छानकर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर पिलाएँ। यदि सूजन मे पीप पड जाय तो मेलतहाँ (एक प्राचीन शस्त्र कर्म करने का यन्त्र है) से भेदन करें। भेदन करते (चीरा देते) समय शस्त्र का रुख कण्ठविवर की ओर रखना चाहिये।

सिद्धयोग—बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक ३ माशा, मग्ज बिहीदाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, खीरा-ककडी के बीज का मग्ज प्रत्येक २ माशा, बादाम का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना और सत मुलेठी प्रत्येक ४ माशा, समस्त द्रव्यो को पीसकर इसबगोल के लुआब मे मिलाकर छोटी-छोटी टिकियाँ या गोलियाँ बनायें। इसे मुख मे रखकर लुआब चूसने से गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, कण्ठशोथ और कास आराम होता है।

पथ्य—गेहूँ की पतली दलिया, मूँग की दाल का पानी (यूष), यवमड, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा आदि।

अपथ्य—मास, बैंगन, अरवी, आलू, अम्ल, तेल और बर्फ।

४--दर्दे गुलू

नाम—(अ०) खब., (उ०) गले का दर्द, दर्दे गुलू, (स०) कण्ठक्षत (अ०) सोरथ्रोट (Sore Throat)।

(अ०) वरमुल्हलक हाद्द, (उ०) गले का शदीद वर्म, (स०) तीव्र कण्ठशोथ, ग्रसनिका शोथ, (अ०) अक्यूटफॅरिजायटिस (Acute Pharyngitis)।

(अ०) वरमुल्हलक मुज्मिन, खुशूनतुल हलक, (उ०) गले का कोहना वर्म, गले की खारिश, (स०) चिरज कण्ठशोथ, कण्ठगतकण्डू, (अ०) क्रॉनिक फॅरिजायटिस (Chronic Pharyngitis)।

(अ०) बुसूरुल्हलक, (उ०) गले की फुसियाँ, (स०) कण्ठगत पिडका, (अ०) ग्रेन्यूलर फॅरिजायटिस (Granular Pharyngitis)।

वर्णन—इस रोग मे कण्ठ की श्लेष्मल कला मे सूजन हो जाती है, जिससे कण्ठ के भीतर दर्द होता है। कभी कण्ठ के भीतर अप्राकृतिक झिल्ली उत्पन्न हो जाती है। बुसूर मे कण्ठ की पिछली दीवाल पर छोटी-छोटी फुसियाँ हो जाती है। कण्ठ की झिल्ली स्थूल हो जाती है। इसको वक्ताओ का कण्ठक्षत भी कहते है, क्योकि सामान्यतया यह वक्ताओ तथा गायको को अधिक होता है।

हेतु—प्रसेक एव प्रतिश्याय, गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, खुनाक, रक्तज्वर, कतिपय रक्तविषमताये, धूलिकण अथवा किसी क्षोभक वस्तु का कण्ठ के भीतर चला जाना, इसके हेतु है। शीतल वायु मे आवास करने, रक्त या पित्त वा कफ की अधिकता होने और स्निग्ध वस्तु सेवनोपरात बहुत शीतल जल पीने से भी यह रोग हो जाता है। चिरज कण्ठशोथ तो प्राय कण्ठशोथ से उत्पन्न होता है। परतु कभी फिरग, उर क्षत, वातरक्त और मद्यपान से सीधे भी इस रोग के लक्षण प्रगट हो जाते है। वक्ताओ का कण्ठक्षत गायको और वक्ताओ को अधिक एव ऊँचे स्वर से बोलने या गाने से हुआ करता है।

लक्षण—कण्ठ के भीतर शोथ, लाली, गौरव, सुरसुराहट एव दर्द होता है। तृषा लगती है। किसी भाँति जाडा लगकर ज्वर हो जाता है। आवाज भर्राई हुई होती है या बैठ जाती है। प्राय कास उठता है और प्रचुर कफोत्सर्ग होता है। मुख का आस्वाद रक्तप्रकोप की दशा मे मधुर, पित्त प्रकोप की दशा मे तिक्त और कफ प्रकोप की दशा मे फीका होता है।

चिरज कण्ठशोथ मे ये ही लक्षण साधारण होते है तथा प्रात काल खाँसी आती है। किन्तु, कफ बहुत कठिनाई से निकलता है। कभी कफ रक्तमिश्रित होता है। प्राय प्रसेक भी होता है। कण्ठगत पिडका (बुसूरहल्का) मे ये ही लक्षण पाये जाते है, साथ ही कण्ठ के भीतर छोटी-छोटी फुसियाँ भी पाई जाती है।

उपद्रव और परिणाम—यह रोग साधारणतया एक-दो सप्ताह मे आराम हो जाता है। पर कभी चिरकारी स्वरूप ग्रहण करता है। कभी यह खुनाक

के रूप मे परिणत हो जाता है और कभी शोथ कान की भीतरी नाली मे व्याप्तमान होकर बधिरता उत्पन्न कर देता है।

चिकित्सासूत्र—रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करे। कब्ज नही होने देवे। सग्राही गण्डूष कराये तथा सग्राही औषधियाँ कण्ठ मे लगायें। दर्द हो तो वेदनानिग्रह औषधिया देवे। कण्ठ के ऊपर टकोर कराये और सूजन उतारनेवाले लेप लगाये। यदि अपेक्षित हो तो दोषविलोमकरणार्थ जोक लगवाये। यदि ज्वर हो तो स्वेदजनक और ज्वरघ्न औषधियाँ देवें।

चिकित्साक्रम—यदि कष्ट तीव्र हो तो पावभर पानी मे ५ तोले अमलतास का गूदा उबालकर पिलायें। (२) आध सेर दूध मे ५ तोले अमलतास का गूदा उबालकर पिलाये। (३) जदवार ३ माशा, रसवत ३ माशा, हरे मकोय के रस मे पीसकर कण्ठ के ऊपर लेप करे। (४) रात्रि मे गुलबनफ्शा २ तोले गाय के घी मे भूनकर रात्रि मे गले पर बाँधे। (५) दूसरे दिन अधोलिखित ठढाईका योग देवे—६-६ तोले अर्कमकोय और अर्क गावजबान मे ३ माशा बिहीदाने का लुआब और ७ दाने उन्नाब तथा ५ माशे मीठे कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत तूत स्याह मिलाकर पिलाये। यदि सर्दी या स्नेहपानोत्तर शीतल जल पीने के कारण यह रोग हो तो पीला अजीर ४ दाना, गुठली निकाली हुई दाख १० दाना, मेथी ९ माशा, अलसी ९ माशा पानी मे काढा बना-छानकर पिलाये।

यदि द्रवातिरेक (आक्लेदाधिक्य) या प्रसेक के कारण यह रोग हो तो सौफ, सौफ की जड, जूफा, मुलेठी प्रत्येक ५ माशा, हसराज और गावजबान प्रत्येक ७ माशा, पीला अजीर ३ दाना, बीज निकाली हुई दाख ७ दाना, सबको आध सेर पानी मे काढा करके २ तोला शर्बत जूफा मिलाकर पिलायें। यदि कण्ठ के भीतर कफ चिपका हो तो उसे निकालने के लिये सेंधानमक, नौसादर, सुहागा सम भाग लेकर गरम पानी मे घोलकर गण्डूष कराये और हब्बगुल पिस्ता चूसने के लिये देवे। यदि विरेचन अपेक्षित हो तो तीन दिन के पीछे उपर्युक्त काढे मे मक्कीसनायपत्र ६ माशा, अमलतास का गूदा ५ तोला, तुरजबीन ३ तोला मिलाकर विरेचन देवे। यदि धूलिकणादि से हो तो लवण जल से गण्डूप कराये और रूब्ब शहतूत चटवाये, यदि अन्यान्य हेतु हो तो उनका परिवर्जन करे। इन समस्त हेतुओ मे अखड मसूर ९ माशा, पोस्ते की डोडी, छोटी माई, गुलनार फारसी और सूखा धनिया प्रत्येक ६ माशा—सबको जल मे उबालकर उससे गण्डूष करे और १ माशा माजू पीस-छानकर २ तोला मधु मे मिला लेवें तथा उसमे रुई की फुरेरी तर करके कण्ठ के भीतर लगायें, चिरज कण्ठशोथ मे उपर्युक्त विधि से तीन विरेचन देवें और पावभर गाय के

दूध मे २ तोले अमलतास का गूदा उबालकर उससे गण्डूष कराये तथा २ तोले मधु मे ६ माशा चूना मिलाकर कण्ठ के बाहर लेप करें। कण्ठगत पिडका-की भी यही चिकित्साविधि है। यदि शोथ अत्यधिक हो और श्वासावरोध हो रहा हो तो सरारू के शिरावेध से बडा उपकार होता है। कण्ठशोथ मे फुरेरी से सग्राही पतला लेप लगाना अथवा सीकरयत्र (रशाशा) से औषधि पहुँचाना अधिक गुणकारी है।

सिद्ध योग कुर्स खास—कतीरा, निशास्ता, बबूल का गोद, सतमुलैठी, खीरा-ककडी के बीज का मग्ज प्रत्येक १ तोला, सत पुदीना (मेथोल) २ माशा मिलाकर छोटी-छोटी टिकियाँ बनायें और मुँह मे रखकर इनका रस चूसते रहे।

पथ्य—मूँग की दाल, गेहूँ की दलिया, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, चपाती आदि नरम, लघु एव शीघ्रपाकी आहार देवे।

अपथ्य—मास, गुड, तेल, अम्ल, गरिष्ठ, गरम मसालेदार आहार से परहेज कराये। तम्बाकू और सिगरेट का सेवन वर्जित कर देवे।

५—इह्तिबासुश्शै फिल्हल्क।

नाम—(अ०) इह्तिबासुश्शै फिल्हल्क, (उ०) किसी चीज का गले मे फँस जाना, (स०) कण्ठशल्य, (अ०) चोकिग (Choking)।

(अ०) तअल्लुकुल्अलक फिल्हल्क, (उ०) हल्क (गले) मे जोक चिमटना, (स०) कण्ठगत जलौका, (अ०) लीच इन् दि थ्रोट (Leech in the Throat)।

वर्णन—भोजन का कडा निवाला (कवर) या अस्थि या रुपया-पैसा या मछली का काँटा या सूई या पिन या कोई और वस्तु (शल्य) कण्ठ के भीतर फँस जाती है। कण्ठ के भीतर फँसनेवाले शल्य निम्नलिखित प्रकार के होते है और उनमे से प्रत्येक का भिन्न-भिन्न नाम है। यथा—

(१) कण्ठ के भीतर निवाला अटक जाना (गस्सा तआम), (२) कण्ठ मे मछली का काँटा अथवा अन्य काँटा अटक जाना (तशब्बत शौक), (३) सूई या पिन निगलना (बलअ् इब्र), (४) तालाब आदि का पानी पीते समय किसी छोटी-सी जोक का कण्ठ के भीतर चिमट जाना (तअल्लुकुल् अलक फिल्हल्क), (५) अस्थि या किसी कठिन वस्तु, जैसे रुपया-पैसा का फँस जाना, इसका कोई विशिष्ट नाम नही है और (६) पानी पीते समय स्वरयन्त्र मे पानी चला जाना और उच्छ आना (शर्कमाऽ)।

हेतु और लक्षण—स्पष्ट है। साधारणतया हेतु की विद्यमानता के साथ खाँसी और मिचली आती है और प्राय साँस रुकता हुआ प्रतीत होता है।

जोक की दशा मे प्रथम तालाव का जल पीने की घटना होती है। तदुपरात आकुलता एव वेचैनी होती है और थूक के साथ पतला खून वहता है।

चिकित्सा—प्रत्येक की पृथक्-पृथक् चिकित्सा एव उपाय निम्नाकित हैं—

(१) जब कण्ठ के भीतर कोई वडा पदार्थ वा शल्य, जैसे रोटी का ग्रास, मास का टुकडा या आम की गुठली आदि फँस जाय और उससे दम रुकने लगे तब कण्ठ के भीतर खूब नीचे तक अँगुली डालकर पुन अँगुली को टेढा करके फँसे हुए शल्य के निकालने का यत्न करे। यदि निकल सके तो उत्तम वरन् उसे किंचित् आगे की ओर ढकेल देवे। तदुपरात बलपूर्वक खाँसने का यत्न करें। यदि फुफ्फुस मे पर्याप्त वायु विद्यमान हो तो उक्त पदार्थ खाँसने के साथ अवश्य निकल जायगा। यदि यह उपाय सफल न हो तो पानी या कोई और प्रवाही वस्तु खूब मुँह भरकर पिलायें। यदि लाभ न हो तो ग्रीव और उभय स्कधो के मध्य वलपूर्वक मुक्के मारे। यदि सभव हो तो वमन की चेष्टा करें। यदि यह भी न हो सके तो ग्रीवा की द्वितीय कशेरुका (मोहरे) के बराबर सीगी लगवाये।

(२) यदि कण्ठ के भीतर मछली का काँटा या अन्य काँटा फँस जाय और मुँह खोलने पर दिखाई पड जाय तो उसे मोचने वा अग्नि पकडने की चिमटी से निकाल लेवे। यदि दृष्टि मे नही आये तथा श्वास-प्रश्वास मे भी रुकावट न हो तो रोटी का बडा ग्रास खाने से ग्रास के साथ निकल जाता है। यदि इससे लाभ न हो तो लगातार कुछ बडे-वडे स्नेहाक्त ग्रास खिलाकर ऊपर से लवण या राई गरम पानी मे मिलाकर वमन कराये। यदि यह उपाय भी सफल न हो तो इस्पज का एक टुकडा या मास की नरम बोटी या सूखा अजीर किंचित् चबाया हुआ एक सुदृढ डोरे से बाँधकर रोगी को निगलने का आदेश करे। पुन रोगी को पानी पिलाये। फिर डोरे को खीच लेवे। फँसा हुआ शल्य उनमे अटककर बाहर निकल आयेगा। यदि उक्त क्रिया से कण्ठ के भीतर क्षोभ हो जाय तो इसबगोल का लुआब घूँट-घूँट करके पिलाये।

(३) यदि कण्ठ के भीतर सूई या पिन चली जाय तो उपर्युक्त उपायो को काम मे लेवे या चुबक पत्थर ३ माशा पीसकर २ तोले अगुरी मद्य मे मिलाकर पिलाये। इसके आधा घटा बाद सेंधा नमक ९ माशा और राई ६ माशा दोनो को आधा सेर गरम पानी मे मिलाकर पिलाये, जिसमे वमन होकर वह निकल जाय।

(४) यदि कण्ठ के भीतर जोक चिमट जाय, तो कण्ठ का अवलोकन करे। यदि दिखाई देती हो तो उसे (जबूर) से पकडकर दबायें, जिसमे वह कण्ठ को छोड देवे। उसके थोडी देर पीछे उसे नरमी से बाहर खीच लेवें। यदि

दृष्टि मे नही आवे तो सिरकाये लवण या अफीम घोलकर या पीसकर उससे गण्डूष कराये ।

जोक दृष्टि मे आती हो अथवा नही आती हो, उसके निकालने का एक उत्तम उपाय यह है कि थैली मे कीचड बाँधकर रोगी के मुँह मे भर देवे । उसकी गध पाते ही जोक मुँह मे आ जायगी । फिर उसे हाथ या यत्र से निकाल देवे ।

(५) यदि कोई अस्थि या रुपया-पैसा कण्ठ के भीतर फँस जाय, तो रोगी उलटा (सिर नीचे) करके एडी पकडकर उठाये तथा उसकी ग्रीवा एव पीठ पर थपकी लगाये । इससे अटका हुआ शल्य निकल पडता है ।

यदि कण्ठ के भीतर फँसा हुआ शल्य नही निकल सके, तो इस बात का प्रयत्न करें कि वह आमाशय मे चला जाय । उस स्थान से वह सरलतया मल के साथ निकल जायगा । उक्त अवस्था मे रोगी को कोई पतला आहार या पानी पिलाये, अथवा चावल, दलिया, खिचडी या दाल चपाती खिलायें । यदि प्यास अधिक लगे, तो बर्फ चुसाये या घूँट-घूँट करके थोडा दूध पिलाये । यह क्रिया करने से यह वस्तु-दूसरे तीसरे दिन मल के साथ निकल जायगी । यह वह वस्तु आमाशय मे पहुँच चुकी हो, तो रोगी को कोई विरेचन या सारक मृदुरेचन औषधि नही देनी चाहिये । यदि कण्ठ के भीतर फँसा हुआ शल्य न बाहर निकल सके और न आमाशय मे चला जाय, प्रत्युत पूर्ववत् फँसा रहकर कष्टश्वास का कारण हो तो जब तक किसी उपयुक्त उपाय का अवसर न मिले, तब तक रोगी का कृत्रिम श्वास जारी रखना चाहिये, जिसमे ताजा वायु फुपफुसो मे प्रविष्ट होकर जीवन स्थिर रहे ।

श्वसनक्रिया के लिये रोगी को सूँघने का नमक (स्मेलिंग साल्ट) या एमोनिया सुँघाये । वक्ष के ऊपर भीगे हुए तौलिये मारें तथा रोगी को गरम रखें ।

(६) उच्छू (नासू चढने) की दशा मे स्कध के ऊपर थपकी लगाना चाहिये । इससे चिकित्सा सुधर जाती है ।

पथ्यापथ्य—यदि शल्य निकलने के पश्चात् कण्ठ के भीतर क्षोभ हो तो प्रवाही आहार सेवन करायें । यदि क्षोभ न हो तो साधारण भोजन देवे । यदि कोई शल्य आमाशय मे चला गया हो, तो प्रवाही आहार नही देवें , प्रत्युत् दलिया, चावल, खिचडी, चपाती आदि देवे ।

६—मख्नूक बवहूक

नाम—(अ०) मख्नूक बवहूक; (उ०) फाँसी लगना , (स०) पाशबद्ध, उद्बधन ; (अ०) हैङ्गिङ्ग (Hanging) ।

वर्णन—उद्बधन वा पाशबद्ध का वह भेद जिसमे रज्जु या लता का पाश लगाकर मनुष्य स्वय टॉग लेता है या उसे टॉग देते है। इस अवस्था मे कण्ठ का पीडन होने (कण्ठ घुट जाने) के कारण सज्ञानाशादि लक्षण उत्पन्न होते है।

उपचार—यदि किसी के कण्ठ मे पाश लग गया हो, तो प्रथम अविलब उसे खोल देवे या काट देवे। यदि कोई पाश (फॉसी) पर लटक रहा हो, तो उसे तुरत उतार लेना चाहिये। यदि चाकू विद्यमान हो तो उससे रज्जु या रूमाल या जिस वस्तु का पाश लगाया गया हो, उसको अविलम्ब काट डालना चाहिये। यदि चाकू न हो, तो जब तक वह लाया न जा सके, तब तक पाश पर लटकने वाले के शरीर को टॉग पकडकर ऊपर की ओर उठाये रखे, जिसमे उसके कण्ठ पर से बोझ हट जाय। जब पाश का फदा काट दिया जाय, तब उस व्यक्ति की ग्रीवा और वक्ष का ऊपर के बधन ढीला कर देना चाहिये। यदि श्वास बद हो गया हो, तो अविलम्ब कृत्रिम श्वास चालू कर देना चाहिये। यदि अन्य सहायक वर्तमान हो या पाशबद्ध व्यक्ति अभी स्वय श्वास ले रहा हो, तो उसके मुख एव वक्ष के ऊपर शीतल जल के छीटे मारना चाहिये। हाथ-पॉव खूब बलपूर्वक ऊपर की ओर मलना चाहिये। नौशादर पीसकर खाने वाले चूना मे मिलाकर उसको सुँघाये ओर रोगन बनफशा या रोगन बादाम १ तोला एक सेर कुनकुना पानी मे मिलाकर उससे गण्डूष कराये। यदि भली भाति सचेत न हो तो उसके तलुवो पर बारीक राई या रोगन बाबूना से मालिश करे और दो घटे पश्चात् प्रच्छान रहित सीगी लगाये या वस्ति देवे।

अन्नमार्ग के रोग

१—उस्रुल्बलअ्

नाम—(अ०) उस्रुल्बलअ्, (उ०) मुश्किल से निगलना, (स०) निगलनकृच्छ्रता, (अ०) डिस्फैजिया (Dysphagia)

वर्णन—इस रोग मे रोगी किसी वस्तु को कठिनाई से निगल सकता है।

हेतु—कण्ठ, स्वरयन्त्र और अन्नमार्ग के विविध रोग, कण्ठ व्रण, कण्ठगत अर्बुद (सरतान), कण्ठगत स्फोति, महाधमनिज रक्तार्बुद (अनुरस्मा अव्रती) आदि से यह रोग होता है। गुण के विचार से यह उष्णता, शीतलता, स्निग्धता और रूक्षता के प्रकोप से हो सकता है। अस्तु, इसके निम्न चार भेद होते है—(१) उस्रुल्बलअ् हार्र, (२) उस्रुल्बलअ् बारद, (३) उस्रुल्बलअ् रतब और (४) उस्रुल्बलअ् याबिस आदि।

लक्षण—रोगी भोजन को बडी कठिनाई से निगल सकता है। इसी प्रकार जल, थूक आदि भी कठिनता से निगला जा सकता है। उष्णता की प्रगल्भता

से तीव्र पिपासा और कण्ठ के भीतर गर्मी एव दाह होता है । शीत की प्रगल्भता मे पिपासा एव दाह नही होता । स्निग्धता की प्रगल्भता मे पुष्कल मुखसे लाला बहती रहती है । रूक्षता की प्रगल्भता मे मुख-शोथ होता है और तर पदार्थों के सेवन से लाभ प्रतीत होता है ।

चिकित्सा—बाहर कण्ठ के ऊपर जिस स्थान पर दबाने से दर्द मालूम हो वहाँ मधु और चूने का लेप करे । यदि गर्मी से हो तो गावजबान और बिहीदाना प्रत्येक ३ माशा, अर्क गावजबान तथा अर्क शाहतरा प्रत्येक ६ तोला मे भिगोकर लुआब निकाले और उसी अर्क मे काले कुलफा के बीज, छिले हुए काहू के बीज, मीठे कद्दू का मग्ज प्रत्येक ३ माशा, उन्नाव ५ दाना पीसकर शीरा निकालकर मिला लेवें और २ तोला शर्बत तूत स्याह सम्मिलित करके प्रात सायंकाल पिलायें और ताजे दूध से गण्डूष कराये । शहतूत की पत्ती ओर समूचा मसूर प्रत्येक १ तोला, पोस्ते की डोडी २ नग पानी मे काढा करके कुनकुना गण्डूष कराये । यदि कष्ट अधिक हो तो खुनाक मे लिखित उपाय काम मे लेवे । आराम होने के पश्चात् बलवृद्धि के लिये खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा या खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा प्रात काल कुछ दिन तक खिलाये । कभी-कभी शर्बत तूत स्याह चटाना भी लाभकारी होता है । द्रवाधिक्य के कारण हो तो अनीसून, सौंफ, मस्तगी और बालछड प्रत्येक ५ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये आर सायंकाल १ माशा मस्तगी पीसकर २ तोला गुलकद मे मिलाकर खिलाये । अथवा जुवारिश जालीनूस ७ माशा खिलाकर ऊपर से अर्क बादियान और अर्क पान ६–६ तोला शर्बत तूत स्याह २ तोला मिलाकर पिलाये ।

प्रसेक (नजला) के कारण हो और कण्ठ के भीतर शोथ (सोजिश) भी हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढा ९ दाना, सबको पानी से पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर प्रात सायंकाल पिलाये । यदि दाह एव पिपासा आदि उपद्रव न हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना, गावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा सबको जल मे पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर पिलाये । कब्ज हो तो लऊक सपिस्ताँ खियार शबरी इसी योग मे सम्मिलित करके सेवन कराये ।

पथ्यापथ्य—गर्मी से हो तो गरम पदार्थो से तथा लहसुन, प्याज, गरम मसाला, लालमिर्च आदि के अति सेवन से बचे । सर्दी वा प्रसेक से हो तो शीतल वायु से परहेज कराये । बादी एव कफकारक वस्तु नही खिलाये और चिकने पदार्थ से भी परहेज कराये ।

———

२—इन्तबाकुल्मरी ।

नाम--(अ०) इन्तबाकुल्मरी , (उ०) गिजाकी नालीका जुड जाना, (अ०) स्ट्रिक्चर ऑफ दी ईसाफैगस (Stricture of the oesophagus) ।

वर्णन--इस रोग मे अन्नमार्ग के भीतरी स्तर परस्पर सश्लिष्ट हो (जुट) जाते है, जिससे पानी एव पतला आहार तो उक्त मार्ग से नहीं जा सकता, परन्तु बडे एव भारी निवाले (ग्रास) अपने बोझ के कारण नीचे उतर जाते है ।

हेतु—आक्षेपग्रस्त व्याधियाँ, जैसे अपतन्त्रक या जलसन्त्रास (हलकाव) के कारण वातनाडियाँ आक्षेपग्रस्त हो कर निगलना कठिन हो जाता है। (इन्तबाक तशन्नुजी) या अन्न-प्रणाली के भीतरी धरातल मे तीक्ष्ण मद्य सेवन के कारण अथवा किसी दाह, तीक्ष्ण, अम्ल आदि के भूल से पी जाने के कारण पिडका एव क्षत उत्पन्न हो कर उसके परत परस्पर जुड जाते हैं (इन्तबाक़ कूरूही) या कोई सौदावी शोथ या दुष्ट अर्बुद उत्पन्न होकर अपने दबाव से उसके मार्ग को सकीर्ण कर देते है (इन्तबाक खबीस) वातरक्त प्रकृति के लोग इस रोग से अधिक आक्रात होते हैं ।

लक्षण—इन्तबाक तशन्नुजी प्राय अपतन्त्रक या जालसत्रास (हलकाव) रोग मे होता है और इनके लक्षण पाये जाते हैं तथा भोजन खाया नही जाता या बाहर निकल आता है। इन्तबाक कुरूही एव खबीस मे भोजन कभी कण्ठ के भीतर उतर जाता है और कभी नही उतरता तथा व्रण एव शोथ के लक्षण पाये जाते हं ।

चिकित्सा सूत्र और चिकित्सा क्रम—यदि इन्तबाक (सश्लेष) आक्षेप के कारण हो तो हीग, कपूर, कस्तूरी आदि आक्षेपहर एव वातनाडी या अवसादक ओषधियाँ देवे तथा अपतन्त्रक की चिकित्सा करे। अस्तु, जदवार १ माशा और ऊदसलीव १ माशा पीसकर दवाउल्मिस्क मोतदील ५ माशा मे मिलाकर खिलायें और ६–६ तोला अर्क बादियान एव अर्क मकोय मे ३–३ माशा सौफ, कुसूस के बीज तथा खीरा-ककडी के बीज का शिरा निकाल कर २ तोला शर्बत वजूरी मोतदिल मिलाकर ऊपर से पिलाये ।

यदि क्षत के कारण अन्नमार्ग के परत जुड गये हो, तो सलाई एव उपयुक्त तेलो के द्वारा स्रोत परिविस्तृत हो सकता है। पर यदि ये उपाय सफल न हो तथा अन्नमार्ग का स्रोत उद्घाटित होने की कोई आशा नही हो, तो शस्त्रकर्म के बिना यह रोग असाध्य है। परन्तु शस्त्रकर्म के द्वारा उदर के ऊपर से छिद्र करके आहार पहुँचाने का प्रबन्ध करने से रोगी अपनी आयु भर जीवित रह सकता है।

साधारण दशाओ मे ग्रीवा की द्वितीय कशेरुका पर सीगी लगवाने से भी स्रोतोद्-घाटन हो जाता है, जिससे प्रवाही आहार पहुँचाना सभावित हो जाता है ।

पथ्य—सादा, शीघ्रपाकी एव बल्य आहार, जैसे—बकरी का या पक्षियो का शूरबा या यखनी, चने का पानी, चपाती, गेहूँ की दलिया, अडे प्रभृति आहार भली-भाँति चबाकर खाना चाहिये ।

अपथ्य—अधिक ठण्ढे एव गरिष्ठ पदार्थो से, जैसे बर्फ, आलू, अम्ल, अरवी, गोभी, बैगन से परहेज करना चाहिये । अधिक उत्तेजक (उष्ण) पदार्थ एव तीक्ष्ण मसाला भी सेवन नही करना चाहिये ।

३—इस्तिर्खाउल्मरी

नाम—(अ०) इस्तर्खाउल्मरी , (उ०) मरीका ढीला हो जाना , (स०) अन्नमार्गघात , (अ०) पैरेलिसिस ऑफ दी ईसॉफैगस (paralysis of the oesophagus) ।

वर्णन—इस रोग मे अन्नप्रणाली के भीतरी परत द्रवातिरेक से घातित हो कर परस्पर मिल जाते है और उसके मासततु भी जो आहार के आदि शोषण मे सहायक होते है, घातित यानी ढीले और सुस्त हो जाते और अपने प्राकृतिक कर्म सपादन नही कर सकते है ।

हेतु और लक्षण—यह रोग साधारणतया सर्दी एव श्लैष्मिक द्रवो के कारण प्रगट होता है । इसमे कोई भी वस्तु कण्ठ से नीचे नही उतर सकती । क्योंकि अन्नप्रणाली के घातित हो जाने से निगलन शक्ति नष्ट हो जाती है ।

चिकित्सा—यदि थोडा बहुत आहार या ओषधि कण्ठ से उतर सके, तो चिकित्सा से लाभ होने की आशा हो सकती है, वरन् यह रोग भी असाध्य होता है । इसमे भी अगघात की भाँति दोषपाचन और विरेचन तथा गण्डूष के द्वारा रोगजनक द्रव का शोधन करे । शोधनोपरात दवाउल्मिस्क हार्र ३ माशा या माजून फलासफा ७ माशा प्रथम खिला कर ऊपर से निम्न योग पिलाये—अनीसून, बालछड प्रत्येक ४ माशा, रूमीमस्तगी, वहमन सूर्ख, वहमन सफेद प्रत्येक ३ माशा यथाविधि पकाकर ४ तोला गुलकन्द असली मिलाकर पिलाये ।

४—हक्काकुल्मरी

नाम—(अ०) हक्काकुल्मरी , (उ०) मरी की खारिश , (स०) अन्नप्रणालीगत कण्डू ; (अ०) इरिटेशन इन दी ईसॉफैगस (Irritation in the oesophagus) ।

हेतु और लक्षण—तीक्ष्ण दोषो का आमाशय मे संचित होकर अन्नप्रणाली की ओर गति करना अथवा उसके उष्ण वाष्प का अन्नप्रणाली मे दाह आदि उत्पन्न करना। रोगी हर समय खँखारता रहता और सिर तथा ग्रीवा को ऐंठता रहता है। क्योकि खुजली के कारण उसे चैन नही पडता। शुष्क (ग्रास) आहार के बडे-बडे निवाले (गास) से रोगी को सुख एव आनन्द प्राप्त होता है।

चिकित्सा—दुष्ट दोष से आमाशय की शुद्धि के लिए (१) सोआ बीज ६ माशा या (२) मूली के बीज ६ माशा आधासेर पानी मे पकाकर २ तोला सिकजवीन मिलाकर पिलाये, जिससे वमन हो जाय। पुन (३) सिकजवीन असली ३ तोला आधासेर पानी मे पिलाकर उससे गण्डूष कराना लाभकारी होता है। खुजली दूर करने के लिये (४) ताजा दूध मे मधु या चीनी मिलाकर पिलाये अथवा शोधनोपरान्त निम्न योग पिलाये —

९-९ माशा खीरा-ककडी के बीज और कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा, ३ माशा बिहीदाने का लुआब, ५ माशा इसबगोल का लुआव ७-७ तोला अर्क केवडा और अर्क बेदमुश्क मे निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर घूँट-घूँट पिलाये।

५—वरमुल्मरी

नाम—(अ०) वरमुल्मरी, (उ०) गिजाकी नाली की सूजन, (स०) अन्नप्रणाली शोथ, (अ०) ईसॉफेजा (गा) यटिस (oesophagitis)

वर्णन—इस रोग मे अन्नप्रणाली सूज जाती है, जिससे भोजन और जल का निगलना कठिन हो जाता है।

हेतु—यह रोग उष्ण दोष अर्थात् रक्त वा पित्त के प्रकोप से अथवा शीतल दोष अर्थात् कफ और सौदा के प्रकोप से होता है। उष्ण शोथ साधारणतया तीक्ष्ण मद्य, अधिक मसालेदार और अधिक उष्ण खाद्य एव पेय और कतिपय ज्वरो से होता है।

लक्षण—उष्ण शोथ मे ज्वर एव तृष्णा की तीव्रता और उभय स्कन्धो के मध्य दर्द होता है। आहार निगलना कठिन एव कष्टदायक होता है। जब इन लक्षणो के पश्चात् कम्प उत्पन्न हो, तो शोथ के पकने और पीप पड जाने का लक्षण है। जब वमन के द्वारा पीप उत्सर्गित होने लगे तब यह इस बात का प्रमाण है कि शोथ फट गया (कुरहुल्मरी) है। शीतल भेद मे ज्वर एव तृष्णा नही होती, दर्द अत्यल्प और उभय स्कधो के मध्य भारीपन अधिक होता है।

चिकित्सा सूत्र—सूजन के प्रारम्भ मे दोषविलोमकरण और अन्त मे शोथ विलयन (सूजन उतारने वाली) ओषधियो का उपयोग करना चाहिये। उभय

स्कधो के मध्य लेप लगाये जायँ। इसी प्रकार वहाँ टकोर भी करना चाहिये। उष्ण शोथ मे बासलीक या सरारूका सिरावेध भी लाभकारी है।

चिकित्सा-क्रम—उष्ण शोथ मे यदि रक्तप्रकोप के लक्षण पाये जायँ और रोगी मे सह्यता (क्षमता) हो तो बासलीक का सिरावेध कराये। ७ तोले कासनी या काहू के रस मे ५ माशे कुलफा के बीजो का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत शहतूत मिलाकर घूँट-घूँट पिलाये अथवा १० तोला यवमण्ड मे २ माशा मीठे बादाम का तेल मिलाकर पिलाये। रोग के अन्त मे सूजन उतारने के लिये ७-७ तोले हरे मकोय और हरी कासनी के रस मे ३ तोला अमलतास का गूदा और २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाना लाभकारी है। यदि सूजन मे पीप पड जाय, तो अलसी का लुआब और कनौचा के बीज का लुआब देवे। जब वह पककर फूट जाय, तब गाय के दूध मे बादाम का तेल मिलाकर पिलाये और हरीरा खिलाये तथा रोगारभ मे ६ माशा सफेद चन्दन हरी कासनी या हरे मकोय के रस मे घिसकर उभय स्कधो के बीच मे लेप करे। अन्त मे यह सूजन उतारनेवाला लेप लगाये—गुलबाबूना, खतमी के बीज, गुलबनफ्शा, जौ का आटा प्रत्येक ६ माशा सबको हरे मकोय के रस मे पीसकर १ तोला मिलाकर उभय स्कधो के बीच मे लेप करे। जब सूजन पकने लगे तब निम्न लेप का उपयोग करे—मेथी का आटा, जौ का आटा, अलसी, खतमी के बीज सबको पानी मे पकाकर बनफ्शा मिलाकर लेप करे। जब सूजन फट जाय, तब उसके शोधनार्थ मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) पिलाये।

यदि शीतल दोष के कारण यह रोग हो, तो दोष पाचन और शोधन के पश्चात् गुलबाबूना ९ माशा और अलसी ६ माशा पानी मे काढा बनाकर २ तोला शर्बत अगूर मिला कर घूँट-घूँट पिलाये। रोगन बाबूना और रोगन शिबित उभय स्कधो के बीच कुनकुना मर्दन करे।

पथ्यापथ्य—उष्णशोथ मे हरीरा या दूध का यवमड या अरारूट या साबूदाना खिलाये तथा तीक्ष्ण एव उष्ण पदार्थो मे परहेज कराये। शीतल शोथ मे मुद्गयूष, चनेका यूष, यख्नी, मुर्गे का सादा शूरबा सेवन कराये। शीतल पदार्थो से परहेज कराये।

स्वरयन्त्र के रोग

१—बुहहतुस्सौत

नाम—(अ०) बुह्हतुस्सौत, (उ०) आवाज बैठना, गला बैठना, (स०) स्वरघ्न, स्वरभेद, (अ०) ॲफोनिया (Aphonia)।

वर्णन—कभी-कभी स्वरयन्त्र की रचना मे किसी कारणवश परिवर्तन उत्पन्न हो कर आवाज बैठ जाती है और गला पड जाता है।

भेद—हेतु के विचारानुसार इसके कतिपय निम्नलिखित भेद होते हैं—(१) प्रसेकीय, (२) उष्ण, (३) शीत, (४) स्निग्ध, (५) रूक्ष, (६) सयाही, जो चिल्लाने से उत्पन्न होता है, (७) वरमी (शोथज जो स्वरयन्त्र के शोथ से उत्पन्न होता है।) और (८) सम्मी (विषभक्षणज जो सेंदूर और सूर्मा आदि विषैली वस्तुओ के सेवन से उत्पन्न होते हैं)।

हेतु—धूएँ तथा धूलिकणादि का साँस के भीतर चला जाना, तीक्ष्ण एव उच्च-स्वर से भाषण करना, दीर्घकालतक प्रवचन करना, अभिभाषण देना, उच्च स्वर से गाना, भूल से सेंदूर खा जाना, गर्मी और खुश्की की अधिकता या पैत्तिक दोष की प्रागल्भता, तीव्र प्रसेक, कभी वर्षा मे भीगने या अधिक सर्दी लगने अथवा शीतल पदार्थों के खाने-पीने से कफ अधिक उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—यदि गर्मी के कारण हो तो तृष्णा अधिक मालूम होगी और मुख शुष्क होगा। पित्त की अधिकता मे मुख का स्वाद तिक्त होता है, सर्दी के कारण हो तो गले मे खरखराहट एव बोझ मालूम होता है। कफ अधिक निकलता है।

चिकित्सा—यदि किसी आगन्तुक कारण से, यथा धूआँ और धूलिकणादि साँस के साथ चला जाने या अभिभाषण करने, प्रवचन करने और गाने से यह रोग हो, तो उक्त अवस्था मे दीपक का गुल पान मे रखकर खिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार अदरक चबाने से स्वर खुल जाता है। २ रत्ती कुलजन पान मे खाने से भी लाभ होता है। यदि सिदूर भक्षण से यह रोग हो तो तमाकू का गुल (जट्ठा) जो हुक्का मे होता है ऽ१ सेर ऽ५ पाँच सेर पानी मे भिगो देवे। ३–४ दिन के पश्चात् उसमे से स्वच्छ पानी निकाल कर रखे और इस पानी को कढाई मे पकाये। सूखने के उपरान्त कढाई मे शेष रहा हुआ तीक्ष्ण एव लवणीय सत्व छुरी आदि से खुरचकर रख लेवे। इसे पान मे रखकर खिलाने से दो-तीन बार मे स्वर खुल जाता है। गर्मी, खुश्की या पित्त के प्रकोप से हो तो प्रात ३ माशा बिहीदाना पानी मे भिगोकर लुआब निकाले और उन्नाव ५ दाना, मग्ज कद्दू ३ माशा, मग्ज तरबूज ३ माशा अर्क गावजबान १२ तोला मे पीसकर शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें तथा बिहीदाना और मिश्री मुँह मे रखकर उसका लुआब चूसते रहे।

यदि सर्दी और कफ के कारण हो तो छिली हुई मुलेठी और हसराज प्रत्येक ५ माशा, लिसोढा ९ दाना, अनीसून ६ माशा, सौफ की जड ५ माशा पानी मे उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें और करफ्सकी जड, अनीसून

सोआ, सूखा पुदीना प्रत्येक ६ माशा, मधु २ तोला पानी मे पका-छानकर उससे गण्डूष कराये तथा कुलजन या अदरख मुँह मे रखकर उसका रस चूसते रहें। हब्ब बुह्हतुस्सौत एक गोली हर समय मुँह मे रखना और लुआब चूसते रहना भी लाभकारी है। केवल आगन्तु (बाहरी) खुश्की और गर्मी के कारण यह रोग हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ माशा, लिसोढा ९ दाना पानी मे पका-छान कर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर दो-तीन दिन प्रात-सायकाल पिलाये अथवा मीठे बादाम का मग्ज ५ दाना, भुनी हुई अलसी चिलगोजे का मग्ज और सोसन की जड प्रत्येक तीन माशा कतीरा, बबूल का गोद और सतमुलेठी प्रत्येक १ माशा, मिश्री ३ माशा, मधु १॥ माशा सब द्रव्यो को कूट-छानकर शहद मे मिलाकर चनाप्रमाण की गोलियाँ बनाये और हर समय एक गोली मुँह मे रखकर उसका लुआब चूसते रहें।

यदि प्रसेक (नजला) के कारण यह रोग हो तो उष्ण प्रसेक मे लिखित चिकित्सा करे। पान मे लौग या जावित्री आदि इस रोग मे लाभकारी है। कभी आतशक (फिरग) एव सूजाक के रोगियो को यह रोग हो जाता है। उक्त अवस्था मे रोग की विशिष्ट ओषधियो के अतिरिक्त फिरग आदि का उपचार भी करना चाहिये।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग की दाल, कद्दू, पालक, चुकन्दर, मुर्गी के बच्चे का शूरबा आदि।

अपथ्य—धूलि-कणादि, उच्चस्वर, दूध, मक्खन, दही, चावल, मछली, अम्ल, तेल, लाल मिर्च और अधिक ठढे पानी से परहेज करे।

उरःफुफ्फुस रोगाधिकार ७

फुफ्फुसरोगाध्याय १

वक्तव्य—समस्त तीक्ष्ण, उष्ण तथा अम्ल-वस्तुएँ फुफ्फुस को हानि पहुँचाती हैं। फुफ्फुस के रोगो मे अधिकतया अवलेह (लऊक) और गोलियाँ परम गुणकारी होती हैं, क्योकि मुँह मे अधिक काल रहने तथा लुआब (या रस) निगलते समय फस्वारिय के समीप पहुँचने के कारण इनका बराबर प्रभाव होता रहता है।

नाम—(अ०) रबू, जीकुन्नफस, बुहर, इन्तसाबुन्नफस; (उ०) दमा; (स०) श्वास, (अ०) ऐस्थमा वा ऐज्मा (Asthma)। डिस्प्नीया (Dyspnoea), आँर्थोप्नीया (Orthopnoea)।

वक्तव्य—जीकुनफस, रबू ओर बूहर श्वासकृच्छ्रता की उत्तरोत्तर बढती हुई अवस्थाओ के अलग-अलग अरबी नाम है। इन्तसाबुन्नफस जीकुन्नफस ही की तीव्रावस्था का नाम हे। इसमे रोगी जब तक ग्रीवा को सर्वथा सीधा न रखे, साँस नही ले सकता। साधारणतया इन सबको समानार्थी माना जाता ओर दमा कहा जाता हे।

वर्णन—इस रोग मे फुफ्फुस की सूक्ष्म वायुप्रणालिकाओ मे आक्षेप हो कर श्वास कृच्छ्रतापूर्वक (तगीसे) आता हे। प्राय यह रोग आवेगपूर्वक होता है।

भेद—इसके प्रधान दो भेद होते है—शुष्क (खुश्क) और आर्द्र (मर्तूब वा तर)। शुष्क दमा मे केवल वायुप्रणालियो एव श्वसनी पेशियो मे आक्षेप होता हे जिससे श्वास लेने मे कष्ट एव कठिनाई होती है—आर्द्र दमा मे आक्षेप के अतिरिक्त वायुप्रणालियो मे कफ सचित हो जाता है जिससे श्वास लेने मे कठिनाई होती हे।

हेतु—प्रसेक, प्रतिश्याय या कास के कारण कभी कफ फुफ्फुस के भीतर सचित हो जाता है जिससे श्वास लेने मे कष्ट होता है। कभी फुफ्फुस मे रूक्षता के कारण नालियाँ (तजावीफ) सकीर्ण हो जाती हे और श्वास रुक-रुककर आता हे। कभी चेचक के कारण भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—यदि प्रसेक, प्रतिश्याय या कास के कारण यह रोग हो तो उक्त रोग विद्यमान होगे। रोग के आवेग से पूर्व प्राय मलावरोध एव आध्मान होता है। प्रथम मामूली खाँसी उठती है। दम लेने मे कष्ट मालूम होता है। कभी सहसा दौरा हो जाता हे। रोगी का दम घुट-घुट कर आता है। खाँसते-खाँसते चेहरा लाल हो जाता है और रोगियो से बोला नही जाता। पुन किंचित्-सा कफ निकल कर सम्पूर्ण शरीर पर पसीना होकर बारी रुक जाती है। निवृत्ति काल मे रोगी स्वस्थ मालूम होता है ओर कोई कष्ट नही होता।

चिकित्सा—यदि प्रसेक एव प्रतिश्याय के कारण यह रोग हो तो उसका उचित उपचार करे। यदि कफ की अधिकता से हो तथा सीने पर कफ एव खर-खर का शब्द हो तो दोष के तरलीभवन के लिए कुछ दिन गावजवान, कैंची से कतरा हुआ आबरेशम, गेहूँ का चोकर प्रत्येक ५ माशा, उन्नाव ५ दाना, मिश्री २ तोला, सबको पानी मे पका-छानकर पिलाये। यदि श्लेष्मा गाढी हो तो सोफ की जड छिली हुई मुलेठी और जूफाए खुश्क प्रत्येक ५ माशा बीज निकाली हुई दाख ९ दाना और पीला अजीर ३ दाना उपर्युक्त योग मे मिलाकर सेवन कराये। तीसी का तेल २ तोले मे १ तोला सफेद मोम और १ तोला बकरी के वृक्क की चर्बी मिला कर कुन-कुना करके सीना पर मर्दन करें। रात्रि मे सोते समय ११ तोला लऊक सेपिरताँ और लऊक मोतदिल १२ तोले अर्क गावजवान मे पकाकर पिला दिया

करे। पीला अजीर ३ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, हंसराज ५ माशा, मधु २ तोला पानी मे उबालकर सबेरे-शाम और इसी योग के साथ ७ माशा लऊक कतॉं खिलाना भी लाभकारी है। ईर्सा और फितरासालियून ३–३ माशे, मधु २ तोला पानी मे उबालकर पिलाना या जूफाए खुश्क और अलसी के बीज प्रत्येक ५ माशा मिश्री २ तोला पानी मे उबाल कर सबेरे शाम पिलाना ओर १ टिकिया इन्तिसावी १ तोला मधु या मक्खन मे मिलाकर रात्रि मे खिलाना भी लाभकारी है। यदि उपर्युक्त उपायो से लाभ न हो तो विधिवत् कफपाचन ओषधि पिलाकर हब्ब इयारज का विरेचन देवें। शोधनोपरान्त खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाववाला बलवृद्धि के लिये देवे। कफज कृच्छ्रश्वास के लिये कभी वमन कराना भी लाभकारी होता है। यदि प्रसेक के कारण यह रोग हो तो खमीरा खशखाश ७ माशा और लऊक नजली ७ माशा और बरशाशा १ माशा आदि मे से कोई एक ओषधि देने से उपकार होता है।

यदि खुश्की के कारण हो तो लऊकनजली आब तरबूजवाला ७ माशा खिला कर ऊपर से बिहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ५ दाना पानी मे उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा या शर्बत खशखाश मिलाकर ३–३ माशे काहू के बीज और कद्दू के मग्ज का शीरा योजित कर पिलाये ओर ६–६ माशे गुलबनफ्शा एव गुलनीलूफर पानी मे काढा करके उससे वक्ष के ऊपर परिषेक करें। अथवा आवश्यक प्रमाण मे गुलरोगन लेकर वक्ष के ऊपर उसका मर्दन करें। बलवृद्धि के लिये खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाववाला ५ माशा या दियाकूजा ७ माशा १२ तोले अर्क गावजबान और २ तोले शर्बत फर्याद रस के साथ देवें। लऊक सेपिस्तॉं २ तोले या लऊक इसबगोल २ तोले १२ तोले अर्क गावजबान मे पकाकर पिलाना या बेनजीर एक टिकिया मधु १ तोला या मक्खन १ तोला मे मिलाकर रात्रि मे सोते समय या आवेग की दशा मे खिलाना भी लाभकारी है।

यदि मवाद चेचक के कारण हो तो खाकसी ५ माशा, पीला अजीर ३ दाना कैंची से कतरा हुआ अबरेशम ५ माशा, मधु २ तोला पानी मे उबाल-छानकर सबेरे-शाम पिलायें। आवश्यकता हो तो खमीरा मरवारीद ५ माशा भी इस योग के साथ देवें। १ रत्ती सफूफ दमा मछलीवाला १ तोला खमीरा गावजबान मे मिलाकर खिलाने से भी लाभ होता है या सफूफ दमा हल्दीवाला ५ माशा एक दिन पानी से खिलायें। दूसरे दिन से ५ माशा पर १ रत्ती प्रतिदिन चूर्ण बढाकर ५१ दिन तक खिलायें। इसके बाद त्याग करा देवे तो इस उपाय से भी उपकार हो जाता है, हब्ब जीकुन्नफस १ गोली कुछ दिन रात्रि मे सोते समय खिलाने या शर्बत जूफा मुरक्कब चटाने से भी लाभ होता है। हब्ब मोमियाई

सादा भी कुछ दिन खिलाने से पर्याप्त लाभ हो जाता है। निम्न योग भी श्वास-कृच्छ्र मे लाभकारी है—कलमीशोरा और लाहौरी नमक प्रत्येक १ तोला, अफीम १॥ माशा, प्रथम दोनो द्रव्य यवकुट करके आधी अफीम उसके नीचे और आधी उसके ऊपर रखकर मिट्टी के दो प्यालो मे कपड़मिट्टी करके बेर की लकडी से एक लौकी हलकी मृदु अग्नि सवाघड़ी देवें। फिर उतार कर प्याले मे जितने ओषधि के बाष्प जाकर लगे हो, उस सत्त्व को खुरच लेवें। फिर उसको निकाल कर एक शीशी मे रख लेवें। १ चावल इस सत्त्व मे से प्रात और उतना शाम को २ तोला शर्बत जूफा मे मिलाकर चटाना चाहिये।

यह रोग आवेगपूर्वक होता है। अतएव आवेगावस्था मे कष्ट दूर करने का यत्न करे, और रोग निवृत्तकाल मे मूल हेतु के निवारण का उपाय करे। जब यह रोग खुश्की के कारण हो, तब तुरत चिकित्सा की ओर ध्यान देना चाहिये। वरन कुछ काल तक आराम न हो, तो यह सिल्ल की ओर स्थानान्तरित हो जाता है, जो अत्यन्त भयावह रोग है।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग-अरहर की दाल, मुर्गी के बच्चे का शूरबा, बथुये की भुजिया, तरकारियो मे चुकन्दर, कद्दू, तुरई आदि देवे।

अपथ्य—अधिक सोना, शीतल और अम्ल पदार्थ का खाना-पीना, अगूर, सेव, नारगी आदि फल, नीबू और शीतल जल का अतिसेवन, अधिक धूप मे चलना-फिरना, अधिक आयास और श्रम करना, गुड, तेल, लाल मिर्च, लहसुन आदि अपथ्यकर एव वर्जित है।

२—सुआल

नाम—(अ०) सुआल, (फा०) सुर्फ, (उ०) खाँसी, (स०) कास; (अ०) कफ (cough) ब्रॉङ्काइटिस (Bronchitis)।

वर्णन—जिस समय फुफ्फुस मे किसी कष्टदायक पदार्थ के उत्सर्ग की चेष्टा करता है, तो उस चेष्टा को यूनानी वैद्यो की परिभाषा मे सुआल (खाँसी) कहते है।

हेतु—खाँसी का हेतु प्राय मस्तिष्क से दोषो का अवतरण होना है जो फुफ्फुस की ओर गिरते रहते है और फुफ्फुस को उनके उत्सर्ग की आवश्यकता होती है। कभी सर्दी के कारण फुफ्फुस मे कफ अधिक सचित होकर खाँसी का रोग हो जाता है। कभी-कभी गर्मी और खुश्की के कारण खाँसी हो जाती है। खाँसी के प्रधान दो भेद होते है। (१) खुश्क खाँसी और (२) तर खाँसी।

लक्षण—प्रसेक या प्रतिश्याय सर्दी के कारण हो तो बालको, बूढो और कफ प्रकृतिवालो को शरद् ऋतु मे होती है। वक्ष मे वक्ष (छाती) की अस्थि के

नीचे क्षोभ प्रतीत होता है। श्वासकृच्छ्रतापूर्वक (तगी से) आता है। बारबार खाँसी उठती है। रात्रि मे सोते समय और प्रात समय खाँसी अधिक आती है। कभी पिलाई लिये सफेद कफ कठिनाई से निकलता है। कभी-कभी पतला लेसदार रग का कफ निकलता है। कुपथ्य के कारण इस प्रकार की खाँसी बद्धमूल एव स्थायी हो जाती है और शरद् ऋतु मे अधिक होती है। गर्मी और खुश्की के कारण हो तो खाँसी मे कफ नही निकलेगा, कण्ठ शुष्क होगा और सीना पर क्षोभ (खराश) मालूम होगा। इस प्रकार की खाँसी उष्ण प्रकृति एव युवाओ को ग्रीष्म ऋतु मे प्राय हुआ करती है। यदि इसकी चिकित्सा की ओर ध्यान नही दिया जाय तो फुफ्फुस मे क्षत होकर उर क्षत (सिल) रोग मे परिणत हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—दोषज और कफज कास मे दोषपाचन (नुज्ज माद्दा) का उपाय करना चाहिये। जिसमे दोष की भौतिक स्थिति मोतदिल (प्रकृतिस्थ—न अधिक गाढा न अधिक पतला) हो और निकलने के योग्य हो जाय। यह ध्यान रखें कि अधिक उष्ण या अधिक शीतल औषधियो का उपयोग न करें, क्योकि अधिक उष्ण औषधियो से दोष मे असाधारण तारल्य हो जाता है और अधिक शीतल औषधियो से असाधारण सान्द्रत्व। अस्तु, दोषपाचन का जो मूल उद्देश्य अर्थात् दोष की भौतिक स्थिति का प्रकृतिस्थ (मोतदिल) होना वह नष्ट हो जाता है। यदि खाँसी के साथ विरेक होते हो, या अन्य उपद्रव उत्पन्न हो जायँ तो दोनो के लिये लाभकारी औषधियो का उपयोग यथास्थान और यथाप्रमाण दोष-प्रकृति आदि का विचार करके करना चाहिये। जैसे यदि खाँसी के साथ विरेक आते हो तो बबूल का गोद और निशास्ता आदि भूनकर देना चाहिये। और ऐसे शर्बतो का उपयोग करना चाहिये जो कास मे लाभकारी होने के साथ ही सग्राही भी हो। जंसे—शर्बत खशखाश, शर्बत अनार, शर्बत हब्बुल्आस आदि यदि खाँसी के साथ रक्तष्ठीवन भी हो तो बबूल का गोद, कतीरा, सतमुलेठी आदि के साथ कोई रक्तशोधक औषधियो की योजना भी करनी चाहिये। जैसे—दम्मुल्अख्वैन, सगजराहत, गिल अरमनी आदि।

जालीनूस के मतानुसार यदि खाँसी मे गाढा कफ निकलता हो तो उसे पतला करने के लिये जूफा, सूखा पुदीना आदि उपयोग करें। यदि पतला कफ निकलता हो तो निशास्ता प्रभृति से उसे गाढा करें। यदि लेसदार कफ हो तो सिकजबीन आदि से उसका छेदन करे। यदि दोष इतने प्रचुर प्रमाण मे हो कि दोषाधिक्य के कारण रोगी दुर्बल हो जाय, तो विरेचन द्वारा दोष का शोधन करे। निम्नलिखित औषधियाँ हर प्रकार की खाँसी में उपकारक है—

यवमण्ड (माउश्शईर) खाँसी के लिये अतीव गुणकारी है। काकडासीगी

महीन पीस कर कालीमिर्च-प्रमाण की गोलियाँ वनाकर मुँह मे रखना अथवा वाकला के दाने के बराबर वोल (मुरमकी) खाना वहुत ही गुणकारी है। पुरानी खाँसी मे ३ माशा फिदक यवमड के साथ खाना लाभकारी है। वाह्यत वादाम का तेल और मोम वक्ष और उभय स्कन्धो के बीच मर्दन करने या नाभिस्थल पर रोगन वनफ्शा मलने से भी खाँसी मे लाभ होता है।

चिकित्सा-क्रम—यदि प्रसेक के कारण हो तो गुलवनफ्शा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना, गावजवान ५ माशा, खतमी के वीज ७ माशा, खुब्बाजी बीज ७ माशा और छिली हुई मुलेठी ५ माशा, सवको पानी मे पका-छान कर २ तोला शर्वत वनफ्शा मिलाकर सवेरे पिलाये। कफ की अधिकता से हो तो गावजवान ५ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, उन्नाव ५ दाना, छिली हुई मुलेठी ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी मे उवाल कर सवेरे-शाम पिलायें और रात्रि मे सोते समय लऊक सेपिस्ता और लऊक मोतदिल १–१ तोला १२ तोले अर्क गावजवान मे उबाल कर पिला दिया करे। यदि कुछ दिन के सेवन से लाभ न हो तो सौफ की जड, मुलेठी, जूफाए खुश्क, हसराज प्रत्येक ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी मे पका-छानकर गरम-गरम पिलायें और शिलारस १ माशा पीसकर १ तोला मधु मे मिलाकर लेह (चटनी) सा बनाकर चटाये, या काकडासीगी, शकरतीगाल, सोठ और पीपला मूल १-१ माशा वारीक पीसकर २ तोला मधु मे मिलाकर लेह-सा वनाकर चटाते रहें, या हब्वगुलपिस्ता मुँह मे रखकर चूसते रहना या अभ्रक भस्म ४ चावल १ तोला मधु मे मिलाकर रात्रि मे सोते समय चाट लेना या इन्तसाबी एक टिकिया १ तोला मधु या मक्खन मे मिला कर रात्रि मे सोते समय खाना भी लाभकारी है। हब्द सिफा एक गोली, हब्ब जदवार १ गोली, तिर्याक नजला ७ माशा, वरशाशा या लऊक कर्ता मे से कोई एक ओषधि देने से भी लाभ होता है। हब्ब गुलपिस्ता या वस्तज १ टिकिया मुँह मे रखकर लुआब चूसते रहना भी लाभकारी है। अधोलिखित गोलियाँ भी हर प्रकार की खाँसी के लिये विशेपकर प्रसेकीय के लिये तो बहुत ही गुणकारी हैं—सतमुलेठी, बबूल का गोद, कतीरा, शकरतीगाल, बदाम का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना प्रत्येक ६ माशा, अफीम और केसर प्रत्येक ५ माशा—सबको पीसकर गावजवान के लुआव मे मिलाकर मूँग के वराबर गोलियाँ बना लेवे। समय पडने पर १–२ गोली मुँह मे रखकर लुआव चूसते रहे। यदि गर्मी और खुश्की के कारण हो तो बबूल का गोद, कतीरा, सतमुलेठी शकरतीगाल प्रत्येक १ माशा महीन पीसकर ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से ३ माशा विहीदाना, ५ दाना उन्नाव, ९ दाना लिसोढा पानी मे पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम पिलाये।

यदि उष्ण प्रसेक के कारण हो तो ववूल का गोद, कतीरा और सतमुलेठी १–१ माशा बारीक पीसकर ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर प्रथम खिलाये, ऊपर से गावजवान ३ माशा, पोस्ते की डोडी १ नग १२ तोले अर्क गावजवान मे शीरा निकालकर २ तोला शर्वत खशखाश मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें।

खुश्की अधिक हो तो ३ माशे खीरा-ककडी के वीज, ३ माशे कुलफा के वीज ३ माशे मीठे कद्दू के मग्ज १२ तोले अर्क गावजवान मे पीसकर शीरा निकाल कर २ तोले शर्वत खशखाश मिलाकर सवेरे-शाम पिलाये। शाम को मस्तिष्क दौर्वल्य के प्रकरण मे लिखित हरीरा मग्ज वादामवाला योग सेवन कराये। लऊक-नजली आव तरवूजवाला ७ माशा या लऊक आवनेशकर ७ माशा खिलाना और हव्व लुव्वुल् खशखाश मुँह मे रखना या हव्व सुर्फा १ गोली मुँह मे रखकर उसका रस चूसते रहना भी लाभकारी हे। ये गोलियाँ भी लाभकारी हैं— सतमुलेठी, ववूल का गोद, कतीरा, निशास्ता, शकरतीगाल, वाकला का आटा, उन्नाव का आटा, मीठे वादाम का मग्ज, तरवूज के वीज का मग्ज, पोस्ते का दाना प्रत्येक ४ माशा, अफीम १ माशा, केशर १ माशा सवको कूट-छानकर आवश्यकतानुसार अर्क गावजवान मे घोटकर मूँग प्रमाण की गोलियाँ वना लेवें। आवश्यकता पडने पर १–२ गोली मुँह मे रखकर लुआव चूसते रहे।

पथ्य—वकरी का मास, चपाती, मूँग-अरहर की दाल, खिचडी, तरकारियो मे चुकदर, वथुआ या पालक आदि का साग देवें।

अपथ्य—सर्दी के कारण हो तो सिर और छाती को शीतल वायु से वचाये। शीतल जल पीने से वचे। वादी, गरिष्ठ, कफकारक, शीतल-स्निग्ध द्रव्य सेवन नही करे। गर्मी और खुश्की के कारण हो तो गरम मसाला, आलू, अरवी, मछली, लहसुन, प्याज, तेल एव गुड के पके हुए पदार्थ और अम्ल आदि से परहेज करे।

३—नफसुद्दम

नाम—(अ०) नफसुद्दम, (उ०) खून थूकना, थूक मे खून आना, (स०) रक्तष्ठीवन, (अ०) हीमाप्टीसिस (Haelmoptysis)।

वर्णन—इस रोग मे मुखमार्ग से थूक और कफके साथ या थूक विना शुद्ध रक्त निकलता है।

वक्तव्य—जो रक्त फुपफुस एव तत्सम्वन्धी अगो जैसे स्वरयन्त्र, फुपफुस-प्रणाली आदि से थूक के साथ निकलता है उसे 'नफ्सुद्दम' और आमाशय, अन्नप्रणाली, नाक या मुँह से निकलने वाले को 'कैउद्दम' या 'नज्फुद्दम' कहते है।

इसका वर्णन आमाशय के रोगो मे किया गया है। पाश्चात्य वैद्यक मे नज्फुद्दम को हीमोरेज (Haemorrhage)' और कैउद्दम को 'हीमाटेमेसिस (Haematemesis)' कहते है। आयुर्वेद मे प्रथम को 'रक्तस्राव' और द्वितीय को 'रक्त वमन' कहते हैं।

हेतु—इसका प्रधानतम कारण उर क्षत है, किंतु फुफ्फुसशोथ, फुफ्फुसव्रण, धमनी विस्तृति (एन्युरस्मा), सर्तान या किसी उग्र चेष्टा के कारण फुफ्फुसीय रक्तस्रोतसो के फट जाने तथा कतिपय हृद्रोगो से भी यह विकार हो जाता है। कदाचित् फुफ्फुस विकार के कारण कभी-कभी मासिक धर्म बन्द हो जाने पर स्त्रियो के फेफडो से रक्त निकलने लगता है। कभी-कभी खाँसी की तीव्रता, बलपूर्वक चिल्लाने, कण्ठ के भीतर जोक लग जाने, तीव्र रेचन या तीक्ष्ण उष्ण औषधाहार के सेवन या वायु की अधिकता आदि से फुफ्फुसीय स्रोतस् फट जाने से रक्तष्ठीवन रोग हो जाता है।

मुँह से निकलनेवाला रक्त कभी मसूढा आदि मुखावयव से या गलशुण्डी या मूर्धा आदि कण्ठावयव से अथवा सिर से कण्ठ की ओर उतरता है अथवा स्वरयन्त्र, फुफ्फुसप्रणाली, वक्ष एव फुफ्फुस से अथवा अन्नप्रणाली, आमाशय तथा यकृत् मे से किसी अग से अथवा हृदय से आता है। कभी-कभी प्रसेक भी इसका कारण-भूत होता है।

लक्षण—जो रक्त मुखावयव अर्थात् मसूढो और दाँतो की जडो से आता है, वह थूक के साथ निकलता है और जो कण्ठावयव अर्थात् गलशुण्डी या मूर्धा वा कण्ठ की सूजी हुई ग्रन्थि से आता है, वह खखार के साथ आता है, कण्ठ के भीतर क्षोभ एव सूखी खासी आती है और दम लेने मे कष्ट होता है। जो सिर से आता है वह कभी खखार के साथ आता है, किंतु इसके साथ नकसीर के लक्षण, जैसे चेहरे की सुर्खी और शिरोगौरव आदि भी पाया जाता है और रक्त निकलने के पीछे सिर मे हलकापन मालूम होता है। जो रक्त स्वरयत्र या फुफ्फुस-प्रणाली से आता है वह भी खखार के साथ आता है, किन्तु प्रमाण मे कम होता है तथा आवेगपूर्वक आता है। जो वक्ष (सीना) से आता है, वह अत्यधिक खाँसने से आता है, थोडे दर्द के साथ और काले रग का जमा हुआ होता है। सीना मे तनावट और गौरव मालूम होता है और कभी-कभी श्वास लेने मे कष्ट होता है। जो खास फुफ्फुस से आता है वह पतला, रक्त, झागयुक्त (कफदार) और खाँसी के साथ निकलता है। परन्तु, इसके साथ दर्द नही होता। यदि किसी फुफ्फुसीया सिरा के फट जाने से सहसा बहुत-सा रक्त निकल जाय या हृदय से रक्त आये तो कभी मूर्च्छा और कभी मृत्यु भी हो जाती है। जो रक्त अन्नप्रणाली, आमाशय या यकृत् से आता है वह वमन

के द्वारा निकलता है और उसका रग कालाई लिये होता है, उसमे कुछ भोजन का अश भी मिला होता हे तथा आमाशय के ऊपर जलन एव गर्मी प्रतीत होती है।

चिकित्सा--यदि मसूढो से थूक के साथ रक्त आता हो, तो कवल का निम्न योग देवे--हरा माजू, गुलनार, हव्वुल् आस, पोस्त, छोटी माई, सफेद कत्था, फिटकिरी प्रत्येक ६ माशा, पानी मे पका-छानकर उससे कुल्ली कराये। सग-जराहत, दम्मुल्अख्वैन, कुदुर प्रत्येक ३ माशा महीन पीसकर मजन की भाँति दाँतो के ऊपर मले अथवा सुनून मुजर्रव या सुनून कलाँ या सुनून चोवचीनी मे से कोई सुनून (मजन) दाँतो पर मले।

यदि कण्ठावयव अर्थात् गलशुण्डी या मूर्धा या सिर से रक्त आता हो तथा रोगी वलवान् हो तो सरारू का सिरावेध करे और गुद्दी पर खाली सीगी लगवाये तथा कवल (मज्मजा) का उपरिलिखित योग व्यवहार करायें।

यदि स्वरयन्त्र और फुफ्फुस प्रणाली से रक्त आता हो तव भी उपर्युक्त कवल का प्रयोग कराये अथवा मेहदी के पत्र, सूखा धनिया प्रत्येक ६ माशा, कमीला ३ माशा पानी मे उवालकर उससे कवल धारण कराये तथा निम्न गुटिका योग का सेवन कराये--दम्मुल् अख्वैन, गिल अरमनी, अकाकिया, गुलनार फारसी, शादनज मग्सूल, कहरुवाशमई, निशास्ता, सगजराहत, ववूल का गोद, कतीरा, सत मुलेठी प्रत्येक २ माशा, अफीम और केसर ४-४ रत्ती कूट-छानकर यथावश्यक गावजवान के लुआव मे मिलाकर चने प्रमाण की गोलियाँ वनायें और दो गोलियाँ हर समय मुँह मे रखवाकर धीरे-धीरे लुआव चुसायें।

यदि स्वय फेफडे से रक्त आता हो तथा सूजन न हो तो सीने पर सग्राही औष-धियो का लेप करे। यदि किसी फुफ्फुसीया सिरा (रग) के फट जाने से एक साथ अधिक रक्त निकले अथवा हृदय से रक्त आया हो और मूर्च्छा की दशा हो तो रोगी को शीतल गृह मे सुखपूर्वक चुप-चाप लिटा देवे। उसका सिर ऊँचा रखें। वोलने और चेष्टा करने से रोके। सीने पर वर्फ लगाये। रोगी चतुर हो तो वर्फ के टुकडे चुसाये। चदन को अर्कगुलाव मे घिसकर उसमे कपडा भिगोकर सीने के ऊपर रखवायें। गेरू, सगजराहत और दम्मुल्अख्वैन १-१ माशा महीन पीसकर ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर खिलाये। ऊपर से ३ माशे विहीदाने का लुआव, ३ माशे अजवार की जड का शीरा, ३ माशे हब्बुल्आस का शीरा, ३ माशे कुलफा के वीज का शीरा, वड की डाढी का शीरा जल मे पीसकर २ तोला शर्वत अजवार मिलाकर एक समय पिलायें। दूसरे समय कुर्स गुलनार ४॥ माशा या कुर्स कहरुवा ४॥ माशा खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क गावजवान मे २ तोला शर्वत अजवार मिलाकर पिला दिया करें अथवा

गुलखैरू १ तोला गरम पानी मे भिगोकर छानकर २ तोला शर्वत अजवार मिलाकर पिला दिया करे। अडूसा की पत्ती १ तोला पानी मे पीस-छानकर २ तोला शर्वत खशखाश या २ तोला शर्वत अजवार मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि प्रसेक के कारण रक्त वहता हो तो गेरू और सगजराहत १–१ माशा महीन पीसकर ७ माशे खमीरा गावजबान या ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर प्रथम खिलाकर विहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना पानी मे उवाल-छानकर २ तोला शर्वत अजवार मिलाकर ३ माशे कद्दू के वीज के मग्ज का शीरा योजित कर पिलायें। कनपुटियो पर नजलावन्द चिपकाये। खाँसी की तीव्रता में दियाकूजा ७ माशा और २ तोला शर्वत खशखाश के साथ उपर्युक्त योग सेवन करायें।

रक्तष्ठीवन कासोपकारी लऊक अजवार का योग—अजबार की जड २ तोला, पोस्ते की अखड ५ डोडी, खतमी के वीज १॥ तोला, खुब्बाजी के वीज १॥ तोला, लिसोडा १॥ तोला, मुलेठी १४ माशा, बिहीदाना ९ माशा, उन्नाव २० दाना सवको रात्रि मे पुटपाक किये हुए कद्दू और पेठा के आध-आध सेर रस मे भिगोकर सवेरे पका-छानकर आध सेर मिश्री मिलाकर चाशनी करे। तदुपरात कहरुवाए शमई, गिल अरमनी, सत मुलेठी, दम्मुल्अख्वैन, वशलोचन प्रत्येक ७ माशा, वबूल का गोद और कतीरा ९–९ माशा पीसकर योजित करे। मात्रा—७ माशा लेकर थोडा-थोडा चटाये। काफूर सय्याल ५–५ बूंद पानी मे मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि उर क्षत (सिल्ल) के कारण रक्त आता हो, तो उपद्रव एव कक्षा को ध्यान मे रखकर वे ही उपाय काम मे लेवें, जिनका उल्लेख सिल्ल के वर्णन मे किया गया है।

विशेषकर फुफ्फुसशोथ की दशा मे रतष्ठीवन वहुत ही भयकर है। इसकी चिकित्सा मे असावधानी करने से प्राय परिणाम दु खद होता है और प्राय उर-क्षत (सिल्ल) की आशका होती है।

पथ्य—लघु, नरम और शीघ्र पाकी आहार, जैसे—यवमड अर्थात् जौ का उवाला हुआ पानी तीव्र रोग मे और रोग निवृत्ति की दशा मे सावूदाना या खीरा-ककडी के वीज के मग्ज की खीर पकाकर कम मीठा मिलाकर देवे। मूँग की दाल का पानी या मूँग की नरम खिचडी या गेहूँ की दलिया। आरोग्योन्मुख होने की दशा मे गेहूँ की चपाती वकरी के शूरबा कम मिर्च और मसाला पडे के साथ और तरकारियो मे से कद्दू, पालक, तुरई, भिडी, टिडा आदि देना चाहिए।

अपथ्य—तीव्र चेष्टा और गुरु पदार्थो के उठाने, अधिक चलने-फिरने, दौडने और परिश्रम करने, अधिक मद्यपान और चायसेवन तथा गरम, तीक्ष्ण, मधुर, और लवण आहार, मसालेदार पदार्थो, अचार, चटनी आदि, मछली और अडा आदि के सेवन तथा अतिमैथुन से परहेज करना चाहिए ।

४—सिल्ल व दिक

नाम—(अ०) सिल्ल, दिक, (फा०) तपेदिक, (उ०) दिक का बुखार ; (स०) उर क्षत, क्षय, राजयक्ष्मा , (अ०) थायसिस (Phthisis) कन्जम्प्शन (Conjumption) ।

वक्तव्य—सिल्ल का अर्थ क्षय वा शोप (हुजाल व जवूल) है। फुफ्फुसीय व्रण (कर्हारिय) मे शरीर अनिवार्यत क्षीण वा कृश हो जाता हे, अतएव यूनानी हकीम इसे 'सिल्ल' नाम से अभिधानित करते है ।

हेतु—साधारणत उष्ण प्रसेकीय दोष के फुफ्फुस पर गिरने और उसमे क्षोभ उत्पन्न होकर व्रण हो जाने या पार्श्वशूल का नियमपूर्वक चिकित्सा न होने और दोष रुककर पक जाने से फुफ्फुस मे व्रण हो जाते हैं । कभी पुरानी खाँसी मे चिकित्सा की गडबडी से साधारणतया यह रोग हो जाता हे । क्योकि, अधिक काल तक खाँसी बने रहने से फुफ्फुस दुर्बल हो जाते है और उनमे क्षोभ होकर व्रण उत्पन्न हो जाते हैं ।

लक्षण—इसके साथ दिक का होना अनिवार्य है । रोगी को प्रथम शुष्क कास और सूक्ष्म ज्वर होता है। कुछ कालोपरात खाँसी मे कभी रक्त और कभी शुष्क छिलके और कभी रक्तमिश्रित कफ निकलता है। चेहरा लाल होता है। नेत्र धँस जाते है। नख टेढे हो जाते हैं। कभी-कभी पादशोथ होता हे। जिस ओर के फुफ्फुस मे व्रण होता है, उस ओर की करवट लेने मे कष्ट अधिक होता है और खाँसी उठती है। सिल्लोत्पादक दोष प्रथम फुफ्फुसो मे सचित होकर दाने और ग्रन्थियो का रूप ग्रहण कर लेता है। कुछ काल वाद ये दाने वा ग्रन्थियाँ पककर पनीर के सदृश हो जाते हैं। तदु-परात उक्त दोष गलकर पीप मे परिणत हो जाता है तथा फुफ्फुस मे विवर वा व्रण उत्पन्न कर देता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि फुफ्फुस मे तो किसी प्रकार का व्रण नहीं होता, किन्तु रोगी की वाह्य दशा ठीक सिल्ल (यक्ष्मा) के रोगी जैसी होती है। कृच्छ्रश्वास, तीव्र कास, शरीर मे दौर्वल्य की उत्तरोत्तर वृद्धि, शरीर कार्श्य आदि यक्ष्मा के सभी लक्षण पाये जाते हैं। इस प्रकार के रोगियो मे सिर से वक्ष की ओर अत्यत सान्द्र एव गाढे द्रव निरतर उतरते रहते हैं और वह अत्यत कोथयुक्त तथा पीप के सदृश होते है। इनके थूक मे निकलने

से यक्ष्मा का सदेह होता है। यद्यपि यह रोग वस्तुत. श्वास (कृच्छ्रश्वास) रोग का एक भेद होता है। परन्तु यक्ष्मा से लक्षण सादृश्य के कारण यूनानी वैद्य इसे भी सिल्ल (यक्ष्मा) कह देते है। परन्तु फुफ्फुसीय व्रण की दशा मे सिल्ल हकीकी और इस प्रकार की सिल्ल को गैर हकीकी के नाम से अभिधानित करते है। भेद केवल यह है कि गैर हकीकी मे केवल अपक्व द्रव थूक के साथ निकलता है तथा ज्वर नही होता और हकीकी मे पीप और रक्त दोनो निकलते है तथा इसके साथ स्वल्प ज्वर भी होता है। निदान के लिये इस बात का पता लगाना आवश्यक होता है कि थूक के साथ निकलने वाला द्रव केवल गाढा कफ है या पीप। परीक्षार्थ थूक मे निकले हुए द्रव को पानी मे डालकर रख देवें और हिलाये नही। दो-तीन घटे पीछे देखे। यदि वे तलस्थित हो गये हो तो पीप समझना चाहिये। यदि वे जल के ऊपर तैरते रहे, तो कफ समझें। अथवा कोयले की अग्नि पर डालकर देखे। यदि दुर्गन्धित चिरॉयध उठे तो पीप, वरन् कफ समझें।

उपद्रव के विचार से सिल हकीकी के ये दो भेद होते है.—१ तीव्र और २ चिरज। तीव्र वा उग्र दोषयुक्त सिल्ल मे अधिक से अधिक ६ मास मे तीनो कक्षाएँ पूरी हो जाती है। परतु चिरज सिल्ल का रोगी उचित उपाय होने पर प्राय· ३३ मास और कोई वर्षो भी जीवित रह जाते है।

लक्षण एव चिकित्सा के विचारानुसार यक्ष्मा (सिल्ल) को तीन कक्षाओ मे विभाजित करते है।

प्रथम कक्षा—इसमे रोगी को अति सूक्ष्म खाँसी आती है जो किसी-किसी समय साधारण रूप मे उठती है—हलका ज्वर होता है जिसका अनुभव रोगी को नहीं होता। खॉसी मे किचित् पतला झाग और कफ कभी-कभी निकलता है। रोगी की भूख, प्यास आदि सभी ठीक दशा मे होती है। यदि सौभाग्यवश ऐसी दशा मे चिकित्सा की ओर ध्यान हो जाय, तो साधारणत आरोग्य की आशा होती है।

द्वितीय कक्षा—इसमे खॉसी तीव्र हो जाती है और अत्यधिक रक्त आना आरभ हो जाता है। हर समय स्वल्प ज्वर रहता है। हाथ की हथेलियॉ और पैर के तलुवे जलते है। वक्ष मे साधारण (स्वल्प) वेदना प्रतीत होती है। जब पीप बनने लगे तब प्रतिदिन रात्रि मे दो बार शीतपूर्वक ज्वर होता है। रात्रि मे ज्वर १०३ और नाडी का स्पदन ११० तक अथवा इससे अधिक हो जाता है। दौर्बल्य उत्तरोत्तर बढता जाता है। रोगी अत्यत क्षीण हो जाता है। यदि इसमे चिकित्सा की जाय तो आरोग्य की आशा तो नही होती, किन्तु रोगी चिरकाल तक जीवित रह सकता है।

तृतीयकक्षा—इसमे प्रात काल सिर और सीना पर प्रचुर स्वेद होता है। असीम दौर्बल्य एव कार्श्य हो जाता है। रात्रि मे निद्रा नही आती और पादशोथ हो जाता है। दुर्गन्धित विरेक आने प्रारभ हो जाते है और समस्त लक्षण तीव्र हो जाते है। रोगी के बाल गिरने आरभ हो जाते है। जब इस प्रकार के विरेक आने आरभ हो जायँ कि वे अत्यत दुर्गन्धित हो और थूक भी अधिक दुर्गन्धित हो जाय, तब रोगी की आसन्न मृत्यु समझना चाहिये। ऐसे समय मे हर एक उपाय निरर्थक सिद्ध होता है।

चिकित्सा—इस प्रकार के रोगी को बहुत स्वच्छ रखें। ओढने, बिछाने और पहिनने के वस्त्र मलिन नही होने देवे, प्रत्युत् तीसरे-चौथे दिन बदल दिया करें। प्रारभ मे ही यदि रोग का निदान हो जाय, तो केवल जलवायु एव आहार परिवर्तन पर्याप्त है। खाँसी के लिये साधारण प्रसेक एव प्रतिश्याय की चिकित्सा करे। रोग की अधिकता की दशा मे यदि रक्त आता हो तो गेरू, सगजराहत, दम्मुल्अख्वैन और म्सीकृत केकडा प्रत्येक १ माशा पीसकर २ तोले शर्बत खशखाश मे मिलाकर प्रथम खिलाये। ऊपर से बेदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना और लिसोढा ९ दाना पानी मे उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर पिला दिया करे। यदि अधिक प्रमाण मे रक्त आता हो तो इसी योग के साथ (काफूर महलूल) १०-१० बूँद पानी मे मिलाकर भोजनोत्तर दोनो समय पिला दिया करें।

यदि पाचन-शक्ति बिगड जाय तो बेदाना के स्थान मे उन्नाब, ५ माशा बादियान (सौफ), ३ माशा मुलेठी, १२ तोले अर्क गावजबान मे इनका शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनपशा मिलाकर पिलाये। रक्त बन्द होने के बाद सफेद राल २ रत्ती, बबूल का गोद, कतीरा और मसीकृत केकडा प्रत्येक १ माशा पीसकर १ तोला लऊक नजली आब तरबूज वाला मे मिलाकर प्रथम खिलाये। ऊपर से पूर्व लिखित बेदाना उन्नाबवाला योग पिलाये। इस रोगी के लिये साधारण मलावरोध रहना हितकर है। परतु अधिक मलावरोध की दशा मे कोई ऐसी मलावरोध निवारक (कब्जकुशा, मुलय्यिन) औषधि जिससे एक दस्त खुलकर हो जाय, सेवन कराना जरूरी है। प्रत्युत् श्रेष्ठतर यह है कि खाने की औषधि के स्थान मे उक्त प्रयोजन के लिये वस्ति का प्रयोग किया जाय। रात्रि मे सोते समय २ तोला लऊक सेपिस्ता १२ तोले अर्क गावजबान मे उबालकर पिला दिया करें। तीव्र खाँसी मे हब्बसुर्फा का प्रयोग भी गुणकारी है। ३ माशे मछली का सरेश दूध मे घोलकर भोजन के साथ खिला दिया करें तथा रोगी का बल स्थिर रखने का ध्यान रखें।

यदि ज्वर तीव्र न हो तो बलवृद्धि के लिये लघु स्वर्णभस्म (कुश्ता तिला

खुर्द) २ चावल ७ माशे खमीरा गावजवान अवरी या ५ माशे मुफर्रेह बारिद मे मिलाकर रात्रि मे सोते समय खिला दिया करें या विद्रुत स्वर्ण (तिला महलूल) ३ बूँद अथवा विद्रुत मुक्ता (मरवारीद सय्याल) ५ बूँद पानी मे मिलाकर बलवृद्धि के लिये पिला दिया करें। पाचन का विशेष रूप से ध्यान रखे। यदि रोगी को अतिसार हो जाय, तो उसकी ओर शीघ्र ध्यान देवें। इस प्रयोजन के लिये मालती वसत २ चावल ७ माशे जुवारिश ऊद शीरी मे मिलाकर खिलाएँ। यदि विरेक बन्द न हो तो पीने की ओषधि मे पोस्ते की एक डोडी का शीरा तथा ३ माशे हब्बुल् आसका शीरा योजित करें या सफूफ तीन ५ माशे गाय के घी मे मलकर देवें। सायकाल कुर्स सर्तान ४॥ माशा १२ तोले अर्क गावजवान और २ तोले शर्बत एजाज के साथ देवे। १ माशा आमलासार गधक महीन पीसकर २ तोले शर्बत एजाज या ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर खाना प्रभावत लाभकारी है।

स्त्री, गदही या बकरी मे से जिसका दूध प्राप्त हो सके, उसे राजयक्ष्मा के रोगी को पिलाने से उपकार होता है। जब शरीर मे अधिक रूक्षता हो जाय, तब दूध का सेवन प्रारभ कराना चाहिये। ७ तोले से प्रारभ करके तीन दिन तक बराबर इसी प्रमाण से देवे। तदुपरात चौथे दिन से १–१ तोला प्रति दिन बढाते रहे। जब दूध का प्रमाण ४१ तोला तक पहुँच जाय, तब उसी प्रकार १–१ तोला प्रति दिन कम करके प्रथम मात्रा पर आ जायँ। पुन तीन दिन तक यही प्रमाण अर्थात् ७ तोला सेवन कराके छोड देवें।

यदि स्त्री वा बकरी का दूध पिलाना हो, तो ऐसी स्त्री या बकरी का पिलाये, जिसे प्रसव हुए चालीस दिन बीत चुके हो, यदि गदही का दूध पिलाना अभीष्ट हो, तो ऐसी गदही खोजना चाहिये जिसको बच्चा जने चारमास बीत चुके हो। बकरी, स्त्री या गदही को ठढे शाक खिलाये। यदि चारे का विशेष प्रबन्ध न हो सके, तो कम से कम ऐसे उष्ण पदार्थ नही देवें, जिनका प्रभाव दूध पर पडकर रोगी को हानि पहुँच सके। यदि दूध पिलाने से ज्वर बढ जाय, तो दो-चार दिन दूध का सेवन त्याग देवें और उसके बदले ककडी का पानी, हिनवाना का रस या कुलफा के बीज का शीरा पिलायें। मीठा करने के लिये दूध मे अत्यल्प चीनी या मधु मिलायें, जिसमे वह आमाशय मे जम न सके। हब्ब मसीहा १ गोली गाय के दूध के साथ घटा-बढाकर देने से भी बहुत लाभ होता है।

यदि खाँसी तीव्र हो तो ३ माशे कतीरा दूध में घोलकर पिलायें। आमाशय-दौर्बल्य (अग्निमाद्य) की दशा मे स्याह जीरा पीसकर दूध के ऊपर प्रक्षेप देकर पिलायें। हब्बसिल्ल १ गोली दूध के साथ देते रहने से भी उपकार होता है। यदि आमाशय के भीतर दूध दूषित एव विकृत हो जाय, तो उस समय कोई

मृदुरेचन ओषधि देवें। सुतरा लऊक सेपिस्ता ख़ियार शबरी १ तोला १२ तोले अर्क गावजबान मे उबालकर पिलाने से एक-दो विरेक हो जाते है। लऊक नजली आब तरबूजवाला ७ माशे या खमीरा आबरेशम शीरए उन्नाबवाला ५ माशा खिलाने से बलवृद्धि होती है। कुर्स तबाशीर, कुर्स कहरुवा या कुर्स सर्तान काफूरी मे से कोई एक ओषधि ४॥ माशे १२ तोले अर्क गावजबान और २ तोले शर्बत एजाज या २ तोले शर्बत खशखाश मिलाकर उसके साथ देने से भी लाभ होता है। खाँसी की तीव्रता मे २ गोली हब्ब सुर्फा रात्रि मे सोते समय खिलाने से भी शाति मिलती है। अत्यत दुर्बलता होने पर १ गोली हब्ब जवाहर या २ चावल कुश्ता तिला खुर्द ५ माशे खमीरा आबरेशम हकीम इर्शादवाला मे मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। सिल्ल गैर हकीकी मे कफज कृच्छ्रश्वासोल्लिखित चिकित्सा पर्याप्त होती है।

यदि प्रसेक एव प्रतिश्याय के कारण हो तो प्रसेक और प्रतिश्याय मे लिखित चिकित्सा विधि काम मे लेवें। हरा गुरुच, हरा नाय, छिली हुई मुलेठी और अडूसा की पत्ती प्रत्येक ३ माशा सबको गरम पानी मे भिगो-छानकर (फाट बनाकर) २ तोले शर्वत एजाज मिलाकर पिलाने से भी सिल्ल व दिक मे बडा लाभ होता है। बबूल का गोद, कतीरा, सत मुलेठी, वशलोचन, गुरुच का सत, कहरुवा शमई, दम्मुल् अख्वैन, प्रवाल, छोटी इलायची का दाना प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर २ तोले शर्बत बनफ्शा मे मिलाकर चटाने से लाभ होता और रक्त आना बन्द हो जाता है।

पाचनविकार और आमाशयातिसार मे आमाशय और अन्त्र को उद्दीपन कराने वाली ओषधियाँ सेवन करनी चाहिये। अस्तु, भोजनोत्तर १ माशा सफूफ नमक या ३ माशा सफूफ नाना खिलाने या ५ बूँद विद्रुत गन्धक (गदक सय्याल) पानी मे मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अतिसार बन्द करने तथा अन्त्र और आमाशय के उद्दीपनार्थ २ रत्ती मालती वसत या २ रत्ती तूतिया, एकवीर ७ माशे माजून सगदानए मुर्ग मे मिलाकर या ७ माशे ऊद जुवारिश शीरी मे मिलाकर सेवन कराने से उपकार होता है। ग्रैवेयी ग्रथियो के शोथयुक्त होने पर यदि शोथ बाहर से मालूम हो तो साबरशृङ्ग भस्म १ माशा १ तोला घी मे मिलाकर सूजन पर लगाने से लाभ होता है अथवा १ माशा जदवार और ३ माशे ईर्सा महीन पीसकर १ तोला मरहम बासलीकून या १ तोला मरहम दाखिलयून मे मिलाकर लगाना चाहिये। यदि कण्ठ से रक्त आता हो तथा कण्ठ मे पीडा हो तो मेंहदी की पत्ती, कमीला, सूखा धनिया प्रत्येक ३ माशा पानी मे उबालकर उससे गण्डूष करायें। कब्ज होने पर कोई तीक्ष्ण विरेचन औषधि नहीं देवें। प्रत्युत् आवश्यकता पडने पर केवल १ माशा कमीला, २ तोले गुलकद

मे मिलाकर रात्रि मे खिला देने से प्रात खुलकर साफ पाखाना हो जाता है।

पूर्वावधानता—जो व्यक्ति दुर्वल एव क्षीणकाय होते हैं विशेष कर युवावस्था मे १६–१७ वर्ष से २२ वर्ष की आयु तक विशेषत ३०-३५ वर्ष की आयु तक वे प्राय इस रोग के लिये अनुकूल होते हैं। ऐसे व्यक्तियो को पूर्वावधानता स्वरूप दु ख-शोक, चिन्ता, आयास, क्रोध, क्लम और श्रम की अधिकता, रात्रिजागरण और अतिव्यवाय, अधिक परिश्रम, अधिक सभाषण तथा लोहार का व्यवसाय और शीशा की कलई एव तेजाव आदि के काम से तथा इस प्रकार के व्यवसाय से जिनसे फुफ्फुस पर वल पडे और सीना को कष्ट हो, परहेज करना चाहिये। अधिक शीत एव तीव्र धूप मे चलने-फिरने से सावधान रहें। यदि प्रसेक और प्रतिश्याय आदि होता हो तो उसका तात्कालिक उपचार करायें। असावधानी नही करे। यदि सभव हो तो ऐसे स्थान की वायु मे जो शामक हो और आर्द्र न हो, जैसे पर्वतीय वायु प्राय होती है, आवास ग्रहण करे।

इस रोग से पीडित रोगियो के समीप अधिक काल तक नही ठहरे। ऐसे रोगियो के थूक-कफ और पीप आदि तथा मल-मूत्र को किसी पृथक् पात्र मे कराके आवादी से दूर पहुँचाकर काष्ठ का बुरादा डालकर जलवा देवे। ऐसे रोगियो के साथ खाने-पीने से और विशेष कर उनका जूठन खाने ओर जूठा पानी पीने और खाने के जूठे पात्र मे विना धुलवाये भोजन करने अथवा शरीर का उतरा हुआ वस्त्र बिना धुलवाये पहिनने और एक ही शय्या पर साथ मे सोने से परहेज करे।

रोगावस्था मे रोगी के लिये परहेज—दूध पिलाने के मध्य मछली और अम्ल सेवन से परहेज करें। गरम और मसालेदार पदार्थ तथा गुड एव तेल और इनकी पकी हुई वस्तुओ, गोभी, आलू, अरवी, कचालू आदि गरिष्ठ एव दीर्घपाकी पदार्थो एव प्याज आदि बाष्प कारक पदार्थो से परहेज करे।

पथ्य—पतला, लघु एव शीघ्रपाकी वल्य आहार जैसे—बकरी का शूरवा या मूँग, अरहर की दाल चपाती के साथ देवे। पालक, कुलफा, कद्दू, तुरई, टिंडा आदि शाको मे से कोई साग देवे। ताजा केकडे के हाथ-पैर पृथक् करके शेष को पानी मे उबालकर शूरवा या यखनी की भाँति देने से सिल्ल (यक्ष्मा) के रोगी को बडा लाभ होता है। दही और छाछ मे लहसुन मिलाकर देने से भी बहुत उपकार होता है।

५—जातुज्जन्ब

नाम—(अ०) जातुज्जन्ब, वरम गिलाफुरिय, (उ०) पसली या पहलू का दर्द, (अ०) प्ल्युरिसी (Pleurisy) या प्लुराइटिस (Pleuritis)।

वर्णन—वास्तव मे तो पर्शुकापेशियो के भीतर की ओर आवरण करनेवाली झिल्ली को 'जातुज्जन्ब' कहते हैं, परन्तु कभी-कभी फुफ्फुस के ऊपर आवरण करनेवाली झिल्ली मे, कभी फुफ्फुस की रचना एव भीतरी पेशियो मे या पर्शुकाओ के भीतरी धरातल पर आवरण करनेवाली झिल्ली मे या वक्षोदरमध्यस्थ पेशी (हजाब हाजिज) मे भी शोथ हो जाता है।

भेद—रोगो की सम्प्राप्ति के विचार से इसके निम्न दो भेद होते है-(१) जातुज्जन्बहकी—इसमे पर्शुकाओ की भीतरी पेशियो या वक्षोदरमध्यस्थ पेशी के ऊपरी धरातल पर आवरण करनेवाली झिल्ली मे शोथ होता है। इसको ही पाश्चात्य वैद्यक मे 'प्ल्युरिसी' या 'प्ल्युराइटिस' कहते है। (२) जातुज्जन्ब गैर हकीकी—इसमे पर्शुकाओ की मध्यवर्ती पेशियो तथा उनको आवरण करनेवाली झिल्लियो के बीच शोथ नही होता, अपितु केवल साद्र वायु अवरुद्ध हो कर वेदना का कारण हो जाते हैं। इसको 'वज्उज्जन्ब' भी कहते है। पाश्चात्य वैद्यक मे इसको 'फाल्स प्ल्युरिसी' (False Pleurisy) या 'प्ल्युरोडीनिया' (Pleurodynia) कहते हैं। जातुज्जन्ब हकीकी के पुन ये दो आवरण भेद होते है—(१) खालिस जिसमे वक्ष की बाहरी पेशियो का या पर्शुकाओ के ऊपर की झिल्ली मे शोथ हो जाता है, जिससे कभी त्वचा भी आक्रान्त होती है। इसके अतिरिक्त शोथ के स्थान के विचारानुसार भी इस रोग को विभिन्न नामो से अभिधानित किया गया है। अस्तु, यदि उरोऽस्थि के नीचे आवरण करने वाली झिल्ली के अगले भाग मे सूजन हो तो उसको जातुस्सद्र (Mediastinal Pleuritis) कहते है। यदि मसके पिछले भाग मे सूजन हो, जो रीढ के मोहरो पर आवरण करती है तो उसको जातुल्अर्ज Mesodmitis) कहते है। यदि मिथ्या पर्शुकाओ के भीतरी धरातल पर स्तर करनेवाली झिल्ली मे सूजन हो, तो उसे शौसः (Pleuritis) पार्श्वशूल कहते है। यदि वक्षोदरमध्यस्थ पेशी (दियाफर्गमा) मे शोथ हो तो उसे बरसाम (Diaphragmitis) कहते है। यदि उभय पार्श्व के फुफ्फुसावरण तथा उरोऽस्थि के नीचे आवरण करनेवाली झिल्ली सभी सूज जाएँ तो उसे खानिकः या जातुज्जन्ब मुजाअफ् (Double Pleurisy) कहते हैं।

इसी प्रकार किसी-किसी ने रोगजनक दोष के विचार से भी इसके निम्न चार भेद किये है—(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदावी।

हेतु—इस रोग का मूल हेतु चतुर्दोषो मे से किसी एक का प्रकोप विशेषकर अम्लपित्त, रक्तमिश्र पित्त, क्षारीय या दुर्गन्धित (दूषित) कफ और विदग्ध सौदा का प्रकोप हुआ करता है, जो सर्दी या अभिघात लगने से प्रकट हुआ करता है। यह चाहे रक्त, सौदा, कफ या किसी दोष से भी

उत्पन्न हुआ हो, इसमे पित्त का ससर्ग अवश्य होता है। परन्तु, गैर खालिस जिसमे केवल पर्शुकाओ के बाहर वाली झिल्ली ही शोथयुक्त होती है, केवल रक्त से उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि यह रोग हर अवस्था मे उत्पन्न हो सकता है, तथापि स्त्रियो की अपेक्षया पुरुषो को और बालक एव वृद्धो की अपेक्षया युवाओ को अधिक होता है। मद्यपायी और दुर्बल व्यक्ति जिनके फुफ्फुस दुर्बल होते हैं या वे निर्धन व्यक्ति जिन्हें पर्याप्त पुष्टिकर भोजन नही मिल सकता, इस रोग से अधिक आक्रात होते हैं। जिसको यह रोग एक बार हो जाय, उसे इसके बारबार होने का भय रहता है। शीतल एव आर्द्र स्थानो मे शरद् एव वसत ऋतु मे गृह (आवास) की अस्वच्छता एव गदगी और पोशाक मैले-कुचैले रखने से भी यह रोग हो जाता है। यह भी एक सक्रामक रोग है और कतिपय रोगो के उनके आक्रमणकाल मे विशेषकर हृद्रोग, तीव्र वृक्कशोथ, मधुमेह, रोमान्तिका, दुष्ट प्रतिश्याय (इन्फ्ल्युएन्जा), राजयक्ष्मा, चिरज कास आदि मे यह उपद्रव रूप मे हो जाता है।

लक्षण--रोगी को ज्वर होता और पर्शुकाओ के नीचे चुभन प्रतीत होती है। बारबार खाँसी उठती है। श्वास कठिनाई एव कृच्छ्रतापूर्वक आता है। मुख शोष होता तथा पिपासा लगती है। चेहरे पर किंचित् लाली होती है। नाडी कठिन और मृदु अर्थात् (मिन्शारी) होती है।

स्वास्थ्य-रक्षा—रोगी को सीने (छाती) पर चोट लगने तथा रोग के अन्यान्य हेतुओ से बचे रहने का आदेश करे और सदैव गभीर श्वास लेने रूप व्यायाम का अभ्यासी बनाये।

चिकित्सासूत्र—रोगी को शीत से बचाये रखे और किसी प्रकार की चेष्टा नही करने देवे। उसे बिल्कुल शय्या पर आराम से लेटाये रखे और उठने-बैठने की आज्ञा नही देवे। बिना आवश्यकता के बोलने एव दीर्घ श्वास लेने से मना कर देवें। आवास को गर्म एव खुश्क रखें। यदि आवश्यक हो तो उसे कोयलो से गर्म कर लेवे, परन्तु इस बात का ध्यान रखे कि धुआँ उत्पन्न न हो।

यदि वेदना (दर्द) तीव्र हो तो उसे कम करने के लिये राई का पलस्तर लगाये या पोस्ते की डोडी को पाव भर पानी मे पकाकर उसे टकोर करे। दर्द एव सूजन दूर करने के लिये विपरीत दिशा की बासलीक का सिरावेध बहुत गुणकारी है। विबध (कब्ज) हो तो उसे निवारण करे और हेतु हो तो उसे निवारण का उपाय करे।

चिकित्साक्रम—विकारी स्थल पर, प्रत्युत् विकारी पार्श्व के सीने के आधे भाग पर राल का पलस्तर या जिमाद उशक लगाये या एक चौडी-सी पट्टी

बँधवाये, जिससे उस ओर गति कम हो। तीव्र वेदना मे पोस्ते की दो डोडी और २ तोले गुल बाबूना के काढे से टकोर करे। कब्ज की व्यथा हो तो लऊक सेपिस्ता खियारशबरी १ तोला १२ तोले अर्क गावजवान मे उबालकर कवोष्ण (कुनकुना) पिलाये। यदि रोगी बलवान् हो और रक्त प्रकोप रोग का हेतु हो तो दोषविलोमकरणार्थ रोगारभ होने से तीन दिन के भीतर जिस ओर का फेफडा विकृत हो, उसके विपरीत ओर की बासलीक का सिरावेध कराये। उसके पश्चात् रुग्ण दिक् (पार्श्व) का सिरावेध कराना लाभकारी होता है। सिरावेधनोत्तर शीतजननार्थ (ठढाई के लिये) बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना और लिसोढा ९ दाना पानी मे पका-छानकर इसमे २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम कवोष्ण पिलायें, मर्दनार्थ कैरूती आर्द करस्ना १ तोला, तारपीन का तेल १ तोला दोनो को गरम करके मिला लेवे और दर्द के स्थान पर मर्दन करके ऊपर से गरम रूई बाँध देवें। यदि सिरावेध उचित न हो तो दोष-विलोमकरणार्थ (इमाला) सीगी लगवाना लाभकारी होता है।

यदि दोष सिरकी ओर स्थानान्तरित होकर मस्तिष्क की दशा को विकृत कर देवें तो सरसाम की भाँति सिरका २ तोला, गुलरोगन २ तोला और अर्क गुलाब आदि १० तोले मे वस्त्रखड भिगोकर सिर के ऊपर रखे।

यदि गाढा और लेसदार कफ निकलता हो तो निम्न योग देवे--गुल-बनफ्शा, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज प्रत्येक ७ माशा, छिली हुई मुलेठी, हसराज प्रत्येक ५ माशा, पानी मे काढा बनाकर २ तोला मधु मिलाकर पिलाये तथा १ तोला गुलरोगन मे ६। माशा सफेद मोम पिघलाकर लोबान और मस्तगी प्रत्येक ३ माशा का चूर्ण मिलाकर कवोष्ण मर्दन करने से लाभ होता है।

आराम हो जाने के पश्चात् ५ माशे खमीरा गावजवान जवाहरवाला मे २ चावल उत्तम साबरशृग भस्म लपेटकर या १ तोला मधु मे मिलाकर देने से भी उपकार होता है।

तीव्र ज्वर मे पीने के योगो मे ७ माशे खाकसी की योजना की जा सकती है।

रोगकाल मे प्यास के लिये पानी के स्थान मे समय-समय पर अर्क मकोय और अर्क गावजवान दो-दो चार-चार घूँट देते रहें। हर प्रकार के उत्तेजक एव स्वापजनन द्रव्यो से परहेज करायें।

वक्तव्य--प्रत्येक सूजन इन तीनो बातो से खाली नही होती। या तो वह बैठ जाती है, या पक जाती है या सूजन का स्थान कडा होकर रह जाता है। इन स्थानो की सूजन बैठने का लक्षण यह है कि दिनानुदिन लक्षणो मे कमी होती जाती है। जब सूजन पक जाती है, तब ज्वर एव वेदना शान्त हो जाती

है। किन्तु, सूजन का स्थान वोझिल होता है और जिस दिन वह फूटता है, उस दिन फिर शीत लगकर तीव्र ज्वर चढता है। सूजन के ठहरने या ठोस होने का लक्षण यह है कि प्राय उपसर्गों मे कमी हो जाती है, किन्तु सूखी खाँसी और श्वास-कष्ट वढ जाता है तथा सूजन का स्थान वोझिल हो जाता है। यदि सूजन पककर फूट जाय और आराम मालूम न हो, तो रोगी मरणासन्न होता है। फुफ्फुस शोथ (न्यूमोनिया) रोगी का पादशोथ शुभ और अतिसार अशुभ लक्षण है। जातज्जन्व अपने उपसर्गों एव परिणामों के विचार से यह अत्यन्त साघातिक रोग है। अतएव चिकित्सा के समय किसी चतुर एव योग्य चिकित्सक के परामर्शानुसार कार्य करे। क्योंकि, यदि भूल हो जाय, तो प्रथम तो इससे ही रोगी का वचना कठिन हो जाता है। यदि वच भी जाय, तो पीछे यक्ष्मा या उरक्षत आदि रोगो के होने की आशका होती है।

पथ्यापथ्य—रोगावस्था मे केवल बकरी या मुर्ग का शूरवा या मुद्ग यूष या यवमड मे ५ दाना उन्नाव, ९ दाने लिसोढा, ५ माशे छिली हुई मुलेठी और वादाम का तेल ६ माशा मिलाकर देवे। पर इस वात का ध्यान रखे कि आर्द्र आहार अत्यधिक न हो, क्योंकि इस प्रकार फेफडे के विकारी आवरण मे द्रवोद्रेचन का भय होता है। इसीलिये जल भी नही देना चाहिये। अधिक प्यास लगने पर कवोष्ण अर्क गावजवान दो-चार घूँट देना चाहिये। ज्वरादि दूर होने के पश्चात् यखनी का शूरवा-चपाती देवे। आहार लवणवर्जित देना चाहिये। यदि रोगकाल मे सूजन फूट जाय, तो उस समय मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) और यवमड देवे जिसमे व्रण शुद्ध हो जाय। इन उपर्युक्त आहारो के अतिरिक्त शेष सभी आहारो से परहेज कराना चाहिये। धूएँ और धूप से भी परहेज कराना चाहिये।

हृद्रोगाध्याय २

नाम—(अ०) अम्राजुल् कल्ब, (उ०) दिल की बीमारियाँ; (स०) हृद्रोग, हृदयविकार, (अं०) डिजीज आफ दी हार्ट (Disease of the Heart)।

१—खफ्कान

नाम—(अ०) खफ्कान, इख्तिलाजुल् कल्ब, (उ०) दिल का धडकना (फडकना); (स०) हृद्द्रव, हृदय द्रव, हृदयस्पदन, हृच्छीघ्रता, (अं०) पाल्पिटेशन (Palpitation), टैकीकार्डिया (Tachycardia)।

वक्तव्य---'खफ्कान' मे हृदय जोर-जोर से धडकता है अथवा शीघ्र-शीघ्र गति करता है अर्थात् उसकी गति तीव्र हो जाती है। जब यह गति इतनी तीव्र हो जाती है कि उसमे कोई प्रबन्ध शेष न रहे, तब उसे 'इख्तिलाजुल्कल्ब' कहते हैं। इसका एक भेद वह है, जिसमे हृदय की गति मे कुप्रबन्ध उत्पन्न हो जाता है और रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृदय सीने से बाहर निकला जाता है। इसे 'कज्फुल्कल्ब' (हृत्तालवैषम्य---Irregularity) कहते हैं।

भेद---हेतु एव लक्षणानुसार इस रोग के विविध भेद किये गये हैं। अस्तु, जो हृदय की विप्रकृति (Functional disorder---क्रियाविकार) से होता है, उसके ये दो उपभेद हैं---उष्ण और शीतल। उष्ण के पुन ये दो अवान्तर भेद होते हैं---अदोषज (साजिज) और दोषज (माद्दी)। दोषज मे पित्तज और रक्तज का अतर्भाव होता है। इसी प्रकार शीतल के पुन. निम्न दो अवातर भेद होते हैं---अदोषज और दोषज। दोषज मे कफज और सौदावी का अतर्भाव होता है। इसके अतिरिक्त इसके निम्न भेद भी होते हैं---हृदयदौर्बल्यजन्य, स्पर्शासहिष्णुताजन्य (हिस्सी) और आमाशयानुबधी।

हेतु---दोषजादोषज विप्रकृति, रक्ताल्पता या रक्त दुष्टि, हृदयदौर्बल्य एव स्पर्शासहिष्णुता, पुष्कल तमाकू-चाय-मद्यादि मादक एव उत्तेजक द्रव्य सेवन, हस्तमैथुन, अतिमैथुन, शुक्रमेह और शारीरिक एव मानसिक परिश्रम आदि द्वारा उत्पन्न हुआ वातनाडी दौर्बल्य, अजीर्ण, अर्श, गलगण्ड, आर्तवदोष और वात-रक्त आदि से तथा अत्यधिक दु ख-चिंता से भी यह रोग हो जाता है। स्थूल पुरुषो एव कोमल प्रकृति की ललनाये इस रोग से अधिक आक्रान्त होती हैं। स्त्रियो को अपतन्त्रक या मृगी, कम्पवात, उन्माद, मालीखोलिया आदि विकारो से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण---साधारण आकस्मिक घटनाओ, तीव्र वेग से चलने, सीढी पर चढने तथा उद्वेग एव क्रोध आदि मानसिक विकारो से हृदय जोर-जोर से धडकने लगता है और वह धडकन सीने की दीवाल मे प्रतीत होती है। रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका हृदय डूब रहा हो। इसके साथ कभी नेत्र के सामने अँधेरा भी आ जाता है। साँस फूलना, नाडी तीव्र हो जाती, मूत्र रक्त वर्ण और मल शुष्क होता है। निरतर कब्ज रहता है। वायु एव कफ जन्य हो तो अङ्गमर्द एव जम्भाई बहुत आती, मूत्र श्वेत एव गाढा होता, क्षुधा कम लगती और आलस्य बना रहता है। पुन यह रोग क्रमश उत्तरोत्तर बढता जाता है। सदैव प्रात काल या साधारण-साधारण बातो से हृदय धडकने लगता है। कभी-कभी इसके साथ हृदयस्थल पर पीडा भी होती है। रोग के तीव्र होने पर इसके साथ मूर्च्छा के दौरे पडने लगते हैं।

चिकित्सा सूत्र—रोगी को खुली वायु मे रखें। उत्तम, शीघ्रपाकी और पुष्टिकर आहार देवें। अधिक मानसिक या शारीरिक श्रम से वचायें। चिन्ता, दु ख, शोक और भय से सुरक्षित रखें। अजीर्ण और विन्ध नहीं होने देवे। समय-समय पर वातनाडी और हृदय को पुष्ट करने वाले पदार्थ सेवन कराते रहे। मादक द्रव्य, तमाकू, चाय, कहवा आदि तथा मैथुन और हस्तमैथुन से परहेज कराये।

जव रोगी आवेग पीडित हो तो प्रथम उसको सौमनस्यजनन एव वल्य औषधि-सेवन द्वारा दूर करें। आवेगनिवृत्त होने के पश्चात् मूल हेतु का पता लगाकर उसको दूर करें। अस्तु, यदि अदोषज विप्रकृति हो तो शमन और दोषज हो तो शोधन करें। यदि आमाशय के विकार से हो तो उसकी चिकित्सा करे। यदि किसी अन्य रोग से हो तो उसका निवारण करे।

चिकित्सा—आवेगकाल मे रोगी को आराम से लिटाये रखें और मन प्रसादकर एव वल्य ओषधियाँ, जैसे मुफर्रेह वारिद ५ माशा या खमीरा सदल ७ माशा या खमीरा मरवारीद ५ माशा ५ तोले अर्क वेदमुश्क और ५ तोले अर्क केवडा तथा २ तोले शर्वत गुडहल के साथ देवे। यदि इससे लाभ न हो, तो जवाहर मोहरा आधी से १ रत्ती या जहरमोहरा, वशलोचन, हरा यशव, छोटी इलायची का दाना, अकीक भस्म और मुक्ता १–१ रत्ती वारीक पीसकर ७ माशे खमीरा अबरेशम हकीम ईर्शदवाला या ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे मिलाकर खिलाये और ऊपर से मीठे अनार का रस, सतरा का रस और नाशपाती का रस प्रत्येक ५ तोला और शर्वत सदल २ तोला पिलाये। सफेद चदन १ तोला, कपूर ३ माशा और अर्क गुलाब आध पाव मे मिलाकर सुँघाएँ। चदन को गुलाव के अर्क मे घिसकर हृदयस्थल पर लेप करे।

जव आवेग निवृत्त हो जाय, तब रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसे दूर करें। अस्तु, अदोषज उष्ण विप्रकृति मे ३ माशा कुर्स काफूर २ तोले शर्वत अनार मे मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से १ तोला काले कुलफा के बीज का शीरा, अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला मे निकालकर २ तोला शर्वत नीलूफर की योजना करके पिलाये। रक्तज मे ९ माशा खमीरा सदल प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क गुलाव, अर्क वेदमुश्क और अर्क केवडा प्रत्येक ५ तोले मे १ तोला इसवगोल का लुआव, काहू और कासनी के बीज प्रत्येक ६ माशा का शीरा, ५ माशे सूखे धनिये का शीरा निकालकर २ तोले मीठे अनार का शर्वत मिलाकर पिलाये। पित्तज मे आलूबोखारा ११ दाने या इमली ४ तोले को १४ तोले अर्क गुलाब मे भिगोकर ऊपर से निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोले गुलकद या २ तोले शर्वत अनार मिलाकर ४ माशे बालगू के बीज का

प्रक्षेप देकर पिलाये या अर्क बेदमुश्क या अर्क गुलाब ८ तोला मे ५ दाने आलूबुखारे का शीरा, ३ माशे जरिश्क का शीरा और ५–५ माशे काहू के बीज तथा सूखे धनिया का शीरा निकालकर शर्बत अनार या शर्बत सदल २ तोले मिलाकर खिलाये। शीतल विप्रकृति मे प्रकृतिसाम्यानुवर्तन के लिये बादरजबूया ५ माशा, गावजबान और गुलगावजबान प्रत्येक ३ तोला, पानी मे उबालकर २ तोले गुलकद मिलाकर पिलाये। कफज मे बादरजबूया, बस्फाइज, अफ्तीमून प्रत्येक ६ माशा, अनीसू, मुलेठी, गावजबान प्रत्येक ५ माशा, मकोय, कड के बीज प्रत्येक ९ माशा, दरूनज अकरबी ४ माशा—समस्त द्रव्यो को रात्रि मे गरम पानी मे भिगोये। प्रात पका-छानकर शर्बत उस्तूखुद्दूस और गुलकद प्रत्येक २ तोले मिलाकर पिलाये। इस योग से सप्ताह या पक्ष भर दोषपाचन करके हब्ब सिब्र का सेवन कराके दोष का पाचन करें। शोधनोपरात प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये दरूनज अकरबी ५ माशे, जदवार खताई ४ रत्ती बारीक पीसकर अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला के साथ खिलाये। सौदावी मे उन्नाव ५ दाना, शाहतरा, बादरजबूया, खीरा और ककडी के बीज, गावजबान, मकोय, हसराज प्रत्येक ६ माशा, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) ११ दाना, अर्क गावजबान, अर्क शाहतरा प्रत्येक ८ तोला मे रात्रि भर भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोले गुल-कद मिलाकर पिलायें। इस प्रकार और दोषपाचन कर चुकने पर इसी योग मे गुलाब के फूल १॥ तोले, सनाय मक्की १ तोला, उस्तूखुद्दूस ६ माशे, अफ्तीमून १ तोला और अमलतास का गूदा ४ तोला योजित करके मिलाकर शोधन करे। यदि रक्ताल्पता और दौर्बल्य के कारण यह रोग हो तो दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ७ माशा, अर्क माउल्लहम ५ तोले, अर्क अबर ५ तोले के साथ देवे और पक्षियो का शूरबा पिलाये। यदि अमाशय दौर्बल्य (अग्नि-मान्द्य) एव वाष्प के कारण हो, जैसा प्राय हुआ करता है तो (१) आमले का मुरब्बा या हडका मुरब्बा १ नग धो-साफकर चॉदी के वर्क मे लपेट कर खिलाये और ऊपर से ३ माशे सूखा धनिया, ११ दाने किशमिश, सौंफ ५ माशे, गाजर का अर्क ६ तोले, अर्क गावजबान ६ तोले मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोले गुलकद मिलाकर प्रात सायकाल पिलायें। (२) सौंफ १ तोला, धनिया १ तोला, छोटी इलायची का दाना ६ माशा, मिश्री १ तोला समस्त द्रव्यो को पीसकर चूर्ण बना लेवे। इसमे से ३ माशे भोजनोत्तर दोनो समय सेवन करें। (३) रात्रि मे सोते समय १ तोला अतरीफल कश्नीजी सेवन करे।

वक्तव्य—इस रोग मे विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद तथा नदी एव बगीचो की सैर बहुत ही लाभकारी है और दुःख एव शोक बहुत ही हानि-कर है।

पथ्य—बकरी के मास का शूरवा, कुलफा, पालक, तुरई, कद्दू, अरहर और मूग की दाल, नाशपाती, अगूर, मालटा, सेव, सतरा, मीठा अगूर, ककडी, खीरा आदि। वायुजन्य हृत्स्पदन मे प्राय पक्षियो का शूरवा और अडो की जर्दी लाभकारी होती है।

अपथ्य—लाल मिर्च, गरम मसाला, लहसुन, प्याज, गोभी, आलू, अरवी, उडद की दाल, मसूर और चने की दाल, गुड, तेल, चाय, तमाकू आदि।

२—गशी (मूर्च्छा)

नाम—(अ०) गशी, गश्यान, इग्मा5, (फा०) वेहोशी, (उ०) गशी, (स० मूर्च्छा, सज्ञानाश, अचेतता, (अ०) सिकोपी (Fainting) फेंटिग (Syncope)।

वर्णन—इस रोग मे सहसा हृदय की गति बन्द हो जाती है, जिससे रोगी मूर्च्छित हो जाता है। यदि कारण वलवान् न हो तो मूर्च्छा मे कुछ कमी हो जाती है, वरन् रोगी कुछ काल तक साधारणतया एक ही दशा मे पडा रहता है। जब वह पुन चैतन्य नही हो सकता और मर जाता है तब उसे 'सक्तुल्कल्व' (हृद्भेद—Heart failure) कहते हैं।

भेद—यद्यपि हेत्वनुसार इसके अनेक भेद हो सकते हैं तथापि साधारणतया इसके तीन भेद किये जाते हैं—(१) हृदयजन्य, (२) दोषसचयजन्य (इम्तिलाई) और (३) अतिरक्तस्रावजन्य, शोधन जन्य (इस्तिफ्रागी)।

हेतु—प्राय इसका हेतु दौर्बल्य, रक्ताल्पता, ओजो क्षय और किसी कारण अतिरक्तस्राव हो जाना है। पर कभी-कभी सहसा परम आल्हादकारक या अत्यत दु ख एव शोक के समाचार सुनने से और कोमल प्राकृतिक भय (नाजुक मिजाजी खौफ) या किसी तीव्र आघात के लगने से चोट, क्षत एव दर्द की तीव्रता से भी मूर्च्छा की नौबत पहुँचती है।

लक्षण—आवेग के समय रोगी के हाथ-पॉव शीतल हो जाते हैं। श्वास कृच्छ्रतापूर्वक आता है। नाडी सगीर एव दुर्बल होती है। सिर घूमता है। नेत्र के सामने अंधेरा आ जाता है। शीतल स्वेद होकर शरीर तर-बतर हो जाता है और रोगी अचेत हो जाता है। पर कुछ कालोपरात एक शीतल श्वास भरकर रोगी होश मे आ जाता है। उस समय वमन होता है। यदि रोग का हेतु साधारण हो तो केवल जी मिचलाता है। चेहरा फीका पड जाता है। नाडी दुर्बल (मद) चलती है और केवल मस्तक पर जरा-सा स्वेद हो जाता है। कभी अकस्मात् मूर्च्छा होकर रोगी तुरन्त मर जाता है। यद्यपि मूर्च्छा के रोगी और सन्यास रोगी की दशा लगभग समान होती है तथापि

मूर्च्छा रोगी के बाल उखाडने से और हाथ-पॉव कसकर बॉधने से रोगी बात का उत्तर दे सकता है। इसके विपरीत सन्यास रोगी उत्तर नही दे सकता। मूर्च्छा रोगी का चेहरा पीला, नाडी शिथिल और श्वास अत्यत कमजोर और शरीर स्वेद से तर-बतर होता है और श्वास खर्राटे से नही आती।

चिकित्सा सूत्र—हृदयदौर्बल्य एव मूर्च्छा के लिये अनुकूल स्पर्शासहिष्णु व्यक्तियो को उद्वेग एव क्लम आदि से सुरक्षित रखे। आवेग के समय रोगी को सुखपूर्वक उत्तान शयन करा देवे और उसका सिर शेष शरीर की अपेक्षया नीचा रखे जिसमे रक्त सरलतापूर्वक मस्तिष्क की ओर भ्रमण कर सके। हाथ-पॉव कसकर बाधे देवें और गले के बटन और सीनाबन्द आदि खोल देवें। सिर, चेहरे और सीना पर शीतल जल के छीटे मारे। हाथ-पॉव का नीचे से ऊपर की ओर सवाहन (मालिश) करे। आवेग के पश्चात् मूल निदान का परिवर्जन करें।

चिकित्सा क्रम—इस्तिलाई गर्शी मे पादस्नान (पाशोया) कराये और सींगी लगवाये। सिर, चेहरे और सीने पर शीतल जल के छीटे मारे और अर्क गुलाब २ तोला, अर्क केवडा २ तोला और अर्क बेदमुश्क ३ तोला मे ३ माशे कपूर मिलाकर शीशी मे डालकर सुँघाये। पर यदि मूर्च्छा अतिशोधन के पश्चात् हुई हो तो कबाब और गरम रोटी की गन्ध सुँघाये। मासार्क (माउल्लहम) मे दवाउल्मिस्क घोलकर पिलाये। आमाशयिक द्वार के ऊपर गरम तेल का मर्दन करे या राई का प्रस्तर लगाये, यदि अपतन्त्रक या मस्तिष्कगत रक्तसचय के कारण मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो तो तीक्ष्ण सिरका सुघाये या चूना और नौसादर समभाग महीन पीसकर और पानी मिलाकर सुघाये। यदि तीव्र आवेग के कारण मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो, जैसा कि शूल (कुलज) आदि मे हुआ करता है, तो स्वापजनन द्रव्यो का उपयोग करे। यदि मूर्च्छा से पूर्व उत्क्लेश (मिचली) और मूर्च्छाकाल मे हिक्का (हिचकी) की व्यथा हो तो रोगी को तत्काल वमन करा देवें। इससे प्राय रोगी होश मे आ जाया करता है। यदि विषधर जतुओ के दश या किसी विष के भक्षण से मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो तो उनका उपयुक्त उपचार करें। हृदयजनित मूर्च्छा मे जहरमोहरा, वशलोचन, अनारदाना, सुमाक, जदवार, गुलाब का केसर, कहरुबाये शमई, हरा यशब प्रत्येक १ माशा—सबको महीन पीसकर ५ माशा खमीरा गावजवान जवाहरवाला या ५ माशा खमीरा मरवारीद मे पिलायें और अनार एव नाशपाती का रस प्रत्येक ९ तोला या ३ माशे गावजवान का लआब, ५ माशे सौंफ का शीरा, ९ दाने गुठली निकाले हुये मुनक्का का शीरा, अर्क गावजवान, अर्क केवडा, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ३ तोले मे निकालकर २ तोले शर्बत सेब मिलायें और

खमीरा खाकर ऊपर से पिलाये। यह प्राय सभी प्रकार की मूर्च्छा एव हृत्स्पदन मे लाभकारी है।

मूर्च्छा का आवेग (दौरा) निवृत्त हो जाने के उपरात हृत्स्पदन एव इख्तिलाजुल्कल्ब के अनुसार उपचार करे और मूल हेतु का पता लगाकर उसके निवारण का यत्न करे।

पथ्य—हृदय एव मस्तिष्क को वल देनेवाले आहार खिलाये। अस्तु, मुर्गी के वच्चे की यखनी और पक्षियो के मास खिलाये। दूध, मक्खन, मलाई, दही आदि देवे। फलो मे सेव, केला, सतरा, अगूर, नाशपाती, अमरूद आदि, वहुत ही गुणकारी होते हैं। आवश्यकतानुसार हरे शाक, जैसे पालक, कद्दू, टिडा, सोआ आदि खिलायें। खशका, खिचडी और मूँग की दाल भी दे सकते हैं।

अपथ्य—वादी और अम्ल पदार्थो से ओर विशेषत उष्ण आहार से सर्वथा परहेज कराये। ऐसी दशा मे वैगन, करेला, मसूर की दाल, मछली, अडे और आध्मानकारक आहार जेसे भिडी, उडद की दाल, मूली, गोभी आदि विल्कुल नही देवें। कठिन व्यायाम ओर धूप मे अत्यधिक भ्रमण करना भी उक्त अवस्था मे अहितकर सिद्ध होता है।

३—वज्उल्कल्ब

नाम—(अ०) वज्उल्कल्ब, (फा०, उ०) दर्दे दिल, (हि०) हृदय का दर्द; (सं०) हृच्छूल, हृत्पीडा, (अ०) अन्जाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris)।

वर्णन—कभी हृदयस्थल पर इतना तीव्र दर्द होता है कि रोगी सहन की सामर्थ्य नही रख सकता और दम वन्द होने के कारण वह आसन्न-मरण हो जाता है।

हेतु—कुपचन, उदराध्मान, मलावरोध, अति मद्यसेवन, दु ख, क्रोध एव शोकादि का अकस्मात् होना, अति व्यायाम, कतिपय हृदय के रोग, अति मैथुन, आमवात, वातरक्त या हृदय पर वसा की उत्पत्ति आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—यह रोग प्रथम सहसा आरभ हो जाता है। तदुपरात वेगपूर्वक आवेग के रूप मे होता है। प्रथम आवेग से यदि रोगी वच जाय, तो कुछ दिन वा कुछ मास के पश्चात् इसका दूसरा आवेग प्रथम की अपेक्षया अधिक तीव्र होता है। तीसरा आवेग (दौरा) दूसरे की अपेक्षया तीव्र एव शीघ्र होता है। आवेग से पूर्व रोगी को कुछ व्याकुलता (वेचैनी) होती है। हृदयस्थल पर गौरव एव वोझ मालूम होता है। पुन वहाँ तीव्र शूल प्रतीत होता है। कण्ठ

की तीव्रता से रोगी अत्यत दुर्बल हो जाता है। स्वेद होकर शरीर लथपथ हो जाता है। कभी साथ ही वमन भी हो जाता है। कठिन श्वासावरोध की दशा मे रोगी के मृत्यु की आशका होती हे। हृदय धडकता है। नेत्र के सामने अन्धेरा आ जाता है और मस्तक पर स्वेद हो जाता है। शरीर शीतल और नाडी अत्यत सूक्ष्म एव सगीर होती जाती है। किन्तु सज्ञा यथावत् बनी रहती है। आवेग की दशा २-३ मिनट या कभी-कभी घटे-दो घटे भी रहती है।

चिकित्सासूत्र--रोगोत्पत्ति के जो-जो हेतु बतलाये गये है उनमे से मूल हेतु का पता लगाये। पुन उसका उचित प्रतीकार करे। दर्द की दशा मे दर्द दूर करने का यत्न करे। दौरा (आवेग) होने की दशा मे इस प्रकार के उपाय करें जिससे पुन. दौरा न हो। अस्तु, दौरा की दशा मे स्वापजनन एव शामक औषधियो का बहिराभ्यतरिक उपयोग करे। रोगी को शुद्ध वायु मे शयन कराये। शरीर को निश्चेष्ट रखें। मन प्रसादकर औषधकल्प (मुफर्रेहात) जैसे--खमीरा गावजबान अवरी जवाहरवाला या विद्रुत मुक्ता (मरवारीद महलूल) दवाउल्मिस्क मे मिलाकर सेवन करायें। सुगन्धित द्रव्य सुँघाये। कभी-कभी बस्ति एव पादस्नान भी लाभकारी होता है। वेदनास्थल पर लवण, गेहूँ की भूसी, गुलबाबूना आदि की पोटली बनाकर सेक करे। गुलाव का इत्र मले। यदि विबध हो तो रेडी के तेल की बस्ति से उसका निवारण करे। दौरा न होने पर मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करे।

चिकित्साक्रम—दौरा प्रारभ होते ही रोगी को सुखपूर्वक शय्या पर लिटाये और तीक्ष्ण सिरका सुँघायें। दर्द के स्थान पर गुलाब के इत्र की मालिश करे और गुल बाबूना २ तोला और खतमी के फूल २ तोला कूटकर पोटली मे बाध लेवें और हृदय के ऊपर टकोर करें।

पोस्ते की ५ डोडी को पाव भर पानी मे उबालकर उसमे यह पोटली भिगोयें तथा इससे दर्द के स्थान पर सेक करे। थोडी देर टकोर करके उस स्थान पर जिमाद जाफरान जदीद लगा देवें। इन उपायो से प्राय दर्द कम हो जाता है।

दर्द मे कमी होने पर हेतु पर विचार करे। यदि आमाशय के विकार से हो तथा मिचली मालूम होती हो तो गरम पानी मे २ तोले सिकजबीन सादा मिलाकर पिलायें और वमन कराये। यदि तीव्र विबध (कब्ज) हो तो रेडी का तेल ४ तोला गरम पानी मे मिलाकर उसमे साबुन घोलकर बस्ति देवें या शर्बत वर्द मुकर्रर ४ तोले, शर्बत दीनार ४ तोले, अर्क गुलाब १० तोले मिलाकर पिलाये। यदि वायु की प्रगल्भता इसका हेतु हो तो प्रात जुवारिश कमूनी १ मात्रा खिला कर ऊपर से ५ माशे सौंफ का शीरा, ९ दाने गुठली निकाले हुये मुनक्का का

शीरा, ५ माशे कुसूस के बीज का शीरा, १२ तोले अर्क गुलाब मे निकालकर २ तोले शर्बत अगूर मिलाकर पिलायें. हृदय की बलवृद्धि के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ३ माशे प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजवान, अर्क केवडा, अर्क गुलाब प्रत्येक ४ तोले, रुब्ब बिही शीरी २ तोले मिलाकर सायकाल पिलाये। यदि हृदयरोग अथवा कोई अन्य हेतु इसका उत्पादक हो तो उसकी चिकित्सा करे। तात्पर्य यह कि प्रत्येक दशा मे हृदय को बलवृद्धि का ध्यान रखना आवश्यक है। अस्तु, इस प्रयोजन के लिये प्रति दिन दावउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या खमीरा गावजवान अवरी जवाहरवाला ५ माशा खिलाना लाभकारी है।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार खिलायें। बकरी का शूरबा, चपाती, साबूदाना, अडा, मुर्गी का बच्चा, तीतर और बटेर का मास सेवन करें।

अपथ्य—आध्मानकारक, गरिष्ठ और दीर्घपाकी आहार जैसे—आलू, अरवी, मछली, बैंगन, करेला, गुड, तेल, आम्ल पदार्थ आदि से परहेज करे।

४—जोफुल्कल्ब

नाम—(अ०) जोफुल्कल्ब, (उ०) दिल की कमजोरी, (स०) हृदय दौर्बल्य; (अ०) ब्रैडीकार्डिया (Bradycardia)।

वर्णन—इस रोग मे हृदय की गति बहुत मन्द हो जाती है जिससे नाडी की गति भी कम हो जाती है।

हेतु—साधारणत विभिन्न वातिक, मार्यादिक या चिरज रोगो, जैसे—हुम्मा मुह्रिका बलिग्य, अपस्मार, मालीखोलिया, रक्ताल्पता, मधुमेह, अपतन्त्रक, प्रसूत ज्वर, मूत्रविजमयता आदि मे हृदय दुर्बल हो जाता है। हृदय की धमनियो के रोग से भी हृदय दुर्बल हो जाता है। लगातार दुख एव चिन्ता का भी हृदय पर प्रभाव पडता है।

लक्षण—हृदय की गति मन्द हो जाती है। नाडी दुर्बल होती और उसकी चाल कम हो जाती है अर्थात् १ मिनट मे यह केवल ४०–५० बार गति करती है। तबीअत आलस्ययुक्त रहती है। काम करने को जी नही चाहता।

चिकित्सा सूत्र और चिकित्सा क्रम—शुद्ध एव खुली वायु मे रहना चाहिये और प्रतिदिन उपवनो की सैर करनी चाहिये।

हृदय की बलवृद्धि के लिये बल्य एव उत्तेजक औषधियो का उपयोग करना चाहिये तथा निदान परिवर्जन का यत्न करना चाहिये।

इस विषय मे अधोलिखित चिकित्सा क्रम उपादेय है--प्रात रेहाँ के बीज १ तोला रात्रि मे ६ तोले अर्क गुलाब मे भिगोकर आकाश के नीचे ओस मे रखें और प्रात इसमे २ तोले मिश्री मिलाकर पिलाये। अथवा अढहुल के सात फूलो की हरियाली (हरे भाग) दूर करके रात्रि मे १० तोले अर्क गुलाब मे भिगोकर ओस मे रखे। प्रात ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोले मिश्री मिलाकर पिलाये या प्रात-सायकाल अक्सीर कल्ब ३ माशा या जवाहरमोहरा आधी रत्ती ५ माशे खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला या ७ माशे खमीरा गावजबान अबरी जवाहरवाला या ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे मिलाकर अर्क अबर ४ तोले, अर्क गावजबान ८ तोले के साथ देवे। या प्रात-सायकाल वशलोचन, छोटी इलायची का दाना जहरमोहरा, हरायशब प्रत्येक १ माशा, मोती २ रत्ती, फादजहर हैवानी (जान्तवाश्मरी), सबको महीन पीसकर ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे मिलाकर देवे और ऊपर से ८ तोले अर्क गुलाब, ४ तोले अर्क अबर पिलाये।

पथ्य—लघु एव पुष्टिकर आहार देवे। मोटे गेहूँ की रोटी, शूरवा यखनी, अडे, तरकारियो मे कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक, फलो मे सतरा सेव, अगूर, नाशपाती, मक्खन, दूध आदि देवें।

अपथ्य—उडद और मसूर की दाल, मास और गोभी आदि गरिष्ठ पदार्थ से परहेज करे।

५--सुकूतुल्कल्ब

नाम--(अ०) सुकूतुल्कल्ब, सुकूतुल्कुव्वत, (उ०) दिल की हरकत का बन्द हो जाना, दफ्तअन् कुव्वत का घट जाना, (स०) हृद्भेद, हृदयावसाद, (अ०) हार्टफेल्योर (Heartfailure)।

वर्णन—इस रोग मे विना किसी आगन्तु (वाह्य) कारण के सहसा असाधारण रूप से वल घट जाता है। कभी-कभी कारण वलवान् होने से मूर्च्छा भी हो जाती है।

हेतु—कभी रक्त की प्रगल्भता या अन्य सान्द्र दोषो के आमाशय या श्वासोच्छ्वासमार्ग मे अवरुद्ध होकर वाधा उत्पन्न करने से और कभी दोष के असाधारणरूप से पतला होने या ज्वर आदि से विलीन होकर रूह (ओज) मे स्वभावत दौर्वल्य एव विलीनीभवन उत्पन्न हो जाने से यह रोग प्रगट हो जाया करता है।

लक्षण—पूर्वोक्त हेतुओ मे से किसी हेतु की विद्यमानता, जैसे अत्यन्त उष्ण या शीतल वायु का प्रभाव करना, या ज्वर आदि का पूर्व पाया जाना अथवा शरीर मे रक्त का प्रमाण अधिक होना आदि ।

चिकित्सा—यथाशक्ति व्यायाम करे । सिरावेध एव विरेचन आदि के द्वारा शोधन करके स्नान कराये । खैरी एव कुटके तेल को एक मे मिलाकर सीना (छाती) के ऊपर मर्दन करें । यदि आमाशयस्थ इम्तिलाऽ इसका हेतुभूत हो तो शुद्धि के उपरान्त वमन कराना अतीव गुणकारी होता हे । यदि साद्रदोष इसके हेतुभूत हो तो दोषपाचन औषधि सेवन कराके इयारजात से विरेचन देवे । अस्तु, उक्त प्रयोजन के लिये इयारज फैकरा, सफेद निसोथ, गारीकून, अफ्तीमून और नमक हिन्दी का योग करके विरेचन देने से साद्रदोष का शोधन हो जाता हे । यदि रक्त की प्रचुरता के कारण यह रोग (सुकूत कुव्वत) हो तो वासलीक का सिरावेध कराएँ और वलवृद्धि एव प्रकृतिसम्यानुवर्तन का यत्न करे । अस्तु, वलवृद्धि के लिये खमीरा मरवारीद सादा अर्क सेव या अर्क शीर आदि के साथ देवे । शेष मूर्च्छा (गशी) के प्रकरण मे वर्णित चिकित्सा क्रम काम मे लेवे ।

६—जगततुल्कल्व

नाम—(अ०) जगततुल्कल्व, (उ०) दिल का बैठा जाना, (अ०) स्टोक ऐडम्ज डिजीज (Stoke Adm's Disease) ।

वर्णन—इस रोग मे रोगी को ऐसा प्रतीत होता हैं मानो उसका हृदय बैठा (दवा) जाता हे ।

हेतु—इस रोग का हेतु साधारणतया सौदावी दोष है जो स्रोतो के द्वारा रक्त के साथ हृदय उद्रिक्त होता है और उसके प्रभाव से हृदय डूबता हुआ प्रतीत होता है । कभी आहारजनित वाष्प भी इसके हेतु होते हैं । यदि दोष अधिक उष्ण एव अधिक प्रमाण मे हो तो मूर्च्छा उत्पन्न करता है ।

लक्षण—इस रोग मे रोगी को ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसका हृदय डूबा जाता है । मुँह से पुष्कल लाला बहती है । नाडी अत्यत मदगति से चलती हे । कभी साधारण मूर्च्छा या भ्रम का दौरा (आवेग) हो जाता हे । प्राय वृद्धो को यह रोग हो जाता है ।

चिकित्सा—यह रोग दोषज होता है । अतएव प्रथम सौदापाचन ओषधि पिलाकर पुन विरेचन द्वारा उसका शोधन करें । शोधनार्थ इयारजात वहुत गुणकारी सिद्ध होते हें । हृदय की बलवृद्धि और यकृत् का प्रकृति साम्यानुवर्तन

करें। बलवृद्धि के लिए दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली, तिर्याक कबीर, याकूती मुफर्रेह बहुत ही गुणकारी होती है। ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा प्रथम खिलाये और ऊपर से ५ माशे सोफ का शीरा, २ माशे कुसूस के बीज का शीरा, ३ माशे अनीसून का शीरा, ३-६ तोले अर्क बादियान और अर्क शाहतरा मे निकालकर २ तोले शर्बत अगूर मिलाकर पिलाये। फिरङ्ग हो तो उसकी चिकित्सा करे।

७---इम्तिलाउल् कल्ब

नाम—(अ०) इम्तिलाऽ गिलाफेल्कल्ब, (उ०) गिलाफे दिल मे खून भर जाना, (स०) हृदयावरणगत रक्तसचय, (अ०) हाइमोपेरिकार्डिअम् (Hymopericardium)।

हेतु—सिर की ओर से त्रुटित द्रव या फुफ्फुस एव हृदय के आहार से बचा हुआ निरर्थक सान्द्र रक्त का हृदयावरण मे भर जाना इसके हेतु होते हैं।

लक्षण—श्वासकृच्छ्ता, हृदयस्थल पर गौरव एव बोझ की प्रतीति, नाक के नथुनो का फैल जाना इसके सामान्य लक्षण है। रक्त सचय मे नाडी द्रुतगामिनी, कठिन एव प्रकृतकाल से कम ठहरनेवाली (मुतवातिर) और कफसचय मे मन्दगामिनी एव विषम आघातयुक्त (मुख्तलिफ) होती है। रक्त और कफ प्रकोपक अन्य लक्षण इसके नैदानिक लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रक्तसचय मे बासलीक के सिरावेध के पश्चात् अवशिष्ट दोष के निर्हरण के लिये फलरस तथा अन्य शीतल ओषधियो से विरेचन करावे। शमन एव ठढाई के लिये पानी आदि मे कुलफा के बीज का शीरा निकाल कर सिकजबीन बजूरी एव शर्बत उन्नाब मिला कर देते हैं। दोषविलयन के लिये जौ का आटा, खतमी, लाल-सफेद चन्दन, हरे धनिये इन्हें कासनी के रस मे पीसकर सीना पर लेप करे। कफज सचय मे बोल, एलुआ, रूमीमस्तगी और लौंग को पानी मे पीसकर सीना (वक्ष) पर लेप करें। विरेचन एव दोष शोधन के बाद रूमीमस्तगी और कुदुर को मुह मे चबाकर मुखगत लाला को थूकने से अवशिष्ट द्रव शुष्क हो जाते हैं।

ससृष्ट द्रव्योपचार—कफज मे मत्बुख अफ्तीमून या हब्ब इयारज आदि से प्रकृति, वय और बलादि का विचार करके विरेचन द्वारा शोधन करें तथा मफ़्रह-दीतूस एव दवाउल्मिस्क प्रभृति जैसी हृदय बलदायिनी औषधियाँ सेवन करायें।

८—इस्तिस्काऽ गिलाफेल् क़ल्ब

नाम—(अ०) इस्तिस्काऽ गिलाफेल्क़ल्ब, इह्तिवाउर्रतूवत अललक़ल्ब, सयाहतुल्क़ल्ब, (उ०) गिलाफुल् क़ल्ब मे पानी भर जाना, दिल का पानी मे तैरना, दिल का डूबना ; (स०) जलहृदयावरण, (अ०) हाइड्रोपेरिकार्डियम् (Hydropericardium) ।

वर्णन—इस रोग मे हृदयावरण के भीतर पानी भर जाता है और रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका हृदय पानी मे तैरता हो ।

हेतु—हृदयावरण के उभयस्तरो के बीच द्रव सचित होने से यह रोग उत्पन्न हो जाता हे । (बहुधा यह द्रव आमाशयिक द्वार का होता है जो अनुबन्ध के कारण इस रोग का हेतु होता है ।) यह रोग साधारणत जलोदर के उत्पत्तिकाल मे विशेषकर जलोरस या जलोदर मे, पर कभी-कभी अन्य हेतुओ से भी उत्पन्न हो जाता है ।

लक्षण—प्रधान हेतु के विशिष्ट लक्षणो के अतिरिक्त वक्ष मे बोझ और दबाव, कृच्छ्रश्वास, रक्तसचय, अत्यन्त व्याकुलता, या विशुद्ध मूर्च्छा के दौरो, शोफ, यकृद्वृद्धि और मूत्रशोष (मूत्राल्पता) के विकार भी न्यूनाधिक पाये जाते है । कभी-कभी रोगी ऐसा अनुभव करता हे मानो उसका हृदय पानी मे तैर रहा हो । नाडी कोमल एव दुर्बल होती है ।

चिकित्सा—द्रवशोषण के लिये निम्नलिखित लेप लगायें—बालछड,केसर, गुलाब का फूल और मस्तगी को बादरजबूया के रस मे पीसकर हृदयस्थल पर लेप करे । आमाशय तथा आमाशयिक द्वार की शुद्धि के लिये वमन कराये । दोषशोधन के लिये प्रथम कफपाचन औषधि देकर, पुन कफविरेचन एव हब्ब इयारज आदि से शोधन करें । शोधनोपरान्त हृदय को बलवान् एव द्रव को कम करने के अभिप्राय से दवाउल्मिस्क, हलवा तल्ख़ और अन्यान्य मुफर्रह, माजून और जुवारिश आदि कल्पो का उपयोग करते रहे ।

९—इल्लते दुखानिय्या

नाम—(अ०) इल्लते दुखानिय्य , (उ०) दिल से धूआँ उठना , (अ०) न्यूमोपेरिकार्डियम् (Pneumopericardium) ।

वर्णन—इस रोग मे हृदय से धूआँ-सा उठता हुआ प्रतीत होता है ।

हेतु—शरीर मे दोषो के विदग्ध होने से धूआँ उठा करता हे जिससे रोगी हृदय से धूआँ उठता हुआ ख्याल करता है ।

लक्षण—हाथ-पाँव और प्लीहा आदि के स्थान पर सूजन मालूम होती हे तथा अनिद्रा एव हृदय मे धडकन पायी जाती है । दोषो के विदग्ध होने से

जब धूआँ उठकर हृदय को अतीव पीडित करता है तब मूर्च्छा की बारी होती है। जब धूआँ मस्तिष्क मे पहुँचकर मानसिक ओज (रूह दिमागी) को मलिन कर देता है तब अन्यथाज्ञान (वसवास) एव चिन्ता आदि के लक्षण प्रगट होने लगते है।

चिकित्सा—बासलीक या साफिन का सिरावेध कर के शरीर अवशिष्ट सौदावी दोष के निर्हरण के लिये मत्बूख अफ्तीमून और माउज्जुब्न सेवन कराये। वलवृद्धि एव प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये अनोशदारू लूलुवी उलवीखानी ५ माशा ६ तोले अर्क शीर के साथ सेवन कराये।

१०—तकश्शुरुल्कल्ब

नाम—(अ०) तकश्शुरुल्कल्ब, (फा०) खराशे दिल, (उ०) दिल का छिलना, दिल की खराश, (अ०) अँन्जाइनाकार्डिस (Anginacardis), अन्जाइना डिस्पेप्टिका (Angina Dyspeptica) ।

वर्णन—इस रोग मे रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके हृदय की कोई वस्तु छीलती है।

हेतु—दीर्घकाल तक पित्त के दस्त आते रहना अथवा मस्तिष्क से तीक्ष्ण-उष्ण मलो का आमाशय पर (किसी-किसी के मत से हृदय पर) गिरना इसके हेतु है।

लक्षण—कष्ट के समय रोगी के चेहरा और मस्तिष्क पर शिकन पड जाती है। कभी-कभी स्वेद भी आ जाता है। कष्ट की तीव्रता से कभी थोडी देर के लिये रोगी अचेत भी हो जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि पैत्तिक दोष रोग का हेतुभूत हो तो विधिवत् पित्तपाचन औषधि देकर पित्तविरेचन औषधि से दोप का शोधन करे। वलवर्धन एव प्रकृतिसाम्यानुवर्तन के लिये बल्य औषधियाँ सेवन करे। यदि मस्तिष्कगत द्रव एव प्रसेक इसके हेतुभूत हो तो उष्ण प्रसेक का शोधन करे। शोधनोपरान्त प्रसेकीय हृच्छूल (तकश्शुरुल्कल्व) मे निम्नलिखित योग सेवन कराये—वंशलोचन और हब्बुल आस ३–३ माशे पीसकर २ तोले शर्वत खशखाश मे मिलाकर चटायें अथवा यह योग देवे—सुमाक ३ माशा, कतीरा, गुलाव का जीरा प्रत्येक १ माशा पीसकर २ तोले शर्वत खशखाश मे मिलाकर ५ तोले अर्क वहार नारंग के साथ सेवन करायें।

संसृष्ट द्रव्योपचार—बलवर्धन और प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये पैत्तिक दोपशोधनोपरान्त मुफर्रह वारिद या अनोशदारूए लूलुवी उलवी खानी अर्क

सदल एव शर्बत खशखाश के साथ सेवन करायें। प्रसेकीय मे हब्ब इयारज और हब्ब सिब्र आदि से शोधन करके दोष को रोकने के लिये शर्बत खशखाश का उपयोग करे।

११--सूए तनफ्फुस क़ल्ब

नाम—(अ०) सूए तनफ्फुस कल्ब, सिग्रुल् कल्ब, (उ०) खराबी तनफ्फुस दिली, लागरी दिल; (स०) हार्दिक आश्वासता, हृदयक्षय; (अ०) कार्डिअक एप्नीया (Cardiac Apnoea), ऐट्रोफी ऑफ दी हार्ट (Atrophy of the Heart)।

वर्णन—इस रोग मे विना किसी प्रत्यक्ष कारण के तथा पाचन शक्ति ठीक होने पर भी रोगी के सामान्य शरीर एव हृदय मे कृशता, दौर्बल्य एव अगघात उत्तरोत्तर वढता जाता है। बलक्षय के कारण नाडी मे नाना प्रकार की भिन्नताएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

चिकित्सा—प्रगल्भ गुण और वर्तमान उपद्रव को ध्यान मे रखकर सीने पर लेप लगायें। यदि प्रगल्भ दोष का निदान न हो सके तो सम्यक् दोषपाचन और विरेचन से विपत्तिकारक दोष का शोधन करे। पथ्यापथ्य का उचित प्रवन्ध करें।

१२---इन्किताअ गिजाएल कल्ब

नाम—(अ०) इन्किताअ गिजाएल्कल्ब, (उ०) दिल की गिजा का वन्द हो जाना, (स०) हृदयापुष्टि, (अ०) कॉरोनरी डिजीज (Coronary Disease)।

वक्तव्य—इस विलक्षण रोग का उल्लेख हकीम इब्नसीना ने किया है। इसमे हृदय को आहार पहुँचना वन्द हो जाता।

हेतु---वृक्कशोथ या वृक्ककाठिन्य के कारण हृदय की ओर आहार ले जाने-वाले स्रोतो पर दबाव पडने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—हृदय को प्रतिनियत आहार के अभाव से उसमे उष्णता प्रगल्भ होकर यक्ष्मा (दिक) जैसा ज्वर चढा रहता है जिसे चिकित्सक शोथज्वर अनुमान किया करता है। परन्तु इसका हेतु हृदय मे आहार प्राप्त न होना ही है। हृदय की असाधारण उष्णता से शरीर मे क्षय आरभ होकर दौर्बल्य वढता जाता है। यह रोग प्राय साघातिक होता है।

चिकित्सा--मूल हेतु अर्थात् वृक्कशोथ की चिकित्सा करे। रोगकाल मे हृदय को पोषणीय शक्ति पहुँचाने के लिये गेहूँ की रोटी और जौ का सत्तू, सेव के पानी मे पीसकर सीना पर लेप करें।

स्तनरोगाध्याय ३

नाम--(अ०) अम्राजुस्सदी, (फा०) अमराजे पिस्तान, (उ०) पिस्तान (छाती) की बीमारियाँ, (स०) स्तनरोग, (अ०) डिजीजेज आफ दी ब्रेस्ट (Diseases of the Breast)।

वक्तव्य--स्तनरोगो मे प्राय ऐसे भी रोग है जिनका सम्वन्ध शस्त्रक्रिया से है। परन्तु, मैने लगभग उन सबका यहाँ सक्षिप्त विवरण कर दिया है।

१--किल्लतुल्लब्न

नाम--(अ०) किल्लतुल्लब्न, (उ०) दूध की कमी; (स०) अल्प-क्षीरता, स्तन्याल्पता, (अ०) गॅलक्टोस्केसिस (Galactos-Kesis)।

हेतु--इसके निम्न तीन हेतु होते है--(१) रक्ताल्पता, (२) रक्ताधिक्य और (३) रक्तविकार।

लक्षण--रक्ताल्पता से जव क्षीराल्पता रोग हो जाता है तव स्तन्यपान करानेवाली (स्तन्यधात्री) के शरीर का वर्ण पीला हो जाता है तथा कार्श्य एव दौर्वल्य पाया जाता है। यदि रक्ताधिक्य के कारण अल्पक्षीरता हो तो शरीर मे रक्ताधिक्य स्पष्टतया लक्षित होता है। यदि रक्त दोष इसका कारण हो तो दूध के वर्ण एव भौतिक स्थिति से उसको जाना जा सकता है। अस्तु, यदि दूध पतला और उसका स्वाद एव गन्ध तीक्ष्ण और वर्ण पीलाई लिये हो तो रक्त मे पित्त का सयोग इसका कारण हुआ करता है। यदि दूध मे अम्लता पाई जाय और इसका वर्ण अधिक सफेद हो तो रक्त मे अम्ल श्लेष्मा का सयोग अनुमान करें। यदि दूध अधिक सान्द्र, अल्पप्रमाण और वर्ण मलिन हो तो रक्त मे सौदा के मिश्रण का परिणाम समझें।

चिकित्सा--(१) यदि रक्ताल्पता इसका कारण हो तो रक्तवर्द्धक औषध और आहार सेवन करायें। स्तन्यजनन के लिये निम्न योग लाभकारी है।

योग--तोदरी १ तोला गाय के पाव भर दूध मे २ तोला मिश्री मिलाकर सेवन करायें। (२) यदि रक्तविकार के कारण दूध मे अल्पता हुई हो तो दोषानुसार प्रकुपित दोष का शोधन करके क्षीरजनक औषधियाँ सेवन करायें।

(३) यदि रक्ताधिक्य स्तन्याल्पता का हेतु हो तो सिरावेध एव शृङ्ग द्वारा रक्तमोक्षण करने से लाभ होता है। स्तन्यजनन के लिए निम्न योग लाभकारी एव कृतप्रयोग है।

योग--सतावर, मिश्री समभाग लेकर चूर्ण बना ५ माशे सौंफ के शीरा से सेवन करे अथवा यह योग देवे--सौंफ, मिश्री बराबर-बराबर लेकर पीस कर इसमे से प्रतिदिन ५ माशा सेवन करे।

२---कसरतुल्लब्न

नाम--(अ०) कसरतुल्लब्न, (उ०) दूध की जयादती, (स०) स्तन्याधिक्य, (अं०) गॅलक्टोरिया (Galactorrhoea)।

हेतु--रुद्धार्तव या प्रसूता को दौर्बल्य वा किसी रोग से पीडित होने के कारण शिशु का स्तन्यपान न कराने देना तथा शरीर मे रक्त का आधिक्य आदि इसके हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण--स्तनो मे काठिन्य, तनाव एव वेदना आदि होती है।

टिप्पणी--कभी-कभी पुरुषो मे भी यौवनकाल आसन्न होने पर स्तनो मे दूध आकर वेदना का कारण हुआ करता है।

चिकित्सा--अल्पस्तन्य उत्पन्न करनेवाले तथा रूक्ष औषध एव आहार सेवन कराये। रक्ताधिक्य की दशा मे सिरावेध आदि कराये। रुद्धार्तव मे आर्तवजननद्रव्य आदि तथा कारणानुरूप अन्यान्य उपयुक्त उपाय काम मे लावे। मसूर या जीरा को सिरका से पीसकर स्तन पर लेप करने से दूध कम हो जाता है।

अथवा यह लेप लगाये जो परीक्षित है--लाख, मुरदासग प्रत्येक ६ माशे दोनो को पीसकर २ तोला गुलरोगन मिलाकर लेप करें और पीने के लिये यह योग देवे--सौंफ, खरबूजा के बीज, गोखरू, खीरा-ककडी के बीज, काकनज के बीज प्रत्येक ६ माशा सबको पानी मे पीस कर छान लेवे और ३ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलाये।

३---वरमुस्सदी, हिक्कतुस्सदी

नाम--(अ०) वरमुस्सदी, (उ०) पिस्तान का वरम, (स०) स्तनकोप, स्तनाग्रप्रकोप, (अं०) इन्फ्लामेशन ऑफ मैमा (Inflammation of Mamma), मॅस्टायटिस (Mastitis)।

(अ०) हिक्कतुस्सदी, (उ०) पिस्तान की खारिश, (स०) स्तनकण्डू, स्तनशोथ, (अं०) प्रूराइटिस आफ मैमा (Pruritis Mamma)।

हेतु—स्तन्यपान करानेवाली स्त्री को अपने स्तन या स्तनाग्र मे कभी-कभी मीठी-मीठी खुजली प्रतीत हुआ करती है जो प्राय थोडी देर पश्चात् स्वयमेव जाती रहती है। पर कभी-कभी यह दशा दीर्घकाल तक स्थिर रहती है या शीघ्र-शीघ्र होकर परेशानी का कारण होती है। कभी-कभी स्तन्यपान काल मे स्तन की रचना मे तनिक-सी असावधानी से शोथ हो जाता है। कभी यौवन के आरम्भ मे और कभी विवाह से पूर्व भी रक्तगत तीक्ष्णता के कारण या किसी आकस्मिक अभिघात से या किसी तीक्ष्ण दोष की अधिकता से भी शोथ हो जाता है। कभी आमाशय, यकृत् और पाचन—इनके दोष से भी स्तनकण्डू उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—रुग्ण स्तन या स्तनाग्र मे मन्द-मन्द खुजली होती है जो थोडी देर मे शान्त हो जाती है और पुन होने लगती है। जब स्तन शोथयुक्त हो जाता है तब शोथ के स्थान पर लालिमा, तीव्रता, चमक और असीम दाह होता है। कठिन टीसे उठती है, दर्द होने लगता है और तीव्र ज्वर हो जाता है। यदि स्तन्य पिलाने का काल हो तो वेदना की लहरियाँ कक्ष, स्कध और बाहु तक पहुँचती है। यदि रक्तविकार से हो तो उसके लक्षण पाये जाते है। पित्त के प्रकोप से हो तो उसके लक्षण विद्यमान होगे।

चिकित्सा—खुजली दूर करने के लिये कुनकुने गरम पानी से साबुन लगाकर स्तन धोकर स्वच्छ करें और यह चूर्ण सबेरे-शाम खिलायें—सूखा पुदीना, सौफ, मस्तगी, छोटी इलायची दाना, सूखा धनिया, सूखा मकोय, सफेद जीरा, काली मिर्च, काला नमक, भुना सुहागा प्रत्येक ६ माशे लेकर सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें और सबेरे-शाम ३–३ माशा ताजा पानी से फँकायें। शोथ की दशा मे तीक्ष्णता निवारण के लिये ३ माशे बिहीदाने का लुआब ३–३ माशे कुल्फा और काहू के बीज का शीरा, ५ दाना उन्नाब का शीरा, ५ दाना आलू-बुखारा का शीरा, अर्क शाहतरा १० तोला मे लुआब और शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर सबेरे-शाम पिलाये। शोथ के आरम्भ मे हरी कासनी के पत्र २ तोला, हरे मकोय के पत्र २ तोला कूटकर गुलरोगन और शुद्ध सिरका ६–६ माशा योजित करके शोथस्थल पर लेप करें। शोथ के वृद्धिकाल मे आधा सेर उष्ण जल मे २० सेर सिरका मिलाकर बकरी की वस्ति मे भरकर इससे शोथ के स्थान पर सेक करें। अथवा सिकजबीन २ तोला और गोघृत १ तोला मे बाकला के बीज का मग्ज पीसकर मिलायें और कुनकुना गरम करके लेप करें।

चरम वृद्धि काल मे बाकला के बीजो का मग्ज, खतमी के बीज, मेथी, छडा हुआ जौ और गेहूँ की सूखी रोटी प्रत्येक ६ माशे, केसर ३ माशा—सब को महीन पीसकर तीन अडे की जर्दी मे मिला कर थोडा पानी मिला कर कुनकुना

लेप करें। यदि रक्तविकार के कारण हो तो उसका उचित उपचार करे।

कफज शोथ मे कफपाचन औषधि पिलाकर विरेचन देवें और हरा बाबूना, हरा सोआ के पत्र, हरे मकोय के पत्र और हरे धनिये के पत्र प्रत्येक ६ माशा महीन पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर कुनकुना गरम करके लेप करें।

सौदावी शोथ मे सौंफ ५ माशा, उन्नाव ५ दाना, अर्क गावजवान ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें।

जब व्रणशोथ पाक को प्राप्त होने लगता है तब शोथ के स्थान मे रक्तिमा, उष्णता और वेदना की टीस अधिक हो जाती है और ज्वर भी तीव्र हो जाता है। जब पाक प्रारम्भ हो जाय और पूय पड जाय तब शोथविलयन ओषधियो से लाभ नहीं होता। उक्त अवस्था मे अलसी की पुल्टिस (उपनाह) बाँधनी चाहिये जिससे शोथ पककर विदीर्ण हो जाय और पूय निर्हरण हो जाय।

जब शोथ के भीतर पूय पड जाय और वह तैयार हो जाय तब उसके स्वय विदीर्ण होने की बाट नही देखनी चाहिये। अपितु, किसी स्थानीय कुशल जर्राह (शल्यहर्ता) या डाक्टर के परामर्श से व्रण को भेदन कर शोथस्थल को शुद्ध कर देना चाहिये। पूय निर्हरण के पश्चात् व्रण का उचित उपचार करना चाहिये।

अपथ्य—उपद्रवो के अनुसार आवश्यक परहेज करें।

पथ्य—प्रारम्भ मे शीघ्रपाकी लघु आहार भूख से थोडी कम मात्रा मे देवे। आरोग्य होने पर धीरे-धीरे सामान्य आहार शूरबा, फुलका, मूँग की नरम खिचडी, दूध, खशका, कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक आदि शाक देवें।

४—अल्वर्मुस्सलिब बस्सल्अत फिस्सदी

नाम—(अ०) अल्वर्मुस्सलिब बस्सल्अत फिस्सदी, (उ०) पिस्तान का सख्त वर्म या रसौली, (स०) स्तनकठिनशोथ या स्तनार्बुद, (अ०) ट्यूमर्ज ऑफ दी ब्रेस्ट (Tumours of the Breast)

हेतु—इस प्रकार के शोथ साधारणतया श्लेष्मा और सौदा या उभय के सयोग द्वारा उत्पन्न होते हैं। पर कभी उष्ण (रक्तज और पित्तज) शोथ मे अधिक शीतसग्राही ओषधियो के उपयोग से भी कठिन शोथ (स्तनार्बुद) उत्पन्न हो जाते हैं।

लक्षण—कफज शोथ शरीर के वर्ण का होता है। स्पर्श करने से किसी प्रकार कोमल प्रतीत होता है। परन्तु सौदावीशोथ का वर्ण कृष्णाभ होता है और स्पर्श करने से कठिन प्रतीत होता है। ससर्गज होने पर उभय के लक्षण व्यक्त होते हैं।

चिकित्सा—प्रवल दोष के अनुसार प्रथम पाचनौषध देकर विरेचन द्वारा दोष का शोधन करे। यदि सिरावेध अपेक्षित हो तो सिरावेध किया जाय। सिरावेधोपरान्त अवशिष्ट दोष के शमनार्थ निम्न योग पीने के लिये देवे—सूखा मकोय, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ४ माशा, पित्तपापडा ६ माशा—सबको जल मे उवाल छानकर १॥ तोला मिलाकर पिलाये।

शोथ मृदु एव विलीन करने के लिये प्रथम वत्तख के एक अडे की जर्दी २ तोला रोगन बनफ्शा मे मिलाकर स्तन के ऊपर लेप करे। तदुपरान्त रोगन बादाम २ तोला या रोगन जैतून २ तोला मे पीला मोम ६ माशा मिलाकर मर्दन करे। या वाकला का आटा और इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) १॥ तोला को ५ तोले तिल के तेल मे मिलाकर लगाये। या मरहम दाखिलयून का उपयोग करे।

अर्बुदविलयनार्थ शफ्तालू (आडू) और सुदाव की हरी पत्ती महीन पीस कर स्तन पर लेप करने से लाभ होता है। सौदा के प्रकोप मे सिरावेध द्वारा दोष का शोधन करने से उपकार होता है।

५—दूबैलतुस्सदी

नाम—(अ०) दुबैलए सदी (दुबैलतुस्सदी), (उ०) छाती का फोडा, थनैला, , (स०) स्तनविद्रधि, (अ०) मैमरी ॲब्सेस (Mammary abscess)।

वर्णन—स्तन मे दोष सचित होकर पूय पड जाता है। साधारणतया उष्ण शोथ (रक्तज और पित्तज) आदि इसका हेतु हुआ करता है।

चिकित्सा—दोषपाचनार्थ रेहाँ के वीज ५ तोला गाय के दूध मे पकाकर बाँधे यदि अत्यधिक पाचन या व्रणविदारण की आवश्यकता हो, तो निम्न योग का उपयोग करें।

प्रलेप योग—अलसी के वीज, तिल, सोसन की जड, सिलारस, वकरी की लेंडी, कवूतर की वीट, नतरान ? (सभवत कतरान या नतरून) और राल समस्त द्रव समभाग लेकर महीन पीसकर तिल के तेल, एव खैरी के तेल मे मिलाकर स्तन के ऊपर लेप करें। यदि इस उपाय से व्रणशोथ विदीर्ण न हो तो उसका भेदन करें और दोष निर्हण के उपरान्त व्रणरोपण मलहर का उपयोग करायें।

६--रूकुरुह व आकिलतुस्सदी

(उ०) नाम—(अ०) क़ुरूह व आकिलतुस्सदी, (उ०) पिस्तान के पीपदार जख्म, (स०) स्तनगत सपूयव्रण, (अं०) स्लफिग अल्सर ऑफ दी ब्रेस्ट (Sloughing ulcer of the Breast)।

वर्णन—जब स्तन शोथ मे पूय पड कर वह व्रणित हो जाता है अर्थात् व्रण विदीर्ण हो जाता है तब ऐसा व्रण (घाव) हो जाता है। इसमे स्तन की धातुएँ गलती चली जाती है। इसीलिये इसे आकिला कहा जाता है।

चिकित्सा—अन्यान्य अगो जैसे—मुख, जिह्वा आदि के व्रणो मे जो उपक्रम किया जाता है, इसमे भी उन्ही उपायो का अवलम्बन करे। तथा जलाया हुआ सीसा (सीसा मोहरिक) का अवचूर्णन विशेष रूप से गुणकारी है। निम्नलिखित मरहम भी व्रणरोपण के लिये उपकारी है।

मलहर नीम—नीम के पत्तो की राख (नीम के पत्तो को लोहे के पात्र जैसे कडाही या जलते हुए तवे पर डालकर इतना जलाये कि वह काले हो जायँ) २॥ तोला को ५ तोला सरसो के तेल (अग्नि पर खूब उबालकर लाल करके) मे मिलाकर अग्नि से नीचे उतार लेवे और नीम के डडे से आध घटे तक घोटते रहे। इसके बाद शीतल करके सुरक्षित रखें। आवश्यकता होने पर इसे घाव के ऊपर छिडककर ऊपर से नीम की सूखी राख छिडक दिया करे।

७--अजमुस्सदी

नाम—(अ०) अजमुस्सदी, (उ०) पिस्तान (छातियो) का बडा हो जाना, (स०) स्तनवृद्धि, (अं०) हाइपरट्रॉफी ऑफ दी ब्रेस्ट (मैमा) (Hypertrophy of the Breast (Mamma))।

जब स्तन मे आक्लेद या शैथिल्य जनक उष्णता उत्पन्न हो जाती है, तब वह विवर्धित हो जाता है तथा ढीला होकर लटक जाता है। कभी इतना बढ जाता है कि उदर तक लटक आता है।

चिकित्सा—स्तन को कठोर और सकुचित करनेवाली शीतल, सग्राही एव रूक्ष औषधियो का उपयोग कराये। अस्तु, निम्नलिखित लेपो के उपयोग से कुच कठोर हो जाता है और वह सकुचित हो जाता है।

प्रलेप योग—खडिया मिट्टी, माजू, सफेदा और अजवायन खुरासानी के बीज समभाग लेकर सिरका मे पीसकर मलमल के टुकडे पर लगाकर तीन दिन तक स्तन के ऊपर लगायें।

अन्य प्रलेप योग—फिटकिरी १ तोला को ६ तोला जल मे घोलकर २ तोला खट्टे अनार का छिलका महीन पीसकर मिलावे और स्तन के ऊपर लेप करे। परम परीक्षित योग है।

८—इह्तिवासुल्लब्न व तजब्बुनुल्लब्न

नाम—(अ०) इह्तिवासुल्लब्न, (उ०) पिस्तान मे दूध जमा होकर रुक जाना, (स०) स्तन्यस्तम्भ, क्षीरावरोध, (अं०) रिटेन्शन ऑफ मिल्क (Retention of Milk)।

(अ०) तजब्बुनुल्लब्न, (उ०) पिस्तान मे दूध का मुन्जामिद हो जाना; (स०) स्तन्यस्तम्भ, (अं०) फ्रीजिग ऑफ मिल्क (Freezing of Milk)।

हेतु—कभी-कभी दूध साधारण से अधिक गाढा होकर या स्तन की वाहिनियो के किसी कारण से बारीक हो जाने के कारण या दुग्ध स्रोतसो मे सान्द्रीभूत कफ के अवरोध हो जाने से या स्तनपेशियो का स्वाभाविक अवस्था से वढकर वाहिनियो पर दवाव पडने से अथवा अधिक प्रमाण मे दूध उत्पन्न होकर वाहिनियो मे फँस जाने से अथवा उनमे अर्बुद उत्पन्न हो जाने से दूध सचित होकर स्तन के भीतर रुक जाता है। यदि वह दीर्घ काल तक स्तन मे यथावत् स्थिर रहे तो दही या पनीर की भाँति जमकर स्तन की धातुओ मे कठोरता उत्पन्न कर देता है।

लक्षण—स्तन के भीतर दूध अवरुद्ध हो जाने, जमकर दूषित हो जाने और देर तक रुके रहने से विषमयता उत्पन्न होकर स्तन की धातुओ मे तनाव एव पीडा उत्पन्न हो जाती है। रक्तानुधावन की तीव्रता के कारण कभी-कभी शोथ हो जाता और ज्वर भी हो जाता हे।

चिकित्सा—सर्वप्रथम उस दूध को निकालना चाहिये जो स्तन मे सचित होकर रुक गया हे, जिससे दूध का तनाव और पीडा तुरत निवृत्त होकर अन्य उपद्रव उत्पन्न होने की आशका न रहे।

अस्तु, उष्ण जल वोतल मे भरकर उसे खाली कर देवें और तुरत स्तन से वोतल का मुंह लगा देवे। इस विधि से दूध निकल आता है। स्तन से दूध निकलने के पश्चात् मूल व्याधि के हेतु परिवर्जन की ओर ध्यान देवें। अस्तु, यदि दूध गाढा हो या दुग्धस्रोतो मे सान्द्र कफ जन्य अवरोध हो तो गुल वाबूना, सूखा पुदीना, मेथी, खतमी के बीज और अलसी १–१ तोला सबको पानी मे उबालकर उससे सेंक एव परिषेक करें ओर सोंठी को महीन पीसकर सोआ का तेल मिलाकर लेप करें।

अपथ्य—कफकारक, सान्द्र एव गुरु पदार्थो से तथा दूषित पदार्थो से परहेज

करें। दही और पनीर कदापि सेवन न करें, क्योकि इनसे दूध साधारणतया जम जाता है।

पथ्य--साधारण शूरवा, चपाती, मूँग या अरहर की दाल और कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक, खिचडी आदि मे से यथाभ्यास सेवन करायें।

९--इस्तेर्खाउस्सदी

नाम--(अ०) इस्तेर्खाउस्सदी, (उ०) पिस्तान का ढीला हो जाना, (स०) स्तनघात, (अ०) रिलाक्सेशन ऑफ मैमा (Relaxation of Mamma)।

यद्यपि स्तन की रचना का प्राय ग्रथिमय भाग कोमल मास का होता है परन्तु उसके भागो का अधिक ढीला एव सुस्त हो जाना जिस मूलभूत दोष से होता है, वह दुग्धोत्पादन मे अवश्य व्यतिक्रम उत्पन्न करता है।

हेतु--कफात्मक द्रवो की बहुलता, स्तन के स्रोतो एव उसकी धातुओ का रक्त एव दूध से शून्य होना, शरीर मे रक्त की अल्पता, दीर्घकाल तक स्तन्यपान कराना और स्नान (हमाम) का प्रायश उपयोग भी इस रोग का हेतु होता है।

लक्षण--ऐसी स्त्रियो का शरीर स्थूल, ढीला और बादी से फूला हुआ होता है। श्लेष्माधिक्य के अन्य लक्षण भी पाये जाते हैं। हर प्रकार का सुख और गृह के आवश्यक काम-काज मे हाथ न डोलाना, उष्ण जल से नहाने और शीघ्र-स्नान का अवसर होना या शिशुओ को अधिक काल तक स्तन्य पान कराना आदि।

चिकित्सा--ऐसी दशा मे कफपाचनौषधि मिलाकर विरेचन देवें और हरा माजू, अनार का छिलका, झाऊ, जुफ्तबलूत, अकाकिया प्रत्येक ६ माशा सब को शुद्ध सिरका मे पीसकर स्तनो के ऊपर लेप करे।

अपथ्य--स्निग्ध-कफकारक एव वादी पदार्थो से और अधिक स्नान से परहेज करें।

पथ्य--आर्द्रताशोषक एव रूक्ष आहार सेवन करे, जैसे कबाब और बेसन की रोटी, भुने हुए चने, भूना हुआ कीमा आदि यथावश्यक चपाती के साथ देवें।

१०—सिग्रुस्सदी

नाम—(अ०) सिग्रुस्सदी, (उ०) पिस्तान का छोटा हो जाना, (स०) स्तनवृद्धि, स्तनक्षय, (अ०) ऐट्रॉफी ऑफ दी मैमरी ग्लैन्ड (मैमा) (Atrophy of the mammary gland) (Mamma)।

कभी-कभी स्तन सामान्य अवस्था से बहुत छोटे हो जाते है।

हेतु—कभी-कभी स्तन की आकर्षणी शक्ति किसी व्याधि के कारण दुर्बल होकर इस योग्य नही रहती कि आहार का शोषण यथेष्ट प्रमाण मे कर सके। अतएव स्तन की धातुओ को पोषणार्थ यथेष्ट रक्त नही मिलता। कभी इन स्रोतो मे दोषिक अवरोध हो जाते है जिनके रास्ते स्तन का पोषक रक्त आया करता है। कभी सामान्य दौर्बल्य और शरीर कार्श्य के साथ स्तन भी छोटे हो जाते है। कभी अतीव क्षय (तहल्लुल) एव सशोधन से शरीर मे रूक्षता प्रबल होकर और रक्तविकार के कारण शारीरिक पोषण मे व्यतिक्रम (गडबड) होता है। अतएव स्तन भी छोटे रह जाते है। कभी जननाङ्गो के सहज एव जन्मोत्तर (कृत्रिम) विकार या अवस्था के कारण भी स्तन छोटे हो जाते है।

लक्षण—यदि स्तन की आकर्षणी शक्ति किसी कारण से दुर्बल हो गई हो तो उसके लक्षण विद्यमान होगे। स्रोतो मे अवरोध उत्पन्न करनेवाले दोष के लक्षण प्रगट होगे। सशोधन और क्षय (तहल्लुल) की अधिकता से हो तो पता लगाने से विरेचन का अतियोग, सिरावेधन, जलौकावचारण अथवा किसी अन्य साधन द्वारा शरीर से अधिक रक्त का निर्हण, साक्षी होगा। प्रकृति की रूक्षता और रक्त दुष्टि के कारण हो तो उसके लक्षण व्यक्त होगे।

चिकित्सा—यदि आकर्षणी (शोषण) शक्ति के दौर्बल्य से यह रोग हो तो सूखे केचुए ६ माशा, सूखी जोक ६ माशा, दोनो महीन पीसकर २ तोले कुष्ठ के तैल मे मिलाकर पतला लेप लगावें।

यदि स्रोतो मे किसी सान्द्रीभूत दोष या चिपकावदार (कफ) आदि से अवरोध उत्पन्न हो गया हो तो यह योग सेवन करायें—सौंफ और कुसूस के बीज ५-५ माशा पोटली मे बांधकर बिरजासिफ और दालचीनी ३-३ माशा सबको रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो देवें और सवेरे किंचित् गरम करके खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिलायें और सौंफ, नाखूना, खतमी की जड, कर्नब के बीज, सोआ के बीज, अफसन्तीन प्रत्येक ६ माशा, पीला अजीर ३ दाना, बोल ६ माशा इन समस्त द्रव्यो को जल मे पीसकर कुष्ठ-तैल मे मिलाकर स्तनो पर कुनकुना गरम लेप करें।

यदि सार्वाङ्गिक दौर्बल्य के कारण स्तन साधारण से छोटे हो, तो ५ दाने मीठे बादाम का मग्ज, कतीरा ६ माशा, निशास्ता ६ माशा, मिश्री १ तोला कूट-छानकर

चूर्ण बना लेवें। इसमे से एक-एक तोला सवेरे-शाम बकरी के दूध से खिलायें। तथा भैस और हाथी की चर्वी समभाग मिलाकर गरम करके कुछ दिन स्तनो पर मर्दन करें।

यदि गर्मी और खुश्की के कारण से हो तो दुग्ध और घी अधिक प्रमाण मे खिलायें तथा भेड और बत्तख इनकी चर्वी ६–६ माशा और सफेद मोम ६ माशा परस्पर मिलाकर गरम करके मर्दन करे।

यदि जननाङ्गो के सहज दोष या अवस्था इसका हेतु हो तो वह दुष्प्रतिक्रिय है।

अपथ्य—शरीर को कृश करनेवाले उपायो, शोक एव क्रोध, आतप और अग्निसेवा, अधिक परिश्रम इनसे परहेज करें। गुड, तेल और अम्ल पदार्थो का सेवन कम करें।

पथ्य—स्नेहावत, बल्य और पतले आहार सेवन करायें। अडा, मुर्गी के बच्चो का शूरवा, दूध, मक्खन, घी, मलाई और सब प्रकार के फलो मे से जो प्रिय हो उन्हें देवें। मूँग की खिचडी, खशका, मूँग और अरहर की दाल, शाको मे भिडी, तुरई, कद्दू, टिंडा, पालक आदि यथाभ्यास देवे।

उदर रोगाधिकार ८

(पचनसस्थान के रोग)

आमाशय रोगाध्याय (अम्राजुल्मेदा) १

१---वजउल्मेदा

नाम---(अ०) वज्उल्मेदा, (फा०) दर्दे मेदा, दर्दे शिकम, (हि०) पेट का दर्द, (स०) आमाशयशूल, (अ०) गॅस्ट्रॅल्जिया (Gastralgia)।

यह आमाशय का वातिक शूल है। वस्तुत यह पचनविकार का एक लक्षण है।

हेतु---यह रोग आमाशय की अदोपज या दोषज विप्रकृति से उत्पन्न होता है। कभी दूषित वायु, गुरु एव दीर्घपाकी आहार सेवन करने तथा आमाशय पर अति उष्ण सक्षोभक पैत्तिक दोष गिरने से अथवा अप्राकृतिक रूप से आमाशय मे श्लेष्मा के सचित हो जाने से यह रोग उत्पन्न होता है। कभी-कभी आमाशय के स्पर्शासहिष्णु हो जाने से भी वेदना होने लगती है। कभी गुरु एव वादी आहार सेवन करने से पचनविकार होकर रियाह (वायु) उत्पन्न हो जाते है और वेदना का कारण होते हैं। कभी अधिक भोजन करने से आमाशय मे भोजन दूषित हो जाता है जिससे वेदना उत्पन्न हो जाती है। परन्तु स्त्रियो को यौवन या रुद्धार्तव काल मे शारीरिक दौर्बल्य के कारण अथवा अपतन्त्रक के कारण भी यह व्याधि हो जाती है। पर साधारणतया अजीर्ण वा मलावरोध के कारण यह वेदना हुआ करती है।

लक्षण---हेतुओ की विविधता के अनुसार इसके विविध लक्षण होते हैं। विप्रकृति की दशा मे जिस प्रकार की विप्रकृति हो उसी प्रकार के लक्षण विद्यमान होते हैं। उदाहरणत उष्ण की दशा मे आमाशय मे दाह और उष्णता, तृष्णाधिक्य, मुखशोष तथा शीतल पदार्थो से लाभ आदि। शीतल की दशा मे इसके विपरीत लक्षण प्रगट होते है। अदोषज (सादी) विप्रकृति मे गौरव-रहित हलके लक्षण होते हैं और दोषज विप्रकृति मे गौरव के साथ उग्र एव तीव्र होकर प्रगट होते हैं। आध्मान और उदरगत वायु की दशा मे उदर के भीतर आटोप एव दाह होता है। उदर मे रुक-रुक कर पीडा होती है। पसलियो मे खिचावट होती और पेट फूल जाता है। अजीर्ण एव आहार दुष्टि की दशा मे अम्लोद्गार आते हैं। वेदना रुक-रुककर होती है। उत्क्लेश होता है और कभी-कभी वमन भी हो जाता है। वातनाड़ियो के स्पर्शासहिष्णु हो जाने की

दशा मे खाली पेट रहने पर वेदना होती है तथा भोजन कर लेने पर वह कम हो जाती है।

चिकित्सा—रोगजनक दोष के शोधन और निदानपरिवर्जन के पश्चात् यदि पीडा अल्प हो तो रोगी को सोडावाटर अर्थात् खारे पानी का एक बोतल बाजार से मँगा कर पिलाये और १२ तोला सौंफ के अर्क या उष्ण जल के साथ १ तोला जुवारिश कमूनी खिलायें। यदि पीडा तीव्र हो और भोजन किये तीन घटे से कम हुए हो तो आधा सेर गरम पानी मे २॥ तोला नमक मिला कर पिलाये और कठ के भीतर उँगली डालकर रोगी को वमन कराये। बोतल मे गरम पानी भरकर इससे आमाशय के ऊपर सेक करें और १ तोला राई आवश्यकतानुसार सिरका मे पीसकर कपड़े पर फैला कर पीडा के स्थान पर १५ मिनट तक प्लस्तर की भाँति लगायें।

वायु (रियाह) की अधिकता से हो तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से १२ तोला सौफ के अर्क मे ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और ३ माशा अनीसून इनको पीस-छान कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मे मिलाकर प्रात सायकाल कोष्ण पिलायें।

यदि आहारदुष्टि के कारण हो तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौफ, ३ माशा कुसूस के बीज, और ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का इनको १२ तोला सौफ के अर्क मे पीस-छानकर ४ तोला गुलकन्द और ४ तोला सादा सिकजबीन मिलाकर प्रात सायकाल पिलाये। सफूफ नमक सुलेमानी खास १–१ माशा या सफूफ नमक शैखुर्रईस १–१ माशा या हब्ब पपीता २–२ गोली खिलाना भी लाभकारी है। तीव्र पीडा होने पर हब्ब कबिद २-२ गोली या कबिदी २–२ टिकिया खिलाने से भी पीडा शात हो जाती है।

विबध (कब्ज) हो तो मुलय्यिन ४ टिकिया या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा १२ तोला कुनकुना अर्क सौफ से खिलाये। अथवा सनाय मक्की के पत्र ६ माशा, काला नमक ६ माशा बारीक पीसकर चूर्ण बनायें। इस चूर्ण को १० तोला अर्क गुलाब या १२ तोला अर्क सौफ से फँका देवे। इससे तुरत विरेक होकर उदरशूल शात हो जाता है। यह शूल मे भी लाभकारी है।

यदि पीडा आवेगपूर्वक होती हो अथवा प्रतिदिन पीडा रहती हो तो कुर्स कमूनी तीन टिकिया जल से खिलायें। तीन दिन तक इसी मात्रा मे खिलाकर बाद मे १–१ टिकिया प्रतिदिन बढाते जाये, यहाँ तक कि १४ टिकिया तक पहुँचाये। पुन इसी प्रकार एक-एक टिकिया कम करके प्रथम मात्रा (३ टिकिया) तक पहुँचाये और तीन दिन तक सेवन कराके बन्द करा देवे। यदि पीडा कम न हो तो मूँग का आटा ऽ। दूध मे गूँधकर ६ माशा सेंधा नमक, ३ माशा सोठ और

३ माशा हींग महीन पीस-मिलाकर टिकिया पकायें और इसको एक ओर से कच्चा रखे। कच्ची की ओर गुलरोगन चुपडकर रात्रि मे कुनकुना उदर के ऊपर वाध लिया करे।

शीतजन्य उदरशूल मे मस्तगी १ माशा और जदवार खताई १ माशा महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से १० तोला अर्क गुलाव २ तोला शर्वत दीनार या २ तोला शर्वत वर्द मुकर्रर मिलाकर कुनकुना पिलायें। ४ तोला एरण्डतैल, १० तोला अर्क गुलाव और २ तोला वूरा--(शकर सुर्ख) मिलाकर पिलाने से भी उदरशूल नष्ट होता है।

अपथ्य—जव तक आमाशय शुद्ध न हो भोजन सर्वथा त्याग देवें। उदर शुद्ध होने के वाद भूख से कम भोजन करे। साद्र, दीर्घपाकी और आध्मान-कारक पदार्थ, जैसे मटर, गोभी, आलू, अरवी, कचालू, उडद की दाल आदि से परहेज करें।

पथ्य—उदरशुद्धि और पीडा शात हो जाने के वाद वकरी का शूरवा चपाती के साथ खिलायें। मुर्गी के वच्चे का शूरवा या अखनी, पुदीना की चटनी जीरा मिलाकर देवे। भोजनोत्तर सिरका की चटनी या अदरक का मुरव्वा थोडा-सा खिलाना चाहिये।

२—वज्उल्फुवाद

नाम—(अ०) वज्उल्फुवाद, (उ०) फम मेदा का दर्द, कलेजा जलना; (स०) हृदयोद्वेष्टन, हृदयोत्क्लेश, (अ०) कार्डिऐल्जिया (Cardialgia)।

कार्डिऐल्जिया को अरवी मे वज्उल्फुवाद कहते है जिसका धात्वर्थ हृच्छल है। पर वस्तुत यह आमाशयिक द्वार (फम मेदा) का तीव्र शूल है। आमाशयिक द्वार हृदय के समीप होता है और उसके शूल मे हृदय के सान्निध्य के कारण रोगी हृत्स्थल पर दर्द की शिकायत करता है। अतएव इसको उक्त नाम से अभिहित किया गया।

हेतु—आमाशयिक द्वार पर पित्त गिरने से अथवा उसमे साद्र वायु के सचित हो जाने से यह पीडा होती है।

लक्षण—पित्तजन्य शूल मे रोगी को तीव्र तृष्णा लगती है। मुख और जिह्वा शुष्क हो जाती है। चेहरे और नेत्र का वर्ण पीला हो जाता है। मुख का स्वाद तिक्त हो जाता है। दाहपूर्वक मलोत्सर्ग होता है। मूत्र मे दाह और लालिमा होती है। किसी शीतल द्रव्य-सेवन से वह शात हो जाता है। साद्र वायु के सचय से हो तो उत्क्लेश होता और वारवार उद्गार आते हैं।

उद्गार आने या अपान वायु के निर्हरण से वेदना कम हो जाती है। पीडा किसी समय कम और किसी समय अधिक हो जाती है।

चिकित्सा—पित्तज शूल मे ३ माशा जरिश्क, ५ दाना आलूबुखारा और ५ माशा सौंफ को ६–६ तोला अर्क गावजबान और अर्क गुलाब मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला सिकजबीन लीमूँ या ४ तोला शर्बत गोरा मिलाकर प्रात-सायकाल पिलायें। भोजनोत्तर जुवारिश अनारैन ७–७ माशा खिलायें। ग्रीष्म काल मे छाछ मे वर्फ मिलाकर पिलाने से भी उपकार होता है। सफेद चदन, गुलाब के फूल, बशलोचन, सुमाक प्रत्येक ३ माशा—सबको अर्क गुलाब मे पीसकर इसबगोल का लबाब मिलाकर आमाशयिक द्वार के ऊपर लेप करे तथा गुलाब-का इत्र उक्त स्थल पर मलें। आराम होने के उपरात सिकजबीन और उष्ण जल मिलाकर वमन करायें, तदुपरात शर्बत वर्द मुकर्रर अर्क गुलाब मे घोलकर पिलाये। आवश्यकता होने पर उष्ण शिर शूल की भाँति पाचनौषध पिलाकर शीत विरेचनीय औषधि द्वारा शोधन करें। तीव्र पित्त प्रकोप मे बासलीक सिरा का वेधन करे।

यदि सान्द्र वायु से यह रोग हो तो प्रथम वमन करायें। तदुपरात वातानुलोमन औषधियाँ सेवन कराये। सुतरा जुवारिश कमूनी खिलाकर १० तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिकजबीन मिलाकर पिलाना लाभकारी है। अथवा मस्तगी १ माशा, जदवार १ माशा महीन पीसकर जुवारिश जालीनूस ७ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा मे मिलाकर प्रथम खिलायें। ऊपर से १२ तोला अर्क माउल्लहम मर्का कासनी वाले मे ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये तथा राई सिरका मे पीसकर कपडे पर फैलाकर आमाशयिक द्वार के ऊपर १५ मिनट तक प्लस्तर की भाँति लगाये। १ रत्ती हीराहीग गुठली निकाले हुए मुनक्का मे लपेटकर ऐसे दर्द मे खिलाने से अथवा काला नमक अर्क गुलाब मे घोलकर पिलाने से भी लाभ होता हे। जिनको यह पीडा आवेगपूर्वक होती हो वे जुवारिश कमूनी १–१ तोला नित्य भोजनोत्तर सेवन करते रहे। शेष वे सभी उपाय काम मे लेवे जिनका उल्लेख हृच्छल के वर्णन मे किया गया है।

अपथ्य—गर्मी के कारण हो तो मास का सेवन त्याग देवे। दूध और गरम मसाला आदि से परहेज करें। वायु के कारण हो तो बादी एव गुरु पदार्थो जैसे आलू, अरवी, गोभी, मटर और उडद की दाल आदि से परहेज करे।

पथ्य—पीडा शात हो जाने पर साधारण आहार जैसे बकरी का शूरबा, चपाती और शाको मे कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, टिडा आदि आवश्यकतानुसार देवे।

३—फुवाक

नाम—(अ०) फुवाक, (उ०, हि०) हिचकी; (स०) हिक्का, (अ०) हिक्कफ (Hiccough), हिक्कप (Hiccup)।

जिस प्रकार फुफ्फुस निज कष्टदायिनी वस्तु को खाँसी के द्वारा दूर करने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार आमाशयिक द्वार मे यदि कोई कष्ट होता है तो वह उसे हिचकी द्वारा दूर करता है।

हेतु—कभी यदि कोई तीक्ष्ण वस्तु सेवन की जाती है अथवा कोई तीक्ष्ण दोष (पित्त) आदि आमाशय पर गिरता है या आमाशयिक द्वार मे श्लैष्मिक द्रव सचित हो जाते हैं तो हिचकी आने लगती है। सान्द्र, आध्मानकारक एव स्निग्ध आहार का सेवन, आमाशय मे प्रभूत वायु की उत्पत्ति होना, इसके हेतु हैं। अपतन्त्रक, आमाशयशोथ एव यकृच्छोथ के कतिपय रोगो मे भी यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण—पित्तज हिक्का मे आमाशयिक द्वार के ऊपर दाह प्रतीत होता है, तृष्णाधिक्य, जिह्वाशोष आदि तथा पित्त के अन्य लक्षण पाये जाते हैं। श्लैष्मिक द्रव एव सान्द्र वायु जन्य रोग मे आमाशयिक द्वार के ऊपर बोझ-सा प्रतीत होता है। पचनविकार, उदरशूल, आध्मान और आटोप आदि लक्षण होते हैं।

चिकित्सा—गरम पानी मे लवण या सिकजबीन मिलाकर पिलाकर प्रथम रोगी को वमन करायें। तदुपरात तुख्म करफ्स, स्याह जीरा, अनीसून, सोठ, सूखा पुदीना, असारून, वालछड, जरावद मुद्‌हरज प्रत्येक ३ माशा—सबको जल मे क्वाथ करके ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलायें। भोजनोत्तर जुवारिश जालीनूस ७ माशा या जुवारिश कमनी ७ माशा खिला दिया करे।

यदि आमाशयशोथ, यकृच्छोथ या अपतन्त्रक के कारण यह रोग हो तो उक्त रोगो की चिकित्सा करे। यदि किसी सान्द्र (गलीज) आहार सेवन या अति भोजन करने से यह रोग हो, तो प्रथम वमन कराके तदुपरात सौफ १ तोला और गुलकद २ तोला को १० तोला अर्क गुलाब मे क्वाथ करके छानकर २ तोला सिकजबीन मिलाकर पिलायें तथा छोटी इलायची ३ माशा और सूखा पुदीना ३ माशा रोगी को चबाने को कहे और भोजन मे कमी करे।

वायु (रियाह) की अधिकता हो तो जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौफ, अनीसून, कुसूस के बीज, काला जीरा प्रत्येक ३ माशा, १२ तोला अर्क सौफ मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें या सोठ ५ माशा, काली मिर्च ५ दाना, मिश्री २ तोला सबको जल मे उबाल-छानकर चाय की भाँति प्रात -सायकाल कुनकुना पिलाये।

यदि साद्रीभूत कफ के कारण यह रोग हो तो मस्तगी १ माशा, अकरकरा १ माशा महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस मिलाकर प्रथम खिला देवें। ऊपर से गावजबान ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, मिश्री २ तोला जल मे उबाल-छानकर पिलायें। अथवा सौंफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा १२ तोला अर्क सोंफ मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर कुनकुना पिलायें या सफूफ नमक सुलेमानी १ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा मे मिलाकर खिलायें।

अपथ्य—क्षुधा से अल्प भोजन करायें। उत्तम हो कि आवश्यकतानुसार एक-दो समय उपवास कराये। मास, दूध, घी, गरम मसाला और आलू, अरवी, उडद की दाल, भिंडी, मटर आदि से परहेज करायें।

पथ्य—रोग निवृत्त होने पर लघु आहार, बकरी का शूरबा, चपाती, शाको मे कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, करेला, मूँग और अरहर की दाल आदि यथाभ्यास देवें।

वक्तव्य—रोगी को भूख से कम भोजन कराना, या किसी विधि से अकस्मात् भय दिलाना या उष्ण जल के कुछ घूँट पिलाना, उभय स्कंध के मध्य खाली सींगी लगवाना इस रोग मे लाभकारी उपाय है। रोग की साधारण दशा मे सास रोकने या एक घूँट शीतल जल पीने अथवा गण्डूप करने या छीक उत्पन्न करने से यह रोग आराम हो जाता है।

४—कै, तहव्वुअ और गसियान

नाम—(अ०) कै, (उ०, हि०) कै, (स०) वमन, छर्दि, (अ०) वमिटिग (Vomiting)।

(अ०) तहव्वुअ, (उ०, हि०) ओकाई, उबकाई, (स०) उत्क्लेश, हृल्लास, (अ०) रेचिंग (Retching)।

(अ०) गस्यान, (उ०, हि०) मतली, मिचली, जी पछिआना, (स०) उद्रेचन, (अ०) नासिया (Nausea)।

वर्णन—कै आमाशय की उस चेष्टा को कहते हे जिसके साथ आमाशय-स्थित पदार्थ अशत या सपूर्ण मुखमार्ग से निस्सरित हो जाते है। कभी-कभी आमाशय मे न्यूनाधिक चेष्टा तो होती हे, किन्तु वह उतनी बलवती नही होती कि भीतर के पदार्थ का निर्हरण कर सके। उक्त अवस्था को अरबी मे तहव्वुअ (उबकाई Retching) कहते है। कै और उबकाई से पूर्व की वह अवस्था जिसमे जी मिचलाता है और यह मालूम होता है कि अभी कै या उबकाई आयेगी

गस्थान (मिचली Nausea) कहते है। कै वस्तुत स्वयमेव कोई रोग नही है, प्रत्युत कतिपय अन्यान्य रोगावस्थाओ का अन्यतम लक्षण है।

हेतु—आमाशय मे पित्त का सचय एव दाह उत्पन्न करना अथवा शीतल एव स्निग्ध (आर्द्र) आहार का पुष्कल सेवन, आमाशय मे श्लेष्मा का सचय होकर पचनविकार को विकृत करना, अधिक खाने-पीने से आमाशय मे आहार का दूषित हो जाना, आमाशयगत सक्षोभ या दाह अथवा किसी व्रण का होना या आमाशयगत आक्षेप इसके हेतु है। कभी कुस्वादु एव तिक्त पदार्थ सेवन, दुर्गन्ध सूँघने या भयङ्कर दृश्य देखने, यकृत्, वृक्क, मस्तिष्क, सुषुम्ना या गर्भाशय के कतिपय रोग तथा कतिपय प्रकार के ज्वरो के होने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण—पित्त की अधिकता से यह रोग हो तो मुख का स्वाद तिक्त होगा, तृष्णा की तीव्रता होगी, जिह्वाशोष होगा और उसपर कण्टक उत्पन्न हो जायँगे। वमन हो तो वह प्राय पीले रग का होगा। कभी-कभी विविध वर्ण का वमन होता है। आमाशयस्थ श्लेष्म सचय से हो तो मुख का स्वाद लवण या अम्ल होगा। वमन मे श्वेत झारा या श्लेष्मा निकलेगी। तृष्णा न्यून होगी। मूत्र मे सान्द्रत्व एव सफेदी होगी। मूत्र प्रमाण मे अधिक आयेगा। पचनविकार से हो तो उदरस्थ आध्मान और वायु की अधिकता होगी। मद-मद पीडा होगी। अम्लोद्गार आयेंगे। यदि वमन होगा तो उसमे आहार का कुछ अश निस्सरित होगा। किसी प्रकार के ज्वर के कारण यह रोग हो तो ज्वर विद्यमान होगा। अन्यान्य रोगजन्य हो तो उनकी विद्यमानता निदान के लिये काफी है।

निदान—आमाशय के वमन मे प्रथम मिचली होती फिर वमन होता है। वमन हो चुकने के पश्चात् तबीअत हलकी हो जाती है, पर किसी प्रकार दुर्बलता प्रतीत हुआ करती है। परतु मस्तिष्क के वमन मे होने से पूर्व मिचली नही होती, प्रत्युत् प्राय खाली आमाशय और सूखी उबकाइया आया करती है। वमन हो चुकने के पश्चात् किंचित् दौर्बल्य की प्रतीति भी नही होती और न आराम होता है। गदना (कुर्रास) के रग का, काले या जगली रग का वमन होना अथवा केवल दोष का निर्हरण होना अरिष्टसूचक है। एक ही दिन मे विविध वर्णो का वमन होना अत्यत अरिष्टसूचक एव हरा दुर्गन्धित वमन साघातिक होता है।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगाकर उसके परिवर्जनका यत्न करें। पित्तज वमन मे गुनगुना पानी करके उसमे ४ तोला सिकजबीन मिलाकर पिलाये और वमन करायें जिससे आमाशय भली-भाति शुद्ध हो जाय। तदुपरात जरिश्क ३ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, अर्क गावजबान ६ तोला और अर्क पुदीना

६ तोला मे पीस कर शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत गोर या २ तोला सिकजबीन लीमूँ मिलाकर पिलाये और जरिश्क ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना, सुमाक १ माशा, वंशलोचन १ माशा, बिजोरे का छिलका १ माशा, पिस्ते का बाहरी छिलका १ माशा, सफेद चदन १ माशा सबको १-१ तोला अर्क गुलाब और शुद्ध सिरका मे पीसकर आमाशयिक द्वार के ऊपर लेप करे। एक कागजी नीबू काटकर उस पर नमक और कालीमिर्च छिडककर चुसायें। ५ दाना आलूबुखारा और ३ तोला इमली को पानी मे भिगोकर लिया हुआ निथरा पानी (जुलाल), ३ माशा कुलफा के बीज और ३ माशा जरिश्क तथा ५ दाना छोटी इलायची इनको पानी मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलाने से भी लाभ होता है।

उपर्युक्त उपायो से लाभ न हो तो पित्तज शिरशूल की भाँति पाचन औषधि पिलाकर विरेचन देवे। सशोधनोत्तर यदि कुछ दोष अवशेष रह जाय जिसका निर्हरण असभव हो, तो सशमन औषध एव आहार से दोष का शमन करें।

यदि श्लेष्माधिक्य से यह रोग हो तो मूली के बीज १ माशा, सेंधा नमक ३ माशा, शुद्ध मधु २ तोला एक सेर पानी मे पकाकर पिलाये और भली-भाँति वमन कराये। जब आमाशय भली-भाँति शुद्ध हो जाय तब ३ माशा मस्तगी महीन पीसकर ४ तोला गुलकद मिलाकर खिलाये और मस्तगी, बालछड, ऊदगर्की, बिजोरे का छिलका प्रत्येक ३ माशा यथावश्यक अर्क गुलाब और सिरका मे पीसकर आमाशय के ऊपर लेप करे। सूखा पुदीना, मस्तगी, छोटी इलायची का दाना, बिजौरे का छिलका, ऊदगर्की, पिस्ते का बाह्यत्वक् प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश मस्तगी मे मिलाकर दूसरे समय सेवन करायें। भोजनोत्तर ५ माशा अनोशदारुए लूलुवी ४ चावल नमक मृगाग मिलाकर खिलायें या खुब्सुल्हदीद १ टिकिया ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल मे मिलाकर देवे। जुवारिश कमूनी ७-७ माशा का सेवन भी लाभकारी है।

पित्तज वमन के रोगियो को जुवारिश तबाशीर ७ माशा या जुवारिश अनारैन ७ माशा या जुवारिश तमर्राहदी ७ माशा भोजनोत्तर खिलाना या थोडा-थोडा सिकजबीन चटाना भी लाभकारी है।

कभी-कभी उदर मे केचुए उत्पन्न होने और अन्त्र मे कृमि उत्पन्न होने से भी मिचली और उबकाई का रोग हो जाता है। उक्त अवस्था मे कृमिनाशन और कृमिनिसारण के लिये कृमिरोग मे वर्णित चिकित्सा क्रम अपनाये। कभी स्त्रियो को गर्भावस्था मे और कभी-कभी लोगो को नाव या रेल की दीर्घ यात्रा मे वमन और उत्क्लेश की व्याधि हो जाती है। उक्त अवस्था मे यथावश्यक

समीचीन उपाय करे। गर्भवती को केवल शर्वत गोर चटाने से ही तथा नाव की यात्रा मे कोई अम्ल वस्तु जैसे नीबू, इमली आदि सेवन कराने से यह दूर हो जाता है।

अपथ्य--उष्णता से हो तो धूप मे चलने-फिरने, श्रम और आयास-प्रयास से बचें तथा उष्ण एव मसालेदार पदार्थ-सेवन से परहेज करें। यदि श्लेष्माधिक्य या पचन-विकार के कारण हो तो वादी एव गुरु पदार्थ, जैसे लोबिया, चना, मटर, आलू, अरवी, उडद की दाल और वर्फ आदि से परहेज कराये। दही, मक्खन अधिक नही देवे।

पथ्य--बकरे का भृष्ट मास, मुर्गा, तीतर, बटेर आदि का शूरबा, मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, करेला आदि का शाक गेहूँ की चपाती के साथ देवें या मूँग की खिचडी खिलायें।

५--कैउद्दम

नाम--(अ०) कैउद्दम, (उ०, हि०) खूनी कै, (स०) रक्तवमन, (अं०) हीमेटीमेसिस (Hematemesis)।

इस रोग मे आमाशय या अन्नमार्ग से वमन द्वारा रक्त निर्हरण होता है।

हेतु--यह रोग दो प्रकार से होता है। प्रथमत अन्नमार्ग या आमाशय की किसी वाहिनी के विदीर्ण हो जाने या कट जाने से रक्त का वमन होता है अथवा अन्य अग-प्रत्यग जैसे यकृत् या प्लीहा या शिर मे अभिघात लगने से रक्त आमाशय मे आकर गिरता है और वमन के द्वारा निस्सरित होता है।

लक्षण--आमाशयगत किसी वाहिनी के विदीर्ण होने से यह रोग हो तो क्षत स्थान के ऊपर पीडा होती है। यदि अन्नमार्ग मे कोई कष्ट हो तो उभय स्कधो के मध्य पीडा होती है। यदि यकृत्, प्लीहा या शिर से रक्त आमाशय मे गिरता होगा तो इन अगो मे से किसी मे कोई विकार अवश्य विद्यमान होगा।

नफ्सुद्दम (रक्तष्ठीवन) और कैउद्दम (रक्तवमन) मे यह अन्तर है कि नफ्सुद्दम मे रक्त की कुल्लियाँ आती है या रक्त खखार के साथ कफमिश्र आता है तथा रक्त फेनयुक्त लाल रग का आता है और इसके साथ खाँसी होती है तथा सास लेने मे कष्ट होता है। परतु कैउद्दम मे वमन द्वारा जो रक्त निकलता है, वह स्याही मायल होता है, फेनयुक्त नही होता। वह प्राय आहारमिश्रित होता है। आमाशय स्थल पर आकुलता और बेचैनी होती है।

चिकित्सा--रोगी को अनाहार रखे और वर्फ के टुकडे चाबने को देवे। आमाशयिक द्वार के ऊपर भी वर्फ रखवाय और नफ्सुद्दम (रक्तष्ठीवन) मे

उल्लिखित रक्तस्तम्भक औषधियाँ उपयोग कराये और उसमे लिखे समस्त उपाय काम मे लेवे। हस्त-पाद को कसकर बाँधना और पिडलियो पर खाली सींगी लगवाना भी आशु प्रभावकर है। दम्मुल् अखवैन, कुदुर, गिल अरमनी, गुलनार फारसी, बबूल का गोद प्रत्येक १ माशा पीसकर १ तोला रुब्ब विही मे मिलाकर बारबार चटाना भी लाभकारी है।

वटी योग--अकाकिया, गुलाब का जीरा, गिल अरमनी, गुलनार फारसी प्रत्येक ३ माशा, अफीम १।। माशा, अजवायन खुरासानी, बबूल का गोद ३-३ माशा सबको पीसकर ३ माशा इसबगोल के लवाब मे गूँधकर गोलियाँ बनाये। ३ माशा यह गोलियाँ खिलाकर १२ तोला अर्क गावजबान मे २ तोला शर्बत अजबार मिलाकर पिला दिया करे।

प्रलेप योग--अकाकिया, गुलनार सफेद और लाल चदन प्रत्येक ६ माशा--सबको पानी मे पीसकर आमाशय के ऊपर लेप करना चाहिये।

यकृत्, प्लीहा या शिर मे आघात पहुँचने से जो रक्त वमन हो उसमे बासलीक सिरा का वेधन कराये। सिरावेधोत्तर विकारी अग का सुधार करे। यकृत् या प्लीहा के ऊपर सीगी लगवाना भी लाभकारी है। आमाशयव्रण के कारण हो तो उक्त रोग की यथावत् चिकित्सा करे।

अपथ्य--उष्ण एव तीक्ष्ण पदार्थो के खाने-पीने से, धूप मे चलने और परिश्रम का कार्य करने से, शोक, क्रोध, तीव्र चेष्टा, मैथुन, कबाव, चाय और मद्य के अतिसेवन तथा स्नान से परहेज करे। मधुर एव अधिक मसालेदार भोजन से बचे।

पथ्य--प्रथम मृदु एव लघु भोजन, जैसे यवमड या खीरा-ककडी के बीजो के मग्ज की खीर या साबूदाना। यदि आमाशय ग्रहण कर सके तो दूध बर्फ से शीतल करके देवें। कुछ कमी होने पर धीरे-धीरे दूध मे डबल रोटी भिगोकर या चावल का खशका दूध मिलाकर कम मिठास डालकर सेवन कराये। जब आमाशय ऐसा आहार ग्रहण करने लगे तब मूँग की नरम खिचडी या बकरी का शूरबा बहुत कम मिर्च का देवें और धीरे-धीरे कुलफा, कद्दू, तोरई, टिडा, भिंडी, आदि शीतल शाक सम्मिलित करके उसके साथ गेहूँ की चपाती देवे।

६--नफख व कराकिर मेदा

नाम--(अ०) नफखुल मेदा, कराकिर मेदा, (हि०, उ०) अफारा, (स०) आध्मान, (अ०) टिम्पनाइटिस (Tympanites), बोबारिग्मस (Borbaryguns)।

हेतु—मदाग्नि (आमाशयान्त्र की दुर्वलता), शीतल, गुरु एव आध्मान कारक (वादी) पदार्थ का सेवन, अधिक जल पीना, भोजनोपरान्त तुरत सो जाना, भोजनोत्तर लघुभ्रमन न करना, अधिक देर वैठे रहना आदि इसके हेतु है।

लक्षण—भोजन करने के वाद या वैसी ही उदर मशक की भाँति स्फोत हो जाता है। पर्शुकाओ और उदर के नीचे उद्वेष्टन होता है। मुख से थूक आता है। कभी अम्लोद्‌गार भी आते हैं और उदर मे गुडगुड शब्द (कराकिर) होता है तथा हृदय धडकता है।

चिकित्सा—ऐसी दशा मे सोडे की खारी वोतल पिलाना लाभकारी है। सोफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, कुसूस ३ माशा १२ तोला अर्क सौफ मे पीसकर ४ तोला शर्वत दीनार या ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाना अथवा जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से अर्क सोफ १२ तोला, खमीरा वनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिला देना भी गुणकारी है। गेहूँ की भूसी १ तोला, वाजरा १ तोला, सेधा नमक ६ माशा, काला जीरा ६ माशा, अजवायन ६ माशा सवको कपडे की पोटली मे वाँध कर उदर के ऊपर गरम करके टकोर करें। भोजनोत्तर नमक शैखुर्रईस १ माशा या सफूफ नमक सुलेमानी खास अथवा हव्व पपीता २-२ गोली या कविद नौसादरी २-२ गोली देने से भी लाभ होता है। आवश्यकतानुसार शेष वे ही उपाय काम मे लेवें जिनका उल्लेख उदरशूल मे हो चुका है।

अपथ्य—वायुकारक एव सान्द्र वस्तु, जैसे आलू, उडद की दाल, मटर, अरवी आदि से परहेज कराएँ। प्रथम एक-दो दिन लघन कराएँ। इसके वाद रोग निवृत्त होने पर पथ्य मे वकरी का शूरवा चपाती के साथ या मुर्गा, तीतर, वटेर का शूरवा गरम मसाला डालकर देवे। मूँग की खिचडी, मूँग-अरहर की दाल, कवाव चाय आदि यथाभ्यास भूख से एक-दो ग्रास कम देना चाहिये।

७—अतश मुफ्रित

नाम—(अ०) इल्लतुल्अतश, अतश मुफरित, (उ०) प्यास की शिद्दत; (स०) तृष्णाधिक्य, तृष्णातिरेक, (अ०) पॉलीडिप्सिया (Polydipsia)

इस रोग मे अत्यधिक प्यास लगती है। इसके ये दो भेद हैं—(१) सत्य (सादिक) अर्थात् सच्ची प्यास जिसमे केवल भोजन को पतला (तरल) वनाने तथा अग-प्रत्यगो तक पहुँचाने के लिये भी पानी की आवश्यकता होती है। (२) मिथ्या (काजिब) अर्थात् झूठी प्यास जिसमे शरीर मे आक्लेदाल्पता के विना वारवार जल की इच्छा होती है।

हेतु--कभी गरमी मे चलने-फिरने तथा ऋतु के कारण अथवा लहसुन, प्याज तथा उष्ण पदार्थ के प्रचुर उपयोग से, कभी-कभी ज्वर की तीव्रता मे अधिक तृषा लगती है, क्योकि आमाशय की उष्णता एव शुष्कता के कारण मुखस्थ द्रव (आक्लेद) शुष्क हो जाते है तथा आमाशय को अधिक जल की आवश्यकता होती है। पर कभी-कभी पिच्छिल सान्द्र कफ आमाशय मे चिपक जाता है और आमाशय उसको पृथक् करने तथा प्रक्षालनार्थ बारबार जल की इच्छा करता है।

लक्षण--गर्मी के कारण हो तो शीतल जल या बर्फ सेवन करने से शाति मिलेगी। ज्वर से हो तो वह विद्यमान होगा। कफ से हो तो शीतल जल सेवन से तृष्णा शात नही होगी अपितु, बढती जायगी। रोगी को कुनकुना जल सेवन से शाति मिलेगी। अन्य रोग होने पर उनके लक्षण मिलेंगे।

चिकित्सा--यदि सशोधन या चेष्टा एव परिश्रम के बाद या गर्मी मे मार्ग चलकर आने के पश्चात् तृषा प्रतीत हो तो कुछ देर तक ठहरकर पानी पीएँ, ऐसी दशा मे तुरत ही जल पीना हानिकर होता है। यदि जल से शाति न मिले तो शर्बत केवडा ४ तोला या शर्बत नीलूफर ४ तोला या शर्बत अजीब ४ तोला या शर्बत गुडहल ४ तोला इनमे से कोई एक शर्बत अर्क बेदमुश्क ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला मे मिलाकर बर्फ से शीतल करके रोगी को पिलायें। किसी उष्ण पदार्थ के सेवन से हो तो तुख्म खुर्फा स्याह (कुलफा के कृष्ण बीज), मीठे कद्दू के बीज के मग्ज, तरबूज के बीज के मग्ज प्रत्येक ३ माशा, अर्क गावजबान ८ तोला तथा अर्क बेदमुश्क ४ तोला मे पीसकर शीरा निकालकर उसमे ३ माशा बेदाना का जल मे लबाब निकालकर मिला लेवे और शर्बत उन्नाब तथा शर्बत नीलूफर ४-४ तोला योजित कर दो-तीन दिन तक प्रात-सायकाल पिलाये।

पित्त के प्रकोप से हो तो आलूबुखारा ५ दाना, जरिश्क ४ माशा १२ तोला अर्क गावजबान मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर सवेरे-शाम पिलाएँ।

ज्वर की तीव्रता के कारण हो तो ज्वर का उचित उपचार करें और सिकजबीन ४ तोला, अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला मिलाकर बार-बार पिलाये या शर्बत बनफ्शा ४ तोला १२ तोला अर्क गावजबान मे मिलाकर बर्फ से शीतल करके थोडा-थोडा पिलायें।

कफ के कारण हो तो कुनकुना पानी थोडा-थोडा पिलायें जिसमे कफ पतला होकर निर्हरण हो जाय या चाय की कोष्ण प्याली पिलायें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद या हब्ब पपीता ३-३ गोली खिला दिया करे। प्रात-सायकाल कुर्स खुब्सुलहदीद १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर खिलाये।

अपथ्य--गरम मसाला, लाल मिर्च, लहसुन, मछली, अडा, कबाब, मद्य

आदि उष्ण पदार्थ और वादी, गुरु एव कफकारक पदार्थ गोभी, मटर, आलू, अरबी प्रभृति नहीं देवें।

पथ्य—बकरी का शूरवा, चपाती, कद्दू, कुलफा, पालक, तोरई, टिंडा, मूँग, अरहर की दाल, मूँग की खिचडी प्रभृति देवें और सतरा, अनार, ककडी, अगूर, सेव, नासपाती आदि यथाभ्यास देवे।

८—फसादुश्शह्वत

नाम—(अ०) फसादु (नुक्सानु) इशह्वत, ह्वम, (हि०, उ०) भूख की कमी, भूख की खराबी, (स०) अरोचक, भक्तद्वेष, अरुचि, (अ०) एनोरेक्सिया (Anorexia), पिका (Peca)।

वक्तव्य—नुक्सानुश्शह्वत के भूख की कमी अभिप्रेत हे। जव क्षुधा एकदम नष्ट हो जाय तव उसे वुल्लानुश्शह्वत कहते हैं। इन उभय दशाओ मे हेतु एक ही होते है। वह्म और फसाद शह्वत से वुरी वस्तुओ की इच्छा अभिप्रेत है। ये उभय समानार्थी हैं। किन्तु कतिपय हकीमो ने इन दोनो मे यह भेद किया है कि वह्म मे तीक्ष्ण, चटपटी, नमकीन आदि वुरी वस्तुओ के खाने की प्रवल इच्छा होती ओर फसादुश्शह्वत मे कोयला, चना, कील प्रभृति अहितकर द्रव्यो के खाने की रुचि होती है।

हेतु—कभी उष्ण, मधुर एव स्निग्ध पदार्थो के अति सेवन से पित्त अधिक उत्पन्न होकर आमाशय पर गिरता हे और भूख बद कर देता है, कभी-कभी वादी, भारी एव चिरपाकी पदार्थो के सेवन से कफ अधिक उत्पन्न होकर भूख को रोकता हे। पर कभी उदरस्थ कृमि के कारण भूख बद हो जाती है, क्योंकि वह अन्त्र और आमाशय को अपनी चेष्टा से क्लेश पहुँचाते हैं।

लक्षण—क्षुधा या तो कम लगती है अथवा सर्वथा भोजन की रुचि ही नही होती। कभी-कभी भोजन से घृणा हो जाती है तथा रोगी को बरबस कुछ खिलाया-पिलाया जाता है।

चिकित्सा—उष्ण एव स्निग्ध पदार्थ-सेवन से हो तो उनका परित्याग कराये। पित्त निर्हरण के लिये कुनकुने पानी मे सिकजवीन मिलाकर वमन कराये। तदुपरात जरिश्क और कुलफा के कृष्ण वीज प्रत्येक ३ माशा, सौफ ५ माशा, आलूवुखारा ५ दाना, ६-६ तोला अर्क गावजबान और अर्क नीलूफर मे शीरा निकालकर २ तोला शर्वत गोर या २ तोला सिकजवीन या २ तोला शर्वत अनार शीरी मिलाकर पिलायें तथा जुवारिश सदल ७ माशा या जुवारिश तबाशीर ७ माशा या जुवारिश अनारैन ७ माशा खिलाकर ऊपर से मीठे अनार का रस ५ तोला,

लुकाट का रस ५ तोला,अर्क बेदमुश्क ३ तोला और अर्क गुलाब २ तोला मिलाकर शर्बत अजीब २ तोला या शर्बत नीलूफर २ तोला सम्मिलित करके पिलायें। सफेद चदन अर्क गुलाव मे घिसकर उसमे कपडा तर करके आमाशय के ऊपर स्थापन करे।

पित्त प्रकृति वालो के लिये उचित यह है कि भोजन से पूर्व थोडा-सा शीतल जल पी लिया करे। इससे प्राय भूख खुल जाती है।

यदि कफ की अधिकता से हो तो उष्ण जल मे लवण मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन कराये। वमन हो जाने के पश्चात् यह योग सेवन कराये—मुलेठी, मस्तगी, गुल गावजबान और इलायची का दाना प्रत्येक ३ माशा, समस्त द्रव्यो को जल मे उबाल कर ४॥ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये और ६-६ तोला अर्क पुदीना और अर्क सौंफ ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलायें और जुवारिश जालीनूस ७-७ माशा या जुवारिश कमूनी ७-७ माशा प्रात-सायकाल खिलाये।

यदि प्लीहा वढ जाने के कारण हो तो उसकी विधिवत् चिकित्सा करे और भोजनोत्तर यह चूर्ण सेवन करायें—राई ९ माशा, भृष्ट सुहागा ३ माशा, नौसादर २ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमे से ३ माशा चूर्ण सवेरे-शाम ताजा पानी से फँकाये। कब्ज हो तो सप्ताह मे दो बार सोते समय कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया गाय के दूध या ताजा पानी से खिलाये। क्षुधा उत्पन्न करने के लिये सफूफ नमक सुलेमानी खास १ माशा या सफूफ नाना ३ माशा या सफूफ शीरी ३ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा या अनोशदारू लूलुवी ७ माशा मे से कोई औषधि आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

अपथ्य—पित्त के कारण हो तो मास के अति सेवन, गरम मसाला और उष्ण वस्तुओ के सेवन से, धूप मे चलने फिरने, अग्नि सेवा और परिश्रम से बचना चाहिये। कफ के कारण हो तो साद्र एव वादी पदार्थो जैसे उडद की दाल, गोभी, आलू, अरवी, मटर, लोविया, बाकला आदि के सेवन से बचे। वासी भोजन और मछली प्रभृति नही खाये। प्लीहा हो तो स्निग्ध पदार्थो जैसे घी, तेल और दूध आदि आमाशय को शिथिल करनेवाले द्रव्यो से परहेज करें।

पथ्य—प्रथम आहार वर्जित करे और कुछ काल तक बहुत कम-कम खिलाये। तदुपरात धीरे-धीरे यथावश्यक साधारण बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग-अरहर की दाल, खिचडी, तीतर, वटेर, मुर्गे का शूरबा आदि यथाभ्यास सेवन करायें।

———

९---जूउल्कल्ब, जूउल्बक़र

नाम—(अ०) जूउल्कल्ब, जूउल्बकर, (उ०, हि०) भूख बहुत लगना, भूख का हूका, (स०) भस्मक, अत्यग्नि, (अ०) बूलीमूस (Bulimus), बूलीमिया (Bulimia)।

इस रोग मे रोगी को बारबार क्षुधा लगती है।

हेतु—शरीर मे क्षतिपूर्ति या भोजन की अपेक्षा होने पर शरीर के अग-प्रत्यङ्ग आमाशय से आहार की माँग तो करते ही है पर कभी-कभी प्लीहा के विवर्द्धित हो जाने से तथा सौदा अधिक उत्पन्न होने से आमाशयिक द्वार मे सौदा का अन्तर्भरण अधिक होता है अथवा मस्तिष्कीय प्रसेक उस पर गिरते है और इस हेतु आहार आमाशय से बारबार फिसल जाता है। पर कभी मधुमेह के कारण तथा शिशुओ मे उदरकृमि के कारण भी यह व्याधि हो जाती है। कभी-कभी तीव्र ज्वरो या अन्य व्याधियो से चिरकाल तक पीडित रहने के उपरान्त यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—ऐसे रोगी को बारबार तीव्र मिथ्या क्षुधा पीडित करती है, जो थोडा भोजन कर लेने पर शान्त हो जाती है। पुन कुछ काल पश्चात् लगती है। रोगी आलस्ययुक्त एव मुरझाया हुआ रहता हे। ऐसा प्रतीत होता है मानो हृदय डूबा जा रहा है। आहार से शारीरिक भाग नही बनता। रोगी अति भोजन करने पर भी दुर्बल रहता है।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगा कर उसका परिवर्जन करे। लवण और अम्ल पदार्थ सेवन नहीं करे, मलावरोध हो, तो जुवारिश सफरजली मुसहिल १ तोला या कुर्स मुलय्यिन ४ टिकिया १२ तोला अर्क सौफ के साथ खिलाये या जुवारिश कमूनी ७ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा या जुवारिश ऊद शीरी ७ माशा भोजनोत्तर खिलायें। नीहार मुँह नीबू का रस चीनी मिला कर पिलाये और वमन कराये। तथा बादाम की गिरी, पिस्ता की गिरी और अखरोट की गिरी समभाग पीस कर चीनी और घी के साथ पकाकर हलवा बनाकर खिलाएँ। यदि प्लीहाभिवृद्धि के कारण अथवा उदरकृमि के कारण यह रोग हो, तो इनकी चिकित्सा करे।

अपथ्य—लवण, कषाय और विस्वाद (बिकठो) पदार्थो से परहेज कराये।

पथ्य—बल्य एव स्नेहाक्त आहार जैसे—बादाम, पिस्ता आदि की गिरियाँ आवश्यकतानुसार खिलायें।

—०—

१०---वरमे मेदा

नाम---(अ०) वरमुल्मेदा, (उ०) मेदा की सूजन, (स०) आमाशय-शोथ, (अं०) गैस्ट्राइटिस (Gastritis)।

कभी-कभी आमाशय पर उष्ण प्रसेक (नजलात) गिरने से या किसी सक्षोभ के कारण आमाशय मे शोथ हो जाता है।

हेतु—खराब, बासी और गुरु भोजन का अतिसेवन, अधिक स्नेहाक्त तथा मसालेदार या मधुर पदार्थ का सेवन, कच्ची-हरी तरकारियाँ और अम्ल पदार्थ खाना, गाजर, मूली और गला-सडा केला-अमरूद आदि खाना, अति मद्यसेवन आदि से और रोमान्तिका (खसरा) के बाद या आमाशय मे व्रणादि होने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—उदर मे गौरव और बेचैनी होती है। मिचली और थूक अधिक आता है। कभी-कभी अम्लोद्गार आते हैं। मुख से बारम्बार खट्टा पानी निकलता है। क्षुधा कम हो जाती है। तृष्णा तीव्र हो जाती है। मलाव-रोध हो जाता और मूत्र अल्प आता है। शिर शूल और प्राय सूक्ष्म ज्वर भी होता है। शिशुओ मे यह शोथ अन्त्रो की ओर बढकर विरेक होने लगते हैं। आमाशय के ऊपर पीडन करने से पीडा प्रतीत होती है। भोजन का ग्रास या जल का घूँट आमाशय-शोथ के स्थान पर पहुँचने से किंचित् कष्ट प्रतीत होता है। कभी-कभी मरोड के साथ पतले विरेक आने लगते हैं। बारबार मिचली होने से कभी वमन भी हो जाता है। रोगी को भोजन से घृणा हो जाती है। असीम दौर्बल्य एव बेचैनी होती है। कभी-कभी हिचकियाँ आकर रोगी आसन्न-मृत्यु हो जाता है।

चिकित्सा—रोगारम्भ मे आमाशय के ऊपर यह लेप करे---रसवत, लाल-चन्दन, गुलाब का फल, गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा---सबको ५ तोला हरी मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना गरम करके आमाशय के ऊपर लेप करे। तीन दिन के पश्चात् इसी योग मे जौ का आटा १ तोला, खतमी के बीज ६ माशा, अमलतास का गूदा ९ माशा योजित करके प्रयोग करे।

सप्ताह के पश्चात् लेप का निम्न योग काम मे लेवे---बालछड, गुल बाबूना, नाखूना प्रत्येक ६ माशा अमलतास का गूदा ९ माशा, जौ का आटा १ तोला, सूखी मकोय ६ माशा, समस्त द्रव्यो को हरे मकोय के रस मे पीस-कर गरम करके शोथ के स्थान पर लेप करे। हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ५ तोला, हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ५ तोला, शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर प्रात-सायकाल पिलाये। कुछ दिन के पश्चात्

जब तीव्रता कम हो जाय तव गुलवनफ्शा ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, कासनी-मूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजवान ५ माशा मकोय ५ माशा—रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोये और प्रात काल मल-छानकर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिला कर पिला दिया करे। तीन दिन के पश्चात् यदि आवश्यकता पडे तो कुसूस के बीज ५ माशा पोटली मे बांधा हुआ और हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ५ तोला, हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ५ तोला योजित कर सेवन कराये और खमीरा वनफ्शा के स्थान मे शर्वत वजूरी ४ तोला सम्मिलित करें।

मलावरोध हो तो ४ तोला गुलकन्द की योजना करें और दूसरे समय अपराह्नकाल मे यह योग देवें—दवाउल्-मिश्क मोतदिल ५ माशा खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ ९ दाना गुठली निकाला मुनक्का, ३ माशा मकोय, अर्क सौंफ ६ तोला और अर्क विरजासफ ६ तोला मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि शोधन अपेक्षित हो, तो प्रात काल के पेय योग मे आठ दिन तक मकोय और कासनी के रस के फाडे हुए पानी के विना मिलाये, पिला कर ९ वें दिन सनायमक्की ७ माशा योजित कर रात्रि मे भिगो देवे और प्रात काल मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकन्द ४ तोला, तरजीवन ४ तोला—बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला, ५ दाना वादाम की गिरी का शीरा योजित कर पिलाये और दूसरे दिन तवरीद का (शीतजनन) योग देवें। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार तीन विरेचन करावे।

विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला खिलाकर ५-५ तोला हरे मकोय और हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला शर्वत वजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें। यदि ज्वर, मसूरिका, रोमान्तिका या अन्यान्य रोगो के कारण यह रोग हो, तो उसका आवश्यकतानुसार उचित प्रतीकार करें और उनका ध्यान चिकित्सा मे अवश्य रखे।

वक्तव्य—जिन हेतुओ से आमाशय शोथ होता है, उन्ही हेतुओ से आमाशय मे व्रण भी हो जाते हैं। कभी यही रोग चिरकालानुवर्ती होकर व्रण उत्पन्न कर देता है, जिसको पाश्चात्य वैद्यक मे 'गैस्ट्रिक अलसर' (आमाशय व्रण) कहते हैं। इसके हेतु, लक्षण और चिकित्सा लगभग आमाशय शोथ के समान है। अतएव इस रोग का पृथक् वर्णन नही किया गया।

शोथ पक्व होने पर ज्वर और पीडा शमन हो जाती है। उस समय दूध मे कुनकुना जल मिलाकर रोगी को पिलाये। उदर को हाथ से किंचित् पीडन कर निचोडना चाहिये जिससे पक्व शोथ विदीर्ण हो जाय। शोथ विदीर्ण होने

का लक्षण यह हे कि रक्त और पूय वमन एव विरेक के द्वारा निर्हरण हो। पुन व्रण शुद्धि के लिये उस समय ५ तोला मधु और १५ तोला जल मे घोलकर कुनकुना करके पिलाये जिसमे आमाशय पूय से शुद्ध हो जाय। तत्पश्चात् गुलनार फारसी, दम्मुलअख्वैन, गिल अरमनी, कुदुर, कहरुवा शमई प्रत्येक ६ माशा--सबको बारीक पीसकर चूर्ण बनाये। इसमे से ६-६ माशा चूर्ण सवेरे-शाम सेवन कराये।

अपथ्य--अम्ल, मसालेदार और तीक्ष्ण पदार्थो से परहेज कराये।

पथ्य--पतला और शीघ्रपाकी आहार देवे। जब रोग के लक्षण हल्के हो जायँ, तब यवमण्ड या मुर्गी के बच्चो का शूरबा बिना मसाला के पकाया हुआ या बिना मिर्च का बकरी का शूरबा, मूँग की नरम खिचडी या खश का दूध के साथ देवे।

११--सूए हज़्म

नाम--(अ०) सूएहज़्म, जोफो हज़्म, फसादे हज़्म तुख़म, (उ०) बदहज़्मी, तुख्मा, (स०) अजीर्ण, अपच। (अ०) डिस्पेप्सिया (Dyspepsia), इन्‌डाइजेस्चन (Indigestion)।

वक्तव्य--कुछ लोगो ने जोफेमेदा, जोफे हज़्म, सूए हज़्म और तुख्मा का वर्णन एक साथ किया है, क्योकि इन सबके हेतु लक्षण और चिकित्सा लगभग एक समान है। परतु, धात्वर्थ के विचार से इनमे सूक्ष्म भेद हे। **जोफ मेदा** मे आमाशय दुर्बल हो जाता है, जिससे आहार का पचन विलब से होता है, किन्तु **जोफे हज़्म** मे केवल पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है, जिससे साधारण भोजन देर मे पचता हे और जब उसका सम्यक् परिपाक न होकर वह दूषित हो जाता है, तब उसे **सूए हज़्म** या **फसादे हज़्म** कहते है। **तुख्मा** मे भोजन बिल्कुल नही पचता, प्रत्युत् या तो दूषित होकर किसी अप्राकृत पदार्थ मे परिणत हो जाता है अथवा विरेक या वमन आदि के द्वारा ज्यूँ का त्यूँ (अपक्व दशा मे ही) निस्सरित हो जाता है।

हेतु--आमाशय-विकार, अनियमित भोजन, भोजन को खूब चबा-चबा कर नही खाना इसके प्रधान हेतु है। इसके बाद मद्य, तम्बाकू, चाय, कहवा और बर्फ आदि का अतिसेवन, अधिक शारीरिक या मानसिक श्रम तथा शोक एव चिन्ता आदि भी प्राय यह रोग उत्पन्न कर दिया करते है।

लक्षण--विभिन्न रोग एव रोगियो मे इसके लक्षण अति विभिन्न होते है। पर साधारणतया भोजन करने के तीन घटे पश्चात् उदर मे उद्वेष्टन, गौरव और

बेचैनी प्रतीत होती है। कभी मिचली आती है और कभी वमन हो जाता है। कभी मलावरोध हो जाता है। कभी श्वेत वर्ण के विरेक होते हैं, जिनमे भोजन ज्यूँ का त्यूँ (अपरिपक्व दशा मे) निर्हरण होता है। अम्लोद्गार आते हैं। मुख मे वारबार खट्टा पानी भर जाता है तथा मुख का स्वाद बिगड जाता है। आलस्य, शिर शूल, हृत्स्पन्दन और आमाशयिक द्वार पर (हृदय के पास) मन्द-मन्द पीडा होती है। मूत्र श्वेत वर्ण का आता है और उसमे सफेदी तलस्थित होने लगती है (जो अपक्व आहार होता है)। कभी-कभी हृदयोद्वेष्टन होता और लवण एव अम्ल-उद्गार आते हैं।

चिकित्सा—यदि उष्णता के कारण यह रोग हो और उदर मे पीडा एव बेचैनी मालूम होती हो, तो प्रथम उष्ण जल मे सिकजबीन मिला कर पिलायें और रोगी को वमन करायें। पीडा के स्थान पर उष्ण जल बोतल मे भर कर बोतल को उदर के ऊपर फेरते रहे। इसकी सेंक से पीडा मे कमी होगी। अथवा प्रथम ६ तोला इमली जल मे उबाल-छानकर उसके ऊपर ७ माशा सनाय मक्की के महीन चूर्ण का प्रक्षेप देकर रोगी को पिलाये, जिसमे विरेक हो कर तबीयत शुद्ध हो जाय। तदुपरान्त ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से सौफ और कुसूस के बीज के प्रत्येक ५ माशा ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब मे पीस कर शीरा निकाल कर ४-४ तोले गुलकन्द और सिकजबीन मिला कर पिलाये।

यदि स्वय विरेक हो रहे हो तो उनको बन्द न करे, अपितु तबीयत (प्रकृति) की सहायतार्थ यह ओषधि सेवन करायें—सौंफ ७ माशा, सूखापुदीना ३ माशा, सफेद इलायची का छिलका ५ माशा, गुलकन्द ४ तोला सबको जल मे उबाल-छान कर ४ तोला सिकजबीन मिला कर पिलायें। यदि पीडा तीव्र हो तथा आध्मान हो, तो जल के स्थान मे १० तोला अर्क गुलाब या १२ तोला अर्क सौंफ मे ओषधियाँ उबाल कर देवें। हैजा मे लिखित उपाय तुख्मा मे भी लाभकारी होते हैं। आवश्यकतानुसार उनका परिपालन करें।

पित्त की अधिकता मे जरिश्क ३ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, सौंफ ५ माशा, ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब मे पीस-छान कर ४ तोले सिकजबीन सादा और चार तोले गुलकन्द मिला कर पिलायें और वमन करायें। तदुपरान्त ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, बीज निष्कासित मुनक्का ९ दाना ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब मे पीस-छानकर ४ तोला शर्बत दीनार या ४ तोला गुलकन्द या ४ तोला शर्बत वर्द मुकर्रर मिला कर पिलाये। पीडा की दशा मे सोडावाटर की खारी बोतल पिलाये। तृष्णा तीव्र होने पर सादा सिकजबीन अर्क गुलाब मे मिलाकर बर्फ से शीतल करके थोडा-थोडा पिलाये।

पीडा तीव्र हो तो नमक सुलेमानी खास १ माशा ७ माशा जुवारिश कमूनी कवीर मे मिला कर खिलायें और ऊपर से १२ तोले अर्क बादियान और ४ तोले शर्वत दीनार मिलाकर पिलाये।

रोगनिवृत्ति के उपरान्त पाचन-शक्ति बढाने के लिए कुर्स कमूनी न्यूनाधिक करके जिस प्रकार आमाशय शूल (दर्द मेदा) के वर्णन मे उल्लेख किया गया है, उपयोग कराये अथवा भोजनोत्तर सफूफ-नमक शेखुर्रईस १माशा या सफूफ नमक सुलेमानी खास १ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा या हब्ब पपीता २-२ गोली या कविदी २-२ टिकिया या दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या अनोशदारू लूलुई ५ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा मे से कोई एक योगौषध आवश्यकतानुसार कुछ दिन निरतर सेवन कराये।

टिप्पणी--तुख्मा और वदहजमी (अजीर्ण) मे जव विरेक होते है, तव उनको रोकना नही, प्रत्युत् यावच्छक्य दूपित दोप के विरेक द्वारा निर्हरण मे सहायता करनी चाहिए।

अपथ्य--बादी, गुरु, दीर्घपाकी और आध्मानकारक पदार्थो एव अधिक मसालेदार और उष्ण पदार्थो से परहेज करे। आलू, अरवी, भिण्डी, खरबूजा, केला, गोभी आदि से भी परहेज करे।

पथ्य--रोग की तीव्रता मे यावच्छक्य भोजन नही देवे। रोग निवृत्त होने पर प्रथम पतल और शीघ्रपाकी आहार थोडी मात्रा मे देना प्रार भ करे। जव रोगी स्वास्थ्याभिमुख होता जाय, तब यथावश्यक धीरे- रिे भोजन की मात्रा बढाते जायँ। बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग की दाल, मूँग की नरम खिचडी, डबल रोटी, दूध या शूरबा मे भिगोकर खिलाये। तीतर, बटेर का शूरवा पिलाना, सिरका की चटनी या अदरक का मुरब्बा भोजनोत्तर थोडा-सा खिलाना या पुदीना की चटनी चटाना भी लाभकारी उपाय है।

१२--हैजा

नाम--(अ०, उ०, हि०) हैजा, (स०) विसूचिका, (अ०) कॉलरा (Cholera)।

वर्णन--हैजा मे आहार आमाशय के भीतर दूषित हो जाता है और दूषित विष-द्रव्य सचेष्ट हो कर वमन और अतिसार के रूप मे निस्सरित होता है। अस्तु, सदीद गाजरूनी ने लिखा है कि हेजा आमाशय मे आहार की परिणति एव सशोधन के लिए उसकी चेष्टा करना है तथा तत्स्थ पैत्तिक दोष तनुत्व एव लघुत्व

के कारण वमन द्वारा निर्हरण हो जाता है और श्लैष्मिक दोष गुरु होने के कारण अन्त्र की ओर प्रेरित हो जाता हे तथा अतिसार के द्वारा निर्हरण होता हे।

हकीम जर्जानी और एलाकी का वचन हे कि हेजा तीव्र एव भयकर रोगो मे से हे। इसमे वमन और अतिसार होता हे। पर कभी-कभी केवल विरेक होते हैं, किंतु मिचली उक्त अवस्था मे भी विद्यमान रहती हे। इस रोग का मलभूत हेतु अजीर्ण (सूए हज्म) हे।

यह रोग यद्यपि तीव्र व्याधियो के अन्तर्भूत हे। इसी हेतु इसमे तीव्र उपद्रव प्रकट हुआ करते हैं। जैसे--वमन, अतिसार, असीम दौर्बल्य, नाडीलुप्तता, स्वेद, हस्त-पाद की शीतलता, मूर्च्छा और आक्षेप आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं, किंतु ये इतने आतङ्कपूर्ण नही हैं।

हैजे मे जिस दोष की उल्वणता होती हे, उसके अनुसार इसे पैत्तिक, श्लैष्मिक और सौदावी कहते हैं। जिन दिनो मे वायु के दूषित होने के कारण इस रोग की घटना साधारणतया एव व्यापक हुआ करती है, इसे हैजा वबाई (जनपदोद्ध्वसक विसूचिका) के नाम से अभिधानित करते हैं। सुतरा इस रोग के ये चार भेद हैं--हैजा सफराई, हैजा बलगमी, हैजा सौदावी और हैजा वबाई। स्थान सकोच के कारण यहाँ इनमे से प्रत्येक का पृथक् निदान-चिकित्सा न देकर केवल सामान्य विवरण ही दिया गया है।

हैजे की चिकित्सा मे यह बात विशेषरूपेण ध्यान मे रखने योग्य है कि जब तक वमन और अतिसार के द्वारा सपूर्ण दूषित विष द्रव्य उत्सर्गित न हो जाय, सग्राही ओषधि का उपयोग कदापि न करे। क्योंकि विष द्रव्य का शरीर के भीतर रुका रहना हृदय, मस्तिष्क और अन्यान्य अगो की ओर प्रसृत हो जाने के कारण अत्यन्त भयावह ही नही अपितु सावातिक सिद्ध होता है। सुतरा इस रोग मे यदि दोष वमन या अतिसार मे भली-भाँति निर्हरण न हो, तो मृदुसारक एव विरेचन द्वारा उनकी सहायता करनी चाहिये। जब विष द्रव्य सम्यक् निर्हरण हो जाय, तब शमन ओषधि देना जरूरी है।

फादजहरमादनी (जहरमोहरा), फादजहर हैवानी, दरियाई नारियल, जदवार खताई, पपीता, कालीमिर्च, ऊदसलीब, पियारॉगा इनमे से किसी एक का दोषानुसार स्वतन्त्र व्यवहार हैजा मे लाभकारी एव परीक्षित है। हकीम शरीफ खॉ महोदय लिखते हैं कि जब वमन एव मूर्च्छा प्रकट हो और दॉतो लग जाय, तो २ माशा पपीता अर्क गुलाब मे पीसकर पिलाना, जदवार खताई, ऊदसलीब, दरियाई नारियल प्रत्येक पृथक्-पृथक् ४ रत्ती की मात्रा मे अर्क गुलाब से पीसकर कठ के भीतर टपकाना तथा पादस्नान (पाशोया) करना, सीगी लगवाना और वमन कराना रोगनिवारक उपाय हैं। मूर्च्छा दूर करने के लिये इसी दशा मे

बासलीक या अक्हल सिरा का वेधन कर रक्तमोक्षण करनाखुलासतुल्हिक्मत के लेखक महोदय का परीक्षित है। मीर साहब खुलासा लिखते है कि जब हैजा मे मूर्च्छा आदि प्रकट हो, तब एक लौह खण्ड खूब तप्त करके रोगी की चँदिया पर कुछ दूरी पर रखें और कागजी नीबू उस पर निचोडे तथा चँदिया पर टपकने देवें। इससे मूर्च्छा तुरत दूर होती हे। इसी प्रकार तिल के तेल मे जायफल पीसकर शरीर पर मलने से भी मूर्च्छा दूर होती है। हस्त-पाद मे उद्वेष्टन होने की दशा मे कुनकुना तेल मे कपडा तर करके आमाशय के ऊपर रखने से लाभ होता है। इस रोग मे रोगी को किसी प्रकार की चेष्टा नही करने देना, अपितु शयन कराये रखना और यदि निद्रा न आवे तो निद्राकारक उपाय करना तथा अन्न-पान का सर्वथा परित्याग कर देना ये सर्वोत्तम उपाय है।

—०—

यकृत्पित्ताशयरोगाध्याय (अम्राजजिगर बल्मरारः) २

१——जोफेल्कबिद्

नाम——(अ०) जाफेल्कबिद, (उ०) जोफे जिगर, जिगर की कमजोरी, (स०) यकृद्दौर्बल्य, (अ०) डल्नेस ऑफ लिवर (Dullness of Liver)।

यकृत् की समस्त या कुछ शक्तियो मे विकार आ जाता है, जिससे वह अपनी क्रिया यथावत्‌रूपेण सपादन नही कर सकता।

हेतु——आर्तवावरोध तथा पित्ताशयावरोध के कारण यकृत् मे रक्त या पित्त का सचय, यकृत् का छोटा हो जाना, यकृदावरोध, यकृच्छोथ आदि इसके प्रधान हेतु है। यदि हेतु बलवान होता है या देर तक रहता है, तो सपूर्ण शक्तियो मे दौर्बल्य प्रगट हो जाता है, अन्यथा कुछ ही मे दौर्बल्य होता है।

लक्षण——ताजा मास के धोवन की भॉति विरेक होते है। शरीर का वर्ण परिवर्तित हो कर पीला या सफेदी मायल हो जाता है। कभी श्यामता लिये होता है। क्षुधा कम लगती है। शरीर कृश एव दुर्बल हो जाता है। कभी-कभी यकृत् मे मन्द-मन्द पीडा होती है, जिसकी टीसे दक्षिण की ओर अन्तिम पर्शुका तक जाती है।

चिकित्सासूत्र——मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करें और जिस दोष के प्रकोप एव प्रगल्भता से यह रोग हो उसका शोधन और शमन करें। यकृद्‌बलदायिनी ओषधि और उपायका विशेष रूप से ध्यान रखे। यदि स्वयमेव विरेक आने प्रारम्भ हो जायँ तो तत्क्षण सग्राही ओषधियो का उपयोग न करें, अपितु सुगधित अनुष्णाशीत (मोतदिल) ओषधियो का उपयोग करायें तथा बल्य एव अवरोधोद्‌घाटक (मुफत्तेहात) औषध और उपाय काम मे लेवें।

चिकित्साक्रम—यकृत् के दौर्बल्य मे साधारणतया निम्नलिखित उपक्रम लाभकारी सिद्ध होता है, क्योकि यकृद्दौर्बल्य साधारणतया आक्लेद एव शीत से होता है।

(१) फौलाद भस्म २ चावल ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर ५-५ तोले अर्क मकोय और अर्क सौफ के साथ सवेरे-शाम सेवन करें।

(२) जुवारिश मस्तगी ७ माशा, वनुस्खाकलाँ भोजनोत्तर दोनो समय खिलायें। यदि यकृद्दौर्वल्य कफ की अधिकता से हो तो (१) गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजवान ७ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, विरजासफ ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलाये। (२) अमलतास का गूदा १ तोला, अफसतीन रूमी ६ माशा, इजखिर मक्की ६ माशा, कुष्ठ (कुस्त तल्ख) ६ माशा, जदवार खताई ६ माशा हरे मकोय मे पीसकर यकृत्स्थल पर कुनकुना गरम लेप करे। (३) यदि पित्त के कारण हो, तो जुवारिश आमला खिलाकर ऊपर से इमली १ तोला और आलवुखारा ३ दाना को जल मे भिगो कर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर मीठे अनार का शर्वत २ तोला मिलाकर पिलाये, (४) या कासनी के वीज १ तोला, खीरा-ककडी के वीज ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा ताजे जल मे भिगोकर शर्वत नीलफर मिलाकर पिलाये।

यदि शिशुओ मे यकृत् दौर्बल्य पाया जाय तो (१) जुवारिश मस्तगी रूमी ३ माशा खिलाये। ऊपर से १ माशा सौंफ का शीरा, १ माशा इलायची दाने का शीरा जल मे निकालकर ६ माशा मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पिलाये। (२) जौहर मेदा १ रत्ती भोजनोत्तर फँकाये।

परीक्षित योग—आनन्दरसायन, सफूफ जिगर, जुवारिश आमला लूलुवी आदि।

अपथ्य—ऊष्माधिक्य मे उष्ण पदार्थ और शीत मे शीतल पदार्थ सेवन न कर। मधुर एव अम्ल पदार्थ भी साधारणतया अहितकर सिद्ध होते है। गुड और तेल के वने पदार्थ और आलू, अरवी, कचालू आदि वादी सान्द्र एव दीर्घपाकी वतुओ से परहेज करें।

पथ्य—वकरी का शूरवा, चपाती, कुलफा, पालक, मूँग और अरहर की दाल प्रभृति उपयोग करे।

२—वज्उल् कबिद

नाम—(अ०) वज्उल्कबिद, (उ०) दर्दे जिगर, (स०) यकृच्छूल, (अ०) बिलियरी कॉलिक (Biliary Colic)।

हेतु—कभी उष्ण उपाय काम मे लेने से और धूप आदि मे अधिक भ्रमण करने से या अति मास या मद्य सेवन से और व्यायाम के अभाव से यकृत् मे उष्णता बढ जाती है तथा पित्त की अधिक उत्पत्ति होकर शूल उत्पन्न हो जाता है। कभी नित्य बने रहने वाले मलावरोध के कारण अथवा शीतल एव गुरु आहार सेवन से या बर्फ आदि के अतिसेवन से अथवा दौडने-धूपने के बाद पसीना सूखने से पूर्व जल पी लेने के कारण यकृत् मे शीत का प्रभाव अधिक हो कर अधिक कफ उत्पन्न हो जाता है जो पीडा का हेतु होता है।

लक्षण—दक्षिण ओर की पर्शुकाओ के नीचे यकृत् के स्थान पर अकस्मात् तीव्र शूल होता है, जो पीडन से अधिक पर करवट बदलने से किसी भाँति न्यून हो जाता है। इसी कारण रोगी करवटे बदलता और चिल्लाता है एव पीडा की अधिकता से व्याकुल हो जाता है। मिचली होती है। उबकाइयाँ आती है। कभी हिचकी आती है तथा मलावरोध हो जाता है। चेहरा चिन्तातुर और रोगी अशक्त हो जाता है। रह-रह कर वेदना के आवेग होते है। प्रत्येक आवेग के पश्चात् अतिस कक्षा का दौर्बल्य हो जाता है। कभी तीव्र पीडा के कारण रोगी को मूर्च्छा आ जाती है। कभी-कभी हिचकियाँ इतनी अधिकता से आती है कि कष्ट की तीव्रता से रोगी की दशा बिगड जाती है। सपूर्ण शरीर शीतल एव स्वेद से आक्लेदित हो जाता है। ये लक्षण कुछ घटा और कभी-कभी कुछ दिन तक रहते है। इसके पश्चात् लक्षण कम हो जाते है।

उष्णता के कारण हो तो यकृत् के स्थान पर दाह भी प्रतीत होता है। मूत्र का वर्ण लाल या पीला हो जाता है। तृष्णा की तीव्रता हो, तो और रोगी को तीव्र ज्वर भी हो जाता है।

यदि शीत के कारण हो तो आरम्भ मे मन्द-मन्द पीडा होती है। कुछ काल तक यह दशा रहने के उपरान्त विरेक भी होने लगते है। ओष्ठ और जिह्वा का वर्ण सफेदी-मायल हो जाता है। चेहरे पर भुरभुराहट होती है और नेत्र के पपोटे फूले हुए होते है।

चिकित्सा—जिन द्रव्यो का उल्लेख यकृद्बलदायक औषधियो मे किया गया है, अम्ल द्रव्यो को छोड कर वे सब इसमे भी लाभकारी है। क्योकि अम्ल पदार्थ बलवर्धन के काम मे तो आ सकते है, किंतु अकेले पीडा मे लाभ नही करते।

पीडा के आवेग के समय रोगी को सुखपूर्वक शयन करायें, पीडास्थल पर

सेंक करे अथवा पोस्ते की डोडी को अर्क गुलाब मे क्वाथ करके उससे कोष्ण सेक करें और गुल बाबूना २ तोला, नाखूना, टेसू के फूल, सूखा मकोय, हसराज प्रत्येक दो तोला सब को एक सेर जल मे पका कर और मल-छान कर उससे कोष्ण परिषेक (नतूल) करे।

यदि शीत के कारण यह रोग हो तो सौफ ७ माशा, सौफ की जड ५ माशा, इजखिर की जड ७ माशा, बिल्लीलोटन ७ माशा, सबको जल मे उबाल-छानकर ४ तोला शुद्ध मधु डालकर आठ दिन तक पिलायें। इसके पश्चात् नवें दिन जब चार घडी रात्रि शेष रहे तब उठ कर हब्ब शबयार ७ माशा यथावश्यक गोघृत से स्नेहाक्त करके १२ तोला कुनकुना गरम किये हुए अर्क सौफ से फँका कर शयन करा दे। सवेरे उक्त योग मे तरजीवन ४ तोला, बूरा (शकरसुर्ख) ४ तोला मिला कर और ७ माशा पिसा हुआ सनायमक्की के पत्र सम्मिलित करके पिलाये। आगामी दिन तबरीद (शीतजनन) का योग सेवन कराये। इसी प्रकार दो-तीन विरेचन देने से रोग जाता रहता है, विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् कुर्स खुब्सुल्हदीद १ गोली ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ७ माशा माजून दबीदुल्वर्द मे मिलाकर खिलाये और ऊपर से सौफ ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सूखा मकोय ३ माशा, अर्क बिरजासिफ ६ तोला और अर्क सौफ ६ तोला मे पीसकर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलाये, बलवृद्धि के अर्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाला ५ माशा, हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला, हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला, शर्बत बजूरी ४ तोला के साथ सेवन करायें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद ३-३ गोली खिला दिया करें या नौसादर विद्रुत ५-५ बिदु जल मे मिला कर पिला दिया करे और कबिदी २ गोली भोजनोत्तर खिलाना भी लाभकारी है।

यदि ऊष्माधिक्य से हो तो गुल बनफ्शा ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा, आलूबुखारा ५ दाना, कासनी के बीज ७ माशा, अधकुटा खीरा-ककडी के बीज ७ माशा, गावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, अधकुटा गोखुरू ७ माशा, सबको रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो कर सवेरे मल-छान कर ४ तोला सिकजबीन बजूरी मिला कर एक सप्ताह तक पिलाये। विरेचन की आवश्यकता हो तो आठवें-नवे दिन इसमे सिकजबीन मिलाकर शेष ओषधियो के साथ पुरानी इमली ५ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, तुरजबीन ४ तोला, शीरखिस्त ४ तोला, गुलकन्द ४ तोला, ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा, बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला योजित करके विरेचन देवे। आगामी दिन तबरीद का योग सेवन करायें। मलावरोध हो तो आलूबुखारा ५ दाना, इमली ४ तोला जल मे उबाल कर ४

तोला गुलकन्द मिलाकर पिलाये। तृषा शमनार्थ आलूबुखारा ५ दाना ६–६ तोला अर्क कासनी और अर्क नीलूफर मे भिगोकर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर थोडा-थोडा पिलावे।

हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी शीतल और उष्ण उभय प्रकार के यकृच्छूल मे लाभकारी है। शैखुर्रईस का कथन है कि कासनी प्रत्येक दश मे यकृत की प्रत्कृति से अनुकूलता रखती हे।

आराम होने के पश्चात् बलवृद्धि के लिये मुफर्रेह बारिद ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल या दवाउल्मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरए, उन्नाब वाला या जुवारिश अनारैन या खमीरा मरवारीद मे से कोई एक औषधि ६–६ तोला अर्क बिरजासफ और अर्क गावजबान मे शर्बत नीलूफर या शर्बत अनार शीरी २ तोला मिलाकर इसके साथ सेवन कराये।

टि०—इन उपायो से लाभ न हो, तो यकृद्दौर्बल्य मे उल्लिखित उपाय काम मे लावे।

अपथ्य—मास, अडा, मछली, मधुर एव स्निग्ध आहार से तथा बर्फ और चावल के अतिसेवन से परहेज करे। इसमे भिडी, आलू, अरवी, कचालू, उडद की दाल और सान्द्र पदार्थ अहितकर होते है।

पथ्य—हरी तरकारियाँ, साग-पात, ताजे फल, पतले और शीघ्रपाक आहार सेवन करायें। केवल विरेचन के दिन अपराह्णकाल मे सिवाय मूँग की नरम खिचडी के और कोई आहार नही देवे।

३—वरमुल् कबिद, इजमुल कबिद

नाम—(अ०) वरमुल् कबिद, (उ०) वरम जिगर, (स०) यकृच्छोथ (अं०) हीपेटायटिस (Hepatitis)।

(अ०) इजमुल्कबिद, (उ०) इजम जिगर, (स०) यकृद्वृद्धि; (अ०) एन्लार्जमेंट ऑफ लिवर (Enlargement of Liver)।

इस रोग मे यकृत् के भीतर शोथ (सोजिश) या विकार उत्पन्न होकर साधारणतया यकृत् का आयतन (हजम) बढ जाता है और अन्य विशिष्ट लक्षण प्रगट हो जाते है। ज्ञात हो कि यकृत् भी एक ऐसा उत्तम और कोमल अग है जो न अधिक शीत सहन कर सकता हे और न अधिक उष्णता। यदि विलीनी भवन का प्रभाव किंचित् अधिक पहुँच जाय तो रोग के साथ-साथ शक्तियाँ भी नष्ट हो जाती हे। यदि किंचिन्मात्र भी आवश्यकता अधिक सग्राही औषध का उपयोग किया जाय तो इसमे तत्क्षण काठिन्य उत्पन्न होकर

चिकित्सा से एक सीमा तक उदासीन कर देती है। अतएव इसकी चिकित्सा मे परम सावधानी अपेक्षित है।

हेतु—मास या गरम मसाला आदि का अति सेवन, अति भोजन तथा अति मद्यसेवन, यकृत् पर अभिघात लगना, मधुर और स्निग्ध पदार्थ का अति सेवन, शरीर मे रक्त या पित्त की अधिक उत्पत्ति, कभी-कभी गुरु एव सान्द्र आहारो के अति सेवन से अथवा ज्वर की तीव्रता मे अति जल-सेवन से यकृत् मे अधिक कफ उत्पन्न होकर शोथ उत्पन्न कर देता है। कभी ज्वरोत्तर प्लीहावृद्धि या प्लीहा मे सौदा के प्रभूत सचय से भी यकृत् मे कठिन शोथ उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—यदि शोथ केवल यकृत् के आवरण मे हो तो यकृत् के स्थान पर पीडा होगी, श्वास कृच्छ्रतापूर्वक आयेगा तथा यकृत् की क्रिया मे किसी प्रकार का विकार नही होगा। पर जब यकृत् मे भी शोथ हो तब ज्वर होगा और दक्षिण ओर की पर्शुका के नीचे यकृत् के स्थान पर शोथ प्रतीत होगा और पीडनयुक्त पीडा होगी। श्वास लेने से पीडा मे वृद्धि होगी। यदि शोथ यकृत् के नतोदर भाग मे हो, तो रोगी को मलावरोध होगा, हिचकियाँ आयेगी, हस्त-पाद शीतल होगे और कभी कभी मूर्च्छा भी होगी। यदि उन्नतोदर (उथले) भाग मे शोथ हो, तो खाँसी होगी और श्वास कठिनतापूर्वक आयेगा। कभी-कभी मूत्रावरोध भी हो जाता है। यदि शोथ नतोन्नतोदर उभय पार्श्व मे हो, तो अत्यत भयानक एव साघातिक लक्षण है। यदि रक्त या पित्त की अधिकता से हो, तो उक्त लक्षणो के साथ-साथ चेहरे पर भुरभुराहट होगी तथा जिह्वा का वर्ण श्वेत होगा। पादशोथ होगा, तृष्णा कम होगी और मन्द-मन्द ज्वर होगा। नेत्र के पपोटे फूले हुए होगे कठिन शोथ मे इनके अतिरिक्त यकृत् के स्थान पर टटोलने से यकृत् मे कठिनाई भली-भाँति लाक्षित होती है।

चिकित्सा—रक्तज और पित्तज अर्थात् उष्ण यकृत् शोथ मे जिसमे तीव्र ज्वर, अति तृष्णा और यकृत् के स्थान पर लालिमा और दाह होता है। यदि रोगी बलवान् हो तो बासलीक सिरा का वेधन करे अथवा यकृत् के स्थान पर कुछ जोके लगवाये। यदि शोथ उन्नतोदर हृदय (अर्थात् उथले भाग) मे हो, जो कास एव कृच्छ्रश्वास से पहिचाना जाता है, तो सिरा वेधोत्तर मूत्रल औषधियो का उपयोग कराये। यदि मलावरोध हो तो साथ ही तन्निवारक कोई मृदुसारक औषधि भी देते रहे। किन्तु विरेचन कदापि नही देवें। सुतरा हरी कासनी और हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४-४ तोला, ४ तोला शर्वत बजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलाये। यदि अधिक शाति अपेक्षित हो तो कुर्स जरिश्क ४ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी

४ तोला और हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला, ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलाये। मलावरोध हो तो उक्त शर्बत के स्थान मे खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिला दिया करे।

जब रक्तज या पित्तज शोथ यकृत् के नतोदर भाग मे हो पीडा, दाह, वर और यकृत् मे गौरव के साथ मलावरोध, हिक्का, उबकाई या वमन और कभी मूर्च्छा एव हस्त-पाद की शीतलतायें विकार होते हैं। उक्त अवस्था मे सिरावेध या जलौकावचारण के पश्चात् मृदु-सारक और विरेचन द्वारा दोष का शोधन करना चाहिये। गुतरा गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, कासनी के बीज ७ माशा, सूखा मकोय ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर हरी कासनी और हरी मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४-४ तोला योजित करके ४ तोला गुलकद मिलाकर आठ दिन तक पिलाये। नवें दिन इसी योग मे ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), तरजबीन ४ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, इमली ६ तोला योजित करके सेवन कराये। (तलय्यिन) के दिन हरी कासनी और हरी मकोय का रस इसमे सम्मिलित न करें। दूसरे दिन तबरीद (शीतजनन) का यह योग देवे। दवाउल् मिस्क बारिद ५ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से उन्नाव ५ दाना, कासनी के बीज ५ माशा, खीरा-ककडी के बीज ५ माशा, सूखी मकोय ५ माशा अर्क बिरजासिफ ६ तोला और अर्क मकोय ६ तोला मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ५ माशे समचे रैहाँ के बीज का प्रक्षेप देकर पिलाये। एक-एक दिन के अन्तर से यथापेक्षित २-३ विरेचन देवे। विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला, हरे मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४ तोला, शर्बत बजूरी ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलाते रहे और बलवर्धनार्थ खमीरा आब-रेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा, या दवाउल् मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा या नोशदारूए लूलुवी ५ माशा अर्क बिरजासिफ १२ तोला मे २ तोला मिश्री मिलाकर इसके साथ खिला दिया करे। उष्ण शोथ के आरम्भ मे लाल चदन, कासनी के बीज, गुलाब के फूल, जौ का आटा और गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा यथापेक्षित हरी मकोय के रस मे पीसकर १ तोला गुलरोगन और १ तोला शुद्ध सिरका मिलाकर यकृत् के स्थान पर लेप कराये। तीन दिन के उपरान्त इसमे शोथविलयन औषधियाँ, जैसे अमलतास का गूदा ९ माशा, गुलबाबूना, गेरू, खतमी के बीज, गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा प्रभृति योजित करे।

जब शोथ कफजन्य एव उन्नतोदर यकृत् मे हो तब गुलबनफ्शा ७ माशा,

अफसतीन ५ माशा, बिरजासिफ ५ माशा, सौफ की जड ७ माशा, सूखी मकोय ७ माशा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, कुसूस के बीज प्रत्येक ५ माशा पोटली मे बँधा हुआ रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर और हरी कासनी का फाडा हुआ रस ४ तोला और हरे मकोय का फाडा हुआ रस ४ तोला योजित कर पिला देवे। यदि कास हो तो कासनी और मकोय के रस के बिना उक्त योग मे ५ माशा छिली हुई मुलेठी की योजना करके पिलाये। यदि कफज शोथ नतोदर यकृत् मे हो तो निम्न योग कुछ दिन दोषपाचनौषध की भाँति सबेरे पिलाये--गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, गावजवान, सूखी मकोय, बिरजासिफ अफसतीन प्रत्येक ५ माशा, इजखिरमूल ७ माशा, अनीसून और कुसूस के बीज प्रत्येक ५ माशा पोटली मे बँधा हुआ रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिला दिया करे। दूसरे समय अपराह्न काल मे सौफ, सूखा मकोय ५--५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना १२ तोला अर्क बिरजासिफ मे पीस-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिला दिया करे। सात दिन (सप्ताह) तक यह योग, औषध मिलाकर आठवे दिन प्रातःकालीन योग मे ६ माशा रेवदचीनी योजित करके रात्रि मे भिगो देवे और सबेरे ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरजबीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ४ तोला शीरखिश्त और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिला देवे। एक-एक दिन के अन्तर से तीन बिरेचन देवें। अवकाश के दिन तबरीद (शीतजनन) का योग पिलाये और शोथ के स्थान पर बोल (मुरमकी), अफसतीन, बिरजासिफ, नागरमोथा, बालछड, नाखूना, सूखी मकोय, बाबूना के फूल प्रत्येक ६ माशा, जदवार ३ माशा, रसवत ३ माशा यथापेक्षित हरे मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना लेप कराये। विरेचनो के उपरात २०--२२ दिन निरतर यह औषधि पिलावे--अफसतीन ७ माशा, नौसादर ४ रत्ती जल मे पीसकर अग्नि के ऊपर रखे। जब कासनी एव मकोय के रस की भाँति फटकर हरियाली पृथक् हो जाय, तब छानकर एक बेला पिलायें। दूसरे बेला माजून दबी दुल्वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुम ३ माशा प्रथम खिलाकर हरी कासनी और हरी मकोय के रस का फाडा हुआ पानी ४--४ तोला, शर्बत बजूरी ४ तोला मिलाकर पिला दिया करें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद नोशादरी ३--३ गोली खिला दिया करे या कबिटी २--२ टिकिया खिला दिया करें।

जब शोथ चिरकारी हो जाय और ज्वर भी रहता हो तब ज्वरनिवारणार्थ बिरजासिफ, शुकाई और बादावर्द प्रत्येक ३ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर

प्रात छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी या २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करे और सायकाल सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखी मकोय ३ माशा, अर्क बिरजासिफ ६ तोला, माउल्लहम मकोय कासनीवाला ६ तोला मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और जब शोथ कठिन (सलिब) हो जाय तब सौदा के शोधनार्थ प्रथम यह पाचनौषध पिलाये—कासनी के बीज ७ माशा, गुलाब के फल ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, पित्तपापडा ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा, गुल-बनफ्शा ७ माशा, सूखी मकोय, सौंफ, कासनीमूल प्रत्येक ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल से भिगोकर सबेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलाये। पन्द्रह दिन तक यह औषधि पिलाकर सोलहवे दिन इसी योग मे ७ माशा सनाय मक्की और मिलाकर रात्रि मे भिगो देवे और सबेरे मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकद ४ तोला, तरजबीन ४ तोला, ५ दाने बादाम की गिरी का शीरा मिलाकर विरेचन देवे। एक-एक दिन के अतर यथापेक्षित से ३—४ विरेचन देने चाहिये। अवकाश के दिन उपरिलिखित तबरीद का योग दिया जाय। सशोधनोपरात बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली ५ माशा या माजून दबीदुल् वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुम कबीर ३ माशा खिलाकर अर्क माउल्लहम मकोय कासनीवाला ६ तोला, अर्क बिरजासफ ६ तोला, शर्बत बजूरी मोतदिल ४ तोला या सिकजबीन ४ तोला मिलाकर पिला दिया करे। यकृत् के स्थान पर यह लेप लगायें—अफसतीन रूमी, गूगल, नाखूना, गुलाब के फूल प्रत्येक ६ माशा बाल-छड, रूमी मस्तगी, पीत एलुआ ३—३ माशा, बाबूना के फूल ६ माशा, चिरायता ६ माशा सबको कूट-छानकर हरे मकोय के रस मे पीसकर गरम करके लेप कर लिया करे। यदि कठोरता अधिक हो, तो १ तोला सफेद मोम या १ तोला गुलरोगन और मिलाकर लगाये।

यदि दोष सचित हो जाय और पीव पडने के लक्षण प्रगट हो अर्थात् पीडा, ज्वर और समस्त उपद्रवो मे तीव्रता उत्पन्न हो जाय और मूत्र बिदु-बिदु करके आये तथा पृष्ठ एव पार्श्व के बल लेटना कठिन हो जाय, तो समझ लेवे कि यकृत् मे फोडा बन गया जिसको दुबैलतुल् कबिद (यकृद्विद्रधि—Hepatic Abscess) कहते है। इसका उपक्रम वही है जिसका वर्णन वर्मे मेदा (आमाशय शोथ) मे किया गया है।

टि०—जब यह रोगी चिरकारी हो जाय तब ४ तोला शर्बत बजूरी के साथ ७ तोला ऊँटनी का दूध पिलाने से कुछ दिन मे लाभ हो जाता है। इस रोग मे यदि विरेक होने लगे तो हरे बारतग का रस ५ तोला हरी मकोय के रस की भाँति फाडकर २ तोला रुब्ब बीही मिलाकर पिलाने से भी लाभ होता है।

अपथ्य—समस्त मधुर एव स्निग्ध पदार्थो से परहेज करायें, रक्तज और पित्तज शोथ मे मास, गरम मसाला, लाल मिर्चा, बैगन, मछली, अडा, मेथी का साग, लहसुन, प्याज, अरवी, कचालू, चाय, मक्खन, दूध, दही, खरबूजा, गुड-तेल के बने पदार्थो के खान-पान तथा परिश्रम करने से बचे।

कफज शोथ मे आलू, प्याज, तुरई, टिडा, कद्दू, ककडी, कुलफा, नीबू, दूध, दही, मक्खन, मलाई और ऋतु फल जैसे आम, जामुन, अमरूद, तरबूज, खरबूजा आदि से परहेज करे। कठिन शोथ मे कचालू और मास की बोटी नही खाये। अरवी, आलू, भिडी और चने-मसूर की दाल, बर्फ और शीतल जल से परहेज करें।

पथ्य—पित्तज और रक्तज शोथ मे भोजन अत्यल्प प्रमाण मे देवे और यवमड या साबूदाना या खीरा-ककडी की खीर के सिवाय अन्य कोई आहार नही देवे। यदि क्षुधा अधिक प्रतीत हो तो पालक उबालकर उसके पानी मे रोटी का बकला डालकर खिलाये। रोग निवृत्त होने के उपरान्त शीतल पदार्थ कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा खश की खिचडी, अनार, अगूर, सेब, नाशपाती आदि देवें। कफज शोथ मे रोगकाल मे थोडी मात्रा मे निम्नोक्त आहार देवे—

साबूदाना की खीर या चणक-जल या अरहर की दाल के यूष मे गरम मसाला मिलाकर पिलाये। मकोय और कासनी के पत्तो का भुजिया बनाकर चपाती के बकला से खिलाये। रोग निवृत्ति के पश्चात् मुर्गा, तीतर और बटेर का शूरबा गरम मसाला डालकर देवें। कठिन शोथ मे मुर्गी का बच्चा, तीतर या बकरी का शूरबा चपाती के साथ खिलाये। किन्तु अल्प प्रमाण मे देवें। समस्त भेदो मे विरेचन के दिन सिवाय मूँग की नरम खिचडी के अन्य कोई आहार नही देवें।

—o—

४—सूउल्किन्य व इस्तिस्काऽ

नाम—(अ०) सूउल्किन्य, इस्तिस्काऽ लहमी (आम), (स०) सर्वाङ्ग शोथ, (अ०) ऐनासारका (Anasarca)

—(अ०) इस्तिस्काऽ, (उ०) जलधर, (स०) शोफ, (अ०) ड्राप्सी (Dropsy)।

—(अ०) इस्तिस्काऽ जिक्की, (उ०) पेट मे पानी पड जाना, (स०) जलोदर, (अ०) असाइटीज (Ascites)।

वक्तव्य—इस रोग मे प्रथम यकृत् दुर्बल होता है और यकृद्दौर्बल्य के लक्षण प्रगट होते है। इस रोग मे प्राचीन यूनानी वैद्यो के मत से यकृत् अपने दौर्बल्य

या विप्रकृति या अन्यान्य अगजात विकार के अनुवन्ध से शुद्ध रक्त उत्पन्न नही कर सकता । इसी अनुवन्ध से इसको प्रथम **सूउल्क़िन्यः** (सूऽज्त्रविकार, किन्य पूँजी अर्थात् शरीर या यकृत् की पूँजी—रक्त का दूपित हो जाना) कहते है । यह अवस्था इस्तिस्काऽ रोग की पूर्व पीठिका या भूमिका (पूर्वरूप) होती है । पुन जव इस प्रकार उत्पन्न दूपित रक्त धातुओ के पोपण मे काम आने के अयोग्य एव सम्यक्तया शोपित नही होता ओर अगो के मव्य ठहरकर सचित हो जाता है तव उक्त अवस्था को **इस्तिस्काऽ** कहते हैं । इसके निम्न भेद होते हैं—

(१) जव दुष्ट भूत श्लैष्मिक दोप समस्त शरीर के अग-प्रत्यग मे व्यापमान हो जाता हे तब उसे **इस्तिस्काऽ लहमी** कहते है । (२) जव द्रव उदर गुहाओ मे भर जाता है और उदर वढ जाता हे तव उसे **इस्तिस्काऽ जिक्की** कहते हैं । (३) जव द्रव अल्प और साद्रीभूत होता है ओर उससे वायु उत्पन्न होकर उदरावकाशो मे भर जाता है तथा जिक्की की-सी अवस्था उत्पन्न हो जाती है तव उसे **इस्तिस्काऽ तबली** कहते है । आयुर्वेद का यह 'वातोदर' ज्ञात होता है ।

हेतु—स्त्री सहवास के तुरत बाद शीतल जल या बर्फ पी लेने या धूप मे मार्ग चलकर आते ही शीतल जल पीने से अथवा व्यायाम और परिश्र - के पश्चात् स्वेद शुष्क होने से पूर्व जल पीने या बर्फ और शीतल जल अति सेवन अथवा शीतल-स्निग्ध पदार्थों के अति सेवन से यकृत् दुर्बल होकर प्रचुर कफ उत्पन्न करता है । और यह कफ जो अभी आम और अपक्व आहार के रूप मे होता हे और अगो के पोषण की योग्यता नही रखता, सपूर्ण शरीर मे व्यापमान होकर शरीर के स्रोतो मे प्रवेशित होकर सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्काऽ लहमी) उत्पन्न करता है । कभी-कभी इन्हीं कारणो से आहार दूषित होकर द्रव रूप मे परिवर्तित हो जाता है और यकृत् से नाभि की ओर जाकर उदरावकाशो मे भर जाता है, जिसको इस्तिस्काऽ जिक्की (जलोदर) कहते है । कभी इन्ही हेतुओ से साद्रीभूत द्रव उत्पन्न होकर उससे बाष्प उठते हैं और उदरावकाश मे भरकर वायु का रूप ग्रहण करते हैं जिनसे उदर स्फीत हो जाता है और जिसको इस्तिस्काऽ तबली (वातोदर) कहते हैं ।

लक्षण—इस्तिस्काऽ लहमी मे सपूर्ण शरीर फल जाता (सशोफ) है । शरीर पर शोथ जैसा प्रतीत होता हे । इसको हाथ से स्पर्श करने पर वह कोमल और ढीला मालूम होता है । शरीर के किसी स्थान पर उँगली रख कर पीडन करने से गर्त वन जाता है और उँगली हटाने के कुछ देर वाद पुन' गर्त नष्ट होकर शरीर यथापूर्व हो जाता है । मूत्र गाढा होता है और उसका वर्ण श्वेत हो जाता हे । मल प्रमाण मे अधिक और मृदु आता है । तृष्णा कमी के साथ लगती है । इस्तिस्काऽ जिक्की (जलोदर) मे समस्त शरीर ढीला

होकर सूख जाता है। उदर बहुत बढ जाता है। उदर की त्वचा बहुत चमकीली हो जाती है और काच की भाँति चमकती है। करवट बदलने से उदर मे जल के छलकने का-सा शब्द होता है। नाडी अत्यत दुर्बल (जईफ) हो जाती है। श्वास कृच्छ्रतापूर्वक आता है। दीर्घकाल तक यह रोग रहने के पश्चात् हस्त-पाद पर शोथ आ जाता है। मूत्र अल्प प्रमाण मे आता है। इस्तिकाऽतवली (वातोदर) मे उदर फूला हुआ (स्फीत) होता है। श्वास लेने मे कष्ट होता है। परतु जलोदर की अपेक्षया इसमे बोझ कम मालूम होता है। उदर मे खिचावट और तनावट होती है। यदि उदर को हाथ से ठोका जाय तो ढोलवत् शब्द होता है। उद्गारो के द्वारा या नीचे से कुछ अपान वायु के खुलने पर आराम मालूम होता है और खिचाव मे किसी भाँति कमी हो जाती है। इस भेद मे अन्य भेदो की अपेक्षया हस्तपाद पर शोथ एव भुरभुराहट कम होती है।

चिकित्सा—रोगारम्भ मे रोगी को कसौदी के पत्र १ तोला और काली मिर्च ५ दाना पानी मे पीस-छानकर सवेरे पिलाये अथवा सवेरे ऊँटनी का दूध ७ तोला गुलकद ४ तोला मिलाकर प्रथम तीन दिन तक इसी मात्रा मे पिलाये। इसके उपरान्त एक-एक तोला दूध प्रतिदिन उत्तरोत्तर बढाकर ४१ तोला तक पहुँचाये। पुन इसी प्रकार एक-एक तोला प्रति दिन घटाकर प्रथम मात्रा (७ तोला) तक पहुँचाये और तीन दिन तक इसी मात्रा मे पिलाकर इसका परित्याग करायें। सायकाल माजून दबीदुल्वर्द ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना ६–६ तोले अर्क मकोय और अर्क बिरजासिफ मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलाये। यकृत की उष्णता (तस्खीन) और प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये गुलगाफिस ५ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, सौंफ, खरबूजा के बीज, कासनी के बीज, कासनी की जड ७–७ माशा, कुसूस के बीज ५ माशा (कपडे मे बँधा हुआ)—सबको रात्रि मे जल मे भिगोकर सवेरे मल-छानकर शर्बत दीनार ४ तोला और हरी कासनी, हरी मकोय और हरा कुकरौंधा इनके स्वरस का फाडा हुआ पानी ४–४ तोला मिलाकर पिलाये और यह लेप लगाय—अमलतास का गूदा ९ माशा और बाबूने का फूल, नाख्ना, बालछड, नागरमोथा, रेवद चीनी प्रत्येक ६ माशा सबको यथावश्यक हरी मकोय के पत्रस्वरस मे पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करें।

यदि शोथ के साथ उष्णता भी हो तो कुर्स जरिश्क ४॥ माशा खिलाकर ऊपर से हरी कासनी और हरे मकोय के फाडे हुए रस का ४–४ तोला पानी और ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें। यदि इन उपायो से लाभ

न हो और सशोधन अपेक्षित हो तो पाचन औषधि पिलाकर उष्ण विरेचन से शोधन करे। सुतरा सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्काऽ लह्मी) मे निम्नलिखित पाचन औषधि पिलाये---सूखा मकोय ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड ७ माशा, सौंफ की जड ५ माशा, हसराज ७ माशा, गुलगाफिस ५ माशा, सौफ ७ माशा, खीरा-ककडी के बीज ७ माशा, ५ माशा कुसूस के बीज पोटली मे बँधे हुए, छिली हुई मुलेठी ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर, प्रात मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा या ४ तोला गुलकन्द असली मिलाकर आठ दिन तक पिलाये। नवे दिन इन ओषधियो के साथ अगर ५ माशा, मस्तगी ३ माशा, दालचीनी ५ माशा, सनाय मक्की ७ माशा अधिक मिलाकर भिगोयें। प्रात इसमे ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला शीरखिश्त, ४ तोला तरजबीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा और मिलाये और छानकर पिलाये। दूसरे (आगामी) दिन शीतजनन (तबरीद का) योग सेवन कराये। तीन विरेचन देने के उपरात दावउल् कुर्कुम कबीर ५ माशा सेवन कराके ३ माशा कुसूस के बीज, ५ माशा सौफ, ३ माशा सूखा मकोय, १२ तोला अर्क बिरजासिफ मे पीसकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिला कर कुछ दिन पिलाते रहे। जलोदर (इस्तिस्काय जिक्की) मे भी ये ही उपाय प्रयोग मे लेवें और माजून तुर्बुद ७ माशा मिलाकर (प्रात) ऊपर से ८ तोला अर्क बीख कासनी २ तोला शर्बत असारून मे मिलाकर प्रात-सायकाल पिलाये और हब्ब इस्तिस्काऽ २ गोली रात्रि मे सोते समय खिला दिया करे। शोधन अपेक्षित हो तो उपरि लिखितानुसार ३-४ विरेचन देवे। तदुपरात दवाउल् कुर्कुम कबीर ५ माशा खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और अनीसून ३ माशा ६-६ तोला अर्क बादियान और अर्क बिरजासिफ मे पीस-छानकर ४ माशा खमीरा बनफशा मिलाकर पिला दिया करे। यदि मलावरोध हो तो खमीरा बनफशा के स्थान मे ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिला दिया करें और भेड की पुरानी मीगनी, नागरमोथा, नाखूना, गुलबाबूना, सूखी मकोय, अफसतीन, बूरए अरमनी, मर्जन्जोश, बिरजासिफ, बोल (मुरमक्की) प्रत्येक ६ माशा, जुदबेदस्तर ६ माशा समस्त द्रव्यो को हरे मकोय के रस मे पीसकर सिरका मिलाकर उदर के ऊपर लेप करे और गधक बूरए अरमनी, सेधा नमक प्रत्येक ६ माशा जल मे उबालकर गरम-गरम पानी से स्नान करायें। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो किसी चतुर डाक्टर से टेपिग के द्वारा पानी निकलवायें, किन्तु समस्त जल एक ही बार न निकलवाये, प्रत्युत् कई बार थोडा-थोडा करके निकलवायें।

इस्तिकाऽ तबली (वातोदर) मे प्रात काल वही योग दिया जाय जिसका उल्लेख सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्काऽ लह्मी) मे हो चुका है। किन्तु इसमे अनीसून

५ माशा, दालचीनी अधकुटा (यव कुट किया हुआ) और स्याह जीरा ५–५ माशा वढा देवे। सायकाल सौफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, स्याह जीरा ३ माशा, सोठ ३ माशा, इलायची का दाना ३ माशा ६–६ तोले अर्क सौफ और अर्क पुदीना मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्वत दीनार मिलाकर पिला दिया करे तथा सूखा बाजरा, सेधा नमक और रेतवालू तीनो सम भाग लेकर कपडे की पोटली मे बाँधकर गरम करके उदर के ऊपर टकोर किया करे। तदुपरात गुलवाबूना, नाखूना, सुदाबपत्र, ऊदवलसाँ, तज प्रत्येक ६ माशा, जुदवे-दस्तर ३ माशा, सिलारस २ माशा सवको कूट-छानकर यथावश्यक रोगन वाबूना मिलाकर पीसकर कुनकुना गरम करके लेप कर दिया करे। आठ दिन औषधि मिलाने के पश्चात् यथाविधि विरेचन देवे और आगामी दिन तवरीद (शीत-जनन वा ठढाई) के स्थान मे इस योग का उपयोग करे—दवाउल् मिस्क मोत-दिल ७ माशा प्रथम खिलाकर सौफ ५ माशा, उन्नाव ५ दाना ६–६ तोले अर्क सौफ और अर्क गावजवान मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्वत वनफशा मिलाकर पिलाये। तीन विरेचनो के पश्चात् यदि अपेक्षित हो तथा ज्वर न हो तो उपरिलिखित विधि के अनुसार ऊँटनी का दूध पिलाना प्रारभ कर देवे। विरेचनो से छुट्टी पाने के पश्चात् बलवर्धनार्थ माजून दवीदुल्वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुस कबीर ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा एक टिकिया खुब्सुल्हदीद (मण्डूरभस्म) मिला-कर खिला दिया करें। ऊपर से अर्क विरजासिफ १० तोला या अर्क मकोय १२ तोला शर्वत वनफशा २ तोला या शर्वत वजूरी ४ तोला मिलाकर पिला दिया करे। कभी-कभी पाडुजन्य शोथ (औराम इस्तिस्काऽ) को उतारने के लिये १ तोला सोठ का चूर्ण रात्रि मे मिट्टी के कोरे पात्र मे जल मे भिगो देते है और प्रात काल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर पिलाते हैं। जव इसके ऊष्मा भी हो तव इसी गुण के लिये १ तोला देशी अजवायन उसी प्रकार रात्रि मे भिगोकर प्रात काल पानी निथारकर (जुलाल) पिलाने से भी उपकार होता है। इस रोग मे ऊष्मा के लिये ४–४ तोला हरी कासनी और हरी मकोय के फाडे हुए रस का पानी ४ तोला शर्वत वजूरी मिलाकर पिलाने से भी उपकार होता है। जव अत्यधिक विरेक होते है। तव ४ तोले हरे वारतग के फाडे हुए रस का पानी मे २ तोला रुब्ब विही मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। मला-वरोध निवारण के लिये उसारारेवद १ माशा ७ माशा माजून दवीदुल् वर्द मे मिलाकर खिलाने और ऊपर से १२ तोले अर्क विरजासिफ मे ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलाने से उपकार होता है। हस्त-पादशोथ मे अफसतीन ६ माशा, अपतीमून ६ माशा इनको यथावश्यक हरी मकोय

के रस मे पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करने से उपकार होता है। ो योग भी लाभकारी है--बोल, पीला एलुआ, इन्द्रायन की जड, सोठ, अबाहलदी, पीली हड का वक्कल, रेवद चीनी, सफेद निशोथ प्रत्येक ६ माशा, सनाय मक्की १ तोला समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर घी कुवार के रस मे गूँधकर जगली बर के बराबर गोलियाँ बनाये। इसकी मात्रा एक गोली से ३ गोली तक है। इसमे से आवश्यकतानुसार देवे। हर प्रकार के शोथ (इस्तिस्काऽ) मे लाभकारी है।

वक्तव्य—कतिपय स्त्रियो मे इस रोग के साथ गर्भ का सदेह होता है। इसकी परीक्षा यह है कि शोथ वाली स्त्री की नाभि लौटी (उलटी) हुई होती है। किन्तु, गर्भवती की नही होती। शोथवाली स्त्री के लेटते समय जल उभय ओर कूल्हो मे सचित हो जाता है, परतु गर्भ मे यह दशा नही होती। शोथ के प्रत्येक भेद मे सिरावेध वर्ज्य (निपिद्ध) है। किन्तु स्त्रियो मे मासिक स्राव अवरुद्ध हो जाने से यकृत् की विकृति होकर यह रोग प्रगट हुआ हो तो साफिन सिरा का वेध लाभकारी हो सकता है। जव यह रोग वालको को हो जाय, तव चना के वरावर दालचीनी या गुजा-प्रमाण निर्विसी लेकर शिशु की माता के दूध मे घिसकर प्रात साय उभय काल शिशु के कण्ठ के भीतर चमचा से टपकाने से लाभ होता है। सर्वांगशोथ (इस्तिस्काऽ लहमी) मे कास और पाँवो पर फोडे-फुसी निकल आना अरिप्टसूचक है। यदि जलोदर (इस्तिकाऽ जिक्की) मे वृपणो तक शोथ हो जाय, तो यह कष्टसाध्य वा दुश्चिकित्स्य हे। शोथ रोगी के मल मे रक्त आने लगे तो यह भी एक अरिष्ट लक्षण है।

अपथ्य—जल के स्थान मे रोगी को केवल अर्क मकोय एव अर्क सौंफ पिलाये। कोई वादी, गुरु, दीर्घपाकी और स्निग्ध आहार खाने के लिये नही देवें। मीठे पानी से स्नान नही कराये। प्रारभ मे प्रात-सायकाल भोजन से एक घण्टा पूर्व व्यायाम वा स्नान कराये।

पथ्य—उष्ण एव रूक्ष पदार्थ अत्यल्प प्रमाण मे आवश्यकतानुसार देना चाहिये। बकरी का शूरबा या यखनी गरम मसाला डालकर देवे। रोग-निवृत्त होने पर रोटी मे सोडा और नमक मिलाकर शूरबा के साथ देवें। मुर्गा, तीतर, बटेर और चकोर आदि की यखनी बिना घी के गरम मसाला डालकर देवे। सिरका मे पडा हुआ मूली का अचार, आटी और जीरा आदि मिली हुई पुदीना की चटनी देवें।

---०---

प्लीहा वलोम रोगाध्याय (अमराज तिहाल व बानकरास) ३

१---यरकान

नाम---(अ०) यरकान , (उ०) यरकान, पीलिया , (स०) कामला, (हि०) कँवल, कॉवर , (अ०) जॉन्डिस (Jaundice), इक्टेरस (Icterus) ।

इस रोग मे कभी चेहरा और नेत्र पीले या काले हो जाते है । कभी सपूर्ण शरीर तो कभी केवल नेत्र ही पीले या काले हो जाते है । रोगी के चेहरा का वर्ण-अप्रिय दर्शन हो जाने के अतिरिक्त और अनेकानेक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती है ।

हेतु—कभी उष्ण एव तीक्ष्ण पदार्थो के अतिसेवन या लू लगने से यकृत् मे पित्त की अधिक उत्पत्ति होकर रक्त मे मिल जाता है और नेत्र, मुखमण्डल तथा शरीर का वर्ण पीला कर देता है। कभी यकृत् या प्लीहा की वाहिनियो मे अवरोध उत्पन्न हो जाने से पित्त या सौदा पित्ताशय एव प्लीहा मे नही जाते और रक्त के साथ मिलकर शरीर मे व्यापमान होकर उसका वर्ण पीला या काला बनाते है । जब पित्त के कारण वर्ण पीला हो जाय तो उसे यरकान अस्फर और सौदा के कारण वर्ण काला हो जाय तब उसे यरकान असदद या यरकान सिधी कहते है ।

लक्षण—यरकान अस्फर मे मूत्र पीला और यरकान अस्वद मे स्याही मायल रग का आने लगता है। पुन नेत्र का वर्ण पीला हो जाता है। ओष्ठ, दन्त-वेष्ट, जिह्वा और त्वचा का वर्ण सूक्ष्म पीताभ या कृष्णाभ-भूरा हो जाता है। पाचन विकृत हो जाता है । मुख का स्वाद तिक्त हो जाता है। क्षुधा नही लगती । स्निग्ध एव स्नेहाक्त आहारो से घृणा हो जाती है । उदराध्मान रहता है। उद्गार आते है । अवरोध (सुद्दा) के कारण पित्ताशय से पित्त का स्राव अन्त्रो मे नही होता । अतएव मल का वर्ण मलिन एव मटियाला होता है । बेचैनी, अनुत्साह, दौर्बल्य एव प्रकृति विकार होता है। त्वक् कण्डू होता है। कभी-कभी फोडे फुसियाँ निकल आती है । कभी रोगी को प्रत्येक वस्तु पीली दिखाई देने लगती है। रोग पुराना होने पर अतीव दौर्बल्य या प्रलाप एव आक्षेप आदि अरिष्ट लक्षण प्रगट होकर रोगी का अन्त कर देते है ।

चिकित्सा—यदि केवल ऊष्मा के कारण यह रोग हो तो अनार, तरबूज, कद्दू, खीरा इनमे से प्रत्येक का ३-३ तोला रस ४ तोला शर्बत वजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलाने से लाभ होता है । इसी प्रकार १ तोला चने की भूसी रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर सवेरे ऊपर से निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्बत वजूरी मिलाकर पिलाने से आराम हो जाता है। अथवा हरी मूली के पत्ते के फाडे

हुए रस का पानी ७ तोला बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला मिलाकर पिलाने से भी अति शीघ्र आराम हो जाता है। उन्नाब और आलूबुखारा प्रत्येक ५ दाना कासनी के बीज ५ माशा, सूखी मकोय ५ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो कर सवेरे मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर हरे मकोय और हरी कासनी के फाडे हुए रस का पानी ४-४ तोला अधिक मिला कर पिलाने से ऊष्मा एव पित्तोद्वेग शान्त होता है।

यदि इन उपायो से लाभ न हो तो पाचन का निम्नलिखित योग पिलायें-- गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड ७ माशा, सौफ ७ माशा, गावजबान, कासनी के बीज और खीरा ककडी के अध-कुटे बीज प्रत्येक ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, गुलनीलूफर ५ माशा, आलू-बुखारा ५ दाना, अधकुटा गोखरू ७ माशा सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगो-कर सवेरे मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर आठ दिन तक पिलावे। नवें दिन ७ माशा सनाय मक्की और ५ तोला इमली इसी योग मे और बढाकर रात्रि मे भिगो देवे और सबेरे मल-छानकर इसमे तरजबीन, शीरखिश्त, बूरा (शकरसूर्ख) और गुलकद प्रत्येक ४ तोला और मिलाकर पिलायें। आगामी दिन ठढाई (तबरीद शीतजनन) का यह योग देवे--खमीरा गावजबान १ तोला, चाँदी के एक वरक मे लपेट कर प्रथम खिलाये और ऊपर से उन्नाव ५ दाना, खीरा-ककडी के बीज ५ माशा, सौंफ ५ माशा, अर्क बिरजासिफ १२ तोले मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत बजूरी या ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर समूचे रैहा के बीज ५ माशा छिडक कर पिलाये। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार दो-तीन विरेचन देवे।

यरकान अस्वद मे यह दोष पाचन औषधि (मुजिज) पिलायें--कडके बीज, सूखी मकोय, कासनी की जड, सौफ की जड, करफस की जड, अनीसून, फुक्काह इजखिर प्रत्येक ५ माशा, बाल छड ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना रात्रि मे जल मे भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला सिकज-बीन बजूरी मिलाकर आठ दिन तक पिलाये। नवें दिन इसी योग मे सनाय मक्की ७ माशा, अफसतीन ५ माशा, रेवद चीनी ५ माशा अधिक मिलाकर रात्रि मे भिगो देवे और सवेरे अमलतास की गुद्दी ५ तोला, तरजबीन ४ तोला, बूरा ४ तोला और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा अधिक मिलाकर ४ तोला शर्बत दीनार डालकर पिलायें और दूसरे दिन ठढाई (तबरीद) के स्थान मे मुलेठी, सौंफ और अनीसून प्रत्येक ५ माशा जल मे उबाल-छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर ५ माशा रैहाँ के बीज छिडक कर पिलायें। तीन विरेचन देने के पश्चात् हरी कासनी और हरे मकोय के फाडे हुए रस का पानी ४-४ तोला ४

तोला शर्वत वजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें या हरी मूली के पत्ते के फाडे हुए रस का पानी ७ तोला ४ तोला बूरा मिलाकर पिलाते रहें और अर्क गुलाव तथा तीक्ष्ण सिरका समभाग मिलाकर आवनूस की सलाई से नेत्र मे अजन करते रहें अथवा बिजौरे का छिलका जल मे पीस कर चाँदी की सलाई से नेत्र मे लगाये। इससे नेत्र का पीलापन और मलिनता दूर हो जाती है। अथवा कलौंजी ७ दाना स्त्री के दूध मे घिसकर नाक मे टपकाने से भी नेत्र का पीलापन दूर हो जाता है। आराम होने पर वलवर्धनार्थ जुवारिश अनारैन ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा या मुफर्रेह वारिद ५ माशा या खमीरा आवरेशम शीरा उन्नाव वाला ५ माशा सेवन करायें।

वक्तव्य—मूली, सतरा, गडेरी (ईख की), गाजर, और लोकाट यरकान के लिये विशेष लाभकारी है।

अपथ्य—स्निग्ध एव स्नेह पदार्थ, वादी एव गुरु पदार्थ जैसे आलू, अरवी, भिंडी आदि सेवन न करें। उष्ण पदार्थ, जैसे लहसुन, प्याज और लालमिर्च के सेवन से परहेज करें।

पथ्य—रोगारभ मे जव तक पाचन यथावत् न हो जाय लघु एव शीघ्र पाकी आहार सेवन करायें। १० तोला यवमड, ४ तोला शर्वत वजूरी मिलाकर पिलायें या सावूदाना पकाकर खिलायें। रोग घटने पर मुर्गी के बच्चे या बकरी का शूरवा या चना का पानी चपाती के साथ देवें। विरेचन के दिन केवल मूँग की नरम खिचडी खिलायें। शाको मे से कद्दू, टिंडा, पालक आदि यथाभ्यास देवे।

---o---

२—इजम तिहाल व वरम तिहाल

नाम—(अ०) इज्मुत्तिहाल, वरमुत्तिहाल, (उ०) तिल्ली का वरम (वढ जाना), (स०) प्लीहोदर, प्लीहजठर, प्लीहावृद्धि, (अ०) एन्लार्जमेट ऑफ दी स्प्लीन (Enlargement of the spleen), स्प्लीनाइटिस (Spleenitis)।

इस रोग मे प्लीहा अपने स्वाभाविक आकार से अधिक वढ जाती है और उदर के वाई ओर पर्शुकाओ के किनारे के नीचे दवाकर देखने पर उसकी प्रतीति हो सकती है।

हेतु और लक्षण—प्लीहाशोथ प्राय कठिन हुआ करता है। इसके अनेक हेतु होते हैं। पित्त, कफ और सौदा के अतिरिक्त यह वायु (रियाह) से भी प्रगट हो जाया करता है। इस रोग का सवसे व्यक्त एव प्रमुख लक्षण विकारी

स्थल का शोथयुक्त एव कठिन हो जाना है। इसके अतिरिक्त अम्लोद्गार, हृदय की जलन, अम्ल वमन आदि भी इसके लक्षण है। उष्ण शोथ की दशा मे प्रदाह (शोथ), तृष्णा, कृष्णाभ रक्तमूत्र, प्लीहा स्थान की उष्णता तथा वायु-जन्य शोथ (वरम रीही) की दशा मे आटोप, लघुत्व और पीडन करने से दब जाना आदि लक्षण पाये जाते है।

चिकित्सा—प्रथम कुछ दिन तक गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड ७ माशा, सौफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, करपस की जड ५ माशा, पीला अजीर ३ दाना, मजीठ ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिलाये। सायकाल सौफ ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, ६ तोले अर्क मकोय और ६ तोले अर्क सौफ मे पीस-छानकर ४ तोले खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलाये और सुदाब के पत्र १० माशा, उशक ७ माशा, बूरए अरमनी ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा २ तोले शुद्ध सिरका मे पीसकर गरम करके प्लीहा के स्थान के ऊपर लेप लगाये या जिमाद किबरीत सिरका मे मिलाकर प्लीहा के स्थान पर लेप करे। भोजनोत्तर सफूफ निहाल २–२ माशा प्रात-सायकाल खिलाये या हब्ब अशखार २–२ माशा सेवन कराये। यदि इन उपायो से कुछ दिनो मे लाभ न हो तो पक्ष भर प्रातकालीन योग मे इजखिर की जड ७ माशा, सौफ की जड ५ माशा, शुकाई ५ माशा, वादावर्द ५ माशा अधिक मिलाकर विरेचन की भाँति पिलायें। तदुपरान्त इसी योग मे विरेचनार्थ सफेद निशोथ ७ माशा, सनाय मक्की ७ माशा, पीली हड का वक्कल १ तोला सम्मिलित करके रात्रि मे भिगो देवे। सबेरे मल-छानकर इसमे ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरजबीन, ४ तोला बूरा, ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा और मिलाकर पिलायें। आगामी दिन ठढई (तबरीद का योग) देवे। इसी प्रकार तीन विरेचन देवे और गेहूँ की भूसी, सोआ और अगूर की लकडी की भस्म सबको महीन पीसकर अगूरी सिरका मे मिलाकर प्लीहा के स्थान पर लेप करे। यदि इससे लाभ न हो तो अजरूत ६ माशा, कतीरा १ तोला, उशक २ तोला, जरावन्द मुदहरज १ तोला पुराने सिरका मे खूब घोलकर मोटे कपडे के ऊपर लेप करें और प्लीहा के स्थान पर चिपका देवे और जितना कपडा उखडता जाय, प्रतिदिन कैची से काटते जायँ। विरेचनो के पश्चात् बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा मे कुर्स फौलाद एक टिकिया मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौफ, सूखी मकोय और कासनी के बीज प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, ६–६ तोला अर्क गावजबान और अर्क बिरजासिफ मे पीस

कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। भोजनोत्तर सवेरे शाम विद्रुत गधक ४–५ विन्दु जल मे डालकर पिलायें।

वक्तव्य—मूली, एरण्ड कर्कटी (पपीता) और अजीर इस रोग मे विशेष उपकारी है। इनमे से किसी एक के भोजनोत्तर सेवन करने का अभ्यास करना वहुत ही गुणकारी है।

अपथ्य—स्निग्ध एव स्नेह पदार्थ, मिठाई, मान्द्र पदार्थ आलू, अरवी, कचालू उडद की दाल प्रभृति इस रोग मे हानि पहुँचाते हैं। दूध और मक्खन का सेवन भी वर्जित है।

पथ्य—क्षुधा से कम तथा साधारण भोजन देवें। वकरी का शूरवा, चपाती और पुदीना की चटनी, सिरका मे पडा हुआ मूली का अचार यथावश्यक देवे। राई १ तोला, सुहागा ६ माशा, नौसादर ३ माशा इनका चूर्ण वनाकर रखे और इसमे से २–२ माशा चूर्ण भोजनोत्तर चटावें। ऊँटनी का दूध पी सकते हैं।

अन्त्ररोगाध्याय (अम्राज अम्आऽ) ४

१—इसहाल।

नाम—(अ०) इसहाल, जरब, (उ०) दस्त, पेट चलना, (स०) अतिसार, (अ०) डायरिया (Diarrhoea), लूजनेस ऑफ दी वॉवेल्ज (Looseness of the bowels)।

वक्तव्य—जव किसी कारण से क्षुद्रान्त्रो की क्रिया या रचना मे विकार हो जाता है, तव उद्वेष्टनरहित जालवात् विरेक होने लगते हैं, जो कभी एक विशेष स्वरूप के और कभी विभिन्न वर्ण के होते हैं। इनका प्रमाण और मात्रा भी हेतु के अनुसार विभिन्न होती है। विरेक कभी अन्त्र के विकार से ओर कभी आमाशय एव यकृत् तथा कभी मस्तिष्क आदि के विकार से भी होते हैं।

यूनानी वैद्यो ने अन्त्र, आमाशय और यकृत् इन तीनो के रोगो मे अतिसार का उल्लेख किया है, क्योकि अतिसार के हेतुओ मे इन तीनो का अतर्भाव होता है। यकृत् के अतिसार को **कियाम कबिदी** और तज्जन्य रक्तातिसार को **ज़ूसन्तारिया कबिदी** कहते हैं। यदि अन्त्र और आमाशय मे भोजन का पचन न हो और पतले विरेक के रूप मे नि सरित हो, तो उसे **ज़रब** और यदि पचन अपूर्ण हो या भोजन दूपित हो जाय और तीन-चार वार निर्हरण हो तो उसे **खिल्फ़ा** कहते है। कभी अन्त्र और आमाशय मे विस्फोट (फुसियाँ) आदि

उत्पन्न हो कर भोजन विना पके या अम्ल पचन के वाद नि सरित हो जाता है, तव उसे ज्ञालकुल्‌मेदा या ज्ञालकुल्‌अमूआऽ कहते है ।

हेतु--गुरु, वासी, (पर्य्युसित), अधिक मसालेदार आहार सेवन या मास और पके हुए फलो का अति सेवन, अन्त्रो से सक्षोभ, शोथ, व्रण, अवरोध (विवध) या कृमि उत्पन्न हो जाना, वारवार विरेचन लेना, कभी प्रसेक और प्रतिश्याय की दशा मे उपचार व्यतिक्रम इसके हेतु होते हैं। कभी यकृद्दौर्व य के कारण अन्त्र और आमाशय मे द्रवोद्रेक हो कर भोजन को दूषित कर देते है जिससे अतिसार आरम्भ हो जाता है। कभी यकृत् की दुर्वलता के कारण भोजन का सम्यक् पाचन नही होता और वह दूषित हो जाता है और इस योग्य नही रहता कि शरीर उससे पोषण प्राप्त कर सके। यह दुष्टभूत भोजन लौटकर अन्त्रो की ओर आता है और विरेक प्रारम्भ हो जाते हैं। अथवा आमाशय दुर्वल (मदाग्नि) होकर द्रवो का उद्रेक अधिक होता है, जिससे विरेक आते है। कभी अन्त्रो मे श्लैष्मिक पिच्छिल द्रवो का सचय स्वयमेव हो जाता है। जव आहार आमाशय से अन्त्रो मे आता है, तव वह फिसल जाता है और विरेक होते है। कभी यकृत् मे उष्णता वढकर पैत्तिक ि रेक होते है। कभी-कभी मल-मार्ग से रक्त निर्हरण होने लगता है (रक्तातिसार) हे। यदि अर्श के कारण रक्त निर्हरण होता हो, तो साधारणतया रक्त मल के साथ या अकेले निहरण हुआ करता है। शिशुओ मे कभी दन्तोद्भेद के कारण विरेक होते (शिश्वातिसार) हैं।

लक्षण--जब आहारदुष्टि एव अतिभोजन से विरेक होते है, तब उक्त अवस्था मे उदर मे आटोप, उद्वेष्टन और आध्मान होता है, जिह्वा मलिन होती, उत्क्लेश होता, अम्लोद्गार आते है, कभी शीत लगता है, वारवार पतले-पतले पिलाई लिये फेनिल या मटियाले रग के विरेक होते है। प्रसेक एव प्रतिश्याय के कारण हो तो उनके लक्षण विद्यमान होगे। अधिक सोने, विशेष कर दिवा निद्रा, के पश्चात् अधिक विरेक होगे। चार-पॉच विरेक के पश्चात् कुछ काल वन्द रहेगे। विरेक से किसी भॉति फेन का उत्सर्ग होगा। जव श्लैष्मिक द्रवो के अतिरेक से और आमाशय के दौर्वल्य (मन्दाग्नि) के कारण विरेक हो तो उक्त अवस्था मे दिन मे अधिक और रात्रि मे कम होगे। विरेको की भौतिकस्थिति अधिकतर एक समान नही होगी, अपितु, कुछ सान्द्र और कुछ तरल भाग मिला हुआ उत्सर्गित होगा। आहार अपक्व उत्सर्गित होगा। अम्लोद्गार आयेगे। जव यकृद्दौर्वल्य के कारण हो, तो उसके लक्षण जिनका उल्लेख यथास्थान किया गया है, पाये जायेगे। आमाशय की दशा ठीक होगी। मलो की भौतिक-स्थिति सर्वथा एक समान होगी। विरेक पतले, पीले या लाल मास के धोवन जैसे

होगे। रात्रि मे अधिक विरेक होगे। जब आहार यकृत मे पहुँचेगा, तब कुछ काल निरन्तर विरेक होगे और फिर कुछ काल के लिये रुक जायँगे। मत्रोत्सर्ग अल्प होगा। जब अन्त्रो मे श्लैष्मिक द्रव सचित हो जाने के कारण विरेक हो, तब उनके साथ श्लैष्मिक द्रव अर्थात् आँव उत्सर्गित होगा। अन्त्रो मे शूल और उद्वेष्टन (मरोड) होगा। विरेक भ जन के लगभग १॥–२ घटे बाद प्रारम्भ होगे। रात्रि की अपेक्षया दिन मे अधिक होगे। मूत्र की दशा प्रकृतिस्थ होगी। यकृत् ऊष्मा के कारण जब पैत्तिक विरेक होते ह, तब उसमे दाह होता है। यकृत् के स्थान पर हाथ रखने से उष्णता की प्रतीति होती हे। रोगी को अति तृष्णा लगती हे तथा अधिक बेचैनी होती है। रोगी अत्यन्त दुर्बल एव कृश हो जाता हे। यदि अर्श के कारण रक्त के विरेक हो, तो अर्शाकुरो की विद्यमानता तथा अर्श के अन्यान्य लक्षण जिनका विवरण अर्श के प्रकरण मे किया जायगा, पाये जायँगे। शिशुओ को दन्तोद्भेद काल मे जो हरे या पीले रग के फटे-फटे विरेक होते ह तथा जिसके साथ तृष्णा होती हे, उनकी चिकित्सा अम्राज सिव्यान (बालापस्मार) के प्रकरण मे आगे वर्णित होगी।

चिकित्सा—प्रारम्भ मे रोगी को आहार नही देवे और उसे सुखपूर्वक लटाये रखें। यदि कोई सक्षोभकारी अर्थात् अपाचित या दुष्टभूत आहार उदर मे विद्यमान हो, तो प्रथम कोई हल्का विरेचन देकर उदर शुद्धि कर। तदुपरान्त विरेक बन्द करने का यत्न करें। सुतरा मुलय्यिन ३ टिकिया या एरण्ड तैल ३ तोला एक पाव दूध मे मिल कर पिला देवें जिससे यह सक्षोभकारक दोष निस्सरित हो जाय। तदुपरान्त ५ माशे सौंफ का शीरा ३ माश हब्बुल्आस का शीरा, ३ माशे छोटी इलायची के दाने का शीरा पानी मे पीस-छान कर २ तोला मिश्री मिलाकर कुछ दिन पिलाये। सवेरे-शाम इस योग के साथ ७–७ माशे जुवारिश मस्तगी और जुवारिश ऊद शीरी सेवन करायें।

यदि उष्ण प्रसेक के कारण यह रोग हो तो उष्ण प्रसेक मे उल्लिखित उपक्रम काम मे लेवें। यदि पित्त के लक्षण पाये जायँ, तो पित्त की पाचन ओषधि (मुंजिज सफ्रा) पिलाकर यथाविधि विरेचन देवें। यदि शीत प्रसेक के कारण यह रोग हो, तो उसकी चिकित्सा जो लिखी जा चुकी है, उसे काम मे लेवे तथा अजवायन, पीली हडका बक्कल (छिलका) प्रत्येक ५ माशा, सोठ ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ५ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर सवेरे मल-छान-कर सेधानमक ७ माशा और मेथी ३ माशा इनके चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलायें और अफीम ४ रत्ती, केसर २ रत्ती, गोद, कतीरा, अजवायन खुरासानी और पोस्ते का दाना प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर अडे की सफेदी मे मिलाकर

एक मोटे कागज का गोल टुकडा काटकर उसके बीच मे सूई से छिद्र करके उस कागज पर यह ओषधि लगाकर कनपुटी (शखक) पर चिपका देवें।

यकृत् के दोष से विरेक होते हो तो यकृद्दौर्बल्य मे लिखित चिकित्साविधि काम मे लेवे और विरेक (अतिसार) बन्द करने का कदापि यत्न न करे, क्योकि इससे शोथ (इस्तिस्काऽ) एव अन्य कठिन उपद्रवो के प्रादुर्भाव का भय है। अस्तु, सबेरे सफेद चन्दन ३ माशा, उन्नाब ५ दाना १२ तोले अर्कगावजबान मे पीस-छानकर २ तोला शर्बत खशखाश या २ तोला सिकजवीन या शर्बत अनार मिलाकर पिलाये। सायकाल ५ तोले अनार का रस २ तोला शर्बत खशखाश मिलाकर पिलाये। यदि दीर्घकाल पर्यन्त विरेक होने के कारण रोगी अधिक दुर्बल हो जाय तो जहरमोहरा और वशलोचन १–१ माशा महीन पीसकर ७ माशे जुवारिश अनारैन मे मिलाकर रोगी को खिला दिया करें। ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा जरिष्क, ३ माशा कुलफा १२ तोले अर्क गावजबान मे पीसकर शर्बत अगूरी शीरी मिलाकर पिला दिया करे। मूत्रप्रवर्त्तन के सहाय्यार्थ तथा ऊष्माशमनार्थ ३ माशा कासनी के बीज इसी योग मे अधिक करके देना चाहिये और शर्बत अगूर के स्थान मे शर्बत बजूरी सम्मिलित करे। पित्त की तीक्ष्णता कम करने के लिये जहरमोहरा और वशलोचन के साथ १ माशा सुमाक देते है। अधिक कब्ज अपेक्षित होने पर जुवारिश अनारैन के स्थान मे ७ माशा जुवारिश आमला बनुसखा कलाँ का प्रयोग करे। आमाशय के उद्दीपनार्थ १ माशा पिस्ते का बहिस्त्वक् अधिक योजित करते है। तीव्र पिपासा मे अर्क गावजबान या लोहे का बुझा हुआ पानी पिलाये। यदि पेचिश का भय हो और मरोडपूर्वक विरेक होने लगे और छिलके निकलें तो वलवृद्धि की ओर ध्यान देवे और ४ माशा रेशा खतमी और ३ माशा बिहीदाना का लबाब, ३–३ माशा वलगिरी और मरोडफली का शीरा जल मे (लबाब और शीरा) निकालकर २ तोला रुब्बबिही शीरी या २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करे।

यदि अग्निमान्द्य (आमाशयस्थ शीत) एव आक्लेदाधिक्य के कारण विरेक होते हो तो उक्त अवस्था मे सबेरे मस्तगी, इलायची का दाना, सूखा पुदीना और सगदाना मुर्ग प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर २ तोले गुलकन्द मे मिलाकर प्रथम खिलाये। ऊपर से सौंफ ५ माशा, स्याहजीरा ३ माशा, अनीसून ३ माशा ६–६ तोले अर्क पुदीना और अर्क इलायची मे पीसकर शीरा निकाल कर इसमे २ तोला रुब्ब बिही शीरी घोलकर पिला देवे। सायकाल ऊद खाम ६ माशा, स्याहजीरा ६ माशा दोनो को सिरका मे पीस कर दो दिन तक भिगो देवें, तदुपरान्त सुखा कर भून लेवें। पुन अजवायन, कुरूया (विदेशीय

कृष्ण जीरक) भृष्ट सोठ, छोटी इलायची और गुठली निकाला हुआ मुनक्का प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। ६ माशा इस चूर्ण मे ४ रत्ती सफूफुल्इम्लाह मिलाकर फँका देवें। ऊपर से १२ तोला अर्क साफ २ तोला रुब्ब विही डालकर पिला देवें।

जब अन्त्र मे पिच्छिल आक्लेद (कफ) के सचय से विरेक होते (अतिसार) हो तो उक्त अवस्था मे अपस्मार और पक्षवध के प्रकरण मे उल्लिखित कफ पाचन ओषधि कुछ दिन पिलाकर विरेचन देवें। तदुपरात मस्तगी, स्याह जीरा, सोठ, अनीसून और सेंधानमक प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसमे से ३ माशा चूर्ण फँका कर ऊपर से १२ तोले अर्क सोंफ मे २ तोला रुब्ब विही शीरी मिलाकर पिला दिया करें और बबूल का गोद ६ माशा, हब्बुल्-आस १ तोला, भृष्ट अनारदाना ६ तोला, खर्नूब ३ तोला सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसमे से ६ माशा चूर्ण ताजे पानी के साथ शाम को फँका दिया करें ओर बाजरा, सेंधानमक तथा गेहूँ की भूसी कूट-मिलाकर पोटली मे बाँधकर गरम करके नाभि के समीप सेंक करें। यदि मरोड अधिक हो तो सफूफ मिकालियासा ५ माशा गाय के घी मे स्नेहाक्त करके या सफूफ भूय्या १ तोला फँकाकर रुब्ब विही शीरीं २ तोला अर्क गावजबान १२ तोला मे मिलाकर पिला दिया करें और हब्ब पेचिश १ गोली रात्रि मे सोते समय खिला दिया करे। आराम होने के पश्चात् फौलाद (फौलाद भस्म) १ टिकिया, दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा मे मिलाकर कुछ दिन खिलायें। भोजनोत्तर हब्ब पपीता ३ गोली या जुवारिश जालीनूस ७ माशा, कुर्स खुन्सुल हदीद १ टिकिया मिलाकर खिला दिया करें। बलवृद्धि के लिये तूतियाए कबीर १ टिकिया या मालती बसत एक टिकिया ५ माशे नोशदारू सादा या ५ माशे माजन सगदाने मुर्ग मे मिलाकर खिलायें।

रक्तातिसार मे जब रोगी के अधिक दुर्बल हो जाने का भय हो तो उसे बद करने के लिये निम्न योग देवे—खस (काहू), बेलगिरी, धवई के फूल, मोचरस, मीठा इन्द्र जौ प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करे। इसमे से ६ माशा चूर्ण फँकाकर ऊपर से ५ तोले साठी चावल के धोवन मे २ तोला रुब्ब विही शीरी मिलाकर कुछ दिन पिलाये। रक्त बन्द करने के लिये निम्न योग भी गुणकारी है—आम की गुठली का मग्ज और जामुन की गुठली का मग्ज प्रत्येक ६ माशा चूर्ण बनाकर फँकाये और ऊपर से २ तोला रुब्ब जामुन पानी मे घोलकर पिला दिया करें। अथवा एक छुहारे की गुठली निकालकर उसके भीतर अफीम भरकर और इसके ऊपर गेहूँ का आटा लपेटकर कपरौटी करके गरम तनूर मे रखें। जब गेहूँ का आटा लाल हो जाय, तब इसे तनूर से निकाल

कर गेहूँ का आटा पृथक् करके छुहारे को अफीम सहित पीस लेवे और चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवे। इसमे से २-२ गोलियाँ आवश्यकतानुसार खिलाकर २ तोला रुब्ब विही शीरी जल मे घोलकर पिला दिया करें। बलवृद्धि एव ऊष्मा शमन करने के लिये कुर्स तवाशीर काबिज ४॥ माशा या कुर्स काफूर ४॥ माशा या कुर्स जरिश्क ४॥ माशा आवश्यकता होने पर १२ तोले अर्क गा जबान के साथ देना चाहिये।

अपथ्य--प्रसेक और प्रतिश्यायज अतिसार मे भोजनोत्तर तुरत शयन करना विशेषकर दिन मे सोना (दिवास्वप्न) हानिकारक है। शीतल जल पीने और स्नान करने तथा शीतल, वादी एव गुरु पदार्थ सेवन से परहेज करे। बर्फ आलू, अरवी, कचालू, भिडी, उडद की दाल आदि उपयोग मे नही लेवे। श्लैष्मिक द्रवातिरेक जन्य अतिसार मे भी इन्ही पदार्थो से परहेज करना चाहिये। पित्तज अतिसार एव ऊष्माधिक्य मे अधिक उष्ण एव मसालेदार पदार्थ सेवन नही करे। यकृद्दौर्बल्य मे लहसुन, प्याज, मैदा और तनूर की पकी हुई रोटी, मास, मछली आदि का सेवन हानिकारक है। अर्श की दशा मे भी वादी एव गुरु पदार्थो से परहेज करना चाहिये। बालको के दन्तोद्भेदकालीन अतिसार मे उक्त बालक की धात्री को उष्ण पदार्थ और गुड-तेल की पकी हुई तथा गुरु एव वादी वस्तु से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--प्रथम लघु एव शीघ्र पाकी आहार, जैसे सागूदाना, खीरा-ककडी की खीर और गेहूँ का पतला दलिया खिलाये। रोग निवृत्त होने पर धीरे-धीरे मूँग की नरम खिचडी खिलाये या आटे मे लवण और सोडा मिलाकर पतली चपाती पकाकर बकरी के मास के कम मिर्च के पकाये गये शूरबा मे चूरकर खिलाये और ज्यूँ-ज्यूँ रोग कम होता जाय, धीरे-धीरे आहार मे आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन करते जायँ।

२--सहज़ुल् अम्आऽ और मगस।

नाम--(अ०) सहजुल् अम्आऽ, कुरूह अम्आऽ, वरमुल्अम्आऽ, (उ०) आँतो की खराश, आँतो के जख्म, आँतो की सूजन, (स०) अन्त्रशोथ, अन्त्र-व्रण, अन्त्रक्षोभ, (अ०) एन्टीराइटिस (Enteritis), इन्टेस्टाइनल अल्सर्स (Intestinal ulcers)।

--(अ०) मगस, (उ०) मरोड, (स०) उद्वेष्टन, (अ०) ग्राइप (Gripe)।

इस रोग मे अन्त्रो के भीतरी धरातल पर क्षोभ होकर वह छिल जाता है।

और कुछ काल के बाद व्रण भयावह और उग्र रूप धारण कर लेता है।

सहज और जहीरका भेद--किसी तीक्ष्ण एव उष्ण वस्तु के स्राव या मल-मार्ग से उत्सर्गित होने मे अन्त्र के भीतरी धरातल के छिल जाने को सहज् कहते हैं। यदि यह रोग ऊर्ध्व एव क्षुद्र अन्त्र मे हो तो उसके साथ नाभि के ऊर्ध्व-भाग मे पीडा होती है। इसके विपरीत जहीर अर्थात् पेचिश सरलान्त्र का रोग है, जिसमे वह किसी कष्ट के कारण बारबार मलनिर्हरण का यत्न करता है और बिना आँव एव कभी किंचित् रक्त के और कुछ नि सरित नही होता।

हेतु--धूप मे अधिक चलने-फिरने से, अग्नि के सम्मुख दीर्घ काल तक काम करने से या लाल मिर्च, मसालेदार और उष्ण पदार्थों के अतिसेवन से और चतुर्दोषो मे से किसी अप्रकृत दोष के सचय से विशेषकर पित्त अधिक उत्पन्न होकर अन्त्रो मे स्रावित होता है और द्रवो को पारकर अन्त्र के सघटक तत्वो तक पहुँच कर इतना सक्षोभ उत्पन्न करता है कि स्वयमेव रोग कहलाता है। कभी अन्त्रो के अभिघात एव क्षत से या अर्बुद आदि से मरक ज्वर एव यकृद्दाह से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--मल बारबार पतला एव पीला होता है। यदि यह रोग कुछ दिन रहे तो अन्त्रो के सघटनकारी तत्त्व श्वेत छिलके की भाँति मल के साथ नि सरित होने लगते हैं। मूत्र पीला और दाहपूर्वक आता है। मल-त्यागोपरात कुछ देर तक गुदस्थान पर दाह होता है। उदर मे उद्वेष्टन (मरोड) एव पीडा होती है। तृष्णा का प्राबल्य होता है। कभी इतनी पीडा एव मरोड होता है, कि रोगी मूर्च्छित हो जाता है और आक्षेप होकर मृत्यु की आशका होती है। शरीर उष्ण हो जाता है। रोगी अत्यत दुर्बल और अतीव बेचैन हो जाता है। कभी-कभी हिचकियाँ आने लगती हैं।

चिकित्सा--अन्य सक्षोभ (सहज) के प्रारम्भ मे १ तोला बबूल का गोद महीन पीसकर शीतल जल मे भली भाँति आप्लुत करके विलायती एरण्ड तैल १ तोला मिलाकर पिलायें। यदि रोग तीव्र हो और रोगी की शक्ति बलवती हो, तो प्रारभ मे बासलीक सिरा का वेध नही करे, वरन् ३ माशा कद्दू के मग्ज का शीरा, ३ माशा तरबूज के मग्ज का शीरा, ३ माशा कुलफा के बीज का शीरा, ३ माशा छिले हुये काहू के बीज का शीरा १२ तोले अर्क गावजबान मे निकाल कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर सवेरे पिलाये। सायकाल ३ माशा बिहीदाना और ४ माशा रेशा खतमी को १२ तोले अर्क गावजबान मे भिगोकर लबाब निकालकर तथा ५ माशा सौफ को अर्क गावजबान मे पीसकर शीरा निकालकर लबाब और शीरा मिलाकर २ तोला शर्बत नीलूफर सम्मिलित करके ७ माशा समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर पिला दिया करे। यदि कष्ट

अधिक हो, तो ईसबगोल के स्थान मे चहार तुख्म ७ माशा या तुख्म बारतग ७ माशा छिडककर पिलायें अथवा पत्थर गरम करके छाछ मे बुझाकर बबूल का गोद, कतीरा, गुलाब के फूल का केशर, वशलोचन और निशास्ता प्रत्येक ३ माशा सबको बारीक पीसकर छाछ मे मिलाकर रेहॉं के बीज ५ माशा या समूचा ईसबगोल ७ माशा छिडककर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला देवें अथवा सबेरे सफफ मिकलियासा ५ माशा यथावश्यक गाय के घी मे स्नेहाक्त करके फँकाकर १२ तोले अर्क गावजबान मे २ तोला शर्बत अनार शीरी या २ तोला शर्बत नीलूफर सम्मिलित करके पिला दिया करे। सायकाल बेल का मुरब्बा १ तोला खिलाकर ऊपर से ६–६ तोला अर्क गावजबान एव अर्क गुलाब २ तोला शर्बत अनार शीरी मिलाकर पिलाये। यदि रोग पुराना हो जाय और मल के साथ पूय आने लगे, तो कुर्स अकाकिया ३ टिक्यिा खिलाकर ऊपर से २ तोला शुद्ध मधु जल मे मिलाकर पिला दिया करे और कुर्स रातीनज आधी टिकिया ऽ।।। चावलो की पीच मे घोलकर इसकी पिचकारी करायें।

वक्तव्य––जब तक यह रोग पुराना न हुआ हो और पूय न पड गया हो, तब तक इस रोग मे छाछ, दूध, दही आदि का उपयोग कर सकते है। पूय पड जाने के पश्चात् इनका उपयोग हानिकारक हे। रोगारभ मे शीतल एव पिच्छिल (लबाबदार) पदार्थ लाभकारी होते है।

अपथ्य––तीक्ष्ण, अम्ल, लवण और उष्ण पदार्थो से परहेज कराये। लाल मिर्च, गरम मसाला, मास, अडा, मछली, बैंगन, सिरका की चटनी, पुदीना, आलू, अरवी, कचालू आदि पदार्थ हानिकारक हैं। परिश्रम के कार्य करने और धूप मे चलने-फिरने से परहेज करें।

पथ्य––लघु शीतल आहार, दूध, चावल, मूँग की नरम खिचडी, खशका आदि, शाको मे कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, खीरा, ककडी, कम मिर्च का बकरी के मास का शूरबा तरकारी के साथ पका हुआ देवे। दही और चावल का उपयोग लाभदायक होता है। बर्फ से शीतल किया हुआ या ताजा पानी पीना चाहिये।

३––जहीर

नाम––(अ०) जहीर, (उ०) पेचिश, (स०) प्रवाहिका, (हि०) ऑव, (अ०) डिसेंटरी (Dysentery)।

किसी द्रव्य वा मलजनित कष्ट निवारण के लिये सरलान्त्र का अप्राकृतिक रूप से चेष्टा करना ज़हीर कहलाता है। किन्तु इससे सरलान्त्रीय धरातल का श्लैष्मिक द्रव ही निस्सरित हुआ करता है। इसके यह दो भेद हैं––

(१) सादिक (वास्तविक) और (२) काज़िब (मिथ्या)। इनमे से प्रथम का कारण क्षारीय कफ या पित्त होता है और द्वितीय मे केवल अवरोध (सुद्दा) उत्पन्न हो जाने से बारबार मल त्याग की इच्छा होती है। इनके पहिचान की सरल विधि यह है कि ईसबगोल या कनौचा के बीज आदि रोगी को सेवन कराये। यदि ये मल के साथ निस्सरित न हों, तो समझ लेना चाहिये कि जहीर काज़िब अन्यथा जहीर सादिक है।

हेतु—वासी (पर्युषित) और नमकीन भोजन, मास और सड़ी-गली मछली या अधिक अडे खाना, कच्चा दूध पीना, कठिन मलावरोध, बारबार विरेचन ओषधि का सेवन, शुद्ध पित्त या पित्त एव लवणनिष्ठ कफ का मिश्रीभूत होकर अन्त्रो मे स्रावित होना अथवा अन्त्रो मे किसी सान्द्र पिच्छिल या शुष्क सुद्दा (विबध) का पड जाना इस रोग के हेतुभूत हैं। युवाओ की अपेक्षया, शिशुओ को और पुरुषो की अपेक्षया स्त्रियो को तथा उष्ण प्रदेशो मे यह रोग अधिक होता है। वर्षा ऋतु मे कभी यह महामारी के रूप मे भी प्रसार पाता है।

लक्षण—मरोड के साथ प्रथम पतले-पतले आँवमिश्रित विरेक होते हैं। क्षुधा कम हो जाती है और सूक्ष्म ज्वर हो जाता है। इसके बाद बारबार मल-त्याग की प्रवृत्ति होती है। मलत्याग के समय कुथन एव बल प्रयोग करना पडता है। उदर मे तीव्र पीडा एव मरोड होती है। मल अल्प प्रमाण मे रक्त एव आँवमिश्रित होता है। कभी कुथन से गुदभ्रंश हो जाता है। रोग की तीव्रावस्था मे दिन-रात मे दस-बीस, प्रत्युत तीस-चालीस बार और कभी इससे भी अधिक बार मल त्याग की प्रवृत्ति होती है। ज्वर भी तीव्र हो जाता है। अति तृष्णा लगती, मिचली होती और कभी वमन भी हो जाता है। उदर मे पीडा और आध्मान होता है। मूत्र भी दाह एव कष्टपूर्वक होता है। पित्त की प्रगल्भता से यह रोग हो तो मलविसर्जन के पश्चात् गुदा मे दाह होता है। विवन्ध (सुद्दा) के कारण यह रोग हो तो कभी-कभी मल मे शुष्क घटक अर्थात विवन्ध (सुद्दे) उत्सर्गित होते हैं। कभी-कभी मलमार्ग से बहुत-सा रक्त निस्सरित होता है तथा रोगी अत्यत दुर्बल हो जाता है।

चिकित्सा—प्रथम उपर्युक्त विधि केअनुसार इस बात की परीक्षा करें कि जहीर सादिक (वास्तविक प्रवाहिका) है या काजिब (मिथ्या)। तदुपरान्त उचित प्रतिकार करे। प्रारभ मे सग्राही ओषधियो का उपयोग कदापि न करायें। प्रत्युत् निम्न विरेचनीय ओषधियो का सेवन करायें, जिसमे विरेक होकर यदि कोई विबध (सुद्दा) हो, तो निस्सरित हो जाय।

योग—गुलबनफ्शा, गुलाब के फूल, सौंफ प्रत्येक ७ माशा जल मे उबाल-छानकर गुलकद ४ तोला, अमलतास का गूदा ६ तोला, तरजबीन खुरासानी ४ तोला और

बादाम का तेल ६ माशा डालकर पिलायें। जब यह निश्चय हो जाय कि जहीर काजिब अर्थात् विबन्धो (सुद्दो) के कारण है, तब उक्त अवस्था मे उपर्युक्त योग भी लाभकारी होता है अथवा एरण्ड तैल ४ तोला पाव भर गाय के दूध मे मिलाकर २ तोला मिश्री डालकर पिलायें। जब विरेक होकर तबीयत शुद्ध हो जाय, तब दूसरे दिन ठढाई (तबरीद) का निम्न योग सेवन कराये—खमीरा गावजबान १ तोला चॉदी के एक वर्क (पत्र) मे लपेटकर प्रथम खिलायें। ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी का लुआब, ३ माशा हब्बुल्आस का शीरा ६–६ तोले अर्क बिरजासिफ और अर्क गावजबान मे लुआब और शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ७ माशे रेहाँ के समूचे बीज का प्रक्षेप देकर पिला देवे।

यदि शुद्ध पित्त या लवणनिष्ठ या पित्तमिश्र कफजन्य वास्तविक प्रवाहिका (जहीर सादिक) हो, तो बिहीदाना ३ माशा, रेशा खतमी ४ माशा जल मे भिगो-कर लुआब निकाले और ५ माशा सौफ को जल मे पीसकर शीरा निकालें और लुआब एव शीरा को मिलाकर २ तोला शर्बत बनफ्शा सम्मिलित करके ७ माशे समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलाये। अथवा गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड ७ माशा, सौफ ७ माशा, गावजबान और रेशा खतमी ५–५ माशा सबको रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो देवे और प्रात काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर और ७ माशे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर पिलायें, सायकाल उपर्युक्त योग सेवन करायें। यदि मल के साथ रक्त भी आ रहा हो तो प्रात कालीन योग मे तुख्म मरो हब्बुल्आस और रेशा अजबार ५–५ माशा सम्मिलित करके भिगोये और साय-कालीन योग मे भी हब्बुल्आस ५ माशा और बेरव अजबार ३ माशा जल मे पीसकर शीरा निकालकर योजित करके सेवन कराये। अधिक मरोड होने पर ५ माशा मरोडफली और मिलाये। यदि अत्यत रक्त आ रहा हो और मरोड अधिक हो, तो ५ माशे सफूफ तीन यथावश्यक गाय के घी मे स्नेहाक्त करके प्रथम खिलाये। ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी का लुआब, तथा हब्बुल्आस, बेख अजबार और बेलगिरी प्रत्येक तीन माशा का शीरा १२ तोले अर्क गावजबान मे (शीरा और लुआब) निकालकर ५ माशा चहार तुख्म या ५ माशा बारतग के बीज का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलाये।

यदि पेचिश के साथ प्रसेक एव प्रतिश्याय भी हो, तो खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज और रेशा खतमी प्रत्येक ७ माशा, पानी मे उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि मस्तिष्क दुर्बल हो, तो इसके साथ खमीरा गावजबान जवाहर वाला ५ माशा सेवन करायें। यदि पेचिश के साथ

कोष्ठाग (आशय) शोथ भी हो तो गुलबनफ्शा ७ माशा, सूखा मकोय, रेशा खतमी और रेशा अजबार प्रत्येक ५ माशा, सौंफ ७ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। सायकाल ६–६ तोले अर्क बिरजासिफ और अर्क माउल्लहम कासनी-वाला मे ३–३ माशे मकोय और हब्बुल्आस का शीरा और ४ माशा रेशा खतमी का लुआब निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करे।

यदि रक्तार्श के साथ पेचिश भी हो, तो उक्त अवस्था मे १ माशा रसवत खिलाकर पानी मे ४ माशा रेशाखतमी का लुआब और ३ माशा हब्बुल्आस का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ७ माशे समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलाये। जब पेचिश के साथ यकृत् एव कोष्ठाग के शोथ का निवारण अभीष्ट होता है, तब हरे मकोय और हरी कासनी के रस का फाडा हुआ पानी ४–४ तोला, ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ७ माशे समूचे इसबगोल का प्रक्षेप देकर पिलाते हैं और ६ माशा रसवत, सूखा मकोय तथा अमलतास का गूदा १–१ तोला यथावश्यक हरे मकोय के रस मे पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर उदर के ऊपर कुनकुना गरम लेप करते हैं। कष्ट अधिक होने पर १ गोली हब्ब पेचिश रेशाखतमी के लुआब के साथ सेवन कराये तथा एक अडे की जर्दी १ तोला गुलरोगन मे फेटकर कुनकुना गरम उदर के ऊपर मरोड के स्थान पर मर्दन करे। रोग के पुराना हो जाने पर सवेरे सफूफ तीन वाला योग सेवन करायें तथा १ गोली हब्ब पेचिस रात्रि मे अर्क गुलाब से खिला दिया करे और आधी टिकिया कुर्स रातीनज चावलो की पीच मे घोलकर इसकी अन्त्र मे पिचकारी करें तथा राल सफेद, गोद बबूल वाली दो गोलियाँ सवेरे-शाम भोजनोत्तर सेवन कराये। आराम होने के पश्चात् कुछ दिन तक बलवर्धन के लिये १ टिकिया मालती बसत ७ माशा जुवारिश ऊदशीरी मे मिलाकर सवेरे और कुश्ता तिला खुर्द २ चावल ५ माशे दवाउल्मिस्क मातदिल मे मिलाकर रात्रि मे खिलाये और हब्ब पपीता २–२ गोली सवेरे-शाम भोजनोत्तर खिला दिया करें।

प्रसवोत्तर पेचिश मे जो कतिपय स्त्रियो को हो जाती है, सफूफ सया खिलायें अथवा रेहाँ के बीज, कनौचा के बीज, बारतग के बीज, समूचा ईसबगोल प्रत्येक ३ माशा ६–६ तोले अर्क मकोय एव अर्क सोफ मे उबाल कर ५ दाने बादाम के मग़ज का शीरा मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

वक्तव्य—यह रोग अतिम अन्त्र मे होता है, जो नीचे से निकट है। अतएव इस रोग के पुराने होने पर अन्त्र मे व्रण हो जाते हैं। उस समय ओषधि पिलाने की अपेक्षया पिचकारी के द्वारा ओषधि-प्रवेशित करना अधिक समीचीन होता है।

अपथ्य--अधिक भोजन न कराये। मधुर एव अम्ल पदार्थ, लाल मिर्च, गरम मसाला, मास, बैंगन, मेथी आदि उष्ण पदार्थ गुड, तेल, मछली, अण्डा, भृष्ट चने तथा रूक्ष पदार्थ ओर आलू, अरवी, भिंडी प्रभृति गुरु पदार्थ से परहेज कराये।

पथ्य--सिवाय मूँग की नरम खिचडी या खशका और दही के रोगावस्था मे कोई आहार न देवे। आराम होने पर धीरे-धीरे मूँग-अरहर की दाल, खूरवा चपाती, कद्दू, पालक, तुरई, कुलफा, ककडी, खीरा, प्रभृति ठढे शाक यथाभ्यास देवें।

४---जरव व खिल्फा

नाम--(अ०) जरब, ख़िल्फ , (उ०) सग्रहनी, (स०) सग्रहणी, (अ०) क्रॉनिक डायरिया (Chronic Diarrhoea), स्प्रू (Sprue)।

एक प्रकार का चिरज अतिसार जिसमे अन्त्र और आमाशय की धारणा या सग्राहिणी शक्ति (कुव्वत मासिक) दुर्बल हो जाती है तथा अन्त्र के भीतरी धरातल पर कही-कही व्रण भी हो जाते है।

हेतु---उष्ण प्रदेश विशेषत भारतवर्ष मे यह रोग अधिक होता है तथा पुरुषो की अपेक्षया स्त्रियो एव शिशुओ को अधिक होता है।

लक्षण---किंचिन्मात्र खाने-पीने से भी तुरत मल की प्रवृत्ति होकर पतला-सा विरेक हो जाता है। स्तन्यपायी शिशुओ को भी दन्तोद्भेद काल मे प्राय इस प्रकार के विरेक होते है, जिनका वर्णन बालरोग मे किया जायगा। रोगी का मुख एव जिह्वा लाल हो जाती है। कभी मुख और जिह्वा मे छोटे-छोटे विस्फोट एव व्रण हो जाया करते है। मुख से लालास्राव होता है। खाना और निगलना कठिन हो जाता है। प्रात काल तीन-चार दूषित फेनिल, श्वेत या मटियाले रग के विरेक हो जाते है। रोगी दिनानुदिन दुर्बल एव निढाल होता जाता है और मुखमण्डल फीका पड जाता हे। कभी ये विरेक आवेग-पूर्वक होते है, तब इसको इसहाल दौरी या दौरुल्वल कहते है।

चिकित्सा---रोगी को सुखपूर्वक बिछौने पर लेटाये रखे। आरभ मे एक पाव गाय के दूध मे ३ तोला एरण्ड तैल मिलाकर पिलाये जिसमे अन्त्र और आमाशय शुद्ध हो जायँ। इसके उपरात कुछ दिन तक माजून सगदानए मुर्ग ५ माशा सेवन कराके ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा हब्बुल् आस, ३ माशा इलायची का दाना जल मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मिश्री या २ तोला सब्ब विही मिलाकर सवेरे-शाम पिला दिया करे और पोस्त सगदानए मुर्ग, रूमी मस्तगी, स्याहजीरा, भुनी हुई धनिया, छोटी इलायची का दाना, पिस्ता का

वाह्य त्वक्, विजौरे का पीला छिलका, अनारदाना, गुलाव के फूल की कली, गुठली निकाला हुआ मुनक्का प्रत्येक ७ माशा, ऊद गर्की (पानी मे डूब जाने वाला कृष्णागुरु), बेलगिरी, वशलोचन—प्रत्येक ३ माशा, कहरुवा शमई ३॥ माशा, गुलाव के फूल का जीरा ३ माशा सबको चूर्ण बनाकर रखे। इसमे से ४॥ माशा चूर्ण ७ तोले अर्क इलायची या ७ तोले तप्त लोहे से बुझाया हुआ पानी के साथ फेका दिया करें। तूतियाए कबीर २ चावल, मालती वसत २ चावल, नोशदारूए लूलुवी ५ माशा या माजून सगदानए मुर्ग ७ माशा या जुवारिश ऊद शीरी ५ माशा मे मिलाकर प्रथम खिलाये और ऊपर से सौंफ ५ माशा, हब्बुल्-आस ३ माशा, इलायची का दाना ३ माशा, यदि मरोड भी हो तो बेलगिरी ३ माशा, मरोड फली ४ माशा जल मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला रुब्ब बिही शीरी मिलाकर पिला दिया करें।

यदि अन्त्र मे व्रण हो गये हो, तो दालचीनी ८ माशा, पीपल ४ माशा, लौंग २ माशा, छोटी और बडी इलायची १–१ माशा, वशलोचन १ तोला ४ माशा, मिश्री २ तोला ८ माशा—सबको कूचट-छानकर चूर्ण बनाये। इसमे से ६ माशा चूर्ण सवेरे-शाम पानी मे घोले हुए २ तोले रुब्ब बिही शीरी के साथ फेका देने से उपकार होता है। योगौषधो मे से जुवारिश आमला सादा या लूलुवी ७ माशा या कुर्स तवाशीर काविज ४॥ माशा या कुर्स जरिश्क ४॥ माशा, जुवारिश ऊद शीरी या जुवारिश ऊद तुर्श ७ माशा या जुवारिश अनारैन या जुवारिश शाही ७ माशा मे से कोई एक औषधि आवश्यकतानुसार देनी चाहिये।

अपथ्य—वादी, गुरु, दीर्घपाकी एव उष्णपदार्थो से तथा लाल मिर्च एव गुड तेल के पदार्थो से परहेज करे।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी, तथा मूँग की नरम खिचडी या डबल रोटी दूध मे भिगोकर कम मीठा डालकर देवे। कम मिर्च का बकरी का शूरबा चपाती भिगोकर देवे। या दूध खशका देवे।

५—कुलज

नाम—(अ०, उ०) कुलज, (स०) शूल, (उ०) कुलज का दर्द, (अ०) कॉलिक (Colic)।

वक्तव्य—कुलज वस्तुत 'कोलूनरज' या जो प्रयोगवाहुल्य से 'कुलज' रह गया। यह एक तीव्र और कठोर व्याधि है, जो वृहद अन्त्र विशेषकर वृहदन्त्र के वक्र भाग मे अवरोध उत्पन्न होने (सुद्दा पडने) से या उसमे साद्र वायु के अवरुद्ध होने से उत्पन्न होता है। इसमे रोगी को मल की प्रवृत्ति नही होती और वह पीडा की तीव्रता से तडपता ओर बेचैन होता है। कभी पीडा की

तीव्रता से मर भी जाता है। जब क्षुद्रान्त्र मे अवरोध होता है, तब इस प्रकार की पीडा होती है और रोग की तीव्रता मे मलगंधि छर्दि अथवा मल की छर्दि आने लगती है, तब इसको प्राचीन यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे 'एलाऊस' कहते है। परतु आधुनिक पाश्चात्य वैद्य (डॉक्टर) कुलंज इल्तिवाई (Volvulus) को एलाऊस कहते हैं।

हेतु——बादी, गुरु, दीर्घपाकी, आध्मानकारक और शीतल पदार्थों के खाने, बर्फ पीने या बर्फ और मलाई की कुल्फियो के अति सेवन से या वर्षा मे भीगने और किसी रूक्ष एव सग्राही वस्तु के सेवन से प्रचुर श्लेष्मोत्पत्ति होकर अन्त्रो मे चिपक जाती है, जिससे वायु (रियाह) उत्पन्न होकर मल, अवरुद्ध हो जाता है अथवा मल शुष्क होकर स्वयमेव अन्त्रो मे रुक जाता है तथा कष्ट का हेतु बनता है। कभी किसी भारी वस्तु के उठाने या तीव्र चेष्टा करने से भी आन्त्र परिवर्तनज शूल हो जाता है।

लक्षण——प्रथम पाचन विकृत हो जाता है। आटोप और आध्मान होता है तथा उदर किसी भाँति स्फीत हो जाता है। पुन नाभि के चतुर्दिक रुक-रुककर तीव्र शूल होता है, जिसको पीडन करने से सुख प्रतीत होता है। रोगी पट अर्थात् पेट (उदर) के बल पडा रहता है और उदर को प्राय. हाथ से दबाये रखता है। उग्र मलावरोध होता है। उत्क्लेश होता और कभी वमन भी हो जाता है। शूल की तीव्रता और बेचैनी से रोगी बारबार उठता-बैठता है और कभी करवट बदलता है। यदि मल विसर्जन होता है, तो अल्प प्रमाण मे और लेसदार होता है। कुलंज रीही मे वायु अपने स्थान से चलता-फिरता प्रतीत होता है और वायु के उत्सर्गिक होने अर्थात् वायु के अनुलोम होने से शूल मे किंचित् कमी हो जाती है। शूल प्राय आवेगपूर्वक होता है। वायु अनुलोम (या उत्सर्गिक) होकर आवेग अकस्मात् शात हो जाता है। पर यदि यह शूल दीर्घकाल पर्यंत रहे, तो पीडा की अधिकता से रोगी का चेहरा चितातुर और शरीर शीतल हो जाता है। नाडी दुर्बल हो जाती है। किसी-किसी रोगी को मूर्च्छा भी आ जाती है। किन्तु ज्वर नही होता और शीतल स्वेद आता है, इस रोग मे यदि रोगी का मूत्र भी अवरुद्ध हो जाय, तो उसके प्राणनाश की आशका होती है।

चिकित्सा——यदि शूल हलका हो, तो प्रथम जुवारिश कमूनी मुसहिल १ तोला खिलाकर ऊपर से १२ तोले अर्क सौंफ मे ५ माशा सौंफ, ३–३ माशा अनीसून और कुसूस के बीज पीसकर ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिलायें अथवा १ तोला जुवारिश सफर जली मुसहिल मे ४ रत्ती सफूफुलइम्लाह मिलाकर खिलायें और ऊपर से १२ तोला अर्क सौंफ और ४ तोला शर्बत दीनार मिला-

कर कुनकुना गरम करके पिलाये । अन्त्र शुद्धि एव विवध (सुद्दे) निर्हरण के लिये ५ तोला एरण्ड तैल १२ तोले अर्क गुलाब या १२ तोले अर्क सौंफ मे मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलाये और बोतल मे गरम पानी भरकर शूल के स्थान पर सेक करे। यदि इस उपाय से शूल शात न हो और मलोत्सर्ग न हो, तो एक सेर उष्ण जल मे १ तोला देशी साबुन घोल लेवें और इसमे २॥ तोला एरण्ड तैल तथा १ तोला तारपीन का तैल मिलाकर वस्ति देकर अन्त्र का शोधन कराये। यदि एक बार के वस्तिदान से शूल कम न हो, तो एक घटे तक शूल के स्थान को सेंकते रहे। तदुपरात पुन वस्ति करे, जिसमे वायु या विवध (सुद्दे) दूर होकर शूल शात हो जाय। शूल कम होने के पश्चात् सनाय मक्की और सफेद निसोथ प्रत्येक ७ माशा, ४ तोला गुलकद मिलाकर १२ तोले अर्क गुलाव के साथ तीसरे दिन खिला दिया करे, जिसमे अन्त्र शुद्ध रहे और प्रति दिन ७ माशे जुवारिश कमूनी खिलाकर ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसुम के बीज १२ तोले अर्क सौंफ मे पीसकर ४ तोला शर्वत दीनार मिलाकर १५–२० दिन निरतर सवेरे-शाम पिलाते रहे। शूल की तीव्रता एव कष्ट निवृत्ति के लिये कोई अवसादक एव स्वापजनन औषध देनी चाहिये। उक्त गुण के लिये हब्बुश्शिफा २ गोली या १ माशा बरशाशा खिला देने से शूल कम हो जाता है। छुहारे की गुठली के बराबर साबुन का टुकडा काटकर इसे गोला एव चिकना बनाकर गुलरोगन से स्नेहावत करके गुदा मे स्थापन करने से भी मलोत्सर्ग मे सहायता मिलती है।

यदि किसी उग्र चेष्टा या भारयुक्त वस्तु के उठाने से अन्त्र मे बल या ग्रन्थि पडकर (आन्त्र परिवर्तन होकर) या वृषणो मे अन्त्र के अवतीर्ण हो जाने से या आन्त्रापसरण के कारण कुलज का शूल उत्पन्न हो जिसको कुलज ह्ल्तिबाई (आन्त्रपरिवर्तनज शूल––Volvulus) कहते है। उक्त अवस्था मे रोगी को चित्त लेटाकर उसके उदर को धीरे-धीरे मले तथा उसके हस्त-पाद उठाकर मिलाये जिसमे अन्त्र अपने स्थान मे आ जाय।

रोग निवृत्त हो जाने की दशा मे ७ माशे जुवारिश कमूनी कबीर या ७ माशे जुवारिश जालीनूस या ७ माशे जुवारिश कुर्तुम मे १ माशा नमक शैखुर्रईस या ४ रत्ती सफूफुल् इस्लाह मिलाकर कुछ दिन तक भोजनोत्तर सेवन कराते रहे। हब्ब कविद ३ गोली या हब्ब हिल्तीत ३ गोली, या हब्ब पपीता ३–३ गोली या कविदी २–२ टिकिया भी भोजनोत्तर खिलाना लाभकारी है। बिल्कुल आराम हो जाने पर बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली या ७ माशा जुवारिश शाही मे खुब्सुल्हदीद १ टिकिया या कुश्ता फौलाद १ टिकिया मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

वक्तव्य—यदि शूल तीव्र हो और मूर्च्छा के आवेग होने लगे, तो प्रथम अवसादक ओषधि का उपयोग अनिवार्य होता है। कुलज का एक उग्र एव असाध्यतम भेद, जिसमे अन्त्रो मे इतना प्रवल विवध (सुद्दा) होता है कि मुख-मार्ग से वमन मे मल आता है अर्थात् मलगधि वा मलकी छर्दि होती है, उसे यूनानी वैद्य 'एलाऊस' और पाश्चात्य वैद्य (डॉक्टर) 'इन्टेस्टाइनल ऑवस्ट्रक्शन' और आर्य वैद्य 'वद्धगुदोदर' कहते है। यह अत्यन्त भयङ्कर स्थिति होती है। इससे कोई-कोई भाग्यवान् रोगी ही वचता है। इसका निदान, चिकित्सा और अन्यान्य लक्षण कुलजवत् होते हैं। अतएव इनका वर्णन पृथक नही किया गया। ऐसी भयावह स्थिति से किसी चतुर एव अनुभवी वैद्य, हकीम या डाक्टर के परामर्श से चिकित्सा करनी चाहिये।

अपथ्य—जिनको कुलज का आवेग हो चुका हो या मलावरोध रहता हो, उनको सदा गरिष्ठ, दीर्घपाकी एव शीतल पदार्थो, जैसे आलू, अरवी, भिडी कचालू, कच्चा दूध, उडद-चने की दाल, चावल और वर्फ आदि के सेवन से वचना चाहिये।

पथ्य—रोगावस्था मे कोई आहार न देवें। रोग कम होने पर लघु एव शीघ्रपाकी आहार, बकरी का शूरवा, (तीतर, बटेर या मुर्गे के मास का शूरवा या मूँग-अरहर की दाल का यूष प्रभृति यथावश्यक धीरे-धीरे देना प्रारम्भ कर देवे।

६—रियाह अम्आऽ

नाम—(अ०) रियाह अम्आऽ, नफ्ख, (फा०, उ०) नफख शिकम, (उ०, हि०) अफारा, (स०) आनाह, (अ०) फ्लैच्युलेंस (Flatulence)।

इस रोग मे अपाचित भोजन दूषित होकर वायु उत्पन्न करता है, जिससे उदर अफर जाता है।

हेतु—गुरु, वाधी, साद्र एव पर्य्युषित भोजन करना, हरे शाक, मिठाई और फलो का अतिसेवन इसके हेतु है। कभी-कभी सुख का जीवन व्यतीत करने और भोजनोत्तर तुरत शयन कर जाने से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—भोजन करने के कुछ घण्टा पश्चात् उदर अफर जाता (स्फीत हो जाता) है और जव तक उद्गार आदि आकर वायु का उत्सर्ग न हो जाय, तब तक तवीयत हल्की नहीं होती। कभी अधिक स्फीति के कारण उदर मे शूल होता है, हृदय धडकने लगता है और पेट मे गुडगुडाहट (कराकिट) मालूम होती है।

चिकित्सा—साधारण अवस्था मे ५ माशा सौंफ या ५ माशा अजवायन चबाकर उसका रस चूसे या १ माशा सफूफ सुलेमानी खास या माशा सफूफ

नमक शैखुर्रईस भोजनोत्तर चाट लिया करे। भोजनोत्तर ७ माशा जुवारिश कमूनी या ७ माशा जुवारिश जालीनूस का सेवन भी लाभकारी है। उग्र अवस्था मे ७ माशा जुवारिश वसवास खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौफ, ३ माशा अनीसून, ३ माशा कुसूस के बीज १२ तोले अर्क सौंफ मे पीस-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम पिलाना चाहिये। ३-३ गोली हब्ब तकार भोजनोपरात खिला दिया करें। तीव्रावस्था मे सूए हज्म (अजीर्ण) मे वर्णित उपक्रम करें।

अपथ्य—वादी, गुरु, दीर्घपाकी, आध्मानकारक वस्तुओ, जैसे--आलू, अरवी, कचालू, उडद की दाल, मटर, लोबिया आदि के सेवन से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी आहार, जैसे--चपाती के साथ वकरी के मास का शूरबा देवें। शाको मे से कद्दू, तुरई, टिडा, पालक आदि देवे।

७---कब्ज

नाम—(अ०) कब्जुल् अम्आऽ, हुस्र; (उ०) कब्ज; (स०) मलावरोध, मलबद्धता, (अ०) कॉन्स्टिपेशन (Constipation)।

वक्तव्य—यह कुलज के प्रकार का एक रोग है, जिसमे मल की प्रवृत्ति (पायखाना) कठिनता पूर्वक या विल्कुल ही नही होता। कुलज और इसमे अतर यह है कि कुलज मे शूल का होना अनिवार्य है, किन्तु कब्ज मे नही। इसके ये दो भेद है--(१) आकस्मिक या कृत्रिम और (२) स्थिर या चिरज। उत्तर लिखित भेद को पाश्चात्य वैद्यक मे 'हैविच्युअल कॉन्स्टिपेशन (Habitual Constipation)' कहते हैं। कभी-कभी साधारणतया मल कम आया करता है, जिसके ये दो रूप हैं--प्रथम यह कि साधारण काल से देर मे मल विसर्जन हो, जैसे दूसरे-तीसरे दिन मल की प्रवृत्ति हो। द्वितीय यह कि समय मे तो परिवर्तन न हो, किंतु प्रमाण मे कमी हो जाय। इसको भी कब्ज ही कहते है। साम्प्रत यह व्याधि व्यापक है।

हेतु—कभी श्लेष्माधिक्य या अन्याय हेतुओ से अन्त्रो की मलविसर्जनी शक्ति दुर्वल हो जाती है। कभी गुरु एव दीर्घपाकी आहार के अति सेवन सुद्दे (मलग्रन्थि) वन जाते या अन्त्रो मे पित्त का यथावत् स्राव न होने से और मल प्रवृत्ति के लिये प्रेरणा नही मिलने से, कभी-कभी मानसिक कार्यो मे अत्यधिक व्यस्त रहने से वातनाडियाँ दुर्वल हो जाती हैं और अन्त्रो की मलविसर्जनी शक्ति दुर्वल होकर कब्ज का रोग प्रगट हो जाता है। आलस्य, काम-काज न करने, सुस्त पडा रहने, सार्वागिक दौर्वल्य तथा अर्शरोग मे भी यह व्याधि लग जाती है।

लक्षण—मल त्याग के समय अधिक देर लगती है। शुष्क स्याही मायल और दुर्गन्धित मल कठिनाई से विसर्जित होता है। कभी मलत्याग के समय मल काठिन्य एव मलग्रन्थि (सुद्दो) के कारण रक्त और श्लेष्मा भी आ जाती है। अन्त्रो मे देर तक मल के रहने के कारण उदर मे दुर्गन्धित वायु उद्भूत होकर आध्मान हो जाता है। आलस्य और बुद्धिमान्द्य होता है। शिर.शूल, हृत्स्पदन शरीर को पाडुरवर्णता या पीतवर्णता अति अङ्गमर्द, जृम्भा, पिडलियो मे हल्की पीडा—ये लक्षण होते हैं।

चिकित्सा—आकस्मिक कब्ज (मलावरोध) मे ४ टिकिया मुलय्यिन रात्रि मे सोते समय पाव भर दूध के साथ सप्ताह मे एक-दो वार खिला दिया करे। नित्य वने रहने वाले (दायमी) कब्ज मे १ तोला समूचा ईसवगोल रात्रि मे सोते समय ताजे पानी से फँका देना या १ तोला मीठे बादाम का तेल गरम दूध मे मिलाकर पिलाना या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि मे सोते समय दूध के साथ देना भी लाभकारी होता है।

जब कफाधिक्य के कारण कब्ज हो, तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना १२ तोले अर्क सौफ मे पीसकर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर कुछ दिन पिलाये। इससे दूर न हो तो खमीरा वनफ्शा के स्थान मे ४ तोला शर्वत दीनार मिलाकर पिला दिया करे। हब्ब तकार ३ गोरी या ५ माशा माजून सनाय रात्रि मे सोते समय गर्म पानी से खिलाना भी लाभकारी है। यदि इन उपायो से लाभ न हो, तो ७ माशा सौफ और ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का जल मे उबाल-छानकर ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरज-वीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ५ दाने बादाम के मग्ज के शीरा की योजना कर ४ तोला गुलकद मिलाकर पिलायें या ५ तोला एरण्ड तैल पाव भर गाय के कुनकुना गरम दूध मे मिलाकर पिलाये। ५ दाने पीले अजीर को पाव भर गाय के दूध मे २ तोला मिश्री मिलाकर उबाले। पुन अजीर पृथक् करके इस दूध को रात्रि मे सोते समय पीकर सो रहने से भी मल शुद्ध हो जाता है और कब्ज जाता रहता है।

हवूब मुलय्यिन तवा—पीत एलुआ ४ तोला, ५ तोले अर्क गुलाब मे ३ दिन तक भिगो रखे। इसके उपरान्त इसमे रूमी मस्तगी ३ माशा, सफेद निशोथ ६ माशा और मुलेठी का सत १ तोला बारीक चूर्ण करके मिलाये और चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमे से ३–४ गोली रात्रि मे सोते समय ताजे पानी या गरम दूध से खिलायें।

कभी-कभी कब्ज के साथ अफारा (नफख) भी हो जाता है और उदर अफर जाता है तथा मूत्र अवरुद्ध हो जाता है। उक्त अवस्था मे ६ माशा सौंफ, चूहे की मीगनी ६ माशा, एलुआ ६ माशा पानी या अर्क गुलाव मे पीसकर कुनकुना गरम करके पेडू के स्थान पर अर्थात् नाभि के नीचे लेप करने से मूत्र एव मल का उत्सर्ग शीघ्र हो जाता है और अफारा जाता रहता है।

कभी-कभी कब्ज की दशा मे औषधियो से लाभ नही होता। उक्त अवस्था मे वस्ति देनी चाहिये।

वस्ति योग—एरण्ड तैल ४ तोला, साबुन १ तोला, नमक ३ माशा, एक सेर पानी मे मिलाकर वस्ति करे। इससे मल शुद्ध होकर अन्त्र शुद्धि हो जाती है। दोष मिट जाने पर १ टिकिया खुन्सुल् हदीद (मण्डूर भस्म), ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल मे मिलाकर खिला दिया करे या २–२ गोली हब्ब कविद भोजनोत्तर खिलाये।

अपथ्य—गरिष्ठ एव दीर्घपाकी पदार्थ, उडद या चने की दाल, आलू, अरवी, मटर आदि सेवन न करे। बारीक आटे या मैदे की रोटी और हलवा पूडी, कचौडी आदि के सेवन से परहेज करें।

पथ्य—वकरी के मास या मुर्गे का शूरबा, मामूली शाको, जैसे कद्दू, पालक, कुलफा, तुरई, टिडा आदि चपाती के साथ देवे या शूरबा मे चपाती भिगोकर खिलाये। पुदीना या हरे धनिया की चटनी भोजनोपरान्त सेवन करें। फलो मे आम, खरबूजा, सतरा, अगूर, अमरूद, अजीर, आलूबुखारा, आलूचा, जरदालू, आडू आदि भोजनोपरान्त खाना भी कोष्ठमार्दव कर (मुलय्यिन) है।

८---दीदान

नाम—(अ०) दीदानुल् अम्आऽ, दीदान, (फा०) दीदाने शिकम, (उ०) पेट या आँतो के कीडे, (स०) अन्त्रकृमि (उदरकृमि), कृमि, क्रिमि, (अ०) इन्टेस्टाइनल वर्मज् (Intestinal worms)।

वक्तव्य—इस रोग मे अन्त्रो के भीतर विभिन्न प्रकार के कृमि उत्पन्न हो जाते है, जो शीघ्र वा देर मे विविध प्रकार के रोग-लक्षण और कष्ट उत्पन्न कर देते है। ये अन्त्रकृमि तीन प्रकार के होते है—(१) केचुए जो केचुओ की भाँति गोल-लवे होते है। ये ऊर्ध्वान्त्र मे उत्पन्न होते है। इनको अरवी हयात, आयुर्वेद मे 'गण्डूपद क्रिमि' और अगरेजी मे 'राउडवर्स (Round worm) कहते है। (२) कद्दूदाना जो सर्वथा कद्दू के वीज के समान, श्वेत एव चपटे होते है। कभी-कभी ये पृथक्-पृथक् होते है और कभी मल के साथ इनकी

गड्डियाँ बनी हुई विसर्जित होती है। इस प्रकार के कद्दूदाना अन्त्र, अन्त्र भाग विशेष (कोलून) और उण्डुक मे उत्पन्न हुआ करते है। इनको अरबी मे हब्बुलकर्ज, आयुर्वेद मे'पृथब्रघ्न निभा ब्रघ्नाकार कृमि' और अगरेजी मे 'टेप वर्म (Tape worm)' कहते है। (३) चुनूने या चुरने जो छोटे-छोटे श्वेत एव सूत के समान बारीक होते है। इनका आकार-प्रकार ऐसा होता है, जैसे सिरका मे पडे हुए कृमियो का। इसी हेतु इनको अरबी मे 'दूदुलखल्ल' कहते है। आयुर्वेद मे इन्हे 'सूत्रकृमि', हिंदी मे 'सूती कीडे' और अगरेजी मे 'थ्रेड वर्म (Thread worm)' कहते है।

हेतु—कृमि उत्पन्न का हेतु श्लैष्मिक द्रव है, जो अप्रकृत ऊष्मा के प्रभाव से अन्त्रो मे दूषित हो जाता है। श्लैष्मिक द्रवोत्पत्ति का हेतु शीतल जल का अतिसेवन और हरे शाको का सेवन है।

लक्षण—इस रोग के विभिन्न रोगियो मे इसके विभिन्न लक्षण पाये जाते है अर्थात् एक ही रोगी मे इसके समस्त लक्षण विद्यमान नही होते। क्वचित् ऐसा भी होता है कि प्रगटत कोई लक्षण भी विद्यमान नही होते। तात्पर्य यह कि जब अन्त्रो मे कृमि विद्यमान होते है, तब उदर साधारणतया फूला हुआ रहता है। उसमे आध्मान और आटोप होता है तथा कुलजवत् शूल होने लगता है। रोगी विशेषकर यदि बालक हो, तो वह अपने नाक को नोचता रहता है। सीवन और गुदा मे कण्डू होता है। मुँह से दुर्गन्ध आती है। भूख ठीक नही लगती और मल की प्रवृत्ति भी अनियमित होती है। शिर शूल और चेहरा पीला होता है। रोगी निद्रा मे दात पीसता है और उसके मुख से लाला बहती है। जब कृमि अन्त्रो मे अत्यधिक सक्षोभ उत्पन्न करते है, तब बालको और कोमल प्रकृति स्त्रियो मे विशेष रूप से कतिपय वातिक लक्षण उत्पन्न हो जाते है। उदाहरणत शिर चकराता है, कान मे बाजे से बजते है। कभी आक्षेप, कम्प या मृगी हो जाती है। क्वचित् रोगी उन्मादग्रस्त भी हो जाता है। केचुओ की दशा मे मिचली और हृदयोद्वेष्टन होता है। कद्दूदानो मे मरोड, अन्त्रशूल और अत्यन्त बेचैनी होती है। चुरनो मे सरलान्त्र के भीतर और गुदा के समीप कण्डू हुआ करता है।

चिकित्सा—प्रथम गाय के दूध मे मिश्री मिलाकर तीन दिन तक पिलायें और अत्यत मधुर, स्वादिष्ट एव स्नेहाक्त भोजन करायें। पुन कृमिघ्न औषधि सेवन करायें और दूसरे दिन विरेचन देवे।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) बायबिडग ९ माशा, (२) सरख्स १० माशा, (३) तुर्मुस ६ माशा, (४) कालादाना २ माशा, (५) कुष्ठ ३ माशा, (६) सफेद निशोथ ६ माशा, (७) नमक हिंदी ५ माशा, (८) लहसुन ३

दाना, (९) तरामिरा ६ माशा, (१०) पुदीना ३ माशा ये सब ओषधियाँ पृथक् पृथक् कृमिघ्न होने के कारण अन्त्रकृमियो का नाश एव निर्हरण करती है। अन्त्रस्थ मृत केचुओ के निर्हरण के लिये राजी के मत से निम्न औषधियो का उपयोग लाभकारी है—(११) २ से ५ माशा तक कलौंजी का चूर्ण या इसका क्वाथ और इन्द्रायन के स्वरस मे पीसकर नाभि के ऊपर किया हुआ इसका लेप भी गुणकारक है। (१२) शफ्तालू के हरे पत्र और कोमल शाखायें कूट-पीसकर नाभि के ऊपर लेप करने या उनका स्वरस पीने से केचुए और कद्दूदाने निकल जाते है। (१३) सकमूनिया २ रत्ती और निशोथ ३ माशा नीहार-मुँह इसके सेवन करने से छोटे और बडे उभय प्रकार के कृमि मृत होकर निर्हरण हो जाते है।

शैख और इब्न मासौया लिखते है कि (१४) कुलफा का स्वरस पीने से कद्दूदाना मरकर निकल जाते है। (१५) कच्चा लहसुन नीहार मुँह खाने और नाभि के ऊपर लेप करने तथा (१६) ३ माशा उशक को अफसतीन के क्वाथ के साथ सेवन करने से भी उक्त लाभ होता है। समस्त यूनानी वैद्यो का इस विषय मे मतैक्य है कि कद्दूदाना के निर्हरण के लिये (१७) कमीला (४ माशा की मात्रा मे) एक सर्वोत्तम औषधि है। इसको गुलकद अथवा किसी अन्य उपयुक्त ओषधि मे मिलाकर सेवन कराये। जालीनूस के मत से इस विषय मे तिर्याक फारूक भी अतीव लाभकारी है। लाल चनो को दो दिन और एक रात तीक्ष्ण सिरका मे भिगो देवें और खूब भूख लगने पर सेवन करे। इससे कद्दूदाने मर जाते है। इसी प्रकार ६ माशा राई का चूर्ण शीतल जल से सेवन करने से भी लाभ हो जाता है। राजी ने अलहावी नामक अपने सुप्रसिद्ध ग्रथ मे लिखा है कि कद्दूदानो के निर्हरण हो जाने के उपरान्त गधक, चुकन्दर, लवण, जैतून का तेल, कबर और अखरोट के तेल मे से कोई द्रव्य भोजन से पूर्व सेवन कर लेना चाहिये। इससे पुन इस रोग की पुनरावृत्ति नही होगी।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल दीदान रात्रि मे सोते समय अथवा प्रात नीहारमुँह ५ से १२ माशे तक १२ तोले अर्क गावजवान के साथ सेवन करने से अन्त्रकृमि नष्ट हो जाते है। इसी प्रकार (२) अतरीफल क्रिब्रील १ तोला, १२ तोले अर्क बादियान के साथ विरेचन द्वारा उदर शुद्धि कर लेने के उपरान्त सेवन करने से इसमे अद्भुत लाभ होता है। चुरनो और केचुओ मे विशेष लाभकारी एव कृतप्रयोग है। इसको चार-पाँच दिन खिलाकर पुन. एक विरेचन दे देना चाहिये, जिससे मृत कृमि निस्सरित हो जाय। (३) हब्ब दीदान प्रति दिन १ गोली गरम पानी से सेवन करने से कद्दूदाने मरकर

निकल जाते है। (४) हब्ब मुलीम १ गोली माता के दूध मे घिसकर देने से बालको के चुरने दूर होते है। (५) सफूफ विरगी १॥ तोला गरम पानी से सेवन करने से भी उदरकृमि विशेष कर केचुए मरकर निकल जाते है। इसी प्रकार सफूफ दीदान, सफूफ कमून और माजून सरख्स का उपयोग भी लाभकारी है।

सिद्धयोग—(१) हर प्रकार के उदरकृमि नष्ट करनेवाली औषधि—शहतूत के वृक्ष की छाल २ तोला, खट्टे अनार के वृक्ष की छाल २ तोला दोनो को उबाल-छानकर पिये। (२) कद्दूदाने और लबे कृमियो को निकालने वाली औषधि—निशोथ, कमीला कालादाना, सरख्स प्रत्येक १७ माशा, दिर्मन तुर्की विरग काबुली प्रत्येक ७ माशा, नमक हिन्दी १ माशा, समस्त द्रव्यो को कूटकर दुग्ध और शर्करा मे मिलाकर सेवन करे। (३) उदरकृमियो को मार-निकालनेवाला चूर्ण-योग—छिला हुआ विरग काबुली, सरख्स, सफेद निशोथ, कमीला प्रत्येक १७ माशा, बाकला, मिश्री, कुष्ठ तिक्त प्रत्येक २ तोला, दिर्मन तुर्की ३ तोला, नमक हिन्दी ४ माशा—समस्त द्रव्यो को कूटकर ७ माशा प्रतिदिन नीहारमुँह खिलायें। (४) उदरकृमि निस्सारक औषधि जीरा किर्मानी, करजुवा की गिरी, पलास पापडा, कमीला, बायविडग प्रत्येक ४ माशा बारीक पीसकर गुड मे मिलाकर दो बार खिलायें। (५) युवा और बालक कृमि-नाशक लेप—अफसतीन रूमी, छिला हुआ बायविडग, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ७ माशा—समस्त द्रव्यो को वृषपित्त के साथ अथवा केवल जल मे पीसकर उदर के ऊपर लेप करे।

अपथ्य—गुरु, दीर्घपाकी, कफकारक साद्र पदार्थ, तनूर एव मैदा की पकी हुई रोटी, चने की दाल, आलू, अरवी, कचालू, मटर और लोबिये की फलियाँ, अमरूद, नासपाती और बेर आदि खाने से परहेज करे, बर्फ का अति सेवन न करे।

पथ्य—बकरी के बच्चा का मास, मुर्गा या तीतर या बटेर का शूरबा या भुना हुआ चटक मास गरम मसाला आदि डालकर खूब खिलायें। आटे मे नमक और सोडा मिलाकर रोटी पकाकर खिलायें। पुदीना, अदरक की चटनी जीरा मिलाकर खिलाये। फलो मे आडू, अखरोट (२ तोला) और मीठा बादाम (२ तोला) इनका अति सेवन परम गुणकारी है।

———

गुदरोगाध्याय (अम्राज़ मक़्अद) ९

१ – बवासीर

बवासीर के ये दो भेद हैं––(१) खूनी (बवासीर खूनी) और (२) रीही अर्थात् बादी (बवासीर रीही, रीहुल् बवासीर)। नीचे इनमे से प्रत्येक का विवरण किया जाता है––

बवासीर खूनी

नाम––(अ०) बवासीर दामी (दामिय), (उ०) बवासीर खूनी, बवासीर, (स०) रक्तार्श, (अ०) हीमोरॉइड्ज (Haemorrhoids), पाइल्ज (Piles)।

वक्तव्य––गुदोष्ठो (गुदा के किनारो) पर अकुर (मस्से) उत्पन्न हो जाते है जिन्हे यूनानी वैद्य 'बवासीर' कहते है। गुदरोगो मे से यह एक प्रसिद्ध रोग है जिसमे गुदस्थ स्रोतो के मुख पर साद्र सौदावी रक्त से ऐसे अकुर उत्पन्न हो जाते है जिनसे कभी-कभी रक्तस्राव होता रहता है और उनमे न्यूनाधिक शोथ एव वेदना भी होती है।

हेतु और लक्षण––गरमी की तीव्रता और उष्ण आहार विशेषकर लाल मिर्च और मास के अतिसेवन से वारवार तीव्र विरेचन लेने से तथा भारतवर्ष की प्रकृति-भूत उष्णता के कारण रक्त विदग्ध होकर साद्रीभूत एव भारी हो जाता है तथा नीचे की ओर प्रवृत्त हो जाता है और अन्त्र के स्रोतो की उन अतिम शाखाओ तक पहुँचकर जो सरलान्त्र से सलग्न है, दाह एव उद्वेष्टन उत्पन्न करता है तथा उन स्रोतो के सिरे इस प्रतान-वितान (खिचने-खिचाने) के प्रभाव से स्फीत होकर उभर आते है और अकुर (मस्से) कहलाते है। इनमे तीव्र वेदना उत्पन्न हो जाती है तथा उक्त विदग्ध रक्त की उष्णता एव रूक्षता उनको विदीर्ण कर देती है जिससे रक्तस्राव आरंभ हो जाता है। कभी-कभी अत्यत तीव्र कष्ट के कारण गुदा मे शोथ भी हो जाता है। स्रोतो के स्फीत हो जाने के कारण मलत्यागमार्ग सकीर्ण हो जाता है जिससे मलावरोध बना रहता है। यदि कठिनता पूर्वक मलोत्सर्ग होता भी है तो अकुरो एव स्रोतो पर पीडन होने (दबाव पडने) से कष्ट एव वेदना के अतिरिक्त रक्त भी बहने लगता है। रक्त कभी मल के साथ मिला हुआ आता और कभी विद्रुश टपकता है। कभी इतना

रक्तस्राव होता है कि रोगी दुर्वल होकर मूर्च्छित हो जाता है। तीव्र वेदना एव कष्ट के कारण अकुर शोथयुक्त होकर गुदा से वाहर निकल आते है। गुदा के स्थान पर वोझ, खर्जू एव दाह होता है। अर्शाकुर कभी भीतर होते है। उक्त अवस्था मे औषधादि लगाने मे कष्ट होता है। कभी वे वाहर की ओर होते है। उक्त अवस्था मे औषधि आदि सरलता से लगाई जा सकती है।

चिकित्सा—जब तक अर्शाकुरो से काला एव गाढा रक्त वहता रहे तथा शक्तिदौर्वल्य प्रगट न हो तव तक रक्त का वहना वन्द न करे। जब रोगी दुर्वल हो जाय और शुद्ध एव रक्तवर्ण शोणित स्रावित हो तव उक्त अवस्था मे रक्त-स्तभन औषधियो का उपयोग करे। सुतरा सवेरे १ माशा रसवत प्रथम खिलाकर ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी जल मे भिगोकर लबाब निकाले और आजवार की जड ३ माशा, हब्बूल् आस ३ माशा जल मे पीसकर शीरा निकाल-कर लबाब मे मिला लेवें और २ तोला शर्बत वनफ्शा या शर्बत अजबार या शर्बत हब्बुल् आस २ तोला मिलाकर ७ माशे समूचा इसवगोल और ५ माशे बारतग के वीज का प्रक्षेप देकर पिलायें। सायकाल हब्ब बवासीर सुर्ख २ गोली खिला-कर शर्बत अजवार २ तोला अर्क गावजबान १२ तोले मे मिलाकर पिला दिया करें। रसवत १ माशा और गुग्गुल १ माशा यथावश्यक हरे गदना के रस मे पीसकर अर्शाकुरो पर लेप करें। या १० तोले दही का पानी लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर प्रतिदिन पिला दिया करे। अर्शाकुरो पर मरहम माजू या मरहब साईदा चोबनीव लगाये।

यदि अर्शा रो मे खुजली हो तो ानी मे कुचला विसकर उन पर लेप कर अथवा मसीकृत प्रवालमल ४ रत्ती, मसीकृत मोती ४ रत्ती, ७ माशे खमीरा खशखाश मे मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से विहीदाना ३ माशा, कनौचा के वीज ३ माशा, इसबग ल ३ माशा जल मे भिगोकर लबाव निकालकर अजवार मूल और हब्बुल्आस ३–३ माशा जल मे पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाये और बूरा (शकर सुर्ख) और हरा माजूद ६ माश जल मे पीसकर अर्शाकुरो पर लेप कराये। जब अर्शाकुर शोथयुक्त होकर फूल जायें और रक्त स्रावित न हो तो वासलीक सिरा का वेधन कराये अथवा अर्शाकुरो पर जोक लगवायें और शोथ एव वेदना निवारण के लिये उन पर यथावश्यक मरहम काफूर लगाये। अथवा १–१ माशा रसवत और अफीम घी मे मिलाकर अर्शाकुरो पर मरहम की भाँति लगाये। भाग की पत्ती १ तोला यथावश्यक गाय के दूध मे उवालकर उससे गुदा मे वफारा देवे और सीठी की टिकिया वनाकर कुनकुना गरम अर्शाकुरो पर वाधे। छोटी हड घी मे भूनकर चूर्ण वनाकर १ तोला प्रति दिन सेवन करने से रक्त वन्द हो जाता है।

नुसखा हब्ब बवासीर मुजर्रब--रसवत, नीम के बीज की गिरी, वकायन के बीज की गिरी, काली हड प्रत्येक १ तोला--सबको कुकरौधा के पत्र-स्वरस मे पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनाये और २-२ गोली सवेरे-शाम ताजे जल से सेवन कराये।

टि०--अर्शांकुरो का छेदन कराना और अतीव आवश्यकता के विना रक्त वन्द करना अहितकर है, क्योकि अर्शोजात रक्त के अवरुद्ध हो जाने से हृदय, मस्तिष्क एव यकृत् पर कुप्रभाव पडकर अन्यान्य भयावह एव साघातिक व्याधियो के प्रादुर्भाव का भय होता है। यदि अत्यन्त रक्तस्राव हो रहा हो तो रोगी को चेष्टा नही करने देवे और पाँव किंचित् ऊँचा रखकर चारपाई के ऊपर लिटाये रखे।

अपथ्य--उष्ण पदार्थ, जैसे मास के अति सेवन, मद्य सेवन, लालमिर्च, बैंगन, चाय, अडा प्रभृति के खान-पान से, उग्र चेष्टा एव श्रम करने, धूप मे चलने-फिरने और भार उठाने से परहेज करे।

पथ्य--लघु, नरम और शीघ्रपाकी आहार, जैसे--मूँग की नरम खिचडी या बकरी का कम मिर्च का शूरबा, कुलफा, ककडी, कद्दू, तुरई प्रभृति शाक यथाभ्यास देवे। मूँग की दाल चपाती के साथ और खशका दूध के साथ खिलाये।

बवासीर रीही

नाम--(अ०) रीहुल् बवासीर (बवासीर की रीह वा वायु), बवासीर रीह (ही), (उ०) रीही बवासीर, वादी बवासीर, (हिं०) वादी बवासीर, (स०) वातार्श, (अ०) क्रॉनिक (Chronic Dyspepsia)।

इस रोग मे यद्यपि रक्तादि नही निकलता, तथापि एतज्जन्य कष्ट रक्तार्श से कम नही होते। इसमे वायु (रियाह) होती है जो प्राय. उदरावकाश मे कभी-कभी सम्पूर्ण शरीर मे घूमती रहती है। इसमे अर्शांकुर विल्कुल नही होते।

हेतु--चिरज मलावरोध और आर्द्र एव शीतल स्थान पर अधिक बैठने से, वादी और वाष्पकारक पदार्थ या मास के अतिसेवन से यह रोग हो जाता है। कभी-कभी अति मद्य सेवन से यकृत् की क्रिया मन्द होकर या अन्यान्य यकृद्रोगो के कारण और स्त्रियो मे गर्भ काल मे भी यह व्याधि हो जाती है।

लक्षण--उदर वकाश मे वायु फिरती हुई मालूम होती है और मलावरोध होता है। कभी कभी अङ्गमर्द एव सन्धिपीडा होती तथा कटि एव जानु मे भी पीडा होती है। उठते-बैठते जोड चटखते है। पचन विकार एव क्षुधानाश होता, शरीर एव चेहरे का वर्ण फीका (विवर्ण) पीताभ एव हरिताभ हो जाता है। कभी-कभी कण्डू रूप व्याधि भी हो जाती है।

चिकित्सा—उक्त अवस्था मे सवेरे रसवत १ माशा, गूगुल १ माशा दोनो को पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा अतरीफल मुकल या ५ माशा माजून मुकल मे मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, अनीसून ३ माशा १२ तोले अर्क सौफ मे पीसकर शीरा निकाल कर ४ ोला खमीरा बनपशा मिलाकर पिला दिया करे। सायकाल हब्ब खुब्सुल्हदीद ३ गोली जल से खिला दिया करे। मलावरोध निवारण के लिये हड का एक मुरब्बा रात्रि मे सोते समय खिला दिया करे और रसवत, नीम के बीज की गिरी, बकायन के बीज की गिरी प्रत्येक ६ माशा अर्क सौफ मे पीसकर इसमे रूई का फाहा आप्लुत करके गुदा मे स्थापन करे जिसमे कण्डू, वेदना एव शोथ शात हो।

इस रोग के साधारण कष्ट सदैव रहा करते है। परतु किसी कुपथ्य के कारण अथवा अन्यान्य वाह्य हेतुओ से आवेग के साथ कष्ट मे वृद्धि हो जाती है। आवेग दूर होने के पश्चात् कुश्ता फौलाद १ टिकिया या कुश्ता खुब्सुल्-हदीद १ टिकिया ७ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल मे मिलाकर कुछ दिन सवेरे खिला दिया करें और सायकाल हब्ब मुकल् ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ के साथ फँका दिया करें।

इस रोग मे स्नान करना, घोडे की सवारी और थोडा व्यायाम करना या कुछ दूर तक पैदल चलने का अभ्यास रखना लाभकारी उपाय है। यह गोली भी गुणकारी ह—रसवत, नीम के बीज की गिरी, बकायन के बीज की गिरी, काली हड, नरकचूर, गूगल (मुकल अर्जक), काली मिर्च, रूमी मस्तगी प्रत्येक ६ माशा लेकर सबको पीसकर कुकरौंधा के रस मे घोटकर जगली बेर के बराबर गोलियाँ बनाये। इसमे से २ गोली रात्रि मे सोते समय खिलाये। यदि दोष की प्रगलभता हो तो माली खोलिया मे लिखे अनुसार सौदा का शोधन करें। और अफतीमून विलायती ५ माशा १२ तोले अर्क माउज्जुब्न मे रात्रि मे भिगोकर प्रात मल-छानकर २ तोले शीरखिश्त मिलाकर पिलाने से यह रोग और माली खोलिया विशेष (मराक) भी नष्ट हो जाता है। समस्त आमाशयान्त्र बलदायिनी (दीपन), वातानुलोमन और मृदुसारक औषधियाँ इस रोग मे लाभकारी-होती हैं।

अपथ्य—बादी (वायुकारक) और गरिष्ठ पदार्थ आलू, गरबी, भिंडी, बगन, दूध, दही और दूध के बने पदार्थ, अधिक मधुर एव अम्ल पदार्थ, सिरका की चटनी और अचार आदि तथा लाल मिर्च के अतिसेवन से परहेज करें।

पथ्य--चपाती, बकरी का शूरवा, कम मिर्च का बकरी के बच्चे का भुना हुआ मास, मुर्गी का बच्चा, मूँग-अरहर की दाल, फलो मे खूबानी, अगूर और सेव आदि सेवन कराये।

---

२ – नवासीर

नाम--(अ०) नवासीर, नवासीर मक्ऊद; (उ०, हि०) भगन्दर, (स०) भगन्दर, (अ०) फिश्चयुला इन एनो (Fistula in Ano)।

नवासीर नासूर का बहुवचन है जिसका अर्थ पुरातन गभीर व्रण है। इसके ये दो भेद है--(१) नाफिज जिसमे उसका छिद्र सरलान्त्र तक चला जाता है। यह असाध्य एव दुश्चिकित्स्य हुआ करता है, क्योकि इससे मल निर्हरण होता रहता है। (२) गर नाफिज जिसमे छिद्र दोनो ओर नही खुलता, केवल मास के भीतर रहता है और बाहर की ओर निकलता है। यह साध्य एव चिकित्स्य हो सकता है। बाह्य और आभ्यतर भेद से इसके दो उप-भेद होते हैं। इन दोनो के निदान की सहज विधि यह है कि नासूर मे सलाई और गुदा मे ऊगली डालकर अन्वेषण करे कि उक्त सलाई का सिरा ऊगली को स्पर्श करता है या नही। यदि स्पर्श करता हो तो नाफिज वरन् गैरनाफिज समझें।

हेतु--शैखुर्रईस लिखते है कि कभी-कभी गुदा के अन्य क्षत एव व्रण से नवासीर (भगदर) की उत्पत्ति होती है और कभी-कभी बवासीर मुताकिला इनका हेतु हुआ करता है। जर्जानी और एलाकी के मतानुसार नवासीर और ववासीर के एक ही हेतु होते हैं।

लक्षण--इस रोग मे गुदौष्ठो पर किसी जगह छिद्र होता है जिससे प्रतिक्षण रक्त एव पूय मिला हुआ पीले रग का पानी स्रावित होता रहता है। या छिद्र के स्थान पर दबाने से पीव निकलती है और ववासीर मे उल्लिखित समस्त लक्षण पाये जाते है। यदि नाफिज हो तो मलत्याग के समय उससे मल निर्हरण हुआ करता हे। यह असाध्य एव दुश्चिकित्स्य है।

चिकित्सा--इस रोग की आभ्यतरीय चिकित्सा तो वही है जिसका विवरण ववासीर खूनी मे किया जा चुका है, किन्तु इसमे स्थानीय चिकित्सा एव व्रण की शुद्धि अत्यावश्यकीय है। अतएव मृदुसारक औषधियो एव उष्ण जल की वस्ति से व्रण को शुद्ध करते रहना चाहिये और नासूर के छिद्र मे पिचकारी के द्वारा रोगन नासूर पहुँचाना या उसमे कपडे की वत्ती आप्लुत करके स्थापन करना भी लाभकारी होता हे। यदि नासूर गुदा के किनारे पर हो और सर-लान्त्र पर्यंत नही पहुँचा हो तो प्रथम उसको दबाकर और सलाई डालकर मवाद

और पूयादि से शुद्ध करके रोगी को चित लेटाकर और नितम्बो के नीचे तकिया रखकर औषधि लगाये और जब तक औषधि सूख न जाय रोगी को उसी स्थिति मे रखना चाहिये।

यदि नासूर सरलान्त्र पर्यत पहुँच गया हो और वायु एव मल उस मार्ग से उत्सर्गित होता हो तो उक्त अवस्था मे चिकित्सा से सिवाय कष्टवृद्धि के और कोई लाभ नही हो सकता। ऐसी दशा मे किसी चतुर शल्यहर्ता (सर्जन) के परामर्श से शस्त्र कर्म करा लेने से प्राय उपकार होता है।

यह औषधि बन्द नासूर को खोलती और तत्स्थ पूयादि को शुद्ध करके कष्ट का निवारण करती है। गेहूँ का आटा १ तोला, शुद्ध मधु १ तोला और एक अडे की जर्दी, सबको परस्पर मिलाकर नासूर के ऊपर बाँधे। जल मे बिल्ली की पसली पीसकर नासूर के भीतर टपकाने या उसमे कपड़े की बत्ती आप्लुत करके स्थापन करने से भी उपकार होता है।

अन्य एक बिच्छू को २ तोले गाय के घी मे जलाकर उसमे बत्ती आप्लुत करके स्थापन करने या पिचकारी के द्वारा व्रण के भीतर प्रवेशित करने से भी लाभ होता है।

टि०--ऐसे रोगी को यदि मलावरोध हो जाय तो कोई तीव्र विरेचन न दे, अपितु कोई मृदुसारक औपधि देनी चाहिये। ५ दाने अजीर विलायती रात्रि मे एक पाव दूध मे उबालकर वह दूध पिलाने से मलावरोध दूर हो जाता है।

अपथ्य--उष्ण, तीक्ष्ण मसालेदार, गुरु, विष्टभकारक, दीर्घपाक और बादी तथा गुड-तेल के बने पदार्थ एव लालमिर्च के अतिसेवन से परहेज करे।

पथ्य--लघु और मृदु, जैसे मूँग की नरम खिचडी या डबल रोटी, बकरी के शूरबे मे भिगोकर और शीतल शाक जैसे कद्दू, तुरई, टिडा, पालक, भिडी आदि आवश्यकतानुसार देवे और कब्ज नही होने देवे।

३,४,५-वरम मक्‌अद, शिकाक मक्‌अद और हिक्कतुल् मक्‌अद

नाम--(अ०) वरमुल्म क्अद, (उ०) मक्अद की सूजन, (स०) पायुशोथ गुदपाक, (अ०) रेक्टायटिस (Rectitis)।

--(अ०) शिशुकाकुल्मक्अद, (उ०) मक्अद का फटना; (स०) गुदचीर,, (अ०) फिशर ऑफ दी रेक्टम् या एनस (Fissure of the Rectum or Anus)।

--(अ०) हिक्कतुल् मक्अद; (उ०) मक्अद् की खारिश, (स०) गुदकण्डू, (अ०) प्रूरायटिस एनाई (Pruritis Ani)।

हेतु—कभी अर्श या उदरकृमि एव अजीर्ण के कारण स्त्रियो को गर्भावस्था मे गुदकण्डू रोग हो जाता है। कभी तीव्र विरेचन के बारबार उपयोग से अथवा अधिक मिर्च एव मसालेदार भोजन करने या अति मद्य सेवन वा गुदा पर आघात लगने या किसी नुकीली वस्तु के चुभने से गुदा मे शोथ हो जाता है। गुदचीर अर्श या भगन्दर रोग हो जाता है।

लक्षण—मलत्याग-स्थान पर केवल कण्डू होता है। शोथ की दशा मे गुद के चतुर्दिक दाह, शोथ और तीव्र-पीडा होती है जिसकी टीसें पृष्ठ पर्यंत पहुँचती हैं। पेचिस और मरोड के साथ मलोत्सर्ग होता है। मल मे स्याही मायल कफ निस्सरित होता है और बारबार मूत्रोत्सर्ग होता है। गुदचीर मे मलत्याग काल मे गुदा मे तीव्र पीडा एव दाह होने के अतिरिक्त भगन्दर का दोष या अर्शोजात रक्त भी निकलता है।

चिकित्सा—गुदकण्डू मे प्रथम रोगी को ३ टिकिया कुर्स मुलय्यिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलाय अथवा ३ त ला रेंडी का तेल एक पाव दूध मे मिलाकर पिलाये जिसमे विरेक आदि होकर अन्त्र शुद्ध हो जाय। पुन. गुदा के ऊपर रोगन बनफ्शा या गुलरोगन या मरहम काफूर यथावश्यक तिला की भाँति लगाये तथा रोगी को उष्ण जल मे बैठायें। शोथ की दशा मे रोगी को सूखपूर्वक रखे और उसे उष्ण जल मे बैठाये अथवा गुलबनफशा १ तोला, खतमी के बीज १ तोला, खुबाजी के बीज १ तोला, सूखा मकोय १ तोला, १० सेर जल मे उबालकर उसमे रोगी को बैठाये और गुलरोगन १ तोला मुर्गी के एक अडे की सफदी, हरे धनिये का रस ५ तोला मिलाकर इसमे ४ रत्ती अफीम की योजना कर शीशे या जस्ते की कटोरी मे खूब घिसकर गुदस्थल मे लेप करें तथा गुलबनफ्शा और गुलनीलूफर ७–७ माशा, कासनी के बीज ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, आलूबुखारा ५ दाना समस्त द्रव्यो को रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर कुछ दिन तक पिला दिया करें।

यदि मलावरोध हो तो रात्रि मे सोते समय एक हडका मुरब्बा खिला दिया करे। गुदचीर के लिये बवासीर के प्रकरण मे जिन योगो का उल्लेख किया गया हे, उनका उपयोग करायें। भगन्दर जनित गुदचीर मे कपडे की बारीक बत्ती बनाकर रोगन नासूर मे आप्लुत (लत) करके भगन्दरीय नाड़ी व्रण के स्थान पर रखवायें। कब्ज निवारण के लिये १ तोला समूचा इसबगोल या एक हडका मुरब्बा खिला दिया करें और ६ माशा खतमी के बीज के लुआब और ६ माशा इसबगोल के लुआब मे १ तोला सफेद मोम और १ तोला गुलरोगन मिलाकर उसमे ३–३ माशा कतीरा और निशास्ता का महीन चूर्ण मिलायें।

पुन गरम करके कैरूती की भाँति तैयार करके गुदा पर लगाते रहें। मरहम काफूर, मरहम राल या मरहम जदवार लगाना भी लाभकारी है।

अपथ्य—उष्ण, तीक्ष्ण और मसालेदार वस्तु तथा वादी, गुरु एव वाष्प-कारक वस्तु, जैसे—उडद की दाल, आलू, अरवी, कचालू आदि से परहेज करें।

पथ्य—पतले आहार यवमड या सागूदाना, शूरवा, यखनी प्रभृति थोडी-थोडी मात्रा मे थोडे अन्तर से देवे। आराम होने पर धीरे-धीरे मूँग की दाल, चपाती या मूँग की नरम खिचडी आदि आवश्यकतानुसार देवें।

६—खुरूजुल् मकअद

नाम—(अ०) खुरूजुल् मकअद, (उ०) कॉच निकलना, (स०) गुद्रभ्रश, (अ०) प्रोलैप्सस एनाई (Prolapsus Anı)।

हेतु—यह रोग साधारणतया शोथ एव अगघात के कारण होता है। कभी सार्वदैहिक दौर्वल्य, उदरकृमि, प्रवाहिका, चिरज अतिसार वा ग्रहणी और हठीले कब्ज के कारण भी यह रोग हो जाता है। वालको मे यह रोग प्रचुरता से पाया जाता है।

लक्षण—मलत्याग के समय कॉच (गुदा) वाहर निकल आती है। यदि शोथ के कारण हो तो गुदा पर सूजन होती है और बहुत कठिनाई से भीतर की ओर लौटती है। यदि घात (ढीला हो जाना) के कारण हो तो शोथज गुदभ्रश के विपरीत यह सरलता से पुन वापिस लौटाई जा सकती हे। यदि कोई अन्य कारण हो तो उसके विशिष्ट लक्षण व्यक्त होते हैं। रोग की प्रवलता होने पर मल की प्रवृत्ति के बिना कासने, हँसने और दैनिक कार्य करने से भी यह निकल आती है। कभी इसके ऊपर व्रण भी हो जाते हैं।

चिकित्साक्रम—मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करे। वेदना शमनार्थ अवसादक विधियो का उपयोग करें। भाग की पत्ती दूध मे महीन पीसकर गुदा के ऊपर लगाये। गुलनार सुर्ख, हरा माजू, अनार का छिलका प्रत्येक १ माशा—सवको महीन पीसकर भ्रष्ट गुद के ऊपर इसका अवचूर्णन करे और इसे धीरे-धीरे भीतर प्रविष्ट करके लगोट वॉध लेवें। वलत, अकाकिया गुलनार, हरा माजू, अनार का छिलका प्रत्येक ६ माशा—सवको पानी मे उवाल कर उससे गुद प्रक्षालन करें तथा सीठी को पीसकर उसके ऊपर लेप करें। फौलाद भस्म २ चावल ५ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर ताजे पानी खिलायें। यदि शोथ हो तो ३ माशा मरहम सफेदा मे ४ रत्ती अफीम मिलाकर गुदा के चतुर्दिक लेप करें।

अपथ्य—उष्ण एव तीक्ष्ण पदार्थ से परहेज करे।

पथ्य—दूध, खशका और चपाती वकरी के शूरवा से देव।

प्रमेह (मूत्र) रोगाधिकार (अम्राज निजाम बौल) १०

वृक्क-बस्ति रोगाध्याय (अम्राज गुर्दा बल्मसाना)

१---दजउल्कुलिया

नाम—(अ०) वजउल्कुल्य, कुलज कुल्वी; (उ०) दर्दे गुर्दा, गुर्दे का दर्द, (स०) वृक्कशूल, (अ०) रेनल कॉलिक (Renal colic)।

हेतु--प्रथम वायु (रीह) जो साान्द्रदोषो से उत्पन्न हो कर वृक्क मे सचरण करती है और द्वितीय अश्मरी या शोथ इसके प्रधान हेतु है।

लक्षण--कटि मे वृक्क के स्थान पर तीव्र पीडा होती है। पीडा की अधिकता के कारण रोगी व्याकुल एव बेचैन होता तथा लोटता एव तडपता है। वारबार मूत्र-याग की प्रवृत्ति होती है। किन्तु मूत्रावरोध होता है। यदि मूत्रोत्सर्ग होता भी है तो अल्प एव विदुश टपकता है। यदि अश्मरी के कारण हो, तो मूत्र रक्तमिश्र होगा। हस्त-पाद शीतल हो जाते है। नेत्र के सामने अधेरा हो जाता है। नाडी क्षीण एव दुर्बल हो जाती है। उत्क्लेश और वमन होता हे। वातज शूल (रियाही दर्द) मे शूल एक ही स्थान मे स्थिर नही रहता, इधर-उधर सचरण करता है तथा वृक्क के स्थान पर भारानुभव नही होता।

चिकित्सा—वातज (रीही) वृक्कशूल मे प्रथम दो गोली हब्ब मुसहिल गरम पानी से देवे और अर्क अजीब ६ माशा सिरका मे मिला कर पीडा के स्थान मे मर्दन करें। जब दो-तीन विरेक खुल कर हो जाएँ तब रात्रि मे अर्क सौफ कुनकुना गरम करके बारबार पिलायें और सबेरे १२ तोले अर्क सौफ मे ५ माशा सौफ और तीन माशा अनीसून का शीरा निकाल कर इसमे ४ तोला शर्बत दीनार घोल कर इसके साथ १ तोला जूवारिश कमूनी मुसहिल सेवन करायें। रात्रि मे सोते समय हब्बतकार ४ गोली खिलाये। दो सप्ताह के बाद कुर्स खुब्सुल्हदीद १ टिकिया ७ माशा माजन नान्खाह मे मिला कर सवेरे देवे और भोजनोत्तर दोनो समय जुवारिश कमूनी सेवन कराये। कब्ज की दशा मे हब्ब तकार सेवन करायें। वृक्कस्थ सिकता वा अश्मरीजन्य वृक्कशूल मे वृक्काश्मरी की चिकित्सा करें।

सिद्धयोग—हब्ब मुसहिल—जयपाल के बीज का मग्ज, काली हरड और साठी का चवल समभाग ले कर जल से घोट-पीस कर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। निरापद विरेचन योग है। आवश्यकतानुसार दो से तीन गोली तक जल के साथ सेवन करायें।

अक्सीर अजीब--अजवायन का सत, पुदीना का सत और कपूर बराबर-

बराबर लेकर एक शीशी मे डाल देवे । थोडी देर मे द्रवीभूत हो जायगा । विविध रोगो और वेदनाओ मे लाभकारी है ।

पथ्यापथ्य—प्रथम दिन शूरवा और इसके बाद शूरवा-रोटी आदि क्षुधा से कम देवें। चावल, आलू, गोभी आदि बादी पदार्थो से परहेज करायें।

२---जोफ 'कुल्या व मसाना

नाम—(अ०) जोफुल्कुला, जोफुल्कुल्य (वल् मसान), (उ०) जोफेगुर्द व मसाना, गुर्दा और मसान की कमजोरी, (स०) वृक्कबस्ति दौर्बल्य, (अ०) एटोनी ऑफ दी किडनी एण्ड ब्लैडर (Atony of the kidney and Bladder) ।

इस रोग मे एक या दोनो वृक्को की क्रिया मन्द हो जाती है और वे मूत्र का उत्सर्ग सम्यक् वा प्राकृतिक रूप मे नही कर सकते ।

हेतु---कभी अति मैथुन या घोडे और ऊट की सवारी अधिक करने या तिल पदार्थो के अति योग से वस्ति और वृक्क दुर्बल हो जाते हैं ।

लक्षण---वृक्क दौर्वल्य के साथ कामावसान भी हो जाता है। कटिशूल होता और चेष्टा करने से वृक्क के स्थान पर भी शूल होने लगता है। मूत्र रक्त वर्ण का हो जाता है। बस्ति के दौर्बल्य मे मूत्र बारबार होता है और कभी-कभी रोगी मूत्र रोकने मे असमर्थ रहता है। इस रोग के लक्षण लगभग बौल जुलाली के समान होते हैं । तुसुतरॉ बौल जुलाली मे भी वृक्को मे रक्त सचय हो जाने के कारण गस्साली किस्म का मूत्रोत्सर्ग होता है। अतएव कतिपय यूनानी वैद्यो ने इसको बौल जुलाली का पर्याय माना है। इसकी चिकित्सा आदि भी किसी सीमा तक बौल जुलाली से तद्वत् है। अतएव बौल जुलाली मे ही इसकी चिकित्सा लिखी गई है ।

३---वरमल्कुल्या

नाम---(अ०) वरमुल्कुला (कुल्य), (उ०) वरम गुर्द, गुर्दे की सूजन, ब्राइटका मरज, (स०) वृक्क शोथ, (अ०) नेफ्राइटिस (Nephritis), ब्राइट्स डिजीज (Bright's disease)

हेतु---शरीर मे रक्त एव पित्त की अधिकता, कभी वृक्क स्थान के ऊपर अभिघात लगने या किसी विषद्रव्य के बहिराभ्यन्तरिक उपयोग से और कभी अश्मरी उत्पन्न हो जाने के कारण अथवा अति मद्यपान या अति शीत और कभी वातरक्त (नकरिस) की पीडा एव ज्वर के कारण भी यह रोग हो जाता है ।

लक्षण—वृक्क के स्थान पर पीडा होती है। मूत्र थोडा-थोडा और बारबार होता है तथा उसमे नृसारवत् तीक्ष्ण दुर्गन्धि होती है। शीत लग कर हल्का ज्वर होता है। मिचली और वमन भी होता है। मूत्र का वर्ण लाल और कभी स्याह भी होता है और मलावरोध हो जाता है। जब यह रोग पुराना हो जाता हे तब मूत्र मे पिच्छिल श्लेष्मा (बलगम लजिज) और प्राय पूय भी आने लगता है। शरीर दिनानुदिन दुर्बल होता जाता है। तृष्णा, शिर शूल एव अनिद्रारूप उपद्रव उत्पन्न हो जाते है।

चिकित्सा—यदि रोग बलवान् हो तो प्रथम अनुकूल पार्श्व की बासलीक सिरा का वेधन करे। अन्यथा वृक्क के स्थान पर जोक लगवायें या भरी सीगी लगवायें। तदुपरान्त २ तोला एरण्ड तैल अर्क गुलाब या कुनकुना गरम दूध मे मिला कर ६-६ घटे के उपरान्त दो-तीन दिन निरन्तर पिलाये जिसमे प्रति दिन ७-८ पतले दस्त हो जाया करे। विरेचनोपरान्त प्रतिदिन २-३ घटा तक रोगी को गरम पानी मे बिठायें और गरम पानी से निकलने के उपरान्त भी कपडा गरम पानी मे भिगो कर निचोड कर उससे वृक्क के स्थान पर सेक करते रहे। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो मूल हेतु का पता लगा कर उसके उपचार का यत्न करे। अस्तु, यदि पथरी से यह रोग हो तो पथरी एव सिकता (हसात व रमल) के प्रसग मे लिखित उपाय काम मे लेवे। यदि रक्त वा पित्त की अधिकता से रोग हो तो सताप शमन और तीव्रता निवारण के लिये ३-३ माशे बिहीदाना और इसबगोल का लुआब, ५ माशा उन्नाब और ३ माशे कुलफा के बीजो को जल मे पीस-छान कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर पिलायें तथा जौ का आटा सूखा मकोय, लाल चन्दन, कासनी के बीज प्रत्येक ६ माशा २-२ तोले हरे मकोय और हरी कासनी के रस मे पीस कर लेप करें। या गुलरोगन १ तोला और रोगन बनफ्शा १-१ तोला मे सफेद मोम ९ माशा, पिछला कर मर्दन करे। यदि सशोधन अपेक्षित हो तो दोषानुकूल शीत पाचनौषधि जिसका उल्लेख शिर शूल मे किया गया है पिला कर शोधन करे।

अपथ्य—गरिष्ठ और दीर्घपाकी पदार्थ, जैसे—मटर, आलू, अरवी, उडद की दाल, गोभी और चावल आदि के सेवन से तथा अति मद्यपान और अति मैथुन से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी भोजन, जैसे—बकरी का शूरवा चपाती के साथ या डबल रोटी दूध के साथ खिलायें। शाको मे से शीतल शाक कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक आदि पकाकर देवें। फलो मे से गाजर, सतरा, अनन्नास प्रभृति खिलायें।

—०—

४--जयाबीतुस

नाम--(अ०) जयाबीतुस, दव्वरिय्य , (फा०) दोलाबिय्य , परकारिय्य', (उ०) जयाबीतुस, (स०) मधुमेह, क्षौद्रमेह; (अ०) डायाबेटीज (Diabetes) ।

इस रोग मे प्रभूत मूत्रोत्सर्ग होता है और तीव्र तृष्णा लगती है। अस्तु, रोगी तृष्णा की तीव्रता के कारण वारवार जल पीता है, परतु तृप्त नहीं होता। प्रत्युत् वह जल लगभग अपरिवर्तित रूप मे शीघ्र मूत्रद्वारा उत्सर्गित हो जाता है।

भेद्--इस रोग के निम्न दो भेद है--(१) ज़यावीतुसहार्र जिसमे उग्र तृष्णा लगती है। प्रभूत मूत्रोत्सर्ग होता है। मूत्र का वर्ण शर्बती होता है। उसमे शर्करा भी होती है जिससे मूत्र के ऊपर मक्खियाँ और च्यूटियाँ बहुत लगती हैं तथा मूत्र का स्वाद एव गन्ध मीठी होती है। उक्त अवस्था मे मूत्र का परिमाण मे अनिवार्यत अधिक होना आवश्यक नही है। रोगी शीघ्र दुर्बल हो जाता है। इसे जयाबीतुस शकरी या शुक्करी भी कहते हैं। आयुर्वेद का यह क्षौद्र-मेह वा मधुमेह् और पाश्चात्य वैद्यक का डायाबेटीज मेलिटस (Diabetes Mellitus) जान पडता है। (२) जयाबीतुस वारिद् जिसमे मूत्र फीका, जलवत् स्वच्छ और अधिक परिमाण मे होता है। स्वास्थावस्था की अपेक्षया भार मे यह लघु होता है। इसमे शर्करा नही होती और न किसी प्रकार की गन्ध एव स्वाद होता है। यह प्राय वाह्य शीत के कारण होता है। इसमे रोगी सदा पिपासु रहता है। चाहे जितना जल पी ले, किंतु तृष्णा कम नही होती, इसे जयावीतुस सादा भी कहते हैं। आयुर्वेद का यह उदकमेह् और पाश्चात्य वैद्यक का डायाबेटीज-इन्सिपिडस (Diabetes Insipidus) ज्ञात होता है।

टि०--मात्र जयावीतुस शब्द से जयावीतुस हार्र विवक्षित होता है।

हेतु--उष्ण पदार्थो के अतिसेवन, परिश्रम, मानसिक कार्यो की अधिकता और अति मैथुन से वृक्कोष्मा विवर्धित हो जाती है जिससे वृक्क अधिक जल का शोषण करते है और दौर्बल्य के कारण सम्यक् पाचन नही कर सकते तथा उसे अपरिवर्तित दशा मे ही छोड देते है जिससे यह रोग प्रगट हो जाता है।

लक्षण--वृक्क के स्थान पर कभी-कभी दाह प्रतीत होता है। मुखशोष एव तृष्णाधिक्य होता, मूत्रोत्सर्ग वारवार होता है जो प्रमाण मे भी अधिक होता है। क्षुधा अधिक लगती है, किन्तु अन्न का पचन कम होता है। रोगी क्षीण एव दुर्बल होता जाता है। कुछ दिनो तक यह रोग वना रहने पर वृक्को की चर्बी

घुल-घुल कर मूत्र के साथ उत्सर्गित होने लगती है और अगो मे रूक्षता बढकर रोगी की प्राण-रक्षा कठिन हो जाती है। बस्तिशूल और प्राय कब्ज होता है। कभी-कभी सायकाल हरारत भी हो जाती है तथा मैथुन शक्ति नष्ट हो जाती है।

चिकित्सा—अति मूत्र प्रसेक के मूल हेतु का पता लगा कर उसके निवारण का यत्न करे। अस्तु, प्रथम भेद मे जो केवल बाह्य शीत के कारण होता है, वहि शरीर को उष्ण करें तथा माजून फलासफा मे खुब्सुल् हदीद (मण्डूर भस्म) और कुक्कुटाण्डत्वग् भस्म १-१ टिकिया मिला कर खिलाये या मस्तगी, जुफ्त बलूत, कुदुर १-१ माशा चूर्ण करके माजून फलासफा या माजून कुदुर ७ माशा मिला कर खिलायें अथवा मुर्गी के दो अण्डे सिरका मे भिगो देवे। दूसरे दिन सवेरे इसका छिलका उतार कर अण्डो को फोड कर जर्दी और सफेदी दोनो खिलाये ओर ऊपर से १ तोला बिनौले का मग्ज रात्रि मे गरम पानी मे भिगो कर प्रात: ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्वत बजूरी मिला कर पिलाये।

द्वितीय भेद मे जो ऊष्माधिक्य के कारण होता है, यह योगौषधि पिलाये। पोस्ते का दाना, काहू के छिले हुए बीज, सूखा धनिया, काले कुलफा के बीज, गुलाब के फूल का केसर प्रत्येक ३ माशा पानी मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्वत नीलूफर मिला कर पिला दिया करे या सफूफ सदल जयावीतुस वाला ७ माशा फँकाकर ५ तोला खटमिट्ठे अनार का रस या ५ तोला दही का पानी या ५ तोला लुकाट का रस मिला कर पिला दिया करें ओर सफेद चन्दन, गुलनार, अकाकिया, गिल अरमनी, जौ का आटा प्रत्येक ६ माशा लेकर अर्क गुलाब और हरी कासानी के रस मे पीस कर वृक्क के स्थान के ऊपर लेप करे।

मूत्रगत शर्करा कम करने या रोकने के लिए यह चूर्ण सेवन कराये—सूखा गुरुच ३ माशा और ३ माशा गुडमार बूटी दोनो को चूर्ण करके समभाग कच्ची खॉड मिला कर फँकाये और ऊपर से ५ तोला हरे कद्दू का रस या खटमिट्ठे अनार का रस ५ तोला या दही का पानी ५ तोला २ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर पिला दिया करें। अति तृष्णा के शमनार्थ पानी से बारबार कुल्ली या गण्डूष करायें। नीबू का रस या दही का पानी पिलाने से भी तृष्णा शान्त हो जाती है। जयावेतु सी ५ टिकिया प्रति दिन जल से सेवन कराने से अथवा जामुन की गुठली ३ माशा पीस कर पिलाने अथवा गूलर का अन्तर्छाल १ तोला पानी मे भिगो-नियार कर पिलाने अथवा गूलर के अन्तरछाल और जामुन के गुठली का चूर्ण प्रत्येक ३ माशा २ तोला कच्ची खाँड मिला कर फँकाने से भी उपकार होता हे। जामुन की गुठली ५ तोला कूट-छान कर चूर्ण वना कर इसमे १ माशा अफीम मिला-गूँध कर टिकिया वनायें। इसमें से दो माशा प्रति दिन सेवन करने से इस रोग मे वहुत लाभ होता हे।

अपथ्य—प्रथम भेद मे चावल, शीतल जल और बर्फ तथा शीतल पदार्थो से परहेज करे। द्वितीय भेद् मे गरम और मीठे पदार्थो का सेवन, धूप मे फिरना तथा परिश्रम का कार्य, मास, अडा, तेल, बैगन, मछली आदि सेवन तथा मैथुन इस रोग मे हानिकारक है।

पथ्य—कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, मूँग-अरहर की दाल, चपाती, अनार, लुकाट, सेव, नासपाती, अगूर, सतरा, विस्कुट, पावरोटी खा सकते है और कासनी के पत्तो की भुजिया बनाकर खिलाना भी लाभकारी है। यथा सभव पिष्ट और मण्डमय पदार्थ सेवन नही करें। चोकर की रोटी पकवा कर सेवन करे।

५—बौल जुलाली

नाम—(अ०) बौल जुलाली, (उ०) जुलाली पेशाव, (स०) लालामेह, ओजो मेह; (अ०) अॅल्ब्युमिन्यूरिया (Albuminuria)।

इस रोग मे वृक्क दुर्बल हो कर क्षीण हो जाते है (हुजालुल् कुल्य) और वृक्को की चर्बी या अडे की सफेदी की तरल का तत्त्व (पदार्थ) मूत्र मे उत्सर्गित होने लगता है।

हेतु—अति मैथुन, अतिसशोधन या अति मद्यपान अथवा यकृत् के दुर्बल हो जाने से या कभी-कभी हृदय के किसी रोग से अथवा विसूचिका एव मरक ज्वर के उपरान्त भी यह रोग हुआ करता है।

लक्षण—इस रोग मे वृक्को की रचना मे विकृति होती है। इस रोग के वढ जाने पर शोथ हो जाता है। प्रारभ मे रोगी स्वस्थ प्रतीत होता है। मूत्र श्वेत, प्रभूत प्रमाण मे और बारबार होता है। कटि और शिर के पश्चात् भाग मे हर समय मन्द-मन्द पीडा रहती है। शरीर कृश हो जाता है और कामावसान हो जाता है। रोग के वढ जाने पर चेहरे का वर्ण फीका (विवर्ण) पड जाता है। चेहरे पर भुरभुराहट (शोफ) हो जाती है। शिर शूल होता और कभी-कभी आक्षेप एव मूर्च्छा तक नौबत पहुँचती है। श्वास शीघ्र-शीघ्र आता है और नकसीर फूटती है। अति मद्य सेवन जनित रोग मे प्रारम्भ मे यकृत् दौर्वल्य आदि के लक्षण प्रगट होकर धीरे-धीरे वढते है।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगा कर तदनुकूल चिकित्सा करे। यदि वृक्कशोथ प्रभृति के कारण यह रोग हो तो उनकी विशेष चिकित्सा करे। यदि अति समागम या सशोधन से यह रोग हो तो निदान का परिवर्जन करें और वृक्क के स्थौल्य के लिये मेदवर्द्धक औषधियो का उपयोग करें। प्रारम्भ मे निम्न योग लाभकारी है—

नारियल का मग्ज (खोपडा) , फिंदक का मग्ज, पिस्ता, चिलगोजा, अखरोट और बादाम इनका मग्ज (गिरी) प्रत्येक १ तोला कट कर १२ तोले शुद्ध मधु मे मिला कर रख लेवे। इसमे से १ तोला प्रति दिन खिलाये और ऊपर से पावभर गाय का दूध पिला दिया करें। यदि प्रकृति मे उष्णता हो तो पोस्ते का दाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, तरबूज का मग्ज, पेठे का म ज, बिनौले का मग्ज प्रत्येक ३ माशा, ५ दाने बदाम का मग्ज और मिश्री २ तोला--सबको गाय के दूध मे पीस कर गरम करके हरीरा के समान पका कर सेवन करे। रोग की तीव्रता मे वृक्क के स्थान पर ग्लास या कुछ जोक लगवायें या गरम पुलटिश बँधवाये अथवा निम्न औषधियो से आबजन करायें--

गेहूँ की भूसी, छिला हुआ जौ, खतमी के बीज, मकोय, बाबूना, नाखूना, प्रत्येक १ तोला सबको यथावश्यक जल मे उबाल कर रोगी को सहनीय गरम काढे मे बैठायें। तदुपरान्त वृक्क के स्थान पर जौ का आटा, खतमी-बीज, गुलबनफ्शा मकोय, मुगास-प्रत्येक एक तोला सब को हरे मको। और हरी कासनी के यथावश्यक रस मे पका कर और १ तोला रोगन बनफ्सा मिला कर लेप करें। इसके साथ अर्क मकोय, अर्क गुलाब और अर्क शाहतरा प्रत्येक ४ तोला गुलकन्द २ तोला मिला कर क्वाथ करे और इसमे ३ माशा फुलफा के बीज तथा ३ माशा तरबूज का मग्ज पीस कर मिलाय और २ तोला शबत बनफशा सम्मिलित करके तथा ७ माशे समूचे इसबगोल का प्रक्षेप देकर दो-दिन सबेरे-शाम पिलायें।

पथ्यापथ्य—हरे शाक और दूध सेवन करें। लाल मिच, गरम मसाला अधिक मिष्टान्न का उपयोग, मास, अडे और अन्यान्य ऐसे द्रव्य जिनमे (खवत बैजिय्य) अधिक हो, अहितकर हैं।

६---अल्हसातो वर्रमले फिल्कुल्य वल्मसानः

नाम—(अ०) अल्हसातो वर्रमले फिल्कुल्य वल्मसान। (उ०) गुर्दा व मसाना की पथरी व रेत, (स०) वृक्क वस्त्यश्मरी सिकता, (अ०) रेनल और वेसिकल कैल्क्यूलाई और ग्रेवल (Renal or Vesical Calculi or Gravel)।

इस रोग मे वृक्क वा वस्ति मे सिकता वा अश्मरी उत्पन्न हो जाती है

हेतु—स्निग्ध वा आक्लेदयुक्त एव गरिष्ठ आहार के अति सेवन से जिनके भीतर पार्थिव अश (उपादान) का प्राधान्य होता है, कभी वृक्क और कभी वस्ति

मे एक विशेप काल तक सचित होकर पडे रहते है। शरीरोष्मा उसमे से सूक्ष्म घटको को उडा देती है और विशुद्ध पार्थिव अश अवशिष्ट रह जाते है जो सिकता और अश्मरी की उत्पत्ति के हेतुभूत होते है।

लक्षण---सिकता या ककडी और पथरी। (अश्मरी) प्राय वृक्क एव वस्ति ही मे बना करती है। कभी गवीनियो मे भी ककडिया पाई जाती है जो वृक्को से वस्ति की ओर आते हुए मार्ग मे अटक जाती है। पथरी प्रारम्भ मे छोटी अर्थात् मूँग या चने के दाने के बरावर होती है। यदि वृक्क एव वस्ति के मध्यस्थित मार्ग से चलकर वे वस्ति मे आ जाएँ तो उस पर मूत्र के सान्द्रभाग स्तर पर स्तर जमकर कुछ काल पश्चात् एक वडी पथरी बना देती है। पर कभी ये कण वृक्क ही मे बन कर रह जाते है और धीरे-धीरे वृक्क ही मे बढ कर पथरी वन जाती है। जव कभी पथरी वृक्क मे हो या उससे सिकता आती हो तो कटि मे मन्द-मन्द पीडा होती है जिसकी टीसे वृषण, जानु और कभी शिश्नमुड तक जाती है। भागने दौडने, या ऊँटकी सवारी करने से पीडा मे तीव्रता हो जाती है। बारबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है, और रक्तमिश्रित मूत्र आता है या मूत्र के पश्चात् रक्त आता है। कभी-कभी कब्ज हो जाता है और रोगी को बारबार वमन होता है। जब उभय वृक्को मे वडी बडी पथरियाँ विद्यमान हो तो वे मूत्र का उत्सर्ग नही कर सकते और मूत्रावरोध होकर रोगी मर जाता है। जब पथरी वस्ति मे होती है तब वस्ति (पेडू) के स्थान पर भारानुभव होता है और मूत्रत्याग कर चुकने के उपरान्त एसा प्रतीत होता है मानो अभी वस्ति मे मूत्र अवशेष है। मूत्र प्राय प्रगाढीभूत आता है। चलने-फिरने या कोई काम करने से कष्टानुभव होता है। वृक्को से प्राय रक्त वर्ण की और वस्ति से प्राय- श्वेत या भूरे वर्ण की सिकता का उत्सर्ग होता है। सायकाल मूत्रत्याग करके यदि शीशी या चीनी के किसी स्वच्छ पात्र मे मुख बन्द करके रख देवें तो प्रात काल उसमे लाल, भरे या सफेद घटक दिखाई देते है।

चिकित्सा---जब मूत्र मे सिकता या छोटी-छोटी पथरियाँ निस्सरित होती है, तब रोगी को यह आदेश करे कि वह कुछ काल तक मूत्र रोक रखे। पुन एक टब मे गरम पानी भर कर रोगी को उसमे बैठाये और उससे टब मे वलपूर्वक मूत्रत्याग करने को कहे। उक्त क्रिया से प्राय सिकता एव ककडी निस्सरित हो जाया करती है। हज्रल्यहूद १ माशा, सग सरमाही १ माशा, हरी मूली के पत्र-स्वरस १ तोला मे घिस कर ५ माशा जुवारिश जरऊनी अवरी वनुसखॉ कला मे मिला कर प्रथम खिलाये। ऊपर से कुलथी, दूकू, काकनज आलूवालू प्रत्येक ३ माशा १२ तोले अर्क अनन्नास मे शीरा निकाल कर छानकर

४ तोला शर्बत वजूरी मिला कर कुछ दिन पिलाये। रात्रि मे सोते समय १ रत्ती दवाए सगगुर्दा, २ तोले सिकजबीन लीमू मे मिला कर खा लिया करे।

ताजी भातल बूटी १ तोला और कालीमिर्च ५ दाना जल मे पीस कर शीरा निकाल कर सवेरे पिलाना और टेसू के फूल, कुसुम के फूल, खरबूजा के बीज, खीरा-ककडी के बीज, गोखरू ६-६ माशा पानी मे पका कर इसका परिषेक करना और सीठी को कुनकुना वृक्क वा बस्ति के ऊपर वेदना के स्थान मे बाँध देना भी लाभकारी है। यदि पीडा अधिक हो तो वेदनाशमनार्थ १ माशा हीग, पोस्ते का दाना १ माशा या अफीम ४ रत्ती, कोकनार एक नग पानी मे पीस कर वेदना स्थान पर लेप करे। निम्न योग भी लाभकारी है—

कलमी शोरा ३ तोला लोहे के कडछे मे डालकर अग्नि के ऊपर रख। इसके बाद १ तोला गधक पीस कर उसके ऊपर थोडा-थोडा छिडके। जब शोरा जलवत् हो जाय, उस समय ताँबे के फैले हुए पात्र मे डाल कर हिलाते रहे। शीतल होने के बाद इसे पीस कर रखे। इसमे से ३ माशा प्रति दिन खिला कर ऊपर से मूली की हरी पत्तियो का रस १० तोला ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिला दिया करें। हज्रुलयहूद, सगसरमाही, कलमी शोरा, जवाखार प्रत्येक १ माशा महीन पीस कर जुवारिश जरऊनी ७ माशे मे मिला कर खिलाना और ऊपर से १२ तोले अर्क अनन्नास मे ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि अश्मरी (पथरी) के बडा हो जाने के कारण कष्ट अधिक होने लगे तथा औषधियो से लाभ न हो, तो किसी अनुभवी कुशल सर्जन से शस्त्रकर्म के द्वारा उसे निकलवाना चाहिये।

टि०—यह रोग स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो एव बालको की अपेक्षया वृद्धो को अधिक हुआ करता है।

अपथ्य—गुरु, बादी, दीर्घपाकी और गरिष्ठ पदार्थो, जैसे आलू, अरवी, उडद की दाल, बाजरा की रोटी, बैगन, मसूर की दाल आदि से परहेज करायें।

पथ्य—साधारणतया बकरी के मास का शूरबा चपाती के साथ खिलाना और चना का पानी, बादाम का तेल, गाय का घी, पिस्ता, अजीर, तरबूज, मली, मूँग-अरहर की दाल, अडे की जर्दी, पावरोटी, विस्कुट प्रभृति अभ्यासानुकूल देवें।

———

७——वज्उल् मसाना

नाम——(अ०) वज्उल् मसान (उ०) मसाना का दर्द; (स०) बस्ति-शूल, (अं०) वेसाइकल स्पैज्म (Vesical Spasm), पेन ऑफ दी ब्लैडर (Pain of the Bladder) ।

इस रोग मे पेडू के स्थान पर पीडा प्रारम्भ हो जाती है, जिसके कारण रोगी अत्यन्त त्रस्त हो जाता है ।

हेतु——साधारणतया शीतल पदार्थो के अति सेवन से बस्ति मे वायु उत्पन्न होकर पीडा का कारण होते है ।

लक्षण——पेडू के स्थान पर खिचावट एव पीडानुभव होता है और भार या अश्मरी के लक्षण प्रभृति नही होते ।

चिकित्सा——उक्त अवस्था मे सौंफ, अनीसून, सोठ, सूखा पुदीना प्रत्येक ५ माशा यवकुट कर के पानी मे काढा करके ४ तोला खमीरा बनफ्शा या ४ तोला गुलकन्द मिला कर सवेरे पिलाना और शाम को ५ माशा सौंफ, ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का, कुसुम के बीज, अनीसून और स्यहजीरा प्रत्येक ३ माशा १२ तोले अर्क सौफ मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला गुलकन्द या ४ तोला खमीरा बनफ्शा या ४ तोला शर्बत दीनार मिला कर पिलाना लाभकारी होता है । बडी इलायची, सूखा पुदीना, स्याह जीरा, सेधा नमक और सोठ प्रत्येक तीन माशा सबको कूट-पीस कर १ तोला रोगन बाबूना मे मिला कर बस्ति के स्थान को ऊपर कुनकुना गरम करके लेप करें और टेसू के फूल, सूखा पुदीना, सोठ प्रत्येक १ तोला सबको पानी मे क्वाथ करके इससे बस्ति के ऊपर परिषेक करे या रोगी को कटिपर्यन्त उष्ण जल मे बैठाये और पोस्ते की डोडी को अर्क गुलाब मे उबालकर उससे पीडा के स्थान पर कुनकुना गरम करके टकोर करें ।

इस रोग मे यदि साधारण उपायो से लाभ न हो तथा कब्ज भी हो तो ५ तोला एरण्ड तैल १२ तोले अर्क गुलाब मे मिलाकर रोगी को पिलायें जिसमे दो-चार विरेक होकर प्रकृति शुद्ध हो जाय । क्योकि कभी-कभी विरेक होने से यह रोग शान्त हो जाता है ।

पथ्य——मूँग या अरहर की दाल चपाती के साथ खिलाये । चाय, बिस्कुट, पावरोटी आदि और करेला का शाक यथाभ्यास खिलायें ।

अपथ्य——वायुकारक और शीतल पदार्थ से परहेज करायें । शलगम, गोभी, कद्दू, कुलफा, पालक, दूध, उडद की दाल, मटर, लोबिया, अरवी, चावल प्रभृति अहितकारी पदार्थ हैं । अतएव इनसे परहेज करे ।

———

८—बौलुद्दम

नाम—(अ०) बौलुद्दम, बौल दम्वी, (उ०) बौलखूनी, पेशाब मे खून आना, खूनी पेशाब आना, (स०) रक्त मेह, (अ०) हीमेट्यू (च्यू) रिया (Haematuria)।

इस रोग मे रक्तमिश्रित मूत्र या शुद्ध रक्त कभी मूत्र से पूर्व और कभी पश्चात् आता है।

हेतु—उष्ण पदार्थो का अतिसेवन, वस्तिवृक्काश्मरि, वस्तिवृक्कजात अभिघात इसके प्रधान हेतु है। कभी तीव्र ज्वरो के पश्चात् भी और कभी अर्शोजात अवरुद्ध रक्त हो जाने से या स्त्रियो मे आर्तव के अवरुद्ध हो जाने से यह रोग हो जाता है और वस्तिवृक्कगतव्रण या शिश्नव्रण मे भी रक्तमिश्रित मूत्र उत्सर्गित होने लगता है।

लक्षण—कभी मूत्र के साथ मिला हुआ रक्त आता है और कभी मूत्र से पूर्व या पश्चात् और कभी मूत्र के स्थान मे शुद्ध रक्त ही आया करता है। अतिपय दुर्वल व्यक्तियो मे इस रोग के प्रारम्भ होने से पूर्व शीत लगता है तथा रोगी काँपता है। पुन न्यूनाधिक रक्तमिश्रित मूत्र आता है और कुछ घटे पश्चात् स्वयमेव स्वस्थमूत्र आने लगता है।

निदान—जव यह मूत्र, मूत्र मार्ग से आता है तव मूत्र से पूर्व और विना मूत्र के भी उत्सर्गित हो जाता है और जव वृक्क से आता है तव मूत्रान्त मे उत्सर्गित होता है या मूत्र का वर्ण स्याही-मायल वना देता है। वृक्क के स्थान पर भी पीडा अवश्य हुआ करती है। जव वस्ति से रक्त आता है तव मूत्र मे मिला हुआ आया करता है जिससे मूत्र का वर्ण काला हुआ करता है तथा उसमे रक्त के स्कन्दित टुकडे पाये जाते हैं। यह स्वयमेव कोई रोग नही है, अपितु रोग का एक लक्षण है।

चिकित्सा—शोणितमेह मे रोगी को शय्या पर लेटाये रखें और किसी प्रकार की सक्षोभजनक उष्ण औषध वा आहार न देवें तथा मूल हेतु का पता लगा कर उसके निवारण का यत्न करें। सुतरा यदि आर्तव शोणित के अवरुद्ध होने से यह रोग हो या अर्शोजात रक्त रुकने से हो तो उसका समीचीन प्रतीकार करें। जिनका विवरण उन रोगो के प्रकरण मे किया गया है। वृक्क, वस्ति, शिश्न इनमे व्रण होने के कारण यह रोग हो, तो उसका उचित उपाय करें। सफेद दूव १ तोला, दक्खिनी सफेदमिर्च ५ दाना जल मे पीस-छान कर पिलायें या छोटा करेला पानी मे पीस-छान कर कुछ दिन पिलायें।

शोणित मेह मे निम्न चूर्ण का योग भी लाभकारी है--

दम्मुल् अख्वैन, गिल अरमनी, सगजराहत, गुलनार फारसी, अकाकिया, सफेद कत्था, कुदुर, कतीरा, बबूल का गोद, भूनी हुई फिटकिरी, भुने हुए कुलफा के बीज प्रत्येक ३ माशा, काकनज १॥ तोला, मिश्री ४। तोला, कूट-छान कर चूर्ण बनाये। इसमे से प्रति दिन ३ माशा चूर्ण फँका कर २ तोला शर्बत अजबार पानी मे घोल कर पिला दिया करे। कुर्स कहरुबा ४॥ माशा ४ तोला शर्बत अजबार के साथ देना भी लाभकारी है।

अपथ्य—उष्ण एव तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थो एव मास से कुछ दिन परहेज करें और अधिक परिश्रम के काम से बचे।

पथ्य—कम मिर्च की मूँग की दाल चपाती के साथ या दूध, चावल या कद्दू, कुलफा, तुरई, टिडा, पालक आदि के शीतल शाक बिना मिर्च के चपाती के साथ खिलाये या मूँग की नरम खिचडी खिलाये।

९--उस्रुल्बौल व इह्तिबासुल्बौल

नाम---(अ०) उस्रुल्बौल, (उ०) मुश्किल से पेशाब आना, दिक्कत बौल, (स०) मूत्रकृच्छ, (अ०) डिस्यूरिया (Dysuria)।

--(अ०) इह्तिबासुल्बौल्, (उ०) पेशाब रुक जाना, पेशाब का बन्द हो जाना, बदिश बौल, (स०) मूत्रावरोध, (वातबस्ति--मूत्रसङ्ग), (अ०) रिटेन्सन ऑफ यूरिन (Retention of urine)।

--(अ०) उस्रुल् बौल, (उ०) पेशाब का पैदा न होना, (स०) मूत्रशोष, मूत्रक्षय (सु०), (अ०) इस्क्यूरिया (Ischuria)।

इस रोग मे मूत्रकृच्छ्रतापूर्वक होता या अवरुद्ध हो जाता है। इस रोग का एक भेद और है जिसमे मूत्र की उत्पत्ति ही नही होती और मूत्र का विष रक्त मे शोषित होकर शरीर मे प्रसारित हो जाता है। हृदय, मस्तिष्क प्रभृति उत्तमाङ्गो तक इसका प्रभाव पहुँचने से मूर्च्छा, प्रलाप और आक्षेप प्रभृति अरिष्ट लक्षण प्रगट हो जाते हैं। इस रोग को पाश्चात्य वैद्यक मे यूरीमिया (Uremia), यूनानी वैद्यक मे तसम्मुमबौली और सस्कृत मे मूत्रविषता या मूत्रविषमयता कहते हैं। उक्त अवस्था मे सलाई पास करने से भी मूत्रोत्सर्ग नही होता। यह भेद प्राय साघातिक एव भयावह होता है, तथापि उक्त अवस्था मे वृक्क-स्थान के ऊपर सेक करना या गरम-गरम पुल्टिस बाँधना या सीगी या जोक लगवाना या गरम जल से स्नान कराना या गरम कम्बल और चादर मे रोगी को लपेटना जिसमे रोगी को पसीना आ जाय, कभी-कभी लाभकारी होता है।

हेतु—मूत्रप्रणाली (गवीनी) मे किसी अवरोध का उत्पन्न होना, दीर्घकाल तक मूत्र रोके रखना, पुराने सूजाक के कारण दुष्ट मास उत्पन्न हो जाना, वस्तिघात, शिश्नमूलग्रन्थिशोथ, अश्मरी और स्त्रियो मे गर्भाशय या डिम्बग्रन्थि का कोई रोग या गर्भावस्था या अपतन्त्रक रोग इसके प्रधान हेतु है।

लक्षण—कभी मूत्र सम्यक् अवरुद्ध हो जाता है, कभी कृच्छ्रतापूर्वक आता है। मूत्रकृच्छ्र (उस्रुल्बौल) प्राय चिरकालानुबन्धी सूजाक के कारण युवा पुरुषो को हो जाता है। लालामेह के कारण मूत्रशोथ (उस्रुल्बौल) रोग हो जाता है। तात्पर्य यह ज्ञात करना परमावश्यक होता है कि वस्ति मे मूत्र उपस्थित है या उसकी उत्पत्ति ही बन्द है।

चिकित्सा—टब मे गरम पानी भर कर रोगी को उसके भीतर बैठाये और रात्रि मे ५ टिकिया कुर्स मुलय्यिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलाये। यदि विरेक के साथ भी मूत्रप्रसेक की प्रवृत्ति न हो, तो १० तोला टेसू के फूल जल मे उबाल कर इसके कोष्ण काढे से पेड़ू के स्थान पर धारे और सीठी को कुनकुना पेड़ू के स्थान पर बाँधे या कलमी शोरा, कपूर, देसी नील के बीज प्रत्येक ३ माशा जल मे पीस कर नाभि के नीचे पेड़ू पर लेप करे और खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, गुलबनफ्शा, हसराज, गुलबाबूना, मेथी, सोआ के बीज प्रत्येक १ तोला, कुसुम के फूल, टेसू के फूल, गेहूँ की भूसी ३-३ तोला, सब को जल मे क्वाथ कर के दस मिनट तक इसमे रोगी को बैठायें। जवाखार, मूली का क्षार, कलमी शोरा प्रत्येक १ माशा बारीक पीस कर चूर्ण बनायें और बकरी के दूध की लस्सी के साथ फँकायें या सफूफ इन्द्री जुल्लाब ५ माशा फँका कर खरबूजा के बीज, खीरा-ककडी के बीज, गोखरू प्रत्येक ३ माशा पानी मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत बजूरी सम्मिलित करके पिला दिया करे।

यदि इन उपायो से लाभ न हो, तो किसी चतुर डाक्टर से केथीटर (सलाई) पास कराके मूत्र निकलवायें। शोथ या अश्मरी के कारण यह रोग हो, तो उसका उचित उपचार करें और जवाखार, रेवदचीनी, कलमी शोरा, सौंफ, मूली खार १-१ तोला, मिश्री २ तोला मिला कर चूर्ण बनाये। इसमें से ७ माशा चूर्ण सवेरे-शाम जल के साथ सेवन कराने से भी लाभ होता है। कलमी शोरा और चूहे की लेंडी पानी मे पीस कर पेड़ू पर लेप करना चाहिये। २ टिकिया दवा कडाहीवाली जल के साथ देने से भी उपकार होता है।

अपथ्य—उष्ण, तीक्ष्ण पदार्थ, मसालेदार भोजन और मास का सेवन हानिकारक है।

पथ्य—नरम, लघु, यवमण्ड या दूध खशका या डबल रोटी दूध मे भिगो कर या मूँग की नरम खिचडी खिलाये।

१०–हुर्कतुल्बौल व तक्तीरुल्बौल

नाम—(अ०) हुर्कतुल्बौल, हुर्कत इह्लील, (फा०) सोजिस नाइज, (उ०) पेशाब की सोजिश (जलन); (स०) मूत्रदाह, (अं०) इरिटेबल यूरिन (Irritable Urine), वेसाइकल इरिटेबिलिटी (Vesicl Irritability,) यूरेथ्राइटिस (Urethritis)।

—(अ०) तकतीरुल् बोल, कत्रा कतरा पेशाब आना, (स०) वेदनायुक्त बिन्दुमूत्रता, मूत्रकृच्छ्र, (अं०) स्ट्रैंगुरी (Strangury)।

वर्णन—इस रोग मे रोगी को बारबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। परन्तु एक बिन्दु के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता और कभी-कभी दाहपूर्वक मूत्र होता है।

हेतु—अधिक उष्ण पदार्थ का सेवन, अति चाय पीने तथा गर्मी एव अत्यन्त धूप मे चलने-फिरने या कब्ज के कारण यह रोग प्राय प्रगट हो जाता है। कभी परिश्रम और आयास से तथा निरन्तर रात्रिजागरण एव अति मैथुन से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—मूत्र लाल या ललाई लिये, पीला एव दाहपूर्वक होता है और उसमे पूय और छिलके नही होते। मूत्रत्याग कर चुकने के उपरान्त भी बूँद-बूँद देर तक मूत्र टपकता रहता है। रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो अभी वस्ति मे मूत्र शेष है।

चिकित्सा—उक्त अवस्था मे सवेरे गोखरू, खीरा-ककडी के बीज, खरबूजा के बीज प्रत्येक ३ माशा पानी मे पीस-छान कर ४ तोला शर्बत वजूरी मिला कर कुछ दिन पिलाय और शाम को ३-३ माशा बिहीदाना और इसबगोल १२ तोला अर्क गावजबान मे भिगो कर लुआब निकाल कर ५ दाना उन्नाव, ३ माशा कद्दू के बीज का मग्ज १२ तोले अर्क गावजबान मे पीस-छान कर लुआब मे मिला कर शर्बत उन्नाव या शर्बत नीलूफर ४ तोला सम्मिलित करके पिला दिया करे। यदि मलावरोधजन्य हो तो १० तोला अर्क गुलाब मे ४ तोला एरण्ड तैल मिला कर पिलायें जिसमे दो-चार विरेक हो कर प्रकृति शुद्ध हो कर रोग शान्त हो जाय। ५ तोला केला के तने का पानी १ तोला मिश्री मिला कर पिलाना भी लाभकारी है। स्थानीय रूप मे ३ माशा शियाफ अब्यज

और १ माशा कपूर बकरी के दूध मे घोल कर उससे मूत्रनलिका के भीतर पिचकारी करें। माउल्जुब्न पिलाना भी लाभकारी है।

अपथ्य—तीक्ष्ण,लवण और उष्ण पदार्थो के सेवन से, अतिजागरण से और धप मे चलने-फिरने तथा परिश्रम के काम से परहेज करें। बैंगन, मछली, मसूर की दाल, मास और मसालेदार भोजन सेवन न करें।

पथ्य—शीघ्रपाकी, लघु एव नरम आहार सेवन करायें। कद्दू, टिंडा, तुरई, कुलफा, पालक इनकी मिर्च की तरकारी चपाती के साथ खिलाये या कम मिर्च की मूँग की दाल चपाती के साथ देवें या मूँग की नरम खिचडी, खशका दूध, डबल रोटी आदि आवश्यकतानुसार देवें।

११—बौल्फिल्फिरास व सल्सुल्बौल

नाम—(अ०) अल् बौल फिल्फिराश, (फा०) बौल बिस्तरी; (उ०) बिस्तर पर पेशाब निकलना, (स०) शय्यामूत्र, (अ०) एन्यूरेसिस नॉक्टर्नल (Enuresis Nocturnal)। बेड वेटिङ्ग (Bed Wetting)।

—(अ०) सल्सुल्बौल्, सल्सलुल्बौल, तसल्सलुल् बौल, (फा०) बौलबेखबरी, (उ०) बिला इरादा पेशाब निकल जाना, (स०) मूत्रातीत, (अ०) इन्कान्टिनेन्स ऑफ यूरिन (Incontinence of Urine)।

वर्णन—शय्यामूत्र (बौल्फिल्फिराश) अर्थात् शय्या पर सोते समय अचेतावस्था मे मूत्रत्याग कर देने और मूत्रातीत (सल्सलुल्बौल) का हेतु और चिकित्सा लगभग एक ही-सी होती है। अतएव इन दोनो का एक ही स्थान मे विवरण किया गया है। शय्यामूत्ररोग प्राय शिशुओ को हुआ करता है जो रेवडी, तिलवा (तिल के लड्डू) आदि सेवन कराने से जाता रहता है। तीव्रावस्था मे मूत्रातीत वा सलसुल्बौल मे उल्लिखित उपक्रम करें।

हेतु और लक्षण—अति शीतजन्य वस्तिघात इसका प्रमुख हेतु है। कभी-कभी वस्तिगत उष्णता का भी यह परिणाम हुआ करता है। शीत हेतु की दशा मे मूत्र श्वेत और दाहरहित होता है और तृष्णा का सर्वथा अभाव होता है तथा गरमी से कभी प्रतीत होती है। उष्णजन्य हो तो मूत्र की सवर्णता, प्रकृतिगत उष्णता और उष्ण पदार्थो से हानि होना प्रभृति लक्षण प्रगट होते हैं।

चिकित्सा—ऐसे रोगी को गरम शय्या और गरम गृह मे शयन करना चाहिये और जल कम पीने को देवें, चित लेटने से रोकें और १ तोला गुलकन्द असली मे ४ रत्ती मस्तगी का महीन चूर्ण मिला कर लड्डू बनायें और आवश्यकतानुसार सेवन करायें। या तिल को कूट कर गुड मे मिला कर लड्डू बना कर

यथावश्यक सेवन करायें। बालको को रेवडी और गजक खिलाना भी लाभकारी है। युवा और वृद्धो को ७ माशा माजून फलासफोम १ टिकिया कुश्ता पोस्त वैजामुर्ग (कुकुटाण्ड त्वग्भस्म) खिलाना या फौलाद भस्म १ टिकिया या जमुर्रद भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जरऊनी अवरी के साथ कुछ दिन खिलाने से आराम हो जाता है। वडो को काला तिल और अजवायन समभाग कूट-छान कर दोनो के वरावर गुड मिला कर खिलाना भी गुणकारी है।

वस्तिदौर्वल्य मे उल्लिखित समस्त औषधियाँ इस रोग मे भी लाभकारी होती हैं।

अपथ्य—शीतल एव तरल पदार्थ और अधिक जलसेवन से तथा शीत से परहेज करायें। चावल, गाजर, मूली, दही, छाछ, लस्सी आदि पदार्थ इस रोग मे अहितकारी है।

पथ्य—बकरी का शूरवा, चपाती, मुर्गी का वच्चा, तीतर, वटेर, मुर्गे का शूरवा, मूँग-अरहर की दाल प्रभृति साधारण मिर्च और मसाला डाल कर देवें।

१२—सूजाक

नाम—(अ०) कर्ह : मजरीउल्कजीव, (उ०) सूज़ाक, (स०) औपसर्गिक पूयमेह, (अ०) गनोरिया (Gonorrhoea)।

वर्णन—यह एक विशिष्ट औपसर्गिक रोग है, जिसमे मूत्र मार्ग शोथ युक्त हो जाता है और उसमे पूय आने लगता है।

इसके ये दो भेद हैं—(१) नवीन—जव तक इसका प्रारम्भिक काल होता है और लक्षण तीव्र होते है, तव तक इसे सूजाक जदीद या हाद अथवा सैलान जोहरी हाद कहते हैं। परन्तु जव वह अपने प्रारम्भिक अवस्था का अतिक्रमण कर चुकता है और तीव्र लक्षण दूर हो जाते हैं, तब उसे सूजाक कुहना या मुज्मिन कहते हैं।

हेतु—प्राय यह रोग कुकर्म एव परदारगमन वा वेश्यागमन के परिणाम से होता है। अस्तु, सूजाक पीडित पुश्चला-स्त्री अथवा ऋतुमती स्त्री वा श्वेतप्रदर पीडित स्त्री के साथ समागम करने से, गुह्याङ्ग के दूषित द्रव इस रोग के प्रधान हेतु है। श्यामल वर्ण की अपेक्षया श्वेतवर्ण के लोग मे इस रोग से आक्रान्त होने की अधिक अनुकूलता होती है तथा इन लोगो मे यह रोग अधिक तीव्र होता है।

लक्षण—समागम करने के पश्चात् दूसरे-तीसरे दिन मूत्रनलिका लाल एव शोथयुक्त हो जाती और उसमे दाह होता है। मूत्र पीडासहित दाहपूर्वक

आता है। पुन नीलवर्ण का पतला पूय निस्सरित होने लगता है। तीन-चार दिन उक्त अवस्था रहकर लक्षण तीव्र हो जाते है। मूत्र के दाह एव पीडा मे वृद्धि हो जाती है और हरिताभ पीले रग का गाढा पूय अधिक प्रमाण मे आने लगता है। कूल्हे और कटि मे शूल होता है। कब्ज होता और क्षुधा कम हो जाती है। मूत्र रुक-रुक कर आता है और कभी-कभी रक्तमिश्रित मूत्र आता है। कभी-कभी मूत्र मे छिछडे और छिलके निस्सरित होते है। कभी जननाग शोथयुक्त होकर ऐसी पीडायुक्त हो जाता है कि किंचित् वस्त्र का भी स्पर्श हो जाय तो पीडा करने लगता है। दो-तीन सप्ताह ये लक्षण रह कर धीरे-धीरे उनमे कमी होने लगती है। यदि यथार्थ एव समीचीन उपचार नही किया जाय या कुपथ्य-पालन किया जाय तो पुराना सूजाक हो जाता है जो दीर्घ काल पर्यन्त रहता है।

चिकित्सा—रोग के प्रारम्भ मे जब कि दाह प्रगट हो, तब शीतल मूत्रल औषधियाँ, जैसे—खीरा-ककडी के बीज, खरबूजा के बीज और गोखरू प्रत्येक ३ माशा जल मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर सबेरे-शाम पिलायें। यदि इससे लाभ न हो तो मीठे फालसा की छाल १ तोला रात्रि मे गरम जल मे भिगो कर और सबेरे इसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलायें या कही तीन टिकिया जलसे खिलायें। स्थानिक व्रण शुद्धि के लिये यदि पिचकारी की आवश्यकता हो, तो भृष्ट नीला थोथा १ माशा, मुरदासग ६ माशा, सुरमा इस्फहानी १ तोला, रसवत १ तोला, सफेद कत्था १ तोला, हरा माजू १ तोला, रूमी मस्तगी ६ माशा, इन सब को खरल मे बारीक करके एक बोतल पानी मे खूब घोल कर पुन इसमे एक माशा अफीम और १ माशा बिहरोजा खूब मिला कर रखें। इसमे से यथा-प्रमाण औषधि लेकर इससे प्रति दिन ३-४ दिन तक पिचकारी करें।

यदि इन उपायो से लाभ न हो और रोग तीव्र हो, तो सफूफ सुर्ख ३ माशा मिला कर उपरिलिखित शीतल मूत्रजनन औषधि या मीठे फालसा की छालवाला योग पिला दिया करें अथवा चन्दन का तेल १ माशा, बलसा का तेल १ माशा बताशे मे रख कर खिला कर ऊपर से मीठे फालसा की छाल वाला योग पिलायें। अथवा 'दवाये सूजाक' ३ माशा खिला कर ४ तोला शर्बत बजूरी पानी मे घोल कर पिला दिया करें।

जब सूजाक पुराना हो जाय तब सबेरे शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुडी ७-७ माशा, उन्नाब ५ दाना, काली हरड, उशबा मगरबी अथवा लाल चन्दन प्रत्येक ७ माशा रात्रि मे गरम पानी मे भिगो दिया करें। सबेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलायें। सायकाल 'दवा कडाही वाली'

१॥ माशा या १ टिकिया खिला कर ४ तोला बजूरी पानी मे मिला कर पिला दिया करे। यदि सूजाक अधिक पुराना हो जाय और इन उपायो से लाभ न हो तो यही शाहतरा चिरायतावाला पाचन योग पन्द्रह दिन तक पिला कर अर्क मत्बूख हफ्त रोजा ८ तोला या 'दवाये स्याह मुसहिल' २ रत्ती के साथ विरेचन देवें। विरेचनो से छुट्टी मिलने के पश्चात् जौहर मुनक्का २ चावल, गुठली निकाले हुए एक मुनक्का के भीतर इस प्रकार लपेट कर कि दाँतो से औषधि का स्पर्श न हो सवेरे पानी के घूँट से निगलवा दिया करें। या हब्व कत्थ एक गोली इस प्रकार मुनक्का मे रख कर खिला दिया करे।

यदि मूत्र मे दाह एव जलन अधिक हो और पूय आता हो तो प्रथम १-१ तोला प्रात, मध्याह्न एव सायकाल मे पिला दिया करे। एक सप्ताह इसका उपयोग कराकर जब मूत्र का दाह शान्त हो जाय तब जौहरी १ गोली सवेरे ताजा पानी या १ तोला उसी अर्क के साथ निगलवा दिया करे। 'कुर्स कडाही वाली' एक टिकिया सायकाल खिला कर ऊपर से ४ तोला शर्बत बजूरी पानी मे मिला कर पिला दिया करें।

नवीन और पुरातन सूजाकोपयोगी योगौषधि—वशलोचन, बडी इलायची का दाना, सत बिहरोजा, कबाबचीनी प्रत्येक ६ माशा, मिश्री २ तोला—सबको कूट-छान कर सुरमे की भाँति महीन करके थोडा-थोडा चन्दन का तेल मिला कर खरल करे और चीनी के प्याले मे रख लेवें। इसमे से २-२ माशा प्रात सायकाल दूध से खिलायें।

टि०—रोग की तीव्रता मे पिचकारी करने से रोग वढ जाता है और पूय आना वद होकर वृपण प्रकोप प्रभृति उपद्रव हो जाते है। लक्षण हलका हो जाने पर पिचकारी की ओषधियाँ प्रयुक्त करानी चाहिये। जव पूय आना वद हो जाय तव एक-दो सप्ताह पीछे तक सावधानी वा सतर्कता की दृष्टि से चिकित्सा चालू रखे जिसमे सम्यक् आरोग्य लाभ हो जाय।

अपथ्य—उष्ण एव क्षोभक पदार्थ, जैसे लाल मिर्च, तीक्ष्ण एव मसालेदार आहार, अम्ल, अचार, चटनी, मास, अडे, मद्य एव कवाब, तीक्ष्ण चाय प्रभृति खाने-पीने से, स्त्री समागम और अधिक चलने-फिरने, तेल और गुड के पके हुये पक्वान्न तथा मिष्ट पदार्थ से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी एव शीतल आहार जैसे—दूध, डबल रोटी या दूध चावल या फिरनी या दूध मे पका कर जौ का दलिया, मूँग की नरम खिचडी दाल-चपाती और शीतल हरे शाक जैसे—कद्दू, कुलफा, तुरई, टिडा आदि देवें। विरेचन काल मे मूँग की नरम खिचडी देनी चाहिये।

१३--वरम मसाना

नाम--(अ०) वरमुल् मसान, (उ०) मसाना का वरम (सूजन), (स०) बस्ति शोथ, (अं०) सिस्टायटिस (Cystitis)।

वर्णन--इस रोग मे साधारणतया वस्ति की ग्रीवा मे पित्त वा पतले रक्त आदि के प्रकोप से दाह होकर शोथ हो जाता है।

हेतु--वस्ति के ऊपर आघात लगना, बस्तिगत अश्मरी (पथरी), मूत्रावरोध, सूजाक, वातरक्त, वृक्क के रोग, जयावीतुस (मधुमेह), मूत्रगत सक्षोभक घटक, गुदशोथ या गर्भाशय शोथ प्रभृति इस रोग के हेतु हुआ करते है।

लक्षण--पेडू मे गौरव (भारीपन) या बेचैनी मालूम होती है, मूत्र गम्भीर वर्ण का दुर्गन्धित बारबार थोडा-थोडा कर के हुआ करता है, जिसमे कफ या पूय आदि की तलछट तलस्थित होती है। वस्ति के स्थान पर पीडा होती है जिसकी टीसें वृषण और सीवन तक जाती हैं। ज्वर, उत्क्लेश एव दौर्बल्य होता है। रोग की वृद्धिशील होने पर अति तीव्र पीडा होने लगती है। कभी मूत्र बूँद-बूँद करके आता है और कभी गवीनी द्वय वृक्क द्वय या गर्भाशय तक शोथ फैल जाता है और रोगी निढाल हो जाता है तथा प्रलाप होकर स्वर्ग सिधारता है। चिरकालानुबंधी वस्तिशोथ मे वस्ति के स्थान पर हल्की-हल्की पीड़ा होती है और अल्प मात्रा मे पूयमिश्रित मूत्र होता है।

चिकित्सा--(१) मैदे की रोटी का गूदा, यवकुट किया हुआ तिल, ताजा दूध प्रत्येक आवश्यकतानुसार लेकर रोगन बनफ्शा और रोगन बाबूना मे गूँध कर लेप करें। (२) यदि शोथ के कारण मूत्रावरोध हो गया हो, तो निम्न लेप लगावें--जौ का आटा २ तोला, सफेद खतमी का फूल २ तोला, नाखूना २ तोला लेकर कूटें और हरे मकोय के रस तथा गुलरोगन मे गूँध कर वस्ति एव वस्तिपीठ के ऊपर लेप करें। (३) गुलबनफ्शा, मकोय, हसराज और कासनी की जड की छाल प्रत्येक ७ माशा, ५ दाने यव कुट किये हुए उन्नाव--सव को गरम पानी मे भिगो कर मल-छान कर ३ तोला शर्बत दीनार मिला कर पिलाये। (४) ऊँटनी का दूध १० तोला पिलायें।

पथ्यापथ्य--आहार मे केवल दूध, यवमण्ड और दूध सोडा देना चाहिये। दही और साबूदाना भी दे सकते है। रोगी को हर प्रकार के मसालो, मद्य, कबाब, चाय, कहवा आदि से परहेज करना चाहिये।

प्रजननाङ्गरोगाधिकार

(अम्‌राज निजाम आजाय तनासुल) ११

पुरुषरोगाध्याय (अम्‌राजुर्रजाल) १

१—जोफ बाह

नाम—(अ०) जोफ बाह, इनानत, (उ०) नामर्दी, कुव्वत मर्दाना की कमजोरी, (स०) क्लैब्य, क्लीवता, नपुन्सकत्व; (अ०) सेक्सुअल डेविलीटी (Sexual debility), इम्पोटेंसी (Impotency)।

वर्णन—इस रोग मे रोगी की मैथुन शक्ति अपूर्ण वा मिथ्या हो जाती है।

हेतु—कभी यह रोग जननेन्द्रिय वा वृषणो के सहज दोष के कारण हो जाता है जो दुश्चिकित्स्य है। पर साधारणतया अतिमैथुन, हस्तमैथुन या गुदमैथुन प्रभृति कुकर्मो के अभ्यास से या दीर्घकाल तक शुक्रमेह और स्वप्नदोष की व्याधि रहने तथा चकित्सा की चिन्ता न करने से भी यह रोग हो जाता है। कभी-कभी हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत् आदि उत्तमाङ्गो के दौर्बल्य से अथवा आमाशय या वृक्को के दुर्बल होने से भी यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। अति चिन्ता, शोक, क्रोध, भय, भ्रम, सार्वदैहिक दुर्बलता या अधिक स्थौल्य तथा मादक द्रव्यो जैसे अफीम, भॉग, मद्य, चरस, मदक, तमाकू, सिगरेट आदि का अतिसेवन भी इस रोग को उत्पन्न कर देता हे।

लक्षण—जननेन्द्रिय के घातित एव निष्क्रिय हो जाने से रति-शक्ति विकृत या मिथ्या हो जाती हे। कभी आशिक शिश्नोत्थान हो जाता है और कभी मन ऐसा चचल एव अस्थिर हो जाता है कि सर्वथा शिश्नोत्थापन होता ही नही। कभी-कभी मैथुन की बिल्कुल इच्छा नही रहती है। मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा मे ज्ञानेन्द्रियाँ कुठित और शिर.शूल होता है, प्रसेक एव प्रतिश्याय होता और नेत्र के सम्मुख अधेरा हो जाता है। हृदयदौर्बल्य की दशा मे नाडी दुर्वल होती है और हृदय धडकता है। यकृद्दौर्वल्य मे क्षुधा कम हो जाती है, दुर्वलता होती है और कभी-कभी अतिसार होता है तथा यकृद्दौर्वल्य के अन्यान्य लक्षण पाये जाते हैं। मदाग्नि (जोफ मेदा) मे क्षुधा कम हो जाती है। अम्लोद्‌गार आते हैं। कभी-कभी दस्त आते है। वृक्कद्दौर्बल्य की दशा मे वृक्क के स्थान और कटि मे पीडानुभव होती है तथा वृक्क दौर्बल्य के अन्यान्य लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा—प्रथम रोग के मूल हेतु का पता लगा कर उसका परिवर्जन करें और सर्वप्रथम सामान्य शारीरिक स्वास्थ्य के यथावत् करने का प्रयत्न करे। जब स्वास्थ्य यथावत् हो जाय, तब यथावश्यक वाजी कर औषधियाँ सेवन कराये। सुतरा हृदय दौर्बल्य मे जहरमोहरा १ माशा और वशलोचन १ माशा दवाउलमिस्क मोतदिल या मुफर्रेह बारिद या मुफर्रेह याकूती मोतदिल ५-५ माशा के साथ प्रथम खिला कर ऊपर से मीठे अनार का रस ५ तोला, मीठे सेव का रस ६ तोला मे २ तोला शर्वत सेब मिलाकर ५ माशे करजमुश्क के बीज का प्रक्षेप देकर पिलायें।

मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा मे ५ दाना मीठे बादाम का मग्ज, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, तरबूज के बीज का मग्ज, निशास्ता, बबूल का गोद और छिले हुए काहू के बीज प्रत्येक ३ माशा, मिश्री दो तोला सबको पाव भर गाय के दूध मे पीस कर अग्नि के ऊपर रखें। जब हरीरा के समान हो जाय, तब उतार कर ठढा करके पिलायें।

यदि यकृत् दुर्बल हो तो गुलाब का फूल २ दिरम, लाख धोया हुआ (मग्सूल), जरिश्क, मुनक्का (गुठली निष्कासित) प्रत्येक ½ दिरम, मजीठ, वशलोचन, सफेद चन्दन, जावित्री, बबूल का गोद प्रत्येक एक दिरम, रेवन्द चीनी ½ मिस्काल, चुक्रबीज १ मिस्काल, केसर २ दॉग——समस्त द्रव्यो को कूट-पीस कर चूर्ण बनायें। इसमे से ६ माशा चूर्ण फँका कर ऊपर से पाँच तोला खटमिट्ठे अनार का रस २ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें।

आमाशय दौर्बल्य (मन्दाग्नि) की दशा मे मस्तगी, सूखा पुदीना, काला जीरा, वशलोचन, जहरमोहरा प्रत्येक १ माशा——सबको महीन पीसकर ७ माशे जुवारिश जालीनस मे मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से दालचीनी ३ माशा, सौंफ ५ माशा, सोठ ३ माशा, सुखा पुदीना ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ मे पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा वनफ्शा मिलाकर पिलायें।

यदि वृक्क दुर्बल हो तो बिनौले का मग्ज, हब्ब सनोबर कलाँ, मग्ज पिस्ता, मग्ज नारजील (खोपडा), हब्ब कुलकुल, अखरोट का मग्ज प्रत्येक १ तोला, शकाकुल मिश्री, हब्बुल् जुल्म, सोठ, इन्द्र जौ प्रत्येक ६ माशा——सबको कूट-छान कर ७ तोला मधु मे मिलाकर माजून बनायें और प्रति दिन सवेरे ७ माशा खिलायें।

द्रवातिरेक से यदि आमाशय मे दुर्बलता आ गई हो अर्थात् मदाग्नि हो तो जौहरसीन २ चावल, ७ माशा माजून कलाँ या ५ माशा माजून जालीनूस लूलवी मे मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से ६ तोला अर्क पान और ६ तोला अर्क इलायची ४ तोला शर्वत सेव मिलाकर पिलाना लाभकारी है।

सामान्य शारीरिक दौर्बल्य के कारण हो, तो सबेरे कुश्तातिला कलॉ २ चावल या कु ता तिल। जदीद २ चावल या अल्अह्‌मर २ चावल ५ माशा लबूब कबीर या ७ माशा माजून कलॉ या २ माशा माजून जालीनूस लूलुवी मे मिला कर प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क माउल्लहम खासुल्खास ५ तोला मे २ तोला मिश्री मिला कर पिलाना लाभकारी है। २ गोली हब्ब अबर मोमियाई गाय के दूध के साथ सायकाल खिलाना और भोजनोत्तर ५ बूँद माउज्जहब (सुवर्ण) पिलाना या १ गोली हब्ब अह्‌मर खिला कर दूध पिलाना या ४ तोला शर्बत मवीज (द्राक्ष शार्कर) पिलाना भी गुणकारी है। दवाए डिप्टी साहब वाली १ रत्ती या दबाये सम्मुल्फार २ चावल १ तोला मलाई या मक्खन या माजून आर्दखुर्मा मे मिलाकर देना भी गुणकारी है।

प्रसेक एव प्रतिश्याय की दशा मे मस्तिष्कबलवर्धनार्थ ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला के साथ १ गोली हब्ब जदवार देने से उपकार होता है।

स्वप्न दोष के आधिक्य एव शुक्रप्रमेह के लिये ५ माशा सफूफ मुवल्लिफ या १ तोला सफूफ मुगल्लिज जदीद या अक्सीर एहतिलाम ५ टिकिया या माजून मुगल्लिज १ तोला एक पाव दूध के साथ देवे और १ तोला माजून आर्द-खुर्मा या ५ माशा माजून सालब मे १ रत्ती वग भस्म मिलाकर खिलायें।

अपथ्य—अम्ल एव शीतल खाद्य-पेय से परहेज करे। औषध सेवनकाल मे तमाकू सेवन और स्त्री सहवास से भी बचे। आमाशय विकारज मे वायु कारक, गुरु एव दीर्घपाकी पदार्थ, मूँग और मसूर की दाल, बैगन और तनूर की रोटी आदि सेवन न करे। लाल मिर्च और गुड-तेल के पके पदार्थ उपयोग मे नही लेवे।

पथ्य—भृष्ट मास, दूध, मछली, ताजा अडे, चपाती, पुलाव, जर्दा, चाय, बिसकुट, सेब, अगूर, नाशपाती, बादाम, मुनक्का, चिलगोजा, अखरोट, रबडी, मक्खन प्रभृति आवश्यकतानुसार जितना पच सके खिलायें।

टि०—प्रात सायकाल वायुसेवन करना, सुन्दर चित्र ओर फोटो देखना, कामोद्दीपक कथाएँ श्रवण करना ओर उपन्यास पढना इस रोग मे लाभ-कारी है।

२---जिर्यान

नाम—(अ०) ज (जि) र्यान, सैलाने मनी, (उ०) जिर्यान (मनी), (स०) शुक्रमेह, (अ०) स्पर्मेटोरिया (Spermatorrhoea)।

वर्णन—इस रोग मे शुक्र या शुक्रवत् द्रव मैथुन के बिना अनैच्छिक रूप से शिश्नेन्द्रिय से जाग्रतावस्था मे स्रावित होता रहता है।

हेतु--प्राय यह रोग अतिमैथुन या हस्तमैथुन जैसे कुटेव के कारण शिश्नेन्द्रिय के स्पर्शासहिष्णु हो जाने के कारण हुआ करता है। पर कभी मलावरोध हो जाने या वृक्क एव वस्तिगत क्षोभ एव अश्मरी के कारण और कभी बल्य एव उष्ण पदार्थो के अतिसेवन, जैसे मदिरा या मास और चाय आदि या मिष्टान्न के अतिसेवन से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--जब वृक्क या वस्तिगत क्षोभ या अश्मरी वा सिकता के कारण अथवा मलावरोध के कारण यह रोग हो तव मलत्याग के बाद इसके कुछ विन्दु निकल जाते है। वल्य एव उष्ण पदार्थ के सेवन से हो तो प्रायश वीर्यस्खलन हो जाया करता है। किन्तु हस्तमैथुन अथवा अतिमैथुन से होने पर रोगी आलसी हो जाया करता है। अङ्गमर्द होता, मूत्र त्याग करते समय जलन एव गुदगुदी-सी प्रतीत होती है। मूत्र वारवार और अधिक प्रमाण मे होता है। कटिशूल होता, मस्तिष्क और वातनाडियाँ दुर्वल हो जाती, सार्वदैहिक दौर्वल्य, शिर शूल एव शिरोभ्रमण होता, स्वभाव चिडचिडा हो जाता, काम-काज करने से जी घवराता, पृष्ठ पर च्यूँटियाँ सी रेंगती हुई प्रतीत होती है। वुद्धि मद और स्मृति दुर्वल हो जाती हे। सम्यक् निद्रा का अभाव होता, प्राय मलावरोध रहता, क्षुधा नहीं लगती और सहवास की इच्छा धीरे-धीरे कम होती जाती है। कभी-कभी सर्वथा नष्ट हो जाती है। सहवासेच्छा इतना कम हो जाती है कि मामूली चेष्टा से, प्रत्युत् केवल स्पर्श मात्र से विना प्रवेश के ही स्खलित हो जाता है। कभी पायजामा की रगड या किसी स्त्री के दर्शन से या मैथुन का ध्यान करने ही से वीर्यस्खलन हो जाता हे। ऐसे रोगी को लोगो के साथ उठने-वैठने से घृणा हो जाती हे और वह लज्जाशील एव एकान्तप्रिय हो जाता है।

चिकित्सा--यदि पाचनशक्ति दुर्वल (मद) हो या मलवद्धता हो तो उसका यथोचित उपाय करें। वृक्क एव वस्तिगत क्षोभ एव अश्मरी और सिकता के कारण यह रोग हो तो उसका यथोचित उपचार करें। हस्तमैथुन वा अति मैथुन जन्य हो तो इन कुटेवो का परित्याग करायें। उष्ण पदार्थो के सेवन से हो तो उनसे परहेज करायें और औषध रूप मे १ रत्ती वग भस्म १ तोला माजून आर्द खुर्मा या १ तोला माजून मुगल्लिज मे मिलाकर सवेरे खिलायें और शाम को लवूब कवीर ५ माशा या माजून कलाँ ४ माशा या माजून सालव ५ माशा मे २ चावल कुश्ता मुसल्लस (त्रिवग भस्म) मिलाकर खिलायें। रात्रि मे सोते समय ७ माशा इसवगोल की भूसी २ तोला मिश्री मिले हुये एक पाव गाय के दूध के साथ फँका दिया करें।

सामान्य कायिक दौर्वल्य के कारण हो तो १ गोली हब्व जवाहर ५ माशा माजून जालीनूस लूलुवी मे मिलाकर खिलाने से लाभ होता हे। यह योग भी इस रोग मे लाभकारी है—

मोचरस, छालिया (सुपारी), इमली के चीओं का मग्ज, उटगन के बीज प्रत्येक २ तोला, सगजराहत, पाखानभेद १–१ तोला, कत्था सफेद, बीजबद गुजराती, अजवायन ७–७ माशा—सबको कूट-छानकर समभाग मिश्री मिलाकर चूर्ण बनाये। इसमे से ७ माशा चूर्ण दूध के साथ खिला दिया करें।

अपथ्य—उष्ण एव अम्ल पदार्थ, अतिमैथुन, धूप मे चलना-फिरना, शारीरिक एव मानसिक परिश्रम से परहेज करे। प्रात सायकाल वायु सेवन करना और खाने-पीने मे मध्य मार्गावलबन करना आवश्यक है। मद्य, कबाब, चायसेवन और सिरगेट आदि के अतिसेवन से भी परहेज करना चाहिये।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी आहार जैसे—बकरी का शूरवा, चपाती, हरे शाक, दूध, मूँग की दाल और अडा, बिसकुट आदि देवे।

३—सुर्अते इन्‌जाल

नाम—(अ०) सुर्अते इन्‌जाल, रिक्कत; (उ०) सुर्अत इन्जाल, (स०) शीघ्रपतन, शुक्रतारल्य, (अ०) रैपिड या प्रीमेच्योर इजॉक्युलेशन (Rapid or Premature Ejaculation)।

वर्णन—इस रोग मे रोगी अपने सकल्प मे पूर्णतया सफल नहीं हो सकता और समय से पूर्व स्खलित हो जाता है।

हेतु—साधारणतया हस्तमैथुन एव अतिमैथुन के कारण तथा कामुक एव अश्लील विचार सदैव रखने से यह रोग हो जाता है। पर कभी शुक्र के आधिक्य से अथवा दीर्घकाल तक मैथुन का अवसर न मिलने से भी ऐसी आकस्मिक अवस्था उत्पन्न हो जाती है। इसके शेष हेतु वे ही हैं जिनका उल्लेख शुक्रमेह एव स्वप्नमेह के प्रकरण मे किया गया है।

लक्षण—स्त्री समागम के समय प्रवेश से पूर्व या शीघ्र पश्चात् अथवा प्रवेश-काल मे शुक्र स्खलित हो जाता है। क्लैव्य वा कामावसान अवश्य होता है। कभी शिश्नप्रहर्षण के बिना ही शुक्र स्खलित हो जाता है। अपने सकल्प मे असफलता के कारण लज्जा के मारे रोगी जीवन से मृत्यु को श्रेष्ठ समझता है।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसके परिवर्जन का यत्न करें। साधारण अवस्था मे उन्हीं औषधियो का उपयोग करे जिनका विवरण जिर्यान (शुक्रमेह) के प्रकरण मे किया गया है तथा सालब मिश्री, कुदुर, जुफ्त बलूत, कुलजन, पोस्ते का दाना प्रत्येक ९ माशा, मस्तगी रूमी, वशलोचन, गुलनार प्रत्येक ६ माशा कूट-छानकर सम भाग चीनी (शकर सफेद) मिलाकर

बनायें। इसमे से ५ माशा चूर्ण प्रतिदिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलायें अथवा त्रिवग भस्म (कुश्ता मुसल्लस) २ चावल, ५ माशा लबूब कबीर मे मिला-कर सवेरे खिला दिया करें। मैथुन से पूर्व माजून मुकव्वी व मुम्सिक १ माशा खिलाकर पाव भर दूध पिला देना अथवा हब्ब मुम्सिक या हब्ब निशात या हब्ब अक्सीर १-१ गोली पाव भर दूध के साथ देना भी तत्क्षण प्रभाव प्रदर्शित करता है।

हवूब दाफा सुर्अत—सालममिश्री, रूमी मस्तगी, झडबेरी की लाख प्रत्येक १ तोला बारीक पीसकर या कूट-छानकर गूलर के दूध मे घोटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमे से १ गोली प्रतिदिन सबेरे चालीस दिन तक निरतर खिलायें। हब्ब तमर हिन्दी २-२ गोली सबेरे-शाम दूध के साथ खिलाने से भी उपकार होता है।

हवूब मुमसिक—अफीम, शिरगफ, जायफल, कपूर, अकरकरा, मिश्री प्रत्येक ३ माशा, वीरबहूटी १२ नग, केसर १॥ माशा, जुदबेदस्तर १॥ माशा—सबको कूट-छानकर खरल करें और चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। समागम से दो घटा पूर्व दो गोली खा लेवें। भोजन न करें। दूध जितना पी सकें पियें।

अपथ्य—अम्ल पदार्थ से परहेज करें। लाल मिर्च कम खायें। गुड-तेल के पके हुये और उष्ण पदार्थो से परहेज करें। हस्तमैथुन की आदत का परित्याग करायें। स्त्री सहवास मे मध्य मार्ग का अवलबन करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी भोजन देवें। बादी, गुरु एव दीर्घपाकी भोजन से परहेज करायें।

४—एह् तिलाम

नाम—(अ०) एह् तिलाम, कसरत एह तिलाम, (उ०) एहतिलाम, ख्वाब मे शैतान आना, (स०) स्वप्नप्रमेह, स्वप्नदोष, (अ०) नौक्टर्नल एमिशन (Nocturnal Emission)।

वर्णन—इस रोग मे शुक्र के बाहुल्य, शुक्रोत्पादक अगो की स्पर्शासहिष्णुता (जिकावते हिस) या कभी-कभी दौर्बल्य के कारण रोगी को निद्रावस्था मे स्वप्न के सहित या कभी-कभी विना स्वप्न के वीर्यपात हो जाया करता है।

हेतु—अश्लील विचार, अविवाहित रहना, हस्तमैथुन, अतिमैथुन, चित लेटना, मलावरोध, अजीर्ण, अधिक भोजन या उदरकृमि इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण––हर दूसरी-तीसरी रात्रि मे कभी हर रात्रि मे और रोग की तीव्रता मे एक ही रात्रि मे दो-दो बार और कभी दिन मे भी स्वप्नावस्था मे वीर्यपात हो जाया करता है। रोगी को जलकर मूत्र होता है। आलस्य एव दौर्बल्य की वृद्धि हो जाती हे। स्वप्नदोष के समय रोगी को कोई स्वप्नदर्शन होता हे। जागृत होने पर स्वप्न या स्वप्नदोष का विवरण स्मरण नही रहता। कटिशूल और कभी वृषणशूल हो जाता हे। यदि स्वस्थ युवा अविवाहित पुरुष को महीने मे एक-दो बार स्वप्नदोष हो जाय तो उसको रोग नही समझना चाहिये, क्योकि इसका कारण शुक्रबाहुल्य होता हे। उक्त अवस्था मे चिकित्सा की नही, अपितु विवाह की अपेक्षा होती है।

चिकित्सा––पचनक्रिया को ठीक रखे और खाने-पीने मे सावधानी रखें। उष्ण पदार्थ के सेवन और अतिभोजन से बचे। अश्लील एव कामुक विचारो को मन मे स्थान नही देवें। शयनसे पूर्व मल-मूत्र का त्याग कर लेना चाहिये। कब्ज हो तो सप्ताह मे दो बार कुर्स मुलय्यिन ३ टिकिया रात्रि मे सोते समय पाव भर गोदुग्ध के साथ खिला दिया करे और सफूफ मुवल्लिफ ५ माशा या अक्सीर एहतिलाम ५ टिकिया पाव भर दूध से सबेरे देवे अथवा सफेद और लाल बहमन १-१ तोला, इसबगोल की भूसी ५ माशा, बबूल का गोद ६ माशा, भृष्ट इमली की चीओं का मग्ज १ तोला, सालममिश्री १ तोला––सबको कूट-छानकर समभाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर ७-७ माशा सबेरे-शाम पाव भर दूध के साथ सेवन कराये तथा जिर्यान (शुक्रमेह) के प्रकरण मे उल्लिखित औषधियाँ आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

पथ्य––लघु एव शीघ्रपाकी भोजन देवे और सोने से ३-४ घटा पूर्व खा लेना चाहिये। कद्दू, कुल्फा, पालक, तुरई, भिंडा, मूँग की दाल चपाती के साथ देवें। दूध, मक्खन, घी जितना पच सके उतना सेवन करे।

अपथ्य––मास, उष्ण पदार्थ और मसालेदार भोजन से परहेज करे। अडा, चटनी, अचार, अति चायसेवन, सिगरेट पीने, मद्यपान, मिष्टान्न और गुरु पदार्थो के खाने-पीने से परहेज करें।

५––इस्तम्ना बिल्यद, जलक्

नाम––(अ०) इस्तम्ना बिल्यद, जलदउमैर, (उ०) हथलस, जलक, मुश्तज़नी, (स०) हस्तमैथुन; (अ०) मस्टरबेशन (Masturbation), ऑनानिज्म (Onanism)।

वर्णन—इस रोग मे मनुष्य विना स्त्री समागम के हाथ या किसी अन्य अप्राकृतिक साधन वा विधि से वीर्यपात कर देता है।

हेतु—साधारणतया कुसग, मिथ्या, दूषित एव कामुक विचारो को मन मे स्थान देना, युवावस्था मे विवाह न करना और अविवाहित रहना, कामेच्छा का प्रावल्य और एकान्त मे रहने का अवसर मिलना इसके हेतु है। परतु कुछ व्यक्तियो को वाल्यावस्था से ही इसका व्यसन होता है। सुतरा अल्प अवस्था के वालको के शिश्नमुड (सुपारी) के ऊपर धात्री या माता-पिता की असावधानी से मैल जमना या उदरकृमि अथवा धात्री का रोते हुए वालक को मूत्र की जगह सुहलाकर चुप कराना आदि भी इस प्रकार के हेतु है, जिनसे शिश्नेन्द्रिय मे क्षोभ उत्पन्न होकर यदि यह दुर्व्यसन वाल्यावस्था मे पड जाय तो यह युवावस्था तक नही जाता।

लक्षण—यद्यपि यह क्रिया प्राय हाथ से की जाती है, परतु एकान्तावस्था मे या सोते समय मनुष्य मैथुन के विना किसी और रीति से भी दिन-रात मे एक वार या कई वार शुक्र स्खलित कर देता है। शुक्र के अपक्व रहने और उसके अधिक प्रमाण मे नष्ट हो जाने के कारण शरीर के समस्त अग-प्रत्यग एव शक्तियाँ (कुवा) दुर्वल हो जाते है। मूत्र वारवार एव जलकर आने लगता है। शिश्नेन्द्रिय की जड पतली और एक तरफ को टेढी हो जाती है तथा वह प्राकृतिक दर्जे को नही पहुँचती। दूषित द्रवो के सचय के कारण इन्द्रिय की रगें फूल जाती है तथा स्पर्शासहिष्णु (जकीउल् हिस्स) हो जाने से स्वप्नदोष, शुक्रमेह, नपुसकता, कामावसाय आदि व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती है। मन चचल, व्याकुल एव शोकातुर हो जाता है। अत्यत आलस्य के कारण कारोवार मे मन नहीं लगता। लोगो के सग से घृणा और एकान्तप्रियता आ जाती है। ऐसे रोगी इतने लज्जाशील हो जाते है कि किसी से आँख नही मिला सकते। शारीरिक दौर्वल्य के साथ शरीर का वर्ण पीला हो जाता है। हाथ-पाँव शीतल रहने लगते है। नेत्र के नीचे कृष्ण मडल पड जाते है और दृष्टि धीरे-धीरे कम हो जाती है। क्षुधा नहीं लगती। पाचन खराव रहता है। प्राय मलवद्धता होती है। वुद्धि-स्मृति प्रभृति मानसिक शक्तियाँ अत्यन्त दुर्वल हो जाती है। शिर मे पीडा होती और चक्कर आता है। चेहरे पर हवाइयाँ उडती है। शुक्र के वारवार एव अधिक नष्ट हो जाने से प्राणशक्ति (कुव्वत हैवानी) दुर्वल होकर नाना भाँति की शारीरिक एव मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न होती रहती है तथा ऐसे रोगियो की आयु घट जाती है। प्राय ऐसे रोगी अपस्मार, कम्पवात या उन्माद ग्रस्त होकर शीघ्र इहलौकिक लीला समाप्त कर जाते है।

चिकित्सा—सर्वप्रथम रोगी अपने विचारो को पवित्र वनाये और सत्सग

ग्रहण करे तथा कुसग से बचे। दूषित एव कामुक विचार मन से निकाल डाले। एकान्तवास या अकेले कमरे मे सोने-बैठने से परहेज करे। इस दुर्व्यसन एव कुटेव का परित्याग करके शुद्ध हृदय से अपने कुकर्मो के लिये परम पिता के समक्ष शोक एव पश्चात्ताप करे। यदि शुक्रमेह, शीघ्रपतन या स्वप्न-दोष मे से कोई रोग हो तो उन प्रकरणो मे उल्लिखित औषधियाँ सेवन कराये। पाचन सुधारने का ध्यान रखें। मलबद्धता नही होने देवे। शिश्नेन्द्रिय पर प्रथम निम्न औषधियो का मर्दन करायें जिसमे वातनाडियाँ नरम होकर उपचार एव उपाय ग्रहण करने के योग्य हो जायें।

योग—बकरी के गुर्दे (वृक्क) की चर्बी २ तोला, बत्तख की चर्बी २ तोला, गुलरोगन ४ तोले, रोगन बबूना ४ तोला, जिफ्त रूमी ६ माशा—इन समस्त द्रव्यो को कुनकुना गरम करके पद्रह-बीस मिनट तक प्रतिदिन कम से कम सप्ताह पर्यंत मर्दन करना चाहिये। तदुपरात जब यह अनुभव हो कि अब वातनाडियाँ नरम हो गई तब आँबाहलदी, हाथी दाँत का बुरादा, मालकँगनी, पुराना खोपडा प्रत्येक एक तोला सबको कूटकर सात पोटली बनायें। इसमे से एक पोटली प्रतिदिन रात्रि मे गरम करके एक सप्ताह पर्यंत पद्रह-बीस मिनट तक सेके। उक्त उपाय करने के पश्चात् तीसरे सप्ताह से तिलाजदीद मा तिला आला या तिला सुर्ख रात्रि मे सोते समय थोडा-सा लेकर शिश्नमुड एव सीवन बचाकर शिश्नेन्द्रिय पर लगाकर गरम पान बाँधकर कच्चा धागा लपेट कर सो रहा करें। सबेरे कुनकुना गरम पानी से धो डाले। इसी प्रकार कुछ दिन तक लगाने के पश्चात् यदि दाने निकल आये तो तिला का उपयोग त्याग कर चमेली का तेल दिन मे दो-तीन बार लगा दिया करे। जब दाने मिट जायँ और व्याधि शेष रहे तो पुन तिला का उपयोग कम से कम एक मास पर्यंत बराबर चालू रखें।

सामान्य-शारीर शक्ति एव शरीरोष्मा बढाने के लिये कुश्ता तिलाकलाँ २ चावल या कुश्ता तिला जदीद २ चावल, ५ माशा लबूब कबीर या ५ माशा माजून कलाँ या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली या ५ माशा माजून साहिब मे मिलाकर सबेरे खिलाकर ऊपर से अर्क माउल्लहम खासुल्खास ५ तोला या अर्क माउल्लहम जदीद ५ तोला मे २ तोला मीठे अनार का शर्बत या २ तोला मिश्री मिलाकर पिला दिया करें और सायकाल माजून मोमियाई २ माशा मे कुश्ता तामेसर २ चावल मिलाकर खिलायें और ऊपर से अर्क माउल्लहम अबरी ५ तोला में २ तोला मिलाकर पिला दिया करे।

मस्तिष्क बलवर्धनार्थ हब्ब जवाहर १ गोली ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला मे मिलाकर और हृदयबलवर्धनार्थ ५ माशा खमीरा मरवारीद या

५ माशा खमीरए अबरेशम हकीम इर्शदवाला मिलाकर खिला दिया करे। वस्ति एव वृक्क के बलवर्धन के लिये ५ माशा माजून फलासफा या ५ माशा जुवारिश जरऊनी अवरी या ५ माशा माजून अलकली या ५ माशा माजून जदीद मे २ चावल कुश्ता मुसल्लम या ४ चावल कुश्ता पोस्त वैजए मुर्ग मिलाकर खिला दिया करे। हब्ब अहमर १ गोली, इश्रती १ गोली, हब्ब खास १ गोली, हब्ब अवर मोमियाई २ गोली, माजून मुकव्वी व मुम्सिक १ माशा, अल्अह्मर २ चावल, हब्ब निशात गोली प्रभृति मे से कोई एक योग यथावश्यक मक्खन या मलाई या दूध के साथ कुछ दिन खिलाये। इससे कामावसाय (क्लैव्य) दूर होकर शरीर मे पर्याप्त वाजीकरण शक्ति आ जायगी।

अपथ्य—चाय एव सुरापान, अधिक मधुर एव अम्ल पदार्थ, गुड, तेल आदि के सेवन से परहेज करें। सच्चरित्र एव सदाचारी पुरुषो का सग करें और अपने सकल्प पर दृढ एव अटल रह कर इस विनाशकारी कुटेव एव दुष्कर्म या पाप कर्म से अपने पैरो मे कुल्हाडी न मारे।

पथ्य—कम मसाला और कम स्नेहावत साधारण भोजन करें। बकरी का शूरबा या चपाती, मूँग-अरहर की दाल, हरे शाक, पावरोटी, बिस्कुट, अडा प्रभृति अभ्यासानुकूल सेवन करें।

६—वरम खुस्या एव दर्द खुस्या

नाम—(अ०) वज्उल् उन्सियैन व वरमुल् उन्सियैन, (उ०) खुस्यो का दर्द और सूजन, (स०) वृषणशूल, वृषणशोथ, वृषण प्रकोप, (अ०) न्युरल्जिया ऑफ दी टेस्टिक्ल्ज (Neuralgia of the Testicles), ऑर्काइटिस (Orchitis)।

वर्णन—कभी उभय वृषणो मे कभी एक वृषण मे रुक-रुक कर शूल हो जाता है और कभी शोथ हो जाता है।

हेतु—वृषणो पर आघात लगना, औपसर्गिक पूयमेह (सूजाक) या फिरग, कनपेड, वस्त्यश्मरी, वस्तिशोथ, आमवात (सधिवात), वातरक्त (नकरिस), शीत लगना, हस्तमैथुन, अति मैथुन, अजीर्ण प्रभृति इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण—विकारी वृषण शोथयुक्त होकर कठोर एव वेदनापूर्ण हो जाता है। पीडा अति तीव्र होती है जिसकी टीसे उदर, कटि एव जानुओ (रानो) तक जाती है। ज्वर हो जाता है। मिचली और उबकाइयाँ आती है।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगाकर दूर करने का यत्न करे। मलबद्धता (कब्ज) हो तो पावभर गाय के दूध के साथ ४ टिकिया मुलय्यिन खिला

दिया करें अथवा एरण्ड तैल ३ तोला आधा पाव गाय के दूध मे मिलाकर पिला दिया करें। १–१ तोला हरे धनिये, हरे मकोय और हरी कासनी के रस मे १–१ माशा अफीम और कपूर तथा २ माशा अजवायन खुरासानी बारीक पीसकर दर्द के स्थान पर पतला लेप करें अथवा ३–३ तोले सिरका और अर्क गुलाव मे १ माशा कपूर मिलाकर इसमे कपडा तर करके विकारी स्थान पर रखे। इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) गुल वाबूना, मर्जञ्जोश, कैसूम, सोआ के पत्ते प्रत्येक १ तोला—सब को एक सेर पानी मे पकाये। जब आधा पानी रह जाय तब रुग्ण स्थान को इसके कुनकुना गरम काढे से धोयें और शोथ उतारने के लिये गूगुल शिलारस, वोल, गुल वाबूना, स्याहजीरा, वालछड प्रत्येक ३ माशा गुल खतमी कलाँ, मेथी, नाखूना, बाकला का आटा प्रत्येक ४ माशा, सफेद मोम २ तोला, बकरी के गुर्दे की चर्बी २ तोला और गुलरोगन ४ तोला, प्रथम मोम और चर्बी को गुलरोगन मे पिघलाये, इसके वाद शेष ओषधियो का बारीक चूर्ण बनाकर इसमे मिलायें और लेप करे। अथवा, जिमाद वर्म उन्सियैनइसबगोल के लुआव मे घोलकर कोष्ण लेप करें। अथवा पोस्ते की डोडी और टेसू के फूल प्रत्येक ५ तोले को ३ सेर पानी मे काढा करके उससे धारें और सीठी को गरम-गरम बाँध देवे। यदि रोगी बलवान् हो तो बासलीक या साफिन का सिरावेध कराये या ठुड्ढी पर सीगी वा जोक लगवायें। मलावरोध निवारण की आवश्यकता हो तो बस्ति करें।

अपथ्य—बादी, गुरु, तीक्ष्ण और मसालेदार भोजन से परहेज कराये। चलने-फिरने और अधिक चेष्टा करने से रोक देवे।

पथ्य—यवमड या मूँग की नरम खिचडी जैसे नरम और लघु आहार के सिवाय और कुछ न देवें।

७—फत्क

नाम—(अ०) फत्क, कील, उदर, कुर्कुर, (उ०) फत्क, कील, आँत उतरना, (स०) अन्त्रवृद्धि, (अ०) हर्निया (Hernia), सील (Cele), रैप्चर (Rupture)।

वर्णन—यह वह रोग है जिसमे उदरच्छदा कला (पर्दए सफाक) के फट जाने या उसके वक्षणी-स्रोत के परिविस्तृत हो जाने से उदर के भीतर की कोई वस्तु जैसे—अन्त्र, वसा, वायु (रीह) या जल आदि अपने स्थान से हटकर किसी अन्य स्थान मे फँस जाती है या वक्षणी-स्रोत से नीचे वृषण मे उतर आती है। इसको यूनानी वैद्यक मे 'फत्क' और 'कील' तथा आयुर्वेद मे 'आन्त्रवृद्धि' कहते हैं।

आधुनिक परिभाषा के अनुसार इसे 'वङक्षणी आन्त्रवृद्धि' या 'आन्त्रजन्य या आन्त्रागमजन्य वृषणवृद्धि' कहते है ।

भेद—इसके निम्न चार भेद होते है—(१) कीलतुल अम्आऽ—इसमे अण्डकोष के भीतर अन्त्र का कोई भाग उतरता है। इसको फत्क मिअ्वी या मिआई' भी कहते है। अगरेजी और सस्कृत मे इसे क्रमश 'इन्टेस्टाइनल हर्निया (Intestinal Hernia) और 'आन्त्रवृद्धि' कहते है।

(२) कीलतुस्सर्व या फत्क सर्बी—इसमे उदरच्छदाकला (सुर्ब—Omenta) का कोई भाग होता है। इसमे अन्त्र कठिनाई पूर्वक लौटता है और आटोप होता है। इसी बात से इसमे और आन्त्रजन्य वृषण वृद्धि (कीलतुल् अम्आऽ) मे भेद करते है। इसको अग्रेजी मे ओमेन्टल हर्निया (Omental Hernia) कहते है।

(३) कीलतुल्माऽ फत्क माई—इस मे अण्डकोष कठिन एव जलपूर्ण मालूम होता है और किसी प्रकार ऊपर नही जाता। इसको सस्कृत और अग्रेजी मे क्रमश मूत्रवृद्धि (जलवृषण) एव हाइड्रोसील (Hydrocele) कहते है।

(४) कीलतुर्रीह या फत्क रीही—इसमे अण्डकोष के भीतर वायु भरी होती है। यह सरलता से ऊपर चली जाती है। इसको सस्कृत और अगरेजी मे क्रमश 'वातजवृद्धि' एव 'फायसोसील (Physocele)' कहते है।

(५) कर्व लह्मी—इसमे अण्डकोष मे कठोरता एव तनाव प्रतीत होता है, परतु स्वय अण्ड वा मुष्क के घटको मे कोई ऐसी बात नही होती। इसी कारण इसमे और वृषण के कठिन शोथ मे भेद करते है। इसको सस्कृत और अग्रेजी मे क्रमश 'मासज वृद्धि' एव 'सार्कोसील (Sarcocele)' कहते है।

चिकित्सासूत्र—आन्त्रवृद्धि मे अन्त्र को धीरे-धीरे मलकर अपने स्थान पर लौटायें। यदि शीघ्र न लोटे तो पानी गरम कराये और आवजन से बैठाये। अस्तु, जब अन्त्र अपने स्थान पर लौट जाय, तब वृषण, वक्षण और पेड़ू के ऊपर कोई उपयुक्त लेप लगायें।

उदरच्छदाकलावृद्धि (कीलतुस्सर्व) मे भी उपर्युक्त विधि से काम लेवे। वातजवृद्धि (कीलतुर्रीह) मे वायुनाशक द्रव्य सेवन कराये तथा वायुकारक द्रव्यो से परहेज करायें और वृषणो को बाँधे रखे। मूत्रजवृद्धि वा जलवृषण (कील-तुल्माऽ) मे जलोदर की भाति जल का शोषण करें। यदि लाभ न हो तो किसी कुशल हकीम वा जर्राह से पानी निकलवा देवें। मासज वृद्धि

(कर्व लहमी) मे मत्वूख अफ्तीमून से सौदा का शोधन करें और वृषणशोथ मे लिखित उपचार करें।

पथ्यापथ्य—वातोदर के अनुसार व्यवहार करें। उदाहरण स्वरूप लघु एव शीघ्रपाकी आहार, जैसे—दूध, घी, मक्खन, हरे शाक आदि देवें और काविज (ग्राही), आध्मानकारक एव दीर्घपाकी आहार जैसे गोभी, आलू, अरवी प्रभृति से परहेज करायें।

वक्तव्य—कभी किसी आकस्मिक या नैसर्गिक छिद्र या चीर के मार्ग से अन्त्र का कुछ भाग अपने स्थान से हट कर वृषणो मे अवतीर्ण होने लगता है। यह विकार साधारणतया प्राय किसी तीव्र चेष्टा करने या भार वहन या भोजनोत्तर तुरत स्त्री समागम करने से या किसी वाह्य अभिघात या चिरज मलावरोध, वस्त्यश्मरी या जलोदर (इस्तिस्काऽ) के कारण भी हो जाया करता हे। कभी-कभी यह रोग अतीव भयावह रूप ग्रहण करके रोगी के प्राणनाश का हेतु होता हे। अतएव इसकी चिकित्सा मे विलव एव असावधानी करना वडी भूल है। इसकी अव्यर्थ या रामवाण चिकित्सा सिवाय शस्त्र कर्म के और कोई नही है। इसीलिये इसकी चिकित्सा आदि का वर्णन यहाँ अति सक्षेप मे किया गया है। अलवत्ता इसके लिये अग्रेजी औषध विक्रेताओ के यहाँ से वनी वनाई पेटियाँ मिलती है जिनके लगाये रहने से लाभ होता है और वार-वार अन्त्र उतरने नही पाता।

———

स्त्रीरोगाध्याय (अम्राज मख्सूसा निस्वाँ-ज़नाँ) १२

(अम्राजुर्रहम—गर्भाशय के रोग) १

१—अक्र

नाम—(अ०) अक्र; (उ०) बाँझपन, बाँझ होना, (स०) बन्ध्यात्व, (अ०) स्टेरिलिटी (Sterility)। पुरुष के बाँझपन अर्थात् मर्दाना बाँझपन को अरबी मे उक्म (Sterility in man) कहते हैं।

वर्णन—इस रोग मे रोगिणी गर्भधारण एव सन्तानोत्पत्ति के सर्वथा अयोग्य होती है।

हेतु—यदि गर्भाशय और डिम्बग्रन्थि के सहज विकार, जैसे गर्भाशय के छोटा होने, गर्भाशय द्वार या गर्भाशय ग्रीवा के बन्द होने अथवा डिम्बग्रन्थि के विकृत या छोटा होने के कारण यह रोग हो तो असाध्य है। पर जब गर्भाशय के रोग, जैसे गर्भाशय शोथ या गर्भाशय का उलट जाना अर्थात् उसके अन्त धरातल का भग से बाहर होकर इस प्रकार निकल आना कि उसका छिद्र प्रगट न हो (इन्किलाबुर्रहम) या डिम्बप्रणाली शोथ अथवा आर्तव दोष अर्थात् रुद्धार्तव, कृच्छ्र एव अति आर्त व या श्वेत प्रदर, रक्ताल्पता (पाडु), गुह्याग के कोई रोग या सूजाक और फिरग के कारण यह रोग हो, तो यथोचित उपाय करने से यह दूर हो सकता है। कभी श्लेष्माधिक्य से प्रकृति मे शीत की प्रगल्भता हो कर गर्भाशय की धारण शक्ति दुर्बल हो जाती है जिससे गर्भधारण नही होती।

लक्षण—उपरोल्लिखित रोगो मे से किसी न किसी रोग की विद्यमानता, प्रकृतिगतशीत एव श्लेष्माधिक्य मे स्त्री का शरीर स्पर्श करने से शीतल प्रतीत होता है। शरीर का वर्ण सफेदी लिये हो जाता है। गर्भाशय से द्रव स्रावित होता रहता है। हर समय आलस्य रहता और अगमर्द अधिक होता है।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगायें, क्योंकि कभी-कभी पुरुष की अयोग्यता से भी सन्तानोत्पत्ति नहीं हो सकती। प्रथम स्त्री-पुरुष का वीर्य पृथक्-पृथक् जल मे डाल कर यह परीक्षा करें कि दोष किसमें है। जिनका वीर्य जल में तैरने लगे और तलस्थित न हो उसका उपचार करें। उक्त अवस्था मे पुरुष को उन्ही औषधियो का उपयोग कराये जो शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और क्लैब्य। जोफबाह) (के प्रकरण मे लिखी गई है। यदि सूजाक या फिरग इसका हेतु हो, तो इनका यथोचित उपाय करें। यदि स्त्री को अनियमित ऋतु एव आर्तवावरोध के कारण यह रोग हो, तो इनका यथोचित उपाय करें।

श्वेतप्रदर या गर्भाशयशोथ या गर्भाशय सम्बन्धित किसी विकार के कारण यह रोग हो जाय तो इनका आवश्यकतानुसार यथोचित प्रतीकार करे। द्रवातिरेक एव श्लेष्माधिक्य के कारण यह रोग हो, तो सवेरे--मस्तगी, सोठ और स्याह-जीरा १-१ माशा महीन पीस कर ७ माशा जुवारिस जालीनूस मे मिला कर प्रथम खिलाये, ऊपर से सूखा पुदीना, बडी इलायची, छोटी इलायची ५-५ माशा, सोठ, स्याहजीरा, अनीसून ३-३ माशा, सौफ ५ माशा और दालचीनी ३ माशा--सवको जल मे क्वाथ करके २ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलायें और शाम को सौफ ५ माशा, स्याह जीरा, सोठ, अनीसून ३-३ माशा १२ तोले अर्क इलायची मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलायें।

यदि सशोधन अपेक्षित हो तो प्रथम ७-८ दिन तक पाचन औषधि (मुजिज) मिलाकर नवे दिन से यथाविधि विरेचन देवें। विरेचन से खाली होने के बाद द्रवाभिशोषण के लिए हलवाये सुपारी पाग या माजून सुपारी पाक मे २ चावल मुक्ता भस्म मिलाकर कुछ दिन खिलायें और मासिक धर्म से शुद्ध होने एव स्नान करने के पश्चात् १ गोली हब्ब हमल १ तोला माजून मोचरस मे मिला कर सबेरे खिलायें और शाम को २ गोली हब्ब मरवारीद खिला कर ३ तोले अर्क अम्बर और ७ तोले अर्क गावजबान मे २ तोला मिश्री मिला कर पिलाने से भी उपकार होता है। हाथीदाँत का बुरादा २ माशा महीन चूर्ण बनाकर कुछ दिन स्त्री को खिलाने और बरगद की दाढी का चूर्ण बनाकर समभाग चीनी मिलाकर एक तोला प्रति दिन स्त्री-पुरुष दोनो अर्थात् दम्पत्ति को पावभर दूध के साथ खिलाने और ऋतुस्नान करने के पश्चात् सहवास करने से गर्भधारण होने मे सहायता मिलती है। गर्भ स्थिर हो जाने के पश्चात् गर्भिणी एव भ्रूण की बल-वृद्धि एव भ्रूण की सुरक्षा के हेतु माजून हमल अबरी उलवीरवाँवाली ५ माशा या माजून नुसारए आजवाली ५ माशा गर्भस्थित के तीसरे महीने से निरतर प्रति दिन खिलाते रहे।

अपथ्य--अधिक उष्ण एव अम्ल पदार्थ, अचर और मसालेदार भोजन से तथा वादी एव गुरु पदार्थ के सेवन से परहेज करे।

पथ्य--साधारण शूरबा-चपाती, मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, कुलफा, तुरई, भिडी, पालक आदि का शाक यथाभ्यास सेवन करायें।

२--उस्र व एह्तिबासुत्तम्स

नाम--(अ०) उस्रुत्तम्स, एह्तिबासुत्तम्स, (उ०) हैज का मुश्किल (तक्लीफ या दुश्वारी) से आना, हैज का वन्द हो जाना; (स०) कृच्छ्रार्त्तव, रुद्धार्त्तव, आर्त्तवावरोध, (अं०) डिस्मेनोरिया (Dysmenorrhoea), एमेनोरिया (Amenorrhoea)।

हेतु--श्वेत प्रदर, डिम्बग्रन्थिशोथ, आर्तवकाल मे शीत लगना या वर्षा मे भीगना, कभी अति मैथुन, शोक एव दु ख से अनायास यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी रक्ताल्पता एव दौर्बल्य के कारण या चिरज एव चिरकालानुबन्धी रोगो से दीर्घकालपर्यन्त आक्रान्त रहने से अथवा कतिपय यकृद्रोगो के कारण, कभी गरिष्ठ भोजन के अतिसेवन से कफ एव सौदा अधिक उत्पन्न हो कर रक्त को सान्द्रीभूत (गलीज) कर देते है जिससे वह (रक्त) सूक्ष्म स्रोतो (वाहिनियो) मे से प्रवाहित नही हो सकता। सुतरा आर्तव की प्रवृत्ति रुक जाती है। कुछ स्त्रियो को मेदावी एव स्थूल (मासल) होने के कारण यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण--प्रारम्भ से ही आर्तव की प्रवृत्ति नही होती अथवा कुछ काल हो कर वन्द हो जाता है या नियत मात्रा (प्रमाण) से न्यून होता है या थोडा-थोडा रुक-रुक कर वेदनापूर्वक होता है। वेदना की तीव्रता के कारण रुग्णा की सज्ञा स्थिर नही रहती। आर्तवकाल मे अगमर्द एव व्याकुलता और बेचैनी होती है। पेड़ू के स्थान पर गौरव, कटि, कूल्हे एव ऊरुओ (रानो) मे पीडा होती है। यदि इसका कारण रक्ताल्पता हो तो शरीर का वर्ण फीका (विवर्ण) हो जाता है, चेहरा पाडु-पीतवर्ण और सामान्य शरीर दुर्बल एव आलस्ययुक्त हो जाता है। हृदय की धडकन बढ जाती है। यदि शीत लगने या वर्षा मे भीगने अथवा शोक एव चिन्ता से यह रोग हो तो थोडा-सा आर्तव आकर पुन अकस्मात् वन्द हो जाता है। दीर्घ काल तक यह रोग रहने पर अपतन्त्र रोग हो जाता है और मूर्च्छा के आवेग होने लगते है।

वक्तव्य--गर्भावस्था, स्तन्यदानकाल (शिशु को दुग्धपान कराने का समय) और ४५ वर्ष की आयु के पश्चात्, अर्थात् अनार्तवकाल मे आर्तव का प्रवर्तन न होना रोग अन्तर्भूत नही समझा जाता। क्योकि उक्तकाल मे स्वभावत आर्तव की प्रवृत्ति नही होती। जब युवती स्त्री को आर्तवप्रवर्त्तन न हो और उसके पेडू आदि मे पीडा हो तो यह समझना चाहिये कि गर्भाशय या गर्भाशयद्वार अथवा डिम्बग्रन्थि मे कोई सहज वा कृत्रिम दोष विद्यमान है। कृत्रिम वा उपार्जित दोष का प्रतीकार तो चिकित्सा द्वारा सम्भव हो सकता है, परन्तु सहज दोष असाध्य होता है।

चिकित्सा--प्राय आदि यौवनकाल मे लडकियो को अनियमित ऋतु आया करता है। उदाहरणत दो-दो या तीन-तीन, प्रत्युत् चार-चार मास पश्चात् ऋतु आया करता है। परन्तु ज्यूँ-ज्यूँ उत्तरोत्तर आयु बढती जाती है यह दोष स्वयमेव दूर होता जाता है। विवाहोपरान्त तो यह अनियमितता प्राय. मिट ही जाती है।

इस रोग के विभिन्न हेतु होने के कारण इनकी चिकित्सा भी विभिन्नता पाई जाती है। सुतरा यदि रोगिणी रक्तप्रकृति, मासल, मेदावी, मोटी-ताजी एव स्थूल काय हो तो ऋतु के नियमित काल से दो-चार दिन पूर्व विरेचन देवें और राई का चूर्ण बनाकर गरम जल टब मे भरकर उसमे चूर्ण डाल कर रुग्णा को प्रति दिन दस-पन्द्रह मिनट उसमे बैठाएँ।

जब अनायास शीत लगने और वर्षा मे भीगने से यह रोग हो, तब भी उपर्युक्त क्रिया करे और टेसू के फूल २ तोला तथा पोस्ते की डोडी १ तोला दो सेर पानी मे काढा कर के उसमे फलालैन तर करके गर्भाशय के स्थान पर टकोर करे। ऊरुओ (रानो) के भीतर की ओर जोक लगवाना या किसी कुशल जर्राह (सर्जन) से साफिन का सिरावेध करना लाभकारी होता है।

श्वेत प्रदर या अन्यान्य रोगो के कारण यह रोग हो तो उनका नियमित उपचार करना चाहिये। रक्ताल्पता (पाडु), सार्वदैहिक दौर्बल्य एव रोगोत्तर दौर्बल्य के कारण यह रोग हो तो यथोचित बल्य एव रक्तानुकारि ओषधियो वा योगौषधियो के द्वारा इनका प्रतिकार करें।

जब कफ और सौदा के आधिक्य के कारण यह रोग हो, तो हब्ब कुर्तुम ७ माशा सौफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, खरबूजे का छिलका और बीज ७-७ माशा, हसराज ७ माशा, तीन पाव पानी मे क्वाथ करें और जब तृतीयाश शेष रह जाय तब छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलाने से उपकार होता है। नियत ऋतुकाल से तीन दिन पूर्व हब्ब मुदिर्र या मुबारकी १-१ गोली प्रात मध्याह्न और सायकाल अर्थात् दिन मे तीन बार खिलाकर ऊपर से ४ तोला शर्बत बजूरी जल मे घोल कर पिलाने से भी लाभ होता है। प्रतिदिन ५ टिकिया इद्राटी सेवन करने से भी उक्त लाभ होता है। मासिकधर्म जारी हो जाने पर हब्ब मुदिर्र या मुबारकी का सेवन त्याग देना चाहिये।

यदि इन उपायो से लाभ न हो तो--पोस्त अमलतास, बाँस की गाँठ (गिरह) अखरोट, हसराज, बायबिडग, काबुली, डोडा-कपास प्रत्येक ७ माशा, गदना के बीज, गोखरू, मूली के बीज, गाजर के बीज, कलौजी प्रत्येक ३॥ माशा, पुराना गुड ५ तोला--समस्त द्रव्यो को जल मे क्वाथ बना छान कर पिलायें।

जब ऋतु खुल कर आने लगे तो ऋतु से शुद्ध एव स्नान करने के उपरान्त बलवर्द्धनार्थ खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा, या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा, या माजून कुर्तुम ७ माशा कुछ दिन खिलाये।

अपथ्य—उछलना, कूदना, दौडना, सीढी पर जल्दी-जल्दी चढना, चिता शोक, भय और आकस्मिक आनन्द आदि ऋतुदुष्टि के हेतुभूत होते हैं। अतएव यावच्छक्य इनसे बचना चाहिये। उष्ण पदार्थ, अडा, अचार, आदि का सेवन और कठिन परिश्रम एव स्त्रीसहवास करना भी हानिकारक है।

पथ्य—कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक प्रभृति शीतल शाक, बकरी का मास, मूँग-अरहर की दाल, चपाती, खशका, पावरोटी, पुलाव, बिसकुट, मक्खन, दूध आदि आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

३—इस्तेहाजा और कसरते तम्स

नाम—(अ०) इस्तेहाजा, कस्रतुत्तम्स, (उ०) हैज की कसरत अय्याम की ज्यादती, (स०) अतिरज, अत्यार्तव, असृग्दर, (अ०) मेनोरहाजिया (Menorrhagia)।

वर्णन—इस रोग मे अर्तव-शोणित का प्रवर्तन अनियमित एव अधिक होता है। इसके ये दो स्वरूप हैं—(१) नियमित एव निश्चित काल मे वृद्धि हो जाती है, जैसे—साधारणत यदि पॉच दिन इसके लिये स्थिर एव नियत हैं तो अधिकता की दशा मे सात-आठ-दस दिन तक उसमे वृद्धि हो जाती है। (२) नियत काल के अतिरिक्त किसी और काल मे आर्तव-शोणित का प्रवर्तन आरम्भ हो जाता है। इसको यूनानी वैद्य अपनी परिभाषा मे 'इस्ते हाजा' कहते हैं। इन दोनो का उपचार प्राय एक समान है।

हेतु—उष्ण एव तीक्ष्ण पदार्थो के अतिसेवन से पैत्तिक द्रव अधिक होकर रक्त को पतला कर देते हैं तथा सरक्षक स्रोत मे रूक्षता उत्पन्न हो जाती है जिससे पूर्ण रक्षा नही कर सकते हैं। कभी-कभी उछलने, कूदने, दौडने, सीढीपर बार-बार चढने या शरीर मे रक्त की बाहुल्यता से और कभी आर्तव काल मे स्त्री-सगम करने से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—शरीर दुर्बल हो जाता है, नाडी तीव्र एव द्रुतगति से चलती है। तृष्णाधिक्य होता है, चेहरे का वर्ण पाडु-पीत हो जाता है। रक्त निकलते समय दाह एव जलन होती है। मूत्र का वर्ण ललाई लिये पीला हो जाता है। हृदय, मस्तिष्क और यकृत् आदि उत्तमाङ्गो के दौर्बल्य के लक्षण प्रगट हो जाते हैं।

चिकित्सा—उक्त अवस्था मे ३ माशा विहीदाने का लुआव, ५ दाना उन्नाव का शीरा, ३-३ माशा काहू के बीज, तरबूज के बीज के मग्ज, अजवार की जड और कुल्फा के बीज इनका शीरा १२ तोले अर्क नीलूफर मे निकाल कर ४ तोला शर्बत उन्नाव या शर्बत नीलूफर ४ तोला मिलाकर ७ माशा बारतग के बीज का प्रक्षेप देकर सवेरे पिलायें और शामको ४॥ माशा कुर्स कहरुवा खिला कर ऊपर से १२ तोले अर्क नीलूफर मे ५ दाना उन्नाव और ३ माशा छिले हुए काहू के बीज का शीरा निकाल कर २ तोला खट्टे अनार के शर्बत या २ तोला फालसा का शर्बत मिला कर पिलाये। बडकी दाढी (बर्रोह) ३ तोला, अनार का छिलका २ तोला, हरा माजू २ तोला, बबूल की छाल दो तोला—सब को जल मे भिगो कर उससे योनि-प्रक्षालन करायें। यह् वर्ति भी लाभकारी है—गुलनार फारसी, हरा माजू, कुदूर, सुर्मा इसफहानी, अकाकिया, यमनी फिटकीरी प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छान कर बारतग के रस मे मिलाकर वर्त्ति बनाये और उपयोग कराये।

खाने के लिये यह योग भी लाभकारी है—दम्मुल् अख्वैन, वशलोचन, कहरुवा शमई, गिल अरमनी, गुलनार फारसी, निशास्ता, बबूल का गोन्द, कतीरा, मसीकृत सावरश्रृग, शादनज मग्सूल प्रत्येक १ तोला—सबको कूट-छान कर चूर्ण बनाये। इसमे से ६-६ माशा चूर्ण सबेरे-शाम फँका कर १२ तोले अर्क गावजवान मे २ तोला शर्बत अजबार मिला कर पिला दिया करे।

आराम होने पर बलवर्द्धनार्थ मुफर्रेह् बारिद ५ माशा या खमीरा आवरेशम शीरए उन्नाब वाला ५ माशा, या खमीरा अबरेशम हकीम ईर्शदवाला ५ माशा कुछ दिन खिलाये।

अपथ्य—उष्णपदार्थ जैसे मास, लाल मिर्च और गरम मसाला आदि के सेवन से, अधिक चेष्टा, धूपमे चलने-फिरने और सगागम से परहेज करे। चाय और गरम दूध का सेवन भी उक्त अवस्था मे हानिप्रद है।

पथ्य—साधारण शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, पालक, टिडा, तुरई, मूँगकी दाल चपाती के साथ देवें और दूध, खशका, मूँगकी खिचडी, अगर, नाशपाती, फालसा प्रभृति यथाभ्यास देवें।

४—वरमुर्रहम, इअ्विजाजुर्रहम

नाम—(अ०) वरमुर्रहम, इअ्विजाजुर्रहम, (उ०) रहम (नाफ) की सूजन, रहम का टल जाना, नाफ का टल जाना, (स०) गर्भाशय शोथ, गर्भाशय-

विच्युति, (अ०) मेट्रायटिस (Metritis), डिस्प्लेस्मेट ऑफ दी यूटरर्स (Displacement of the Uterus) ।

वर्णन—कभी गर्भाशय अपने स्थान से टलकर सामने या पीछे की ओर झुक जाता है। कभी उसकी ग्रीवा और कभी उसके भीतर भी शोथ हो जाता है।

हेतु—गर्भाशय के स्थान पर आघात लगना, आर्तव काल मे शीत लगना या वर्षा मे भीगने के कारण माहवारी का रुक जाना, गर्भाशय के भीतर तीक्ष्ण औषधियो का प्रयोग करना, कभी-कभी गुप्ताङ्ग शोथ एव सूजाक के कारण और कभी अति मैथुन, गर्भधारण या गर्भपात के पश्चात् भी प्राय यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कुछ विलासी प्रकृति के पुरुष सभोग के कतिपय अन्य सरल एव प्राकृतिक आसनो को छोडकर केवल कामवासना की तृप्ति के लिये अप्राकृतिक आसन वा विधि का उपयोग करते हैं जिसका अनिवार्य फल निर्दोष ललनाओ के लिए यह रोग होता है।

लक्षण—रुग्णा के पेडू और कटि मे पीडा होती है। चलने-फिरने मे कष्ट होता है। गाढा एव लेसदार द्रव गर्भाशय से वारवार स्त्रावित होता रहता है। स्त्री समागम के समय प्राय_ कष्ट होता है। गर्भाशय स्थूल (मोटा) एव सुषिरपूर्ण (पिलपिला) हो जाता है। मासिक धर्म कष्टपूर्वक होता है। मूत्र वारवार और रुक-रुक कर होता है। गुप्ताङ्ग मे गौरव एव दाह प्रतीत होता है। रोग तीव्र होने पर कम्पपूर्वक ज्वर हो जाता है। गुप्ताङ्ग के भीतर अगुली डाल कर देखने से गर्भाशय शोथयुक्त एव वेदनापूर्ण प्रतीत होता है। कभी अतिसार होने लगता है तो कभी उदराध्मान हो जाता है। उत्क्लेश होना और बारबार वमन होता है। कभी मूर्च्छा एव प्रलाप होने लग जाता है। रोग पुराना होने पर गर्भाशय मे व्रण हो जाता है और श्वेत प्रदर (सैलानुर्रहिम) की व्याधि हो जाती है।

चिकित्सा—रोगिणी को सुखपूर्वक शय्या पर लेटाये रखें और अधिक चलने-फिरने एव चेष्टा करने से मना कर देवे। यदि रुग्णा वलशालिनी हो तो साफिन का शिरावेध कराये या जानुओ (रानो) के भीतर की ओर जोक लगवायें तथा खतमी के फूल, सूखा मकोय और बिरजासफ प्रत्येक ५ तोला जल मे उबाल कर गरम पानी मे मिला कर एक टब मे भरे और उसमे रुग्णा को कटि पर्यन्त वैठाये। वेदना शमनार्थ पोस्ते की डोडी १ तोला अर टेसू के फूल १ तोला पानी मे उबाल कर उसमे फलालैन का टुकडा तर करके पेडू के स्थान पर सेक करें। प्रारम्भ मे जौ का आटा, खतमी के वीज, खतमी के फूल, रसवत, लालचन्दन प्रत्येक ६ माशा, अमलताश का गदा ९ माशा—सवको यथोचित हरी कासनी और हरेमकोय के रस मे पीस कर पेडू के

ऊपर लेप करें और गुप्ताङ्ग के भीतर धात्री से वर्ति-स्थापन करायें अथवा हरी कासनी ओर हरे मकोय के यथावश्यक रस मे १ तोला मरहम दाखिलयून मिला कर और गुलरोगन १ तोला, मुर्गी के एक अडे की सफेदी तथा ९ माशा अमलतास का गूदा सम्मिलित करके उसमें स्वच्छ एव नरम कपडा तर करके फलवर्ती (हुमूल की भाँति) धारण करायें। सूखा मकोय, बिरजासिफ, गुलबाबूना १-१ तोला सब को पानी मे काढा कर के डूश द्वारा पिचकारी करके या एनीमा सीरिज के द्वारा पिचकारी करके गर्भाशय और गुह्याङ्ग को प्रक्षालित करके शुद्ध कर दिया करें।

यदि आर्तवावरोध के कारण शोथ हो तो सवेरे हब्ब कुर्तुम, सौफ, हसराज, खरबूजा के बीज, खरबूजे का छिलका प्रत्येक ७ माशा, गावजबान ५ माशा—सबको जल मे उबाल-छान कर ४ तोला शर्वत बजूरी मिला कर कुछ दिन पिलाये और सायकाल माजून कुर्तुम ५ माशा खिला कर सौफ, कड, खीरा ककडी के बीज, खरबूजा के बीज प्रत्येक ५ माशा सबको जल मे पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्वत बजूरी मिला कर पिला दिया करें। और जुदबेदस्तर ३ माशा, जदवार ३ माशा, गुलाब के फूल ६ माशा, मालती ३ माशा बालछड और सूखा मकोय प्रत्येक ६ माशा, सब को आवश्यकतानुसार हरे मकोय के रस मे पीस कर १ तोला रोगन बाबूना मिला फलवर्ति की भाँति उपयोग कराये।

ज्वर का उपसर्ग होने पर प्रात-सायकालीन योग मे ७ माशा खाकसी योजित करें। द्रव की शुद्धि के लिये ६ माशा सूखा बिहरोजा, सेंधानमक ३ माशा, बायबिडग ६ माशा, समुद्रफेन ३ माशा बारीक कूट-छान कर तीन गोलिया बना कर दो उभय पार्श्व मे और एक मध्य मे धात्री से धारण करायें। जब द्रव की शुद्धि हो जाय तब उपरिलिखित मरहम दाखिलयूनावाला योग पाँच-छ. दिन निरतर फलवर्ति (हमूल) की भाँति प्रयोग कराये। तदनन्तर दृढता के लिये अनार का छिलका, कसीस, हरा माजू, तज कलमी, पुराना गच और छोटी माई प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छानकर महीन कपडे मे पोटली बाँधकर धात्री के द्वारा तीन-चार दिन तक (हमूल) की भाँति प्रयोग करायें।

अन्य उपद्रवो का उपचार आवश्यकतानुसार करें। अस्तु, वेदना की दशा मे सफेद मोम १ तोला, १ तोला गुलरोगन मे पिघला कर और ३ माशा बारीक पिसा हुआ एलुआ उसमे मिला कर इसकी फवर्लाति (हमूल) स्थान करें।

अपथ्य—अधिक चलने-फिरने और तीव्र चेष्टा करने तथा बादी एव गुरु पदार्थो के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--लघु एव शीघ्रपाकी,जैसे--कम मिर्च का बकरी का शूरवा-चपाती डाल कर या मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, कुलफा, तुरई, टिंडा, पालक आदि की तरकारी आवश्यकतानुसार देवें।

५--हिक्कतुल्फर्ज, वरमुल्फर्ज

नाम--(अ०) हिक्कतुल्फर्ज, वरमुल्फर्ज, (उ०) खारिश शर्मगाह, वरम शर्मगाह, (स०) भगकण्डू, भगशोथ, (अ०) वल्वर प्रूराइटिस (Vulvar Pruritis), वल्वाइटिस (Vulvitis)।

हेतु--श्वेत प्रदर, शारीरिक दौर्बल्य, स्थानिक शोथ, आर्तव दोष अथवा विट्मूत्र (तक्तीरुल् बौल) या कष्ट प्रसूति, मधुमेह (जयावीतुस) एव सूजाक के कारण यह रोग हो जाता है। कभी मैला-कुचैला रहना और कामाद्रि के बाल का बढ जाना और जू पड जाना भी इसका हेतु होता है।

लक्षण--वेदनापूर्वक मूत्र होता है। रुग्ण-स्थान मे असीम कण्डू होता है। कभी वहाँ पर लालिमा और शोथ हो जाता है।

चिकित्सा--विकारी स्थान को गरम पानी और साबुन से धोकर शुद्ध करे। तदुपरान्त १ तोला गुलरोगन या १ तोला रोगन बनफ्शा मे १ माशा कपूर, ३ माशा सफेद कत्था और १ माशा गिल अरमनी का महीन चूर्ण मिला कर लगाये। अथवा ३-३ माशा रसवत एव लालचन्दन और एक माशा कपूर इनको यथोचित अर्क गुलाब घिसकर उसमे कपडे की गद्दी तर करके रुग्ण स्थान के ऊपर धारण करायें। शोथ की दशामे मरहम काफूर लगवाये और गुलनीलूफर, खतमी के फूल, गुलाब के फूल, शाहतरा, सूखा मकोय, कासनी के बीज, प्रत्येक ५ माशा, उन्नाव ५ दाना सबको यवकुट करके रात्रि मे गरम पानी मे भिगोयें। सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर कुछ दिन पिलाये।

अपथ्य--उष्ण पदार्थ, गुड, तेल, अधिक मशालेदार पदार्थ आदि के सेवन से बचें। रुग्णस्थान को स्वच्छ रखें।

पथ्य--लघु एव शीघ्रपाकी आहार जैसे--यवमण्ड, साबूदाना आदि हरे शाक, जैसे कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई आदि चपाती के साथ देवें या मूँग की नरम खिचडी, खशका दूध, मक्खन, आदि का सेवन उपादेय है।

६--वरम मह्बिल

नाम--(अ०) वरम मह्बिल, (उ०) वरम अन्दाम निहानी, अदाम निहानी की सूजन, (स०) योनिशोथ, (अ०) वेजायनाइटिस (Vaginitis)। इस रोग मे गुह्याङ्ग (योनि) शोथ युक्त हो जाता है।

हेतु--कष्टप्रसूति, अतिमैथुन, अति आर्तवप्रसवशोणितस्राव, श्वेत प्रदर, मधुमेह, सूजाक, स्थानिक आघात एव क्षत, गुह्याङ्ग की मलिनता और अस्वच्छता, खुनाक वबाई (रोहिणी) प्रभृति कतिपय ज्वर इसके हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण--गुप्ताङ्ग मे अत्यन्त शोथ एव दाह होता है। मूत्र त्याग करते समय पीडा होती है और बारबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। यदि भगोष्ठ भी शोथयुक्त हो, तो चलने मे भी कष्टानुभव हुआ करता है। योनि से हरापन लिये पीला द्रव स्रावित होता है। सार्वदेहिक दौर्बल्य होता है। रोग तीव्र होने पर ज्वर भी हो जाता है। दस-पन्द्रह दिन बाद रोग सर्वथा नष्ट हो जाता है अथवा लक्षण घटकर रोग पुराना (चिलकालानुवधी) हो जाता है। उक्त अवस्था मे रोगिणी के गुप्ताङ्ग मे हलका कण्डू शोथ एव दाह हुआ करता है।

चिकित्सा--रोगिणी को सर्वथा सुखपूर्वक शय्या पर लेटायें रखे। रोगारम्भ मे कुछ दिनतक प्रति दिन दो बार दस मिनट तक गरम जल मे कमर तक बैठाये अर्थात् आवजन कराये तथा यह योग पीने को देवें।

नीलूफर के फूल, खतमी के फूल, गुलाब के फूल, पित्तपापडा, मकोय, कासनी के बीज प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना सब को कूट कर रात्रि मे गरम पानी मे भिगो देवें और सबेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर पिलायें। चौथे दिन एक विरेचन देवे तथा उपयुक्त फलवर्ति (फिर्जजा) एव लेप का यथाविधि प्रयोग करें।

७--इख़्तनाकुर्रहम

नाम--(अ०) इख़्तिनाकुर्रहम, (उ०) बावगोला, (स०) अपतन्त्रक, (अ०) हिस्टीरिया (Hysteria)।

वर्णन--यह एक वातव्याधि है जो वातसस्थानिक क्रिया मे विकार उत्पन्न होने से प्रगट होती है। इससे शारीरिक एव आध्यात्मिक क्रिया मे भी किसी प्रकार अन्तर आ जाता है। यद्यपि यह रोग अधिकतया स्त्रियो को होता है और स्त्रियो को प्रचुरता से होने (या गर्भाशय के विकार से होने) के कारण इसको 'इख़्तिनाकुर्रहम' कहते है, तथापि क्वचित् पुरुष भी इसके आखेट होते हैं। अस्तु, शैखुर्रईस बूअलीसीना एव राजी का यह वचन है कि "कभी स्त्रियो के इख़्तिनाकुर्रहम की भाँति पुरुषो को भी इसी प्रकार की रुग्णावस्थायें उत्पन्न हो जाती है।"

हेतु—बहुधा धनवान् और कोमल प्रकृतिवाली नगर की स्त्रियाँ १२ से ४० वर्ष तक की आयु मे प्राय इस रोग का आखेट हुआ करती है। कष्टार्तव या किसी कारणवश उसका अवरुद्ध हो जाना, विलासिता का जीवन व्यतीत करना, काम-धधा और साधारण परिश्रम न करना, कामोत्तेजक उपन्यास आदि श्रवण एव पठन करना, कामप्रवणता, हठीला कब्ज (मलबद्धता) या उदराध्मान, चिता, शोक, क्रोध, भय, उलझन या अतीव हानिजन्य आघात और युवती स्त्री का दीर्घकाल पर्यन्त विवाह न करना अथवा अति जागरण आदि इस रोग के हेतु है।

लक्षण—यह रोग आवेग (दौरा) पूर्वक होता है। आवेग किसी को कुछ मिनट, किसी को कुछ घटे और किसी को दो-चार दिन तक रहता है और वह प्राय आर्तवकाल मे पडता है। प्रथम रोगिणी के कूल्हो मे कुछ पीडा प्रतीत होती है। नेत्र से अश्रु बहता है। शिर शूल होता है। रोगी निढाल होता है और आलस्य एव दौर्बल्य के लक्षण प्रकट होते है। नेत्र के सामने अधेरा हो जाता है। कुछ देर बाद उदर मे एक गोला-सा उठकर ऊपर जाकर गले मे अटक जाता है जिसको रोगिणी बारबार निगलने का यत्न करती है और उसका दम घुटने लगता है। इसी कारण जनसाधारण इसको 'वायगोला' या इख्तिनाक 'इख्तिनाकुर्रहम' (गला घोटना) कहते है। ग्रीवास्तम्भ, उद्गारबाहुल्य तथा बहुमूत्र होता और हृदय का स्पन्दन बढ जाता है। रोगिणी अकस्मात् चिल्ला कर रुदन करने लगती है या अट्टहास करके हँसने लगती है तथा मूर्च्छित-सी हो कर पृथ्वी पर गिर पडती है। स्वर बैठ जाता है। बोला नहीं जाता। छाती कूटती है। हाथ-पाव मारती है। शरीर मे उद्वेष्टन होता है। कभी उठती और कभी बैठती है। हस्तपाद मे आक्षेप हो जाता है। श्वासोच्छ्वास बढ जाता है। हस्त-पाद शीतल हो जाते है। कभी रोगिणी अपने शिर के बाल नोचती है और कपडे फाडती है। पास-पडोस के लोगो से घृणा करती तथा काट खाने को दौडती है और कभी दीवाल से शिर टकराती है। बारबार अपने कण्ठ की ओर अगुली ले जाती है मानो कण्ठ के भीतर किसी वस्तु के अटकने का सकेत करती हो। जब रोग का बल घट जाता है तब रुग्णा हॉफती और कॉपने लगती है। स्पर्श से चौकती और कभी चुपचाप पडी रहती है। अन्ततोगत्वा खिलखिला कर हँस देती है या रो देती है और रोग का आवेग दूर हो जाता है। पुष्कल मूत्र प्रसेक होता है। यदि रोग के आवेग मे अपस्मारवत् आक्षेप हो तो रोगिणी मूर्च्छित (लुप्तसज्ञ) हो जाती है। किसी-किसी को प्रलाप हो जाता है जिससे आवेग की दशा मे बहकती और असम्बद्ध भाषण (बेहूदा बकवास)

करती है। इस रोग के आवेग मे रोगिणी के मुख से अपस्मारी की भाँति झाग (फेन) नही आता।

चिकित्सा--यदि रोगिणी कुमारी हो तो प्राय विवाहोपरात यह व्याधि स्वयमेव दूर हो जाती है। नवयुवती स्त्री को यह व्याधि हो तो आयुवृद्धि के साथ धीरे-धीरे कम हो जाती है। आवेग की दशा मे अर्क गुलाव और अर्क केवडा आदि सुगन्धित द्रव्य मुख एव छाती पर छिडककर रोगिणी को होश मे ले आयें। गले और सीना का बन्धन ढीला करके रुग्णा के शिर को किंचित् ऊँचा रखे। चेहरे पर शीतल जल के छीटे मारें या हींग सुँघाये। एक-दो मिनट के लिये नाक के नथुने बन्द कर देवे। वाहु और पिडली को कसकर बाँधें। पाँव और सम्पूर्ण शरीर का खूब सवाहन करें। नाभि के नीचे और पिडलियो के ऊपर खाली सींगी लगवाये और पाशोया (पादस्नान) करावें। यदि मलाव-रोध हो तो बस्ति देवे और शुद्ध कस्तूरी १ माशा रोगन यास्मीन (चमेली का तेल) १ तोला मे घोलकर उसमे रूई तर करके तैलपिचु की भाँति योनि मे स्थापन करायें तथा तज ६ माशा, नागरमोथा ६ माशा, वालछड ६ माशा कूट-छानकर यथावश्यक मकोय के रस मे मिलाकर नाभि के नीचे लेप करें।

अनावेग की दशा मे मासिक धर्म के नियमन के लिये ५ माशा कड (कुसुम के वीज), सौंफ ७ माशा, गावजवान ५ माशा, हसराज ७ माशा, खरबूजा के वीज ५ माशा, खरबूजा का छिलका ७ माशा सबको जल मे काढा करके छानकर ४ तोला शर्वत बजूरी मिलाकर सबेरे पिलाये। यदि गर्भाशयस्थ दूषित द्रव सचय से हो तो गर्भाशय की शुद्धि के लिये यह झाड़ का योग प्रयुक्त करायें—वायविडग ६ माशा, समुद्रफेन, सूखा विरोजा, सेंधा नमक प्रत्येक ३ माशा कूट-छानकर मलमल के महीन नरम कपडे मे छोटी-छोटी तीन पोटलियाँ बाँधकर एक पोटली गर्भाशय के मुख के नीचे और उसके दाहिने-बायें दोनो ओर एक-एक पोटली दाई से स्थापन कराये। इस विधि से तीन दिन तक उक्त क्रिया करें।

मलावरोध हो तो रात्रि मे सोते समय कुर्स मुलय्यिन ३ टिकिया खिलाकर एक पाव दूध पिला दिया करें या सनाय मक्की ७ माशा और ४ तोला बूरा एक पाव गाय के दूध मे उबालकर पिलाये।

आक्षेपनिवारण के लिये १—१ माशा जदवार और ऊदसलीब महीन पीस कर ५ माशा खमीरा गावजवान, जदवार,ऊदसलीब वाला मे मिलाकर सबेरे प्रथम खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूम के बीज, ३ माशा सूखा मकोय ६-६ तोला अर्क सौफ और अर्क बिरजासिफ मे पीसकर ४ तोला शर्वत दीनार या ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। नियत ऋतुकाल से तीन दिन पूर्व से हब्ब मुदीर्र १—१ गोली या मुवारकी १—१ गोली प्रात

मध्याह्न-सायकाल अर्थात् दिन मे तीन बार तीन दिन तक खिलाकर ४ तोला शर्वत बजूरी पानी मे घोलकर पिलायें।

यदि सशोधन अपेक्षित हो तो यथाविधि प्रथम ग्यारह दिन तक मुजिज देकर मुसहिल (विरेचन) देवे। विरेचन से खाली होने के बाद सवेरे १-१ माशा जदवार और ऊदसलीब महीन पीसकर एक तोला खमीरा गावजबान मे मिलाकर खिला दिया करें। जदवार खताई, कलमी शोरा, रूमी मस्तगी, जुदवेदस्तर, ऊदसलीब, अकरकरा प्रत्येक ३ माशा, फादजहर हैवानी १।। माशा, असली कस्तूरी १ माशा कूट-छानकर गुठली निकाले हुये मुनक्का को पीसकर तैयार किये हुए शीरा में मिलाकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमे से २-२ गोली सायकाल खिलाकर ऊपर से ५ तोला अर्क गुलाब पिला दिया करे।

अपतन्त्रक हर वटी योग—हीग १ माशा, बालछड २ माशा, गुल बाबूना और मुलेठी १-१ तोला—सबको महीन पीसकर जल मे घोटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवे। इसमे से १-१ गोली दिन मे तीन बार देवे।

बलवृद्धि के लिये ५ माशा खमीरा आबरेशम हकीम इर्शदवाला या ५-५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली या दवाउल्मिस्क हार्र जवाहरवाली या तिर्याक फारूक १ माशा या खमीरा गावजबान १ तोला मे मिलाकर कुछ दिन खिलाये। इस बात का सदैव ध्यान रखे कि पाचनशक्ति ठीक रहे। मलबद्धता नही होने देवे। चिकित्साकाल मे सतर्कता की दृष्टि से मलबद्धता-नाशक (कब्जकुश) औषधि का उपयोग कराते रहना श्रेयस्कर एव समीचीन होता है। दो टिकिया दवाउश्शिफा (सर्पगधावटी) जल के साथ सेवन कराना भी परम गुणकारी है।

अपथ्य—बादी, गुरु, दीर्घपाकी एव वाष्पोत्पादक पदार्थों से तथा शोक एव क्रोध से, कामोत्तेजक कथानक और उपन्यास आदि के पढने एव अतिजागरण से परहेज करे।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार देवें। विरेचन काल मे नरम मूँग की खिचडी के सिवाय कोई अन्य आहार नही दिया जाय। अन्य काल मे आवश्यकतानुसार कम मिर्च का बकरी के मास का शूरवा चपाती के साथ देवें। शाको मे कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, टिडा आदि आवश्यकतानुसार देवे। फलो मे मीठा अनार, अगूर, अमरूद, सेब आदि अभ्यासानुकूल देवें।

८—सैलानुर्रहम

नाम—(अ०) सैलानुर्रहम; (उ०) सफेद पानी आना (बहना), (स०) श्वेतप्रदर, (अ०) ल्युकोरिया (Leucorrhoea), ह्वाइट्स (Whites)।

इस रोग मे स्त्रियो के गुप्ताग से पिलाई लिये सफेद द्रव बहा करता है।

हेतु—कभी सूजाक, फिरग (आतशक) अथवा वातरक्त (निक्‌रिस) मे उपद्रवस्वरूप यह रोग हो जाता है। कभी-कभी गर्भाशय शोथ, गर्भाशयभ्र श, रुद्धार्तव अथवा प्रारभिक आयु मे गर्भस्थित हो जाने से और गुह्यागशोथ या प्रदाह के कारण अथवा सार्वदैहिक दौर्बल्य एव रक्तालपता के कारण भी यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है। कभी शीतल एव तर आहार के अतिसेवन से शरीर मे अधिक आक्लेद उत्पन्न होकर इस रोग का हेतु होता है। स्मरण रखना चाहिये कि श्वेत प्रदर से पीडित रोगिणी को गर्भाशय शोथ की तीव्रातीव्र शिकायत अवश्य होती है। अतएव श्वेतप्रदर की चिकित्सा के साथ-साथ गर्भाशय शोथ का उपचार अवश्य करना चाहिये।

लक्षण—कटि मे दर्द रहता है। पेडू मे बोझ एव वेदना—कष्ट अवश्य पाया जाता है। वारबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। सामान्य कायिक दौर्बल्य, क्षुधानाश, कष्टार्तव और आलस्य होता है। काम-काज करने की इच्छा नही होती। भगकण्डू होता उससे श्वेत छाछ की भॉति या पीताभ द्रव स्रावित होता रहता है। जब तक यह व्याधि रहती है गर्भस्थित नही हुआ करता। कभी-कभी गर्भकाल मे भी यह व्याधि हो जाती है। उक्त अवस्था मे रोगिणी के गुह्याग मे असीम कण्डू होकर अधिक प्रमाण मे द्रव स्रावित हुआ करता है। नवविवाहिता एव नवयुवती स्त्रियो को भी यह व्याधि प्राय हो जाती है। यदि वृद्धावस्था मे इस प्रकार की व्याधि होती है तो गुप्ताग से पनीर के समान जमा हुआ और गाढा द्रव स्रावित हुआ करता है। युवती स्त्रियो मे श्वेत लेसदार कभी-कभी पतला एव चमकीला द्रव निस्सरित होता है जो भगोष्ठो पर चिपक जाया करता है।

चिकित्सा—प्रथम किसी चतुर दाई को दिखाकर विवरण ज्ञात करे। यदि इस व्याधि के साथ गर्भाशयशोथ भी हो तो प्रथम गर्भाशय शोथ के प्रकरण मे उल्लिखित शोथ की चिकित्सा करें। अर्थात् मरहम दाखिलयून १ तोला हरी कासनी और हरे मकोय के १–१ तोला रस मे मिलाकर ६ माशा गुलरोगन और मुर्गी के एक अडे की सफेदी सम्मिलित करके दाई (दाया) के द्वारा स्थानिक प्रयोग करायें। यदि दोषनिर्हरण की अपेक्षा हो तो गर्भाशय शोथ मे

उल्लिखित झाड का योग प्रयुक्त करायें। तदनन्तर रुग्णा के सार्वांगिक स्वास्थ्य के लिये वल्य औषधियो का प्रयोग करायें। स्थानिक रूप से गुह्याग की शुद्धि एव स्वच्छता परमावश्यकीय है, अन्यथा व्रण आदि उत्पन्न होकर भयकर रोगलक्षणो के उत्पन्न हो जाने का भय है। अस्तु, फुलाई हुई फिटकिरी २ माशा और सफेद कत्था ४ माशा, १॥ छटाक स्वच्छ जल मे घोलकर कुनकुना गरम करके फीमेल सीरिंज (स्त्रियो मे प्रयुक्त होनेवाली योनि वस्ति) के द्वारा उसको धो लिया करे। और अकाकिया, गुलनार, हरा माजू, फिटकिरी, वालछड प्रत्येक ३ माशा—सवको महीन पीसकर और एक स्वच्छ एव नरम कपडे को स्वच्छ पानी मे नम करके उक्त औषध से आप्लुत (लत) करके योनि के भीतर रखें। त्रिवग भस्म (कुश्ता मुसल्लस) २ चावल १ तोला माजून मोचरस मे मिलाकर खिलाना अथवा कुक्कुटाण्डत्वग्भस्म २ चावल मिलाकर खिलाने भी लाभकारी है। माजून सुपारी पाक ७ माशा या हलवाए सुपारी पाक १ तोला मे शुक्ति भस्म भस्म १ रत्ती या मुक्ता भस्म २ चावल मिलाकर खिलाने से भी उक्त लाभ होता है। सामान्य कायिक दौर्वल्य निवारण करने के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा मे १ टिकिया कुर्स फौलाद मिला कर खिला दिया करें अथवा भोजनोत्तर ३–३ माशा शर्वत फौलाद सेवन करायें।

श्वेतप्रदरोपयोगी चूर्ण योग—कुदुर, गुल पिस्ता, सुपारी का फूल, कलमी तज, रूमी मस्तगी, सफेद इलायची, वशलोचन, सालममिश्री, सफेद मुसली, सगजराहत, चुनिया गोद, छोटी माई, पठानी लोध प्रत्येक ६ माशा, मिश्री ७ तोला कूट-छानकर चूर्ण वनायें। इसमे ७–७ माशा चूर्ण प्रात सायकाल दूध से खिलायें।

गर्भावस्था मे भी लाभकारी श्वेतप्रदरोपयोगी चूर्ण योग—मुक्ताशुक्ति १॥ तोला, वशलोचन ६ माशा, तालमखाना ६ माशा, छोटी इलायची का दाना ६ माशा, मिश्री ३ तोला—सवको कट-छानकर चूर्ण वनाये। इसमे से ७ माशा चूर्ण फँका दिया करें।

कभी-कभी इस रोग के पुराना होने के कारण गर्भाशय मे व्रण एव घाव हो जाते हैं। उक्त अवस्था मे यथोचित उपचार के साथ-साथ नीम की पत्ती १ तोला और कवीला ३ माशा, जल मे क्वाथ करके इससे पिचकारी करके गर्भाशय को धुलवाते रहना और स्थानिक रूप से यथावश्यक मरहम काफूर या मरहम जदवार लगाना और १ माशा मुरदासग और १ माशा दुग्ध पाषाण सवको महीन पीसकर मरहम सफेदा या मरहम काफूर मे मिलाकर उसमे नरम कपडा या रूई आप्लुत करके इसे गर्भाशय के भीतर फलवर्ति (फिर्जजा) की भाँति स्थापन करवाना चाहिये।

अपथ्य– बादी, गुरु, कफकारक एव अधिक उष्णपदार्थ, तेल-गुड के पके हुये एव अम्ल पदार्थ और लाल मिर्च के सेवन से यावच्छक्य परहेज करें। अधिक चलना--फिरना, कोई भार उठाना, अठिन परिश्रम एव चेष्टा करना इस रोग मे हानिकारक है।

पथ्य--लघु एव शीघ्रपाकी आहार, जैसे--कम मिर्च का बकरी का शूरवा, कद्दू, कुलका, पालक, टिडा, तुरई, चुकदर आदि की तरकारी या मूँग-अरहर की दाल चपाती के साथ देवें या मूँग की नरम खिचडी और पुलाव खिलायें। फलो मे से मीठा अनार, अगूर, सेव और अमरूद आदि देवें।

९--हिक्कतुर्रहम, शिकाकुर्रहम, बुसूरुर्रहम

नाम--(अ०) हिक्कतुर्रहम, शिकाकुर्रहम, बुसूरुर्रहम ; (उ०) रहम की खारिश, रहम का फट जाना, रहम की फुसियाँ; (स०) जरायुजकण्डू जरायुविदार, गर्भाशयिक विस्फोट (व्रण), (अ०) इचिग ऑफ यूटरस (Itching of Uterus), रैपचर यूटराई (Rupture Uteri), अल्सर ऑफ यूटरस (Ulcer of Uterus)।

हेतु--कभी किसी दोष के प्रगल्भ होने (प्रकोप) से, कभी श्वेतप्रदर या गर्भाशयशोथ के चिरकालानुबधी हो जाने पर गर्भाशय मे कण्डू होता है और कभी-कभी छोटी-छोटी फुसियाँ भी हो जाती है। कभी गर्भाशय द्वार की श्लैष्मिक कला मे क्षोभ होकर विदीर्ण हो जाता है और उसमे व्रण एव घाव हो जाते है।

लक्षण--कण्डू एव दाह (सोजिश) होता है। यदि फुसियाँ हो तो ऊगली डालने से मालूम होती है। व्रण एव घाव हो तो उनसे पूय एव मवाद निकलता है। कण्डू की दशा मे मैथुनेच्छा बढ जाती है। कण्डू की अधिकता की दशा मे कभी-कभी गर्भाशय बाहर निकल आता है।

चिकित्सा--प्रथम रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसका निवारण करे। श्वेतप्रदर वा गर्भाशय शोथ इसका हेतु हो तो उसका उपचार करे। यदि किसी दोष के प्रकोप के कारण हो तो प्रथम शिरावेध एव विरेचन द्वारा उसका शोधन करें। तदनन्तर निम्न औषधियाँ सेवन करायें। दाह एव कण्डू निवारणार्थ--

३ तोले अर्क गुलाब मे ३ माशा कपूर पीसकर उसमे कपडा भिगोकर योनि के भीतर स्थापन करायें। ५ तोले अर्क गुलाब मे ६-६ माशा इसबगोल और खतमी के फूल का लुआब निकाल कर इसमे मुर्गी के एक अण्डे की सफेदी और

गुलरोगन ६ माशा योजित कर पतला लेप लगवायें। ५ तोला अनार का छिलका और ५ तोला छिला हुआ मसूर जल मे काढा करके उससे योनि प्रक्षालन करायें।

फुसियो की दाह मिटाने के लिये रसवत, मुरदासग, गिल अरमनी, सफेदा काशगरी हरी मकोय के रस या अर्क गुलाव मे पीस कर मुर्गी के अण्डे की सफेदी और गुलरोगन मिला कर इसको अथवा मरहम सफेदा या मरहम काफूर को फलवर्ति की भॉति योनि मे स्थापन करें या पिचकारी करें। सैलानुर्रहम के प्रकरण मे पिचकारी का जो योग लिखा गया हे उसकी पिचकारी करें।

पीने के लिये उक्त अवस्था मे कोई रक्त शोधक योग सेवन करायें।

अपथ्य—उष्ण, तीक्ष्ण एव मसालेदार आहार के सेवन से और अग्नि सेवन से, अधिक काम-काज करने से और मैथुन से परहेज करें। लालमिर्च कम खायें। मीठे पदार्थो से भी परहेज करें। गुड और तेल के वने कोई पदार्थ सेवन न करें।

पथ्य—लघु, नरम, शीघ्रपाकी आहार, वकरी का शूरवा चपाती के साथ या मूँग की दाल चपाती के साथ और मूँग की नरम खिचडी, खशका दूध के साथ और फलो मे से शीतल फल और शीतल शाक सेवन करें।

१०—इस्कात हमल।

नाम—(अ०) इस्कात हमल; (उ०) हमल गिर जाना, (स०) गर्भपात, (अ०) एवॉर्शन (Abortion), मिसकैरेज (Miscarriage)।

इस रोग मे सात मास से पूर्व गर्भाशय से गर्भ का पात हो जाता है।

हेतु—सामान्य कायिक दौर्बल्य, रक्ताल्पता, जोर से उछलना-कूदना, सीढी पर वारवार चढना-उतरना, ठोकर खाकर गिरना, किसी भारी वस्तु का उठाना, उदर से ऊपर आघात लगना, एक्का, गाडी आदि सवारी, अतिमैथुन, भयभीत होना, अत्यन्त दु ख, चिन्ता और शोक, तीव्र औषधियो या तीव्र विरेचन का सेवन आदि इसके हेतु हैं। कभी मादक द्रव्य के सेवन या कतिपय गर्भाशयिक रोग और सूजाक एव फिरग रोग के कारण भी गर्भपात हो जाता हे।

लक्षण—प्रथम गर्भिणी वेचैन एव आलस्ययुक्त होती है। अङ्गमर्द होता है तथा उदर, कटि एव ऊरुओ मे ठहर-ठहर कर प्रसववेदना व पीडा होती है। जो क्रमश. उत्तरोत्तर वढती जाती है। गर्भाशय से रक्तस्राव होता है। कुछ स्त्रियो को वमन होता है और सूक्ष्म ज्वर भी हो जाता है। किसी को अल्प और किसी को अधिक रक्तस्राव होता है जो भयकर लक्षण है।

चिकित्सा—यदि रक्तस्राव कम हो और वेदना भी हल्की हो तो अविलम्ब यथोचित उपचार करने से गर्भ स्थिर रहने की आशा हो सकती है। अस्तु, रोगिणी को चारपाई पर एक करवट सुखपूर्वक लेटायें, उठने-बैठने, चलने-फिरने की आज्ञा कदापि न देवे और रक्तस्तम्भक औषधियो का वहिराभ्यन्तरिक उपयोग कराये। सुतरा, गेरू और सगजराहत १-१ माशा महीन पीस कर आमला के एक मुरब्बा मे मिला कर प्रथम खिलायें और ऊपर से ३-३ माशा हब्बुल्आस, अजवार की जड और काला कुलफा के बीज १२ तोला अर्क गावजवान मे पीसकर २ तोला शर्बत खशखाश मिला कर पिलायें। दूसरे समय के लिये ६-६ माशा बबूल का गोद, गेरू, सफेद पोस्ते का दाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, काला कुलफा के बीज और ३-३ माशा कहरुबाये शमई, दम्मुल् अख्वैन तथा गिल अरमनी और २ तोला मिश्री सबको कूट-छान कर चूर्ण बनायें। इसमे से ७ माशा चूर्ण ४ तोला शर्बत अजवार के साथ तीसरे पहर फँका दिया करें और हरा माजू, गुलनार, झाऊ, अकाकिया, पोस्त अनार प्रत्येक ६ माशा महीन चूर्ण बना कर मलमल का कपडा पानी मे भिगो कर उस पर उक्त चूर्ण का प्रक्षेप देकर फलवर्ति की भाँति गद्दी रखवाये अथवा २॥ तोला पानी मे ६ माशा फिटकिरी घोल कर उसमे कपडे की गद्दी तर करके फलवर्ति की भाँति स्थापन कराये और ६-६ माशा गेरू, सुपारी और हरामाजू तथा एक माशा अफीम जल मे पीस कर पेडू के स्थान पर लेप करें।

किंतु जब अत्यन्त रक्तस्राव हो रहा हो और वेदना भी शीघ्र-शीघ्र उठती हो, तब प्राय गर्भपात हुए बिना नही रहता। उक्त अवस्था मे तीव्र आर्तवजनन औषधियो (मुदिर्रात) से द्रव (प्रसवशोणित) निर्हरण मे सहायता करे जिसमें सत्वर गर्भपात हो कर रुग्णा रक्तस्राव आदि कष्ट से सुरक्षित रहे। द्रवनिर्हरण एव शुद्धि के लिये अन्न-जल के स्थान मे क्वाथ का निम्न योग्य सेवन कराये—मुश्क-तरामसीअ ७ माशा, पोस्त अमलतास ९ माशा, खरबूजे का छिलका १ तोला, सोफ ७ माशा, हसराज ७ माशा सबको तीन पाव जल मे क्वाथ करे, जब तृतीयाश जल शेष रह जाय, तब यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो ४ तोला शर्बत बजूरी और यदि शीत ऋतु हो तो ४ तोला पुराना गुड मिला कर पिलाये। तीव्र तृष्णा मे अर्क सौंफ और अर्क मकोय मिला कर थोडा-सा केवल कण्ठ तर करने के लिये दे सकते हैं।

वक्तव्य—दम्पति मे से यदि किसी को फिरग वा सूजाक का रोग हो तो गर्भस्थिति से पूर्व उसका यथोचित उपचार करना परमावश्यक हे अन्यथा गर्भ-पात की आशका होती हे।

अपथ्य—गर्भपात के हेतुओ के निवारण का यत्न करें। जब वारवार गर्भपात हो जाता हो तब अनागत वाधाप्रतिषेधस्वरूप गर्भकाल मे माजून हमल

अवरी उलवीखॉवाली ५ माशा या माजून नुशारये आजवाली ५ माशा रोगिणी को खिलाते रहें। चालीस दिन तक चेष्टा आदि से तथा गुरु भोजन एव अम्ल और ग्राही पदार्थो से परहेज करायें।

पथ्य—गर्भपातोत्तर ५ दिन तक अन्न-जल के स्थान मे केवल उपरिलिखित काढा पिलाते रहें और अन्न-जल सर्वथा वर्जित करा देवें। पॉचवें-छठे दिन ९ दाने मुनक्का वीज निकाल कर और अग्नि पर सेंक कर आहारस्वरूप खिलाये। सातवे दिन समूचा मोठ जल मे पकाकर उसका पानी (यूष) पिलायें। तदुपरान्त धीरे-धीरे मोठ वा मूँग की दाल का पानी (यूष) या वकरी के मास का शूरवा चपाती भिगो कर देवे। जल के स्थान मे अर्क मकोय और अर्क सौंफ मिला कर पिलायें। चालीस दिन के पश्चात् वल्य आहारौषध आवश्यकतानुसार दे रुग्णा के शारीरिक वल की वृद्धि करें।

———

बालरोगाधिकार (अम्‌राज़ुल् अत्‌फ़ाल) १३

१---तशन्नुज अत्‌फाल

नाम--(अ०) तशन्नुज अत्‌फाल, (स०) शिश्वाक्षेप, (अ०) इन्फॅन्टाइल कन्वल्शन (Infantile Convulsion)।

हेतु--सामान्य दौर्बल्य, मलवद्धता, अजीर्ण, उदराध्मान, उदरशूल, दन्तोद्‌भेद, ज्वरारम्भ आदि।

निदान और लक्षण--आक्षेप के पूर्व शिशु की पुतलियाँ समानान्तर नही रहती अर्थात् उनमे भैंगापन हो जाता है। शिशु नेत्रगोलक फिराने लगता है। उँगलियो को भीचता है। अँगूठे को बारबार हथेलियो की ओर ले जाता है। ग्रीवा को अकडाकर शिर पीछे की ओर कर लेता है। इसके हस्तपाद मे अनियमित चेष्टाये प्रगट होने लगती हैं और अन्तत आक्षेप--विशिष्ट आवेग हो जाता है। शिशु हस्त-पाद और शिर को जोर-जोर से मारता है। उसके चेहरे का वर्ण पीला एव रक्ताभ हो जाता है। ओष्ठ नीले हो जाते हैं और मुट्ठियाँ बन्द हो जाती हैं। अँगूठा उँगलियो के नीचे हो जाता है। पाँव का अँगूठा भीतर फिर जाता है। एक-दो मिनट के पश्चात् यह आवेग दूर हो जाता है या न्यूनाधिक अन्तर से बारबार होता है।

चिकित्सा--मलावरोध हो तो ग्लीसरीन की बत्ती या साबून के फलवर्ति आदि के द्वारा उसका निवारण करे। खमीरा गावजबान अबरी जदवार ऊद सलीबवाला आयु के अनुसार एक माशा अर्क गावजबान के साथ देवे या निम्नलिखित योग का सेवन करायें--कस्तूरी, हीग, प्रत्येक एक रत्ती, मधु २ माशा--प्रथम दोनो ओषधियो को पीस कर मधु मे मिला कर दिन मे तीन-चार बार चटाये।

२---उम्मुस्सिब्यान

नाम--(अ०) उम्मुस्सिब्यान, सरअ अत्‌फाल, (उ०) बच्चो की मृगी, (स०) बालापस्मार, उल्वक, (अ०) इन्फॅन्टाइल एपी लेप्सी (Infantile Epilepsy)।

वर्णन और हेतु--इसके हेतु भी लगभग वे ही हैं जो तशन्नुज अत्‌फाल के हैं। क्वचित् इसका हेतु मस्तिष्क विकार होता है। श्लैष्मिक द्रवातिरेक के कारण तथा खान-पान के असयम से साधारणतया स्तन्यपायी एव अल्पायु शिशुओ को

यह रोग होता है। परन्तु कभी स्तन्यत्याग के अनन्तर भी कतिपय शिशुओ को यह रोग हो जाता हैं। कब्ज, किसी गुरु आहार का सेवन, दन्तोद्भेद और उदर कृमि इस रोग के हेतु है।

लक्षण—आवेग के समय शिशु के हस्त-पाद मे आक्षेप होता है। नेत्रगोलक ऊपर को चढ जाते हैं और शिशु सज्ञाशून्य हो जाता है। इसके लक्षण भी लगभग तशन्नुज अतफाल के समान हैं। अन्तर केवल यह है कि इसमे आवेग के आरम्भ मे शिशु साधारणतया चिल्ला कर मूर्च्छित हो जाता है और आवेग के अन्त मे दीर्घ श्वास लेकर उसके मुख से झाग आते हैं।

चिकित्सा—आक्षेपवत् उपचार करें अथवा निम्नलिखित योगो मे से किसी एकका व्यवहार करायें—(१) कुदुर, एलुआ, जुदबेदस्तर प्रत्येक १ माशा कूट-पीस कर मुद्गप्रमाण की गोलियाँ बनाये। इसमे से सवेरे-शाम या केवल एक बार दिन मे एक गोली माता के दूध मे घोलकर पिला दिया करें। (२) जाय-फल, जावित्री, हीग, एलुआ सकोतरी प्रत्येक ६ माशा, केसर ३ माशा-जल के साथ महीन पीस कर राई के बराबर गोलियाँ बना कर सवेरे-शाम एक-एक गोली माता के दूध मे घिस कर देवें। नर व मादा ऊद सलीब नीले डोरे मे बाँध कर शिशु के गले मे तावीज की भाँति लकटाना या जमुर्रद गले मे लटकाना भी लाभ-कारी है। फादजहर हैवानी माता के दूध मे घिस कर अथवा मृतक के शिर की हड्डी घिस कर शिशु को पिलाने से बालापस्मार प्रभावत दूर हो जाता है। जिन ललनाओ के शिशु बालापस्मार मे नष्ट हो जाते हो उनको गर्भधारण के तीसरे महीने से सातवें महीने तक माजून हमल अबरी ५ माशा प्रत्येक मास मे बीस दिन तक सेवन कराने से, शिशु उक्त व्याधि से सुरक्षित रहता है।

वक्तव्य—इस रोग के आवेग के समय शिशु के नेत्र गोलक के ऊपर हाथ रख लेना चाहिये। कभी-कभी परिचारको की असावधानी से इस रोग के कारण शिशु भेंगे हो जाते हैं, ओपधियो की उपरिलिखित मात्रा स्तनपायी शिशु के लिये है। अधिक आयु के बालक को उनकी आयु के अनुसार द्विगुण औपधि देनी चाहिये।

अपथ्य—यदि शिशु स्तनपायी हो तो स्तन्यधात्री को उत्तम आहार देना चाहिये और आवलेदजनक पदार्थ चावल प्रभृति एव सरअ (मृगी) के प्रकरण मे लिखित पदार्थो से परहेज कराये। यदि बालक सयाना हो तो उसके खान-पान तथा अन्यान्य उपायो मे सावधानी रखे।

पथ्य—स्तन्यधात्री को लघु, शीघ्रपाकी आहार देना चाहिये। बकरी का शूरवा चपाती के साथ या मुर्गे का शूरवा, मूँग या अरहर की भुनी हुई दाल और पक्षियो के मास का शूरवा आदि देवे। बालक यदि सयाना हो और

खाता-पीता हो तो ये ही पदार्थ भूख से कम एव सावधानीपूर्वक शिशु को देना चाहिये।

३---सुआलुस्सिब्यान

नाम--(अ०) सुआलुस्सिब्यान, (उ०) वच्चो की खाँसी, (स०) वालकास, (अ०) इन्फॉन्टाइल ब्राङ्काइटिस (Infantile Bronchitis)।

हेतु--शीत लगना, प्रसेक एव प्रतिश्याय, दन्तोद्भेद, खसरा, चेचक, काली-खाँसी।

चिकित्सा--साधारण खाँसी के लिए ४ तोला अर्क गावजबान मे ६ माशा लऊक सपिस्ताँ पकाकर दो-दो घटे पश्चात् एक-एक चम्मच कुनकुना गरम पिलाते हैं और गुलबनफ्शा ७॥ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, गावजवान ५ माशा पानी मे उबाल-छान कर २ तोला शर्बत वनफ्शा मिला कर शिशु की माता को पिलाये और इसमे दो-तीन चम्मच औषधि शिशु को भी पिला दिया करें। यदि सीना (वक्ष) मे कफ सचित हो जाय और श्वास के साथ शब्द करता हो तो गावजबान और गुलगावजवान ३-३ माशा, उन्नाव ५ दाना, मिश्री एक तोला सबको जल मे उबाल-छान कर शिशु और उसकी माता दोनो को पिलाये। शर्बत एजाज ६ माशा गरम करके थोडा-थोडा शिशु को चटायें।

यदि मलावरोध हो तो उपर्युक्त योग मे एक तोला तरजवीन घोलकर पिलाये या एरण्डतैल मधु मे मिला कर पिलायें। सोठ और काकडासीगी १-१ माशा भृष्ट करके वारीक पीस कर ६ माशा मधु मे मिला कर चटाने से भी शिशुओ के कास मे उपकार होता है। गुलरोगन या रोगन बबूना या कैरूनी आर्दकरस्ना शिशु के वक्ष (सीना) पर नरम हाथ से मर्दन करके ऊपर से रूई गरम करके वाँध देवें। शेष खाँसी के प्रकरण मे उल्लिखित उपक्रम करें।

४---डब्बए अत्फाल

नाम--(अ०) डब्बए अत्फाल, (उ०) पसली चलना, (स०) वाल वायुप्रणालिका शोथ, बाल श्वसनकज्वर, (अ०) प्राइमरी ब्राङ्को न्यूमोनिया (Primary Broncho-Pneumonia)।

यह एक प्रकार का श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया) हे जो साधारणतया शिशुओ को होता है।

हेतु—वालकासवत् ।

लक्षण—प्रारम्भ मे साधारण खॉसी एव ज्वर होता है । पश्चात् ज्वर तीव्र हो जाता हे । किंतु ज्वर एक समान नही रहता । कभी कम और कभी अधिक होता रहता है । खॉसी सूखी होती है । कफ निकलता भी हे तो कई वार खॉसने के पश्चात् अत्यल्पप्रमाण मे, खॉसी वारम्वार उठती हे । शिशु अत्यन्त दुर्वल एव निढाल (अवसादग्रस्त) हो जाता है । कभी तीव्र कष्ट से सज्ञानाश की अवस्था उत्पन्न हो जाती है ।

चिकित्सा—शिशु को निर्वात गरम कमरे मे कोमल शय्या पर लेटायें और गुलवनफ्शा १ माशा, उन्नाव १ दाना, लिसोढा ३ दाना, गावजवान ३ माशा जल मे पका-छान कर ६ माशा खमीरा वनफ्शा मिला कर पिलाये । यदि तृष्णा अधिक हो तो इसी योग मे १ माशा काहू के बीज का शीरा और मिलाये और कैरूती आर्द करस्ना कुनकुना गरम करके सीना (वक्ष) पर मर्दन करें । ६ माशा राई और २ तोला अलसी यवकुट करके एक स्वच्छ पोटली मे बॉध कर कुनकुना गरम कर के इससे टकोर करें । तृष्णा निवारण के लिये अर्क गावजवान कुनकुना गरम करके थोडा-थोडा पिलायें । शेष न्यूमोनिया (जातुनिया) के प्रकरण मे वर्णित उपक्रम करें ।

५—उताश अत्फाल

नाम—(अ०) वरम आशिय दिमाग तिफ्ला न; (उ०) उताश अत्फाल, (अ०) इन्फन्टाइल मेनिन्जाइटिस (Infantile Meningitis) ।

वर्णन-लक्षणादि—वस्तुत यह एक प्रकार का सरसाम और अत्यन्त कष्टदायक रोग है जिससे प्राय शिशु प्रति वर्ष प्राण गँवाया करते है । साधारणतया इसको 'प्यास' के नाम से अभिहित किया जाता है । इसमे शिशु को अत्यन्त व्यग्रता एव तीव्र तृष्णा लगती है । वह शिर धुनता है, निद्रा नही आती । झपकी (गुनूदगी) आती भी है तो तुरन्त चौक कर उठ-बैठता है । ज्वर तीव्र होता है, शिर शूल होता है । शिशु चिड-चिडा स्वभाव का हो जाता है और वह वारवार रुदन करता है । हस्तपाद मे आक्षेप और कभी मूर्च्छा की-सी दशा हो जाती है । कभी-कभी दस्त (विरेक) भी प्रचुरता से आते है । यह रोग साधारणतया वालको को ग्रीष्मकाल मे लू लगने या अधिक काल तक धूप मे रहने और दन्तोद्भेद काल मे मस्तिष्क की झिल्लियो मे शोथ उत्पन्न होकर हुआ करता है । परतु इस रोग का सवसे महत्त्व का कारण जो साधारणतया पाया जाता है, यह है कि प्राय. कतिपय ना समझ मातायें सहवासोत्तर विना खाये शिशु को तुरत दूध पिला

देती है जिससे यह रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रथमत स्तन्यपान काल मे वालरक्षा की दृष्टि से स्त्री समागम से यावच्छक्य परहेज करें, क्योकि इस क्रिया से साधारणत दूध दूषित होकर शिशु के लिये साघातिक विष हो जाता है। फिर भी उक्त क्रिया के अनन्तर पान या कुछ और वस्तु कलेवा की भाँति खाकर कम से कम एक घटे वाद शिशु को दूध पिलाना चाहिये।

चिकित्सा—प्रथम १ माशा वर्ग गावजवान का लुआव, १ दाना उन्नाव का शीरा, १ माशा काहू के बीज ५ तोला अर्क गावजवान मे निकाल कर ६ माशा शर्वत नीलूफर मिलाकर थोडा - थोडा पिलाते रहे और ६ माशा सिरका दो तोला गुलरोगन मिला कर उसमे कपडा तर कर के शिर के ऊपर रखें। यदि शिर पर वाल हो तो उनको बनवा दिया जाय। कपडा वारवार वदलते रहे। यदि मलावरोध हो तो ६ माशा एरण्डतैल मिला कर चटाये। तरजबीन, शीरखिस्त १-१ तोला ५ तोले अर्क गावजवान मे घोल कर कुनकुना गरम करके पिलाये। यदि आवश्यकता हो तो शेष उपचार सरसामवत् करें।

६—शहीका

नाम—(अ०) शहीक, (उ०) काली खाँसी, (स०) कुक्कुर कास, (अ०) हूपिग कफ (Hooping Cough), परटस्सिस (Pertussis)।

वर्णन—इस प्रकार की खाँसी प्राय २ वर्ष से ८ वर्ष तक के बालको को हो जाया करती है, इसकी गणना औपसर्गिक एव मरक वा जनपदोद्ध्वसक रोगो मे की जाती है। बालक को एक वार यह खाँसी होने पर पुन दोवारा नहीं होती।

हेतु—वायु प्रणालिकाओ मे सान्द्र कफ के चिमट जाने और साधारण खाँसी की चिकित्सा मे असावधानी करने से अथवा इस रोग के उपसर्ग होने या खाने-पीने के पात्रो एव अन्यान्य विभिन्न प्रकार से औपसर्गिक रोग की भाँति यह व्याधि हो जाती है।

लक्षण—खासी के आवेग (दौरा) से पूर्व कण्ठ के भीतर सरसराहट या सक्षोभ प्रतीत होता है। पुन खाँसी उठती है। प्रसेकपूर्वक सूक्ष्म ज्वर होता है। खाँसते-खाँसते रोगी वेदम हो जाता है। चेहरा लाल या नीला पड जाता है। नेत्र उभर आते हैं। कभी मल-मूत्र हो जाता है। रोग की तीव्रता मे कभी कान या नाक से रक्त निकल आता है। खाँसते-खाँसते फुफ्फुस रोगी मे वायु निकलकर मुख का वर्ण नीला या काला हो जाता है। जव वलपूर्वक

श्वास भीतर खीचता है तब मुर्गे की बॉग या सीटी के शब्द जैसा शब्द निकलता है। प्राय वमन हो जाता है जिसमे श्वेत कफ सरीखा पिच्छिल द्रव उत्सर्गित होकर आवेग शान्त हो जाता है। साधारण रोग मे रोग का आवेग शान्त होने के उपरान्त रोगी भला-चगा मालूम होता है। आवेग या दौरे की कोई सख्या नियत नही होती। साधारण रोग मे २-३ बार खॉसी उठती है। तीव्र रोग मे एक घटे मे तीन-चार बार और दिन की अपेक्षया रात्रि मे खॉसी का जोर अधिक होता है।

चिकित्सा—जब प्रसेक के साथ हलका ज्वर हो तो बालक को २ माशा गुलबनफ्शा, १ माशा गावजबान, २ माशा बिहीदाना, २ माशा खुब्बाजी के बीज, ३ दाना उन्नाब, ५ दाना लिसोढा पानी मे पका-छानकर १ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर प्रात.-सायकाल पिलायें। रोग निवृत्त न हो तो गावजबान, मुलेठी, सौफ की जड २-२ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना, लिसोढा, २ दाना, सौफ २ माशा पानी मे उबाल-छान कर १ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर सबेरे पिला दिया करें। शाम को ६ माशा लऊक मोतदिल और ६ माशा लऊक सपिस्तॉ ६ तोला अर्क गावजबान मे काढा करके कुनकुना गरम पिलाये तथा २ तोला गेहूँ, २॥ तोला गुड और १ तोला सेधा नमक पात्र मे रख कर उसका मुँह बन्द करके दस सेर उपलो मे फूँक लेवे। इसमे से सबेरे-शाम और दोपहर १-१ माशा चटाये। छोटे शिशुओ को १ रत्ती माता के दूध मे घोलकर पिलायें। आयु के अनुसार औषध-परिमाण घटा-बढा लेना चाहिये। क्योकि ये परिमाण छोटे शिशुओ के लिये लिखे गये है। निम्न योग भी इस रोग मे लाभकारी है—

खुरासानी अजवायन, केसर, १-१ माशा, अफीम ४ रत्ती, काहू के बीज, बबूल का गोद, छिली हुई मुलेठी, कुदुर, कतीरा, बोल, बिहीदाना ३-३ माशा—समस्त द्रव्यो को पानी मे घोट-पीस कर मुद्ग प्रमाण की गोलियॉ बनायें। इसमे १ गोली आवश्यकता के समय देवे। निम्न क्षारयोग भी लाभकारी है—

खुरासानी अजवायन, अजवायन, सॉभर नमक १-१ तोला—सबको यवकुट करके जल मे मिला कर मिट्टी के सकोरे मे रखकर पॉच सेर उपलो के मध्य रखकर अग्नि देवें। आवश्यकता के समय १ रत्ती यह क्षार शिशु को चटा दिया करे।

अपथ्य—स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, शीतल एव तर पदार्थो से तथा गुड-तेल की पकी वस्तु, कद्दू, ककडी, खीरा, शलगम, गोभी आदि से परहेज करायें।

पथ्य—साधारण बकरी का शूरबा, चपाती, खिचडी, साबूदाना आदि सेवन करायें।

———

७—इसहाल सिब्यान

नाम—(अ०) इसहाल सिब्यान (अत्फाल); (उ०) बच्चो के दस्त, (स०) बालातिसार, शिश्वातिसार, (अ०) इन्फान्टाइल डायरिया (Infantile Diarrhoea) ।

शिशुओ की पाचन-शक्ति दुर्बल होती है। अतएव साधारण असावधानी से भी उन्हें अतिसार एव मलावरोध हो जाता है। उक्त अवस्था मे केवल भोजन की सुव्यवस्था एव सावधानी पर्याप्त होती है। इस पर भी यदि शिशु को दीर्घ काल तक निरन्तर दस्त हो तो इसकी ओर ध्यान देवें। यदि दस्त फटे-फटे एव दुर्गन्धित होते हो तो सौफ और कुसूस के बीज १-१ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का २ दाना पानी मे पीस कर ६ माशा गुलकन्द मिला कर पिलाते रहें और सफूफ चुटकी २-२ रत्ती दूध मे घोल कर दिन मे दो बार चटा दिया करें।

यदि दस्त जल की भॉति पतले और अधिक परिमाण मे होते हो और शिशु अधिक दुर्बल हो जाय तो उन्हें वन्द करने के लिये १-१ माशा सौंफ, छोटी इलायची के दाने और हव्बुल्आस पानी मे पीस-छान कर ६ माशा मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें और हव्व पपीता आधी गोली दूध मे घोलकर पिला दिया करे। यदि दस्त अधिक हो रहे हो और तृष्णा भी हो तो दन्तोद्भेद के प्रकरण मे लिखित उपक्रम करें।

यदि चुरनो (सूत्रकृमि) की शिकायत हो तो रोगन कमीला या रोगन नीम मे रूई का फाहा तर करके उँगली से शिशु के गुदस्थल मे रख दिया करे और शेष दीदान (कृमि) रोग मे लिखित उपचार करें।

सफूफ चुटकी जो शिशुओ के हर प्रकार के अजीर्ण एव अफारा को दूर करता है। यदि दस्त होते हो और मलावरोध हो तो उसको भी दूर करता है। शिशुओ को विशेष कर स्तन्यत्यागकाल मे इ ‍का उपयोग अत्यन्त गुणकारी है।

योग—सौफ, भुना, सुहागा, नौशादर, नरकचूर, वायविडग, शोरा नमक, काला नमक, कचलोन, नमक लाहौरी, नमक ताम, अनीसून, मुलेठी, शुद्ध स्याह जीरा, सफेद जीरा, छोटी एव बडी इलायची के दाने, गुलाव का फूल, चाकसू, सूखा आमला, पीली हड का वकला, काली हड, वहेडे का छिलका—सवको समभाग लेकर चूर्ण प्रस्तुत कर शीशी मे सुरक्षित रखे। इसमे से १-१ चुटकी दिन मे दो-तीन वार शिशु को खिला दिया करें।

दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा या जवाहरवाली ४ रत्ती की मात्रा मे शिशु को माता के दूध मे घोल कर चटाने से पाचन ठीक रहता है और उसे

वल की प्राप्ति होती है। उग्र अतिसार वा अन्यान्य रोगजन्य दौर्वल्य मे आध चावल से एक चावल तक जवाहर मोहरा मधु या शर्वत वनफ्शा मे मिला कर सवेरे-शाम चटाते रहने से भी अति शीघ्र शक्ति लौट आती है।

२ चावल भुना सुहागा शिशु को कभी-कभी दूध मे घोल कर देने से उसका पाचन ठीक रहता है। नवजात शिशु को मधु का सेवन भी अत्यन्त गुणकारी है।

पथ्यापथ्य—केवल अडे की सफेदी का पानी या यवमण्ड या दही का पानी देवें। अतिसार वन्द हो जाने पर क्रमश माता का दूध या अन्य शीघ्रपाकी आहार देवें। भोजन की शुद्धता एव स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखे।

८—नवात इस्नान

नाम—(अ०) नबात इस्नान, (उ०) वच्चो के दॉत निकलना, (स०) दन्तोद्‌भेद, (अ०) टीथिग (Teething), डेन्टिशन (Dentition)।

हेतु—यद्यपि यह स्वाभाविक घटना है, तथापि प्रारम्भ मे दन्तोद्‌भेद के कारण मसूढे छिदने के कष्ट और तीक्ष्ण द्रवो के दूध प्रभृति के साथ मिल कर आमाशय मे जाने के कारण शिशु को बहुधा अतिसार हो जाता है।

लक्षण—साधारणतया छ. या सात मास के शिशुओ को दॉत निकलना आरम्भ होता है। शिशु के लिए यह एक विशेष सावधानी का काल है। अतएव यह आवश्यक है कि दन्तोद्‌भेद-काल मे शिशु की पूर्ण सावधानी रखें, क्योकि तनिक-सी सावधानी के कारण शिशु के प्राणनाश की आशका होती है। प्रारम्भ मे जव दॉत निकलने लगते है तब उसे नाना भॉति के रोग सताते है, जैसे लार वहती है, शिर एव कनपुटियो मे दर्द होने के कारण शिशु वारवार शिर धुनता है, कभी सूक्ष्म ज्वरोष्मा हो जाती है, अधिक तृष्णा लगती है अथवा कभी मलावरोध हो जाता है। कभी दस्त होने लगते है या नेत्र दुखते है। दस्त कभी हरे और कभी गहरे-पीले रग के होते है। शिशु कठिनाई से दूध पीता है तथा अत्यन्त दुर्वल एव अवसादग्रस्त (निढाल) हो जाता है।

चिकित्सा—इस प्रकार के दस्त को रोकने का यत्न न करे। दॉत सरलता से निकलें, इस हेतु मक्खन और शहद मिला कर शिशु के मसूढो पर मलें या पानी मे छुहारा घिसकर मसूढो पर मले। दस्त अधिक होते हो तो जहरमोहरा और वशलोचन २–२ रत्ती यथावश्यक जल एव अर्क गुलाव मे घिसकर ३ माशा सौफ, १ माशा इलायची के दाने, १ माशा हव्वुल्‌आस, ३ तोले अर्क वेदमुश्क और २ तोले अर्क गुलाव मे पीसकर १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाये। लाभ न हो तो उक्त योग मे २ माशा वेलगिरी का शीरा और वढा देवें तथा मिश्री के स्थान मे

१ तोला रुब्ब विही मिलाकर पिलायें। प्यास की तीव्रता मे पीपल की छाल जलाकर उसकी राख पानी मे डाल देवें। यह पानी शिशु को पिलाने से दस्त और प्यास दोनो आराम होते है। इसी प्रकार छोटी इलायची को गरम भूभल मे भुलभुलाकर पानी या अर्क गाजवान मे बुझाकर वह पानी पिलाने या नीवू के बीज पानी मे घिसकर पिलाने अथवा कमल गट्टे के भीतर की हरी पत्ती (जीभी) पानी या अर्क गावजबान मे घिसकर पिलाने से प्यास और दस्त दोनो आराम होते है। प्यास के लिये अर्क गुलाव और अर्क वेदमुश्क बारबार आवश्यकतानुसार पिलायें।

अपथ्य—स्तन्यपायी शिशु की माता को हर प्रकार के गुरु, दीर्घपाकी एव आध्मानकारक आहारसेवन से और अधिक उष्ण वस्तुसेवन, अग्निसेवा और मैथुन से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--शिशु की माता को नरम आहार मूँग की नरम खिचडी या डवल रोटी, दूध या बकरी के शूरवा के साथ भिगोकर या बकरी के शूरबे मे शीतल शाक पकाकर उसमे चपाती भिगोकर भूख से थोडा कम खिलायें। यदि वालक भी थोडा-बहुत भोजन करने लगा हो तो अत्यत सावधानी के साथ जब प्रकृति स्वास्थ्यानुमुख हो तो साबूदाना या दूध के साथ डबल रोटी अल्प परिमाण मे देवे।

———

संधिरोगाधिकार (अम्राजुल् मफ़ासिल) १४

१ (अ०) वजउल् मफासिल; (उ०) जोडो का दर्द, गठिया, (स०) आमवात, सधिवात, (अ०) रयूमाटिज्म (Rheumatism) ।

२ (अ०) वजउल् वरिक, (उ०) सुर्रीन (चूतड) का दर्द, (अ०) कॉक्सल्जिया (Coxalgia) ।

३ (अ०) निक्रिस, (उ०) पॉव के अँगूठे (छोटे जोडो) का दर्द, (स०) वातरक्त, (अ०) गाउट (Gout), पोडाग्रा (Podagra) ।

वर्णन—सधियो मे प्रत्येक सधि (जोड) विभिन्न नामो से अभिधानित की गई है। सुतरा शरीर की समस्त सधिगत वेदना को वजउल् मफासिल या गठिया कहते हैं। इसी प्रकार नितम्ब (सुरीन) गत वेदना को वजउलवरिक और घुटने के जोड के दर्द को वजउर्रुक्बः और टखने या पादागुष्ठगत वेदना को निक्रिस कहते हैं।

हेतु—वर्षा मे भीगने या शीत लगने अथवा वादी एव शीतल-स्निग्ध पदार्थों के अति सेवन से श्लैष्मिक द्रव उत्पन्न होकर सधियो मे प्राप्त होकर अवरुद्ध हो जाते हैं और उनसे वायु उत्पन्न होकर उद्वेष्टन उत्पन्न करता है जिससे कठिन वेदना उत्पन्न हो जाती है। कभी वायु के प्राबल्य से अग अपने स्थान से उखड जाता है। कभी-कभी सूजाक एव फिरग के कारण भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—शरीर की सभी सधियो मे विशेषकर कोहनी, टखना और घुटना आदि मे शोथ एव दर्द हो जाता है। कभी उपर्युक्त सधियो मे से किसी एक स्थान (सधि) पर दर्द हुआ करता है। सधियो मे कठोरता उत्पन्न हो जाती है। शीत एव वर्षा ऋतु मे रोग मे तीव्रता हो जाती है। विकारी सधियो मे द्रव सचित हो जाता है। सधियाँ फूलकर एव शोथयुक्त होकर विकृताग (कुरूप) हो जाती हैं। कभी-कभी वे जुडकर निष्क्रिय हो जाती हैं। निक्रिस का दर्द बहुधा दाहिने पैर के अँगूठे की सधि मे और कभी उभय पैरो के अँगूठो की सधियो मे और कभी एडी और टखना की सधि मे इतना तीव्र होता है कि रोगी दर्द के मारे बेचैन हो जाता है। रुग्ण सधि को स्पर्श करने या चेष्टा करने (हिलाने) से तीव्र वेदना होने लगती है। कभी-कभी कम्प के साथ हलका ज्वर और पचन विकार भी हो जाता है। कभी हृदय की धडकन बढ जाती है। शिर मे तीव्र शूल होता है। चक्कर आते हैं। वेदना की तीव्रता के कारण रात्रि मे निद्रा नही आती। स्वभाव चिडचिडा हो

जाता है। हस्त-पाद की उँगलियाँ खिचती या फडकती है और उनमे सुरसुराहट प्रतीत होती है।

चिकित्सा—प्रारभ मे कुछ दिन ७ माशा माजून सूरजान खिलाकर ऊपर से ३-३ माशा गोखरू, खरबूजा के बीज और खीरा -ककडी के बीज पानी मे पीस कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलाये। दर्द के स्थान पर यथावश्यक रोगन हिना कुनकुना गरम करके मर्दन करें। यदि प्रारभ मे इस उपाय से लाभ न हो तो १ तोला सोआ के बीज जल मे उबालकर सिकजबीन मिलाकर गरम-गरम पिलाये जिससे वमन हो जाय। आरभ मे वमन हो जाने से प्राय यह रोग आराम हो जाता है। यदि सशोधन अपेक्षित हो तो प्रथम यह पाचन औषधि (मुजिज) नौ दिन तक पिलायें—मीठा सूरजान ५ माशा, गुलबनफ्शा और चिरायता ७-७ माशा, उन्नाव ५ दाना, सूखा मकोय, सौफ की जड, शाहतरा, अफ्तीमून विलायती और बस्फाइज फुस्तुकी प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सौंफ ७ माशा सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोये और प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकद या ४ तोला तरजबीन मिला कर पिला दिया करे। दसवे दिन इस योग मे ७-७ माशा गुलाब का फूल और सनाय मक्की और मिलाकर भिगोये और प्रात मल-छानकर ५ तोला अमलतास का गूदा, तरजबीन ४ तोला, गुलकद ४ तोला और बूरा (शकरसुर्ख) ४ तोला तथा ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें।

यदि उक्त विरेचन से दोष का सम्यक् निर्हरण न हो, तो दूसरे और तीसरे विरेचन मे हब्ब इयारिज ९ माशा पूर्वोक्त विधि के अनुसार उपयोग कराये या हब्ब सूरजान ५ गोली रात्रि मे खिलाकर सबेरे विरेचन औषधि पिलाये। प्रत्येक विरेचन के बीच एक-दो दिन का अन्तर देकर दूसरा विरेचन देवे। दो विरेचनो के अन्तरिम काल मे पूर्वलिखित ठढाई (तबरीद) का योग सेवन करायें। विरेचनो से खाली होने पर माजून उश्बा ७ माशा, या माजून इजाराकी ३ माशा या माजून सूरजान शीरी ७ माशा १० तोला अर्क उश्बा और २ तोला मिश्री के साथ देवे। वेदना की तीव्रता की दशा मे सूखे मेहदी के पत्र १ तोला और देशी साबुन १ तोला यथावश्यक सिरका मे पीसकर अग्नि के ऊपर रखे। जब मरहम के समान हो जाय तब कुनकुना गरम सधियो पर लेप करके रूई या रेंड का पत्ता रखकर बाँध दिया करें या रोगन कुचला, या रोगन गुल आख और रोगन कुश्त या रोगन सुर्ख मे से किसी रोगन (तेल) मे ५ बूँद रोगन अजीब मिलाकर आवश्यकतानुसार गरम करके मर्दन करे।

यदि आतशक या सूजाक के कारण यह रोग हो तो उन रोगो की यथोचित चिकित्सा करें। दोष सशोधन के लिये यथाविधि मुजिज (पाचन) और

विरेचन औषधि सेवन कराने के पश्चात् बलबुद्धि के लिये दवाउल्‌मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या माजून चोवचीनी वनुस्खये खास ५ माशा या खमीरा आवरेशम हकीम इर्शादवाला ५ माशा कुछ दिन तक सवेरे-सवेरे खिलाये और हब्ब आसाब एक गोली या हब्ब खास एक गोली भोजनोत्तर खिला दिया करे। सायकाल २ चावल जौहर मुनक्का, एक मुनक्का की गुठली निकालकर उसके भीतर बन्द करके पानी के घूँट के साथ विना चावे कण्ठ से उतार (निगल) लिया करे।

अपथ्य—समस्त बादी उत्पन्न करनेवाले एव शीतल पदार्थ कद्दू, पालक, भिडी, अरवी, आलू और अति दूध-चावल, वर्फ और मक्खन आदि का अति सेवन हानिकारक है।

पथ्य—मुर्गी के बच्चे और तीतर-बटेर का भृष्ट मास गरम मसाला मिलाकर खिलाये। मूँग-अरहर की दाल, चपाती, चाय, अडे की जर्दी, विस्कुट, अजीर, एव गुठली निकाला हुआ मुनक्का खा सकते हैं।

१—इर्कुन्नसाऽ

नाम—(अ०) इर्कुन्नसाऽ, (उ०) लँगडी का दर्द, (स०) गृध्रसी वात, गृध्रसी, (अ०) स्याटिका (Sciatica)।

वर्णन—यह एक प्रसिद्ध दर्द है जो चूतड के जोड (नितम्बसधि) से नीचे पॉव तक उतरा करता है और कभी-कभी उँगलियो तक पहुँच जाता है। यदि दोष अल्प होता है तो केवल घुटने या पिण्डली या इससे भी ऊपर तक सीमित रहता है। यूनानी वैद्यो के मत से नसाऽ नामक (गृध्रसी) नाडी मे दोष के अधिष्ठान करने से यह रोग होता है।

हेतु—वज्उल्‌मफासिल (सधिवात) और इस रोग के हेतु लगभग एक ही से होते हैं। किन्तु प्राय कफ-दोष उक्त नाडी मे अवस्थित होकर वेदना का हेतु होता है। कभी वायु के आधिक्य से यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—रोग से पूर्व वायु एव कफप्रकोपक हेतुओ की विद्यमानता रहती है। वेदना नितम्बसधि (चूतड की सधि) से आरम्भ होकर नीचे एक पैर की ओर उतरती है। कभी-कभी यह पॉव की उँगलियो तक पहुँचती है।

चिकित्सा—वज्उल् मफासिल अर्थात् गठिया मे लिखित उपचार इस रोग मे भी लाभकारी है।

जब इर्कुन्नसाऽ केवल वायु (रियाह) के कारण होता है तब दर्द दौरे के साथ हुआ करता है। उक्त अवस्था मे सोठ ७ माशा, कालीमिर्च ५ दाना जल मे

उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर चाय की भाँति कुनकुना गरम करके पिलाने से लाभ होता है।

शेष समस्त उपाय वे ही हैं जिनका विवरण वज्उल्मफासिल के प्रकरण मे किया गया है। बलवृद्धि के लिये विरेचनोत्तर गोदती भस्म एक टिकिया या मण्डूर भस्म एक टिकिया ७ माशा माजून फलासफा या ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे मिलाकर खिलायें और हब्ब सूरजान ५ गोली रात्रि मे सोते समय कुछ दिन खिला देने से भी बडा लाभ होता है। यदि कोई उपाय सफल न हो तो किसी कुशल जर्राह (सर्जन) से गृध्रसी नाडी (रग इर्कुन्नसाऽ) का पता लगाकर दहन कर्म करा देवें। इससे प्राय लाभ हो जाता है।

अपथ्य—वायुकारक एव कफकारक शीतल एव तर पदार्थो से परहेज अनिवार्य है। चावल, दूध, दही, कद्दू, भिडी, खरबूजा, तरबूज, पालक आदि अम्ल पदार्थ आडू, कमरख, नारगी आदि अहितकर होते हैं। बर्फ का शीतल जल पीने और शीत जल से स्नान करने से भी परहेज करना चाहिये।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, तीतर, मुर्गे का भुना हुआ मास, मूँग या अरहर की दाल, अडो की जर्दी आदि अभ्यासानुकूल देवे।

२—दाउलफील

नाम—(अ०) दाउल्फील, (उ०) फीलपा, (स०) श्लीपद; (हि०) हाथीपॉव, (अ०) एलीफन्टायसिस (Elephantiasis)।

वर्णन—इस रोग मे रोगी का पैर फूलकर हाथी के पैर के सदृश हो जाता है।

हेतु—सौदा, कफ या रक्त इन दोषो के पैर की ओर प्रचुरता से अवतीर्ण होने से यह रोग प्रगट होता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय जलवायु, साद्र एव सौदाजनक आहार का अति सेवन भी इस रोग की उत्पत्ति का हेतुभूत होता है।

लक्षण—यदि रोग का हेतु साद्र, कृष्ण एव विदग्ध रक्त हो तो स्पर्श मे उष्ण प्रतीत होता है। प्रारभ मे पैर का रग लाल होता है जो क्रमश स्याही मायल नीला (कृष्णाभ नील) हो जाता है। पैर किसी भाँति फटा-फटा रहता है। यदि साद्र कफ से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो पिडली एव पैर ललाई एव उष्णता के बिना स्थूल (मोटे) होते हैं और बहुधा शीतस्पर्श प्रतीत होते हैं और फटने नही पाते।

चिकित्सासूत्र—जिस पैर मे यह रोग हो प्रारभ मे उसी ओर के हाथ की बासलीक शिरा का वेधन करें और पीने के लिये जोशाँदा अफसतीन के साथ माउज्जुब्न पिलाकर कई बार विरेचन देकर सौदा का निर्हरण करे । जव शरीर साद्र दोष से शुद्ध हो जाय, तव घुटने के पीछेवाली शिरा का वेधन (फस्द) करें और पिडली पर सिगी लगाये । कफ और पित्तजनक आहार त्याग देवें। पिडलियो पर वलवान् लेप लगाये। चलना-फिरना और सभी काम-धधा वन्द कर देवें। श्लैष्मिक दोष की दशा मे वमन कराये और कफकारक भोजन सेवन नही करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आवश्यकतानुसार और वलानुसार (१) वासलीक का शिरावेध करने से दवाली (शिराकुटिलता) और श्लीपद आराम हो जाते हैं। (२) सात या आठ दाना रेडी की गुद्दी (मग्ज) शुद्ध मधु के साथ पीने और लेप लगाने से अद्भुत लाभ होता है। (३) इसी प्रकार सनाय मक्की ५। माशा उभय प्रकार प्रयोग करने से लाभ होता हे। ये रोग यदि उष्णता से हो तो (४) ६॥ माशा वारतग के पीने ओर लगाने से लाभ होता है। (५) इसी प्रकार माउज्जुब्न का मलना भी उक्त अवस्था मे लाभकारी होता है। अन्द्रूमाखुस के मत से (६) २॥। सकबीनज का आतरिक उपयोग परम गुणकारी हे। इसी प्रकार (७) (८) ६ माशा काली तुलसी की शीरा और हरमल के बीज ६ माशा पीना और लेप लगाना और (९) ३॥ माशे इन्द्रायन के गूदे का काढा पीना लाभकारी है।

संसृष्टद्रव्योपचार—(१) सफूफ लाजवर्द या (२) हब्ब लाजवर्द (३) इयारिज फैकरा के साथ मिलाकर देने से लाभ होता है। इयारिज फैकरा मे (४) हज्र अरमनी और (५) लाजवर्द मग्सूल मिलाकर (६) मत्वूख अफसतीन के साथ उपयोग करने से लाभ होता है।

सिद्धयोग—(१) हब्ब अफसंतीन—अफ्तीमून विलायती, बेख लुफ्फाह, गुलबनफ्शा प्रत्येक १ तोला, इन्द्रायन का गूदा, कडवे वादाम का मग्ज, सकमूनिया मुशव्वी प्रत्येक ६ माशा, लाजवर्द मग्सूल, अनविध मोती, प्रवाल प्रत्येक ३ माशा सबको कूट-पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ वनाये और ९ माशा सिकजवीन बजूरी के साथ सप्ताह मे दो वार देवें। श्लीपद और शिराकुटिलता मे लाभकारी है।

(२) श्लीपदनाशक औषधि—खनिज नौशादर १ तोला २० तोले अर्क सौंफ मे घोलकर एक बोतल मे रखे। इसमे से सवेरे-शाम थोडा-थोडा लेकर मर्दन करते रहे जिससे शोषित हो जाय। शोथ के ऊपर दृढ पट्टी बाँधे जिसमे दोष नीचे न उतरे।

———

३--दवाली

नाम--(अ०) (द (दु) वाली), (उ०) पिंडली की रगो का फूल जाना, (स०) शिराकुटिलता, (अ०) वेरिकोज वेन्स (VaricoseVeins)।

वर्णन--इस रोग मे एक वा दोनो पिडलियो की शिरायें फूल जाती है और उनमे स्थान-स्थान पर गोहे उत्पन्न हो जाते है।

हेतु—यह रोग अधिकतर सौदा के उतरने से प्रगट हुआ करता है और साधारणतया श्रमिको, दूतो, अधिक पैदल यात्रा करनेवालो और भारवहन करने वालो को हुआ करता है।

लक्षण--पिडली के ऊपर मोटी-मोटी शिराये लक्षित होती है जिनका रग प्राय हरियाली लिये हुए होता है। फूली हुई शिराओ मे स्थान-स्थान पर ग्रन्थियाँ-सी उत्पन्न हो जाती है।

चिकित्सा--इस रोग की चिकित्सा ठीक दाउल्फील (श्लीपद) के समान है। अस्तु, वहाँ अवलोकन करें। इसमे कफ एव सौदा का शोधन करने के उपरान्त शिरावेध करे। गरिष्ठ एव सौदाजनक आहार का परित्याग कर देवें। अधिक भ्रमण बन्द कर देवे और पिडली पर नीचे से ऊपर तक पट्टी बाँध देवे।

त्वग्रोगाधिकार (अम्राज़ुल् जिल्द) १५

१--शिरा

नाम--(अ०) शिरा, (उ०) पित्ती उछलना, छपाकी, (स०) शीतपित्त, (अ०) अर्टिकेरिया (Urticaria)।

इस रोग मे शरीर पर गोल-गोल लाल धब्बे (चकत्ते) पड जाते है।

हेतु--इस रोग का प्रादुर्भाव प्राय अजीर्ण के कारण होता है। भूख से अधिक भोजन कर लेने अथवा किसी गुरु एव दीर्घपाकी वस्तु के सेवन या किसी तीक्ष्ण एव उष्ण पदार्थ, जैसे--बैंगन या आम आदि अथवा अति मास-सेवन से भी कभी-कभी यह व्याधि हो जाती है। पुरुषो की अपेक्षया स्त्रियो को और वृद्धो की अपेक्षा युवाओ को यह व्याधि अधिक होती है। शिशुओ को दन्तोद्भेद-काल मे भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--कभी तो यह रोग आवेगपूर्वक होता है और कभी अकस्मात् सम्पूर्ण शरीर पर गोल-गोल ललाई लिये धब्बे (ददोडे या चकत्ते) पड जाते है जिनमे दाह एव तीव्र कण्डू होता है। पुन वह शीघ्र लीन भी हो जाते है। साधारणतया इसके साथ हलका ज्वर भी हो जाता है।

चिकित्सा--यदि अजीर्ण एव अति भोजन से यह रोग हो तो आध सेर गरम पानी मे १ तोला नमक मिलाकर रोगी को पिलाये जिसमे दो-चार वमन होकर उदर शुद्ध हो जाय। तदुपरान्त ४ तोला एरण्ड तैल १० तोला अर्क गुलाब मे २ तोला मिश्री मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलायें या गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सौफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा, सौंफ का अर्क ६ तोला और अर्क गुलाब ६ तोला मे पीसकर ४ तोला सिकजबीन मिलाकर पिलाये और फिटकिरी एव गेरु समभाग अर्क गुलाब मे पीस कर शरीर पर मले। जब ददोडो मे अधिक ललाई एव सूजन हो तथा जलन मालूम होती हो तो उक्त अवस्था मे रक्तशोधक औषधियो का उपयोग आरम्भ करायें, जैसे--माजून उश्बा १ तोला खिलाकर १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून मे ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। विरेचनार्थ गुलबनफशा, पीली हड और सनाय मक्की प्रत्येक ७ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, इमली ४ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, शीरखिश्त २ तोला, तरजबीन ४ तोला, अर्क सौंफ और अर्क गावजबान प्रत्येक १० तोला मे भिगो-छानकर ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें। शुद्धि के उपरान्त दाहशमनार्थ कुर्स काफूर

४॥ माशा १२ तोला अर्क कासनी और ४ तोले मीठे अनार के शर्बत के साथ खिलाये और ५ तोला अर्क गुलाब मे २ माशा फिटकिरी और १ तोला गुलरोगन मिलाकर शरीर पर मर्दन करें अथवा १० तोले अर्क गुलाव मे १ तोला रोगन सदल मिलाकर मले।

स्तनपायी शिशु को यह रोग हो तो उसकी माता और शिशु दोनो के आहार मे सावधानी रखे तथा पाचन का ध्यान रखे। माता और शिशु दोनो को यथाविधि उपयुक्त विरेचन देवें।

अपथ्य--यदि किसी विशिष्ट औषधाहार के सेवन से यह रोग हुआ हो तो उसका परित्याग कराये। सभव हो तो एक-दो समय का उपवास कराये (अनाहार रखे)। अति उष्ण, तीक्ष्ण एव नमकीन वस्तु से, मछली, आम, बैंगन, लाल मिर्च आदि के अति सेवन से तथा गुरु पदार्थ के सेवन से परहेज कराये।

पथ्य--रोग निवृत्त होने पर साधारण आहार वकरी का शूरबा चपाती के साथ देवे। किन्तु भूख से किंचित् कम खिलायें। पुन धीरे-धीरे शीतल शाक और अन्य उपयोगी पदार्थ सेवन करायें।

२--जर्ब व हिक्का

नाम--(अ०) जर्ब, हिक्क, (उ०) खारिश या खुजली, सादा खारिश या सूखी खुजली, (स०) खर्जू, कण्डू, (अ०) स्केबीज (Scabies), प्रूराइगो (Prurigo)।

इस रोग के ये दो भेद होते है--(१) शुष्क और (२) तर। शुष्क खुजली का उत्पादक दोष केवल रूक्ष सौदा है और तर खुजली मे श्लैष्मिक द्रव भी सम्मिलित होते हैं। यह व्याधि अधिकतया रक्त के विदग्धीभूत होने और सौदा के प्राबल्य से उत्पन्न होती है।

हेतु--कभी मधुर वस्तुओ एव गुड, तैल आदि के अति सेवन से रक्त मे दाह (इह्तिराक) होकर, कभी उत्तम पौष्टिक आहार के अभाव से, और पाचन-विकार, मलिन रहन-सहन और स्त्रियो के ऋतुदोष से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--तर खुजली मे शरीर पर सूक्ष्म चट्टे या दाने हो जाते हैं जिनमे पूय भरा रहता है और उनमे अत्यन्त दाह एव कष्ट होता है। शुष्क खुजली मे छोटी-छोटी लाल फुसियाँ सारे शरीर से इतस्तत विकीर्ण रूप मे प्रगट हो जाती हैं। इनमे इतनी खुजली होती हे कि रोगी को खुजलाते-खुजलाते चैन नहीं आता।

त्वचा रूक्ष एव खुरदरी हो जाती है। तर खुजली प्राय पिडलियो से प्रारभ हुआ करती है।

चिकित्सा—उक्त अवस्था मे शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, काली हड ७ माशा, यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो लाल चदन ७ माशा और शीत ऋतु हो तो उश्बा मगरबी ७ माशा और मिलाकर रात्रि मे गरम पानी से भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर कुछ दिन पिलाये और निगदबावरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना सवेरे गरम पानी मे भिगोकर सायकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर कुछ दिन पिलाय और पन्द्रह दिन तक प्रात कालीन योग मुजिज के रूप मे पिलाकर अर्क मत्बूख हफ्त रोजा का विरेचन देवे।

प्रारभ मे १ तोला रोगन चमेली, अर्क गुलाब ५ तोला एव कागजी नीबू का रस १ तोला परस्पर मिलाकर शरीर पर मर्दन करें या आमलासार गधक, कपूर, नीलाथोथा, मुरदासग और कमीला प्रत्येक ३ माशा पानी मे पीसकर इक्कीस वार पानी वे धोये हुए गाय के घी मे मिलाकर शरीर पर मल लिया करें और घण्टा भर धूप मे बैठकर समभाग बेसन और मेहदी मिलाकर शरीर पर मलकर गरम पानी से स्नान कर लिया करे।

विरेचनो से छुट्टी पाने पर माजून उश्बा ७ माशा या आतरीफल शाहतरा ७ माशा ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाये हुए १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ पी लिया करें। भोजनोत्तर हब्ब किबरीत २-२ गोली खाना भी लाभकारी है।

अपथ्य—शरीर को मलादि से शुद्ध एव स्वच्छ रखे। वस्त्र की शुद्धि अनिवार्य समझे। धूप मे चलने-फिरने, उष्ण एव मधुर पदार्थ, मास एव अधिक मसालेदार आहार-सेवन से यावच्छक्य परहेज करें।

पथ्य—लघु एव शीघ्रपाकी आहार, जैसे—मूँग की खिचडी, पालक, कुलफा, चुकन्दर तथा कम मिर्च के पके अन्य शीतल शाक चपाती के साथ खिलायें और दूध, घी, मक्खन जितना पच सके खिलायें।

३—कूबा

नाम—(अ०) कूबा; (उ०) दाद, (सं०) दद्रु; (हिं०) दाद, दिनाय, (अ०) रिग-वर्म (Ring-worm)।

हेतु—कभी गरिष्ठ भोजन करने या अजीर्ण एव शरीर को मलिन रखने तथा वस्त्र एव शय्या आदि को स्वच्छ न रखने, दीर्घ काल तक स्नान न करने,

मधुर पदार्थ के अति सेवन और भीगा हुआ वस्त्र धारण करने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण—शरीर के किसी स्थान विशेषत जघाओ एव वृषणो मे प्राय दाद हो जाती है। दाद के स्थान की त्वचा कडी एव खरदरी हो जाती है और उसमे अत्यन्त खुजली होती है जिससे रोगी उसे प्रतिक्षण खुजलाता रहता है। रोगी जितना ही खुजलाता है, खुजली उतनी ही वढती जाती है। दाद का स्थान श्वेत या श्यामता लिये हो जाता है। कभी उक्त स्थल पर बरावर छोटे-छोटे दाने निकल कर परस्पर सम्मिलित हो जाते हैं जिनसे ओस के समान द्रव निकल कर बहता रहता है। कभी उक्त स्थल पर रूक्षता के कारण भूसी उडती रहती है। दाद के स्थान पर चिह्न पड जाता है जो त्वचा से किचित् उभरा (ऊँचा) प्रतीत होता है। कभी दाद का स्थान लाल एव शोथयुक्त हो जाता है और उसमे छोटी-छोटी फुसियाँ उत्पन्न होकर दाह एव टीस हो जाती है। उकवत या उकौता भी दाद का ही एक भेद है जो हाथ-पैर की पीठ पर हुआ करता है।

चिकित्सा—आभ्यन्तर प्रयोग हेतु जरब व हिक्का के प्रकरण मे लिखित शाहतरावाला रक्तशोधक फाण्ट योग पद्रह दिन तक पिलाये। यदि सशोधन अपेक्षित हो तो इसके पश्चात् अर्क मत्बूख हफ्तरोजा ८ तोला सात दिन तक विरेचन की भाँति पिलाकर शोधन करे और रोगन दाद आवश्यकतानुसार लगाये। विरेचनोत्तर ७ माशा अतरीफल शाहतरा या १ तोला माजून उश्बा ४ तोला शर्बत उन्नाब मिले हुए १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ कुछ दिन पिलाये और जिमाद दाद नीबू के रस मे मिलाकर दाद के स्थान पर कुछ दिन लगाये। सबेरे ५ टिकिया मवीजी और ५ टिकिया मगरबी सायकाल ताजे पानी से खिलाना भी लाभकारी है। उकौता के लिये भी यही उपर्युक्त चिकित्साक्रम उपादेय है।

पथ्यापथ्य—जरब व हिक्का (खर्जु एव कण्डू) के समान।

——o——

४—हसफ, हसफा

नाम—(अ०) हसफ, हसफ, (उ०) गर्मी दाने, पित्त, (स०) राजिका, (हि०) अन्हौरी, अम्हौरी, (अ०) प्रिक्ली हीट (Prickly heat), हीट रैश (Heat Rash), मिलिएरिया (Miliaria)।

हेतु—गर्मी की तीव्रता एव स्वेदाधिक्य, बहुत गरम वस्त्र धारण करना, शरीर का दुर्बल होना या किसी तीव्र स्वेदल औषधि का उपयोग करना इसके

हेतु हैं। बालको और दुर्बल व्यक्तियो को यह व्याधि ग्रीष्म ऋतु मे प्राय हुआ करती है।

लक्षण—जब स्रोतो या उपचर्म के नीचे स्वेद रुक जाता है तब इससे वहाँ पर बाजरे के दानो के समान अत्यन्त छोटे-छोटे दाने उत्पन्न हो जाते है। कभी ये दाने विकीर्ण (असम्मिलित) और कभी सम्मिलित होते अर्थात् मिल-मिलकर गुच्छा-सा बन जाते है। पहले दाने मुरझा जाते है और नवीन दाने प्रति दिन लगातार निकलते आते हैं। कभी-कभी ये दाने लाल होते है और कभी श्वेत होते है। कभी-कभी इन दानो मे सूई या कॉटे चुभने जैसी जलन एव चुभन होती है।

चिकित्सा—कडाके की गरमी और अति स्वेद से रोगी की रक्षा करे। सफेद चदन अर्क गुलाब मे घिसकर अथवा मेहदी के पत्र हरी कासनी के रस मे गूँधकर बर्फ से शीतल करके शरीर पर मर्दन करें या कतीरा महीन पीसकर और मक्खन मे मिलाकर शरीर पर मर्दन करें और गरम पानी से मेहदी और बेसन मलकर स्नान करें। गुलरोगन १ तोला, शुद्ध सिरका ४ तोला, अर्क गुलाब ५ तोला और कपूर १ माशा सबको मिलाकर शरीर पर मर्दन करें। सवेरे निम्न योग पिलाये—

गुलनीलूफर ५ माशा, कासनी की जड, कासनी के बीज, शाहतरा प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, आलू बोखारा ५ दाना सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब या ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाये और सायकाल ३ माशा बिहीदाना का लुआब, ५ दाना उन्नाब और ३ माशा कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा १२ तोले अर्क शाहतरा मे निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिला दिया करे।

अपथ्य—धूप मे चलने-फिरने, अधिक परिश्रम करने और उष्ण पदार्थो के खाने-पीने से परहेज करें।

पथ्य—मामूली बकरी का शूरबा या मूँग की दाल अथवा शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, टिंडा आदि देवें।

५, ६, ७—बहक, कलफ, बुसूर लब्नी

नाम—(अ०) बहक, (उ०, हि०) छीप, (अ०) पिटिरियासिस (Pityriasis)।

भेद—(१) बहक अब्यज (सिध्म कुष्ठ—सेहुआ) और (२) बहक अस्वद (नीलिका)।

--(अ०) कल्फ़, बरश, नमश, (उ०) झाईं, (स०) व्यङ्ग; (अ०) फ्रेकल्ज (Freckles), लेंटिगो (Lentigo), क्लोआज्मा (Chloasma)।

--(अ०) बुसूर लब्नी, (उ०) कील, मुँहासे, डोडसा, (स०) यौवन (युवान) पिडका, मुख दूषिका, (अ०) एक्नी (Acne)।

हेतु और लक्षण--कभी तीक्ष्ण गर्मी मे रहने और धूप मे अधिक चलने-फिरने का अवसर पडने से कपोल एव हाथ की पीठ पर छोटे-छोटे भूरे वा स्याही मायल चिह्न हो जाते हैं जिसको 'कल्फ' या 'झाई पडना' कहते हैं। कभी मलिन रहने और वस्त्र एव शय्या शुद्ध एव स्वच्छ न रखने, बासी, गुरु एव अपुष्टिकर भोजन करने से उदर या ग्रीवा एव बाहुओ पर छोटे-छोटे पिलाई लिये सफेद चिह्न पड जाते हैं। कभी-कभी बरावर-बराबर अनेक चिह्न उत्पन्न होकर परस्पर मिलकर दूर तक धब्बा-सा पड जाता है और उक्त स्थान पर भूसी-सी लगी हुई जान पडती हे। कभी उसमे खुजली भी हो जाती हे। कभी-कभी खुजली नही होती, उसको 'बहक' या 'छीप' कहते हैं। यौवनकाल मे साधारणतया या पाचन एव रक्तदोष से अथवा उष्ण भोजन एव मद्यसेवन आदि से, स्त्रियो का मासिक धर्म बन्द हो जाने से चेहरे और ग्रीवा या कपोलो पर कभी नासिका पर कभी-कभी सीने (वक्ष) पर छोटे-छोटे नुकीले दाने उत्पन्न हो जाते हैं जो कडे एव लाल रग के होते हैं। जब ये दाने पक जाते हैं तब उनसे कील और थोडी-सी पीव निकलती हे।

चिकित्सा--रोग के प्रधान हेतु का निवारण करें। छीप (बहक--सिध्म, नीलिका) के स्थान पर चकवड के बीज, बकुची और मूली के बीज प्रत्येक ३ माशा पानी मे पीसकर लेप करे। झाई (कलफ--व्यग) को दूर करने के लिये समुद्रफेन को नीबू के रस मे घिसकर लगाये अथवा सतरा का छिलका २ तोला, हलदी, सफेद चदन, बालछड, नागरमोथा, छडीला, बादाम का मग्ज प्रत्येक ६ माशा, तिल १ तोला सबको महीन पीसकर गेहूँ का आटा २ तोला मिलाकर १ तोला चमेली का तेल सम्मिलित करके पानी मे घोलकर प्रति दिन रात्रि मे मलकर सो रहा करे। सवेरे नीम का साबुन या कार्बोलिक सोप मलकर मुँह को भलीभाँति धोये।

मुँहासे और कील तो प्राय स्वयमेव दूर हो जाते हैं। यदि कष्टदायक हो और रोगी युवा हो और रक्त की प्रगलभता हो तो सरारू का शिरावेध कराये। यदि स्त्रियो को मासिकधर्म के दोष से यह रोग हो तो उसका उपयुक्त उपचार करे। भुने हुए चना ६ माशा, मुरदासग ३ माशा, सफेदा काश्गरी ३ माशा बकरी के दूध मे पीसकर रात्रि मे मुँहासो पर लगा लिया करे और सवेरे मेंहदी और बेसन मलकर मुँह धो लिया करें।

उबटन का योग--तुर्मुस, बाकला के बीज, पोस्ते का दाना, खरबूजा के बीज का मग्ज, बादाम का मग्ज प्रत्येक ६ माशा, केसर ३ माशा सबको महीन पीसकर उसमे से थोडा-सा लेकर पानी मिलाकर लेप करे और दो घण्टे बाद मेहदी और बेसन से मुँह धोकर थोडा-सा चमेली का तेल मुँह पर मल लिया करें। यदि दोष के प्रकोप से हो तो हब्ब इयारिज का विरेचन देकर उसका शोधन कराये या एक-दो साधारण विरेचन देवें। जब दोष का शोधन हो जाय तब रक्त शुद्धि के लिये अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला में ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर कुछ दिन पिलाये और माजून उश्बा १ तोला या अतरीफल शाहतरा ७ माशा रात्रि मे सोते समय पाव भर दूध के साछ कुछ दिन पिलाये।

अपथ्य--दूषित, बादी, गुरु एव मधुर पदार्थो, गुड और तेल की बनी हुई वस्तुओ के खाने-पीने से, अति मद्य-मास के सेवन, धूप एव अधिक गर्मी में चलने-फिरने से यथासभव परहेज करें।

पथ्य--साधारण शूरबा, चपाती और शीतल शाक देवे। फलो में नारगी, अनार, सेब, नाशपाती आदि आवश्यकतानुसार एव अभ्यासानुकूल देवें।

८--जुजाम

नाम--(अ०) दाउल्असद, जुजाम, (उ०, हि०) कोढ, (स०) महाकुष्ठ, (अ०) लेप्रसी (Leprosy)।

हेतु--प्राय यह रोग सूजाक, आतशक (फिरग) आदि जैसे घृणित एव सौदावी रोगो से अधिक पीडित रहने से और उत्ताप की अधिकता से सौदा जलकर रक्त में मिल जाने तथा उसको दूषित करके सपूर्ण शरीर में व्यापमान हो जाने से होता है। कभी-कभी यह रोग पैतृक या आनुवशिक होता है और चालीस-पचास वर्ष की आयु मे या उसके बाद प्राय होता है। यौवनकाल मे बहुत कम होता है।

लक्षण--शरीर का वर्ण श्यामता लिये रक्त हो जाता है। कान की लौ मोटी पड जाती है। प्राय बेडौल (विरूप) उभार एव ग्रन्थियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। सम्पूर्ण शरीर पर गोल-गोल एव गुलाबी रग के धब्बे पड जाते हैं। मूत्र स्याही मायल हो जाता है। प्राय रोगी आकुलताकारक स्वप्न देखता है। अन्त मे अवयव गलने लगते हैं और गिर जाते हैं। घाव चाहे जितना बडा हो, पर उसमे पीडा नही होती।

चिकित्सा--यह रोग भी औपसर्गिक वा सक्रामक है जो एक रोगी से दूसरे मे सक्रान्त हो सकता है। अतएव ऐसे रोगियो के साथ खाने-पीने, उठने-बैठने तथा सोने से परहेज करना चाहिये। प्रारभ मे सवेरे शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुडी, काली हड, लाल चन्दन या उश्बा मगरबी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना रात्रि मे गरम पानी में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्वत उन्नाव मिलाकर पिलाये और हिरनखुरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना सवेरे गरम पानी मे भिगोये और सायकाल उसका जुलाल (निथरा हुआ पानी) लेकर पिलायें और कम से कम इक्कीस दिन तक यह औषधि बराबर पिलाये। इसके पश्चात् अर्क मत्बूख हफ्त रोजा एक बोल की सूखी ओषधियाँ रात्रि में तीन सेर गरम पानी मे भिगो देवे और प्रात इतना पकाये कि तीन भाग पानी जल जाय और केवल तीन पाव पानी शेष रह जाय। पुन छानकर बोतल में भरकर सुरक्षित रखे। सप्ताह पर्यत सवेरे ८ तोला यह अर्क प्रति दिन रोगी को पिला दिया करे। इससे प्रतिदिन रोगी को दो-चार दस्त हो जाया करेंगे। पुन देखे, यदि आवश्यकता शेष रहे तो कुछ दिन तक उपर्युक्त औषधियाँ पिलाकर पुन मत्बूख यथाविधि इतना दिन पिलायें कि शरीर दोषो से सर्वथा शुद्ध हो जाय। तदनन्तर रसवत २ माशा, चाकसू ३ माशा, नरकचूर ३ माशा, कत्था सफेद ३ माशा, सबको रात्रि मे गरम पानी में भिगो कर सवेरे जुलाल निथार कर पिलाना और सायकाल माजून उश्बा १ तोला ६-६ तोला अर्क शीर मुरक्कब और अर्कमाउज्जुब्न, शर्बत उन्नाब ४ तोला मिलाकर पिलाना (विरेचनोत्तर) लाभकारी है। यदि इन उपायो से लाभ न हो तो स्थानीय सुयोग्य हकीम के परामर्श से माउज्जुब्न का प्रयोग करना श्रेयस्कर होता है। आराम होने के उपरान्त बलवृद्धि के अर्थ खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाबवाला ७ माशा या मुफर्रेह वारिद ५ माशा या दवाउल् मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा खिलाकर अर्क शीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला, शर्बत उन्नाव ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलाना चाहिये। जौहर मुनक्का २ चावल या हब्ब कत्थ १ गोली बीज निकाले हुए एक मुनक्का के भीतर बन्द करके बिना चबाये पानी के घूँट से निगलवा देना और कुछ दिनतक निरन्तर देना लाभकारी होता है।

इसके अतिरिक्त ये गोलियाँ भी लाभकारी है विशेष कर ऐसे कुष्ठी के लिये जिसके नख और हस्त-पाद की अँगुलियाँ भी झडनी आरम्भ हो गई हो---एक कृष्ण सर्प मार कर उसका शिर पृथक् करके बिना हड्डी के मास निकाल कर उसमे तीन माशा सखिया मिला कर खरल करें जिसमे काला हो जाय। फिर कालीमिर्च प्रमाण की गोलियाँ बना कर एक गोली मक्खन मे मिला कर

तीन दिन लगातार खिलायें। खाने को सिवाय जौ की रोटी के और कुछ न देवें।

अपथ्य--बादी, गुरु एव उष्ण पदार्थो, जैसे आलू, बैगन, मसूर की दाल, मछली, कबाब, लालमिर्च एव अन्यान्य उष्ण पदार्थो से परहेज करे। गरम स्थान मे रहने से भी बचे। चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देवे। अन्यथा रोग पुराना होकर असाध्य हो जाता है।

पथ्य--विरेचनकाल में केवल मूँग की नरम खिचडी एक समय तीसरे पहर खिलाये। इसके अतिरिक्त अन्य समय मे चपाती के साथ शीतल शाक, कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक, मूँग की दाल आदि सेवन करें। दूध, मक्खन, घी आदि जितना पच सके सेवन कराना चाहिये।

९--बर्स

नाम--(अ०) बर्स, (उ०, हि०) सफेद दाग (कोढ), फुलबहरी, (स०) श्वित्र, किलास कुष्ठ, (अं०) ल्युकोडर्मा (Leucoderma)।

हेतु--बहुधा यह रोग पैतृक वा आनुवशिक होता है। पर कभी अधिक काल तक मछली सेवन करने या मछली खाकर दूध पी लेने या दूध पीकर कोई अम्ल पदार्थ जैसे सिरके का अचार या चटनी खा लेने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है। वास्तव में यह रोग त्वचा के पोषण दोष के कारण होता है। अस्तु, त्वचा की सवर्तन शक्ति (पाचन-शक्ति) दुर्बल होने से उसके आहार का सम्यक् पाचन नही होता और वह कुछ न कुछ अपक्व रह कर कफ रूप में परिणतशील हो जाता है तब उससे श्वेत दाग उत्पन्न हो जाते हैं। इन चिह्नो के स्थान को चुटकी से पकडकर ऊपर उठाकर मास को छोड कर केवल त्वचा ही मे सूई चुभा कर देखें। यदि उसमे से रक्त बहे तो ऐसे रोगी को साध्य एव चिकित्स्य और यदि जलवत् द्रव बहे तो उक्त अवस्था में उसे असाध्य समझे। रोगारम्भ में चिकित्सा कर लेने से प्राय लाभ हो जाता है।

लक्षण--शरीर मे स्थान-स्थान पर श्वेत दाग पड जाते हैं जो आरम्भ में छोटे-छोटे होते हैं, किंतु, धीरे-धीरे बढते-बढते बडे हो जाते हैं। साधारणतया ये दाग हाथो और चेहरे पर अधिक हुआ करते हैं। यदि दाग कम और छोटे हो तो ठीक होने की आशा हो सकती है। परन्तु शरीर के अधिक भाग पर फैल जाने पर कष्टसाध्य होते हैं।

चिकित्सा--फालिज में लिखित विधि से प्रथम श्लेष्मपाचन औषधि पिलाकर विरेचन देकर उसका शोधन करें। पाचनौषधि सेवन के मध्य

पीला अजीर ५ दाना, चकबड के बीज ३ माशा, वकुची ३ माशा सिरका मे पीस कर दागो पर लेप करते रहे। यदि रोग हल्का हो तो रसवत, चाकसू, नरकचूर और सफेद कत्था प्रत्येक ३ माशा सबको रात्रि मे गरम पानी मे भिगो कर सवेरे जुलाल निथार कर पिलाये। यदि दाग शरीर के थोडे भाग पर हो तो ६ माशा सफूफ बर्स रात्रि मे गरम पानी मे भिगो कर सवेरे उसका जुलाल निथार कर चालीस दिन तक बराबर पिलायें और उसकी सीठी सिरका में पीसकर दागो पर लगाये। विरेचनोत्तर फौलाद भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर या मण्डूर भस्म १ टिकिया दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा मे मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

रोगन बर्स सफेद दागो पर लगाने और बताशा मे रख कर खिलाने से लाभ होता है।

मसीकृत मयूरास्थि ३ माशा, वकुची ३ माशा, हलदी ३ माशा पीस कर एक पाव करेला के रस मे घोल कर इसमे से प्रति दिन दागो पर लेप करने से लाभ होता हे।

बर्स का एक भेद वह है जिसको 'बर्स अस्वद' या 'बहक अस्वद' कहते हैं। आयुर्वेद और पाश्चात्य वैद्यक का यह क्रमश 'नीलिका' और 'पिटिरिआसिस नाइग्रा (Pityriasis Nigra)' है। इसका लक्षण यह है कि मछली के सेहरे की भॉति इसमे त्वचा से सेहरे निकलते हैं और दाग को मलने से भूसी निकलती है और दाग का स्थान काला होता है। सौदावी दोष इसका उत्पादक होता है। कुष्ठ की भूमिका (पूर्वरूप) होने से इसका उपचार भी वही है जिसका उल्लेख जुजाम के प्रकरण मे किया गया है। ऐसे दागो पर हडताल, फिटकिरी और गधक मूली के अर्क मे पीस कर मलने अथवा मूली के बीजो को प्याज के रस मे पीस कर मलने से भी लाभ होता है। खर्बक स्याह को सिरका मे पीस कर लेप करने से उक्त लाभ होता है।

अपथ्य--शीतल, तर एव बादी पदार्थो, जैसे चावल, दूध, दही, उडद की दाल, आलू, अरवी, टिडा, कद्दू आदि से परहेज करे और मछली न खाये।

पथ्य--विरेचन काल मे मूँग की नरम खिचडी और सफूफ बर्स के सेवन काल में केवल बेसनी रोटी, नमक की घी अधिक प्रमाण मे मिला कर खिलायें। इन दिनो के अतिरिक्त बकरी का भुना हुआ मास गरम मसाला मिला कर चपाती के साथ खिलाये।

१०—खनाजीर

नाम—(अ०) खनाजीर; (उ०, हि०) कण्ठमाला; (स०) कण्ठमाला, गण्डमाला; (अ०) स्क्रॉफ्यूला (Scrofula)।

हेतु—गरिष्ठ, स्थूल, दीर्घपाकी एव कफकारक आहारौषधि के अति सेवन से साद्र कफ उत्पन्न होकर इस रोग का हेतु होता है।

लक्षण—साधारणत ग्रीवा की ग्रन्थियाँ एव कोमल मास और क्वचित् वक्षण एव कक्ष की ग्रन्थियाँ भी शोथयुक्त होकर माला की तरह हो जाती है अतएव हिंदी और उर्दू मे इसको 'कठमाला' कहते हैं। अर्बुद और इस शोथ मे यह अन्तर होता है कि अर्बुद का मास के साथ सम्बन्ध नही होता और ग्रन्थियाँ पृथक् मालूम होती है और इस शोथ की ग्रन्थियाँ मास के साथ चिमटी होती है और कडी होती हैं। कभी-कभी ये ग्रन्थियाँ पक कर फूट जाती है जिनसे पूय वहता रहता है। कभी-कभी रोगी को तीव्र ज्वर हो जाता है और प्रायः मन्द-मन्द ज्वर तो रहा ही करता है।

चिकित्सा—सवेरे कफदोषपाचनौषधि मे शाहतरा और चिरायता ७-७ माशा अधिक मिला कर पिलाये और सायकाल अफसन्तीन ७ माशा, चोपचीनी ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी से उबाल-छान कर पिलाये। पन्द्रह दिन तक पाचन औषधि (मुंजिज) पिला कर अफ्तीमून और बस्फाइज फुस्तुकी ५-५ माशा अधिक मिला कर तीन दिन और पिला कर अर्क मत्बूख हफ्तरोजा का विरेचन देवें। तदुपरान्त ठढाई (तबरीद) का यह योग देवे—खमीरा गावजबान १ तोला एक चाँदी के वर्क मे लपेट कर प्रथम खिला कर ६-६ तोले अर्क गावजवान और अर्क मकोय मे ५ दाना उन्नाब का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन तक पिलाये। यदि आवश्यकता हो तो कुछ दिन पुन. दोषपाचनौषधि पिला कर इसी प्रकार विरेचन देवें।

ग्रन्थियो पर प्रारम्भ मे सावर श्रृग भस्म ३ माशा इक्कीश बार जल मे धोये हुए १ तोला घी मे मिला कर या जदवार ३ माशा और सौसन की जड ३ माशा महीन पीस कर १ तोला मरहम दाखिलयून या १ तोला मरहम बासलीकून मे मिला कर कुछ दिन लगायें या जिमाद खनाजीर एक टिकिया यथावश्यक हरे मकोय के रस मे पीस कर कुनकुना गरम करके लेप कर दिया करे। विरेचनोत्तर अतरी फल गुद्दी ७ माशा खिला कर ५ माशा सौफ, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा मकोय ३ माशा ६-६ तोले अर्क सौफ और अर्क मकोय मे पीस-छान कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर कुछ दिन तक पिलायें। मकोय २ तोला, बिरजासिफ मर्जन्जोश और अफसतीन प्रत्येक १ तोला पानी मे उबाल कर बफारा लेवें और सेक करें।

यदि किसी उपाय से कण्ठमाला की ग्रन्थियाँ विलीन न हो तो उन पर तीव्र औषधियाँ चूना, हडताल आदि लगाकर उनको फाड डालें या शस्त्रकर्म के द्वारा निकलवायें। यदि पीलू के पत्र ऊँट के मूत्र मे पीस कर कुछ दिन तक बराबर ग्रन्थियो के ऊपर लेप किये जायें तो लाभकारी होते हैं। आराम होने के पश्चात् मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस मे मिलाकर कुछ दिन खिलाये।

नागफनी का दो-चार फल प्रतिदिन खिलाना और उसी को पीस कर ग्रन्थियो पर लगाना कण्ठमाला के लिये प्रभावत गुणकारी है।

अपथ्य--अम्ल और शीतल पदार्थो के सेवन से परहेज करे। उडद की दाल, कद्दू, टिंडा, दूध, दही, चावल, आलू, अरवी, कचालू आदि नही खायँ।

पथ्य--बकरी के मास का शूरबा, करेले की तरकारी, मूँग-अरहर की दाल चपाती के साथ देवे। पाव रोटी, बिस्कुट, चाय, अडा प्रभृति आवश्यकतानुसार देवे। ऐसे रोगियो को बलकारक भोजन खिलाना और समुद्र-यात्रा कराना लाभकारी होता है।

११---आतशक

नाम--(अ०) अफरजी, अल्खजील, आतशक हकीकी, (फा०) आतशक, आबलए फिरग, बाद फिरग (उ०) आतशक बाद फिरग, (हि०) गरमी, (अ०) सिफिलिस (Syphilis), हार्डशैंकर (Haidchancre)।

वर्णन--किसी-किसी के मत से यह प्राचीन व्याधि है और बुसूर गरीबा से यही विवक्षित है। किसी-किसी के मत से यह जम्रा और नारफारसी का एक भेद है। साधारणतया यह निरूपण किया जाता है कि यह एक नूतन व्याधि है जो चार या पाँच सौ वर्ष से फिरङ्गीय द्वीप मे प्रगट होकर अधुना समस्त देशो मे प्रसारित हो गया है। अतएव प्राचीनो के ग्रन्थो मे इसका उल्लेख नही मिलता। सुतरा यह एक सक्रामक वा औपसर्गिक रोग है जो रोग का उपसर्ग होने या वशानुगतरूपेण पिता-माता से प्राप्त होता है।

हेतु--यह रोग औपसर्गिक है। अतएव आतशक पीडित व्यक्तियो के सग, उनके पास उठने-बैठने, उनके साथ भोजन करने या रोगियो का उच्छिष्ट पानी पीने या रजस्वला स्त्रियो के साथ मैथुन करने या बाजारू पुश्चली स्त्रियो के साथ सहवास या वेश्यागमन करने से यह व्याधि हो जाती है। सुतरा इस व्याधि का विष प्रभावहीन शरीर मे प्रविष्ट होकर दोषो (अख्लात) एव रक्त को जला कर विदग्ध सौदा बना देता हे तथा ये दूषित दोष एव रक्त शरीर मे रह कर इस रोग का हेतु होते हैं।

लक्षण--शरीर के किसी भाग पर विशेष कर विशिष्ट अग (लिङ्ग) के ऊपर किसी स्थान मे प्रथम एक फुन्सी उत्पन्न होती है जो धीरे-धीरे बढकर फट जाती है और एक व्रण-सा बन जाता है। इसके आस-पास की त्वचा किंचित् शोथयुक्त हो जाती है। व्रण को दबाने से कडा प्रतीत होता है तथा वेदना कम होती है और पूय भी कम निकलता है। पाँच-सात दिन के पश्चात् वक्षण की ग्रन्थियाँ शोथयुक्त होकर कडी हो जाती है जो दबाने से कडी मालूम होती है। कभी-कभी ये शोथयुक्त ग्रन्थियाँ पक जाती है और उनमे पीडा होती है। कभी-कभी सपूर्ण शरीर पर व्रण बन जाते है और शरीर फूट निकलता है। शरीर की सन्धियो मे पीडा होने लगती है और कभी-कभी ज्वर भी हो जाता है।

चिकित्सासूत्र--आतशक की प्रथम और द्वितीय कक्षा मे सौदापाचन एव विरेचन के अनन्तर दोष का सशोधन करके पारद-योगो का प्रयोग कराये और तृतीय कक्षा के आतशक मे उश्बा, चोबचीनी और अर्क मुसफ्फी खून आदि का उपयोग कराये।

चिकित्सा--शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव पाँच दाना, काली हड ७ माशा, यदि शीत ऋतु हो तो उशबा मगरबी ७ माशा और यदि ग्रीष्म हो तो लाल चन्दन ७ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो कर सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलायें और सायकाल निगद बावरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना दोनो को सवेरे पानी मे भिगो कर रखे और सायकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर पिलाये। कम से कम १५ दिन या २१ दिन तक यह योग पिला कर जुजाम (कुष्ठ) के प्रकरण मे लिखित विधि के अनुसार सप्ताह पर्यन्त अर्क मत्बूख हफ्तरोजा का विरेचन पिलायें। इसके अनन्तर देखे यदि शोधनोपरान्त और आवश्यकता हो तो उपर्युक्त योग पाँच दिन तक पिला कर पुन यथाविधि मत्बूख हफ्तरोजा पिलाये, यहाँ तक कि शरीर सर्वथा शुद्ध हो जाय। यद्यपि यह चिकित्साविधि दीर्घकालिक (दीर्घसूत्री) है, परन्तु इससे स्थायी लाभ हो जाता है। विरेचनो से अवकाश मिलने पर २ चावल जौहर मुनक्का या १ गोली हब्ब कत्थ गुठली निकाले हुए एक मुनक्का के दाने के भीतर लपेट कर जल के घूँट के द्वारा सवेरे इस प्रकार निगल लिया करे कि दाँतो से इसका स्पर्श न हो। सायकाल माजून उशबा १ तोला खिलाकर ऊपर से ६ तोला अर्क उश्बा, ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून या १२ तोला अर्क चोबचीनी ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिला दिया करें। व्रणो पर मरहम आतशक आवश्यकतानुसार लेकर लगायें। हब्ब लीमू २ गोली ताजे जल से खिलाना भी लाभकारी है। सफेदा काश्गरी, रसवत, कपूर,

२-२ माशा सब को बारीक पीसकर यथावश्यक रेशा खतमी के लुआब मे मिलाकर व्रणो पर लगाये। इससे लाभ होता है।

अपथ्य--अम्ल द्रव्य का सर्वथा परित्याग कर देवें। गुड-तेल के बने पदार्थ और अधिक उष्ण पदार्थ जैसे लहसुन, प्याज, बैंगन, मसूर की दाल, आलू आदि नहीं सेवन करें। स्वस्थो को ऐसे रोगियो के साथ अधिक रहने से, साथ भोजन करने और उनके शरीर से उतारे हुए वस्त्र धारण करने से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--हब्ब लीमूँ के सेवन-काल मे लवा कद्दू और मूँग की दाल सेवन नहीं करें। इसके अतिरिक्त अन्यान्य औषधियो के सेवनकाल मे इनका सेवन कर सकते है। कुलफा, टिडा, भिडी, तुरई, अरहर की दाल, बकरी के मास का शूरबा चपाती के साथ सेवन करायें। घी जितना पच सके, सेवन कराये।

१२--जुद्री

नाम--(अ०) जुद्री; (फा०) आवल, (उ०) चेचक, सीतला; (स०) मसूरिका, शीतला, माता, वसन्तरोग, (अ०) स्मॉल-पॉक्स (Small-Pox), वेरिओला (Variola)।

१३--हुस्बा

नाम--(अ०) हुस्बा, (फा०) सुर्खच, (उ०) खसरा, (स०) रोमान्तिका, (अ०) मीजल्स (Measles), मार्बिल्लाई (Marbilli)।

वर्णन--ये दोनो सक्रामक विस्फोटक ज्वर है जो प्राय वसन्त ऋतु (रबीअ) अर्थात् चैत के महीने मे हुआ करते है। इन दोनो मे प्रमाण और आयतन का भेद होता है। सुतरा जुदरी (मसूरिका) के दाने बडे होतें है और हुस्बा (रोमान्तिका वा खसरा) के छोटे। इसके अतिरिक्त मसूरिकाजनक दोष साधारणतया रक्त होता है और इसके दाने लगभग समूचे मसूर जैसे होते है और अन्ततोगत्वा पककर इनमे से पूय स्रावित हुआ करता है। परन्तु खसरा का जनकदोष प्राय पित्त होता है। इसके दाने बाजरे के दाने के बराबर होते है। रोमान्तिका का उत्पादक दोष पित्त होता है। अतएव यह अत्यन्त कष्टदायक एव रद्दी होती है। अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि जब दाने दोहरे होते है अर्थात् दानो पर दाने चढे हुए होते है और एक-दूसरे मे सर्वथा मिले हुए (समिलित) होते है या जिन दानो का वर्ण काला होना है या जिस समय दाने वक्ष एव उदर

के स्थान पर अधिक होते है या देर मे प्रगट होते हैं वे अत्यन्त भयावह होते हैं। कभी-कभी इन दोनो के प्रकटीभूत दाने अकस्मात् लुप्तप्राय हो जाते हैं और इनके दोष का अन्तर्भरण उत्तमाङ्ग और कोष्ठागों मे होने लगता है। उक्त अवस्था मे मूर्च्छा उत्पन्न हो जाती है और रोगी मर जाता है। कभी-कभी दाने पूर्णतया निकल आते हैं और इनके निकल आने के पीछे भी ज्वर विद्यमान रहता है। यह अत्यन्त आशकापूर्ण स्वरूप है, क्योकि दानो के प्रगट होने के उपरान्त ज्वर जाता रहना चाहिये था परन्तु, इसकी विद्यमानता दोष का प्राचुर्य एव चरम विकृति को लक्षित वा प्रमाणित करती है। यूनानी वैद्यो के लेखानुसार यदि दाने वक्ष और उदर पर अधिक न हो और इनमे पूर्वोक्त अरिष्ट लक्षण न हो और पाक-प्राप्त कर लेने के उपरान्त सिर उच्च एव अत्यन्त चमकीले दिखाई देवे तो उनमे अधिक भय नही है। जिन बालको को अभी तक यह व्याधि नही हुई, उन्हे चैत के महीने से कुछ पूर्व अनागतबाधाप्रतिषेधार्थ कान के पीछे जोक लगवाना चाहिये। पहले ही से उनको मास-सेवन न कराये। यदि आवश्यकता हो तो उसमे तुरई, कद्दू, पालक, कासनी, कुलफा प्रभृति डालकर खिलायें तथा उसे धूप मे दौडने फिरने से वर्जित कर देवें। पूर्वविधानता की दृष्टि से बालको को समूचा मोती निगलवाना या सलाया मरवारीद शर्बत बनफ्शा मे मिलाकर चटाना विशेष रूप से चेचक से सुरक्षित रखता हे। यदि चेचक निकल भी आये तो तज्जन्य कष्ट और अन्यान्य अङ्गोपाङ्गो की सुरक्षा के लिये अतीव उपादेय है।

हेतु—चेचक भी एक औपसर्गिक वा सक्रामक रोग है जो एक से दूसरे रोगी मे सक्रान्त हो जाता तथा एक से दूसरे रोगी को लग जाता है। साधारणतया यह रोग बालको को हुआ करता है। पर क्वचित् बडो को भी हो सकता है। वसन्त ऋतु एव उष्ण देशो मे बहुधा यह रोग महामारी के रूप मे प्रसार पाया करता है। धनी लोगो की अवेक्षया निर्धनो को और गौरागो की अपेक्षया कृष्णागो (कालो) को यह अधिक हुआ करता है। इससे अधिकतया वे ही बालक आक्रान्त होते हैं जिनको टीका नही लगाया होता या दूषित टीका लगा होता हे। इसके विषप्रभाव से पित्त अधिक उत्पन्न होकर रक्त मे मिल जाता है जिसको शरीर प्रकृति (तबीयत मुदब्बिरए बदन) त्वचा की ओर उत्सर्गित करती है और त्वचा के ऊपर दाने उत्पन्न हो जाते है।

लक्षण—चेचक (मसूरिका) के प्रारम्भ मे अश्रु बहता है, नेत्र लाल होते है, नासिका मे कण्डू (खुजली) और शिर मे शूल होता है। कभी-कभी खाँसी और कण्ठ मे वेदना होती है तथा स्वर बैठ जाता है। इन लक्षणो के साथ ज्वर होता है, बालक स्वप्नावस्था मे भय खाता और चौंकता हे। कटि-शूल होता, चेहरा लाल और तमतमाया हुआ प्रतीत होता है और दूसरे दिन

कम्पयुक्त तीव्र ज्वर हो जाता है। कनपुटियो की नसें उभरी हुई और फडकती हुई मालूम होती हैं। मलावरोध होता, क्षुधा कम हो जाती, बेचैनी बढ जाती, कतिपय रोगियो को तीव्र पिपासा होती और प्रलाप तन्द्रा एव मूर्च्छा हो जाती है। तीसरे दिन ज्वर हल्का हो जाता है। प्रथम मस्तक, चेहरे ओर पृष्ठ पर दाने निकलते हैं। पुन हस्त-पाद और समस्त शरीर पर दाने निकल आते हैं। ये दाने कभी कुछ एक तथा कभी अत्यधिक होते हैं। कभी पृथक्-पृथक् वा असम्मिलित और कभी परस्पर मिलकर (सम्मिलित) गुच्छे से हो जाते हैं, विशेष कर चेहरे पर प्रचुरता से दाने निकलते हैं। प्रारम्भ मे दाने लाल होते हैं। दूसरे-तीसरे दिन ये चपटे उभार बन जाते हैं और छोटी-सी राई या सूक्ष्म छर्रों के समान कडे प्रतीत होते हैं। तीसरे-चौथे दिन दानो मे स्वच्छ उज्ज्वल द्रव भर जाता है। पाँचवे दिन प्रत्येक दाने के चतुर्दिक् लाल मण्डल-सा उत्पन्न हो जाता है और दाने की नोक भीतर की ओर जब जाती है। इनका उज्ज्वल द्रव मलिन होने लगता है। सातवें-आठवें दिन इनमे पूय पडने लगता है। आठवे दिन दानो का उज्ज्वल द्रव पूय मे परिणत हो जाता है और इनकी नोक ऊपर की ओर उभर आती है तथा नोक पर काला बिंदु मालूम होता है। उस दिन पुन तीव्र ज्वर हो जाता है। रोगी को निगलने मे कष्ट एव श्वासकृच्छ्रता होती है। चेहरा और नेत्र सूज जाते हैं और प्रलाप भी हो जाता है। दसवे-ग्यारहवे दिन दाने मुरझाने लगते हैं और चौदहवें दिन तक मुरझा कर उन पर भूरे या स्याही मायल खुरड बन जाते हैं। उन्नीसवें दिन यह खुरण्ड उतरने लगते हैं और साधारणतया एक-दो मास तक खुरड उतरते रहते हैं। खुरड उतर जाने के पश्चात् त्वचा के ऊपर लाल-भूरे रग के दाग रह जाते हैं। यदि रोग की तीव्रता के कारण त्वचा गल जाय तो दागो के अच्छा होने के स्थान मे पीछे उनके भीतर गर्त बन जाते हैं। खसरा के आरम्भ मे भी प्राय उपर्युक्त लक्षण होते है। परन्तु इसमे चौथे या पाँचवें दिन पोस्ते के दानो के सदृश लाल-लाल छोटे-छोटे दाने होते हैं जो परस्पर सम्मिलित होकर अर्ध चन्द्राकार स्वरूप के धब्बे बना देते हैं। ये दाने प्रथम मस्तिष्क एव चेहरे पर और पुन सारे शरीर पर निकलते हैं और एक-दो दिन तक निकलते रहते हैं। जब दाने प्रचुरता से निकलते हैं तब उनका कोई विशिष्ट स्वरूप नही रहता। दानो का वर्ण कभी अरुण (गुलाबी) पीताभ रक्त और कभी श्यामाभ (स्याही मायल) रक्त होता है। दबाने से ललाई लुप्त हो जाती है। दानो के निकलते समय तीव्र प्रतिश्याय होता है। जब दाने निकल चुकते हैं तब लक्षण हल्के हो जाते है। छठवें-सातवें दिन ये दाने मुरझा जाते हैं। आठवें दिन मुरझाये हुए दानो पर से गेहूँ की भूसी के समान बारीक-बारीक छिलके या खुरड (व्रणवस्तु)

झड जाते है। उस समय शरीर मे तीव्र कण्डू होता है। वहुधा आठवे दिन ज्वर उतर जाता है। मसूरिका और रोमान्तिका मे जव प्रारम्भ ही से दाने काले या नीले वर्ण के प्रगट हो और अनियमित हो तथा वालक को व्यग्रता, प्रलाप और श्वास कष्ट हो तथा मटिय़ाले या काले दस्त आये तव ये लक्षण असाध्य एव अरिष्टसूचक होते है।

चिकित्सा--जव उपर्युक्त लक्षण से ज्वर आरम्भ हो जाय तव बालक को सच्चे मोतियो के छोटे-छोटे चार-पॉच दाने निगलवा दिया करें और ३ दाना उन्नाव, ५ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का, ३ दाना पीला अजीर, २ माशा खाकशी, १ तोला मिश्री पानी मे उवाल-छान कर पिलाये। यदि दौर्बल्य अधिक हो तो इसी योग के साथ खमीरा मरवारीद ३ माशा खिला दिया करें और रोगी की शय्या पर खाकसी छिडकवा देवे। जल पीने के पात्र मे १ तोला खाकसी पोटली मे बॉध कर डाल देवे। कास हो तो श्लेष्मोत्कारि ओषधियॉ इसी योग मे योजित कर देवे और २ माशा गावजवान, २ माशा खतमी के बीज सम्मिलित करके पिलायें और उग्र कास मे लऊक सपिस्ताँ ६ माशा, अर्क गावजबान २ तोला या अर्कबिरजासिफ २ तोला मे उवालकर विना छाने दूसरे समय अपराह्न (तिजहरियॉ) मे पिला दिया करे।

मलावरोध हो तो प्रात कालीन योग मे गुलवनफ्शा ३ माशा योजित करके सेवन करायें और मिश्री के स्थान मे १ तोला शर्बत बनफ्शा सम्मिलित करके पिलायें। यदि अतिसार आरम्भ हो जाय तो जहरमोहरा २ रत्ती, मोती २ चावल, कहरुवाए शमई ४ चावल, वारतग के बीज २ माशा---समस्त द्रव्यो को महीन कूट-छान कर चूर्ण वनाये। इस चूर्ण मे से १ माशा चूर्ण खिला कर २ माशा हब्बुल् आस का शीरा एव २ माशा अजवार की जड का शीरा पानी मे पीस कर शीरा निकाल कर १ तोला शर्बत हब्बुल् आस मिलाकर पिलायें। यदि तृष्णा अधिक हो तो ग्रीष्म ऋतु मे ताजा पानी पिलायें और शीत ऋतु मे मकोय या, गावजवान का अर्क पिलायें और चेचक के दानो पर गुलाव के फूल, कुदुर, एलुआ, अजरुत, दम्मुल्अख्वैन सव समभाग पीस कर अवचूर्ण न करें।

यदि अत्यन्त दौर्वल्य एव मूर्च्छा हो तो हृदयबलवर्धनार्थ जवाहरमोहरा आध चावल, मुफर्रेह शैखुर्रईस २ माशा या मुफर्रेह आजम २ माशा, या मुफर्रेह याकूती २ माशा मे मिला कर प्रथम खिलायें। ऊपर से ३ तोला अर्क गुलाव या ३ तोला अर्क केवडा मे १ तोला शर्वत सेव डालकर पिलाये। यदि तीव्र खाँसी हो तो अर्क गुलाव एव अर्क केवडा न देकर इनके स्थान मे अर्क गावजवान ४ तोला सेवन करायें। आराम होने के पश्चात् मुफर्रेह वारिद

४ तोला, अर्क मरवकब मुसफ्फी खून १ तोला शर्बत उन्नाव के साथ कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य--अडे, सादा मास, दूध, मछली, गरम मसाला, लाल मिर्च और अम्ल पदार्थ तथा चावल आदि से परहेज करें।

पथ्य--चेचक निकलने के काल मे आहार स्वरूप मुनक्का या अजीर के कुछ दाने यदि बालक खाता-पीता हो तो खिलाये या अरहर की दाल का पानी या मसूर की दाल पकाकर, यदि रोटी खाता हो तो चपाती के साथ या अकेले जैसे बालक की रुचि हो खिलाये। आराम होने के पश्चात् शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, तुरई, पालक आदि बकरी के मास के साथ पकाकर चपाती के साथ सेवन कराये या मूँग की खिचडी खिलायें।

टिप्पणी--यह रोग बालको को ही प्राय हुआ करता है। अतएव औषधि की मात्रा उक्त वर्णन मे आधी लिखी गई है जो सयाने बालक अर्थात् ९-१० वर्ष की आयु के बालको के लिये है। वयानुसार मात्रा घटा-बढा कर उपर्युक्त योग प्रयुक्त कराने चाहिये।

१४--हुमरा

नाम--(अ०) हुम्र सुर्खबाद , (उ०) सुर्खबादा , (स०) विसर्प: (अ०) इरिसिपेलस (Erysipelas)।

वर्णन--यह एक उष्ण पैत्तिक रोग है जो त्वचा पर प्रगट होता है और कभी एक स्थान से दूसरे स्थान मे स्थानान्तरित होता है।

हेतु और भेद--इसके केवल निम्न दो भेद होते है --प्रथम वह जिसका उत्पादक दोष केवल शुद्ध पित्त होता है। इसको हुमरः खालिस और द्वितीय वह जिसका उत्पादक दोष रक्त एव पित्तमिश्रित होता है। इसको हुमरः गैर खालिस कहते है। यद्यपि यह शोथ शरीर के प्रत्येक भाग पर हो सकता है तथापि प्राय यह चेहरे पर हुआ करता है। यूनानी वैद्यक मे इस प्रकार के शोथ को मािशिरा, आयुर्वेद मे मुखगत विसर्प और पाश्चात्य वैद्यक मे फेशियल इरिसिपेलस (Facial Erysipelas) कहते है। बालको को होनेवाले विसर्प अर्थात् बाल विसर्प को यूनानी वैद्यक मे सुर्खबाद अतफाल कहते है।

शेखुर्रईस के मत से प्राय यूनानी हकीम केवल पित्तज शोथ को 'हुम्र.' और केवल रक्तज को 'फलग्मूनी' और रक्त एव पित्त दोनो से मिले हुए शोथ को 'मुरक्कब (ससर्गज)' कहते है। नामकरण मे प्रगल्भ

दोषवाले रोग के नाम को प्रथम रखते है, जैसे यदि पित्त प्रगल्भ हो तो हुम्र, फलामूनी और रक्त प्रगल्भ हो तो फलगमूनी हुम्र कहते है। हुम्र फलामूनी को पाश्चात्य वैद्यक मे इरिसिपेलस फ्लेग्मोनस (Erysipelas) कहते है। इसमे पूय पड जाता है।

लक्षण—रुग्ण स्थान मे ललाई, चमक एव स्वच्छता होती है। इसे उँगली से दबाने से ललाई दूर हो जाती है और उँगली हटा लेने पर वह तुरन्त लौट आती है। हलका दर्द, सूजन वा दाह, तृषा एव ज्वर भी होता है। साधारणत. यह रोग कपोलो पर प्रगट हुआ करता है। हुम्रा गैर खालिस मे ललाई तीव्र और सूजन कम होती है। नाडी स्थूल (अजीम) और मूत्र गाढा होता है और शोथ का आयतन भी अपेक्षाकृत वडा होता है।

चिकित्सासूत्र—सिद्धान्तत हुम्रा खालिस को चिकित्सा सर्वथा फलगमूनी के समान की जाती है। भेद केवल यह है कि उसमे शिरावेध अविहित है और सदैव शीतल औषधियो का लेप लगाया जाता है तथा शोथ विलयन औषधियो की अपेक्षा नही होती। किन्तु हुम्रा खालिस मे शिरावेध द्वारा पित्त का शोधन करना चाहिये और लेप के विषय मे फलगमूनी के विधि-विधान को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। यदि शिशु को विसर्प (बालविसर्प) हो जाय तो प्रथम स्तन्य-धात्री (दाई) की शुद्धि करें तथा दुष्ट दोष का सुधार करे और रक्तशोधक औषधियाँ पिलाये, जैसे अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला शर्बत उन्नाब ४ तोला मिलाकर सवेरे-शाम पिलाये। यदि व्रण हो जाय तो किसी उपयुक्त मलहर का उपयोग करे। यदि विरेचन या रक्तमोक्षण अपेक्षित हो तो आवश्यकतानुसार विरेचन देवे और शिरावेध कराये तथा रक्त के प्रकोप को शान्त करनेवाली औषधियाँ काम मे लेवे।

चिकित्सा—शिशु को हब्ब सुर्खबादये अतफाल १-१ वटी खिलाये और शोथ के स्थान पर सफेद और लालचदन, गेरू, रसवत प्रत्येक ३ माशा यथावश्यक अर्क गुलाब मे घिसकर लगाये। यदि फुसियाँ हो तो केवल रसवत अर्क गुलाब मे घिसकर लगाये। व्रण उत्पन्न हो गया हो तो मरहम सफेदा लगाये। ये गोलियाँ बालको के लिए गुणकारी है—रसवत, नरकचूर, चाकसू, मुरदासग, धमासा, लाल चदन, काली हड, वर्ग, शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुडी, ब्रह्मदण्डी प्रत्येक ३ माशा, नीलकण्ठी, नीम के पत्र, वकायन के पत्र प्रत्येक २० नग—सबको हरी मेहदी के पत्र-स्वरस मे पीसकर मुद्ग-प्रमाण की गोलियाँ बनाये। इसमे से २-२ गोली सवेरे-शाम माता के दूध मे घोलकर पिलायें।

अहिफेनाभ्यासी बालोपयोगी वटीयोग—रसवत, लाल चदन, चाकसू, नरकचूर प्रत्येक ३ माशा, अफीम १ माशा, मुरदासग ४ रत्ती, हलदी और मेहदी

के पत्र १–१ माशा, बकायन और नीम के पत्र १५–१५ नग कूट-छानकर मुद्ग-प्रमाण की गोलियाँ बनायें और १–१ गोली माता के दूध मे घोलकर देवे। लेप का निम्न योग लाभकारी है—

लाल चदन ६ माशा, सुपारी ६ माशा, सफेदा काशगरी ६ माशा, गिल अरमनी ६ माशा यथावश्यक हरे धनिये के रस मे पीसकर लेप करे।

अपथ्य—बालक की माता या स्तन्यधात्री को उष्ण एव मधुर पदार्थ तथा अग्निसेवा से और अधिक चलने-फिरने से परहेज करना चाहिये।

पथ्य—बालक की माता को साधारण लघु आहार, हरे शाको का शूरबा चपाती के साथ देवे या मूँग की दाल या मूँग की नरम खिचडी या डबल रोटी दूध के साथ देवें। यदि बालक कुछ खाता हो तो मधुर पदार्थ से परहेज करायें। साबूदाना या मुरमुरो की खीर चटा दिया करें।

१५—वरम सलिब

नाम—(अ०) वरम सलिब, (उ०) सख्त वरम, (स०) अत्यन्त कठिन (अश्मोपम) घातक अर्बुद, (अ०) स्क्लीरोमा (Scleroma)।

यह तीन प्रकार का होता है—मिर्रए सौदा जन्य, कफज और मिलित सौदाकफज। साधारणतया यह उष्ण शोथ के पश्चात् उत्पन्न होता है। इसको यूनानी मे सकीरूस (Scirrhus) कहते हैं।

अससृष्ट द्रव्योपचार—(१) कलौंजी को पीसकर सिरका मे मिलाकर लेप करने से कठिन शोथ उतर जाता है। (२) साबुन के लगाने से कठिन शोथ का माद्दा पक जाता है। (३) रोगन इजखिर मे उशक घोलकर लेप करने से या (४) गोदुग्ध लेप करने से भी कठिन शोथ उतरता है। (५) २॥। माशा सूरजान के पीने और लेप करने से कठिन सधिशोथ उतर जाता है। (६) खतमी या (७) कुदुर लेप करने या (८) जायफल के पीने या लेप करने से, इसी प्रकार (९) बाबूना या (१०) एलुआ पानी मे पीसकर लेप करने से कठिन सूजन उतर जाती है। इन ओषधियो के साथ पृथक्-पृथक् गुलरोगन और सफेद मोम मिलाया जाय तो ये तीव्र प्रभावकारी हो जाती हैं।

ससृष्ट द्रव्योपचार—दोषपाचन औषधि सेवन कराके सौदा और कफ का शोधन करना तथा सौदा एव कफ उत्पन्न करनेवाले पदार्थो से परहेज लाभकारी है। कठिन शोथ मे (१) जिमाद उशक, (२) जिमाद गूगल, (३) जिमाद महुवा और (४) जिमाद तुख्म कत्तान का लगाना और ऐसे ही (५) जिमाद

चर्बी गुर्दए मेश लगाना लाभकारी है। (६) मरहम उशक, (७) मरहम रुसल और कैरूती मुर्दारसग का लगाना भी कठिन शोथ विलयन के लिये लाभकारी है।

१६—वरम रिख्व

नाम—(अ०) वरम रिख्व , (उ०) वरम नर्म ; (स०) वातज शोथ, शोफ , (अ०) एडीमा (Oedema)।

यह एक प्रकार का श्वेत एव मृदु शोथ है जिसमे उष्णता एव वेदना नही होती, किन्तु गौरव एव तनाव होता है। औजीमा अगरेजी एडीमा का अरबी रूपातर है।

हेतु—कफ एव द्रव इसके उत्पादक हेतु है।

लक्षण—इस प्रकार का शोथ उँगली से दबाने से दब जाता है। उँगली उठा लेने के पश्चात् वहाँ देर तक चिह्न (गड्ढा) शेष रहता है। इस प्रकार का शोथ साधारणतया (इस्तिस्काऽ) रोग मे हुआ करता है।

अससृष्ट द्रव्योपचार—(१) बूरए अरमनी ६ माशा सिरका और पानी मे पीसकर लेप करना तथा (२) नमक और गेहूँ की भूसी प्रत्येक १ तोला और (३) बाजरा एव कलौजी प्रत्येक १ तोला को पोटली मे बाँधकर गरम करके सेक करना और (४) बूरए अरमनी ६ माशा या (५) अफसतीन रूमी ६ माशा पानी और सिरका मे पीसकर शोथ के स्थान पर लेप करना लाभकारी है। (६) करपस की जड को जौ के आटे के साथ लेप करने से शोथ विलीन हो जाता है। (७) ५ माशा केसर पान और लेप करने से कफज शोथ विलीन हो जाता है। (८) उशक को सिरका मे घोलकर पतला लेप करने से कफज और कण्ठमाला का शोथ आराम होता है। जैतून के तेल के साथ बनाया गया सोए का तेल दोष को पकाकर विलीन करता है और हर प्रकार के कफज शोथ को नष्ट कर देता है।

ससृष्ट द्रव्योपचार—(१) मुस्हिल हार्र (उष्ण विरेचन) और (२) हब्ब इयारिज से दोष का शोधन करना और आक्लेद युक्त (मुरत्तिव) पदार्थो से परहेज करना लाभकारी है। सम्यक् शुद्धि के उपरात (३) दवाउल्कुर्कुम सगीर ५ माशा से ७ माशा तक या (४) हब्ब गारीकून ५ माशा या (५) दवाउल्कुर्कुम कबीर ५ माशा या (६) सफफ खुन्सुल्हदीद ६ माशा से १ तोला तक ६ तोले अर्क अजवायन के साथ देने से उपकार होता है।

१७——सल्आ

नाम——(अ०) सल्अ , (उ०, हि०) रसौली , (स०) अर्वुद , (अ०) ट्यूमर (Tumour) ।

वर्णन——यह एक प्रकार का सान्द्र शोथ है जो शरीर के विभिन्न स्थान पर साद्र कफ के कारण उत्पन्न हो जाता है ।

हेतु——अर्बुद (सल्आ) के उत्पत्ति विषयक विभिन्न अनुमान एव उपपत्तियाँ है । किन्तु, प्रबल विचार या मत यह है कि भ्रूणावरण की कतिपय अतिरिक्त कोषाये (सेल्ज) जो भ्रूण की उत्पत्ति विषयक आवश्यकता से अधिक (अतिरिक्त) होती है, प्रसवोत्तर किसी समय शरीर की वर्धन शक्ति की प्रेरणा से बढकर अर्बुद बन जाते है । परतु कतिपय अर्बुद आनुवशिक (मौरूसी) होते है, जैसे–कर्कटार्बुद वा सरतान (Cancer) और कतिपय स्थानीय क्षोभ या आघात आदि के कारण उत्पन्न होते है ।

लक्षण——यह शोथ मास और त्वचा से भिन्न होता है अर्थात् त्वचा के नीचे जिस ओर फिराये अपने स्थान से उस ओर फिर जाता है और आयतन मे चने से खरबूजा के बराबर तक होता है तथा अपने विशिष्ट आवरण मे परिवेष्टित होता है ।

भेद——रचना एव भौतिक स्थित्यनुसार उसके निम्न भेद होते है ——

(१) शह्मिय्य. (मेदवत्), (२) असलिय्य (मधुवत्), (३) अर्द हालिय्य (हरीरावत्) और (४) शीराजिय्य (शीराजो सालनवत्) ।

रोगी के जीवन की दृष्टि से इसके ये तीन भेद होते है——(१) सल्आ मह्मूदा या सल्आ गैरखबीसा (अनात्ययिक), (२) सल्आ खबीसा या मुह्लिका (घातक या आत्ययिक) और (३) सल्आ रदिय्य ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार——(१) करफ्स की जड को जौ के आटे के साथ लेप करने, (२) सौसन की जड और पत्ते कूटकर मद्य मे पकाकर लेप करने, (३) उशक को सिरका मे घोलकर लेप करने से अर्बुद का नाश होता है तथा कफज एव कण्ठमाला के शोथ मे भी लाभ होता है । (४) जरावद तवील और (५) जरावद मुदह्रज दोनो लेप की भाँति उपयोग करने से अर्बुद नष्ट होता है । (६) ३॥ माशा गारीकून पीने और लेप करने से शोथ नष्ट हो जाता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार——(१) मरहम दाखिलयून या (२) मरहम रुसल या (३) मरहम जदवार या (४) मरहम उशक या (५) मरहम अक्बर या (६) मरहम शलगम या (७) मरहम मुहल्लिल या (८) मरहम काफूर का उपयोग शोथ विलयन के लिये लाभकारी है । अर्बुद का भेदन कर दोप निर्हरण

करने एव व्रणरोपण के लिये (९) मरहम शिगरफ या (१०) मरहम ईसा या (११) मरहम जिन्दगी या (१२) मरहम मुजर्रब या (१३) मरहम सुर्ख या (१४) मरहम राल का उपयोग गुणकारी है।

१८—खुराजात, दुबैलात, दमामील

नाम—(अ०) खुराजात, दुबैलात, दमामील , (उ०, हि०) फोडे, बडे फोडे, फुसियाँ , (स०) विद्रधि, पिडका , (अ०) ॲब्सेस (Abscess), बॉइल (Boil)।

हेतु और लक्षण—खुराज वृहदायताकार (बड़े) उष्ण शोथ को कहते है, जो साद्र दोष से उत्पन्न होता है। दुबैला उस वृहद् एव वृत्ताकार शोथ का नाम है जिसका रग साधारणतया त्वचा के वर्ण का हुआ करता है और जब तक उसमे पूय न पड़ जाय तब तक वेदना नही होती। दुम्मल (फोडा) गोपुच्छाकार लाल या पीले रग का शोथ है जिसमे दोष की तीक्ष्णता के कारण वेदना भी प्रतीत होती है। किसी-किसी के मत से खुराज उष्ण शोथ से हुआ करता है और दुबैला से शीतल शोथ विवक्षित है। किसी-किसी के मतानुसार आभ्यतरिक व्रणशोथ को दुबैला और बाह्य को जराहात कहते है। परतु प्रथमोक्त उष्ण और उपरोक्त प्राय शीतल दोष के कारण प्रगट होता है। हेतु, वर्ण, स्पर्श एव अन्यान्य विशिष्ट उपद्रवो से इसका निदान सभव हो सकता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आवश्यकतानुकूल सिरावेध एव विरेचन के उपरात (१) इसबगोल की भूसी गुलरोगन के साथ लेप करने से उष्ण विद्रधियाँ आराम होती है। इस हेतु समूचा इसबगोल भी पानी मे भिगो कर लगाये जाते है। (२) खतमी का लेप करने से शोथकारक दोष पक्व हो जाता है। (३) अलस के लेप से भी उक्त लाभ होता है। इसी प्रकार (४) पीले अजीर को चावकर इस प्रकार के शोथ पर लगाने से वह पक जाता है। (५) उद्यानज पुदीना को जौ के आटे के साथ पानी मे पकाकर दुबैला पर लगाने से वह फूट जाता है। (६) बिनौला का लेप या (७) साबुन का लेप (दुम्मलो) को पकाता हे।

सिद्ध योग—(१) व्रणशोथ पाचक एव वेदना नाशक पुलटिस—अलसी, कनोचा के बीज, इसबगोल, सन के बीज प्रत्येक १ तोला, गेहूँ का आटा ४ तोला सबको दूध मे पीसकर पकाकर पुलटिस बाँधें। (२) दुम्मल नाशक (शोथ विलयन) प्रलेप योग—अबा हलदी, साबुन, रेंडी की गुद्दी गूगल प्रत्येक १ तोला सबको हरे मकोय के रस मे पीसकर लेप करें। (३) व्रणशोथ विदारक लेप—मैनफल

का छिलका, गूगल, कुव. प्रत्येक १ तोला, सबको कूट-छानकर घीकुवार के लुआब मे मिलाकर इतना पकायें जिसमे किमाम हो जाय, तदुपरात रेंडी के पत्ते पर फैलाकर व्रणशोथ के ऊपर चिपका देवें। यदि एक रात्रि और दिन मे विदीर्ण न हो तो दोबारा उपयोग करायें तथा दोषनिर्हरण होने के उपरात उपयुक्त मरहम लगायें। (४) व्रणशोफविदारणोत्तर व्रणशोधन-रोपण लेप योग---अलसी, गेहूँ का आटा, नीम के पत्र प्रत्येक ३ तोला पानी मे पीसकर पुलटिस के समान पकाकर बाँधे। (५) व्रणशोधन-रोपण मलहर---नीम के पत्र २ तोला पीसकर टिकिया बनाकर ४ तोला तिल के तेल मे जलायें। इसके उपरान्त १ तोला मोम पिघलाकर सिंदूर, सफेदा काशगरी, सफेद राल प्रत्येक ३ माशा पीसकर मिलाकर मलहर प्रस्तुत करें। (६) मरहम सफेदा---सफेद काशगरी १॥ तोला खूब महीन पीसकर ३॥। तोला गाय के घी मे डालकर लोहे की कढाई मे अग्नि पर रखें और मृदु अग्नि देवें और नीम के सोटा से इतना घोटे कि (किमाम) की भाँति हो जाय, जिसकी पहचान यह है कि एक बूँद जल मे डालने से तुरत जम जाता है। बस अग्नि पर से उतारकर शीतल होने के पश्चात् कपडे पर लगाकर (दुम्मल) पर चिपकाये।

मरहम पुब., मरहम एजान, मरहम राल, मरहम हफ्त दारू और मरहम मिश्री आदि अन्यान्य उपयोगी सिद्ध योग है।

१९---नमूला

नाम---(अ०) नम्ल (साइय्य), (उ०) नमूला, (हि०) मकडी मल जाना, मकडी मूतना, (स०) कक्षा, (स०) हर्पीज (Herpes)।

वर्णन---इस रोग मे सम्पूर्ण शरीर या शरीर के किसी विशेष भाग पर दाद के समान एक वा अनेक दाने निकल आते हैं जिनमे तीव्र दाह एव कण्डू होता है। उक्त स्थान पर ऐसा प्रतीत होता है मानो च्यूँटियाँ रेंगती हो। इसीलिये अरबी मे इसे 'नम्ल'. (च्यूँटी) और अगरेजी मे 'हर्पीज' (रेंगना) कहते हैं।

हेतु एव लक्षण---ये फुसियाँ तीक्ष्ण, दाहक एव पैत्तिक दोष से उत्पन्न होती हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान मे चलती हुई मालूम होती हैं। इसके निम्न भेद हैं---(१) नमूला बसीत या साजिज, यह आयुर्वेद का 'जालगर्दभ' (सु०, च०) और पाश्चात्य वैद्यक का हर्पीज सिम्प्लेक्स (Herpes Simplex) है। (२) नमूला मिन्तकिय्य जिसे आयुर्वेद मे 'कक्षा' (चरक, वाग्भट) और पाश्चात्य वैद्यक मे हर्पीज जॉस्टर (Herpes Zoster) कहते हैं।

(३) नमूला हल्किय्य जिसे अगरेजी मे हर्पीज सिर्सिनेटस (Herpes Circinatus) कहते है । यूनानी वैद्य इनमे से दूसरे और तीसरे भेद को नमूला मुत्कालला कहते है । इसका जख्म गहरा होता है और यह त्वचा एव मास को नष्ट कर देता है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--विरेचनोत्तर (१) अकाकिया पानी मे घोलकर फुसियो पर मलने से लाभ होता है । (२) नमक और सिरका के साथ पतला लेप करना उनको फैलाने से रोक देता है । इसी प्रकार (३) सिरका मे कपडा या इस्पज तर करके, फुसियो पर रखने से लाभ होता है । (४) जौ के आटे को हरे धनिये के रस या (५) मकोय के पत्र स्वरस मे गूँधकर अथवा (६) पुदीना के पत्ती को पानी मे पीसकर लेप करने से बडा लाभ होता है । (७) रसवत को पानी मे घोलकर मलने से भी लाभ होता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) जिमाद नारुवा या (२) जिमाद माजू या (३) मरहम नारुवा इनके बहिर प्रयोग और (४) दवाए नारुवा के आतरिक उपयोग से इस रोग मे लाभ होता है ।

२०--याकूत अहमर

नाम--(अ०) याकूत अहमर, (फा०) शबे चिराग , (उ०) हजार चश्मा , (स०) प्रमेह पिडका , (अ०) कारबकल (Carbuncle) ।

वर्णन--इस रोग मे त्वचा एव उसके नीचे की धातु मे शोथ (सोजिश) उत्पन्न होकर एक वडी पिडका (दुम्मल) बन जाती है ।

हेतु--अधिकतया यह रोग मधुमेह (जयाबीतुस) के कारण होता है। किन्तु वातरक्त, रक्तदुष्टि एव सामान्य कायिक दौर्बल्य से भी यह व्याधि हो जाया करती है ।

लक्षण--रुग्ण स्थान की त्वचा अत्यत लाल, वेदना पूर्ण और शोथयुक्त होती है । शोथ उत्तरोत्तर बढता जाता और स्याही मायल होता जाता है । पुन. उस पर एक फफोला (विस्फोट) प्रगट होकर जब वह फटता है तब उसके नीचे कई एक छिद्र दिखाई देते हैं, जिनमे से पतला पूय निर्हरण होता है । किन्तु उन्हें दवाने से सान्द्र एव पिच्छिल द्रव निकलता है । व्रण बढता जाता है और उससे छिछडे आदि निर्हरण होते रहते हैं । अन्ततोगत्वा सपूर्ण विकारी धरातल की त्वचा चलनी के सदृश सुषिरपूर्ण हो जाती है । कभी अनेक छिद्र मिलकर एक अत्यत कुरूप छिद्र वन जाता है जिसके भीतर खाकस्तरी रग का छिछडा

होता है जिसके निकल जाने से वहाँ पर एक बडा गुहा बन जाता है। इस प्रकार के फोडे मे जलन, टीस एव अत्यत वेदना हुआ करती है। किन्तु छिछडा निर्हरण हो जाने के उपरात कष्ट कम हो जाया करता है।

वक्तव्य—इस प्रकार का फोडा साधारणतया ग्रीवा, पृष्ठाय नितम्ब (सुरीन) पर निकला करता है। जब इस प्रकार का फोडा शिर या ग्रीवा पर निकले तो दौर्बल्य की अधिकता या रक्तस्राव आदि से रोगी प्राय नष्ट हो जाया करता है। जब मधुमेह (जयाबी तुस) या लालामेह (बौल जुलाली) भी साथ मे हो ओर रोगी वृद्ध हो, तब भी साधारणत यह साघातिक हुआ करता हे।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) सफेदा कलई और (२) गिल अरमनी समभाग लेकर काहू के स्वरस मे पीसकर थोड़ा जैतून का तेल मिलाकर रुग्ण स्थान पर लेप करें या (३) ताजा नहरी केकडा (जो विशेष लाभकारी है) हरे मकोय के रस मे पीसकर लेप करे। जब वह व्रणित हो जाय तब (४) समूचा कछुआ जलाकर गाय के घी मे मिलाकर उस पर लगाये। (५) सीसे (नाग) को हरे मकोय के रस और किंचित् सिरका मे घिसकर रुग्ण स्थान पर पतला लेप करे अथवा उसे जलाकर उस पर लगाये। (६) बिल्ली की हड्डी त्रिफला के पानी मे पीसकर पतला लेप करे। (७) सफेदा कलई और (८) तूतिया मग्सूल समभाग पीसकर गुलरोगन मे मिलाकर लगाने और ऊपर से नीम की गरम पत्ती बाँधने से भी उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—रुग्ण स्थान पर पाँच-सात जोक लगाये या यदि रोगी बलवान् हो तो शिरावेध करे और सौदापाचन औषधि पिलाकर सौदा विरेचन एव माउज्जुब्न से रोगोत्पादक दोष का शोधन करें। तदुपरान्त (१) अतरीफल की गुद्दी ९ माशा से १॥ तोला तक सादे पानी या अन्य उपयुक्त अर्कों के साथ सेवन करायें। बाह्यरूप से (२) मरहम शिगरफ एक कपडे पर आवश्यकतानुसार चिपकाकर रुग्ण स्थान पर लगायें या (३) मरहम रस कपूर उक्त विधि से उपयोग करें।

सूचना—जब मधुमेह के परिणामस्वरूप यह रोग हुआ हो तब दोषपाचन, विरेचन और रक्तमोक्षण स्थगित रखे और केवल उपर्युक्त स्थानीय चिकित्सा करें और आतरिक रूप से मधुमेहनाशक उपचार काम मे लेवें।

———

२१--नासूर

नाम--(अ०, उ०) नासूर , (स०) नाडीव्रण , (अ०) सायनस (Sinus) ।

हेतु और लक्षण--सामान्यतया साधारण व्रण पुराना होकर नासूर का रूप ग्रहण कर लेता है और उससे निरतर पूय या द्रव वहता रहता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) कच्चे अगूर का रस सिरका मे मिलाकर नासूर मे पिचकारी करने या उस पर लगाने से लाभ होता है। (२) महीन पिसे हुए हींग या (३) सदरूस की वत्ती वनाकर नासूर के छिद्र मे भरने तथा इसकी धूनी देने से नारुवा मे लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) मरहम उस्तरवान या (२) मरहम नासूर या (३) रोगन वर्ग नीम की पिचकारी या वर्ति का उपयोग नहरुवा मे उपकारक है।

रोमरोगाधिकार (अम्राजुश्शार) १६

१--दाउस्सालब, दाउल्हय्य

नाम--(अ०) दाउस्सालब, दाउल्हय्य ; (उ०) बालचर, बालखोरा ; (स०) इन्द्रलुप्त भेद, (अ०) एलोपेशिया एरिएटा (Alopecia Areata) ए० फर्फ्युरेशिया (A Furfuracea)।

वर्णन--इस रोग (दाउस्सालब) मे शिर के बाल गिरने लग जाते है। कभी-कभी जब बालो के साथ त्वचा भी उतरने लग जाती है तब उसे दाउल्हय्यः कहते है।

हेतु--इन उभय व्याधियो (दाउस्सालब और दाउल्हय्य) का हेतु जला हुआ कफ (क्षारीय कफ), तीक्ष्ण पित्त और जला हुआ सौदा हुआ करता है।

लक्षण--शिर की त्वचा पर एक धब्बा-सा प्रगट होता है जिस पर छोटी फुसियो का एक घेरा होता है जो पीछे सूख जाती है। पुन उनसे छिलका झड कर उड जाता है। रोग उन्नत होकर कई गोल-गोल चिह्न उत्पन्न हो जाते है, जिनके ऊपर भूसी लगी होती है और उस स्थान के वाल उखडकर नष्ट हो जाते है। यह रोग बडा हठीला होता है। कभी भौ, मूँछ और सारे शिर पर के बाल गिर जाते है।

निदान--प्रत्येक दोष के विशिष्ट लक्षण के अनुसार इसका निदान किया जा सकता है। रुग्ण स्थान को खुरदरे कपडे से रगडने से यदि त्वचा लाल हो जाय तो यह रोग के शीघ्र साध्य होने के लक्षण समझें, अन्यथा असाध्य एव दुश्चिकित्स्य समझें।

चिकित्सा--यदि रोग कफज हो तो कफ-पाचन औषधि पिलाकर कफ का शोधन करे। यदि किसी अन्य दोष के कारण यह रोग हुआ हो तो उसका यथोचित उपचार करें।

ठढाई (तवरीद)के लिये १२ तोले अर्क शाहतरा मे ५-६ माशे मीठे कद्दू के बीज के मग्ज और तरबूज के बीज के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलायें या १२ तोले बकरी के दूध मे शर्बत उन्नाव २ तोला मिलाकर पिलायें। निम्नलिखित योगो का बाह्य उपयोग करायें--

रोगन दाउस्सालब--हसराज, गुलबाबूना, कैसूम प्रत्येक ४ तोला रात्रि मे जल मे भिगोकर सवेरे उबाल कर मल-छान लेवें। इस काढे मे ५ तोले

रोगन पान मिलाकर अग्नि पर इतना पकायें कि पानी सूख जाय और केवल तेल मात्र शेष रह जाय। इसे वालखोरा पर लगायें।

अन्य—गंधक, मसीकृत वकरी का सुम, मसीकृत वकरी का ऊन (पश्म), आमला, अनार की छाल, पोस्ते की डोडी, मसीकृत कमीला प्रत्येक १ तोला, काली मिर्च आधा तोला—सब द्रव्यो को पीसकर सरसो के तेल मे मिलाकर लेप करें।

अपथ्य—मास, मिर्च प्रभृति उष्ण पदार्थो से परहेज करें।

पथ्य—शीतल पाक और दूध इत्यादि सेवन करें।

२—तसाकुत शार

नाम—(अ०) तसाकुतुश्शार, इन्तिशारुश्शार, सलअ, (उ०) वाल गिरना, वालझड, चँदला, चँदिया पर के वाल उड जाना, (स०) इन्द्रलुप्त, खालित्य, (मा. नि) रुज्या (सु०) रुह्या (मा नि) रूढ्या (अ० हृ०) चाच, (अ०) एलोवेशिया (Alopecia), वाल्डनेस (Baldness)।

वर्णन—इस रोग मे कभी थोडे और कभी सारे शिर के वाल गिर जाते हैं।

हेतु और लक्षण—भोजन की कमी, स्रोतोविस्फार, रूक्षता एव साद्र द्रव आदि इस रोग के हेतु होते हैं। इन्तिशारुश्शार मे समस्त शिर के वाल गिरने आरभ हो जाते हैं। सलअ के केवल चँदिया के वाल गिरते हैं। पर इन उभय दशाओ मे शिर की त्वचा विकृत नही होती। वृद्धावस्था मे हुआ सलअ रोग असाध्य है।

चिकित्सा—यदि आहार की अल्पता से यह रोग हो तो उत्तम पौष्टिक आहार सेवन करायें, स्नान करायें और शिर के ऊपर रोगन वनफ्शा का अभ्यग करायें। स्रोतोविस्फार जन्य रोग मे सग्राही औषधियाँ, जैसे काबुली हड, हरा माजू, अकाकिया आदि पानी मे काढा करके परिषेक करायें और सग्राही तेलो (जैसे रोगन आमला) का शिरोऽभ्यङ्ग कराये। रूक्षताजन्य रोग मे प्रकृति का स्नेहन करें। इस प्रयोजन के लिये स्नान करायें। रोगन बाबूना का शिरोऽभ्यङ्ग करे। स्नेहाक्त एव तर (स्निग्ध) आहार सेवन कराये। साद्रदोषजन्य रोग मे खूब स्नान करें।

पथ्यापथ्य—लघु, शीघ्रपाकी एव वल्य आहार देवे। आलू, वैंगन, कचालू, गोभी, मसूर की दाल प्रभृति आध्मानकारक एव सौदावी आहारो से परहेज करें।

३—शैब, शैबुश्शार

नाम—(अ०) शैव, शैबुश्शार , (उ०) वाल सफेद होना (आना), सफेद बाल , (स०) पलित , (अ०) केनिशीज (Canities), होरिनेस (Hoariness) ।

वर्णन—इस रोग मे दाढी, मूँछ ओर शिर के वाल न्यूनाधिक श्वेत हो जाते है। यह रोग दो प्रकार का होता है। एक कालज (वृद्धावस्थाज) पलित, स्वाभाविक जरापलित (बुढापे मे होनेवाला पलित), दूसरा अकालज पलित वा वैकृत पलित ।

हेतु—साधारणतया यह रोग पैतृक वा आनुवशिक होता है। परतु सामान्य दौर्वल्य विशेषकर वातिक दौर्वल्य, भय, चिता आदि का आधिक्य तथा अन्यान्य मानसिक कष्ट भी इसके हेतु होते है।

लक्षण—यद्यपि यह रोग धीरे-धीरे प्रारभ होकर कुछ वर्षोपरात दाढी, मूँछ और शिर के समस्त वाल श्वेत कर देता है, तथापि ऐसी घटनायें भी देखने मे आई है कि थोड़े दिनो मे प्रत्युत् एक ही रात्रि मे सारे वाल श्वेत हो गये।

चिकित्सा-सूत्र—प्रतिदिन सबेरे हड का एक मुरब्बा खिलायें और प्रत्येक मास मे एक सप्ताह अतरीफल सगीर सेवन करे। दो मास के उपरान्त कफ का विरेचन देवे। अम्ल पदार्थ के सेवन, शिरावेध और स्त्री-समागम से परहेज करे।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) रोगन जैतून दश्ती का दैनिक शिरोऽभ्यङ्ग बालो को स्थिर रखता है। (२) काली हड ७ माशा का चीनी या मधु के साथ निरतर सेवन से शीघ्र वृद्धावस्था आने नही देती। इसी प्रकार (३) काबुली हड एव (४) उस्तूखूद्दूस का सेवन भी गुणकारी है। (५) रोगन पिस्ता या (६) रोगन कुश्त (कुष्ठ तैल) का शिरोऽभ्यङ्ग वालो की स्याही का रक्षक है। (७) सरो के फल को पानी मे रगड कर शिर और दाढी धोने अथवा इसके काढे से शिर धोने से बालो की स्याही (श्यामता) स्थिर रहती हे।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल शाहतरा ७ माशा से १ तोला तक या (२) अतरीफल उस्तूखूद्दूस ७ माशा से १ तोला तक या (३) अतरीफल कश्नीजी ९ माशा से २ तोला तक १२ तोले अर्क गावजबान के साथ या १२ तोला अर्क सौफ या ताजा पानी के साथ सेवन करने के समय से पूर्व (असमय) बाल श्वेत नही हो पाते। इसी प्रकार (४) अतरीफल सगीर १ तोला या (५) अतरीफल कवीर ७ माशा से १ तोला तक २ तोले अर्क गावजबान के साथ सेवन कराने से उक्त लाभ होता है।

सिद्ध योग—(१) माजून शवाब—काली हड ३ तोला, बहेडा २०तोला, काली मिर्च, शुद्ध गधक प्रत्येक १ तोला, सोठ, गुलाब के फूल, कुदुर, वच, मण्डूर भस्म प्रत्येक ९ माशा—समस्त द्रव्यो को महीन पीसकर हड के मुरब्बा के शीरा मे मिलाकर माजून बनायें। मात्रादि—१॥ तोला। यह माजून प्रात-सायकाल अर्क गावजबान से खिलायें। असमय मे बाल श्वेत होने नहीं देता।

(२) रोगन खिजाब—यह बालो को काला करता है। आम की केरी ऽ।, माजू, फौलाद का बुरादा प्रत्येक ११ माशा, खट्टा अनार ऽ।, काले तिल का तैल ऽ।।।, समस्त द्रव्यो को कूटकर तेल मे मिलाकर मिट्टी के पुराने पात्र मे डालकर चालीस दिन तक घोडे की लीद मे गाड रखें। तदुपरात निकालकर तेल सुरक्षित रखें। आवश्यकता होने पर बालो पर लगायें।

(३) खिजाब हिंदी—आम की केरी २०तोला, माजू, लोहे का बुरादा, गधक प्रत्येक ५ तोला, खट्टा अनार २० तोला, तिल का तेल ६० तोला, समस्त द्रव्यो को महीन कूटकर और तेल मे मिलाकर मिट्टी के पुराने पात्र मे डाल घोडे की लीद के नीचे गाड रखें और चालीस दिन पीछे निकाल कर व्यवहार करें।

———

नखरोगाधिकार (अम्राज़ुफ़्र) १७

१--तअक्कुफुल् अज्फार

नाम--(अ०) तअक्कुफुल् अज्फार , (उ०) नाखून का मोटा होना , (स०) नखस्थौल्य , (अ०) ऑनिकऑक्सिस (Onychauxis) ।

हेतु--साधारणतया यह रोग दाद, चवल या जलनदार फुसियो के जनक दोष के नख मे असर करने और आतशक प्रभृति रोग के कारण हुआ करता है। पर क्वचित् यह रोग जन्मज (मौलूदी) भी हुआ करता है।

लक्षण--नख स्थूल (मोटे) हो जाते है। कभी नख का एक भाग या केवल एक नख और कभी सारे नख इस रोग के आखेट होते है। रुग्ण नख के रग, आकार एव आकृति मे भी अतर आ जाता है। सुतरा नख मोटा होकर उँगली के किनारो मे शोथ का कारण भी हुआ करता है।

चिकित्सा--जिस रोग के कारण हो उसकी चिकित्सा करें और नख के विकारी भाग को तीक्ष्ण चाकू या कची से काट डाले।

२--तशक्ककुल्अज्फार

नाम--(अ०) तशक्ककुल् अज्फार, (उ०) नाखून का पतला पड जाना , (स०) नखक्षय, नखतनुत्व, (अ) ऑनिकएट्रोफिया (Onychatrophia) ।

हेतु और लक्षण--आतशक, चवल, दाद या आघात लगना विशेष कर वातनाडियो पर तथा वातनाडियो के कतिपय रोग इस रोग के हेतु हुआ करते है। रुग्ण नख इतना विकृत (कोथयुक्त) एव मृदु हो जाता है कि सरलता से चिर जाता है। इसका वर्ण सफेदी लिये प्रभाहीन हो जाता है।

चिकित्सा--जिस रोग के कारण यह व्याधि हुई हो उसका उपचार करें। नख को बहुत बढने नहीं देवें जिससे वे चिरकर कष्ट का कारण होवें।

३--दाखिस

नाम--(अ०) दाख़िस , (उ०, हि०) बुसहरी, बिसगाँठ, उँगलवेडा , (स०) चिप्प (क्षतरोग, उपनख, अक्षतनाम, चाक, अगुलिवेष्टक) , (अ०) ऑनिकिया (Onychia) ।

वर्णन—दाखस यूनानी शब्द का 'धात्वर्थ नखपाक' हे। इस रोग मे नखमूल मे साद्र रक्त के सचित होने से शोथ उत्पन्न हो जाता हे तथा उसमे अत्यत पीडा होती हे।

हेतु—आतशक, कण्ठमाला, चवल, दाद, स्थानीय आघात एव व्रण, सामान्य दौर्बल्य या जलनदार फुसियो के उत्पादक दोष का नखो मे लगकर शोथ आदि उत्पन्न करना इस रोग के हेतु हैं। अस्तु, नख की जड और उसके आस-पास शोथ एव दर्द होता हे। नख को दवाने से पूय निकलता हे। नख उँगली से ऊँचा होकर पृथक् हो जाता है जिसके नीचे एक दुष्ट प्रकार का व्रण होता है जो फैलकर कभी उँगली के पर्व (पोर) को मृत कर देता हे।

चिकित्सा—यदि यह रोग दौर्बल्य के कारण हो तो रोगी को पौष्टिक आहार और औषध देवे। यदि आतशक के कारण हो तो उसका यथोचित उपचार करें। यदि कण्ठमाला इस रोग का हेतु हो तो फौलाद के योग सेवन करायें। यदि दाद एव चवल आदि इसका हेतु हो तो उसका प्रतीकार करें। प्रारभिक रोग मे यदि इसवगोल सिरका मे मिलाकर और वर्फ मे शीतल करके रुग्ण स्थान पर बाँधे या हरा माजू सिरका मे पीसकर पतला लेप करें अथवा उश्नान का जल मे काढा करके उसमे कई वार उँगली रखें तो प्राय लाभ हुआ करता हैं। तीव्र वेदना होने पर अफीम और खुरासानी अजवायन सिरका मे पीसकर पतला लेप करें। जब पक जाय तब शस्त्र से भेदन करके पूय निकाल देवे और फिर अवसादक मरहम, जैसे मरहम सफेदा आदि लगायें।

सिद्ध योग—(१) मरहम सफेदा जो व्रण-शोष-रोपण है और विसहरी के लिये लाभकारी हे—सफेदा कलई, सफेद मोम प्रत्येक ७ माशा और गुलरोगन ११ माशा का यथाविधि मलहर प्रस्तुत करें।

(२) शर्वत चोबचीनी—चोबचीनी २० तोला, शीशम की लकडी का बुरादा, निगद वावरी, मुडी प्रत्येक ७ तोला, वर्गशाहतरा, धमासा, चिरायता, लाल चदन का बुरादा प्रत्येक २ तोला, चीनी ऽ१ सेर—समस्त द्रव्यो को रात्रि मे पानी मे भिगोयें। प्रात काढा करके छानकर चीनी मिलाकर शर्बत की चाशनी तैयार करें। इसमे से ३ तोला शर्वत १२ तोले अर्क मुडी से सेवन करें। यह विसहरी, महा कुष्ठ, आतशक और अन्यान्य सौदावी रोगो मे लाभकारी है।

मिश्ररोगाधिकार (अम्राज मुतफर्रिकः) १८

१—फर्बही

नाम—(अ०) फर्बही, समन मुफ्रित , (उ०, हि०) मुटापा, मोटापन , (स०) मेदस्वी, मेदो रोग , (अ०) कार्पुलेन्सी (Carpulency), ओबेसिटी (Obesity) ।

वर्णन—इस रोग मे शरीर के भीतर त्वचा के नीचे मेद की असाधारण वृद्धि हो जाती है ।

हेतु—अति खान-पान विशेष कर स्नेहायुक्त (तेल, घी आदि), मधुर एव पिष्टमय (श्वेतसारयुक्त) आहार तथा मक्खन, दूध, विशेष कर भैस के दूध का अतिसेवन, विलासिता एव सुख और आनन्द का जीवन व्यतीत करना, श्रम और व्यायाम न करना, प्रत्युत् आलस्य युक्त रहना इस रोग के उत्पादक हेतु है ।

लक्षण—शरीर मेद की अधिकता से भारी एव बेडौल और स्थूल हो जाता है । फुफ्फुसादि अग अपने प्राकृतिक कर्म सपादन नही कर सकते । शरीर के भारी होने के कारण व्यायाम असभव होता है जिससे पाचन शक्ति भी दुर्बल हो जाती है । चेहरा भुरभुराया हुआ (शोथयुक्त) हो जाता है । स्त्रियाँ अनार्तव काल मे प्राय इस रोग से आक्रान्त हो जाती हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) २॥ माशा प्रति दिन नीहार मुँह लाख के सेवन, (२) २॥। माशा सदरूस के निरन्तर सेवन और (३) भोजन मे कालीमिर्च के पुष्कल व्यवहार से शरीर कृश हो जाता है । राजी और मालिकी के कथनानुसार (४) गदना पका कर खाने से शरीर कृश हो जाता है । (५) शरीर पर जवाखार मलने से भी उक्त कार्य होता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार—मूत्रक और विरेचन औषधि के द्वारा शरीर का शोधन करें । रोगी को कम खिलायें । क्षुधा के समय स्नान करायें । तिक्त एव अम्ल पदार्थ सेवन करायें । भूमि पर शयन करने का आदेश करे । प्रति दिन पैदल भ्रमण करने और व्यायाम करने की प्रेरणा करें । और (१) अतरीफल फौलादी ५ माशा से १२ माशा तक १२ तोले अर्क गावजबान के साथ या (२) अतरीफल किश्नीली १ तोला या (३) जुवारिश कमूनी १ तोला १२ तोले के साथ सेवन कराये ।

सिद्धयोग—सफूफ मुहज्जिल—अजवायन, सौंफ, सुदाब, जीरा किर्मानी प्रत्येक एक तोला, लुक मग्सूल (धोई हुई लाख) २ तोला, मर्जन्जोश, बूरए

अरमनी प्रत्येक ३ माशा—सबको कूट-छान कर १४ माशा की मात्रा मे अर्क जीरए किर्मानी के साथ सेवन करायें और पानी के स्थान मे अर्क जीरा ही पिलाये। इससे शरीर कृश हो जाता है।

पथ्यापथ्य—स्नेहाक्त (रोग़नी), मधुर पिष्टमय ओर तरल भोजन से यावच्छक्य परहेज करें। आलू, सेम, चीनी आदि, दूध, मक्खन, मलाई ओर आशदार पदार्थ कदापि सेवन न करें।

२—हुजाल

नाम—(अ०) हुजाल, लागरी, (उ०, हिं०) दुबलापन, (स०) कार्श्य, क्षीणता, (अ०) इमेसिएशन (Emaciation)।

हेतु—अल्पाहार, अल्प पान, अधिक परिश्रम करना, अधिक दु ख, शोक एव चिता, मक्खन, दूध और स्नेहाक्त पदार्थ सेवन न करना, शरीर से अधिक रक्त का क्षरण होना आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—शरीर हलका-फुलका एव कृश होता है। चेहरा सूखा हुआ और हस्त-पाद दुर्बल होते हैं। दौर्बल्य एव कार्श्य उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा—जिन आहारो से एक स्थूल व्यक्ति को परहेज करना चाहिये, वे ही आहार कृश व्यक्तियो को अधिक सेवन करने चाहिये। उन आहारो का उल्लेख फर्बही (मोटापा) के प्रकरण मे किया गया है। परन्तु इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि एक ही समय आवश्यकता एव क्षुधा से अधिक भोजन कदापि न करें। क्योकि इस प्रकार आमाशय, अन्त्र और यकृत् आदि पर व्यर्थ का बोझा पड जाता है तथा लाभ के स्थान मे हानि होती है। ऐसे लोगो को इस बात की ओर अवश्य अधिक ध्यान देना चाहिये कि उनका आहार यथोचित प्रकार का हो और भोजन खूब चबाकर खाये, अन्यथा अन्त्र और आमाशय उसका सम्यक् पाचन नही कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त चित्त को प्रसन्न एव शोक, चिन्ता आदि से मुक्त रखने का यत्न करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) गाय, (२) बकरी, (३) नील गाय, (४) भैंस और इनका दूध, (५) ताजा पनीर, (६) फीरीनी तथा (७) दूध-चावल और खाँड ये समस्त द्रव्य पृथक्-पृथक् शरीर को स्थूल बनाते—परि-वृंहित करते हैं। इसी प्रकार (८) ३ माशा बूजीदान को हरीरो मे मिला कर सेवन करने से भी शरीर मोटा हो जाता है। (९) अगूर सेवन करने से भी शरीर अति शीघ्र स्थूल (मोटा) हो जाता है। परन्तु यह स्थायी नहीं होता, सत्वर विलीन हो जाता है। (१०) मीठा बादाम २॥ तोला,

(११) पिस्ता १ तोला, (१२) फिदका का मग्ज १। तोला और (१३) अखरोट की गिरी १।। तोला इन सब गिरियो को पृथक्-पृथक् चीनी के साथ सेवन करने से शरीर परिवृंहित होता है। (१४) तर या सूखा अजीर (१५) युवा एव मोटी मुर्गी और (१६) चकोर खाने से भी उक्त लाभ होता है। इसके अतिरिक्त (१७) वह्मन सफेद ६।। माशा, (१८) सफेद चना और तरजवीन २।। तोला तथा (१९) लोविया प्रत्येक का पृथक्-पृथक् सेवन भी शरीर को स्थूल बनाता है। (२०) मैदा और निशास्ता दोनो को दूध मे पका कर कई वार खाने या (२१) हरीसा से भी उक्त कार्य होता है। (२२) मेथी अकेले या गेहूँ के आटे के साथ पकाकर निरतर खाने से शरीर का मास बढता है। (२३) केला अकेले खाने, (२४) चीनी के साथ निरतर तिल सेवन करने, (२५) निरन्तर वत्तख का मास सेवन करने, (२६) बवूल का गोद, (२७) कतीरा ४।। माशा, (२८) रैहाँ के बीज ६ माशा, (२९) भोजनोत्तर मीठे आनार के दाने चूसने या राजी के मतानुसार (३०) निरन्तर ३० दाने मुनक्का सेवन करने और (३१) पोस्ते का तेल भोजन के साथ सेवन करने से शरीर परिवृंहित एव स्थूल होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) माजून हुजाल, (२) हलवाए गजर मग्ज सरकुजरकवाला और माजून गजर आदि का सेवन कार्श्य को दूर कर शरीर को परिवृंहित एव स्थूल बनाता है।

३--इर्क मदनी

नाम--(अ०) इर्क मदनी, रिश्त, (उ०, हि०) नारुवा, नहरुवा; (स०) स्नायुक कृमिरोग, (अ०) गिनी वर्म (Guinea worm)।

यह एक कृमि है जो मानव-शरीर या अन्य प्राणि-शरीर से निकलता हे।

हेतु--कतिपय स्थान मे यह रोग पुष्कल होता हे। विशेषकर ऐसे स्थानो मे जहाँ तालाब, झील या गदे सोते आदि का पानी पीना पडता है और ऐसे लोगो को जो कीचड वा पानी मे नग्न पाँव घूमते है यह रोग अधिक हुआ करता है। इस रोग का उत्पादक तत्त्व वे दूषित मल होते है जो सौदावी, क्षीण रक्त या विदग्ध कफ से प्राप्त होते है। जब ये मास के भीतर स्रोतो मे सचित हो जाते है तब असाधारण उष्णता उसको सम्पूरण कर देती है। पुन विसर्जनी शक्ति छिद्र बनाकर शरीर से उसका निर्हरण कर देती है।

लक्षण--प्रारम्भ मे एक दाना के समान प्रगट होता हे। तदुपरान्त वह स्थान शोथयुक्त होकर विस्फोट (आवला) का-सा स्वरूप धारण कर लेता हे।

अन्ततोगत्वा उसमे छिद्र होकर एक वस्तु श्वेत एव सूत के समान वारीक निकलती है ओर धीरे-धीरे निकल कर नि शेप (सपूर्णतया) निकल जाती हे। यदि सम्पूर्णतया निकलने के पूर्व खण्डित हो जाय, तो रोगी को असीम यातना का सामना करना पडता हे। सुतरा ज्वर हो जाता हे और उस स्थान पर व्रणशोफ वन जाता हे जिसमे दर्द एव जलन पाई जाती हे। कभी-कभी यह कृमि की भाँति त्वचा के नीचे गति करता है।

चिकित्सासूत्र—जव विस्फोट (छाला) प्रगट हो तव उसको शस्त्र-द्वारा भेदन कर कृमि के सिरे (शीर्ष) को धीरे से उठा कर मोम की वत्ती पर चिपकायें। प्रतिदिन कृमि को उस पर लपेटते रहें जिसमे कृमि सपूर्ण निकल जाय। रक्त की प्रगल्भता होने पर विपरीत ओर की वासलीक या साफिन का शिरावेध करें। रुग्ण स्थान पर जोक लगायें। आवश्यकता हो तो सौदा का विरेचन देकर या माउज्जुव्न के द्वारा उसका शोधन करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—विस्फोट (छाले) को तोडने और कृमि के निर्हरण के लिये (१) तम्बाकू का पत्ता गरम करके और गुलरोगन से स्नेहाक्त करके रुग्ण स्थल पर रखने या (२) हींग की पुलटिस वाँधने या (३) एलुआ पानी मे घिसकर लेप करने या (४) कलौंजी कूटकर और छाछ मे पकाकर रुग्ण स्थान पर वाँधने से कृमि अति शीघ्र नि शेप निकल जाता हे। जव इन ओषधियो से कृमि निकलने लगे तव पूर्वोक्त विधि से मोम की वत्ती पर उसे लपेट कर सम्पूर्ण निर्हरण करें।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मरह अफ्यून या (२) मरहम नारुवा या (३) तिला नारुवा रुग्ण स्थान पर लगायें और (४) हब्व नारुवा एक-एक गोली सवेरे-शाम या (५) अतरीफल मदनी १०॥ माशा खिलायें।

———

परिशिष्ट—१

ज्वराधिकार (हुम्मयात)

सामान्य विवरण

यूनानी अन्वेषको का यह मत है कि मनुष्य-शरीर मे सर्वाधिक उत्तम एव महत्त्व का अङ्ग हृदय है। उनका यह कथन है कि उसकी प्रत्येक विकृति तुरन्त सम्पूर्ण शरीर मे प्रभाव करती है। क्योकि इस उत्तम एव श्रेष्ठ अग से अनेक चेष्टावती वाहिनियाँ निकलती है जो समस्त अग-प्रत्यङ्ग मे जाती है। यूनानी वैद्य (हकीम) इनको अपनी परिभाषा मे शराईन (आयुर्वेद मे धमनियाँ) नाम से अभिहित करते है। शरीर मे कोई भी छोटे-से-छोटा अग ऐसा नही जिसमे इनका अस्तित्व न हो, क्योकि मानवशरीर को जीवित रखने और गलने-सडने (कोथ) एव अन्यान्य दुष्टियो से बचानेवाली जीवनीय शक्ति (कुव्वते हैवानी) जिसका उद्गम हृदय है, इन्ही के द्वारा शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्गो मे पहुँचती है। सुतरा उक्त अवस्थाओ मे अनिवार्यत हृदय की विप्रकृति से समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग को प्रभावित होना चाहिये। अस्तु, जब उसमे किसी कारणवश ऊष्माधिक्य हो जाता है तब ऊष्मा के समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग मे प्रसारित हो जाने से वे उष्ण होकर अपनी स्वाभाविक क्रिया से शून्य हो जाते है। यही वह अवस्था है जिसे हम ज्वर सज्ञा से अभिधानित करते है।

हृद्गत ऊष्मा के विविध स्वरूप होते है। कभी शरीर मे केवल इतनी ऊष्मा प्रादुर्भूत होती है जिससे केवल ओज (रूह) मे ऊष्मा प्रादुर्भूत हो जाती है और केवल उसी की ऊष्मा से हृदय उष्ण होकर ज्वर प्रगट हो जाता है। यूनानी वैद्य इस प्रकार के ज्वर को हुम्मा यौम* कहते है; क्योकि यह ज्वर साधारणत एक दिन-रात और किसी-किसी दशा मे क्वचित् तीन दिन से अधिक नही रहा करता। अतएव इसके उपचार की आवश्यकता नही। परतु बहुधा यह किसी वेदना, कुपचन, अनिद्रा, शोक एव क्रोध आदि के उपद्रव स्वरूप हुआ करता है। अतएव इनके निदान-कारणो की ओर ध्यान देने से यह दूर हो जाता है। कभी पहले पहल ऊष्मा अभिवर्धित होकर दोषो को उष्णीभूत कर देती है। इस कारण हृदय उष्ण होकर ज्वर हो जाता है। ज्वर का

---

* पाश्चात्य वैद्यक मे इसे फेब्रिक्युला फीवर (Febricula fever) और आयुर्वेद मे आह्निक या एकाह्निक ज्वर कहते है।

यह प्रकार अधिक सामान्य है। बहुधा ऋतु एव मलेरिया जैसे ज्वरो का सबध दोषो ही से होता है। शरीर मे दोष (अख्लात) चार प्रकार के पाये जाते है। अतएव यह ज्वर भी अनिवार्यत चार प्रकार का होता है। आगे इनमे से प्रत्येक का लक्षण एव चिकित्सा सहित वर्णन किया जायगा।

कभी यह ऊष्मा शरीरावयव मे अपना प्रभाव करती है और हृदय के द्वारा सपूर्ण शरीर मे व्यापमान होकर ज्वर का कारण होती है। इस प्रकार के ज्वर को हुम्मा दिक़[1] कहा जाता है। इस प्रकार का ज्वर अधिकतया ज्वरो की नियमित चिकित्सा न होने और शरीरस्थ द्रव (आक्लेद) अल्प हो जाने के पश्चात् हुआ करता है और इसके परिणाम प्राय भयकर होते हैं। अब यहाँ ज्वर के केवल कतिपय उन आवश्यक भेदो का विवरण किया जायगा, जो प्रायश हुआ करते है। हुम्मा यौम (एकाहिक ज्वर) के यूनानी वैद्यो ने यद्यपि अनेक भेद लिखे हैं, तथापि विस्तार भय से उनका यहाँ परित्याग किया जाता है। उपरि-लिखितानुसार ज्वर के निदान की ओर ध्यान देना तथा उसका परिवर्जन ही पर्याप्त होता है। आधुनिक अन्वेषणानुसार अधुना शरीरोष्मा या ज्वर के ज्ञान के लिये तापमापक यन्त्र (आलए मिक्यासुल् हरारत) या थर्मामीटर का सामान्य प्रचलन हो गया है और वस्तुत इससे ज्वरावस्था का यथावत् अनु-मान हो जाता है। अतएव तापमापक से शरीरोष्मा मालूम करते रहना और चिकित्सा की ओर ध्यान देना अतीव लाभकारी होता है।

हुम्मा यौम

नाम—(अ०) हुम्मा यौम, (स०) एकाहिक ज्वर, आहिक ज्वर, (अ०) फेब्रिक्युला (Febricula)।

वर्णन—एक प्रकार का सूक्ष्म ज्वर जो (अखाह सलासा) ओजत्रय अर्थात् रूह तबई (पोषणौज), रूह हेवानी (प्राणौज) और रूह नफसानी (मनोज) मे से किसी एक के साथ प्रकृत शरीरोष्मा के सबंध से होता है। इस ज्वर की ऊष्मा रूह (ओज) मे होती है और रूह एक सूक्ष्म तत्त्व (जौहर) है। अस्तु, यदि यह ऊष्मा दोषो (अख्लात) या अग-प्रत्यगो मे स्थानान्तरित न हो जाय, तो शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। प्राय यह देखा गया है कि एक दिन-रात से यह ज्वर आगे नहीं डँकता। इसी कारण इस ज्वर को हुम्मा यौम (तपे यकरोजा) कहते है। इस प्रकार का ज्वर साधारणत आगन्तुक कारण (अस्बाबे खारिजा),

---

१ आयुर्वेद मे इसे 'राजयक्ष्मा', 'क्षय' आदि कहते है। विशेष विवरण के लिये पृ० २२५ देखे।

जैसे--दु ख, चिन्ता, परेशानी, दौड-धूप, आयास आदि से प्रगट हुआ करता है। कभी अजीर्ण और पचन-विकार के कारण और कभी वेदना के कारण और त्वग्गत फोडे-फुसी के कारण हो जाता है जो एक दिन रहकर उतर जाता है।

हेतु--इस ज्वर की मर्यादा साधारणतया एक दिन हुआ करती है। इस जाति के ज्वर मे ओजत्रय (रूह, हैवानी रूह तबई और रूह नफ्सानी) को सर्व-प्रथम अप्राकृत ऊष्मा उष्ण करती है। यदि ऊष्मा का सबध रूह तबई से हो तो उसका हेतु पचनविकार, उष्ण आहारौषध का सेवन है। यदि रूह हैवानी से हो तो उसके हेतु शोक, प्रसन्नता और स्नानागार की ऊष्मा प्रभृति हैं, इसी प्रकार यदि वह रूह नफ्सानी से हो तो उसके हेतु मानसिक श्रम, चिता और अनिद्रा आदि हैं। उक्त अवस्था मे इसको विभिन्न सबधो के अनुसार गजबी (भयज्वर), जूई (क्षुधाज्वर) और अतशी (तृष्णा ज्वर) प्रभृति कई एक सज्ञाओ से अभिधानित किया जाता है।

निदान के लिये प्रथम उपर्युक्त हेतुओ की विद्यमानता आवश्यकीय है।

लक्षण--हुम्मा यौम (एकाहिक-ज्वर) का सामासिक लक्षण यह है कि इसकी उष्णता एक समान और अकष्टदायिनी (दाहक नही) होती है, नाडी और मूत्र मे किचिन्मात्र परिवर्तन नही होता तथा बहुधा इस प्रकार का ज्वर एक-दो दिन रहकर उतर जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) पोस्ता का दाना ६ माशा, (२) काहू के बीज ६ माशा इनका शीरा पीने या लेप की भॉति लगाने से नीद आती है तथा मानसिक एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम, नफ्सानी) मे लाभ होता है। (३) आबजन मे बैठना, मनोरजक उपाख्यान या कथा श्रवण करना भयजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम गजबी) मे लाभकारी है। इसी प्रकार (४) यवमड (आश जौ) और अन्यान्य उपयुक्त आहार सेवन से क्षुधाजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम जूई) मे उपकार होता है। (५) शीतल फलो के रस और शीतल जल-सेवन से तृष्णाजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम अतशी) नष्ट हो जाता है।

हुम्मा खिल्ती (उफूनती बुखार)

नाम--(अ०) हुम्मा खिल्ती, (उ०) उफूनती बुखार, (स०) दोषज ज्वर, (अ०) सेप्टिक फीवर (Septic Fever)।

तपे खिल्ती वह ज्वर है जो अख्लात (दोषो) की दुष्टि (उफूनत) या उनके प्रकोप (जोश) से उत्पन्न होता है। इसके विपरीत हुम्मा यौम (एकाहिक ज्वर)

और हुम्मादिक (राजयक्ष्मा) मे दोषो की दुष्टि वा प्रकोप अनिवार्य नही हे अथवा दोषदुष्टि से इनका कोई सवध नही होता।

यूनानी वैद्यक के मत से अख्लात (दोष) चार हैं। अतएव हुम्मा खिल्ती (दोषज ज्वर) भी चार प्रकार के होते हैं। पुनश्च इनके दो उपभेद होते हैं—(१) हुम्मा खिल्ती वसीत (साधारण या स्वतत्र अथवा असंसृष्ट दोषज ज्वर) और (२) हुम्मा खिल्ती मुरक्कव (ससृष्ट दोषज ज्वर)।

हुम्मा खिल्ती वसीत—अर्थात् तपे खिल्ती मुफरदा वह ज्वर है जो केवल एक दोष के प्रकोप एव दुष्टि से प्रगट हो। इसके ये दो स्वरूप हैं—(१) दोष प्रकुपित एव उष्ण होकर ज्वर उत्पन्न करे। यह दशा विशेषत रक्त के साथ सवधित है, क्योंकि वह स्वय उष्ण है तथा अन्यान्य दोषो की अपेक्षया शरीर मे प्रचुरता से पाया जाता हे। (२) कोई दोष दूषित होकर ज्वर उत्पन्न करे और यह शेष अन्य समस्त दोषो मे सभव है। सुतरा यदि रक्त दुष्टि से यह ज्वर हो तो उसे **हुम्मा दम्विया** या **मुत्बिका** कहते हैं। यदि पित्तविकृति से हो तो उसको हुम्मा सफराविया कहते हैं। इसी प्रकार यदि श्लेष्म दुष्टि से यह ज्वर हो तो उसे **हुम्मा वल्गमिया** और सौदाविकृति से हो तो उसको **हुम्मा सौदावी** कहते हैं। अस्तु, यदि इन दोषो की दुष्टि वाहिनियो के भीतर हो तो ज्वर निरतर (अविसर्गी—लाजिम) रहा करता है और इसको **हुम्मालाजिमा** (सतत या अविसर्गी ज्वर) कहते हैं। यदि वाहिनियो से बाहर, जैसे—आमाशय, अन्त्र, मस्तिष्क आदि मे दोष की दुष्टि हो तो उसको **हुम्मा दाइरा** या **हुम्मा नाइवा** यानी वारीका वुखार (नियतकालिक ज्वर) कहते हैं।

वक्तव्य—उपर्युक्त विभागानुसार **हुम्मा खिल्ती वसीत** (असंसृष्ट दोषज ज्वर) के निम्नलिखित भेदोपभेद होते है—(क) **हुम्मयात दम्विया** (रक्त ज्वर)। इसके ये दो उपभेद है—(१) सूनूखुस अर्थात् रक्त प्रकोपज ज्वर और (२) हुम्मा मुत्बिका अर्थात् शोणित ज्वर।

(ख) **हुम्मयात सफराविया** (पित्तज ज्वर)। इसके भी दो उपभेद है—(१) गिब्व दाइरा या तिजारी या तैया (तृतीयक ज्वर), जो बीच मे एक दिन का अतर देकर आता है जिस मे पित्त की दुष्टि वाहिनी के वाहर होती हे। (२) गिब्व लाजिमा अर्थात् लाजमी सफरावी वुखार जिसमे पित्त की दुष्टि वाहिनी के भीतर होती है।

(ग) **हुम्मा बल्गमिया**। इसके भी दो उपभेद होते है—(१) यदि कफ की दुष्टि वाहिनी के वाहर हो तो उसे परिभाषा मे **नाइवा** कहते है जो प्रतिदिन चढता और उतरता है। (२) यदि यह दुष्टि वाहिनी के भीतर हो तो उसे **लस्का** कहते है।

(घ) **हुम्मयात सौदाविया**। इसके भी ये दो उपभेद होते है—(१) यदि सोदा की दुष्टि वाहिनी के वाहर हो तो उसे परिभाषा मे 'रि वादाइरा' (चौथिया बुखार, चातुर्थिक ज्वर) कहते है। (२) यदि वह वाहिनी के भीतर हो तो उसे 'रिवा लाजिमा' कहते है।

हुम्मा मुरक्कवा अर्थात् तपे मुरक्कबा वह ज्वर है जो एकाधिक (दो या तीन) दोषो की दुष्टि या विकृति से हो अथवा अदोषज ज्वर (तप सादा) दोषज ज्वर (तप खिल्ती) के साथ ससृष्ट हो जाय।

वक्तव्य—आधुनिक अन्वेषणो से ज्ञात हुआ है कि नियतकालिक ज्वर (हुम्मा दाइरा) विशेषत दैनिक (रोजाना), तृतीयक या चतुर्थक ज्वर इत्यादि मलेरिया ज्वर (मलेरियल फीवर) होते है। अस्तु, रोजाना नौवती बुखार को अरवी मे **हुम्मा नाइबा** या **हुम्मा मोवाजिवा** ओर पाश्चात्य वैद्यक मे कोटीडियन फीवर (Quotidian Fever)[1] तथा तिजारी बुखार को अरवी मे गिब्ब दाइरा और पाश्चात्य वैद्यक मे टर्शियन फीवर (Tertian Fever)[2] तथा चौथिया बुखार को अरवी मे रिवा दाइरा और पाश्चात्य वैद्यक मे क्वार्टन फीवर (Quartan Fever)[3] कहते है। इनमे से प्रत्येक का वर्णन यथास्थान किया जायगा।

हुम्मा दम्विया अर्थात् तवे खूनी वा खूनी बुखार (रक्तज्वर)। इसके ये दो उपभेद है—(१) रक्त प्रकोपज ज्वर, इसको यूनानी वैद्यक मे 'सूनूखुस' और पाश्चात्य वैद्यक मे साइनॉखस (Synochus) कहते है। (२) रक्तविकारज ज्वर, इसको यूनानी वैद्यक मे 'हुम्मा मुत्बिका' और पाश्चात्य वैद्यक मे टायफस (Typhus) और टायफॉयड फीवर (Typhoid fever) कहते है।

टि०—सूनूखुस वास्तव मे यूनानी भाषा का शब्द है जो यूनानी वैद्यक मे तत्सम रूप मे पाश्चात्य वैद्यक मे किंचित् परिवर्तित रूप मे प्रयुक्त होता है।

हुम्मा मुत्बिका और हुम्मा मुहरिका का अतर

प्रथमोक्त शोणित ज्वर है जो रक्त विकार से उत्पन्न होता है तथा उसमे रक्तोल्वणता वा रक्त-प्रकोप के लक्षण जैसे—मुखमण्डल एव नेत्र का लाल होना निरतर एक समान ज्वर चढा रहना तथा शरीरगत गौरव अनुभूत होना प्रधान

---

१ आयुर्वेद मे इसको 'अन्येद्युष्क ज्वर' कहते है।

२ आयुर्वेद मे इसको 'तृतीयक ज्वर' कहते है।

३ आयुर्वेद मे इसको 'चातुर्थिक ज्वर' कहते है।

लक्षण होते हैं। विद्वद्वर कर्शी के मतानुसार यह ज्वर वरसाम (महाप्राचीरा-शोथ (Diaphragmitis), मुहरिका, हसवा व खसरा (रोमान्तिका) और जुदरी (चेचक, शीतला) इत्यादि मे परिणत भी हो जाता है। उत्तरोक्त लाजिमी सफरावी बोखार (सतत पित्तज ज्वर) है जिसका दोष हृदय एव यकृत् के समीपवर्ती वाहिनियो मे दूषित हो जाता है। इसमे तीव्र ऊष्मा होती है। तीव्र पिपासा लगती है, जिह्वाशोष होता तथा व्यग्रता एव व्याकुलता होती और पित्त के अन्यान्य लक्षण प्रगट होते हैं।

सूनूखुश वा मुत्विका

नाम—(अ०) सूनूखुस, मुत्विका, (उर्दू) खूनी बुखार, (स०) रक्तज्वर, शोणित ज्वर, (अ०) साइनॉखस (Synochus)।

वर्णन—जब चतुर्दोषो मे से रक्त दोष के भीतर विकार उत्पन्न होकर ज्वर होता है, तब उसको हुम्मा दम्वी वा दम्विय्यः (फसाद खून का बुखार–शोणित ज्वर) या हुम्मा मुत्विका और सूनूखुस कहते हैं। सूनूखुस मे रक्तोल्वणता वा रक्तप्रकोप के लक्षण पाये जाते हैं। इसमे न तो ज्वर उतरता है और न स्वेद आता है। मुत्विका मे सूनूखुस की अपेक्षया अधिक ज्वर होता है तथा उसमे दुष्टि (उफूनत) होती है।

हेतु—कभी पुष्टिकर आहार जैसे, मास-अडे आदि पुष्कल सेवन करने से रक्त प्रचुर प्रमाण मे उत्पन्न हो जाता है, विशेषत युवा पुरुषो मे और आतप वा अग्नि के सामने देर तक काम करने के कारण रक्त मे अधिक उष्णता उत्पन्न होकर ज्वर उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—मुख की मधुरास्वादता, अङ्गमर्द और जृम्भा का प्राबल्य होता, चेहरे की वाहिनियाँ फूली हुई होतीं, अग गौरव प्रतीत होता, नेत्र एव चेहरे लाल होते, ज्वर निरतर बना रहता, क्षुधा कम हो जाती, मूत्र किंचित् गाढा और नाडी स्थूल (अजीम) होती है।

चिकित्सा-सूत्र—यदि कोई बाधक (निषेधक) कारण न हो तथा रोगी बलवान् हो तो इसका सर्वोत्तम उपचार रक्तमोक्षण है। पर यदि बाधक कारण इसकी आज्ञा नहीं देवे तो द्रव्यभूत वा औषध द्वारा उपचार करें। सिरावेधन से पूर्व किसी अनुभवी हकीम से परामर्श करें और कुशल शल्य चिकित्सक से रक्त-मोक्षण करायें। जब इस ज्वर को तीन दिन हो जाए तब रक्तमोक्षण उचित नहीं, पर यदि रक्तविस्रावण अपेक्षित हो तो दोनो स्कधो (शानो) के मध्य प्रच्छान (पछने) लगवायें।

इस प्रकार के ज्वर का दारुणमोक्ष (बोहरान) साधारणतया सातवे दिन हुआ करता है। इसके उपरात भी दोष शेष रहे तो हरी कासनी का रस फाडकर ४ तोले की मात्रा मे लेकर उसमे २ तोला सादा सिकजबीन मिलाकर कुछ दिन पिलायें। परतु कास होने पर अम्ल सेवन उचित नही है। इसमे बिहीदाना या इसबगोल का लुआब (पिच्छा) पिलाना चाहिए और शर्बत बनफ्शा चटाना चाहिये। इस रोग मे अम्ल के स्थान मे कोई ऐसा पदार्थ जो ज्वर मे लाभ पहुँचाये और कास मे अहितकर न हो, उत्कृष्टतर होता है। इस प्रकार के ज्वर मे उन्नाव का फाण्ट वा क्वाथ बनाकर बारबार निरतर सेवन करना अतीव गुणकारी है, विशेषकर उस दशा मे जब कि दोष (माद्दा) का साद्रीकरण अभीष्ट हो। क्योकि उन्नाब दोष वा धातु को साद्र वा प्रगाढीभूत करता है। रक्त-प्रसादन के लिये केवल इसबगोल पर्याप्त है। आलूबुखारे का पानी भी गुण-कारक है, तथा कास मे अधिक अहितकर नही है।

असंसृष्टद्रव्योपचार—हुम्मा मुत्विका मे (१) १० तोला खट्टे अनार का रस या शर्बत ४ तोला पीने से उपकार होता है। (२) कच्चे खट्टे अगूर का शर्बत २ तोला और रुब्ब १ तोला भी इस ज्वर को नष्ट करता है। (३) शर्बत उन्नाब ३ तोला और १८ दाने उन्नाव का फाट पीने तथा (४) आलूबुखारा खाने और उसके १८ दाने का फाण्ट चीनी मिलाकर पीने से मुत्विका ज्वर नष्ट होता है। यदि मलावरोध हो तो (५) ९ दाना आलूबुखारा और १॥ तोला (६) इमली फाण्ट चीनी मिलाकर पीने से मलावरोध दूर होता और प्रकृति-मार्दव होता है। इस ज्वर मे (७) यवमड सर्वोत्तम (पथ्यतम) आहार है; क्योकि इससे सर्दी, तरी और स्रोतोविशोधन के अतिरिक्त अन्यान्य शीतल पदार्थो की भाँति दोष साद्रीभूत नही होते। इस प्रकार के शोणित ज्वर की दशा मे (८) छिली हुई मसूर की दाल का सिरका और मीठे बादाम के तेल के साथ पकाकर खाना अनुकूल आहार है। (९) खट्टे अनार के रस मे चीनी मिलाकर उसमे रोटी भिगोकर खाने से मुत्विका ज्वर के रोगियो को लाभ होता है। इस प्रकार के रोगियो को शीतल जल का सेवन लाभकारक है।

जालीनूस और बुकरात आदेशानुसार यदि इस ज्वर के रोगी को सिरावेध अतिसरण वा किसी पीडा के शमनार्थ टकोर (सेक) आदि की अपेक्षा हो तो उक्त क्रियाओ से पूर्व यवमड (आश जौ) का सेवन कदापि नही करना चाहिये।

ससृष्ट द्रव्योपचार—जब ज्वर शात हो जाय तब बलवर्धन के लिये प्रात-काल दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा खिलाकर ऊपर से मिलित अर्क कासनी ६ तोला, अर्क गर्जर ६ तोला और शर्बत नीलूफर २ तोला पिलाने से और सायकाल १ तोला सेब का मुरब्बा १ नग रजत पत्र मे लपेट कर १२ तोला

अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यदि मस्तिष्क दुर्बल हो तो सायकाल ५ माशा खमीरा गावजवान जवाहरवाला मे २ चावल कुश्ता मर्जा जवाहरवाला मिलाकर खिलाने से उपकार होता है।

हुम्मा सफरावी

नाम--(अ०) हुम्मा सफरावी (सफराविय्य), (उ०) तप सफरावी, सफरावी बुखार, (स०) पित्तज ज्वर, पैत्तिक ज्वर, (अ०) बिलियस फीवर (Bilious fever)।

वक्तव्य—तप सफरावी मुफरद व मुरक्कव (ससृष्टासमृष्ट पित्तज ज्वर)—यदि पित्त वाहिनियो के भीतर दूपित हो तो ज्वर लाजमी (अविमर्गी) होता है और एक दिन के वाद तीव्र होता है। इसको **गिब्ब लाजिम** कहते है। यदि पित्त आमाशय के आसपास की वाहिनियो (स्रोतो) मे दूपित हो तो उपद्रव वा लक्षण अधिक उग्र होगे। इसको **तप मोहरिका** कहते है। यदि पित्त स्रोतो (वाहिनियो) के वाहर दूपित हो तो उसे **गिब्ब दाइरा** सज्ञा मे अभिधानित करते है। पुनश्च जव दोप शुद्ध पित्त हो तो **गिब्ब खालिस** और जवकि पित्त कफ के साथ इस प्रकार ससृष्ट हो कि दोनो मे भेद न किया जा सके तव उसे **गिब्ब गैर खालिस** कहते है। पर यदि सगठन सुदृढ न हो तो उसे **शतरुल् गिब्ब** कहते है।

गिब्ब खालिसा दाइरा का यह स्वभाव है, कि एक दिन ज्वर आता है और दिन नही आता। परतु जब दो गिब्ब एकत्र हो जाते है तब उस समय ज्वर प्रतिदिन आता है। **गिब्ब गैरखालिसा दाइरा** का यह स्वभाव है कि एक दिन ज्वर तीव्र होता है और दूसरे दिन किंचित् परिवर्तित। परतु शतरुल्गिब्ब जिसके उभय दोष स्रोतो के बाहर दूषित हो उसका स्वभाव यह है कि एक दिन कफ ज्वर के लक्षण प्रगट होते है और दूसरे दिन कफ और पित्त दोनो के। कारण, कफज्वर की बारी प्रतिदिन होती है और पित्तज्वर की एक दिन बीच मे छोडकर। यदि शतरुल्गिब्ब के उभय दोष (कफ और पित्त) स्रोतो के भीतर दुष्टभूत हो तो उभय दोषो के लक्षण प्रगट होना अनिवार्य होगा तथा एक दिन बीच मे अतिरिक्त प्रगट होगा। यदि पित्त स्रोतो के भीतर और कफ-स्रोतो के बाहर दुष्टभूत हो तो पित्तज्वर अनिवार्य (लाजमी) होगा तथा कफज्वर भी प्रतिदिन आयेगा। उक्त अवस्था मे भी एक दिन बीच मे छोडकर ज्वर का तीव्र होना अनिवार्य है। इन तीनो भेदो को **शतरुल्गिब्ब गैर खालिसा** कहते है। यदि पित्त स्रोतो (रगो) के बाहर और कफ स्रोतो के भीतर दूषित हो तो कफज्वर अनिवार्य होगा

और पित्त ज्वर एक दिन के बाद आयेगा और उस दिन उपद्रव वा लक्षण अति तीव्र होंगे। इस भेद को **शतरुल्गिब्ब खालिस** कहते है। यदि चिकित्सक वा रोगी से कोई गडबडी न हो तो गिब्ब खालिस लाजिम एक सप्ताह और गिब्ब खालिस दाइरा दो सप्ताह से अधिक काल तक नहीं रहते।

हेतु—कभी पित्त पुष्कल प्रमाण मे उत्पन्न होता और दूषित होकर इस ज्वर का हेतुभूत होता है। कभी उष्ण पदार्थों के प्रचुर सेवन और ग्रीष्म ऋतु मे आतप (धूप) आदि से सावधान न रहने से शरीर मे पित्त प्रचुर उत्पन्न होकर दूषित हो जाता है तथा उक्त ज्वरोत्पत्ति का कारणीभूत होता है। कभी पित्त कफ मे मिलकर दूषित होता और ज्वर उत्पन्न करता है।

लक्षण—मुख का स्वाद सर्वथा कटु (कडवा) प्रतीत होता हे। जिह्वा शुष्क होती और उस पर काँटे पड जाते है। तृष्णाधिक्य होता। यदि शुद्ध पित्त ही पित्त हो तो तीसरे दिन ज्वर की बारी होती हे और ज्वर शीतपूर्वक चढता है। व्यग्रता और व्याकुलता अधिक होती है। कभी-कभी वमन होता है जिसमे पीले रग का पित्त सम्मिलित होता है।

चिकित्सा—ऐसी दशा मे १२ तोला अर्क शाहतरा मे ३–३ माशा छिले हुए काहू के बीज और मीठे कद्दू के बीजो का मग्ज तथा ५ दाना उन्नाव का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर प्रात काल पिलायें। यदि तीन-चार बारियाँ बीत जाएँ तो उक्त योग मे ७ माशे खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलायें और सायकाल ६–६ तोला अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क मे २ माशा जरिश्क और ५ दाना आलूबुखारा का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत सदल या ४ तोला शर्बत सेब मिलाकर पिलाये। यदि शिर मे पीडा हो तो सफेद चदन अर्क गुलाब मे घिसकर मस्तक पर लेप करे। शोष और तृष्णा की अधिकता की दशा मे इसबगोल पोटली मे बाँधकर अर्क गुलाब मे तर करके उसका लुआब चूसते रहें ओर थोडी देर बाद थूक दिया करे। यदि इससे लाभ न हो तो यह नुसखा पिलाये—गुलबनफशा ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, गुलनीलूफर ७ माशा, गुल खतमी ७ माशा, खीरा-ककडी के बीज ७ माशा, आलूबुखारा ५ दाना रात्रि मे गरम पानी मे भिगोकर प्रात मल-छानकर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाये और छठवे दिन उसमे शीरखिस्त, तुरजबीन, शकर सुर्ख प्रत्येक ४ तोला, सनाय मक्की ७ माशा की योजना पर विरेचन कराये और अगले दिन तबरीद का योग सेवन कराये। इसी प्रकार बीच-बीच मे अवकाश देकर यथावश्यक तीन विरेचन देवे। विरेचन के दिन १० बजे तक यदि विरेक न आवे तो सहायतार्थ १२ तोला अर्क गावजबान मे ४ तोला इमली मल-छानकर ४–४ तोला शर्बत दीनार और शर्बत वर्द मुकर्रर मिलाकर पिलायें।

विरेचनोपरात यदि कुछ सताप अवशेष रह जाय तो प्रातःकाल ५ माशा कुर्स तबाशीर खिलाकर ऊपर से ५ तोला हरी कासनी के पत्तो का स्वरस फाडकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिला दिया करे और बलवर्धनार्थ मुफर्रेह वारिद ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा खिला दिया करें।

पथ्य—तर और शीतल पदार्थ, कद्दू, पालक, तुरई, कुलफा, मूँग की दाल, खियारैन (खीरा-ककडी) की खीर, साबूदाना, अगूर, सेब, नासपाती, सतरा, खरबूजा, बिस्कुट, नीबू का सोडावाटर, हरे धनिये की चटनी और मूँग की दाल से चपाती देवें।

अपथ्य—समस्त उष्ण पदार्थो से तथा मास, लाल मिर्च, गुड, तेल, इत्यादि के सेवन से बचें। दूध, अडे, खजूर, आम, आलू, अरवी, उडद की दाल तथा चने की दाल आदि का सेवन निषिद्ध है।

वक्तव्य—यदि आवेग की दशा मे मस्तिष्क की ओर पित्त के चढने से प्रलाप आदि तथा सान्निपातिक अवस्था (सरसाम की कैफिय्यत) उत्पन्न हो जाय तो नीलूफर का फूल, गुलबनफ्शा, खतमी पुष्प और गेहूँ की भूसी प्रत्येक १ तोला, सेधानमक ६ माशा मे उबालकर इससे पाशोया (पादस्नान) करे।

मोहरिका बुखार

नाम—(अ०) मोहरिका सफराविया, हुम्मा मोहरिका; (उ०) मोहरिका बुखार, तप मोहरिका, (अ०) बिलियस रेमिटॉन्ट फीवर (Bilious remittent fever), आर्डट कन्टिन्यूड फीवर (Ardent continued fever)।

वर्णन—इस प्रकार के ज्वर मे उष्णता की तीव्रता एव दाह से मानो शरीर जलता है। अतएव इसे 'मोहरिका' कहते हैं।

हेतु—हृदय, यकृत् और आमाशय के समीपवर्ती स्रोतो मे पित्त दूषित होकर इस ज्वर का कारण होता है।

लक्षण—इस ज्वर मे रोग की अधिक तीव्रता (वा प्रभाव), हृदय, यकृत् आमाशय और प्लीहा आदि अगो के ऊपर होता है। अतएव हृदय विचलित होता है। व्याकुलता एव परेशानी होती है। यकृत् शोथयुक्त हो जाता है। हरे, पीले और काले रग का वमन एव मलोत्सर्ग होता है। उदरशूल और कामला होता है। जिह्वा शुष्क होती, तीव्र तृष्णा लगती, जी मिचलाता और अति तीव्र ज्वर होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—मोहरिका सफरावी का उपक्रम भी पित्तज ज्वर (सफरावी बुखार) के प्रकरण मे लिखे अनुसार ही है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—विरेचन और शीतोपयोग (तवरीद) के पश्चात् (१) कुर्स तबाशीर काफूरी ३ माशा या (२) कुर्स तबाशीर काफूरी लूलुवी ३ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन कराये और (३) सफूफ हिन्दी २-३ माशा की मात्रा मे २ तोला नीलूफर के साथ सेवन कराने से भी इस प्रकार के ज्वर मे उपकार होता है। इसी प्रकार (४) कुर्स सरतान काफूरी ७ माशा या (५) कुर्स काफूरी लूलुवी ४ माशा या (६) कुर्सकाफूर ३ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से यह ज्वर नष्ट होता है।

बलगमी बुखार

नाम—(अ०) हुम्मा बलगमी, (उ०) बलगम का बुखार, बलगमी बुखार; (स०) कफ ज्वर।

यह ज्वर प्राय बालक, स्त्री और वृद्धो को हुआ करता है। युवावस्था मे प्रचुर रक्त उत्पन्न होता है। अतएव इस प्रकार का ज्वर यौवनकाल मे क्वचित् ही हुआ करता है।

वक्तव्य—यदि इसका जनक दोष स्रोतो के भीतर दूपित हो तो इसको यूनानी वैद्यक की परिभाषा मे 'लस्का' और पाश्चात्य वैद्यक मे 'एस्थेनिक फीवर' कहते है। पर यदि यह दोप क्षारीय कफ हो तथा हृदय एव आमाशय समीपवर्ती स्रोतो मे दूपित हो तो उसको भी 'तप मोहरिका' कहते है। कफ और पित्त के विशिष्ट लक्षणो से मोहरिका बलगमी और मोहरिका सफरावी के लक्षणो मे भेद कर सकते है।

यदि हुम्मा बलगमी (कफ ज्वर) का दोष स्रोतो के बाहर दूषित हो तो उसको हुम्मा नाइबा और हुम्मा मुवाज़िबा कहते ह। हुम्मा लस्का सतत वा अविसर्गी (लाजमी) होता है तथा बिना शीत वा कम्प के होता है। यद्यपि इसमे उष्णता किसी न किसी समय अवश्य हलकी होती है, किन्तु लाघव प्रतीत नही होता। तपे नाइबा प्रतिदिन एक या दो बार कम होता है तथा कफ के अन्य लक्षण पाये जाते है। किन्तु क्षारीय कफ की दशा मे इसके भीतर अधिक उष्णता उत्पन्न हो जाती है। परतु चाहे कुछ हो फिर भी एतज्जन्य उष्णता पित्तजन्य उष्णता से कम होती है।

हेतु—शीतल एव गरिष्ठ आहार का अतिसेवन, शीतल स्थानगत आवास, जल मे खडे होकर काम करना, सुख-चैन वा विलासितापूर्ण जीवन-यापन करना तथा श्रम न करना ऐसे हेतु है जिनसे प्रचुर कफ उत्पन्न होकर दूषित हो जाता है तथा इस प्रकार का ज्वर उत्पन्न करने का हेतुभूत होता है।

लक्षण—उक्त अवस्था मे ज्वर चढते समय शीत आदि की प्रतीति अत्यल्प होती है, जृम्भा और अङ्गमर्द का प्राचुर्य, शरीर मे आलस्य की वृद्धि हो जाती है। काम करने मे अरुचि होती, मुख वैरस्य, तृष्णाल्पता, प्रचुर मुखास्राव, क्षुधा की अल्पता आदि लक्षण होते तथा मूत्र सान्द्र होता है।

निदान—क्षारीय कफ की दशा मे ज्वर शीतपूर्वक (फुरेरी से) प्रारभ होता है। इसके साथ शीत एव कम्प अल्प होता है तथा सान्द्र वा प्रगाढी भूत श्लेष्मा (बल्गम जुजाजी) की दशा मे तीव्र कम्प होता है। अम्ल कफ की दशा मे शीत होता है। मधुर कफ मे शीत अल्प होता है और प्राय कुछ काल पर्यन्त फुरेरी, शीत और कम्प विल्कुल नहीं होता।

चिकित्सा—६–६ तोला अर्क मकोय और अर्क सौंफ मे ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के वीज और ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का का शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ़शा मिलाकर प्रात सायकाल कोष्ण पिलायें। यदि तीन-दिन के अनन्तर भी ज्वर आता रहे तो उसी मे ७ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिला देवें। यदि ५–६ दिन इस योग के सेवन से लाभ न हो तो गुल-बनफ्शा ७ माशा, बीज निष्कासित दाख ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजवान ५ माशा, हसराज ७ माशा, मकोय ५ माशा, सौंफ की जड ५ माशा, मुलेठी ५ माशा, वस्त्रपोट्टलिकावद्ध कुसूस के वीज ५ माशा—सवको रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो दिया करें। प्रात काल मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर आठ दिन तक पिलावें। सायकाल उपरिलिखित शीराजात (शीरा कल्प) पिलाते रहें। नवें दिन प्रात कालोपयुक्त योग मे ७–७ माशा सनाय मक्की तथा सफेद निशोय और ५ माशा गुलाब के फूल की योजना कर रात्रि मे यथावत् जल मे भिगो देवें। प्रात काल विरेचनार्थ ४-४ तोला तुरजवीन एव शकर सुर्ख, अमलतास ५ तोला, ५ दाने बादाम के मग्ज के शीरे की अतिरिक्त योजना कर पिलावें। आगामी दिन तवरीद (शीतजनक) का योग देवें। इसी प्रकार एक-एक दिन के अतर से यथावश्यक तीन विरेचन देवें। जव यह ज्वर जीर्ण (पुराना) हो जाता है, तव विरेचनोपरात शुकाई, बादावर्द, बिरजासिफ ३–३ माशा रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोकर प्रात.काल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन पिलाने से उपकार होता है।

यदि देशी अजवायन एक तोला मिट्टी के कोरे पुरवे (आवखोरे) मे डालकर प्रात.काल भिगो दिया करें और समस्त अहोरात्रि अर्थात् आठ पहर भीगते रहने देवें। दूसरे दिन प्रात.काल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलावें तो भी समीचीन एव उपकारी होता है।

विरेचनोपरात भी यदि कुछ सताप अवशेष रह जाय तो प्रात काल ४ माशा कुर्स गाफिस खिला कर ऊपर से ६-६ तोला मिलित अर्क विरजासिफ और अर्क सौंफ २ तोला शर्वत वनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और सायकाल हब्ब तप वलामी २-२ गोली या हब्बराहत २-२ गोली कुनकुना गरम या ताजे जल से खिला दिया करें अथवा खाकसी १ तोला, शर्वत वनफ्शा २ तोला मिला कर जल मे प्रथम दिन एक उवाल देकर पिलायें। इसी प्रकार सात दिन तक एक-एक उवाल (जोश) वढाते जायँ और आठवें दिन से एक-एक उवाल (जोश) कम करते जायँ। जव प्रथम मात्रा पर आ जाय तव इसका उपयोग न्द करा देवें। अथवा हरा गुरुच १ तोला, वारीक-वारीक परत करके रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो दिया करें। प्रात उसके ऊपर नियरा हुआ जल (जुलाल) ले कर २ तोला शर्वत वनफ्शा मिला कर कुछ दिन पिलायें तथा जहरमोहरा, वशलोचन, समुद्रफल, इलायची के वीज और गुडूची सत्त्व प्रत्येक तीन माशा और सवके वरावर मिश्री मिलाकर चूर्ण वनायें। इसमे से ३ माशा चूर्ण ताजे जल के साथ फँका दिया करें।

आराम होने के पश्चात् वलवर्धनार्थ खमीरा गावजवान जवाहर वाला ५ माशा प्रात काल और मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवा उल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे मिलाकर सायकाल खिला दिया करें। १-१ तोला अजवायन खुरासानी और समुद्रफल का चूर्ण वनाकर इसमे से ५ माशा प्रतिदिन ताजा जल से देने से भी उपकार होता है।

इस प्रकार का ज्वर साधारणतया अधिक काल तक रहा करता है। अतएव प्रायश पाण्डु (सूउल् किन्य), जलोदर, प्लीहावृद्धि प्रभृति पचनावयव की विकृति से उत्पन्न होने की आशका होती हे। अत इसमे पाचन का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। भोजनोत्तर २-२ गोली हब्व पपीता या ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाना उपकारक होता हे। ४॥-४॥ माशा कुर्स तवासीर या कुर्स जरिश्क ५ तोले हरी कासनी के फाडे हुए रस मे २ तोला सिकञ्जवीन मिला कर और ७ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलाने से उपकार होता है।

अपथ्य—साद्र, दीर्घपाकी, शीतल, तर एव गुरु वा गरिष्ठ पदार्थ जिनसे कफ की उत्पत्ति हो, जैसे—आलू, अरवी, टिंडा, पालक, कद्दू, कुलफा, चना और उडद की दाल, चावल, मछली, दूध, मक्खन, मलाई, अंगूर, सेव, सतरा इत्यादि पदार्थ सेवन न करें।

पथ्य—वकरी और पक्षियो का मास, जैसे तीतर, मुर्गा और वटेर इत्यादि लघु एवं शीघ्रपाकी पदार्थ, मूँग-अरहर की दाल चपाती से खिलायें। अदरक एव पुदीना की चटनी भी दे सकते हैं।

वक्तव्य—बुकरात का यह मत है कि प्रतिदिन आनेवाला ज्वर आमाशय के किसी विकार को लक्षित करता है। चातुर्थिक ज्वर प्लीहा रोग का लक्षण है। श्लैष्मिक रोग आमाशयिक द्वार की विकृति के साक्षी हैं। अगगौरव रूप व्याधि यकृत् की विप्रकृति के प्रमाण है। सविशूल का अस्तित्व वृक्क की विप्रकृति के लक्षण हैं। दोपज व्याधि की दशा मे निद्रा अहितकरतम पदार्थो के अतर्भूत माना गया है। इसी प्रकार ज्वर के प्रारभिक आवेगो तथा आशय-शोथ की दशा मे भी इसका अहितकर प्रभाव सिद्ध है। क्योकि निद्रावस्था मे सताप एव रक्त भीतर की ओर घिरे चले जाते है।

हुम्मा लस्का

नाम—(अ०) हुम्मा लस्का, (उ०) लाजमी बलगमी बुखार; (स०) सतत कफ ज्वर, (अ०) एस्थेनिक फीवर (Asthenic fever)।

वर्णन—यह एक प्रकार का हल्का अविसर्गी ज्वर (खफीफ लाजमी बुखार) है जो दो सप्ताह पर्यन्त, किंतु प्राय तीन-चार सप्ताह पर्यन्त और कभी सात-आठ सप्ताह पर्यन्त निरन्तर चढा रहता है।

हेतु—इस प्रकार का ज्वर प्राय उन लोगो को होता है जिनके आमाशय मे मस्तिष्कगत प्रसेक उदीरित होकर दूषित हो जाते हैं।

लक्षण—रोगी को प्रतिक्षण हल्का ज्वर चढा रहता है। नाडी आशु-गामिनी, किन्तु मृदु (लय्यिन) होती है तथा कफ के अन्यान्य लक्षण व्यक्त होते हैं। इसमे ज्वरावस्था मे रोगी को स्वेद बिल्कुल नही आता। इस ज्वर का मोक्ष चौदह दिन के उपरान्त, परन्तु प्राय बीस और तीस दिन के मध्य अतिसरण या स्वेद द्वारा होता है। पर कभी-कभी चालीस से साठ दिन पर्यन्त भी ज्वर रहा करता है। जब यह ज्वर पुराना हो जाता है तब यकृत् आदि के विकार से रोगी के चेहरे और हस्त आदि पर शोथ हो जाता है।

निदान—हुम्मा लस्का का, गिब्ब लाजिमा, रिबा लाजिमा, माल्टा ज्वर, हुम्मा मुत्विका और विशेषत दिक् प्रभृति इतर लाजमी बुखारो (अविसर्गी ज्वरो) से निदान करना आवश्यक है।

(१) शतरुल्गिब्ब या सफरावी व बलगमी बुखार—जिसमे सफरावी (पित्तज) एव बलगमी (कफज), बुखार लाजमी (असिवर्गी) या उसके विपरीत होता है। इसमे एक दिन ज्वर हल्का और एक दिन उग्र होता है। किंतु हुम्मा लस्का मे यह दशा नही होती। इसमे हल्का ज्वर प्रतिक्षण चढा रहता है।

(२) गिब्बलाजिमा या लाजमी सफरावी बुखार--इसमे प्रतिदिन प्रात काल ज्वर मे किसी प्रकार कमी हो जाती है , किंतु अपराह्ण काल मे (तीसरे पहर) ज्वर तीव्र हो जाता है और सायकाल अति तीव्र हो जाता है तथा रात्रिभर भी ज्वर तीव्र रहता है और अन्यान्य पित्त के लक्षण प्रगट होते हैं । परन्तु लस्का मे हर समय हलका ज्वर चढा रहता है ।

(३) रिबआ लाजिमा या लाजमी सौदावी बुखार भी अविसर्गी (लाजमी) ज्वर है जो अवधि पर्यन्त रहता है , परन्तु यह क्वचिद् ही होता है । इस ज्वर मे प्रति चौथे दिन ज्वर मे तीव्रता होती है । किंतु लस्का मे यह दशा नही होती ।

(४) हुम्मा मुत्बिका या लाजमी दम्वी बुखार मे ज्वर तीव्र होता है । प्राय अतिसरण होता है । शरीर के ऊपर लाल-लाल छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं । किंतु हलके प्रकार के ज्वरो को हुम्मा लस्का से निदान करना कठिन होता है । क्योकि सूक्ष्म प्रकार के इस ज्वर का मोक्ष भी चौदहवें दिन या उससे कुछ पूर्व हो जाता हैं । साधारणतया हुम्मा मुत्विका का मोक्ष (वोहरान) भी लस्का की भॉति बीस से तीस दिन के बीच होता है । परन्तु लस्का की भॉति कभी-कभी यह ज्वर भी छ सप्ताह या चालीस दिन पर्यन्त रहता है । सुतरा लस्का और हल्के हुम्मा मुत्बिका मे तथा इन उभय ज्वरो के मोक्ष मे बडा सादृश्य है । अतएव परस्पर एक दूसरे से इनका निदान करना परम आवश्यक है । दोनो की चिकित्सा सर्वथा भिन्न है । अस्तु, यूनानी वैद्य तो हुम्मा लस्का मे तीन-चार विरेचन देना आवश्यक ख्याल करते हैं , परन्तु हुम्मा मुत्बिका मे क्षुद्रान्त्रो मे क्षत होने के कारण विरेचन का प्रयोग अतीव अहितकर होता है । अत यथार्थ निदान के लिये रोगी के एक बिंदु रक्त का अणुवीक्ष्य परीक्षा करा लेना परम आवश्यक होता है ।

(५) हुम्मा माल्टा--यह भी एक प्रकार का अविसर्गी ज्वर है जो माल्टा द्वीप, रोमसागर के समीपवर्ती प्रदेश, पजाब और अन्यान्य उष्ण प्रदेशो मे पाया जाता है । इस ज्वर का आक्रमण वारबार अनियमत होता है और वहुधा दो-दो तीन-तीन मास और कभी इससे भी अधिक काल पर्यन्त इसके आवेग (दौरे) होते रहते हैं । इस ज्वर मे प्रचुर स्वेद होता है और शरीर के ऊपर अम्हौरियॉ वा गर्मीदाने (विस्फोट) निकल आते है तथा सधियो मे पीडा होती है । परन्तु लस्का मे ये लक्षण नहीं होते ।

वक्तव्य--माल्टा ज्वर और हुम्मा मुत्बिका (रक्तज्वर भेद) मे रोगी के उर स्थल पर अम्हौरियाँ या गर्मी के दाने (विस्फोट) निकल आते है । अतएव इन उभय प्रकार के ज्वरो विशेषत माल्टा ज्वर को पजाव मे 'मुवारकी' और

राजपुताना एव दिल्ली मे 'मोतीझरा' भी कहते हैं। रक्त के अणुवीक्षणयत्र द्वारा परीक्षा से ही इन ज्वरो का यथार्थ निदान हो सकता है।

(६) हुम्मा दिक—मन्दोष्मा तथा शरीर कार्श्य एव शरीर दौर्बल्य के कारण हुम्मा लस्का हुम्मादिक (क्षयरोग) से अत्यधिक सादृश्य रखता है। यद्यपि हुम्मा लस्का मे मध्याह्नकाल मे भोजनोत्तर सन्ताप नही वढता, नाडी मृदु होती है और शरीर दोषपरिपूर्ण (मुमतली) एव स्फीत (मुतनफख) होता है। क्षय (हुम्मा दिक) के विपरीत इसमे नाडी आशु एव कठिन होती है। भोजनोपरान्त सताप वढ जाता है तथा रोगी नित्य-प्रति दुर्वल एव कृश होता जाता है।

टि०—इसके विशेप विवरण हेतु इसी ग्रथ के पृष्ठ २२५ देखे।

अससृष्ट द्रव्योपचार—हुम्मा लस्का और हुम्मा बलगमी (कफज्वर) मे उल्लिखित अससृष्ट ओषधियाँ लाभकारी हैं।

ससृष्ट द्रव्योपचार—दोषपाचन एव विरेचनोपरान्त (१) कुर्स गाफिस ७ माशा १२ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करना लाभकारी है। (२) ७ माशा कुर्स गुल १२ तोला अर्क गावजवान से या (३) ६ माशा कुर्स अफसतीन १२ तोला अर्क गावजवान से अथवा (४) ६ माशा कुर्सगुल सगीर ४ तोला शर्वत वजूरी से सेवन करने से हुम्मा लस्का मे उपकार होता है तथा यह परीक्षित है।

सिद्धयोग—(१) दोषपाचन (मुजिज) जो हुम्मा लस्का मे लाभकारी है। गुलवनफशा, छिली हुई मुलेठी और सौफ प्रत्येक ४ माशा, उन्नाव ७ दाना सव को जल मे उबाल-छानकर ४ तोला गुलकन्द अथवा ४ तोला शर्वत वनफ्शा मिला कर पिलायें। आठवें दिन विरेचनार्थ निम्नलिखित योग सेवन करायें।

(२) विरेचन—गुलवनफ्शा, सौफ, सूखा मकोय, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ९ माशा, हसराज ६ माशा, उन्नाव १० दाना सबको जल मे क्वाथ करके और मल-छानकर अमलतास का गूदा, तुरजवीन और गुलकन्द प्रत्येक चार तोला योजित कर मल-छान लेवे और ६ माशा बादाम का तेल मिला कर पिलाये।

वक्तव्य—नवे दिन पुन उपर्युक्त दोपपाचन औपध पिलाये और दसवे दिन पुन दूसरा विरेचन देवे। सुतरा ग्यारहवे दिन पुन उल्लिखित दोपपाचन योग सेवन करा के वारहवे दिन पुन उल्लिखित विरेचन देवे, तीन दिन के वाद अर्थात् तेरहवे-चौदहवे ओर पन्द्रहवे दिन उपरिलिखित दोपपाचन योग मे कासनी के वीज और मकोय प्रत्येक ४ माशा, शुद्ध अर्कगुलाव १५ तोला मिलाकर पिलाये। पर यदि रोगी अधिक दुर्वल हो तो पुन विरेचन न देवे। प्रत्युत् हड का मुरब्बा देकर आगामी दिन कुर्स गुल या कुर्स गाफिस प्रारभ करा देवे।

———

सौदावी बुखार

नाम—(अ०) हुम्मा (सौदाविय) सौदावी (रिबा दाइरा); (उ०) सौदावी बुखार, चौथिया बुखार, (स०) चतुर्थकज्वर; (अ०) क्वार्टन फीवर (Quartan Fever)।

वर्णन—चतुर्दोषो मे से जब किसी दोष के सूक्ष्म अश विलीन होकर स्थूल अश अवशिष्ट रह जाते है, तब वह गैर तबई सौदा (अप्राकृत सौदा) के नाम से अभिहित होता है। यदि इसमे दुष्टि (कोष्ठ) उत्पन्न होकर ज्वर आने लगे तो उसको हुम्मा सौदावी (सौदाजन्यज्वर) या चौथिया बुखार (चतुर्थक ज्वर) कहते है, इस प्रकार का ज्वर चौथे दिन बारी के साथ आया करता है। इस ज्वर की एक बारी से दूसरी बारी तक ७२ घटे का अवकाश होता है।

हेतु—कभी उष्ण पदार्थ सेवन तथा कभी गरिष्ठ एव दीर्घपाकी आहार सेवन या अम्ल के अति सेवन से शरीर मे सौदा अधिक उत्पन्न होता है तथा दूषित होकर इस ज्वरोत्पत्ति का हेतुभूत होता है।

लक्षण—उक्त अवस्था मे रोगी की रगत स्याहीमायल हो जाती है। मूत्र प्रसेक अल्प होता है। नेत्र मे मलिनता मालूम होती है और साधारणतया प्लीहा विवर्धित हो जाती है। ज्वर बारीपूर्वक चौथे दिन आता है। नाडी मन्द और कठिन होती है।

साध्यासाध्यता—इस ज्वर का अन्त प्राय कुशलतापूर्वक होता है। पर यदि रोगी दुर्वल वा वृद्ध हो अथवा उसे दीर्घकाल तक ज्वर आता रहे अथवा आभ्यतरिक अगो की रचना मे विकार उत्पन्न हो जाय अथवा यथावत् चिकित्सा न की जाय तो परिणाम अशुभ होता है।

चिकित्सा—मालीखोलिया के प्रकरण मे उल्लिखित दोष पाचन और विरेचन के योग आवश्यकतानुसार उपयोग करायें अथवा छिली हुई मुलेठी, कासनी के बीज, करफ्स के बीज प्रत्येक ५ माशा जल मे उबाल-छान कर २ तोला सिकजबीन मिलाकर कुछ दिन पिलाये। यदि प्लीहावृद्धि के कारण ज्वर आता हो तो गुलबनफ्शा ७ माशा, बीज निष्कासित दाख ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, मजीठ ५ माशा, पीला अजीर ३ दाना रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो कर प्रात काल मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर कुछ दिन पिलाये और भोजनोत्तर सफूफ तिहाल २-२ माशा खिला दिया करे। रात्रि मे दर्दमन्द एक टिकिया ताजा जल के साथ खिलायें। प्लीहा के ऊपर लेप करने के लिये प्लीहावृद्धि (इत्रमुत्तिहाल) के प्रकरण मे उल्लिखित योगो का उपयोग कराये। सायकाल ७ माशा जुवारिश जालीनूस

खिला कर सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा मकोय ३ माशा, अर्क बिरजासिफ १२ तोला मे पीस-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। विरेचनो से खाली होने के पश्चात् हब्बराहत दो टिकिया या कुर्स गाफिस ४॥ माशा खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्कशीर मुरक्कब मे ४ तोला शर्बत उन्नाब मिला कर पिला दिया करें। बलवर्धनार्थ खमीरा अबरेशम शीरए उन्नाबवाला ५ माशा या मुफर्रेह शैखुर्रईस ५ माशा खिलाकर ऊपर से मिलित अर्क माउज्जुब्न और अर्क गजर ६-६ तोले मे २ तोला शर्बत केवडा मिला कर पिलाना लाभकारी है। यदि पाचन दोष हो तो ५ माशा दवाउल् मिस्क मोतदिल मे १ टिकिया खुब्सुल्हदीद मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य—बैंगन, लहसुन, प्याज, चना और वादी-गरिष्ठ एव रूक्षता (खुश्की) उत्पन्न करनेवाले पदार्थ, मसूर और उडद की दाल, आलू, अरवी, भिडी, कचालू, गोभी इत्यादि तथा अन्य दीर्घपाकी एव वाष्पोत्पादक पदार्थों से परहेज कराये।

पथ्य—स्वस्थ पुरुषो जैसा आहार दिया जाय जिसमे रोगी दुर्बल न हो जाय। बकरी का शूरबा, चपाती, चावल, खशका, पुलाव, दूध, मक्खन, मलाई, पावरोटी, बिस्कुट इत्यादि आवश्यकतानुसार देवे।

मौसमी बुखार

नाम—(अ०) हुम्मा अजामिया, (उ०) तपे लरजा, मौसमी बुखार, (स०) ऋतुज्वर, विषमज्वर, (अं०) मलेरियल फीवर (Malarial fever), इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermittent fever)।

हेतु—मलेरिया वस्तुत एक प्रकार के विषैले वाष्प होते है, जो उद्भिज्जो के कोथ (सडने) एव आर्द्र भूमि, जैसे—झीलो, तालावो और दलदलो आदि के सूखने से प्रारम्भ होते और जहॉ घास-फूस अधिक एकत्र हो वहाँ के दूषित वाष्प (अब्खरात रदिय्या) वायु मे मिलकर विष-प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं।

वक्तव्य—आधुनिक अन्वेषणो से यह प्रमाणित हो चुका है कि मलेरिया का विष एक प्रकार के मच्छड के काटने से मानव-शरीर मे प्रसारित हो जाता है। सुतरा ये मच्छड ऐसे ही स्थानो के समीप पाये जाते है। अस्तु, सावन के अत से लेकर सपूर्ण भादो और क्वार के अत तक भारतवर्ष मे प्राय यह ज्वर होता है। जब वर्षा के उपरात भूमि, तालाव और झील सूखना आरभ हो तथा ग्रीष्म ऋतु मे यदि प्रचण्ड उष्णता हो, तो वर्षान्त मे यह मच्छड प्रचुरता से फैल जाते है तथा इनके काटने का प्रभाव अति तीव्र होता है। ऐसे मच्छड कुछ फुट अधिक ऊँचाई पर नही चढ सकते। अस्तु, ऐसे समयो मे जो लोग नीचे

के कमरो मे रहते है अथवा भूमि पर शयन करते है उन पर इनका वडा प्रभाव पडता है।

लक्षण--मलेरिया ज्वर दो प्रकार का होता है--प्रथम वह जो जाडे से चढता है और वारी से आता है। इसको पश्चात्य वैद्यक मे 'इन्टरमिटेन्ट फीवर' (नौवती बुखार--नियतकालिक ज्वर') कहते हैं। इसके पुन. ये तीन उपभेद होते हैं--(१) वह जो प्रात काल चढता हे । इसमे विष-प्रभाव अधिक होता है, इसी कारण तीव्र ज्वर होता है तथा इसका आवेग काल ८–१० घटा होता हे। इसको पाश्चात्य वैद्यक मे कोटिडियन फीवर (Quotidian fever) कहते है। (२) वह जिसमे प्रथम की अपेक्षया विष-प्रभाव कम होता है। इसमे रोगी को अपेक्षाकृत अधिक शीत एव कँपकँपी लगती है। साधारणत यह ज्वर मध्याह्नकाल मे शीतपूर्वक चढता है और प्राय ६ से ८ घटे तक रहता है। प्रति दिन इसकी एक वारी हुआ करती है। इसको पाश्चात्य वैद्यक मे 'टार्शियन फीवर (Tertian fever) कहते है। कभी इस ज्वर की दिन मे दो वारियाँ (आवेग) भी हो जाती है, जैसे--एक वारी प्रात काल और एक सायकाल। उक्त अवस्था मे दूसरे दिन अवकाश (अनावेग) रहता है और तीसरे दिन पुनश्च इसी प्रकार दो वारियाँ होती है। (३) वह जो प्राय सायकाल हुआ करता है। यद्यपि ज्वर हल्का होता है, तथापि शीत अधिक लगता है। इसका आवेगकाल ४–६ घटे तक रहता है। इसको पाश्चात्य वैद्यक मे 'क्वार्टन फीवर (Quartan fever)' कहते हैं। इस प्रकार के ज्वर मे कुछ कालोपरान्त स्वेद आकर ज्वर सर्वथा (नि शेष) उतर जाता है। परतु दूसरे प्रकार का मलेरिया ज्वर जो जाडे से नही चढता, उसको 'रेमिटेन्ट फीवर (Remittent fever) कहते है। अरवी मे इसे 'हुम्मा मुतफत्तिरा' कहते हैं। यह ज्वर सदा चढा (अविसर्गी) रहता है तथा वारी से नहीं आता। प्रत्युत अहोरात्रि मे किसी समय सताप वढ जाता है और किसी समय कम हो जाता है। ज्वर उतरते समय स्वेद नही आता अथवा कम आता है।

मलेरिया ज्वरो मे प्रथम ज्वर चढने से पूर्व रोगी आलस्ययुक्त हो जाता है। अङ्गमर्द और जम्भा होती है, साँस शीघ्र चलता, जी मिचलाता और कभी वमन भी हो जाता है। आतप वा अग्नि सेवा की अभिकाक्षा होती है। मूत्र का रग हल्का पीला या श्वेत होता है तथा मूत्र प्रसेक बारबार होता है। कुछ काल तक यह अवस्था रहकर धीरे-धीरे गरमी प्रतीत होती है। सम्पूर्ण शरीर मे वेदना होती है। मुखवैरस्य एव मुख शोष होता, चेहरा लाल और शरीर मे दाह होता, मूत्र लाल एव अल्प होता तथा शिर. शूल होता है। नाडी द्रुत गति से

चलती है। भोजन से अरुचि हो जाती तथा मलावरोध होता है। व्यग्रता एव अविश्रान्ति बढ जाती है। कभी-कभी प्रलाप की नौबत पहुँचती है। यह अवस्था चार-पाँच घटे रहती है। तदुपरान्त मस्तक पर स्वेदन होता है और धीरे-धीरे स्वेद होकर लगभग १५–२० मिनट मे ज्वर उतर जाता है। उक्त अवस्था मे रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाता है।

चिकित्सा—ऐसी ऋतु मे जबकि इस प्रकार के ज्वर आ रहे हो अनागत वाधाप्रतिषेधस्वरूप हब्ब वुखार ५ गोली प्रति दिन प्रात काल जल से सेवन कर लेना चाहिये और सप्ताह मे दो वार कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि मे सोते समय कोष्ण दूध से खाकर आमाशय और अन्त्र को शुद्ध कर लेना चाहिये। इस ज्वर से पीडित रोगियो को आवेग (वारी) आने से एक घटा पूर्व हब्व वुखार सेवन करनी चाहिये और ज्वर उतारने, स्वेद लाने तथा सार्वाङ्गिक वेदना प्रशमनार्थ दर्दमन्द की एक टिकिया ताजे जल से सेवन करना भी लाभकारी हे। शेष लक्षण एव उपद्रव के लिये यथावश्यक उपचार करना चाहिये। अस्तु, तृषा प्रशमनार्थ कागजी नीवू का खारा पानी (सोडा वाटर) पिलाना अथवा नीवू और नारगी चुसाना अथवा ६ तोले अर्क गावजवान मे ५ दाना आलूवुखारा भिगोकर उसका निथरा हुआ पानी (जुलाल) पिलाना भी गुणकारी है। मलावरोध निवारण के लिये अतरीफल मुलायिन ५ माशा या ५ टिकिया कुर्स मुलय्यिन रात्रि मे सोते समय खिलायें। प्रात काल निम्न योग सेवन करायें—गुल वनफ्शा ७ माशा, वीज निकाला हुआ मुनक्का (दाख) ९ दाना, कासनीमूल और सौंफ प्रत्येक ७ माशा तथा गावजवान ५ माशा, यदि तृष्णा एव हृल्लास (मिचली) हो तो आलूवुखारा ५ दाना, कासनी के बीज ५ माशा और गुलनीलूफर ५ माशा योजित कर रात्रि मे उष्ण जल मे भिगो कर प्रात मल-छानकर ४ तोला गुलकन्द या तुरजवीन अथवा खमीरा वनफ्शा मे से किसी एक को मिलाकर पिलायें और सायकाल उन्नाब ५ दाना, कद्दू का मग्ज ३ माशा, १२ तोले अर्क गावजवान मे पीसकर शीरा कल्पना करके २ तोला शर्वत नीलूफर मिलाकर पिलाना चाहिये।

शेष उपद्रवो की न्यूनाधिकता को दृष्टि मे रखकर यथावश्यक वही उपक्रम करे जिसका खिल्ती वुखार (दोषजज्वर) के प्रत्येक भेद मे वर्णन हुआ है। इस ज्वर के उपरान्त प्राय प्लीहा और यकृत् की वृद्धि हो जाती हे। उक्त अवस्था मे ज्वर-चिकित्सा के साथ उन ओषधियो का भी उपयोग करायें जिनका उल्लेख यकृत्प्लीहा के प्रकरण मे किया जा चुका हे। यदि विरेचन की आवश्यकता हो तो प्रत्येक दोष के विरेचन की जिस विधि का प्रथम उल्लेख हो चुका है उनके अनुसार आवश्यकतानुसार विरेचन देवें।

अपथ्य---गुरु एव दीर्घपाकी पदार्थो के सेवन से और ऐसे स्थानो मे जहाँ मलेरिया का विष हो, आवास करने से तथा अधिक धूप मे चलने-फिरने से अथवा वर्षा मे भीगने, मलिन वस्त्र धारण करने तथा वर्षा के भीगे हुए वस्त्र शरीर पर धारण करने से परहेज करे।

पथ्य---रुचि के अनुसार लघु एव शीघ्रपाकी आहार देवें। बकरी का शूरवा चपाती और मूँग की दाल, तरकारियो मे से कद्दू, तुरई, पालक, टिंडा इत्यादि देवें तथा नीवू, अनार, अगूर, सेव, सतरा इत्यादि आवश्यकतानुसार देवें।

जर्बतुश्शम्स (लू लगना)

उष्ण देशो मे जहाँ गरमी अधिक पडती है, प्राय ग्रीष्म ऋतु मे अर्थात् मई, जून और जुलाई के महीने मे वायु मे एक प्रकार का विष उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार के सताप का विष मानव-शरीर मे व्याप्त होता है तो रक्त मे एक प्रकार का उद्वेग उत्पन्न होकर कष्ट का कारण बनता है जिसको बोलचाल की भाषा मे 'लू लगना'[1] कहते हैं।

हेतु---सताप की प्रखरता एव सूर्य की प्रचण्डता से और आतप एव मैदान मे चलने-फिरने से, ग्रीष्म ऋतु मे काले रग का वस्त्र धारण करने, अति मद्यसेवन, ग्रीष्म मे रेल-यात्रा करने और अतिश्रम करने से यह रोग प्रगट हो जाता है।

लक्षण---साधारणत प्रथम रोगी के शिर मे शूल होता है तत्पश्चात् तीव्र ज्वर चढ जाता है। तृष्णाधिक्य होता, बारबार मूत्र त्याग करता, अतीव व्याकुलता वा बेचैनी होती, चेहरा और नेत्र लाल हो जाते हैं। हृत्स्पन्दन अधिक हो जाता है। रोगी अत्यन्त दुर्बल होकर कभी मूर्च्छित भी हो जाता है। सम्पूर्ण शरीर स्वेद से क्लेदित हो जाता है। नाडी बारीक हो जाती है। कभी-कभी उबकाइयाँ आती हैं। कभी-कभी सान्निपातिक अवस्था (सरसामी कैफियत) उत्पन्न हो जाती है।

चिकित्सा---रोगी को शीतल स्थान मे ले जावे। शिर पर शीतल जल का तरेडा (परिषेक) देवें। यदि रोगी नि सज्ञ (अचेत) हो तो सज्ञा लाने के लिये अर्क गुलाब एव अर्क केवडा बर्फ मे शीतल करके मुख एव उर स्थल के ऊपर छींटे देवे और उन्हीं अर्को मे कपूर एव सफेद चन्दन मिलाकर आघ्राण करायें।

---

१ आयुर्वेद मे इसको 'उष्णवातातपदग्ध', 'सूर्यातपदग्ध', अशुघात' तथा 'आतपमूर्च्छा' और पाश्चात्य वैद्यक मे 'हीट अपोप्लेक्सी (Heat apoplexy) तथा 'हीट स्ट्रोक (Heat stroke) कहते हैं।

हस्त-पाद के तलुवो (तलो) और ग्रीवा मे गुद्दी के स्थान मे सिगी लगवायें। शिर के बाल कतरवा देवें। सान्निपातिक (सरसामी) अवस्था हो तो १ तोला गुलरोगन ५ तोले अर्क गुलाब और २ तोले सिरका मे मिलाकर बर्फ से शीतल करके उसमे वस्त्रखड (कपडा) भिगोकर वारबार शिर एव मूर्धा पर रखें और आम की केरी (कच्ची) अग्नि मे भुलभुला (भून) कर जल ने मल-निचोड कर ७-७ तोला दिन मे दो-तीन बार पिलाने और मुंह धुलवाने तथा पेडा तीन तोला जल मे घोलकर पिलाने से वडा लाभ होता है। मलावरोध होने पर इमली ७ तोला और आलूबुखारा ५ दाना जल मे उवाल-छानकर ४ तोला गुलकन्द मिलाकर पिलाने से भी वहुत उपकार होता है।

अति तृष्णा होने पर तरबूज का पानी १० तोला, शर्बत अजीव ४ तोला, अर्क केवडा ३ तोला, अर्क व्रेदमुश्क ३ तोला सबको मिलाकर बर्फ से शीतल कर पिलाना चाहिये।

आराम होने पर सताप हरण के लिये तथा वलवर्धनार्थ कुछ दिन निम्न योग सेवन कराना चाहिये--

प्रथम मुफर्रेह् बारिद खिलाकर ऊपर से १२ तोले अर्क गावजवान मे ३ माशा विहीदाना का लुआव, ३-३ माशा मीठे कद्दू के बीज के मग्ज, तरवूज के बीज के मग्ज, कुलफा के बीजो का शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिला दिया करें।

अपथ्य--उष्ण पदार्थो के खान-पान से, उष्ण स्थान मे रहने, धूप (आतप) और खुले मैदान मे गर्मी के समय चलने-फिरने से परहेज करें।

पथ्य--लघु एव शीघ्रपाकी, जैसे--दूध, खशका, या डवलरोटी-दूध या मूँग की खिचडी या गेहूँ का दलिया आदि देवें।

टिप्पणी--अनागतवाधा प्रतिपेध स्वरूप ग्रीष्म ऋतु एव लू के समय आम की केरी (कच्ची) की चटनी पुदीना डालकर और प्याज, दही, छाछ आदि कभी-कभी सेवन करते रहना लू के विपैले प्रभाव से सुरक्षित रखता है।

ताऊन

नाम--(अ०) ताऊन, हुम्मा वबाई, (उ०) ताऊन, (स०) ग्रन्थिक ज्वर, (अ०) प्लेग (Plague)।

वर्णन--यह एक प्रकार का भयकर औपसर्गिक ज्वर है जो प्राय महामारी (मरक) के रूप मे प्रसार पाता है। यदि किसी नगर वा कसवा मे इसके प्रभाव प्रगट होते हैं तो उसके आस-पास के स्थान वा जनपद भी इससे आक्रात हो

जाते हैं। यह इतना उग्र एव घोर व्याधि है कि साधारणतया अत्यल्प काल मे मृत्यु हो जाती है।

हेतु—प्रायः वायुदोष तथा वायु मे उपसर्ग का प्रभाव उत्पन्न हो जाना इसका हेतु होता है। सुतरा जब भूमिस्थ प्रकुथित (सडी-गली) वस्तुओ के दूषित बाष्प वायु मे मिश्रीभूत हो जाते हैं अथवा ऋतुव्यापत्ति के कारण वायु स्वय दूषित हो जाता है तब शरीर एव ओज (रूह) मे अपने प्रकृत गुण प्रगट करने के स्थान मे उनमे दूषित गुण उत्पन्न करता है तथा रक्त मे एक विशेष प्रकार का असाधारण विकार एव विष-प्रभाव प्रगट हो जाता है। गृह भवन, शय्या और वस्त्र तथा अपने शरीर को अस्वच्छ एव मलिन रखने तथा स्वच्छता एव शुद्धि का विशेष ध्यान न रखने से इस रोग का आक्रमण होता है। यद्यपि यह रोग हर अवस्था मे हो सकता है, तथापि बालक एव वृद्ध की अपेक्षया युवा इससे अधिक आक्रात होते हैं। निर्धन व्यक्ति जिनको सडे-गले एव अपौष्टिक आहार मिलते हैं तथा आवास भी उत्तम उपलब्ध नही होता, इस रोग से अधिक आक्रात होते हैं।

लक्षण—प्रारभ मे शिर, कटि और सधियो मे हलकी पीडा होती है। चित्त व्याकुल एव शोकातुर होता है। क्षुधा कम हो जाती है। मस्तिष्क मे क्लाति एव दौर्बल्य के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। निद्रा भली भाँति नहीं आती। पुन॰ सहसा शीत लगकर तीव्र ज्वर हो जाता है। कभी-कभी नि सज्ञता एव प्रलाप भी हो जाता है जो असाध्यतासूचक लक्षण है। तीव्र पिपासा लगती है। उत्क्लेश होता और बारबार वमन होता है। दो-तीन दिन मे वक्षण वा कक्ष मे या ग्रीवा की ग्रथियो अथवा कर्णमूल-ग्रथियो मे से किसी स्थान मे सूजन होकर गिल्टी निकल आती है जिसमे तीव्र वेदना एव दाह होता है। एक-दो दिन के उपरात उसमे पीव पड जाती है। रोगी असीम दुर्बल हो जाता है। चेहरा मुर्झाया-सा हो जाता है। नेत्र भीतर को दब जाते हैं। कभी मूत्रावरोध हो जाता और कभी शरीर के ऊपर नीले-नीले धब्बे (दाग) पड जाते हैं। कभी नासिका या मुख अथवा गुदा से रक्तस्राव होने लग जाता है तथा रोगी अत्यत भयातुर हो जाता है।

साध्यासाध्यता—साधारण ताऊन साघातिक नही होता। परतु तीव्र ताऊन अत्यत मारक होता है। इससे ६० से ९० प्रतिशत मृत्यु होती है। यदि ज्वर तीव्र हो, अतीव दौर्बल्य हो, गिल्टियाँ (बद) शीघ्र न पके, प्रत्युत् दब जायँ अथवा प्रलाप, मूर्च्छा वा आक्षेप हो अथवा अति वमन हो अथवा मूत्रावरोध हो जाय अथवा मुख, नासिका वा गुदा आदि से रक्तस्राव हो, तो उक्त अवस्था मे परिणाम प्राय शुभ नहीं होता। पर यदि गिल्टी (बद) शीघ्र प्रगट होकर

पक जाय तथा रोगी सप्ताह वा पक्ष तक जीवित रहे, तो परिणाम शुभ होने की अधिक आशा होती है।

चिकित्सा—जहरमोहरा, वशलोचन, मोती, हरा यशब और अनारदाना प्रत्येक १ माशा—सबको महीन पीसकर ५ माशा मुफर्रेह वारिद मे मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से मिलित ५ तोला अर्क वेदमुश्क और ७ तोला अर्क गुलाव मे ३ माशा जरिश्क, ३ माशा कासनी के वीज, ५ दाना आलूवुखारा, ३ माशा सफेद चदन इनका शीरा निकालकर २ तोला शर्वत गोरा मिलाकर ७ माशा तुख्म रेहाँ का प्रक्षेप देकर पिलायें। अथवा प्रात -साय उभय काल मिलित ५ तोला अर्क वेदमुश्क और ७ तोला अर्क गुलाव मे ५–५ दाना उन्नाव और आलूवुखारा, ३ माशा सफेद चदन, ३ माशा कुलफा स्याह वीज, ३ माशा छिला हुआ काहू के वीज इनका शीरा और ३ माशा विहीदाना तथा ३ माशा गावजवान पत्र इनका लुआव निकालकर २ तोला शर्वत केवडा या २ तोला शर्वत सदल मिलाकर पिलायें। और जहरमोहरा २ माशा, जदवार वनपशजी २ माशा, कपूर १ माशा यथावश्यक अर्क वेदमुश्क मे घिसकर घण्टा-घण्टा भर के उपरान्त पिलायें।

यदि कष्ट की तीव्रता के कारण प्रलाप की अवस्था प्रगट हो तो शुद्ध सिरका २ तोला, गुलरोगन १ तोला और अर्क गुलाव ५ तोला तीनो को मिलाकर इसमे कपडा तर करके शिर के ऊपर रखे और ३ माशा सफेद चदन पीसकर हृत्स्थल के ऊपर लेप करें। तृष्णा होने पर अर्क गुलाव, अर्क कासनी, अर्क नीलूफर अर्क केवडा और अर्क वेदमुश्क इनको शर्वत केवडा, शर्बत सदल, शर्वत वर्द, शर्वत अगूर या शर्वत अनार शीरी या शर्वत सेव या शर्बत लुकाट से मधुर करके पिलाये। इन अर्को के सिवाय रोगी को और कुछ न देवें।

गिल्टी (ग्रन्थि) के ऊपर उसे विलीन हो जाने के लिये प्रथम अमलतास का गूदा १ तोला, जदवार ६ माशा, काली जीरा ६ माशा यथावश्यक हरे मकोय के रस मे पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करें अथवा २ दाना कुचला, ३ माशा नीम की पत्ती, १ माशा काली मिर्च, जदवार ३ माशा, दरूनज अकरवी ३ माशा और सखिया १ माशा सवको नीम की हरी पत्ती के यथावश्यक रस मे पीसकर गिल्टी केरे ऊपर कुनकुना गरम लेप करें। यदि गिल्टी वैठती न हो तो तीसी की पुल्टिस बाँधे, नरम हो जाने के पश्चात् यदि यह स्वयमेव फूट जाय तो उत्तम है, वरन् किसी कुशल शल्यविद् (सर्जन-जर्राह) से उसका भेदन करा देवें। पुन जल से इक्कीस वार धोये हुये शुद्ध उत्तम गोघृत मे कपूर ३ माशा और सफेदा काशगरी ६ माशा मिलाकर भलीभाँति मिलाकर व्रण के ऊपर कुछ दिन लगायें अथवा गिल्टी के स्थान पर जोक लगवा देवें और पीत एलुआ ७ माशा, मुरमकी

(बोल) ३।। माशा, केसर ३।। माशा यथावश्यक अर्क गुलाब मे पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनाकर रखें और अनागतबाधा प्रतिषेध स्वरूप महामारी काल मे सप्ताह मे २। माशा खा लेने से ईश्वर की दया से इस रोग का आक्रमण नही होता।

कपूर १ तोला, दरूनज अकरबी १ तोला, जदवार बनफ्शजी ६ माशा यथा प्रमाण अर्क गुलाब मे खूब हल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें। महामारी काल मे स्वस्थ व्यक्ति इसमे से ३ गोलियाँ अनागतबाधा प्रतिषेध स्वरूप सेवन कर लेवें तो इस रोग के आक्रमण से सुरक्षित रहे। यदि ताऊनाक्रात रोगी को भी इसमे से १–१ गोली दिन मे तीन बार २–२ घण्टा बाद खिला दिया करें और ऊपर से ३–३ तोला अर्क बेदमुश्क और अर्क केवडा मे ५–५ दाना उन्नाब एव आलूबुखारा तथा ३ माशा मीठे कद्दू के बीजो के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बेदमुश्क मिलाकर पिलाया जाय तो अतीव लाभकारी सिद्ध होती है।

यदि दौर्बल्य अधिक मालूम हो तो मुफर्रेह बारिद ५ माशा उपरिलिखित अर्को के साथ खिला दिया करे।

नीद के लिये जिमाद ख्वाब आवर का प्रलेप मस्तक पर करें। हब्ब ताऊन जवाहरवाली २ गोली या हब्ब ताऊन अबरी २ गोली, ५ माशा मुफर्रेह बारिद या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर खिलाना भी अतीव गुणकारण है। मरक काल मे हब्ब ताऊन खास ३ गोली अनागतबाधा-प्रतिषेधस्वरूप प्रति दिन प्रात काल खिलाना उपकारक है।

रोगनिवृत्ति के बाद मस्तिष्क एव हृदय के बलवर्धनार्थ कुछ दिन तक खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा खिलाकर ऊपर से ४–४ तोला अर्क गुलाब, अर्क केवडा और अर्क बेदमुश्क २ तोला शर्बत सेब मिलाकर पिलाना या १ तोला सेब का मुरब्बा एक नग चादी के वर्क मे लपेट–खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क गावजबान मे २ तोला शर्बत अनार शीरी मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

अपथ्य––रोगी का आवास गृह तथा उसकी शय्या एव वस्त्र आदि स्वच्छ एव शुद्ध रखे। यदि रोगी बलवान् हो तो प्रारभ मे प्रात-सायकालीन सेव्य औषध के अतिरिक्त कोई आहार नही देवे। उष्ण वायु, आतप और तीव्र अग्नि (आँच) से रोगी को बचाये। आराम होने के उपरात कुछ दिन तक गुरु, उष्ण एव बाष्पोत्पादक (मुबख्खिर) पदार्थ के सेवन से तथा आलू, अरवी, गुड, तेल, अम्ल, लाल मिर्च, गरम मसाला, उडद-चने की दाल, गोभी, चुकदर, मछली, सूली औ खमीरी रोटी आदि से परहेज करायें।

पथ्य—यदि रोगी दुर्बल हो और क्षुधा अधिक मालूम हो तो तीन दिन के भीतर केवल यवमड के अतिरिक्त और कुछ न देवें। इसके पश्चात् रोगनिवृत्त होने तक लघु एव शीघ्रपाकी आहार जैसे—दूध, खशका, साबूदाना या खियारैन की खीर और फलो मे से अनार, अगूर, सेव, नासपाती आदि का रस देते रहें। आराम होने के पश्चात् शूरबा, यखनी, अडा आदि क्रमश आवश्यकतानुसार देवें। तरकारियो मे कुलफा का साग, लौआ, टिडा और तुरई आदि देवें। जरिश्क, आलूबुखारा या नीबू की खटाई या इमली का मुरब्बा यदि रोगी मॉगे तो उक्त अवस्था मे दे सकते हैं, जबकि उसे खॉसी न हो।

जल के स्थान मे अर्क वेदमुश्क, अर्क गावजबान, अर्क कासनी इत्यादि वर्फ मे शीतल करके पिलाना उपयुक्त एव उपादेय होता है। यदि दौर्बल्य अधिक हो तो बकरी के मास का शूरबा, मुर्गी के बच्चे का शूरबा या यख्नी पिलायें।

वक्तव्य—यह एक औपसर्गिक रोग है। अतएव रोगी के मल-मूत्र, ष्ठीवन (थूक), वमित-द्रव्य, गिल्टियो के मल प्रभृति समस्त मलो को लकडी का बुरादा या मिट्टी का तेल डालकर भूमि के नीचे गाड देना चाहिए जिसमे परिचारक एव स्वस्थ व्यक्ति इसके उपसर्ग से सुरक्षित रह सके। महामारी काल मे विलायती पपीता (Ignatia amara) ४ रत्ती जल मे घिसकर प्रात काल पी लिया करे। इसका (विलायती पपीते का) बाहु एव कठ मे लटकाये रखना मरक के प्रभाव से सुरक्षित रखता है।

द्रष्टव्य—काला बुखार (हुम्मा अस्वद, काल ज्वर—Kala-azar), केहतका बुखार (हुम्मा केहतिय्या, अकाल ज्वर, Famine Fever), हड्डी तोड बुखार (हुम्मा सालिबा, अस्थिभञ्जक ज्वर—Break bone Fever), चूहा काटे का बुखार (हुम्मा लजउल्फार, मूषिक दशज ज्वर—Rat bite Fever), माल्टा, बुखार (हुम्मा माल्तिय्य—Malta Fever), प्रसूत का बुखार (हुम्मा नफासिय्य, सूतिका ज्वर—Puerperal Fever) प्रभृति कुछ आधुनिक ज्वर जिनका वर्णन यद्यपि आधुनिक यूनानी ग्रथो मे किया गया है, तथापि प्राचीन ग्रन्थो मे इनका वर्णन न होने अथवा अति सक्षेप मे होने से इस ग्रन्थ मे उनका वर्णन नही किया गया। यदि आवश्यक समझा गया तो इस ग्रन्थ के किसी आगामी सस्करण मे इनका वर्णन समाविष्ट कर दिया जायगा।

———

परिशिष्ट—२

यूनानी चिकित्सा-सार के योगो[1] का वर्णन

अतरीफल अफतीमून

द्रव्य और निर्माणविधि

सूर्यपाकी गुलकद, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) साफ किया हुआ मधु प्रत्येक ५५ तोले ५ माशे, तीनो को अर्क गुलाब, अर्क गावजवान, अर्क दालचीनी और अर्क फरजमुश्क (राम तुलसी) प्रत्येक आधा सेर मे मिलाकर उबाले और मल-छानकर पाक करे। हरड, बडी और काली हड, ऑवला, गुठली निकाला हुआ जरिश्क प्रत्येक २ तोले ११ माशे, गावजवान, पित्तपापडा, उस्तूखुद्दूस, आकाशवेल, अफसतीन रूमी (Wormwood), फरजमुश्क (रामतुलसी) सनाय, बिल्ली लोटन (बादरजबूया) प्रत्येक २ तोले ½ माशा, बुरादा किया हुआ बसफाइज फुस्तुकी, निशोथ (ऊपर से खुरचकर और भीतर की लकडी निकालकर), रासन (अभाव मे सोठ), इन्द्रायन के भीतर का गूदा, रेवदचीनी, जरावद मुदहरज (गोल), सौफ रूमी, बालछड, गिल अरमनी, लाजवर्द प्रत्येक १ तोला ५॥ माशे, नरम और सफेद गारीकून १०॥ माशे, हब्ब बलसॉ, अगर, दालचीनी, नागकेसर, पहाडी पुदीना, नहरी पुदीना, तज, मस्तगी प्रत्येक ७ माशे सबको कूट-छानकर ११ तोले ८ माशे मीठे बादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्ब) कर पाक मे मिलाकर अतरीफल बनावे, यदि इसको अधिक गुणकारी बनाना हो तो इयारिज फैकरा ३॥ माशे मिला, गोलियॉ बनाकर सेवन कराये। (यहॉ लिखे योगो मे प्रयुक्त हुए असंसृष्ट द्रव्यो तथा 'यूनानी चिकित्सा-सार' के असंसृष्ट द्रव्योपचार मे लिखित द्रव्यो के परिचय एव शुद्धि आदि के लिये तथा कल्पो की निर्माण विधि के लिये इस ग्रथ के लेखक द्वारा लिखित यूनानी निघटु विषयक यूनानी द्रव्य गुण विज्ञान नामक बृहद् एव प्रामाणिक ग्रन्थ का अवश्य अवलोकन एव परिशीलन करे।)

---

१ यूनानी चिकित्सासारगत उन योगो के पाठ आदि यहॉ नही दिये गये है जिनका उल्लेख 'यूनानी सिद्ध योगसग्रह' मे हो चुका है। उनके लिए पाठको को वही देखना चाहिये।

मात्रा—५ माशे ।

गुण तथा उपयोग—सब प्रकार के उन्माद के लिये अतीव गुणकारी है ।

अतरीफल कबीर (वृहत्)

द्रव्य और निर्माण विधि—

काली हड, काबुली हड का छिलका, वहेडे का छिलका, बीज निकाला हुआ आँवला, काली मिर्च, पीपल १ तोला ७। माशा, सोठ, जावित्री, बूजीदान, चीता, शकाकुल मिश्री, लाल और पीली तोदरी, मीठा इन्द्र जौ, लाल वहमन, सफेद वहमन, छिले हुए तिल, सफेद खशखाश (पोस्ता), मग्ज हब्ब कुलकुल (अभाव मे सफेद तोदरी) प्रत्येक ८॥। माशे—सबको कूट-छानकर बादाम के तेल (२ तोले) से स्नेहाक्त (चर्ब) करे । पुन ९ तोले तुरजबीन (यवासशर्करा) को पानी मे घोलकर और छानकर ३ पाव मधु मिलाकर पाक करे और शेष औषधो के बारीक चूर्ण को मिलाकर अतरीफल बनावे ।

मात्रा और सेवन विधि—७ माशे, रात्रि मे सोते समय १२ तोले अर्क गावजबान या सादे पानी से सेवन करें ।

गुण-कर्म तथा उपयोग—आमाशय, मस्तिष्क तथा नेत्र को शक्ति देता तथा प्रतिश्याय एव अर्श मे लाभप्रद है और वाजीकर भी है ।

।वशेष गुण कर्म—मस्तिष्क सशोधन एव बलदायक है ।

अतरीफल बादियान (मिश्रेया)

द्रव्य तथा निर्माणविधि

हड, काबली हड, बहेडा, आँवला, धनिया, गुलाब के फूल, सातर फारसी, सौंफ प्रत्येक समभाग—प्रथम पाँच द्रव्यो के बारीक चूर्ण को आवश्यकतानुसार बादाम के तेल से स्नेहावत करें। पुन शेष द्रव्यो के चूर्ण को भी मिलाकर, मिलित कुल द्रव्य से तिगुने शहद मे मिलाकर अतरीफल बनावे ।

मात्रा और सेवन विधि—१ तोला रात्रि मे सोते समय खावे अथवा प्रात काल १२ तोले अर्क सौंफ से सेवन करें ।

गुण-कर्म तथा उपयोग—नेत्र के सब रोगो मे लाभकारी है । इसके दीर्घकाल पर्यंत सेवन करने से नेत्र के कोई रोग नहीं होते हैं ।

अतरीफल मुक्ल (गुग्गुल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हड, काबुली हड, काली हड, बहेडा, आमला प्रत्येक १ तोला, शुद्ध गूगल ३ तोले, दाख (मुनक्का) और बादाम का तेल प्रत्येक ४ तोले, गदना का रस १ पाव, सब मिलित द्रव्य के तिगुना मधु—प्रथम गूगल को गदना के रस से हल करे और शेष द्रव्यो के चूर्ण को बादाम के तेल मे मिलावे, मुनक्का को बीज निकालकर पीस ले और हल किये हुए गूगल मे मधु एव मुनक्का मिलाकर पाक करे। पाक सिद्ध होने पर–शेष द्रव्यो का चूर्ण दे, बस तैयार है।

मात्रा तथा सेवन-विधि—७ माशे, अर्क गावजबान के साथ प्रात-सायकाल खिलावें।

गुण-कर्म तथा उपयोग—रक्तार्श और वातार्श मे यह अतरीफल परम गुणकारी है तथा कोष्ठबद्धता नाशक है ।

अतरीफल सगीर (लघु)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हड, काबुली हड, काली हड, बहेडा, आमला, मीठे बादाम का तेल प्रत्येक ५ तोले, उत्तम मधु १५ छटॉक—समस्त द्रव्यो को पीस-छानकर बादाम के तेल से स्नेहाक्त कर मधु के पाक मे भली भॉति मिलाकर अतरीफल बनावे।

मात्रा और सेवन विधि–७ माशे से १ तोला तक अर्क गावजबान वा जल से रात्रि मे सेवन करे।

गुण-कर्म तथा उपयोग—मस्तिष्क की क्षीणता और बुद्धिहीनता को नष्ट करता है तथा अर्श के उपद्रवो मे भी यह उपयोगी है।

अतरीफल सनाई (मार्कंडीय)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सनाय पत्र २० तोला, काबुली हड, बहेडा, आमला प्रत्येक १० तोले, गाय का घी आवश्यकतानुसार, मधु ऽ१॥। सेर—इन द्रव्यो का बारीक चूर्णकर गाय के घी मे मिलावे। पुन मधु के पाक (चाशनी) मे भली भॉति मिलाकर अतरीफल बनाये ।

मात्रा और सेवन विधि—३॥ माशे, रात्रि मे सोते समय १२ तोले अर्क सौंफ वा जल से सेवन करें ।

गुण-कर्म तथा उपयोग—विवन्ध, उन्माद, शिर.शूल तथा अर्धावभेदक मे यह अतरीफल उपयोगी है। माली खोलिया मे भी लाभकारी है।

अनोशदारू सादा (साधारण)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गुलाब पुष्प १॥। तोला, नागरमोथा १ तोला ५॥ माशा, लौंग, मस्तगी, तगर, बालछड प्रत्येक १०॥ माशा, छोटी इलायची, बडी इलायची, तालीसपत्र, जावित्री, जायफल, तज, केसर, प्रत्येक ७ माशा, गुठली निकाला हुआ आमला ऽ॥, चीनी और मधु दोनो समतोल ६७॥ तोले--आमले को एक रात-दिन दूध मे भिगो रखें। इसके पश्चात् धोयें और ऽ१॥ जल मे इतना उबाले कि गल जायँ। पुन उनको चलनी मे छानकर गदा पृथक् कर लेवे। तदुपरात चीनी और मधु को मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर औषध द्रव्य कूट-छानकर उसमे मिलाये।

मात्रा--४॥ माशा से १३॥ माशा तक।

अर्क अबर (अग्निजार)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कस्तूरी ४॥ माशा, अबर, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, ताजा रेहाँ पत्र, नागरमोथा, कुलफा, सूखा धनिया, गावजवान के फूल, अनीसून, दरूनज, पिस्ता के बाहर का छिलका प्रत्येक १ तोला १० माशा, नरकचूर, ऊदगर्की, नैपाली धनिया (कबाबा खदाँ), छडीला, दालचीनी, लौंग, बूजीदान, गुलाब के फूल, बालछड, लाल बहमन, सफेद बहमन, शकाकुल मिश्री, तमालपत्र, वशलोचन, छोटी इलायची, बडी इलायची, नारज का छिलका, कतरा हुआ अपक्व अबरेशम, सफेद चदन प्रत्येक २ तोला, सेब का स्वरस ऽ॥, अनार का स्वरस ऽ१, अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजबान, अर्क बादरजबूया प्रत्येक ऽ२॥, अर्क गुलाब ऽ५--इनमे से कूटनेवाले द्रव्यो को कूटकर देग मे भरकर अर्क भी सम्मिलित कर देवें और एक दिन बाद अनार और सेब का स्वरस डालकर अर्क निकाले, कस्तूरी आदि को पोटली मे बाँधकर नलकी के मुख पर बाँधे जिसमे अर्क के बिंदु पोटली मे से होकर बोतल मे गिरे। दो तिहाई अर्क निकालें।

मात्रा--५ से ७ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत् को बल देता है और क्षीणता एव मूर्च्छा मे यह लाभकारी है।

अर्क केवड़ा (केतकी)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

केवडा पुष्प १ पाव लेकर रात्रि मे ऽ५ सेर जल मे भिगोयें। प्रात काल ऽ२ सेर अर्क निकालें।

मात्रा और सेवन विधि--१० तोला अर्क २ तोला शर्वत अनार डाल कर प्रयोग करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--यह उल्लास प्रद है, हृदय को बल देता है और तृषा (एव सताप) को कम करता है।

अर्क गुलाब

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

ताजा सुगधित गुलाब के फूल ऽ। लेकर ऽ४ जल मे भिगोकर प्रात. ऽ२ सेर अर्क निकाले। यदि इसे दो आतशा और त्रि आतशा करना हो तो इसी अर्क मे और गुलाब पुष्प डालकर अर्क निकाले।

मात्रा--५ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय और मस्तिष्क को बल देता है तथा उदर-शूल एव वातनाशक है।

अर्क नीलूफर (कुमुदिनी)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

नीलूफर पुष्प (सफेद कुईं का फूल) ऽ१। सेर लेकर रात्रि मे बीस सेर जल मे भिगोकर प्रात काल अर्क निकाले।

मात्रा--५ से १० तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय एव मस्तिष्क को बल देता है, तृषा शान्त करता है तथा प्रतिश्याय एव शिर शूल मे लाभकारी है।

अर्क बादियान (सौफ)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

सवा दो सेर सौफ को रात्रि मे एक मन जल मे भिगोकर प्रात.काल ४० बोतल अर्क खीचें।

मात्रा—१२ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग—शीतजन्य आमाशय, यकृत् और वृक्क के रोगो (वेदनाओ) मे लाभकारी है, यकृदवरोधोद्घाटक तथा वात-विलयक है; दोषो को बाहर निकालता है, विशेषतया वातदोष मे उत्तम है।

अर्क बेदमुश्क (वेतस)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बेदमुश्क पत्र (वा पुष्प) ﻼ। रात्रि मे चार सेर जल मे भिगोकर प्रात-काल ﻼ२ सेर अर्क खींचें।

मात्रा—१० तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग—हृदय और मस्तिष्क को बल देता है तथा तृषा एव दिल की धडकन (खफकान) को दूर करता है।

अर्क मत्बूख हफ्तरोजा (साप्ताहिक क्वाथार्क)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नीम की छाल, कचनार की छाल, इन्द्रायन की जड, कीकर की फली, छोटी कटेरी का पचाग, पुराना गुड प्रत्येक ﻼ= आधा पाव—सब को तीन सेर जल मे उबाले, तृतीयाश अर्थात् ﻼ१ सेर रहने पर उतार कर छान लेवे। इसकी सात मात्रा करें। इसमे से १ मात्रा प्रति दिन प्रात काल सेवन करें और सायकाल खिचडी खावे। यदि इससे प्रवाहिका हो जाय तो इसका सेवन बन्द कर ३ माशा बिहीदाना और ५ माशा रेशा खतमी इनका जल मे लुआब निकाल कर २ तोला शकर सफेद (चीनी) मिलाकर प्रयोग करे। यदि एक दिन छोडकर और प्रतिदिन नया अर्क निकाल कर प्रयोग करें तो प्रवाहिका नही होगी।

गुण-कर्म तथा उपयोग—रक्तविकार, फोडे-फुसी, आमवात तथा उपदश मे अतीव उपकारक है।

अर्क माउज्जुब्न (पनीरजल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीली हड का बकला, काबुली हड का बकला, काली हड का बकला, हरी-गिलोय, बकायनपत्र, बकायन की छाल, नीम की छाल, नीम के बीज (निबौली), विजयसार पुष्प, गावजबान, कासनी बीज, कासनीमूल, हिरनखुरी, इमली के बीज की गिरी, आमले के बीज का मग्ज, बहेडा का बकला, सूखी धनिया, मौलसरी

की छाल प्रत्येक १० तोला, पित्तपापडा (शाहतरा), चिरायता, सरफोका, मेंहदी की पत्ती, अबरेशम, सफेद और लाल चन्दन का बुरादा, शीशम का बुरादा, सूखी मकोय, गुलाब के फूल, झडबेरी की जड की छाल, भॉग की जड, बहेडे की जड की छाल, चमेली की पत्ती, आवनूस का बुरादा, उन्नाव, ईख की जड प्रत्येक ५ तोला, अमलतास की गुद्दी ऽ॥, माउज्जुन्न ऽ।, मजीठ ऽ। सबको एक मन १ऽ जल मे भिगो कर प्रात काल चालीस बोतल यथा विधि अर्क खीचे।

मात्रा और सेवन विधि--१० तोले उपयुक्त ओषधियो के साथ सेवन करे।

गुण-कर्म तथा उपयोग--उल्लासप्रद, शामक और रक्तप्रसादक है। सौदावी रोगो मे असीम गुणकारी सिद्ध हुआ है।

अर्क माउल्लहम खास (विशिष्ट मासरसार्क)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बालछड, तेजपत्ता, छोटी इलायची, बडी इलायची, सफेद बहमन, लौंग, दालचीनी, अगर अपक्व (ऊदखाम), बिजौरे (तुरज) का छिलका, गावजवान, बूजीदान, छडीला, सफेद चन्दन, बिल्लीलोटन, फरजमुश्क (रामतुलसी) बीज, गावजबान पुष्प, सूखी धनिया, नर कचूर, सौफ, दरूनज, मस्तगी, नागरमोथा प्रत्येक ४ तोला, शकाकुलमिश्री, सालममिश्री, गुलाब के फूल, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ९ तोला, बैल की इन्द्री ३ तोला, बकरे का मास (गोश्त हलवान्) ॥ऽ४ चौबीस सेर, बटेर २४ नग का मास, अर्क बेदमुश्क ऽ६ सेर, अर्क गावजबान ऽ९ सेर, अगूर, सेब, बिही, रेगमाही, झींगा मछली (माही रोवियॉ), प्रत्येक ऽ३ सेर, सूखी या ताजी झिगवा मछली ऽ६ सेर, अबर २। तोला, कस्तूरी २। तोला, मुर्गी का बच्चा १४, सॉडा १०--समस्त मासो की यखनी तैयार कर के उपर्युक्त ओषधियॉ सम्मिलित करें और ८० बोतल अर्क खीचें।

मात्रा और सेवन विधि--५ तोला अर्क उपयुक्त ओषधियो के साथ सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--उत्तमाङ्गो एव ओजो (अखाह) के बलवर्धन के लिये महत्व की ओषधि है। सार्वदैहिक बल की वृद्धि करता है। वाजीकर, शुक्रस्तम्भक एव हृद्य है। हृदय को उल्लसित एव चित्त को प्रफुल्लित रखता है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता और चेहरे के रग को निखारता है।

अर्क माउल्लहम जदीद (विशेष बृहत् योग)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छाग मास ।ऽ१२ बारह सेर (या मस्त सिंह का बच्चा), चटक (गौरा वा चिडा) १०० नग, कबूतर, लवा, बटेर प्रत्येक ५० नग, मुर्गी के छोटे वच्चे ३० नग, तीतर २० नग---समस्त मासो को शुद्ध एव स्वच्छ (अस्थि आदि से साफ) करके यखनी पकाये अर्थात् २ऽ मन जल मे पकावे, और १॥ऽ रहने पर छान लेवे। तदुपरान्त उसमे मोमियाई (सत शिलाजीत), जुदबेदस्तर, नागरमोथा, जदवार, केसर, कस्तूरी, अबर प्रत्येक १ तोला, गावजबान-पुष्प, कबावचीनी, बालछड, वशलोचन, बस्फाइज, दरूनज, सीसालियूस, ऊदसलीब, साबर फारसी, फितरासालियून, चीता, जावित्री, जायफल, फरासियून, जिर्जीर के बीज, सायए शुतुर ऐरावी, रेगमाही, हब्बुल् कुलकुल (कुलथी के बीज) प्रत्येक २ तोला, अजवायन, शुष्क जूफा, वच (वज तुर्की) प्रत्येक तीन ३ तोला ४॥ माशा, दालचीनी, तुदवेला, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ७ तोला १० माशा, इलियून के बीज, मूली के बीज, इस्पिस्त, बालगू बीज, तुख्म शर्बती, रैहाँ के बीज, रामतुलसी (फरजमुश्क) के बीज, रामतुलसी पत्र, सोसन की जड, आसमान जूनी, बाबूना पुष्प, मगास, बूजीदान, दालचीनी, तज, मस्तगी, नागेसर, छडीला, तेजपत्ता, लालचन्दन, उस्तूखुद्दूस, जरावन्द मुदहरज, झींगा मछली, तालीस पत्र, असारून (तगर गठोडा), बेर (कोकनार) प्रत्येक ४। तोला, सफेद और लाल बहमन, सफेद और लाल तोदरी, ऊदगर्की, शकाकुल मिश्री, मीठा सूरजान, गावजबान, मीठा इद्र जौ, बादियान खताई, गुलाब के फूल, छोटी और बडी इलायची, बिल्ली लोटन, हसराज, पुदीना, जितियाना, कुलजन, खरबूजा के बीज, गाजर के बीज, सफेद खतमी के बीज, खुब्बाजी बीज, हब्बतुल्खिजरा (बुन बीज), चिरौजी (हब्बतुस्सम्न), कड का मग्ज (कुसुम के बीज), बिनौले का मग्ज, लिसोढा, झीगा मछली प्रत्येक ८॥ तोला, चोबचीनी, पीला (पक्व) अजीर, बीज निष्कासित दाख (मुनक्का), किशमिश प्रत्येक ३४ तोला, गोखरू का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, मीठी विही का स्वरस, मीठे अनार का स्वरस प्रत्येक ६८ तोला, खाड (नबात सफेद) ऽ२॥ अढाई सेर ४ तोला, ताजे रेहाँपत्र ऽ॥ सेर, विलायती उन्नाब १०० नग, केसर, कस्तूरी, अबर के अतिरिक्त जो औषधद्रव्य कूटने के है उनको कूटकर मासो मे डालकर एक अहोरात्रि रहने देवें। दूसरे दिन अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक २ बोतल, अर्क गावजबान और अर्क खियारशबर (अमलतास) प्रत्येक ऽ३ सेर,

ताजे गाजर का स्वरस, ईख का रस प्रत्येक ।।ऽ बीस सेर मिलाकर प्रथम वार १२–१४ सेर अर्क प्राप्त करें और इसको पृथक् रखें। पुनः इतना ही और अर्क खीचे। यह द्वितीय श्रेणी का होगा। अर्क निकालते समय अवर, कस्तूरी और केसर की पोटली अर्क की नाली के मुख पर बाँधे। अत मे सब बोतलो के अर्क को एक मटके मे डालकर पुन बोतलो मे भरें। ऐसा करने से सब अर्क एक समान गुणकारी होगा।

मात्रा और सेवन विधि––५ तोला अर्क २ तोला मिश्री, मिश्री या शर्बत अनार मिलाकर सेवन करे। कोई विशेष परहेज नहीं, केवल अम्ल सेवन से बचें।

गुणकर्म तथा उपयोग––पुस्त्वशक्तिवर्धक (वाजीकर) है तथा क्षीणता एव दुर्बलता को नष्टकर शरीर को बलवान् एव मोटा बनाता है। वृक्क को शक्ति देता, वायु को विलीन करता, सधिशूल एव प्रसेक का निवारण करता और शीतल व्याधियो के लिये रामबाण का काम करता है।

अर्क माउल्लहम कासनी मकोवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

विरजासिफ, शुकाई, बादावर्द, बिल्ली लोटन, कूटकर छाना हुआ सौफ, बीज निकाला हुआ मुनक्का, कबर की जड, इजखिर मूल, मुलेठी, हरा गिलोय, मकोय प्रत्येक १० तोला, गावजवान, गावजबान-पुष्प प्रत्येक ५ तोला––समस्त द्रव्यो को रात्रि मे उष्ण जल मे भिगोये। प्रात हरी कासनी का स्वरस और मकोय का स्वरस जिनमे हर दो द्रव्य ऽ२ सेर पडे हो डालकर ऽ४ सेर युवा बकरे के मास की यखनी बनाये और उपर्युक्त औषध-द्रव्य डालकर यथा-विधि २० बीस बोतल अर्क खीचे।

मात्रा और सेवन विधि––५ तोला अर्क उपयुक्त ओषधि के साथ सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग––शरीर को बल देनेवाला तथा श्वयथुविलयक है और आमाशय एव यकृत् की दशा सुधारनेवाला है।

अर्क मुरक्कब मुसफ्फा (फ्फी) खून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शाहतरा (पित्तपापडा) पत्र, शाहतरा बीज, चिरायता, सरफोका, मुडी, नीलकठी, ब्रह्मदण्डी, आवनूस का बुरादा, शीशम का बुरादा, सफेद और लाल

चदन का बुरादा, अफ्तीमून (पोटली मे बाँधकर) बस्फाइज, उश्वा प्रत्येक ५ तोला, मेंहदी के पत्र, मेंहदी का फूल, नीमपत्र, नीमपुष्प प्रत्येक ७ तोला, नीम की छाल, बकायन की छाल, शीशम की छाल, कचनार की छाल प्रत्येक ॳ।; उन्नाव, धमासा प्रत्येक ॳ= छटाँक—सबको ।।।ॳ तीस सेर जल मे इतना पकाये कि केवल ॳ७ सेर जल शेष रह जाय। तब उसे उतार-छानकर अर्क खीचें (अथवा सबको १६ गुना जल मे दो दिन तक भिगोकर, जल से आधा अर्क निकाले)।

मात्रा और सेवन विधि—५-५ तोले अर्क प्रात-सायकाल २ तोले शर्बत उन्नाव मिलाकर सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—रक्तशोधन के लिये अनुपम ओषधि (परम रक्त-शोधक) है। फोडे-फुसी और खुजली को दूर कर देता है। फिरग (आतशक) और अन्यान्य सौदावी रोगो मे गुणकारक है।

अर्क मुसफ्फीखून बनुस्खा कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नीमपत्र, नीम की छाल, बकायन की छाल, कचनार की छाल, मौलसिरी की छाल, पीत दुद्धी, काला भाँगरा के पत्र, जवासा की पत्र शाखा, गूलर की छाल, मेंहदी के पत्र, मुडी, शाहतरा (पित्तपापडा), सरफोका, धमासा, विजयसार काष्ठ, नीलूफर पुष्प, गुलाब पुष्प, सूखा धनिया, सफेद चदन, कसनी बीज, कासनी मूल, मजीठ, बेद सादा के पत्र, शीशम की लकडी का बुरादा प्रत्येक १० तोला—समस्त द्रव्यो को ।।ॳ४ चौबीस सेर जल मे एक अहोरात्रि भिगोये। तदुपरात ।ॳ२ बारह सेर अर्क खीचे। कभी-कभी निबौली, बकायन के बीज, शाहतरा के बीज, तगर, अफ्तीमून, तेजपत्ता, हरा गिलोय, उन्नाव, खस और चिरायता प्रत्येक १० तोला और मिलाते है।

मात्रा और सेवन विधि—१२ तोले अर्क २ तोले शर्बत उन्नाव मिलाकर पियें।

गुणकर्म तथा उपयोग—इससे रक्त की शुद्धि होती है, फोडे-फुसियो का नाश होता है और चेहरे का रग लाल एव स्वच्छ हो जाता है। सूजाक और आतशक (फिरग) मे भी यह अर्क उपकारक सिद्ध हुआ है।

अर्क शीर मुरक्कब (जदीद)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कासनी बीज, गावजवान पुष्प, खीरा-ककडी के बीज, वशलोचन, जहर-मोहरा प्रत्येक १ तोला, मकोय, गावजवान, कद्दू का मग्ज, काहू बीज प्रत्येक २ तोला, कुलफा के बीज ३ तोला, सूखी धनिया, लाल और सफेद चदन प्रत्येक ४ तोला, हरी कासनी के पत्र, हरा कद्दू, काहू पत्र प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, कमल पुष्प ५ तोला, कसेरू, बेद पुष्प, कूई के फूल (नीलूफर पुष्प) प्रत्येक १० तोला, अर्क बेदमुश्क, अर्क शाहतरा, अर्क इनबुस्सालब (मकोय) प्रत्येक ১१ सेर, अर्क गुलाब ১२ सेर, अर्क बेदसादा ১४ सेर, बकरी का दूध ।১ दस सेर आवश्यकतानुसार जल मिलाकर ८० बोतल अर्क निकाले। पुन उक्त अर्क मे उतनी ही ओषधियाँ और मिलाकर दोबारा अर्क खीचे।

मात्रा और सेवन विधि—५ तोले अर्क प्रात-साय और मध्याह्नकाल सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—रक्त शोधक, बल्य, सतापहर और स्निग्धता-सपादक (मुरत्तिब) है। सौदावी रोगो एव राजयक्ष्मा के लिये रामबाण सिद्ध हुआ है।

इयारिज लूगाजिया

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

इन्द्रायन का गूदा १७॥ माशा, भुलभुला हुआ प्याजे असल, गारीकून, सकमूनिया, खर्बक स्याह, उशक, एकपोथिया लहसुन (उस्कूर्दियून) प्रत्येक १ तोला ३॥। माशा, अफतीमून, कमाजरियूस, एलुआ, गूगल प्रत्येक १०॥ माशा, हाशा, हुफारीकून, अनीसून, तेजपात, फरासियून, जोअदा, तज, सफेद मिर्च, बोल (मुरमकी), जावशीर, जुदबेदस्तर, बालछड, फितरासालियून, जरावद तवील, फरफियून, हमामा, सोठ, उसारए अफसतीन, प्रत्येक ७ माशा, जितियाना, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५। माशा—सबको कूट-छानकर यथा प्रमाण श्वेत मधु मे गूँधे।

मात्रा—१४ माशा उष्ण जल और मधु से प्रयोग करें। निर्माण के छ मास उपरात सेवन करे।

टि०—'लूगाजिया' एक यूनानी हकीम का नाम है।

गुण तथा उपयोग—शिर शूल, अर्धावभेदक, पक्षवध, कम्पवात, व्यग, किलास और कुष्ठ तथा अन्यान्य शीतल व्याधियो के लिये लाभकारी है।

ए (अ) त्र्कादियाए कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अकरकरा, कलौंजी, मीठा कुट, काली मिर्च, पीपल, बच (वज्ज तुर्की) प्रत्येक ३ तोले, सुदावपत्र, हिबजत्याना, जरावद मुदहरज (गोल), हींग, गार का फल (हब्बुल्गार), जुदवेदस्तर (गन्धमार्जारवीर्य), चीता, राई प्रत्येक १॥ तोले, भिलावे का फल-रस (भल्लातक मधु) १६ तोले, अखरोट का तेल वा गाय का घी २ तोले, मधु ५० तोले—सब द्रव्यो को पीस-छानकर घी से स्नेहाक्त करे। पुन मधु का पाक कर सब द्रव्यो का चूर्ण भल्लातक मधु सहित मिलाकर भलीभाँति घोटे।

मात्रा और सेवनविधि—४ माशे, प्रात काल अर्क सौंफ से सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—अर्धांग, अर्दित, स्मृति-विकार, तथा मस्तिष्क के अन्य कफज विकार के लिये उत्तम औषध है। पाचक और वाजीकर है।

कुर्स अकाकिया

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अकाकिया (बबूल की छाल तथा पत्र का घनसार), जलाया हुआ कागज प्रत्येक ९ माशा, पीला हडताल, लाल हडताल प्रत्येक १३॥ माशा—सबको ॶ१। सेर बारतग के स्वरस मे खरल करके टिकिया बनावे। यदि थोडी मात्रा मे पूय (पीप) आ रही हो तो दो-तीन रत्ती लाकर चावलो की पीच (माँड) पी लेवे। यदि अधिक मात्रा मे पीप आ रही हो तो जल मे घोल कर बस्ति करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—पुरानी प्रवाहिका तथा पीप आने मे लाभप्रद है।

कुर्स अफसंतीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मजीठ १४ माशा, बालछड, इजखिर, रेवद चीनी, तज, चिरायता प्रत्येक १०॥ माशा, मुरमकी (बोल), अनीसून, मस्तगी, जरावद मुदहरज (गोल), तगर, अफसन्तीन, सोआ के बीज, करपस के बीज प्रत्येक ७ माशा—सबको कूट-छानकर सिकजवीन के साथ टिकिया बनावे।

मात्रा—४॥ माशा।

गुणकर्म तथा उपयोग—उदरशूल मे अतीव गुणकारी है।

कुर्स गाफिस

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उसारा गाफिस ५ तोले १० माशा, जटामासी २ तोला ११ माशा, वशलोचन १ तोला २ माशा कूट-छानकर गोद-जल के साथ टिकियाँ बनायें।

मात्रा और सेवनविधि—४ माशा कुर्स ७ माशा जुवारिश जरऊनी के साथ उपयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—कामला, यकृत्प्लीहा शूल मे तथा जीर्ण चतुर्थक ज्वर मे लाभकारी है। आशयगत अवरोध का उद्घाटक है और यह वस्ति-वृक्क गत व्रण का पूरण करता है।

कुर्स गुल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुलाब पुष्प, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक १ तोला २ माशा, वशलोचन, जटामासी, अफसतीन प्रत्येक ७ माशा, तुरजबीन (यवास शर्करा) १०॥ माशा कूट-छानकर अर्क गुलाब के साथ टिकिया बनावें।

मात्रा तथा सेवनविधि—१२ तोला अर्क गावजबान या शर्बत कासनी आदि अन्य उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—जीर्ण कफ ज्वरो मे उपकारक है।

कुर्स जरिश्क

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जरिश्क ७॥ तोला, गुलाब पुष्प २॥ तोला, कासनी बीज, कुलफा बीज, खीरा-ककडी के बीज का मग्ज १॥ तोला, रेवन्द चीनी, बालछड प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छानकर इसबगोल के लुआब मे गूंधकर टिकिया बनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुणकर्म तथा उपयोग—सतत पित्तज ज्वर मे गुणकारी है तथा यकृत् की उष्णता को नष्ट करता है।

कुर्स तबाशीर (वशलोचन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कुलफाबीज, गुलाबपुष्प, गिल अरमनी, गुलनार, वशलोचन, काहू-बीज प्रत्येक १ तोला—सबको कूट-छानकर जल से टिकिया बनावें।

मात्रा तथा सेवनविधि---५ तोला अर्क गावजवान १२ तोले के साथ देवें।

गुणकर्म तथा उपयोग---मधुमेह मे गुणकारी है।

कुर्स तबाशीर काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कपूर ३।। माशा (या ३ माशा), सफेद वशलोचन, गुलाव पुष्प, सफेद चदन खीरा के बीज का मग्ज, ककडी के बीज का मग्ज, कासनी-बीज, काहू बीज, तोरक बीज प्रत्येक १।। तोला---सबको कूट-छानकर यथावश्यक इसवगोल के लुआव मे गूंधकर टिकिया बनायें।

मात्रा---४।। माशा।

गुण तथा उपयोग---उष्ण कास, राजयक्ष्मा, आन्त्रिक सन्निपात ज्वर (तप मोहरिका) मे लाभदायक है और तृषा को शान्त करता है।

टि०---छ मास तक इसमे वीर्य रहता है।

कुर्स मुलय्यिन (मृदुसारक)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कावुली हड, काली हड, बहेडा, आमला, निशोथ प्रत्येक १।। तोला, सौफ, मस्तगी, उस्तूखुदूस, रेवद चीनी, प्रत्येक ३।।। तोला, सकमूनिया ७।। तोला---सबको वारीक करके १-१ माशा की टिकिया बना लेवे।

मात्रा---२ से ४ टिकिया जल से।

गुणकर्म तथा उपयोग---कोष्ठबद्धतानाशक और उदरशोधक है।

कुर्स सरतान काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कपूर कैसूरी १ माशा, सफेद, पीला और लाल चदन प्रत्येक २ माशा, कद्दू-बीज ३ माशा, वबूल का गोद, कतीरा-गोद, वशलोचन, गुलाब पुष्प प्रत्येक ४ माशा, मुलेठी, रुब्बुस्सूस (सत मुलेठी) प्रत्येक ५ माशा, निशास्ता (गोधूम सत्व), काला कुलफा प्रत्येक ७ माशा, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, खरबूजा के बीज का मग्ज, पोस्ते का दाना, प्रत्येक ९ माशा, केकडे की मसी १ तोला---सबको कूट-छानकर इसवगोल के लुआब से टिकिया बनावें।

मात्रा---७ माशा प्रात काल अर्क गावजवान से देवें।

गुणकर्म तथा उपयोग---यक्ष्मा, रक्तपित्त, खाँसी और जीर्ण ज्वर मे गुणकारक है।

कुहल काफूर (री)

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

कालीमिर्च, पीपल, केसर, वालछड प्रत्येक १४ माशा, रसवत ७ माशा (पाठभेद से ७ तोला), कपूर ३ माशा---समस्त द्रव्यो को महीन खरल करके नेत्राजन (सुर्मा) बनायें।

मात्रा और सेवनविधि---प्रात सायकाल सलाई से नेत्र मे लगायें।

गुणकर्म तथा उपयोग---नेत्र की गर्मी और ललाई को दूर कर ठढक उत्पन्न करता है।

कुहल बयाज (शुक्लहर नेत्राजन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

जलाया हुआ ताँबा (मिस सोख्ता), धोया हुआ शादनज (शादनज मग्सूल) प्रत्येक ५ माशा, रूपासक्खी (अक्लीमियाए फिज्ज) २ माशा, जगार, एलुआ, बूरए अरमनी प्रत्येक १ माशा, काली मिर्च, पीपल, केशर प्रत्येक ४ रत्ती---सबको कूट-छानकर सुर्मा बनाये।

मात्रा और सेवनविधि---प्रात और रात्रि मे सलाई से नेत्र के भीतर लगाये।

गुणकर्म तथा उपयोग---नेत्र के जाले, फूले और नाखूना (अर्म) को काटता और धुध का नाश करता है।

कुहल बासलीकून

देखे---'बासलीकून'।

कुहल रोशनाई

देखे---यूनानी सिद्धयोग संग्रह मे 'रोशनाई' का योग।

कुहल सद्फ (शुक्ति)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जली हुई सीप ४ माशा, भुना हुआ और धुला हुआ नीला थोथा (तूतिया किरमानी) ८ माशा, मिश्री ६ माशा—सबको सुरमे की भाँति खरलकर सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा सेवनविधि—प्रात सायकाल सुरमे की भाँति नेत्र मे लगाया जाता है।

गुणकर्म तथा उपयोग—नेत्र की ज्योति को तीव्र एव पुष्ट करता है। नेत्र की लाली को काटता है और नेत्र को शीतल करता है। समस्त रोगो से नेत्र की रक्षा करता है।

कुह्लुल् (कुहल) जवाहर (रत्नाञ्जन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सुरमा अस्फहानी, सगबसरी (तूतियाए हिंदी), केशर, सुर्ख याकूत (मानिक), धोया हुआ लाजवर्द, जलाये हुए ताँबे की मैल (तोबाल मिस सोख्ता) प्रत्येक ७ माशा, सोना, सोनामक्खी (मारक शीशा), रक्त मूँगा, दहनाफिरग, लाल अकीक, चाँदी, चीनी ममीरा, सफेद मिर्च, पीपल, रूपा मक्खी (अक्लीमियाए नुकरा), जलाया हुआ ताँबा (रूय सोख्ता) प्रत्येक १४ माशा, नहरी केकडा, अनविध मोती, तेजपत्ता प्रत्येक १ तोला ९ माशा, समस्त द्रव्यो को अर्क केवडा मे खरल करके सुरमा तैयार कर लेवे।

मात्रा और सेवनविधि—रात्रि मे सोते समय एक सलाई से नेत्र मे लगाये।

गुणकर्म तथा उपयोग—ज्योति को तीव्र एव बलवान् करता है। इसके उपयोग से ऐनक की आवश्यकता नहीं रहती। नेत्र को समस्त रोगो से सुरक्षित रखता है और ज्योति (दृष्टि) को स्थिर रखता है। नेत्र के लिये परमोपयोगी सुरमा (अजन) है।

खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाब वाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कैंची से कतर कर कीट आदि निकालकर जल से धोया हुआ अबरेशम खाम (अपक्व) १५ तोला ऽ१॥। सेर वर्षा के पानी मे रात्रि मे भिगो रखें और प्रात

काल अग्नि के ऊपर उबालें तथा १॥ पाव रहने पर छान लेवें। पुन इसमे मीठे सेब का स्वरस, खट्टे सेब का स्वरस, मीठे और खट्टे अनार का स्वरस, मीठे अगूर का स्वरस, विही के फल का स्वरस, उन्नाव का स्वरस (उन्नाव को जल मे पीस-छानकर प्राप्त करे) प्रत्येक ३ तोला, गावजबान का स्वरस ६ माशा (इसे भी जल मे पीस-छानकर प्राप्त करे), सफेद चदन का स्वरस ३ तोला (इसे गुलाव मे पीसकर छान लेवे)—इन समस्त स्वरसो को मिलावें। पुन उसमे अर्क गुलाब और मिश्री प्रत्येक १५ तोले, तथा मधु १० तोले मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर उसमे ३ माशे केसर, २-२ माशे कस्तूरी और अबर, आवश्यकतानुसार वशलोचन मे खरल कर अत मे मिलावें तथा घोटने से घोटें। कुछ हकीम शीतलता के विचार से इसमे अर्कबेदमुश्क १४ तोले और तरबूज का पानी ३ तोला और मिलाते हैं।

मात्रा—५ माशे खमीरा १२ तोले अर्क गावजवान के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह खमीरा उन्माद, हृदय डूबना, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त और शुष्क कास मे लाभकारी है। यह पाचन शक्ति एव दृष्टि को वल देता है।

खमीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कैंची से कतरकर भीतर का कीडा निकाला हुआ अबरेशम खाम (अपक्व) ४२ तोले, अगर (ऊद गर्की), बालछड, नारज के ऊपर का सूखा छिलका, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्ता, सफेद चदन प्रत्येक ५ माशा—समस्त द्रव्यो के महीन चूर्ण को अबरेशम सहित एक पोटली मे बाँध लेवे। पुन अर्क गावजबान बेदमुश्क और गुलाव तथा सेब का स्वरस, अनार का स्वरस और बिही के फल का स्वरस प्रत्येक १४ तोला और वर्षा-जल (या सादा पानी) ऽ२ सेर मिलाकर इस मिश्रित जल मे उक्त पोटली डालकर इतना उबाले कि दोनो सेर वर्षा-जल जल जाय। तदुपरात पोटली निकाल लेवें। अब इस क्वाथ जल मे ऽ। मधु और ऽ॥। मिश्री मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर इसमे अबर अशहब, सोने और चाँदी के वर्क ६-६ माशा, मोती, मानिक (याकूत), हरा सगयशब, कहरुवा शमई और प्रवाल ९-९ माशा, कस्तूरी, केसर प्रत्येक ५ माशा खब भली प्रकार खरल करके मिश्रित करें और इतना घोटें कि रग श्वेत आ जाय। पुनः उसे चीनी वा शीशे के मर्तबाद मे रखें।

मात्रा—३ माशे खमीरा ७ तोले अर्क गावजवान, ५ तोले अर्क गाजर से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग–शरीर के विशिष्ट अगो को बल देता है, दिल डूबना, उन्माद तथा वातिक रोगो मे अतीव गुणकारी है। पित्तजनित जीर्ण प्रतिश्याय मे भी लाभप्रद है। यूनानी वैद्यक की एक विशेष एव महत्वपूर्ण ओषधि है।

खमीरा गावजबान अबरीजदवार ऊदसलीबवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

खमीरा गावजबान अबरी के पाक मे जदवार और ऊदसलीब १-१ तोला अबर के साथ खरल करके मिलायें।

मात्रा—३ माशे।

गुणकर्म तथा उपयोग—शरीर को दृढ (बलवान्) बनाता है तथा अर्दित, अर्धाङ्ग, वातकम्प, अपस्मार, अपतन्त्रक, बालग्रह मे अति उपयोगी है और हृदय एव मस्तिष्क को बलवान् बनाता है।

खमीरा गावजबान अबरी जवाहरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

'खमीरा गावजबान अबरी वर्क तिला वाले (खमीरा गावजवान अबरी मे ६ माशे सोने के वर्क मिला खमीरा) मे मोती, मानिक, (याकूत), पन्ना (जमुर्रद), और जहरमोहरा प्रत्येक ४॥ माशे खरल करके मिश्रित करे।

मात्रा और सेवनविधि—५ माशे खमीरा अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—उपर्युक्त।

खमीरा सदल (चन्दन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेद चदन का बुरादा ७॥ तोला ु॥ अर्क गुलाब मे एक दिन-रात भिगो रखे। तदुपरात क्वाथ कर छान लेवें और ु१ सेर चीनी मिलाकर अग्नि के ऊपर रखे और खमीरा की विधि से पाक करें। पाक सिद्ध होने पर घोटने से घोट लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा से १ तोला तक खमीरा १२ तोले अर्क गावजवान से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—हृदय डूबना, हृदय की अति धडकन और तृषा आदि मे परम उपयोगी है।

खमीरा संदल तुर्श

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

घिसा हुआ सफेद चदन ८॥। तोला, छिला हुआ सफेद धनिया १ तोला ५॥ माशा—दोनो को कच्चे अगूर के स्वरस २९ तोला २ माशा, अगूरी सिरका २ तोला ११ माशा, वर्षा-जल ऽ१ सेर, अर्क गुलाव ऽ॥, अर्क बेदमुश्क ऽ॥ मे एक दिन-रात भिगोये रखें। इसके बाद इतना उबालें कि आधा शेष रह जाय। तदुपरात हाथ से मलकर क्षौम वस्त्र (अलसी के बारीक कपडे) मे छान लेवें। पुन चीनी ऽ१ सेर मिलाकर चाशनी बनायें। पुन. घिसा हुआ चदन और वंशलोचन प्रत्येक २ तोला ११ माशा, अविध मोती, हरा यशव (दोनो खरल किये हुये) केसर प्रत्येक ३॥ माशा, कैसूरी कपूर २। माशा कूट-छानकर सोने के वर्क, चाँदी के वर्क प्रत्येक १॥। माशा, सबको उसमे गूँधें।

मात्रा—१ तोला १०॥ माशा।

गुण तथा उपयोग—हृदय की उष्ण विप्रकृति, हृदयदौर्बल्य, हृदय की धडकन, पित्तज ज्वर, पित्तज अतिसार, उत्क्लेश और पित्तज वमन के लिये गुणकारक है।

जरूर अव्यज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अजरूत, चाकसू प्रत्येक १ भाग, कलोंजी, निशास्ता प्रत्येक आधा भाग, सफेदा वग चौथाई भाग—सबको खरल करके अवचूर्णन करे।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यद को दूर करता, नेत्रगत क्लेद को सुखाता और बालको के नेत्ररोगो के लिये लाभप्रद है।

जरूर अस्फर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गदही के दूध मे परिपालित अजरूत १ तोला ५॥ माशा, शियाफ मामीसा ७ माशा, एलुआ, केसर, गुलाब-बीज प्रत्येक १॥। माशा, अफीम १ माशा—सबको बारीक पीसकर रेशमी कपडे मे छानकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रशूल के लिये गुणकारक है।

—०—

जिमाद किबरीत (गन्धकादि लेप)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गधक २।। तोला, गूगल, उशक, सकवीनज, तुर्मुस, मेथी, हरमल, अलसी, सुदावपत्र, इक्लीलुल् मलिक (नाखूना) ३-३ तोला, अजीर जर्द १० दाना—प्रथम गोददार औषध द्रव्य को तथा अजीर को अगूरी सिरका मे एक दिन रात भिगोये। पुन भली भाँति खरलकर शेष समस्त द्रव्यो का चूर्ण कर मिला देवें और सुरक्षित रखे। अर्ध उष्ण करके प्लीहा के ऊपर इसका लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—प्लीहावृद्धि मे उत्तम लेप है।

जिमाद खद्र (सुन्नताहर लेप)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सोठ १ तोला १० माशा, काली मिर्च, अकरकरा प्रत्येक १ तोला १।। माशा, लौग, फरफियून प्रत्येक १ तोला, कलौंजी ९ माशा, गुलरोगन आवश्यकतानुसार—सबको कूट-पीसकर गुलरोगन मे अग्नि पर लेप तैयार करे।

मात्रा और सेवनविधि—सुन्न (खद्र) स्थान के ऊपर यथावश्यक लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—सुन्नता निवारण के लिये परीक्षित है।

कण्ठमालाहर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

एलुआ, बोल (मुरमकी), नाखूना (इकलीलुल्मलिक) अलसी, ईरसा प्रत्येक २ माशा, उशक, चिरायता, कडवा कुट, हीग, मेथी, काली मिर्च, पीपरामूल, जरावद मुदहरज (गोल), फरफियून, विरोजा प्रत्येक १ माशा—सबको कूट-पीसकर यथावश्यक सिरका और गुलरोगन मे लेप तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—हरे गिलोय के स्वरस मे घिसकर ग्रन्थियो (गिल्टियो) के ऊपर लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—कण्ठमाला मे लाभकारी है।

निद्राकर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

हरे धनिये का स्वरस २ तोला, शुद्ध सिरका, गुलरोगन, सफेद चदन, काहू-बीज, नीलूफर-बीज (वेरा), कुलफा के बीज प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा, अफीम ४ रत्ती, केसर ४ रत्ती--सबको पीसकर मिला लेवें, अग्नि के ऊपर नहीं रखें। केवल खरल करके लेप प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवनविधि--आवश्यकतानुसार मस्तक के ऊपर धीरे-धीरे मर्दन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--नींद लाने के लिये सर्वोत्तम वस्तु है।

वृषणशोथहर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बावना, इक्लीलुल्मलिक (नाखूना), कैसूम प्रत्येक २ तोला, बनफ्शा पुष्प, खतमी पुष्प प्रत्येक १॥ तोला, गुलाब पुष्प ९ माशा --सबको कूट-छानकर चूर्ण करे और अलसी के जलीय स्वरस मे मिलाकर लेप करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--वृषणशोथ के लिये गुणकारक एव शोथनाशक हे।

जवारिश अनारैन (दाडिमद्वय)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मीठे और खट्टे अनार का स्वरस प्रत्येक ꠸२ सेर, हरे पुदीना का रस, अर्क गुलाब प्रत्येक ८ तोले २ माशा, बालछड, मस्तगी प्रत्येक ७ माशा, चीनी (कद सफेद) ꠸१ सेर--उपर्युक्त रसो और अर्क मे खॉड मिलाकर चाशनी करे और शेष द्रव्यो को कूट-छानकर उसमे मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशे जुवारिश ५-५ तोले अर्क गावजबान और अर्क गाजर के साथ खिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--यकृत् और आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, बढी हुई गर्मी और पित्त को शमन करती है तथा वमन और मिचली को रोकती है।

जुवारिश कमूनी कबीर (वृहत् जीरकादि खाण्डव)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

दालचीनी, कालीमिर्च, सफेद मिर्च, बूरा अरमनी, प्रत्येक ७ माशा, सुदाब-पत्र १ तोला, शुद्ध स्याहजीरा ४। तोला, सोठ का मुरब्बा ३ तोला, हड का मुरब्बा ५ तोला, सूर्यतापी गुलकद ८ तोला, चीनी (खाड) २० तोला, मधु १० तोला—प्रथम गुलकद और मुरब्बो को जल मे बारीक पीस लेवे और खाँड मिलाकर अग्नि के ऊपर रखें। पाक सिद्ध होने पर शेष द्रव्यो का चूर्ण डालकर जुवारिश तैयार करे।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे अर्क सौफ से प्रयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—उदरस्थ वातविकार, वातिकशूल, आध्मान, हिक्का अजीर्ण तथा वातोदर का नाश करती है और रेचक भी है।

जुवारिश कमूनी मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कृष्ण जीरा १५ तोले, सफेद निसोथ ७॥ तोले, विलायती आकाशबेल ५ तोले, काली मिर्च, सोठ, पीपल प्रत्येक २॥ तोले, पुदीना, सुदाब-पत्र, सातर फारसी, बूरा अरमनी प्रत्येक १५ माशे, समस्त द्रव्यो से तिगुना मधु, यथाविधि पाक करें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क सौफ के साथ प्रयोग करे। विरेचन गुण की वृद्धि के लिये इसे १ तोला की मात्रा मे देवें और ऊपर से ६ तोले अर्क सौफ, ६ तोले अर्क मकोय ४ तोले शर्बत दीनार मिलाकर पिलावे।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह आमाशय और अन्त्र के मल एव दोषो का शोधन करती है, मुख की विरसता, लालास्राव एव कफज रोगो मे लाभकारी हे, आमाशय को वल देती है तथा वायु विकारो के लिये उपकारक है।

जुवारिश जंजबील

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जायफल १ नग, केसर २॥ माशा, लौग, दालचीनी प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, बबूल का गोद, छोटी इलायची, प्रत्येक २ तोला ११ माशा,

निशास्ता, सोठ प्रत्येक ११ तोला ८ माशा, (कद सफेद) ३४ तोला—सव द्रव्यो को बारीक पीस कर खाँड की चाशनी करके मिलायें और जुवारिश तैयार करके रख लेवे।

मात्रा और सेवनविधि—४ माशा, यह जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ या अन्य उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—वायु को विलीन करती है, भोजन को पचाती एव अग्नि को दीपन करती (आमाशय बलप्रद) है। अमाशयदौर्वल्य (अग्निमान्द्य) और अजीर्ण मे भी लाभप्रद है।

जुवारिश जरऊनी अबरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सालममिश्री, बैल के शिश्न का शुष्क चूर्ण, चिडा (चटक) के शिर का मज्ज, मीठा चिरायता, छुहारा, गोखरू—प्रत्येक ९ माशा, करपस-बीज, गाजर-बीज, शलगम के बीज, सोआ के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा-ककडी के बीज, हब्बुल् कुलकुल-बीज, हब्बुल्जल्म, अजवायन, सौंफ, खोपरा, चिलगोजा के बीज, करफ्स की जड—प्रत्येक २२ माशे, अम्बर अशहब ९ माशे, कस्तूरी २। माशे, जावित्री, लौंग, पिपरामूल, अकरकरा, कबाबचीनी, सोठ, पान की जड, जायफल, गुलाब-पुष्प, तज, पीपल, शलगम-बीज, जिर्जीर-बीज, प्याज-बीज, गन्दना-बीज, हालो (हब्बुर्रशाद), अजुरा-बीज—प्रत्येक १० माशे, केशर, कुहुर, मस्तगी रूमी, अगर—प्रत्येक १४ माशे, हालो के बीज, बूजीदान, लाल बहमन, सफेद बहमन, शकाकुलमिश्री, मीठा इन्द्र जौ—प्रत्येक १॥ तोला, खाँड ५२ तोले, मधु ऽ१ सेर—प्रथम खाँड और मधु का पाक करें और औषध द्रव्य का चूर्ण कर, कस्तूरी अम्बर, केशर को भी बारीक करके चूर्ण मे मिलाकर खरल करे। पुन इस चूर्ण को पाक सिद्ध होने पर उसमे मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि—५ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह जुवारिश विशेष कर के वृक्क एव मूत्राशय को बल देती है, कटि को बलवान् बनाती है, यकृत् तथा मस्तक के लिये बलप्रद है। मूत्राधिक्य, वातरक्त, कफज कास वा अन्य कफज एव वातज उपद्रवो को शान्त करती है, वीर्य को बढाती है; तथा वाजीकरण है।

जुवारिश तमरहिन्दी (अम्लिका)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बीजो तथा छिलको से शुद्ध की हुई इमली ७४ तोले, बीज निकाली हुई द्राक्षा (मुनक्का) ३७ तोले (उभय अगूरी सिरका मे डाली हुई), अनारदाना ३७ तोले--सब को पृथक्-पृथक् कूट कर बारीक करें। अनारदाना को कपडे मे छान लेवें। तदुपरान्त ८१ सेर खॉड (कद सफेद) की चाशनी करके शेष ओषधि सम्मिलित करके चलाते रहें और उसी के बीच कागजी नीबू का रस या अगूरी सिरका और खट्टे अनार का रस थोडा-थोडा डालते रहें। अन्त मे काली मिर्च, लौग, तज, सोठ, जायफल, छोटी इलायची का दाना, बडी इलायची का दाना, सूखा पुदीना प्रत्येक ६ माशा कूट-छान कर मिलाये और जुवारिश तैयार करके सुरक्षित रखे।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा यह जुवारिश १२ तोले अर्क गावजवान या १२ तोले अर्क सौफ से खिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--हृदय, यकृत और मस्तिष्क को बल प्रदान करती है। पित्तज वमन एव अतिसार को नष्ट करती है और खूब क्षुधा उत्पन्न करती है।

जुवारिश दारचीनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

छोटी (सफेद) इलायची, तज प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, अनीसून, सौंफ, दालचीनी प्रत्येक १०॥ माशा, लौंग, काली मिर्च, पीपल, बालछड, तगर (असारून) प्रत्येक १७॥ माशा, दालचीनी ४२ माशा, अगर, रासन (अभाव मे सोठ) प्रत्येक २१ माशे, पुदीना २८ माशे, सोठ ३५ माशे--सब को पीस कर तिगुने शुद्ध मधु की चाशनी मे जुवारिश तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि--५ से ७ माशे, यह जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ या अर्क गावजबान के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--वृक्क, मूत्राशय और आमाशय की दुर्बलता को दूर करती है। साद्र एव दूषित वायु और सान्द्र दोषो को निकालती है।

जुवारिश बस्बासा

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

तज, छोटी इलायची का दाना, सोठ, पीपल, दालचीनी प्रत्येक ३॥ माशा, जावित्री ७ माशा, लौंग ८। माशा, काली मिर्च ७ माशा, बडी इलायची का दाना १॥ तोला, खॉड (कद सफेद) ६ तोला, शुद्ध मधु ३ तोला—खॉड वा चीनी और मधु की चाशनी बनाकर शेष द्रव्यो को बारीक पीस कर मिलावे और जुवारिश बनाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा यह जुवारिश अर्क सौंफ से खिला दिया करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--वादी बवासीर के लिये गुणकारी है। आमाशयस्थ शीत का निवारण करती है, वायु को विलीन (नष्ट) करती है और भोजन को भली-भॉति पचाती है।

जुवारिश मस्तगी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मस्तगी रूमी २। तोला, अर्क गुलाब १७॥ तोला, मिश्री (नवात सफेद) ऽ१ सेर--अर्क गुलाव मे मिश्री की चाशनी करें। जब शीत हो जाय, तब मस्तगी पीस कर मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा जुवारिश १२ तोले अर्क सौफ के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--लालास्राव को नष्ट करती है, आमाशय के दूषित स्राव को शुष्क करती है। मत्र की अधिकता एव अतिसार को रोकती है; आमाशय और अन्त्र को बल देती और कफज रोगो मे अतीव गुणकारी है।

जुवारिश मस्तगी बनुस्खा कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मस्तगी रूमी, गोलमिर्च, देशी अजवायन, कबावचीनी, अजमोद, सिरका मे शुद्ध किया हुआ कृष्ण जीरा, गुलाब-पुष्प, शोधित सफेद जीरा, बिजौरे का छिलका, कासनी बीज, सौंफ, कुदुर, सूखा धनिया, बिल्लीलोटन, गावजबान-पुष्प, नरकचूर, बालछड, केसर प्रत्येक २१ माशा, दालचीनी, सोठ,

छोटी इलायची प्रत्येक ९ माशा--सब औषध के बराबर मिश्री (नबात सफेद) मिला, यथाविधि जुवारिश बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--७ माशा जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--कफजनित आमाशय और यकृत् की दुर्बलता को दूर करती है, मूत्र एव लालास्राव की अधिकता को रोकती है और कफज अतिसार के लिये लाभकारी है।

विशिष्ट गुण--वाष्पावरोधक है।

जुवारिश सदलैन

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

शुद्ध कस्तूरी १।।। माशा, मस्तगी, केशर, प्रत्येक ३।। माशा, अनविध मोती, गहरे लालरग का मूँगा, भुने और छिले हुए कुलफा के बीज, सूखा और भुना हुआ धनिया, पिस्ता के बाहर का छिलका प्रत्येक ७ माशा, लाल चन्दन ३५ माशा, अर्क गुलाव मे घिसा हुआ सफेद चन्दन ७० माशे, अर्क गुलाब ८ तोला ९ माशा, बिजौरे (तुरग) का स्वरस १४ तोले ७ माशे, खाँड, (कद सफेद) ꠸१ सेर--अर्क गुलाव मे खाँड को हल करके पाक करें और पाक के पश्चात् तुरज का स्वरस तथा मधु मिलाकर गाढा करें। अब सब औषध-द्रव्य का महीन चूर्ण कर पाक मे मिला कर जुवारिश तैयार करे।

मात्रा और सेवनविधि--५ माशे से ९ माशे तक, यह जुवारिश ३ तोले अर्क अबर अथवा अर्क गावजबान या अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ६ तोले के साथ सेवन करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--आमाशय दिल-दिमाग तथा यकृत् को बल देती है। दिल की धडकन को दूर करती, पैत्तिक अतिसार को नष्ट करती और हृदयगत ऊष्मा को शान्त करती है।

जुवारिश सफरजली मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

छिलका एव बीज रहित ꠸।। सेर विही को ꠸।।। उत्तम सिरका मे उबाले। जब विही भली भाँति मृदु हो जाय तब पीसकर मलीदा करें। पुन इसमे ꠸।।। मधु मिलाकर पाक करें। अब छोटी व बडी इलायची प्रत्येक २२ माशे, सोठ, मस्तगीरूमी प्रत्येक १।। तोला, पीपल, दालचीनी, केसर प्रत्येक १०।। माशा,

भुलभुलाया हुआ सकमूनिया ३ तोले, निशोथ ८॥ तोले का चूर्ण कर पाक मे मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह जुवारिश रेचक है, अन्त्र को मल तथा दोषो से शुद्ध करती है। उदरशूल और अन्त्रशूल को भी नष्ट करती है तथा आमाशय–बलदायक एव पाचक है।

जौहरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सखिया, रसकपूर, दार चिकना प्रत्येक समानभाग, उत्तम ब्राडी (सुरा) छ. गुना मे इसे भली भाँति खरल करके प्रसिद्ध विधि से सत्व उडायें।

मात्रा और सेवनविधि—१ चावल कैंपशूल के भीतर रखकर निगलवायें। अम्ल पदार्थो से परहेज करायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—फिरग (आतशक) के लिये रामवाण है और समस्त सौदावी रोगो मे लाभ करती है।

तिला आला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सिहवसा, शूकरवसा प्रत्येक १॥ तोला, लौंग, जावित्री, केशर, मालकँगनी, अजवायन खुरासानी, लहसुन, हीराहीग, कपूर, सुहागा (सौभाग्य) मनुष्य के कान की मैल, हिगुल, कनेर की जड की छाल प्रत्येक १॥। तोला, बीरबहूटी, जायफल, केचुआ, बछनाग, सफेद घुँघची, अकरकरा, दालचीनी, जुंद बेदस्तर प्रत्येक १४ माशा, सूखी जोक ७ नग, छ घरेलू चिडे का मग्ज, मेढक का मग्ज, भिलावा प्रत्येक ४ नग, प्याज नरगिस, साँडा की चर्बी तथा मग्ज, नेवले की चर्बी तथा मग्ज प्रत्येक २ नग—सब को १२ प्रहर तक खरल कर एक जीव करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह तिला शिश्न का टेढापन तथा दुर्बलता को दूर करता है और उसे लबा, मोटा एव दृढ करता है।

तिला जदीद।

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेद सखिया २॥ तोला को आक के ५ तोला दूध मे खरल करे। तत्पश्चात् वीरबहूटी, जावित्री, लौग, अकरकरा, जायफल प्रत्येक ६ तोला इसमे खरल करें। पुन केशर, कस्तूरी, प्रत्येक १ तोला ८ माशा मिलाकर खरल करें। अन्त मे ऽ१ सेर गाय के घी मे खरल करके रखे।

मात्रा तथा उपयोग विधि—चार चावल वा १ रत्ती मुण्ड और सीवन छोड कर केवल ऊपर के भाग मे लगाकर मर्दन करें। ऊपर से बगलापान गरम करके लपेट देवें और पान पर कच्चा सूत लपेट देवे। प्रात काल उष्ण जल से धो डालें। यदि सेवनकाल मे फुसियाँ निकल आवे तो तिला न लगाकर चमेली का तेल कुछ दिन लगावे। फुन्सियाँ अच्छी होने पर पुन तिला लगावें।

गुण तथा उपयोग—ध्वज भग को नष्ट करता, शिश्न मे उत्तेजना तथा दृढता उत्पन्न करता है।

तिला सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शिगरफ (हिगुल), जमालगोटा प्रत्येक २ तोला, सखिया ३ माशा, मोम ४ तोला, गाय का मक्खन १२ तोला—प्रथम औषध-द्रव्य को बारीक खरल कर मोम को मक्खन मे पिघलाकर औषधचूर्ण मिला देवें और सुरक्षित रखे।

मात्रा और सेवनविधि—२ रत्ती तिला लेकर मुण्ड (सुपारी) और सीवन बचाकर केवल ऊपर के भाग पर मर्दन करे।

गुण तथा उपयोग—शिश्नेन्द्रिय के साधारण दोष को दूर करता है और कुछ दिनो के सेवन से शक्ति उत्पन्न करता है।

तूतियाए कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सगवसरी २ तोला, सोने का वर्क ३ माशा, लौग, अनविध मोती, गोलमिर्च प्रत्येक एक माशा—प्रथम सगवसरी को गरम करके गोमूत्र मे एक सौ एक बार बुझावे, पुन कोयले की अग्नि पर लाल करके जल मे बुझा कर उसका बाहरी आवरण (छिलका) दूर कर देवें। पुन समस्त द्रव्यो को अर्क गुलाब मे खरल करें और आवश्यकतानुसार मक्खन मिला कर कागजी नीबू के रस मे इतना खरल करें कि चिकनाहट दूर हो जाय। इसको सुखा कर सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा उपयोग विधि--दो चावल से ४ चावल तक ७ माशे जुवारिश बस्वासा या माजून सगदानामुर्ग मे मिला कर सेवन करें। उष्ण, वादी एव गरिष्ठ भोजन से परहेज करें। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु मे कर सकते है।

गुण तथा उपयोग--आमाशय तथा अन्त्र को वल देती है और अतिसार को बन्द करती है।

दवाउल् कुर्कुम सगीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

केसर असली, तज, बालछड प्रत्येक ७ माशा, फुक्काअ (गोया) इजखिर, बोल, कुट, दालचीनी प्रत्येक ३।। माशा--सब द्रव्यो को कूट-छानकर एक दिन-रात अगूरी मदिरा मे भिगो रखें,। पुनः तिगुने शहद मे मिला लेवें।

मात्रा तथा गुण--'दवाउल्' कुकुम कबीरवत्'।

दवाउल्मिस्क मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कपूर ३ रत्ती, अम्वर ७ रत्ती, कस्तूरी १।।। माशा, चाँदी के वर्क (पत्र), केशर प्रत्येक ३।। माशा, काहू के बीज ५। माशा, प्रवाल मूल, कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ७ माशा, मोती, गावजवान पुष्प, निशास्ता, कुलफा वीज, सफेद चदन प्रत्येक ८।।। माशा, आमला, अर्क गुलाब मे जीरिश्क कास्वरस निकाला हुआ प्रत्येक २१ माशा, दालचीनी ४।। माशा, मधु समस्त द्रव्यो के समान, खाँड दुगुनी, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, गावजवान प्रत्येक २८ तोले १।। माशा--प्रथम अर्को मे खाँड तथा मधु मिलाकर पाक करे। पाक सिद्ध होने पर औषध-द्रव्यो का चूर्ण मिलाकर अवलेह वनावें।

मात्रा--५ माशा।

दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गुलाब-पुष्प, कतरा हुआ अबरेशम, दालचीनी, सफेद और लाल वहमन, केशर, दरूनज अकरबी प्रत्येक ७ माशा, अगर, बिल्ली लोटन प्रत्येक ५। माशा,

मस्तगी, छडीला, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक ३॥ माशा, सूखा धनिया, गावजबान-पुष्प, गुठली निकाला हुआ आमला, छिले हुये कुलफे के बीज प्रत्येक १०॥ माशे, तिब्बती कस्तूरी १ माशा ७ रत्ती, मीठे सेब का रुब्ब (गाढ़ा शर्बत), खाँड (कद सफेद), सफेद शहद प्रत्येक औषध द्रव्य के समतोल, चाँदी के वर्क १०॥ माशा—यथाविधि माजूनवत् किंचित् पतली चाशनी कर लेवे ।

मात्रा और सेवन विधि—७ माशा, अर्क गावजबान ६ तोले अथवा अर्क सौफ ६ तोले, शर्बत बनफशा २ तोले के साथ प्रयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—भोजन को पचाती है, आमाशय, यकृत् और उत्तमाङ्गो को बल देती है ।

वक्तव्य—दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली मे इससे निम्न द्रव्य अधिक पडते है—अनबिध मोती, कहरुवा समई प्रत्येक ४ माशा, अवर अश्हब १ माशा ७ रत्ती । विशेष दे० 'यूनानी सिद्धयोग सग्रह पृ० ९७' ।

दवाउल्मिस्क हार्र (सादा)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कचूर, दरूनज अकरबी, कहरुबा, प्रवालमूल (बुसद) प्रत्येक ३ तोले, कतरा हुआ अबरेशम, दोनो बहमन (सफेद व लाल) बालछड, तेजपात, छोटी इलायची, लौग प्रत्येक १॥ तोला, पीपल, सोठ, छडीला प्रत्येक १ तोला, कस्तूरी ७ माशा—सब द्रव्यो को कूट-छानकर तिगुना मधु का पाक कर उसमे भलीभाँति मिश्रित करे ।

मात्रा तथा उपयोग विधि—५ माशा अर्क, गाजर, अर्क अवर मे मीठा मिलाकर प्रयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—दिल-दिमाग को बल देनेवाली विशेष ओषधि है । खफकान (दिल की धडकन), उन्माद, चित्तविभ्रम, अर्दित, अर्धाङ्ग, वातकम्प, ढीलापन और अपतन्त्रक मे लाभप्रद है तथा दीपन-पाचन है ।

दवाउल्मिस्क हार्र जवाहरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उपरिलिखित योग मे मोती, कहरुवा शमई, प्रवालमूल (बुसद) प्रत्येक ३ तोले खरल करके मिश्रित करें ।

मात्रा तथा गुण—उपरिलिखितानुसार ।

दवाए नुजूलुल्माऽ

इसका योग यूनानी सिद्ध योग संग्रह मे पृ० ४५ पर 'सुरमे नुजूलुल्माऽ' नाम से दिया है। वही देखें।

दवाए जरयान (दवाए डिप्टीसाहबवाली)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध पारा ६ माशा, शुद्ध वग १ तोला, शुद्ध वछनाग ३ माशा, दक्षिणी सफेद मिर्च २ तोला—वग को पिघलाकर पारे मे मिलावें और खूब खरल करें। तत्पश्चात् वछनाग का चूर्ण मिलाकर १-१ सफेद मिर्च डालकर खूब खरल करें। बस तैयार है।

मात्रा—दो चावल मक्खन मे मिलाकर सेवन करें।

गुण—प्रमेह के लिये उत्कृष्ट योग है।

दवाए नारुवा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफीम, प्याज, साबुन—साबुन और प्याज को टुकडे-टुकडे करके तेल मे पकायें जिसमे मरहम के समान हो जाय। तदुपरात नहरुवे के मुँह पर और उसके चतुर्दिक लेप कर। प्रथम औषधि को तैयार करते समय जो वाष्प उठें उनको नारुवे पर पहुँचावें, तत्पश्चात् लेप करें।

गुण—स्नायुक कृमि (नारुवे-इर्क मदनी) के लिये गुणकारक है।

दवाए सूजाक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध गधक, कलमी शोरा, १-१ तोला—दोनो को लोहे की कडाही मे डालकर उसके ऊपर दूसरी कडाही देकर ढक देवें। तदुपरात कपरौटी करके चूल्हे पर चढाकर मृदु अग्नि देवें। एक घण्टा पश्चात् दोनो पिघल जायँगे। पुन उतारकर उसमे १ तोला भुनी हुई फिटकिरी डालकर सबका बारीक चूर्ण करें।

मात्रा और सेवनविधि—१॥ माशा, बकरी के दूध मे शर्बत बजूरी मिलाकर प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—नये तथा पुराने सुजाक मे लाभप्रद है।

दवाए स्याह मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि——

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक आमलासार १–१ तोला लेकर खरल करके सुर्मे की भाँति कज्जली वनावें। पुन ४ तोले शुद्ध जमालगोटा मिलाकर खरल करें। जव खूब वारीक हो जाय तव सग वसरी १ तोला मिलाकर खरल करें। अव इस ओषधि को खरल से निकालकर मिट्टी के कोरे वरतन मे लेप की भाँति लगा देवें और खरल को धोकर उसका पानी भी इसी वरतन मे डाल देवें। यदि पानी का प्रमाण औषध के ऊपर दो उँगली हो तो उत्तम वरन् और पानी डालें और अग्नि पर पकावें जिसमे पानी सूख जाय। जव वरतन मे किंचित् जल रह जाय, तव अग्नि से नीचे उतारकर औषध को ऊपर-नीचे करके छाँह मे सुखा कर रख लेवे।

मात्रा और सेवन विधि——दो रत्ती दवाएस्याह मे १ रत्ती कपूर मिलाकर दूध की लस्सी से सेवन करायें। तीसरे पहर लवण एव शर्करा रहित दूध, चावल खिलायें। उष्ण और अम्ल पदार्थो से परहेज कराये।

गुणकर्म तथा उपयोग——सौदावी एव श्लैष्मिक दोष का निर्हरण करता है।

विशिष्ट गुण——फिरगदोष का निवारण करता है।

टि०——इस औषधि से वमन होता है, परतु विरेक कभी नही होता।

बरूद काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि——

सगबसरी १ तोला, कपूर ४ माशा मिलाकर खरल करें और रेशमी कपडे मे छानकर किसी शीशी मे सुरक्षित रखे।

मात्रा और सेवनविधि——दो-तीन सलाई प्रात-मध्याह्न और सायकाल नेत्र मे लगाया करें।

गुण तथा उपयोग——नेत्र की लाली तथा गर्मी को दूर करता है और शीतलता उत्पन्न करता है।

विशिष्ट गुण प्रयोग——उष्ण नेत्राभिष्यन्द के लिये विशेष गुणकारी है।

बासलीकून कबीर (कुहल बासलीकून)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

समुद्रझाग, रूपामक्खी प्रत्येक ५ तोले, एलुआ, मामीसा बूटी का घन सत्त्व, दग्ध तॉबा प्रत्येक २।। तोले, हरड चीनी ममीरा, बोल (मुरमकी), नौसादर, हलदी प्रत्येक १।। तोला, लवपुरी नमक, तमालपत्र, रॉग का सफेदा, काली मिर्च, पीपर, बालछड, सुरमा असफहानी प्रत्येक १-१ तोला, सेंधा नमक, लौग, छडीला प्रत्येक ६ माशे--सबका बारीक चूर्ण कर रेशमी वस्त्र से छानकर रख देवे, बस तैयार है। रात्रि मे सोते समय नेत्र मे लगावें।

गुण तथा उपयोग--प्रारभिक मोतियाबिन्दु, नेत्र की दुर्बलता, तिमिर, नेत्रकण्डु, अर्म आदि नेत्र के समस्त कठिन रोगो मे सिद्ध प्रभावशाली औषध है।

मरहम ईसा

वक्तव्य--'मरहम रुसल' का दूसरा नाम 'महरम ईसा' वा 'मरहम सलीखा' है। मरहम रुसल के पाठ के लिये यूनानी सिद्धयोग सग्रह देखे।

मरहम उशक

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

राई, समुद्रझाग, जरावद तवील (लबा), गुग्गुल, उशक, आमलासार गधक, अजुरा बीज प्रत्येक २ तोला, पुराना जैतून का तेल १२ तोले--प्रथम उशक और गुग्गुल को जैतून के तेल मे हल करें। फिर मोम डालकर अग्नि पर पिघलावें और इसमे शेष द्रव्यो का चूर्ण मिलाकर खूब घोट देवे।

मात्रा और उपयोगविधि--आवश्यकतानुसार लेकर गुलरोगन और जैतून के तेल मे मिलाकर शोथ के ऊपर लेप करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--प्लीहा-शोथ के लिये विशेष गुणकारी है। कण्ठ-माला मे भी उपयोगी है।

मरहम जदवार

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

जदवार ४।। माशा, गन्धाबेहरोजा, कद (चीनी) प्रत्येक ६ माशा, हलदी देवदारू, मुलेठी, मेहदी के पत्र, भडभूँजे की छत का धुआँ प्रत्येक ३ तोला, कीकर

की छाल, नीम की पत्ती, रतनजोत प्रत्येक ६ तोला—कद (चीनी) के सिवाय शेष समस्त द्रव्यो का चूर्ण बना लेवें और ८२।। सेर जल मे इतना पकायें कि दो-तिहाई जल शेष रह जाय। पुन. छानकर ६० तोले तिल का तेल मिलाकर दोबारा उबालें। जल शुष्क होने पर और केवल तेल मात्र शेष रह जाने पर ६ तोला मोम डालकर पकावें और सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि—कुनकुना गरम करके ग्रन्थि के ऊपर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—व्रण और घाव को भरता है। आघात (चोट) के लिये लाभकारी है। ग्रन्थि को विलीन करता है। प्लेग की गिल्टी के लिये भी उत्तम है।

मरहम बासलीकून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

राल, गाय की चर्बी, जिफ्त प्रत्येक समभाग लेकर परस्पर गूँधें और आवश्यकतानुसार दिव्क (मवीजजअसली) की योजना करके उपयोग करें। कतिपय योग पाठो मे दिव्क के स्थान मे बिरोजा चतुर्थांश और कतिपय मे गाय की चर्बी के स्थान मे मोम देखा गया है। इस योग को मरहम अरबआ भी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—यह अर्बुद (रसौली) को मृदु एव विलीन करता है। हर प्रकार के व्रण एव घाव और समस्त शीतल शोथो के लिये गुणदायक है।

मरहम मिश्री

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सिरका और मधु प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती को परस्पर पकायें और पाक करें। पुन जगार ३।। माशा, अजरूत ७ माशा दोनो को पीसकर इसके ऊपर छिडकें और मरहम बनावें।

गुण तथा उपयोग—पुरातन व्रण के लिये उपयोगी है।

मरहम मुहल्लिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बाबूनापुष्प, नाखूना, सूखी मकोय, बिरजासफ प्रत्येक ५ तोला, कपूर १।। तोला, अफीम ३ माशा, सफेद मोम और तिल का तेल १-१ पाव—प्रथम

मोम को तेल मे पिघलाकर शेष द्रव्यो का चूर्ण मिलाकर घोटें और अत मे कपूर तथा अफीम मिलाकर एकजीव कर लेवे ।

गुण--परम श्वयथुनाशक है ।

मरहम शलगम

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गुलरोगन १० तोला, सिंदूर ३॥ तोला, कपूर ३ माशा--प्रथम आवश्यकतानुसार शलगम के टुकडे-टुकडे करके गुलरोगन मे खूब भूनकर निकाल लेवें । तदुपरात अग्नि से नीचे उतारकर सिंदूर मिलावे और नीम के दस्ता से घोटे । इसके बाद कपूर मिलाकर और नीम के दस्ता से हल करके सुरक्षित रखें । कुछ योगो के पाठ मे कपूर नही लिखा है ।

गुण तथा उपयोग--व्रणपूरण एव शोथविलयन के लिये अनुपम एव परीक्षित है ।

मरहम शिगरफ (जिजफर)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मुर्दारसग, विरोजा प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, इलकुल्वुत्म, शिगरफ प्रत्येक १॥। तोला, लोवान, उशक प्रत्येक २ तोला ११ माशा, कीकर का गोद ३॥। तोला, जैतून का तेल आवश्यकतानुसार--यथाविधि मलहर तैयार करे ।

गुण तथा उपयोग--वृषणगतव्रण तथा कण्ठमाला एव कर्कटार्बुद (सरतान) के लिये उपयोगी है ।

मरहम सार्हदा चोबनीम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

प्याज के ऊपर का पतला छिलका और मक्खन काँसे के बरतन मे नीम के डडे से जिस पर तॉबे का पैसा लगा हुआ हो रगडे । जब मरहम की भॉति बन जाय, तव मस्सो (अर्शांकुरो) पर लगावे ।

माउज्जहब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शोरे का तेजाव ३ भाग, नमक का तेजाब ४ भाग--दोनो को एक बड़ी शीशी मे डाल देवें और शीशी का मुख किचित् खुला रखें । अब इस तेजाब

मे से १ तोला लेकर १ माशा सोना डाल देवें। कुछ कालोपरात सोना विद्रुत हो जायगा। पुन इसमे ३ तोला और जल मिला देवें।

मात्रा और सेवन विधि—३ से ५ बूंद, माउल्लहम अवरी ५ तोला मे मिलाकर प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—शारीरिक क्षीणता तथा दुर्वलता को दूर करता है। यक्ष्मा मे भी लाभप्रद है।

माउल्लहम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

युवा मुर्गा ५ नग, जर्दक (गाजर, एक पक्षी) ।5५ पद्रह सेर, घरेलू नर चिडा (चटक) १०० नग, शकाकुल मिश्री 5।, सेव समरकदी ५ नग, दालचीनी 5१ सेर—यथाविधि अर्क खीचे।

मात्रा और सेवन विधि—प्रतिदिन ७ तोला माउल्लहम पान करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—दिल, दिमाग, आमाशय और यकृत् को वल देता है। प्रकृत शरीरोष्मा को उभाडता है तथा शरीर मे शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है।

विशिष्ट गुण—सरल एव उत्तम वाजीकरण योग है।

माजून अलकली

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिला हुआ मीठे वादाम का मग्ज, फिदक का मग्ज, पीपल, चिलगोजे का मग्ज, चिरौंजी, सफेद तिल, पोस्ते का दाना, कुलथी (कुल्कुल) के बीज का मग्ज, हब्बुल्खिजरा का मग्ज, कुलजन, मोचरस प्रत्येक ३ तोला, खोपरा (नारियल की गिरी), सफेद और लाल वहमन, सफेद और लाल तोदरी, छोटी और वडी इलायची का दाना प्रत्येक ४ माशा, किशमिश, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) प्रत्येक ६ माशा, छुहारा १ तोला, शकाकुल, करफ्स-बीज, मीठा इन्द्र जौ, दरूनज अकरबी, सूखा पुदीना, मस्तगी, वशलोचन, ताल मखाना, कबावचीनी, जावित्री, विजौरे (तुरज) का छिलका, सोंठ, गोखरू (तीन बार दूध मे तर और शुष्क किया हुआ), लौग, गाजर के बीज, शलगम के बीज, हलियून के बीज, कौंच के बीज, नरकचूर, मैदा लकडी प्रत्येक २ माशा, बालछड, अवर अशहब, प्रत्येक १ माशा, चोवचीनी २ तोला ४ माशा, मजीठ २ माशा, चीनी १६ तोला ४ माशा,

सफेद तुरजबीन (यवासशर्करा) ऽ=, शुद्ध श्वेत मधु १६ तोला ४ माशा, केसर १ माशा--प्रथम तुरजबीन को जल मे उबाल कर छान लेवें तथा चीनी और मधु मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर उसमे शेष समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर सम्मिलित करें। केशर और अबर को अर्क बेदमुश्क मे हल करके पीछे योजित करें।

मात्रा और सेवनविधि--१ तोला, दूध के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--बस्ति और वृक्क की दुर्वलता को दूर करता है और वाजीकारक भी है।

माजून इजाराकी (कुचला)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला २। तोला, गावजबान १॥ तोला, उस्तूखुद्दूस, कतीरा, नारियल, चिलगोजे की गिरी प्रत्येक १३॥ माशा, छोटी इलायची का दाना, नरकचूर, शकाकुल मिश्री, सफेद चदन, गुठली निकाला हुआ आमला, काली हड प्रत्येक ९ माशा, अगर, लौग प्रत्येक ४॥ माशा--तीन गुना मधु की चाशनी मे समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर मिलायें और माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवन विधि--१ माशा से ५ माशा तक १२ तोले अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग--सधिवात तथा समस्त वात-कफ के रोग, जैसे-पक्षवध, अर्दित, कम्पवात, अपस्मार, अजीर्णदोष इत्यादि को नष्ट करता है। आतशक (फिरग) के लिये भी गुणकारी है। दुर्वल एव वृद्ध जनो का शीत मे बचाव करती है तथा बाजीकर भी है।

माजून कलकलानज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काली मिर्च, पीपल, पीपरामूल, सोठ, लाल और काला नमक हिदी, नमक इन्दरानी, नमक तबरजद, साँभर नमक, मीठा इन्द्र जौ, चीता, नागरमोथा, छोटी इलायची, तज, लौग, सातर, वायबिडंग काबुली, कलौजी, कालादाना, जीरा किरमानी, तेजपत्ता, करपस-बीज, सूखी धनिया प्रत्येक १॥ तोला, हड का बकला, काली हड, बीज निकाला हुआ आमला प्रत्येक २ तोला, अमलतास का गूदा ३ तोला, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) ऽ॥ आध सेर, सफेद

निशोथ ८ तोला, आमले का रस (शीरा) ऽ१ सेर—मुनक्का और आमला को ऽ६ सेर जल मे पकायें। जव ऽ२ सेर जल शेष रह जाय तव मल-छानकर उसमे अमलतास का गूदा हल करें। उसके हल हो जाने पर उसमे ऽ३ सेर मिश्री हल करें और ऽ।। आध सेर तिल का तेल मिलाकर पकायें। जव पाक सिद्ध हो जाय तव शेष समस्त द्रव्यो का चूर्ण उसमे मिला देवें। वस माजून तैयार हे।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा से १ तोला तक जल या उपयुक्त अर्क से प्रात काल सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—कफ प्रकृति के लिये विशेष गुणकारी हे। यह आमाशयस्थ क्लेद का निवारण करता है और जीर्ण ज्वर, कफज कास तथा श्वास के लिये भी लाभकारी है और शूल (कुलज), अपस्मार, प्लीहारोग, व्यग (वहक) एव अपतन्त्रक इत्यादि मे भी उपयोगी हे।

माजून कुर्तूम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कड का मग्ज (मग्ज तुख्म कुर्तुम), मीठे वादाम का मग्ज, गुलाव-पुष्प, सनायपत्र प्रत्येक ६ तोला, सौंफ, सोठ प्रत्येक २ तोला, दालचीनी, छोटी वड़ी दोनो इलायची १-१ तोला, विलायती अजीर, वीजरहित दाख (मुनक्का) प्रत्येक ४० नग—प्रथम दोनो मग्जो (कड और वादाम) को पृथक् पीसे तथा अजीर और मुनक्का को धोकर पृथक् पीसें। शेष द्रव्यो को कूट-छानकर चूर्ण करे। तिगुने मधु के पाक मे प्रथम गिरियो (मग्जो) और अजीर तथा मुनक्का का शीरा मिलाकर पाक करें। पुन शेष द्रव्यो का चूर्ण पाक मे मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुणकर्म तथा उपयोग—दीपन-पाचन, एव अजीर्णनाशक और मूत्रल है।

माजून खद्र

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऊद गर्की १ माशा, लौग, कचूर, केशर प्रत्येक १।। तोला, मस्तगी, वूजीदान प्रत्येक २ माशा, शकाकुल मिश्री, पान की जड, दोनो वहमन, गावजवान, विल्ली लोटन, वालछड, छडीला, जावित्री, कूट, छोटी इलायची बीज, फरजमुश्कपत्र, नागरमोथा प्रत्येक २ माशा, ऊदसलीव, दालचीनी, सालम मिश्री प्रत्येक

३-३ माशा, मीठा सुरजान, हड काबुली, पोस्ते का दाना ४-४ माशा, पीपल, काली मिर्च, दरूनज, इन्द्र जौ, पुदीना, तगर, उस्तूखुद्दूस, तेजपात, तज प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी २। माशा—कस्तूरी, केसर, मस्तगी को पृथक्-पृथक् खरल करें और शेष द्रव्यो का बारीक चूर्ण करें। पुन. मधु का पाक कर सबको मिलाकर एक जीव करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—मस्तिष्क को बल देती है और शरीर के सुन्न होने मे उपयोगी है।

माजून चोबचीनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लौंग, जायफल, जावित्री, गुलाबपुष्प, केशर, नरकचूर, कुलजन, नागरमोथा प्रत्येक ४॥ माशा, सोठ, पीपल, अकरकरा, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, बडी इलायची, काली मिर्च, मस्तगी, सूरजान, बूजीदान, सनायमक्की, इन्द्र जौ प्रत्येक १॥। तोला, चोबचीनी ११। तोला।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—आतशक (फिरग), वातरक्त तथा फिरगजनित पीडा मे उपयोगी है।

माजून चोबचीनी बनुस्खये खास (विशेष योग)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छोटी और बडी इलायची का दाना, कुलजन, लौग, कबाबचीनी, कस्तूरी, बूजीदान, सोठ, बालछड, नरकचूर, असारून (तगर), तमालपत्र (साजिज, हिंदी), पीपल, अबर, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, दालचीनी, मीठा सूरजान शकाकुल मिश्री, सालम मिश्री, रूमी मस्तगी, अगर, मीठा इन्द्रजौ, केसर प्रत्येक १४ माशा, चिरौजी, मग्ज हब्बुल कुलकुल (कुलथी के बीज की गिरी), मग्ज अञ्जलक, मग्ज बुन प्रत्येक १॥। माशा, चिलगोजा की गिरी, खोपरा की गिरी प्रत्येक ९ माशा, उत्तम चोबचीनी १८॥। तोला—चोबचीनी के बारीक-बारीक टुकडे कर लेवें और ƒ४ सेर जल मे एक दिन तर करें। पुन इतना उबाले कि ƒ१ एक सेर जल शेष रह जाय। अब मधु और तुरजबीन प्रत्येक ५६ तोला मिलाकर पाक करें और शेष द्रव्यो का चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा ताजा जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—अग वेदना को दूर करती है, आमाशय को वल देती एव वाजीकरण करती है। रक्तशोधक भी है।

माजून जोगराज गूगल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीपल, काली मिर्च, भागरा प्रत्येक ९ माशा, सोठ, कुट, देवदारु, हाऊवेर, अकरकरा, पिपरामूल, नरकचूर प्रत्येक ६ माशा, वेख वल (वला-मूल), जुदवेद-स्तर प्रत्येक २ माशा, कवावचीनी, चीता, कासनी प्रत्येक ३ माशा, पुदीना ५ माशा, गूगल समस्त द्रव्यो के समतोल लेकर कूटकर वादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्व) करे और फिर कूटकर नरम करे। पुन शेष समस्त द्रव्यो का चूर्ण मिलाते जायें और कूटते जायें। सव एक जीवन होने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ से ५ माशा उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—समस्त वात-कफ के रोग, सधिवात, पक्षवध (अर्धाङ्ग) अर्दित, कम्पवात (राअशा) और वातनाडी दौर्वल्य मे लाभकारी है, वाजीकरण है, आशतक (फिरग) को भी दूर करती है।

माजून तुर्बुद (तृवृत्)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऊपर से छीली हुई और भीतर की लकडी निकाली हुई निशोथ ऽ॥ सेर, सोठ, रूमी मस्तगी प्रत्येक २॥ तोला, काली मिर्च १०॥ माशा—निशोथ को वादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्व) करें और समस्त द्रव्यो के साथ कूट-छानकर दुगुने साफ किये हुए शहद खास मे माजून वनावें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला ५॥ माशा तक उष्ण जल मे विलीन करके पियें। इसे किंचित् उवाल लेना भी उचित है। हकीम अली गीलानी का आविष्कृत है।

गुण तथा उपयोग—कफज दोषो का नाश करता है।

माजून नजाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हड, वहेडा, आमला प्रत्येक ३॥ माशा, वस्फाइज फुस्तुकी, अफ्तीमून, विलायती, उस्तूखुदूस, सफेद निसोथ प्रत्येक १॥ तोला, समस्त द्रव्यो से तिगुना मधु—मधु का पाक करें और द्रव्यो को कूट-छानकर उसमे मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा ताजा जल से प्रात काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—सौदावी रोगो मे उपयोगी है।

माजून बि (ब) लादुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिले हुए तिल ४ तोला, भिलावे का शीरा (स्याही), बादाम का मग्ज, चिलगोजा का मग्ज, असगध, अकरकरा, कुलजन, जावित्री ३-३ तोला, जायफल, सोठ, सालम मिश्री २-२ तोला, पीपल, मस्तगी, हालो-बीज प्रत्येक १॥ तोला, गाजर-बीज, अजुरा-बीज, कौच-बीज, केशर १-१ तोला, समुद्र सोख, कस्तूरी ६-६ माशा, खाड समस्त द्रव्यो के समतोल, मधु दुगुना लेकर यथाविधि पाक कर उसमे द्रव्यो का चूर्ण मिलाकर माजून बनावे।

मात्रा—९ माशा से १ तोला।

गुण तथा उपयोग—पुस्त्व-शक्ति एव शरीर को बल देती है।

माजून मुक्ल (गुग्गुल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुठली निकाला हुआ आमला, काबुली हड, बहेडा, हरमल-बीज (तुख्म इस्पद), गदना-बीज, शाहतरा-बीज प्रत्येक १॥ तोला, गुग्गुल ३ तोला—प्रथम गुग्गुल को गदना के रस मे हल करें। पुन॰ समस्त द्रव्यो के तौल से तीन गुना चीनी (कद सफेद) या मधु की चाशनी बनाकर गुग्गुल सहित शेष समस्त द्रव्यो को उसमे मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा प्रात काल जल से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—वातिक तथा रक्तज उभय प्रकार के अर्श मे उपयोगी हैं और विशेषत. वादी बवासीर (वातार्श) के लिये रामबाण का काम करती है और विबन्धनाशक भी है।

माजून मुम्सिक व (मुकव्वी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कस्तूरी १ माशा, अबर अश्हब ४॥ माशा, दालचीनी, मस्तगी, जायफल, बालछड, ऊद खाम (अगर), अजवायन, खुरासानी सफेद, कबाब चीनी, असली केसर, सालम मिश्री, चिडे के शिर का मग्ज तथा उसकी जिह्वा, भाँग प्रत्येक ९ माशा, मायए शुतुर ऐराबी १॥ तोला, कालादाना ४०० नग (दाना), मिश्री ११। तोला, समस्त द्रव्यो की तौल से तिगुना मधु, कालादाने को मीठे बादाम के

तेल मे एक दिन तर रखें। तदुपरात समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर मिश्री और मधु की चाशनी मे मिलावें।

मात्रा और सेवनविधि--स्तम्भनार्थ १ माशा, प्रमेह मे चना प्रमाण प्रात काल दूध से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--शीघ्रपतन और शुक्र प्रमेह को सदैव के लिये दूर करती है और स्तम्भन करती है।

माजून मुगल्लिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मस्तगी २ माशा, इलकुल्बुत्म (बुत्म की गोद) ३ माशा, कतीरा, वशलोचन, दालचीनी, छोटी इलायची प्रत्येक ४ माशा, बबूल का गोद, निशास्ता, सालममिश्री प्रत्येक ६ माशा, चिलगोजे का मग्ज १ तोला, नारियल १॥ तोला, छिला हुआ बादाम् का मग्ज २ तोला, समस्त द्रव्यो से तिगुना मिश्री और मधु की चाशनी करें और द्रव्यो को कूट-छानकर चाशनी मे मिलावें।

मात्रा--१ तोला।

गुण तथा उपयोग--वीर्य को गाढा करती है और पुस्त्वशक्तिवर्धक है।

माजून मोचरस

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मोचरस, सुपारी, वशलोचन, निशास्ता, हरा माजू, गुलाब-पुष्प, हब्बुल् आस, हड, बहेडा, आमला, गिल मख्तूम, सफेद और काली मूसली प्रत्येक ६ माशा, अनार का छिलका ९ माशा, बिही का स्वरस, खट्टे अनार का स्वरस प्रत्येक २। तोला, मिश्री और शुद्ध मधु समस्त द्रव्यो से तिगुना--उल्लिखित द्रव्यो को कूट-छानकर चाशनी मे मिलावें।

मात्रा और सेवनविधि--१ तोला माजून १२ तोले अर्क गावजबान से प्रात काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--स्त्रियो के गर्भाशय से नाना प्रकार के द्रवोत्सर्ग को बद करती है।

माजून मोमियाई

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

शुद्ध मोमियाई ५ तोला, अबीध मोती १॥ तोला, अबर अश्हब ६ माशा,

मायए शुतुर ऐराबी ३।। तोला, स्वर्ण पत्र (सोने का वर्क) ५० नग, बैल की इन्द्री (रेती हुई) ६ नग, मिश्री समस्त द्रव्यो की तौल से दुगुनी---द्रव्यो का महीन चूर्ण बनाकर मिश्री की चाशनी मे मिलावें और चाशनी के अत मे अबर अश्हब और सोने के वर्क डालकर भली भाँति मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि---१ माशा से २ माशा तक पाव भर गोदुग्ध के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग---यह माजून समस्त अगो को बल देती है। यदि मैथुनोत्तर सेवन किया जाय, तो मैथुनजन्य दौर्बल्य से सुरक्षित रखती है और मैथुन शक्ति का पुनरावर्त्तन करती है।

माजून राअ्शा (बारिद)

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

उस्तूखुद्दूस, कन्तूरियून, लौंग प्रत्येक २ तोला ११ माशा, काबुली हड का बकला सातर, दालचीनी प्रत्येक २ तोला, निसोथ, गारीकून, हींग, जुदबेदस्तर प्रत्येक १४ माशा, केशर, अकरकरा प्रत्येक १०।। माशा---सबको कूट-पीसकर तिगुने शुद्ध मधु मे मिलाकर माजून तैयार कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि---९ माशा उष्ण माउल्अस्ल के साथ हर तीसरे दिन प्रयोग करायें।

गुण तथा उपयोग---शीतल कम्पवात के लिये हकीम अताकी का परीक्षित है।

माजून लना

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

काली मिर्च, सफेद मिर्च, दालचीनी, पीपल, जायफल, जावित्री, मस्तगी, नागरमोथा, सोठ, लौंग, आमला, बालछड, छोटी इलायची, अजवायन, सौंफ, केसर, सफेद चदन, ऊद बलसाँ, अगर प्रत्येक ६ माशा, शुद्ध कुचिला का बुरादा १ तोला---सबको कूट-छानकर तिगुने मधु की चाशनी मे मिलाकर माजून बनावे और चालीस दिन बाद प्रयोग करे।

मात्रा---३ से ५ माशा तक अर्क सौंफ से प्रयोग करें। फिरगरोग मे अर्क उश्बा से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग---समस्त कफज रोगो, विशेषत पक्षवध, अर्दित कम्पवात,

अपस्मार, आमाशय विकार (इख्तिलाज मेदा) तथा आमवात मे बहुत ही गुण-कारक है। वृद्धावस्था मे शीत से बचाती और वाजीकरण करती है।

माजून सनाय

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गावजबान-पत्र, बिल्ली लोटन, गुलाब-पुष्प, गुलबनफ्शा, मुलेठी प्रत्येक १ तोला, अजीर जर्द (पक्व) १० तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का, उन्नाव प्रत्येक २० दाना, लिसोडा (सपिस्ताँ) १०० दाना—रात्रि मे समस्त द्रव्यो को जल मे भिगो कर प्रात उबालकर और छान कर खाँड (कद सफेद) ऽ। मिलाकर चाशनी करें और चाशनी के अन्त मे सनायमक्की-पत्र ७ तोला, काली हरड ५ तोला, पीली हरड ३ तोला इन तीनो का चूर्ण बनाकर मिलाये, किंतु चूर्ण को बादाम के तेल मे स्नेहाक्त (चर्ब) कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—१ माशे से ३ माशा तक १२ तोले अर्क सौंफ या ताजा पानी से सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—हर प्रकार के शिर शूल मे लाभकारी है तथा मलबद्धता निवारण करने के लिये अतीव गुणकारी है। पाचन को सुधारती है और आमाशय विकार को नष्ट करती है।

माजून सरख्स

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सरख्स ३॥ माशा, वायविडग ३॥ माशा, निशोथ और गुग्गुल ७-७ माशा—सब को कूट-छान कर दुगुने मधु के पाक मे मिलाकर माजून तैयार करे।

मात्रा और सेवनविधि—१ तोला।

प्रयोग करने से पूर्व १-२ घटा पूर्व दूध पियें और तीन दिन पूर्व भी दूध के सिवाय और कुछ न खावे।

गुणकर्म तथा उपयोग—गोल तथा लम्बे कृमियो के लिए उत्कृष्ट औषधि है।

माजून सालब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कस्तूरी १॥। माशा, जुन्दबेदस्तर, दरूनज अकरबी, चाँदी के वर्क, अबर प्रत्येक ३॥ माशा, बालछड, बडी इलायची, ऊदखाम, झाऊ (कजमाजज), बबूल

का गोद प्रत्येक ५। माशा, पनीर, माया शुतुरऐराबी, गावजबानपत्र, बिल्लीलोटन फरञ्जमुश्क (रामतुलसी), रेगमाही, चिडे के सिर का मग्ज, चिलगोजे का मग्ज, खोपडे की गिरी, मीठे बादाम का मग्ज, पिस्ते का मग्ज, फिदक का मग्ज प्रत्येक ७ माशा, बूजीदान, सूरजान, लाल और पीली तोदरी, लाल और सफेद बहमन, छिले हुए तिल, गाजर के बीज, सोठ, सूखा पुदीना, गोखरू, (दूध मे भिगो कर शुष्क किया हुआ), सफेद पोस्ते का दाना, पीपल, नरकचूर, मस्तगी, जायफल, जावित्री, केशर, मीठा कुट, खरबूजे के बीज की गिरी प्रत्येक १०॥ माशा, मीठा इन्द्र जौ, दालचीनी, लौंग, छोटी इलायची प्रत्येक १४ माशा, कुलजन, शकाकुल-मिश्री, सालम मिश्री, अजवायन खुरसानी बीज प्रत्येक १॥ तोला—सब को कूट-छान कर तिगुने मधु के पाक मे मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक दूध के साथ प्रात.काल सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—शुक्र प्रमेह तथा नपुसकत्व को दूर करती और वातनाडी को बल प्रदान करती है।

माजून सूरजान (शीरी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेद सूरजान १ तोला ९ माशा, बूजीदान, माहीजहरज, चीता, कबरमूल, सफेद जीरा प्रत्येक ७ माशा, पीली हड २ तोला ४ रत्ती, करफसबीज, सौंफ, सफेद मिर्च, एलुआ, सातर, सेधानमक, मेहदी पत्र, समुद्रझाग, प्रत्येक ५। माशा, गुलाब-पुष्प, सोठ, सकमूनिया, तिल प्रत्येक १०॥ माशा, सफेद निशोथ ४ तोला ४॥ माशा, मधु ४३ तोला ९ माशा, बादाम का तेल १॥ तोला—निशोथ को बादाम के तेल मे स्नेहाक्त करे और शेष द्रव्यो को कूट-छान कर मधु के साथ माजून बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा माजून जल या अर्क उश्बा के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—पित्तज और कफज गृध्रसी (इर्कुन्नसाऽ) के लिये गुणकारी है तथा गठिया और वातरक्त मे भी लाभकारी है।

माजून हमल अबरी उलवीखानी (खाँ वाली)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अबर १। तोला, मोती, तृणकान्त (कहरुवा), दग्ध प्रवालमूल, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, वशलोचन, माजू, दरूनज अकरबी, ऊदसलीब, कैंची से कतरा हुआ

अबरेशम अपक्व (खाम), बेख अजबार मूल, गिल अरमनी प्रत्येक ९ माशा, पेठे के बीज की गिरी, कुलफा के बीज प्रत्येक १॥। तोला, चाँदी और सोने के वर्क प्रत्येक २० नग, शुद्ध मधु १५ तोला, शर्वत अगूर २८ तोला, मिश्री ११ छटाँक १ तोला—सब द्रव्यो को कूट-छान कर मधु और मिश्री की चाशनी मे मिलाये।

मात्रा और सेवनविधि—५ माशा, प्रात काल—ताजा जल से सेवन करे।

गुण कर्म तथा उपयोग—बालापस्मार (उम्मुस्सिब्यान) को नष्ट करती है। गर्भपात को रोकती है। यदि गर्भावस्था मे इसका उपयोग किया जावे तो बालक स्वस्थ एव पूरे समय पर उत्पन्न होगा।

मालती बसत

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सोने के वर्क १ माशा, अबीध मोती २ माशा, शिगरफ ३ माशा, कालीमिर्च ४ माशा, सगबसरी ८ माशा—प्रथम समस्त द्रव्यो को बारीक करें। पुन गाय के मक्खन मे स्नेहाक्त करके खरल करे। फिर कागजी नीबू के रस मे इतना खरल करें कि चिकनाहट जाती रहे। पुन टिकिया बनाकर शुष्क करें।

मात्रा और सेवनविधि—१ रत्ती चूर्ण गुडूची सत्व से जीर्ण ज्वर और राजयक्ष्मा मे लाभकारी है और जीरा के अनुपान से सग्रहणी और अतिसार मे दिया जाता है तथा मधु के साथ कफज एव वातिक (रियाही) रोगो मे, रसवत से पैत्तिक रोगो एव रक्तविकार से गुणकारक है।

गुणकर्म तथा उपयोग—रक्तशोधक और ज्वरघ्न है तथा अतिसार एव सग्रहणी मे लाभकारी है। उत्तम एव उत्कृष्ट अगो को बल देता है तथा प्रकृत शरीरोष्मा की वृद्धि करता है।

विशेष गुण—यकृतीय अतिसार को नष्ट करता है।

मुफर्रेह कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

याकूत सुर्ख के टुकडे ४॥ माशा, सग यशब, अकीक प्रत्येक ३॥ माशा, गारीकून, अफतीमून कालीमिर्च, सोठ, मर्जजोश, लौंग प्रत्येक ६ माशा ७ रत्ती, हज्र अरमनी, हज्र लाजवर्द, काँच नमक (मिल्हनिफती), नरकचूर, हाथीदाँत का बुरादा, दरूनज अकरबी, लाल बहमन, गावजबान प्रत्येक ४॥ माशा, ३ रत्ती, सुबुल रूमी, हमामा, वच (वज), तमालपत्र (साजिज हिंदी), दालचीनी, सातर, हाशा, जूफा, जीरा, प्रत्येक ३ माशा ३॥ रत्ती, मुश्कतरामसीअ, फितरासालियून

(करफ्सकोही), हलियून, हज्रुल्यहूद (बेरपत्थर), करफ्स बीज, बोल (मुरमक्की) केशर, कुदुर, सफेद मिर्च प्रत्येक ६ माशा २ रत्ती, सोने के वर्क १ माशा, चाँदी के वर्क १ माशा---रत्नो को खूब खरल करें। फिर वर्कों (पत्रो) को मिलाकर हल करें तथा शेष द्रव्यो को कूट-छानकर दुगुना हड के मुरब्बा का शीरा लेकर चाशनी बनाकर इसमे औषध द्रव्यो का उक्त चूर्ण मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि---५ माशा, अर्क बेदमुश्क ५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण कर्म तथा उपयोग---पुराने रोगो, हृत्स्पदन (धडकन), हृदयदौर्बल्य, उन्माद वा वातिक, अन्यथाज्ञान (वसवास), मस्तिष्क-विकृति, मन्दाग्नि, प्लीहादौर्बल्य, यकृद्दौर्बल्य और शूल मे लाभप्रद है तथा आमवातघ्न एव जीर्णज्वर नाशक है।

मुफर्रेह बारिद

द्रव्य तथा निर्माणविधि-----

अबर अश्हब, हल किये हुए सोने के वर्क, हल किये हुए चाँदी के वर्क प्रत्येक १ माशा, मोती, कहरुवा शमई (तृणकान्त) प्रत्येक ४॥ माशा, गावजवान पुष्प, सफेद वशलोचन, सफेद चन्दन का बुरादा, गुलाब के फूल की कली, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, कुलफा के बीज प्रत्येक ९ माशा, मीठे सेव का रुब्ब (गाढा शर्बत), मीठी बिही का रुब्ब प्रत्येक ७॥ तोला, अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ९॥ तोला, मिश्री ४० तोला---उपरिलिखित अर्कों मे मिश्री की चाशनी बनाकर शेष औषधद्रव्यो का चूर्ण योजित करे।

मात्रा और सेवनविधि---५ माशा, अर्क गावजबान १० तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग---हृदयदौर्बल्य, दिल की धडकन और हृत्स्फुरण को नष्ट करता है तथा सताप शमन करता है।

मुफर्रेह मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

कस्तूरी, अबर प्रत्येक १ माशा, गुलाब पुष्प, नागर मोथा, दरूनज अकरबी, बालछड, दालचीनी, केशर, मस्तगी, लौग, जायफल, कबाबचीनी, बडी इलायची, पीपल, छोटी इलायची (खैर बवा), बिजौरे (उतरूज) का छिलका, पान की जड, अगर प्रत्येक २॥ तोला ६ रत्ती, मोती, प्रवालमूल, तृणकान्त प्रत्येक

३॥ माशा, नरकचूर १॥। माशा, कैची से कतरा हुआ अबरेशम, बादरूज (तुलसी) बीज प्रत्येक १॥। माशा, समस्त द्रव्यो के समतोल मिश्री लेकर चाशनी बनाकर इसमे द्रव्यो का चूर्ण मिलायें।

मात्रा और सेवनविधि--९ माशा, अर्क बेदमुश्क ५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--उत्तमाङ्गो के लिये बलप्रद है, प्रकृत देहोष्मा को स्थिर रखती है, वाजीकरण करती है, भूख लगाती है और अतिसार एव गर्भाशय के रोग मे लाभ करती है।

मुफर्रेह याकूती मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कस्तूरी, इजखिर प्रत्येक २। माशा, याकूत रुम्मानी, लाल सफ्फाफ, बिल्ली लोटन प्रत्येक ४॥ माशा, अबर अश्हब, बडी इलायची, सोने के वर्क, चाँदी के वर्क, कपूर, गिलमख्तूम, सूखी धनिया, लाजवर्द, गिल अरमनी, बालछड, नादमुश्क प्रत्येक ३॥ माशा, मोती, प्रवालमूल, कहरुबाए शमई (तृणकान्त), केशर, गावजबान, रूमी मस्तगी, दालचीनी, सफेद बहमन, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम जर्द खाम (पीला अपक्व), बिजौरे का पीला छिलका, नरकचूर, छडीला, कद्दू के बीज की गिरी, नख, जरिश्क, छिले हुए कुलफा के बीज, रामतुलसी (फरजमुश्क) के बीज, सफेद वशलोचन, गावजबान बीज, खीरा-ककडी के बीज की गिरी प्रत्येक ७ माशा, सफेद चन्दन, अगर, दरूनज अकरबी, गुलाब-पुष्प प्रत्येक १०॥ माशा, शर्बत हुम्माज २५ तोला, समस्त द्रव्यो की तौल से दूना मधु लेकर शर्बत मिलाये और चाशनी बनाकर शेष द्रव्यो को कूट-छान कर उसमे मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि—९ माशा ताजे जल से प्रात काल सेवन करे।

गुण तथा उपयोग--गर्भाशय के रोगो और अतिसार मे उपकारक है। समस्त उत्तमाङ्गो के लिये बलप्रद है। भूख लगाती और दुर्बलता का नाश करती है।

मुफर्रेह शैखुर्रईस

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अबीध मोती, कहरुबाए शमई (तृणकान्त), जलाया हुआ केकडा, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम, प्रवालमूल प्रत्येक ३ माशा, सफेद चन्दन, वशलोचन, छोटी

इलायची का दाना प्रत्येक ६ माशा, ऊद गर्की, दरूनज अकरबी, नरकचूर और सफेद बहमन प्रत्येक ५ माशा, गुलाब-पुष्प १। तोला, छिले हुए काहू के बीज, कुलफा के बीज, खरबूजा के बीज का मग्ज, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, खीरा-ककडी के बीज की गिरी, गावजवान पुष्प प्रत्येक ९ माशा, केशर १॥ माशा, शुद्ध कस्तूरी, अबर अश्हब प्रत्येक १ माशा, शर्बत सेब, शर्बत अनार मिष्ट, शर्बत बिही प्रत्येक १४ तोला, चाँदी के वर्क ७ माशा---यथाविधि मुफर्रेह कल्प प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवनविधि---३ से ९ माशा तक अर्क बेदमुश्क और अर्क केवडा आदि मे हल करके प्रयोग करायें।

गुण तथा उपयोग---दिल की धडकन और मूर्छा मे अतीव गुणकारी है।

मुफर्रेह सू सब्जी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नरकचूर, दरूनज अकरबी, सफेद और लाल बहमन, बिल्ली लोटन प्रत्येक ३॥। माशा, फरजमुश्क (रामतुलसी) २॥। तोला, वज्ज (वच), ऊद कमारी प्रत्येक १॥। तोला, सूखा पुदीना, सोआ सब्ज (सूसब्ज) ?, दालचीनी छँटे हुए तिल, जायफल, चाँदी के वर्क, तृणकान्त, केशर प्रत्येक ९ माशा, जावित्री, याकूत प्रत्येक ३॥ माशा, मीठे सेब का स्वरस, मर्जञ्जोश का स्वरस, गावजबान का स्वरस प्रत्येक ६ तोला---रत्नो, वर्को और केशर को अर्क गुलाब मे खूब खरल करें। शेष द्रव्यो को सेब के स्वरस आदि मे दिन-रात भिगो देवें। इसके पश्चात् छान कर २७ तोले शुद्ध मधु मिलाकर २७ तोले गाय का दूध डाले और इतना पकायें कि दूध जल जाय और शहद मात्र शेष रह जाय। पुन रोगन बनफ्शा और रोगन बादाम प्रत्येक ९॥ तोला मधु मे डालकर इतना पकायें कि पाक (चाशनी) सिद्ध हो जाय। तत्पश्चात् खरलीकृत रत्न इत्यादिक मिला देवे।

मात्रा और सेवनविधि---९ माशा, ताजे जल से प्रात काल सेवन करे।

गुण तथा उपयोग---हृदय के लिये बलप्रद एव उल्लासप्रद है। यदि किसी रोग या अतिसार वा विष-भक्षण के कारण बल (कुवाए) और ओज (अखाह) क्षीण हो चुके हो तो इसके उपयोग से अति शीघ्र शक्ति उत्पन्न होकर स्वास्थ्य लाभ हो जाता है। यह वाजीकरण करती है। अगवेदना मे लाभप्रद और दिल की धडकन, कम्पवात, जलोदर, कामला तथा अजीर्ण को नष्ट करती है।

मुरब्बा गजर

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

ताजे गाजर को लेकर जल मे उबालें। जब वे कुछ नरम हो जायँ, तब

थोडा शुष्क करके खाँड के पाक मे डालें। दूसरे दिन पाक को गाजरो समेत पकावें जिसमे पाक ठीक हो जाय।

गुण—दिल दिमाग को बल देता है।

मुरब्बा जञ्जबील (सोठ)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रेशारहित ताजा एव मोटा अद्रक लेकर ऊपर से छिलका उतारकर लवण जल मे उबाले। मृदु होने पर निकाल कर खांड के पाक (चाशनी) मे डाल। दूसरे दिन यदि पाक पतला पड जाय, तो दुबारा पाक कर लेवें।

मात्रा—१ तोला।

गुण तथा उपयोग—कफदोष नाशक, वातदोष एव वातशूल मे उपकारक है और वृक्को को बल प्रदान करता है।

याकूती मुफर्रेह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लाल याकूती, सफेद चन्दन प्रत्येक ९ माशा, मोती, तृणकान्त, केशर प्रत्येक १३॥ माशा, ऊद कमारी, दरूनज, गुलाव-पुष्प प्रत्येक १८ माशा, सोने के वर्क, चाँदी के वर्क, अबर अश्हब, बडी इलायची, छोटी इलायची, कपूर, गिल मख्तूम, केसर-पुष्प, धुला हुआ लाजवर्द, गिल अरमनी, बालछड, नागकेशर, बिल्लीलोटन-बीज प्रत्येक ४॥ तोला, गावजबान, मस्तगी, दालचीनी, कतरा हुआ अबरेशम, बिजौरे का छिलका, सफद बहमन, छडीला, नरकचूर, कद्दू के बीज की गिरी, नाखूना, जरिश्क, छिले हुए कुलफा के बीज, बन तुलसी, वशलोचन, काहू के बीज, खीरा के बीज प्रत्येक १०॥ तोला, शर्बत हुम्माज ऽ१ सेर २५ तोला, कुर्स अबर प्रत्येक ५२॥ तोला, मधु ऽ२ सेर ५० तोला—शर्बत तथा मधु का पाक करके यथाविधि मुफर्रेह तैयार करे।

मात्रा—६ माशा।

गुण तथा उपयोग—शरीर तथा हृदय के लिये परम बलदायक है।

रुब्ब जामुन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे जामुन को किसी बरतन मे हाथ से खूब मलकर स्वरस निकालें और इसे कपडे मे छान कर आधा भाग खाँड मिला कर घन शर्बत तैयार करें।

मात्रा तथा सेवनविधि—६ माशा से १ तोला तक योग्य अनुपान से देवे।

गुण तथा उपयोग—अतिसारनाशक है। आमाशय और यकृत् को बल देता है तथा पित्त का नाश करता है।

रुब्ब बिही शीरी (मधुर)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बिही को छील कर छोटे-छोटे टुकडे कर लेवें और बीज निकाल कर खूब कूट-पीस कर स्वरस निकालें तथा आधा भाग खाँड डालकर घन शर्वत तैयार करें।

गुण तथा उपयोग—हृदय, आमाशय और अन्त्र को बल देता है। वमन तथा अतिसार मे भी लाभप्रद है।

रोगन अजीब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मालकँगनी ७ तोला, शुद्ध आमलासार गधक ५ तोला, कलौंजी ७ माशा, कुचिला १० माशा, शुद्ध बछनाग २॥ माशा, सफेद घुँघची, कनेर की जड प्रत्येक ७ तोला—सबको अधकुटाकर गाय के दूध मे सात दिन तक भिगोवें। आठवें दिन निकाल कर आतशी शीशी मे भरकर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें।

मात्रा और सेवनविधि—२-३ बूँद किसी योग्य अनुपान से खिलावे।

गुण—दीपन-पाचन और वाजीकरण है।

रोगन कलाँ

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

कडवे बादाम का मग्ज ६ तोला, कलौंजी, एरण्डबीज (रेंडी), गुग्गुल—प्रत्येक ४ माशा, कडवा कुट, फरफियून, जुदबेदस्तर, मीठा चिरायता, अफसतीन, नकछिकनी, सौंफ की जड, पित्तपापडा, मेहदी ३-३ माशा, अकरकरा काली मिर्च, कस्तूरी, बालछड, सोसन की जड, तज, छडीला, सोठ, दालचीनी, बोल (मुरमक्की), लौंग, जायफल, सकबीनज, सातर, अजवायन, करफसमूल, करफ्सबीज, अनीसून, तगर, जावशीर, नरकचूर, सोठ, जावित्री, कबाबचीनी, पीपल, कुन्दुर प्रत्येक २ माशा, अम्बर १ माशा, फरफियून, अम्बर, जायफल, कतूरी, जुदबेदस्तर के सिवाय शेष समस्त द्रव्यो को अधकुटा कर ꣳ५ सेर जल मे रात्रि भर भिगोवें और प्रात क्वाथ करें। तीसरा भाग रहने पर छानकर गुलाब-पुष्प, बाबूने का तेल, सोसन का तेल तथा रेंडी का तेल प्रत्येक १० तोला मिलाकर पाक करे। तेल

मात्र शेष रह जाने पर छानकर फरफियून आदि को हल करके शीशी मे भर देवें। इसमे से आवश्यकतानुसार लेकर कुनकुना गरम मालिश करके गरम रूई बॉध देवे।

गुण तथा उपयोग—बालरोगो के लिये अनुभूत एव सद्य फलप्रद है।

रोगन कुचला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अहिफेन २ तोला, तिल का तेल ३० तोला, गाय का दूध ६० तोला, कुचिला १० तोला—कुचले को बारीक टुकडे कर दूध और तेल मे इतना पकावें कि दूध जल कर तेल मात्र शेष रह जावे। अब इसमे अफीम हलकर शीशी मे रखें। आवश्यकतानुसार कुनकुना गरम करके मर्दन करे।

गुण—सधिशूल मे अतिशय गुणकारी है।

रोगनकुश्त (कुष्ठ)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कडवा कुट, बालछड प्रत्येक ९ तोला—सबको कूटकर जैतून वा तिल के तेल और अर्क बहार[1] आधा सेर मे मिलाकर पाक करे। अर्क के जल जाने पर औषध-द्रव्यो को तेल मे खूब घोटे। दो-तीन बार आध सेर अर्कबहार डालकर पकावे। तीसरी बार अर्क हो जाने पर उतारकर तेल को छानकर जुदबेदस्तर, कालीमिर्च, फरफियून, सिलारस प्रत्येक ३॥ तोला भली भॉति हल करके शीशी मे भरकर सुरक्षित रखे।

गुण तथा उपयोग—कुनकुना गरम मालिश करके गरम रूई बॉधें। यह अर्दित, पक्षवध, कम्पवात, अपतन्त्रक, सुप्तिवात तथा वातशूल मे परम गुणकारक है।

रोगन खफाश (चमगादड)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जुदबेदस्तर, कडवा कुट प्रत्येक १०॥ माशा, जरावद १४ माशा, उसारा मर्जञ्जोश, जैतून का तेल प्रत्येक ५॥ सेर, वध किये हुए चमगादड १२ नग—सबको एक मे मिलाकर तैलपाक विधि से इतना पकायें कि पानी जल जाय और तेल

१—इसके योग के लिए दे० 'यूनानी सिद्धयोगसग्रह, पृ० ८९'।

मात्र शेष रह जाय। फिर उतार-छानकर सुरक्षित रखें और सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—गठिया, वातरक्त और गृध्रसी वात मे लाभप्रद है।

रोगन दाद

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कारबोलिक एसिड ६ माशा, कपूर १ तोला, तारपीन का तेल २ तोला—प्रथम दोनो द्रव्यो को मिलाकर धूप मे रखें। जब हल हो जाय, तब तारपीन का तेल मिलाकर भली भाँति सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन विधि—दिन मे दो-तीन वार दाह के ऊपर लगावें।

गुण तथा उपयोग—हर प्रकार के दाद मे उपकारक है।

रोगन सीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लहसुन एकपोथिया ४ तोला, फरफियून, अकरकरा प्रत्येक ३ तोला, काली मिर्च, सुदाब १-१ तोला—सबको आध पाव जैतून के तेल मे डालकर पाक करे और पाक सिद्ध होने पर उतारकर छान लेवें।

उपयोग विधि—शिश्न पर कुनकुना गरम तेल की मालिश करके ऊपर पान का पत्ता बाँध देवें।

गुण तथा उपयोग—शिश्न को दृढ करता है। जोडो की पीडा तथा आम-वात मे भी लाभप्रद है।

लऊक आबनैशकरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

इसवगोल का लुआव, बिहीदाना का लुआव, खतमी-बीज का लुआब, मीठे अनार का स्वरस, खीरे का स्वरस, कद्दू का स्वरस, कुलफापत्र-स्वरस, ईख का रस प्रत्येक ६ तोला, बबूल का गोद, कतीरा, मीठे बादाम का मग्ज, मदारशर्करा, पोस्ते का दाना प्रत्येक ७॥ तोला, चीनी आधा सेर—शुष्क औषधद्रव्यो को कूट-छानकर लुआव तथा स्वरसो मे चीनी मिलाकर पाक करके मिलायें और लऊक तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गावजबान मे मिलाकर दे।

गुण तथा उपयोग—यक्ष्मा, रक्तपित्त तथा शुष्क कास मे उपयोगी है।

लऊक कतॉ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अलसी का लुआब ऽ।। सेर मे खॉड और उत्तम मधु प्रत्येक ऽ।। सेर मिलाकर पाक करें।

मात्रा और सेवनविधि—१ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—कफज कास और श्वास मे उपकारक है।

लऊक मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे बादाम का मग्ज, मीठे कद्दू का मग्ज प्रत्येक १०।। माशा, बबूल का गोद, कतीरा, निशास्ता, सतमुलेठी प्रत्येक १।। तोला—सबको कूट-छान कर ६ तोला खॉड (कद सफेदी) की चाशनी मे मिलाकर लऊक (अवलेह) तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—१ तोला अर्क गावजवान १२ तोला के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—कास, उष्ण प्रसेक और प्रतिश्याय मे लाभकारक है।

लऊक सपिस्तॉ खियारशबरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उन्नाव, लिसोडा प्रत्येक १५ नग, बनफ्शा ९ माशा, खतमी ५ माशा, सनाय १।। तोला, शीरखिश्त २।। तोला, अमलतास की गुद्दी ४।। तोला, खमीरा बनफ्शा ३ तोला, तुरजबीन ६ तोला, मीठे बादाम का तेल ५ माशा, मिश्री १।। तोला—प्रथम सनाय तक के सब द्रव्यो को ऽ।।। जल मे उबालें और आधा जल रहने पर छान लेवें। उसमे शीरखिश्त, अमलतास का गूदा, तुरजबीन, खमीरा और मिश्री मिला कर छान कर मध्य अग्नि पर पाक करें। गाढा होने पर बादाम का तेल मिलाकर सुरक्षित रखे।

मात्रा—१-१ तोला प्रात साय अर्क गावजवान से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—श्वसनकज्वर (निमोनिया) और कास मे उपयोगी है तथा विबन्धनाशक भी है।

ल्बूब कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सालममिश्री, ताजा नारियल, घरेलू चिडे (चटक) के सिर का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना प्रत्येक ३ तोला, पिस्ते का मग्ज, बादाम का मग्ज, फिदक का मग्ज, हब्बतुल् खिजरा (बुत्म का फलबुन) का मग्ज, अखरोट का मग्ज, चिलगोजा का मग्ज, हब्बुल्जलम का मग्ज, झीगा मछली, कुलजन, शकाकुल मिश्री, लाल और सफेद बहमन, लाल और सफेद तोदरी, सोठ, छिले हुए तिल, दालचीनी प्रत्येक १॥ तोला, सूरजान, बूजीदान, सूखा पुदीना प्रत्येक १ तोला २ माशा, बालछड, नागरमोथा, लौग, कबाबचीनी, इन्द्र जौ, दरूनज अकरबी, कचूर, हब्बुल्कुल्कुल गाजर-बीज, प्याज-बीज, मूली के बीज, शलगम के बीज, इस्पस्त, हालो-बीज प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल, जावित्री, छडीला, पीपल प्रत्येक ७ माशा, केशर, मस्तगी, मायए शुतुर ऐराबी प्रत्येक १३॥ माशा, ऊदखाम (अगर अपक्व) ९ माशा, अम्बर, अश्हब ४॥ माशा, कस्तूरी २। माशा, सोने का वर्क ३० नग, चाँदी के वर्क ५० नग, समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर तिगुने मधु की चाशनी मे मिला कर लुबूब तैयार करे।

मात्रा—६ माशा दूध से।

गुण तथा उपयोग—यह अत्यन्त उत्तम बलप्रद, अतीव वाजीकर, वृष्य, उत्तेजक, स्तम्भक तथा शरीर पोषक औषध है।

लबूब सगीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे बादाम का मग्ज, अखरोट का मग्ज, हब्बुल्खिजरा, चिलगोजे का मग्ज, हब्बुल् जलम का मग्ज, फिदक, पिस्ता, ताजा नारियल, हब्बुल्कुल्कुल का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना, लाल और सफेद तोदरी, छिलके रहित तिल, लाल और सफेद बहमन, तज, सोठ, पीपल, अकरकरा, कबाबचीनी, शकाकुल, कुलजन, जिरजीर के बीज, प्याज के बीज, शलगम के बीज, इस्पस्त के बीज, हालो के बीज, प्रत्येक सम भाग लेकर बारीक चूर्ण कर तिगुने मधु के साथ पाक मे डालकर लुबूब तैयार करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता और वृष्य एव वाजीकर है।

विद्रुत गन्त्रक (किबरीत सय्याल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

आमलासार गंधक ५ तोला, सीपभस्म १० तोला—दोनों को बारीक करे और ८२ सेर जल मे हल करके आतशी शीशी मे भरकर मृदु अग्नि देवें तथा ८। जल शेष रहने पर निथार कर फिल्टर करें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकता पर २ बूंद जल मे डालकर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—भूख बढाती तथा रक्त दोष को निवृत्त करती है।

विद्रुत मुक्ता (मरवारीद सय्याल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

१ माशा मोती मे नीबू का रस थोडा-थोडा मिलाकर खरल करें। जब मोती हल हो जाय, तब भलीभाँति छान लेवें।

मात्रा तथा सेवनविधि—५ बूंद, १ तोला अर्क-गुलाब मे मिलाकर प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—हृदय तथा मस्तिष्क को बल देता तथा शारीरिक दौर्बल्य को नष्ट करता है और मोतीझरा ज्वर मे उपयोगी है।

विद्रुत स्वर्ण

देखें "माउज्जहब"

शराबुस्सालहीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ईख का रस, गाजर का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, शलगम का स्वरस, गुडहल का स्वरस, देशी अगूर का स्वरस प्रत्येक दो सेर, छुहारे का स्वरस ८१, हरा किशमिश ८१ सेर—इन सबको एक जगह मिलाकर रख लेवे। जब इनमे किंचित् सधान उत्पन्न हो जाय तब एक कलईदार देगची मे रखकर १ माशा शुद्ध अफीम और १ तोला शुद्ध केशर पोटली मे बाँधकर नैचा मे रख कर यथाविधि अर्क खीचे।

मात्रा और सेवनविधि—५ तोले की मात्रा मे प्रात.-सायकाल उपयोग कराये। आवश्यकतानुसार बढा भी सकते हैं।

गुणकर्म तथा उपयोग--यह शराब शरीर मे शुद्ध रक्त उत्पन्न करती है तथा ओज एव देहोष्मा को बल देती है।

विशिष्ट गुण--हृदय के बलवर्द्धन की प्रधान वस्तु है।

शर्बत अंगूर अम्ल व मधुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अगूर स्वरस ऽ१ सेर मे ऽ३ सेर खॉड मिलाकर पाक करें।

मात्रा--२ तोला।

गुण तथा उपयोग--आमाशय और हृदय को बल देता तथा पाचन है।

शर्बत अफसंतीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफसतीनरूमी १७॥ माशा, निशोथ ३५ माशा, गुलाब-पुष्प १७ माशा--सबको ऽ२ सेर जल मे उबाल-छानकर ऽ१ सेर खॉड मिलाकर पाक करें।

मात्रा--२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग--आमाशय तथा यकृत् को दूषित दोषो से निवृत्त करता है।

शर्बतजूफा मुरक्कब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अजीर १० नग, खतमी बीज, मुलेठी, ईरसा प्रत्येक १०॥ माशा, मेथी १४ माशा, सौफ, करपसबीज प्रत्येक १॥ तोला, हसराज १ तोला ४ माशा, सूखा जूफा २ तोला, बीजरहित दाख (मुनक्का) ४ तोले--समस्त द्रव्यो का यथा-विधि क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर दुगुनी खॉड और एक भाग गुलकन्द मिलाकर पाक करे। पाक सिद्ध होने पर छान कर बोतलो मे भरे।

मात्रा--२ तोला।

गुण तथा उपयोग--कफज कास मे उत्तम है और श्वास मे कफ का स्राव करता है।

शर्बत तूत स्याह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काले शहतूत को जल मे भलीभाँति मल कर छान लेवें। इस छने हुए ऽ१ पानी मे तीन सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला अवलेह की भाँति चाटें।

गुण कर्म तथा उपयोग—गले की पीडा, शोथ और जलन को हटाता है।

शर्बत फर्यादरस

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गावजवान, सफेद चन्दन, हसराज, सफेद पोस्ते का दाना, ऊदसलीव, मुलेठी प्रत्येक २ तोला, सोफ, खतमी-वीज, गुलाव-पुष्प प्रत्येक १ तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का (दाख) २५ दाना—समस्त द्रव्यो को यथाविधि उबाल कर छान लें और ऽ१ सेर खाँड मिलाकर शर्बत की चाशनी करें।

मात्रा और सेवनविधि—२ तोला, अर्क गावजवान १२ तोले के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—प्रसेक, प्रतिश्याय और कास मे लाभकारी है।

शर्बत रगतरा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रगतरा (सतरा) का स्वरस ऽ।≈ मे ऽ१।। सेर चीनी मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग—यह पित्त की उग्रता को नष्ट करता और तृष्णा को मिटाता है।

शर्बत लोकाट

द्रव्य तथा निर्माणविधि

लोकाट का पानी ऽ।। सेर मे ऽ१।। चीनी मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग—पित्त की उग्रता को शान्त करता है।

शर्वत वर्द सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ताजे गुलावपुष्प ऽ१ सेर बीज तथा हरी पखडी आदि रहित करके ऽ१ सेर जल मे खूब पकाकर छान लेवें और इस क्वाथ-जल के प्रति आध सेर मे ऽ१ सेर के हिसाब से चीनी मिलाकर पाक करें और झाग उतारें। कोई कोई क्वाथ जल के बराबर चीनी मिलाते हैं।

गुण तथा उपयोग—हृदय और आमाशय को बल देता है, तृषा को शात करता है, कोष्ठगत दाह तथा मलवद्धता का निवारण करता है। ज्वर मे भी लाभकारी है। यह शर्वत निचोडकर (बिल्अस्र) विरेक कराता है, अतएव अन्त मे मलावरोध उत्पन्न करता है अथवा शीतल जल विरेक कराने मे सहायक होता है।

शर्वत वर्दमुकर्रर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऽ६ सेर जल मे ऽ२। सेर गुलाव का क्वाथ करे। जब ऽ१ सेर पानी जल जाय तब मलकर ऽ१ सेर गुलाब का फूल और मिलाकर पकाये। जब ऽ।।। पानी जल जाय तब मल-छानकर ऽ१।। मिश्री मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ तोला, अर्क सौफ ८ तोला के साथ पिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यकृत्, वस्ति और वृक्क के उष्ण व्याधियो मे लाभकारी है तथा यह मूत्र-दाह को मिटाता है।

शियाफ अख्जर

द्रव्य तथा निर्माणविधि —

शुद्ध जगार १० माशा, रूपामक्खी, सफेदा वग, ववूल का गोद, उशक प्रत्येक ७ माशा—सुदाव के स्वरस मे सब खरल की हुई ओषधियाँ मिलाकर वर्ति (शियाफ) तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकता के समय जल वा अर्क गुलाव मे घिसकर नेत्र मे लगायें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रकण्ड, नेत्रस्राव और शुक्ल (फूली) मे लाभकारी है।

शियाफ अब्यज

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

निशास्ता ३॥ माशा, सफेदा काशगरी, बबूल का गोद, कतीरा प्रत्येक १०॥ माशे—समस्त द्रव्यो को महीन करके मुर्गी के अडे की सफेदी मे मिलायें और वर्ति बनाये ।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकतानुसार पपोटो पर लगाये ।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यद और अन्यान्य नेत्र-रोगो मे (जो उष्णता-जनित हो) लाभप्रद है ।

शियाफ अब्यज अफ्यूनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेदा काशगरी २८ माशा, बबूल का गोद १७॥ माशा, कतीरा, अफीम प्रत्येक ३॥ माशा—सबको बारीक पीसकर अडे की सफेदी मे गूँधकर वर्ति बनावे ।

गुण—पीडाशामक है तथा नेत्राभिष्यद (ऑख दुखने) मे गुणकारी है ।

शियाफ अब्यज कुदुरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

-सफेदा वग २ तोला ४ माशा, कीकर का गोद १४ माशा, अफीम, अजरूत (परिपालित), कतीरा प्रत्येक ३॥ माशा, कुदुर १॥। माशा—सबको कूट-छान-कर वर्षा-जल मे गूँधकर वर्ति बनाये ।

गुण तथा उपयोग—नेत्रव्रण एव साद्रपूय के लिये उपयोगी है ।

शियाफ अबार (सीसकवर्ति)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफीम ३॥ माशा, सोनामक्खी, सफेदा वग, दग्ध ताँबा, सुर्मा असफहानी बबूल का गोद, कतीरा, दग्ध सीसा प्रत्येक २ तोला ४ माशा—सबको कूट-छानकर वर्षाजल मे गूँधकर वर्ति बनाये । नूरुलऐन मे इसी योग मे अफीम, बोल प्रत्येक ३॥ माशा और कुदुर १०॥ माशा भी लिखा है ।

गुण तथा उपयोग—नेत्रक्षत एव तारकाभ्रश मे लाभकारी है, यह व्रण को पूरण और सताप को शमन करती है ।

शियाफ कुदुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

एलुआ, कुदुर, गुलनार, अजरूत, दम्मुल्अख्वैन, सुरमा, फिटकिरी प्रत्येक ३॥ माशा, जगार ९ रत्ती, कट-छानकर वर्ति बनावें।

गुण तथा उपयोग—नासूर को शुद्ध करके इसे लगावे। आँख के नासूर (नेत्र नाडी) के लिए उत्तम है।

शियाफ गोटा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीली हड का बकला, बबूल का गोद, धोया हुआ तूतिया प्रत्येक २ तोला ११ माशा, सोठ १ तोला ५॥ माशा, रसवत १ तोला २ माशा, हलदी, केसर प्रत्येक ७ माशा—सबको खरल करके यथावश्यक कच्चे अगूर के स्वरस मे गूँध कर वर्ति बनावें।

गुण तथा उपयोग—पोथकी, नेत्रकण्डू और दृष्टिदौर्बल्य (कुम्न') के लिये गुणकारक है।

शियाफ जरब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हरा तूतिया, शिब्ब यमानी (फिटकिरी), सुहागा, सोनामक्खी, जगार, विलायती हरा, हीराकसीस प्रत्येक ६ माशा, देशी जस्ता का फूल, बबूल का गोद प्रत्येक ३ माशा—समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें और गोद मे मिलाकर वर्ति तैयार कर लेवे।

गुण तथा उपयोग—पलको को उलटकर यह वर्ति कुकरो (पोथकी) पर घिस दिया करें। यह पोथकी के लिये अति लाभप्रद है।

शियाफ तुफाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

धोया हुआ सफेदा वग ५ तोला १० माशा, माक्षीक (जलाकर गदही या कन्या प्रसूता स्त्री के दूध मे शुद्ध किया गया अक्लीमिया) ४ तोला ८ माशा, केशर १४ माशा, कतीरा ७ माशा—सबको महीन पीसकर खुमी के स्वरस मे गूँधकर वर्ति बनावें और अडे की सफदी के साथ प्रयुक्त करें।

गुण तथा उपयोग—यह वर्ति अत्यन्त (लतीफ) है। नेत्र मे बिल्कुल नही लगती। नेत्रव्रण, नेत्र-शूल, नेत्रजालक, पर्वणी और तारकाभ्रंश (का भेद तुफाही) के लिये लाभप्रद है।

शियाफ दीनारजून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रूपामक्खी, सफेदा वग प्रत्येक २ तोला ११ माशा, अफीम, निशास्ता प्रत्येक ३॥ माशा और कतीरा ५। माशे का प्रसिद्ध विधि से वर्ति बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकतानुसार जल वा अर्क गुलाब मे घिसकर नेत्र मे लगावें।

गुण तथा उपयोग—सौदावी नेत्राभिष्यद मे गुणकारक है।

शियाफ मरारात

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

दग्ध माक्षीक (अक्लीमिया) ४ तोला ४॥ माशा, कीकर का गोद २ तोला ४ माशा, रोहू का पित्ता, चकोर का पित्ता प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती, भारतीय स्याही (जो लेखन के काम आती है), सफेद मिर्च १ तोला ५॥ माशा, सफेदा वग ४ माशा, उशक, सकबीनज, रोगन बलसाँ, जावशीर प्रत्येक ७ माशा, प्रसिद्ध प्राणि-विशेष (कफतार) का पित्ता, अफीम प्रत्येक ३॥ माशा, प्रसिद्ध शिकारी पक्षी (बाश का पित्ता), उकाब का पित्ता, गाय का पित्ता, रीछ का पित्ता, भेड़िये का पित्ता, कौए का पित्ता, बाज का पित्ता प्रत्येक १॥। माशा, (रोगन बलसाँ के प्रभाव मे रोगन आजुर (इष्टिका तैल) सम्मिलित करे। 'शैख' के मतानुसार रोहू मछली और भेडिये का पित्ता आवश्यक है, शेष पित्ते अतिरिक्त वा अनावश्यक है)—शुष्क द्रव्यो को पीस-छानकर पित्तो मे गूँध कर वर्ति बनावे और सौफ के स्वरस मे घिसकर नेत्र मे लगाना चाहिये।

गुण तथा उपयोग—मोतियाबिन्द, नेत्रव्रण, नेत्रजालक और नेत्रगत क्लेद के लिये गुणकारक है। पटलो मे शीघ्र प्रवेश कर जाने के कारण यह अपना प्रभाव करती है। इसमे दो वर्ष तक वीर्य शेष रहता है।

शियाफ सुमाक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

११॥ तोले सुमाक को वर्षा-जल मे पकाकर छान लेवे और पुन पकाये जिसमे वह गाढा हो जाय। फिर शीतल होने के लिये रख छोडे। तदुपरान्त सफेदा

वग २ तोला ११ माशा को उसमे गूँधें और र्वात बनावें। कोई कोई सुमाक के पानी को इतना पकाते हैं कि वह गाढा हो जाता है और उसमे गर्दसुमाक को गूँध-कर र्वात बनाते हैं।

गुण तथा उपयोग--पोथकी, नेत्रकण्डू, नेत्रपाक तथा नेत्र के वाहर की ओर निकल आने मे लाभकारी है।

सफूफ इम्लाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

खार भग, खार नकछिकनी, खार मूली, खार पुदीनापत्र, खार कटेरीपत्र प्रत्येक २ तोला, सत्त्व अजवायन १ तोला--सवको बारीक कूट-छानकर अजवायन सत्त्व मिलाकर खरल करे।

मात्रा--४ रत्ती ७ माशे जुवारिश कमूनी मे मिलाकर प्रयोग करे अथवा भोजनोत्तर ४ रत्ती चूर्ण जल से ले।

गुण तथा उपयोग--दीपन-पाचन तथा अन्त्रस्थ वायुनाशक है और भूख लगाता है।

सफूफ खद्र

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बिल्लीलोटन-बीज, मस्तगी, नरकचूर, गावजवान, छोटी इलायची का दाना मीठा सूरजान, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम, बूजीदान प्रत्येक ३ माशा ऊदसलीब, ऊद गर्की, जदवार, दरूनज अकरबी प्रत्येक १ माशा, दोनो वहमन, दालचीनी, तज, बालछड, राम तुलसी-पत्र प्रत्येक २ माशा--प्रत्येक द्रव्य को पृथक्-पृथक् कूट-छानकर मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा, यह चूर्ण ताजा जल से खावे।

गुणकर्म तथा उपयोग--सुप्तिवात (खद्र, सुन्नता) के लिये गुणकारक है।

सफूफ तिहाल

द्रव्य तथा निर्माणविधि

राई ३ तोला, भुना हुआ सुहागा १ तोला कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि---२ माशा ताजा जल से सेवन करे।

गुण तथा उपयोग--आमाशय मे शक्ति उत्पन्न करता (दीपन) है तथा प्लीहा के शोथ एव काठिन्य को दूर करता है ।

सफूफ तीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

रैहाँबीज, कनौचा-बीज, भुने हुये तुख्म हुम्माज, इसबगोल, बबूल का गोद, गिल अरमनी, वंशलोचन प्रत्येक समतोल--रैहाँ, कनौचा और इसबगोल को छोडकर शेष समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर इनके साथ मिलाकर सुरक्षित रखे ।

मात्रा और सेवनविधि--७ माशा चूर्ण गाय के घी मे स्नेहाक्त करके ७ माशा रेशाखतमी के लुआब के साथ उपयोग करें ।

गुण कर्म तथा उपयोग--रक्तज और पित्तज अतिसार को बन्द करता है तथा पेचिश मे लाभकारक है ।

सफूफ दमा हल्दीवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गेहूँ को मिट्टी के प्याले मे डालकर अग्नि पर रखकर कोयला (मसीकृत) कर लेवें, राख न होने पावे । पुन इससे आधी हलदी जला लेवें । (गेहूँ से कम जलाये) । फिर दोनो को मिलाकर चूर्ण करे ।

मात्रा--५ माशा प्रात जल से देवें और प्रतिदिन १ रत्ती बढायें जिससे २५ दिन मे ३० माशा तक पहुँच जाय । पुन १-१ माशा कम करके प्रथम मात्रा पर आ जायँ । यह प्रयोग ५१ दिन तक करें ।

गुण तथा उपयोग--कफज कास और श्वास मे उपयोगी है ।

सफूफ दम्आ (नेत्रस्रावहर चूर्ण)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मुण्डीपुष्प ‌ ‌ ५‌ ‌‍ सूर्योदय से पूर्व उसके पौधे से तोडकर छाँह मे सुखायें और काली हड, सूखी धनियाँ, प्रत्येक ५ तोला--सबको कूट-छानकर ५। चीनी मिलाकर चूर्ण बनाये ।

मात्रा गुण तथा उपयोग--प्रतिदिन प्रात -सायकाल ४ माशा से १ तोला तक सेवन करें । बादी और अम्ल पदार्थो से परहेज करें । यह नेत्रस्राव के लिये अतीव गुणकारी है ।

सफूफ दीदान

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

लाल हीग ४ रत्ती, चिरायते का चूर्ण १० रत्ती--ऐसी एक पुड़िया रात्रि मे सोते समय सेवन करायें।

गुण तथा उपयोग--आन्त्रकृमि विशेषकर कद्दू दाने और गण्डूपद कृमि (गोल कीडो--केचुवो) के निकालने के लिये उपयोगी एव कृतप्रयोग है।

सफूफ नमक शैखुर्रईस

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

साँभर नमक, सफेद मिर्च प्रत्येक ७॥ तोला, नवसादर, सोठ, सूखा पुदीना, कालीमिर्च प्रत्येक ५ तोला ४ माशा, करफसबीज ३॥। तोला, अनीसून, जिरजीर बीज, अजवायन, वालछड प्रत्येक २॥ तोला--सबको कूट-छानकर चूर्ण बनावें।

मात्रा--५ माशा, भोजनोत्तर।

गुण तथा उपयोग--आमाशय तथा यकृत को वल देता और वायुनाशक तथा दीपन-पाचन हे एव सधिशूल मे उपकारक है।

सफूफ नाना

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सूखा पुदीना ३ माशा, सुमाक १॥ तोला, काला नमक १॥ तोला, काली मिर्च ७ माशा--सबको कूट-छानकर चूर्ण तैयार करें।

मात्रा--३ माशा जल से देवे।

गुण तथा उपयोग--वायुनाशक, आध्मानहर, शलनाशक तथा दीपन-पाचन है।

सफूफ बिरगी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बडी हरड, आमला, वायविडग (छिली हुई) प्रत्येक ३५ माशा, सफेद निशोथ ८ तोला ९ माशा, समस्त द्रव्यो से दुगुनी चीनी--प्रथम शेष द्रव्यो का चूर्ण करें और फिर चीनी मिला देवे।

मात्रा--७ माशा।

गुण तथा उपयोग--उदर के लम्बे तथा छोटे कृमियो को नष्ट करता है।

सफूफ मुगल्लिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कोपल वर्गद, भिंडी की जड, लिटोरा, कच्चा केला, शकरकन्द प्रत्येक २ तोला, तजकलमी ३ माशा—समस्त द्रव्यो को कूटकर सबके बराबर चीनी मिलाकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवनविधि—७-७ माशा, प्रात -सायकाल गाय के दूध के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—शुक्रप्रमेह मे लाभकारी है। यह वीर्य को गाढा करता तथा वीर्यस्तम्भक है।

सफूफ मुवल्लिफ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सूखा सिंघाडा, कतीरा प्रत्येक ६ माशा, निशास्ता, तालमखाना, सालममिश्री प्रत्येक ४ माशा, माजू, मस्तगी प्रत्येक ३ माशा, चीनी सबके बराबर कूटछानकर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, दूध या जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—प्रमेह, वीर्यतारल्य तथा शीघ्रपतन मे अपूर्व गुणकारी है।

सफूफ मूया

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काली हड, पोस्ते की डोडी, सौंफ प्रत्येक ६ माशा, गाय के घी मे भूनकर सबको कूटकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और उपयोग विधि—७ माशा ताजा जल से प्रयोग करे।

गुणकर्म तथा उपयोग—आमाशय तथा आन्त्र के दौर्बल्य से जो विरेक होते हैं उनके लिये यह उत्कृष्ट औषधि है।

सफूफ सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

गेरू, भुनी हुई फिटकिरी १-१ तोला बारीक पीस लेवे और २ तोले चीनी मिला लेवें।

मात्रा--३ माशा, शर्बत वजूरी और दूध की लस्सी से लेवें ।

गुण तथा उपयोग--सूजाक मे मूत्रदाह को मिटाता है तथा पीप को भी रोकता है ।

सफूफ सुलेमानी खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काला नमक, साँभर नमक, इन्द्राणी नमक, नवसादर, प्रत्येक ७ तोला, अजमोद, अजवायन, कालीमिर्च, सोठ, लौग, जीरा स्याह, जावित्री प्रत्येक १-१ तोला--सबको कूट-पीसकर सिरका मे उबालें, फिर शुष्क करके खरल कर लेवें ।

मात्रा--२ माशा, भोजनोत्तर प्रयोग करें ।

गुण—दीपन-पाचन है ।

सफूफ हिंदी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नमक पुदीना, नमक कटाई, नमक मदार, नमक मूली, छाँह मे सुखाई हुई नकछिकनी--सब बराबर-बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें ।

मात्रा और सेवनविधि--२ माशा भोजन से पूर्व सेवन करे ।

गुण तथा उपयोग--आध्मान तथा वायगोला को नष्ट करता है तथा भोजन को पचाता एव स्वादिष्ट बनाता है ।

सनून कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नागरमोथा ४। तोला, पीत कसीस, सूखा धनिया, लाहौरी नमक, प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, सफेद कत्था, कुटकी, सफेद जीरा, भुना हुआ नीलाथोथा प्रत्येक ३।। माशा, कवाबचीनी, सोठ, कपूरकचरी, वज्रदन्ती प्रत्येक १।।। माशा--यथाविधि सनून (मजन) बनावे ।

मात्रा और सेवनविधि--थोडा-सा मजन रात्रि मे सोते समय और प्रात काल दाँतो पर मले ।

गुणकर्म तथा उपयोग--दाँतो को चमकदार बनाता और दृढ करता तथा रक्तस्राव को बन्द करता है ।

सनून जर्द

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अनार का छिलका, गुलनार, हलदी, सुमाक, भुनी फिटकिरी प्रत्येक १ माशा—सबको महीन पीसकर दाँतो और मसूढो पर मलें।

गुण तथा उपयोग—दाँतो को दृढ करता और अभिघातज दतशूल मे विशेष गुणकारी है।

सनून तबाकू

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

तबाकू, सुरती, कालीमिर्च प्रत्येक १ तोला, साँभर नमक १० माशा कूट-पीसकर चूर्ण बना लेवे।

मात्रा और सेवनविधि—यथाविधि दाँतो पर मले।

गुण तथा उपयोग—यह मजन मसूढो की आर्द्रता को सुखाता और दाँतो की जडो को दृढ करता है। प्रसेकज द्रव के इन्सिबाब को रोकता है।

सनून पोस्त मुगीलाँ वा सनून मुगीलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कीकर की जड की छाल ४ तोला, कत्था, सुपारी, सगजराहत १-१ तोला, कालीमिर्च, सोठ १-१ माशा—सबको बारीक पीसें। इसमे मस्तगी १ तोला और नागरमोथा २ तोला कई हकीम मिलाते है।

मात्रा और सेवनविधि—रात्रि मे दाँतो पर मलकर सो रहे, कुल्ली न करे। प्रात काल कुल्ली करके दाँत साफ करे वा प्रात मलकर दो घटे पश्चात् कुल्ली करके साफ करें।

गुण तथा उपयोग—हिलते दाँतो के लिये परमोपादेय है। रक्त-स्राव बन्द करता हे।

सनून मुजर्रब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कत्था, सोठ, छोटी इलायची, सफेदमिर्च, मस्तगी, काला नमक, भूनी फिटकिरी, हरा तूतिया—सबको समान भाग मे लेकर पीसकर मजन बनावे।

मात्रा तथा सेवनविधि—दाँतो पर चुटकी भर मले।

गुण तथा उपयोग—दाँतो और मसूढो के रोगो मे अतीव गुणकारी है।

सुनून मुजल्ला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

दग्ध सीप, दग्ध बारहसिगा, समुद्रझाग, रूमी मस्तगी, सेंधा नमक समान भाग लेकर मजन तैयार करें।

उपयोगविधि--दाँतो पर मलें।

गुण तथा उपयोग--दाँतो को निर्मल (लेखन) करने के अतिरिक्त सुगधित एव आर्द्रतारहित करता है।

सुर्मानूरुल्ऐन

यूनानी सिद्धयोगसग्रह मे "नूरुल्ऐन' का योग देखें।

हब्ब अश्खार

द्रव्य तथा व निर्माणविधि—

हड, चीता, सोठ, सज्जीखार, सुहागे का लावा, सफेद जीरा, लाहौरी नमक--सबको सम भाग लेकर कूट-छान लेवें। तत्पश्चात् दुगुना पुराना गुड मिलाकर मूँग के समान गोलियाँ बनावे।

मात्रा--प्रात ३ माशा, उष्ण जल से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग--बढी हुई प्लीहा को शीघ्र ही कम करती है।

हब्ब आसाब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

घरेलू चिडे (चटक) के सिर का मग्ज, शकाकुलमिश्री, प्याज का बीज, गदना का बीज, किशनखुर्मा, सालममिश्री, जिरजीर का बीज, रेगमाही प्रत्येक १-१ तोला, कस्तूरी ३ रत्ती, कैल्सियाई हाइपोफास्फॉस और सोडियाई हाइपोफॉरफास प्रत्येक ६ माशा--सबको पीसकर मधु मे मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली प्रात-सायकाल ऽ। भर गाय के दूध से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--वातनाडी को बल देनेवाला, बल्य, स्फूर्तिदायक और वाजीकर है।

हब्ब कत्थ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कपूर, रसकपूर, पपडिया कत्था, सफेद मूसली प्रत्येक १ तोला—अर्क पान या जल मे पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—एक गोली मुनक्का मे इस प्रकार बन्द करे कि गोली दाँतो मे न लगे। बाद को सेवन करे। इसका सेवन चबाकर कभी भी न करें, प्रत्युत निर्दिष्ट विधि से निगल लेवें।

पथ्य मे चने की रोटी, अरहर की दाल खूब घी डालकर या बकरी के मास की कलिया, फुलके या डबल रोटी से खावे। इसके अतिरिक्त और किसी वस्तु के सेवन की आज्ञा नहीं देवें।

गुण तथा उपयोग—फिरग और आमवात मे बहुत ही गुणकारी है और समस्त सौदावी रोगो मे अतीव उपयोगी है।

हब्ब कबिद (दी) जदीद

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रेवद खताई, नौसादर प्रत्येक ५ तोला, कलमी शोरा १० तोला, फेराई एट क्विनीनी साइट्रास १॥ माशा—समस्त द्रव्यो को पीसकर ४–४ रत्ती की गोलियाँ बना लेवे।

मात्रा और सेवनविधि—१–१ गोली अर्क कासनी ६ तोला, अर्क मकोय ६ तोला के साथ प्रात-सायकाल प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—जीर्णज्वर एव यकृत के रोगो मे गुणकारक है।

हब्ब कुचला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला और केसर १–१ तोला, दालचीनी, जावित्री, सूरजान प्रत्येक ४–४ तोले, सोठ १० तोले, बडी इलायची-बीज ५ तोले—सबको जल से महीन पीसकर जगली बेर के समान गोलियाँ बनावें।

मात्रा—१–१ गोली प्रात सायकाल दूध से सेवन करे।

गुण तथा उपयोग—वीर्य पुष्टिकर, बल्य तथा आमवात एव वातिक शूल मे उपयोगी है।

हब्ब खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सुवर्ण भस्म २ तोला, अल्अहमर भस्म १ तोला, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज २ तोला, अम्बर २ तोला, कस्तूरी १ तोला—अर्क बेदमुश्क मे मिलाकर मूँग के बराबर गोलियाँ बनावें।

मात्रा—१–१ गोली भोजनोत्तर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन, पुंस्त्वशक्तिवर्द्धक, वाजीकरण और शरीर के सब अगो को बल देती है।

हब्ब खब्सुल्हदीद (मण्डूरवटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हब्बुर्रशाद (हालो) ८। तोला, गदना के रस से शुद्ध किया हुआ मडूर ३७॥ तोला, गदना के बीज, जिरजीर-बीज, करफस-बीज, गाजर-बीज, मूली-बीज, मेथी-बीज, प्याज-बीज, छोटी इलायची-बीज प्रत्येक ७। तोला—समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर गदना के रस मे घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेवे।

मात्रा—३–३ गोली प्रात -सायकाल ताजे जल से सेवन करे।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय को बल देकर शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। रक्तज और वातज अर्श मे गुणकारी है और पुराने सूजाक के लिये लाभप्रद है।

मण्डूर शोधनविधि—मण्डूर को बारीक पीसकर सात दिन तक गदना-बूटी के रस मे भावना देवे और प्रतिदिन रस बदलते रहे। पुन सुखाकर लोहे के तवे पर भून लेवें, तो बस मण्डूर शुद्ध हो जाता है। इसे ही उपर्युक्त योग मे डाले।

हब्ब गारीकून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उसारा गाफिस, और रेवदचीनी ७–७ माशे, गारीकून ३५ माशे, चीनी ५२॥ माशे—सब द्रव्यो को कूट-छानकर जल से गोलियाँ बनावें।

मात्रा—रात्रि मे ३॥ माशा प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—विबन्धहर और यकृच्छोधक है।

हब्ब गुलपिस्ता वा बस्तज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुलपिस्ता और बहेड़ा दोनो को समतोल लेकर आदी के रस मे घोटकर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—एक वा दो गोली मुख मे रखकर उसका लुआब निगले, अम्ल और बादी पदार्थ से परहेज करे।

गुण तथा उपयोग—कफज कास मे लाभकारी है और छाती से कफ को निकालती है।

हब्ब जदवार

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जदवार (निर्विसी), दरूनज अकरबी, दालचीनी, लौंग, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ७ माशा, केशर, जावित्री, रूमी मस्तगी, अगर, अफीम, खुरासानी अजवायन प्रत्येक ३॥ माशा, कस्तूरी, जुदबेदस्तर प्रत्येक १॥।/ माशा—सबको कूट-पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बनायें।

मात्रा—१–२ गोली उपयुक्त अनुपान से देवे।

गुण तथा उपयोग—कास, प्रतिश्याय, श्वास (साँस फूलना) के लिये लाभप्रद तथा शरीर को बल देनेवाली है।

हब्ब जुदबेदस्तर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जुदबेदस्तर, कस्तूरी (खताई), ऊदसलीब प्रत्येक २ माशा, अर्क दालचीनी या जौजबूया (जायफल) या बादियान (सौंफ) के साथ बारीक पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा तथा सेवनविधि—बालको को आधी गोली माता के दूध मे घिसकर पिलाये। युवा मनुष्य को १–३ गोली तक उपयुक्त अनुपान से खिलाये और पतला लेप के रूप मे भी प्रयुक्त करें।

गुण तथा उपयोग—बालापस्मार, मृगी और पक्षवध मे लाभकारी है। प्रसवोत्तर स्त्री या शिशु को सर्दी लग जाने से जो कष्ट उत्पन्न होते हैं उनके लिए भी लाभदायक है।

हब्ब तप बलगमी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

पीपल, करजुवा की गिरी प्रत्येक १ तोला, सफेद जीरा, बबूल का पत्र प्रत्येक ६ माशा--कूट-छानकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली प्रात, मध्याह्न और सायकाल गरम जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--कफज्वर मे बडा गुणकारी है।

हब्ब ताऊन खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

केसर, एलुआ प्रत्येक १ तोला, बोल (मुरमकी) ६ माशा--ताजे पानी मे घोटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा और सेवनविधि--१ गोली प्रातःकाल ताजा जल से तीन दिन नित्य सेवन करें। बीच-बीच मे तीन दिन छोडकर इसी प्रकार एक-एक मास पर्यंत सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--जिस समय ग्रथिकज्वर (प्लेग) फैल रहा हो, उस समय रक्षा के लिये इन गोलियो का सेवन अतीव गुणकारी एव परीक्षित सिद्ध हुआ है।

टि०--रोगावस्था मे इनका उपयोग निषिद्ध है।

हब्ब ताऊन अबरी जवाहरवाली

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

दरूनज अकरबी, जदवार (निर्विसी), कचूर, लाल बहमन, सफेद बहमन प्रत्येक ६ माशा, सफेद चन्दन, गिल मख्तूम, गिल अरमनी, दालचीनी, पाषाणभेद, वशलोचन, जरावद मुदहरज (गोल), बलसाँ-बीज प्रत्येक ४ माशा, केसर, जहरमोहरा, मोती, याकूत प्रत्येक ३ माशा, अम्बर, चाँदी के वर्क, सोने के वर्क प्रत्येक १।। माशा, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, अर्क केवडा प्रत्येक ५ तोला--रत्नो को अर्क मे खरल करें। अम्बर और केशर को औषध-द्रव्यो के चूर्ण मे खरल करके १-१ रत्ती की गोलियाँ बनावें और ऊपर से चाँदी तथा सोने के वर्क लपेट देवे।

मात्रा और सेवनविधि--रोगावस्था मे दिन मे तीन बार दो-दो गोली मुफर्रह बारिद मे मिलाकर वा अर्क गुलाब ५ तोले के साथ प्रयोग करें। रोग प्रतिबन्धक स्वरूप मे प्रतिदिन दो गोली जल से खावें।

गुण तथा उपयोग—प्लेग की रोगावस्था मे अथवा उसके प्रतिबन्धक रूप मे प्रयोग करने की सर्वोत्तम ओषधि है।

हब्ब पपीता

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

विलायती पपीता ६ माशा, सोठ, पीपल, कालीमिर्च, सूखा पुदीना, मदार का फूल, सेंधा नमक, काला नमक प्रत्येक १-१ तोला—समस्त द्रव्यो को कूट-छान कर नीबू के रस को भावना देकर, चना प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा—१-१ गोली भोजनोत्तर सेवन करें।

आमाशय के रोगो मे दो गोली जल से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—यह पाचक है तथा उदरशूल, वातशूल, विसूचिका और आध्मान मे लाभकारी है।

हब्ब बवासीर सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध रसवत २ तोले, गरू ४ तोले—दोनो को कुकरौधा के रस मे खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—३-४ गोली अर्क गावजवान १० तोले और शर्बत अजबार २ तोले के साथ सेवन करे।

गुण तथा उपयोग—रक्तार्श मे रक्त को शीघ्र बन्द करती है।

हब्ब मरवारीद

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अवीध मोती ४ रत्ती, जहरमोहरा खताई, हज्रुलयहूद (बेर-पत्थर) दरियाई नारियल, पीली हड का वकला, कँवलगट्टे की गिरी, वशलोचन, छोटी इलायची का दाना, गुलाबपुष्प का जीरा (केशर) प्रत्येक ६ माशा—सबको महीन पीसकर खरल मे भली-भाँति हल करके अर्क गुलाब के साथ मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ तैयार कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—एक वर्ष के बालक को १-१ गोली प्रात-सायकाल माता के दूध मे हल करके पिलायें।

गुण तथा उपयोग—बालज्वर, बालातिसार और बालको के अजीर्ण, मलबद्धता, दौर्बल्य एव कृशता तथा सूखा (बालशोष) रोग मे यह गोली बहुत गुण करती है। इसके सेवन से दाँत भी सरलतापूर्वक निकल आते हैं।

हब्ब मरवारीदी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अर्धभृष्ट सुहागा, जलाया हुआ माजू प्रत्येक १–१ तोला, रूमी मस्तगी २ तोला, शुद्ध कुचला १ तोला, मोती, अम्बर अश्हब प्रत्येक १। तोला–यथावश्यक अर्क गुलाब मे खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि––१ या २ गोली प्रात -सायकाल ५ तोले अर्क अम्बर के साथ प्रयोग करें। उष्ण, बादी एव गरिष्ठ पदार्थ के सेवन से परहेज करें।

गुण तथा उपयोग––यह गोली स्त्रियो के लिये भी उपयोगी है। स्त्रियो के उस विशेष एव गुप्त रोग को दूर करती है, जो उनके स्वास्थ्य एव बल को धीरे-धीरे सर्वथा नष्ट करती है और यौवनकाल मे ही वृद्धावस्था उत्पन्न कर देती है। गर्भाशय से श्वेत वर्ण का द्रव स्रावित होना, पुरुषो मे मजी और वदी का स्राव (अष्ठीला वा शिश्नमूलादि ग्रथि का स्राव) होना, उक्त गुप्त रोग के स्वरूप है। यह गोली उनके लिये बहुत ही गुणकारी है। विशिष्ट स्त्री-रोगो की सर्वोत्तम ओषधि है।

विशिष्ट गुण––गर्भाशयबलदायक है।

हब्ब मुमसिक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जायफल, शिगरफ रूमी, अकरकरा, अफीम प्रत्येक ३॥ माशा––सबको बारीक कूट-छानकर मधु मिलाकर २० गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि––रात्रि मे सम्भोग से १ घण्टा पूर्व १ गोली दूध से सेवन करें अथवा गोली खाकर ऊपर से एक पान का बीडा खावे।

गुण––बहुत ही वीर्यस्तम्भक है।

हब्ब मोमियाई सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बोल (मुरमकी), रूमी मस्तगी, कुलजन प्रत्येक ३ माशा, सफेद और लाल बहमन, लौंग, दालचीनी, लोबान, बबूल का गोद, अगर, सतमुलेठी, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम (शुद्ध वा सत शिलाजीत) प्रत्येक ६ माशा, मोमियाई, शिलारस प्रत्येक ४ माशा––सबको बारीक पीसकर बादाम के तेल से स्नेहाक्त करे। पश्चात् पोस्ते की डोडी के स्वरस मे खरल कर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--एक वा दो गोली सम्भोग के पश्चात् गरम दूध से प्रयोग करे। अम्ल से परहेज रखे।

गुण तथा उपयोग--सम्भोग के पश्चात् जो शरीर मे क्षीणता एव आलस्य आ जाता है, उसे दूर करके बल एव शक्ति का उदय करती है।

हब्ब राहत

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

शुद्ध बछनाग, पीपल, कालीमिर्च, सुहागा खील, शिगरफ प्रत्येक १ तोला--यथावश्यक नीबू के रस मे ज्वार के दाना के बराबर गोलियाँ बना लेवे।

मात्रा और सेवनविधि--१ गोली १२ तोले अर्क बादियान से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग--कफज एव सौदावी रोगो को दूर करती है। जीर्ण कास तथा न्युमोनिया मे लाभप्रद है। विसूचिका मे भी गुणकारक है।

हब्ब लुब्बुल् खशखाश

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

केशर २। माशा, लुफाह (बेलाडोना) की जड की छाल ४।। माशा (अभाव मे भाँग की पत्ती), अजवायन खुरासानी, रूमी मस्तगी, कहरुवा (तृणकान्त), कतीरा, निशास्ता, कीकर, गोद, काहू-बीज, गावजवान पुष्प, पोस्ते का दाना, खीरा-ककडी के बीज का मग्ज, अफीम प्रत्येक ९ माशा, सत मुलेठी १० माशा, गिल अरमनी १।। तोला, रेवदचीनी ७ माशा--सबको कूट-छानकर चूर्ण करें और पोस्ते की डोडी के क्वाथ मे खरल करके काली मिर्च प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा--जीर्ण प्रतिश्याय मे १ गोली अर्क गावजबान के साथ स्तम्भनार्थ १ गोली दूध से देवें।

गुण तथा उपयोग--जीर्ण प्रतिश्याय (नजला), कठ की खराश और खाँसी के लिये अत्यत लाभप्रद और वीर्यस्तम्भक है।

हब्ब शबयार

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

पीली हड का वकला, बहेडा का वकला, सनायमक्की प्रत्येक ५ तोला, गुलाब पुष्प, कालादाना प्रत्येक ३।। तोला, एलुआ, कुन्दुर प्रत्येक २ तोला, शुद्ध गुग्गुल, उसारेरेवद, मस्तगी प्रत्येक ३।। माशा, कतीरा १०।। माशा--समस्त द्रव्यो

को कूट-छानकर जल मे घोटकर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा और सेवनविधि--२ से ७ माशा तक चार घडी रात्रि रहे तव उठ कर १२ तोले अर्क गावजवान के साथ प्रयोग करें और प्रात काल विरेचन लेवे।

गुण तथा उपयोग--प्लीहा, आमाशय और यकृत के शोथ को विलीन करती है, आमाशय तथा मस्तिष्क का शोधन करती है, जीर्ण ज्वर तथा कास मे लाभकारी है। वादाम के तेल मे घिसकर अर्शांकुरो पर लगाने से वे (मस्से) झड जाते हैं।

हब्ब सरअ

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कपूर, हीग, जुदवेदस्तर, अफीम प्रत्येक १ माशा--सवको वारीक पीसकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--१ या २ गोली प्रतिदिन उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग--मृगी के लिये अतीव गुणकारी है।

टि०--कभी इसमे जदवार १ माशा की भी योजना कर देते है।

हब्ब सुर्खबादए अतफाल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

रसवत, चाकसू, नरकचूर, धमासा, लाल चदन, काली हड, पित्तपापडा, चिरायता, सरफोका, मुडी, ब्रह्मदडी, नीलकठी प्रत्येक ३ माशा, नीम की पत्ती ५ नग, वकायन पत्र १५ नग--सबको मेहदी के पत्रस्वरस मे पीसकर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ वनाएँ।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली माता के दूध मे हल करके प्रात सायकाल शिशु को पिलायें।

टि०--कभी इसमे मुर्दासग ३ माशा की योजना करते हैं, विशेषत जव कि शिशु के माता-पिता मे फिरग का दोष हो।

गुण तथा उपयोग--शिशु के शरीर पर जो लाल रंग के दाने निकल आते है, उनके लिये ये गोलियाँ बहुत ही गुणकारी हैं।

हब्ब सुर्फा

द्रव्य तथा निर्माणविधि–

कद्दू, तरबूज, खरबूजा, पेठा, काहू, खीरा, सफेद पोस्ता, काला पोस्ता, इनके बीजो की गिरियाँ (मग्ज), छिले हुये बाकला के बीज, कश्मीरी गुलबनफशा, गावजबान-पुष्प, बबूल का गोद, कतीरा, निशास्ता, शकरतीगाल, सत मुलेठी, मीठे बादाम का मग्ज––इनको बारीक पीसकर शिलारस मे मिलाकर इतना खरल करें कि सब एक जान हो जाएँ। पुन चना प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि––एक-एक गोली मुख मे रखकर लुआब चसे।

गुण तथा उपयोग––शुष्क एव आर्द्र कास मे बहुत गुणकारी एव परीक्षित है। कफ को सरलतापूर्वक निकालती है। छाती मे मृदुता एव तरी उत्पन्न करती और प्रसेक को रोकती है।

हब्ब सूरजान

द्रव्य तथा निर्माणविधि––

एलुआ, हड, मीठा सूरजान प्रत्येक १–१ तोला––सबको बारीक पीसकर जल के साथ चना प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा––३–३ माशा, प्रात-सायकाल जल से देवे।

गुण तथा उपयोग––आमवात, वातरक्त और गृध्रसी मे लाभप्रद है।

हब्ब हमल (गर्भदावटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि––

कस्तूरी २ रत्ती, अफीम, जायफल, केशर प्रत्येक १–१ माशा, भाँग १॥। माशा, सुपारी ३ नग, लौंग ४ नग, गुड ५। माशा––समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर गुड मे मिलाकर जगली बेर के बराबर गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि––१ गोली ७ माशा माजून मोचरस के साथ प्रात.काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग––समस्त गर्भाशय के दोषो को सुधारकर स्त्रियो के वन्ध्यत्व को मिटाती है और गर्भधारण के योग्य बनाती है।

हब्ब हिंदी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

एलुआ, चिरायता प्रत्येक २ माशा, जायफल ४ माशा, जीरा, अजमोद प्रत्येक ६ माशा--सबको कूट-छानकर नकछिकनी के स्वरस मे गूँधकर २८ गोलियाँ बनावे।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली प्रात -सायकाल जल से प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग--शिर शूल, अर्धावभेदक और शिर शूल विशेष (बैजा) के लिये लाभदायक है।

हब्ब हिल्तीत (हिंगुवटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

असली हीग ४ तोला, सोठ ३ तोला, लाहौरी नमक, काला नमक प्रत्येक २ तोला, लौग, कुलजन, काली मिर्च, पीपल, छोटी इलायची, कबाबचीनी, मस्तगी, पिपरामूल, अजवायन, हड, बहेडा, आमला, कलौंजी प्रत्येक १-१ तोला--समस्त द्रव्यो को कूट-छानकर और हींग को घी मे भूनकर चूर्ण मे मिलावे। तत्पश्चात् सब द्रव्यो के चूर्ण के सम भाग घीकुआर का रस, अदरक का स्वरस और नीबू का रस इतना डालें कि औषध द्रव्य से चार अगुल ऊपर रहे। शुष्क होने पर दो-तीन बार इतना ही रस और डाल-डालकर सुखाये। अन्त मे सबको खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवे।

मात्रा--१ या २ गोली भोजनोपरात देवें।

गुण तथा उपयोग--यह अजीर्णनाशक है। उदरशूल, वमन तथा वात रोग मे लाभकारी और दीपन-पाचन है।

हलवाए गजर मग्ज सर कुजरकवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिलका तथा भीतरी कठिन भाग निष्कासित लाल रग के गाजर ऽ१ सेर, गुठली रहित छुहारे ऽ॥ सेर--गाजरो को कद्दूकश कर लेवे और छुहारो समेत ऽ५ सेर गोदुग्ध मे पकावें। जब पक जायँ और दूध शोषित हो जाय, तब इमाम-दस्ता (हावन दस्ता) मे कूटकर मलहम की भाँति बनावे। पुन चना का आटा और गेहूँ का आटा प्रत्येक ४ तोला ४॥ माशा को आवश्यकतानुसार गोघृत मे भूनकर उसमे मिलाये। पुन चीनी ऽ१ सेर और शुद्ध झाग दूर किया हुआ मधु ऽ॥ सेर की चाशनी करें और जब चाशनी तैयार हो जाय तब गाजर और छुहारो

को उसमे मिला देवे। तदुपरात ४० नग घरेलू चिडे (चटक) के शिर का मग्ज (भेजा); फिन्दक का मग्ज, मीठे बादाम का मग्ज, पिस्ते का मग्ज, चिलगोजे का मग्ज, नारियल की गिरी प्रत्येक २ तोला ११ माशा, सालम मिश्री, सोठ, शुद्ध गोखरू, दालचीनी, कुलजन, प्रत्येक १०॥ माशा, केशर, शुद्ध कस्तूरी, प्रत्येक ३॥ माशा—प्रत्येक को यथाविधि हल और चूर्ण करके हलुवे मे मिला लेवे।

मात्रा और सेवनविधि—३ तोले प्रात-सायकाल ƒ। भर गोदुग्ध के साथ सेवन करे।

गुण तथा उपयोग—यह वृष्य एव वाजीकरण करता है। शरीर को परिबृहित करता तथा वस्तिशूल एव वृक्कशूल का निवारण करता है।

हबूब राअ्शा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लौंग, बालछड, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक १०॥ माशा, दालचीनी, सूखा पुदीना, काबुली हड प्रत्येक ७ माशा, हीग, गारीकून, निशोथ, जुदबेदस्तर प्रत्येक ४ माशा, अकरकरा, केशर प्रत्येक ३ माशा, सखिया २ रत्ती—समस्त द्रव्यो को बारीक पीसकर मधु के साथ काली मिर्च के बराबर गोलियाँ बनावे।

मात्रा और सेवनविधि—२ से ४ गोली तक प्रात-सायकाल भोजनोत्तर सेवन करे।

गुण तथा उपयोग—कम्पवात और नाडी दौर्बल्य मे उपयोगी है।

परिशिष्ट समाप्त

यूनानी चिकित्सा-सार की

वर्णानुक्रमणिका

झ

ध

न

ENGLISH INDEX

Q

R

S

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि०

के

विकास का इतिहास

स्थापन-काल—हमारे देव-स्थानो मे सिद्धपीठ नाम से सुप्रसिद्ध तीर्थ-स्थान, श्री वैद्यनाथधाम (देवघर) मे वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड की स्थापना, आज से ३६ वर्ष पूर्व हुई थी। आधि-व्याधि-नाशक श्री वावा वैद्यनाथ के सम्मुख की गई मानव-कल्याण की कामना कभी विफल नही होती। आयुर्वेद के इष्टदेव भगवान शकर के शुभाशीर्वाद तथा हमारे अथक परिश्रम, श्रेष्ठ अध्यवसाय तथा विशुद्ध लगन के कारण, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का काम वडी तेजी से आगे वढा।

सघर्ष-काल—राज्य की उपेक्षा, हमारे शिक्षित-समाज पर विदेशी आचार-विचार का प्रभाव एव अपनी प्राचीन सस्कृति के प्रति उनकी उदासीनता के साथ जवर्दस्त सघर्ष, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के इतिहास की प्रारम्भिक विशेपता है। करीव-करीव यही वक्त था, जव कि हमारे देश मे राष्ट्रिय चेतना का आना और आजादी की लहर का उठना प्रारम्भ हुआ। हमारे समाज के प्रत्येक अङ्ग पर, विदेशी आचार-विचार और सत्ता का जो प्रभुत्व था, एक अन्धकार का आवरण था, उसके खिलाफ एक सुरसुराहट-सी होने लगी। महात्मा गाधी के नेतृत्व मे, धीरे-धीरे, हमारे समाज के मृतप्राय शरीर मे प्राणवायु का सचार हुआ। इसके वाद हमारा राष्ट्रिय कारवॉं जिन-जिन वाधाओ, कठिनाइयो और तूफानो का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर वढता रहा, वह हमारे देश के इतिहास का सवसे गौरवपूर्ण अध्याय है।

राष्ट्रिय ह्रास या समृद्धि, केवल राजनीतिक ही नही होती, वल्कि, व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप मे वह समाज की सस्कृति, साहित्य, कला, उद्योग, व्यापार, कृपि आदि सभी अङ्गो के सार्वभौमिक ह्रास और विकास पर निर्भर करती है। और चूँकि आयुर्वेद—हमारा राष्ट्रिय चिकित्सा-विज्ञान—हमारी सस्कृति, साहित्य और कला का एक सर्वोच्च ज्ञान-भाण्डार है, अतएव राष्ट्र के जीवन के साथ इसका अविच्छिन्न सम्वन्ध कोई नयी और आश्चर्यजनक वात नही।

इसीलिये, जव हम श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के पिछले ३५ साल के सघर्पमय जीवन और उसके फलस्वरूप प्राप्त उत्तरोत्तर उन्नति की ओर दृष्टिपात करते है, तो हमे गर्व और प्रसन्नता, दोनो ही होती हे। गर्व इसलिये कि एक कर्त्तव्य-परायण सिपाही की तरह राष्ट्रीय पुनरुद्धार का एक जवर्दस्त मोर्चा—राष्ट्रीय चिकित्सा-विज्ञान—आयुर्वेद के प्रति अपने कर्त्तव्य का हमने हरेक कठिनाई ओर वाधा मे भी, खूवी के साथ पालन किया हे, और प्रसन्नता इसलिये कि हमारे राष्ट्रीय-सग्राम के नेताओ और सेनानियो ने हमारे इस काम की सराहना की, सहयोगियो ने प्रशसा की और सर्वसाधारण ने स्वागत किया। आज नवराष्ट्र-निर्माण के प्रारम्भ मे, जव कि प्रकाश की दो-एक किरणे अन्तरिक्ष पर दिखायी पडने लगी है, हमारे उत्साह और आनन्द का सर्वोच्च कारण, एकमात्र वही अनुभूति है, जो राष्ट्रीय सघर्प के हर आघात और उसकी आग की प्रत्येक लपट का अपना हिस्सा प्राप्त करने का सौभाग्य हमे मिला है।

उत्कर्ष-काल—अपनी जिन तीन विशेपताओ के कारण, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० वरावर सघर्प मे विजयी होता आया, वे है—(१) शुद्ध ओषधियो के निर्माण, (२) आयुर्वेदोन्नति के लिये ठोस कार्य और (३) वैज्ञानिक ढङ्ग से इनका प्रचार।

आज श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का जो स्वरूप है, उसे विस्तृत रूप से वतलाने की यहाँ कोई आवश्यकता नही है। भारतवर्ष भर मे औषधि-निर्माण के चार वडे-वडे कारखाने, वडे-वडे शहरो मे वैद्यनाथ-दवाओ के ८० विक्री-केन्द्र (डिपो) तथा १५ हजार से ऊपर एजेन्सी (एजेण्ट) आदि इसकी विशालता को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। आज नगर-नगर ओर गाँव-गाँव मे श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का जो साइन वोर्ड आप देखते है, तथा घर-घर मे वैद्यनाथ ओषधियाँ देखी जाती है, उनके मूल मे जो तथ्य है, वे नीचे लिखे विवरण से आपकी समझ मे अच्छी तरह आ जायँगे।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के भिन्न-भिन्न विभाग

१—अनुसन्धान (रिसर्च) विभाग

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० ने अपने स्थापन काल से ही इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया है। काशी विश्वविद्यालय आदि सस्थाओ को आर्थिक सहायता दे कर वह शोध (रिसर्च) का कार्य कराता रहा है। किन्तु, अव वह इस स्थिति मे है कि इस महत्त्वपूर्ण काम को स्वय अपने निरीक्षण मे भी सम्पादित करे। इसलिये गत वर्प से इस कार्य के लिये ५००००) (पचास हजार)

रुपये प्रति वर्ष खर्च करने का उसने निश्चय किया है। चालू वर्ष के ५०००० रुपये मिला कर, करीब १०००००) (एक लाख) की लागत से इस वर्ष आयुर्वेद विज्ञानशाला तैयार हो जायगी। इसमे प्रयोगशाला (Research Laboratory) ओर रुग्णालय (Indor Hospital) होगे। इस वर्ष मकान बनवाकर आवश्यक उपकरण सग्रहीत कर लिये जायँगे तथा आगामी वर्ष से उनमे नीचे लिखे अनुसार कार्यारम्भ होगा।

(क) वनस्पति—वनस्पतियो के शोध का कार्य गत वर्ष से ही विशद रूप मे, चल रहा है और वह भविष्य मे भी चालू रहेगा। इस विभाग मे, आयुर्वेदिक औषधियो मे काम आनेवाली वनस्पतियो का स्वरूप-निर्णय नई चमत्कारिक ओषधियो को प्राप्त करने और उनके द्वारा समग्र भारतीय वैद्यो को लाभ पहुँचाने के कार्य होते है।

(ख) विश्लेषण—ओषधियो के काम मे आनेवाले मूलद्रव्यो की असलियत को मालूम करना तथा तैयार औषधि की यथार्थ गुणकारिता की विश्लेषण (Analysis) द्वारा जॉच करना, इस विभाग का कार्य है।

(ग) गुण-धर्म-निर्णय—आयुर्वेद-वर्णित वनस्पतियो के एव सिद्धौषधियो के गुण-धर्म के निर्णय करने के लिये यह विभाग होगा। इसके लिये रुग्णालय (Indoor Hospital) स्थापित किया जायगा, जिसमे २० शय्या (Beds) रहेगी। इस रुग्णालय-द्वारा रोगियो पर शतश अनुभूत की गई वनस्पतियो तथा योगो का गुण-धर्म-निश्चय होगा। आयुर्वेद मे मानव-शरीर पर होनेवाले सफल ओषध-परीक्षण को ही यथार्थ असदिग्ध गुण-धर्म माना गया है। वह कार्य चार्ट एव रिपोर्ट के आधार-पर इस रुग्णालय-द्वारा सम्पादित होगा।

(घ) शास्त्र-निर्माण-विभाग—उल्लिखित विभागो का शास्त्रीय निरूपण, आयुर्वेदीय सिद्धान्त से किया जायगा। त्रिदोष, पचमहाभूत, रस, विपाक, वीर्य-प्रभाव पर ही इन ग्रन्थो का निर्माण होगा। वर्तमान विज्ञान (Modern Science) को भी, इन्ही सिद्धान्तो के आधार पर आत्मसात् करके, समन्वयात्मक रूप मे प्रकाशित किया जायगा।

इन विभागो के कार्य का विवरण, समय-समय पर, हमारे मासिक पत्र 'सचित्र आयुर्वेद' मे प्रकाशित होता रहता है। स्वतन्त्र रिपोर्ट अगले साल प्रकाशित हो जायगी—ऐसी आशा है।

(ङ) रिसर्च कार्य की प्रगति—आयुर्वेदीय सिद्धान्त के अनुसार, आयुर्वेद का सशोधन और परिवर्द्धन कोई सामान्य कार्य नही है। प्राय भारत भर मे स्वय भ्रमण करके हमने देखा कि इस कार्य को कही भी क्रियात्मक रूप नही दिया गया है। अभी अपनी राष्ट्रीय सरकार की योजनाएँ भी बन ही रही है। इस

पर कोई रचनात्मक उद्योग वहाँ भी नही हुआ । क्रियात्मक रूप के अभाव एव द्रव्य और समय के अपव्यय की शका से हमने आयुर्वेदीय शोध-कार्य की समस्या को अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-शास्त्र-चर्चा के समक्ष उपस्थित किया । अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-शास्त्र-चर्चा का अधिवेशन, विगत वर्ष, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के व्यय से पटना-स्थित वैद्यनाथ-निर्माणशाला मे लगातार दस दिनो तक होता रहा । इस परिषद् मे देश भर के प्रधान वैद्यो ने भाग लिया था और आयुर्वेद-हितैषी डॉक्टर और वैज्ञानिक भी इसमे सम्मिलित हुए थे । परिषद् मे भाग लेनेवाले कतिपय प्रमुख वैद्यो और डॉक्टरो के नाम ये है —

१—आयुर्वेद-वाचस्पति श्री यादव जी त्रिकमजी आचार्य, वर्तमान सभापति अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल, वम्वई ।
२—आचार्य श्री मणिराम जी, वर्तमान सभापति, अ० भा० सा० विद्यापीठ ।
३—आयुर्वेद-पचानन श्री जगन्नाथ प्रसादजी शुक्ल, इलाहावाद ।
४—भिपक्-केशरी श्री गोवर्धन शर्मा छागाणी, नागपुर ।
५—आचार्य श्री रामरक्ष पाठक, वेगूसराय (विहार) ।
६—डॉ० डी० एन० मुखर्जी, एफ० आर० सी० एम०, कलकत्ता ।
७—स्व० डॉ० नृसिह हरि पराजपे ।

उपर्युक्त विद्वानो के वीच भी इस आयुर्वेदीय रिसर्च की रूप-रेखा पूर्ण रूप से निश्चित नही हो सकी । श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के व्यय पर, इसी वर्ष (मई '५३ मे) हरिद्वार मे पूर्व निर्धारित विपय 'द्रव्य के रस गुण-वीर्य-विपाक-प्रभाव के निर्णय' का स्वरूप क्या है ? पर विवेचनार्थ परिषद् की दूसरी वैठक भी निर्विघ्न सम्पन्न हुई ।

विशेष सूचना—इस कार्य मे गत वर्ष जो प्रगति हुई, उसे पत्र लिखकर जाना जा सकता है ।

२—औषधि-निर्माण-विभाग

आयुर्वेदीय औपधि-निर्माण पर ही उसकी चिकित्सा-पद्धति की उत्तमता और लोक-प्रियता निर्भर करती है । आयुर्वेदीय औपधियो का निर्माण कठिन, अनुभवगम्य और प्रभूत उपकरण साध्य कार्य हे । प्राचीन समय से केवल चिकित्सक ही इस कार्य को करते आये है । अव भी हजारो वैद्यवन्धु ऐसा ही कर रहे हैं । पर वर्तमान युग मे, इससे सर्वाङ्गपूर्ण औपधि तैयार नही हो पाती । औपधियो के मूल द्रव्यो को उत्पत्तिस्थानो से प्राप्त करना, पसारियो पर निर्भर न रहना, जो लोग निरन्तर औपधियो का निर्माण करते है, उन्ही अनुभवी आयुर्वेद के आचार्यो द्वारा स्वय अपनी देख-रेख मे अत्यन्त कुशलता और स्वच्छता-

पूर्वक ओपधि-निर्माण करना, अत्यन्त कठिन ओर उत्तरदायित्वपूर्ण काम हे। केवल वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० ही, ओपधि-निर्माता होने के कारण, इम कार्य को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ कर रहा हे , और इसी आधार पर वैद्यनाथ औपधियो को प्रसिद्धि और लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है।

वैद्यनाथ-औपधियो की उत्कृष्टता के तीन कारण हैं —(१) मूल द्रव्यो का उत्कृष्ट होना और जाँचकर उनको व्यवहार मे लाना, (२) कुशल और अनुभवी आयुर्वेदाचार्यो द्वारा शास्त्रीय रीति से ओपधि तैयार करना, और (३) वैद्यनाथ-आयुर्वेद भवन लि० के मैनेजिग डायरेक्टरो का सतत निरीक्षण करना एव उनका औषधि-निर्माण-शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता और अनुभवी होना।

निर्माण की इस विशुद्धता और उत्कृष्टता के कारण, वैद्यनाथ-दवाओ की इतनी व्यापक माँग बढी कि हमे क्रमश झाँसी, पटना और नागपुर मे भी औपधि-निर्माण केन्द्र खोलने पडे। आज इन चारो निर्माण-केन्द्रो द्वारा निरन्तर औपधियाँ तैयार होती रहती हैं , फिर भी जनता की बढती हुई माँग की पूर्ति करने मे हमे कठिनाई होती हे। वैद्यनाथ-औपधि-विक्रेताओ को नम्बरवार और क्रमश दवाएँ भेजी जाती है तथा हर साल कार्यकर्त्ताओ की सख्या बढानी पडती हे। कार्यकर्त्ताओ मे करीव २० हजार रुपये प्रतिमास, वेतन के रूप मे वितरित होते हैं।

३ —विक्रय-विभाग

४ निर्माण-केन्द्र, ८० विक्री-केन्द्र और १५ हजार से ऊपर एजेन्सियो (एजेटो) द्वारा वैद्यनाथ-दवाओ की निरन्तर विक्री होती है। देश भर मे सर्वत्र एक ही (आगे लिखे) मूल्य पर विक्री होती है। वैद्यनाथ-दवाओ के अधिकार-प्राप्त ओपधि-विक्रेताओ को उचित कमीशन दिया जाता है। जनता के लाभ के लिये हिन्दुस्तान के प्रमुख शहरो मे, एजेण्टो के अतिरिक्त ८० से ऊपर स्वतन्त्र विक्री-केन्द्र भी है, जहाँ केवल वैद्यनाथ-दवाएँ ही बिकती है। जैसे देहली, आगरा, कानपुर, इलाहावाद, काशी, गोरखपुर, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, गया, रायपुर, जव्वलपुर, अकोला, अमरावती, इन्दौर, उज्जेन आदि। प्रत्येक निर्माण-केन्द्र मे एजेसी-विभाग के मैनेजर अलग है, जिनके पास एजेट वनने की इच्छावाले लोगो के पत्र (और स्वय भी) वरावर आते रहते हैं। एजेसी के लिए स्वय कार्यालय मे आनेवाले महाशय पहले पत्र-व्यवहार करके दर्याफ्त कर लेगे, तो उत्तम होगा। दवाओ के साथ-साथ वनस्पति की भी थोक विक्री होती है। खुदरा वनस्पति की विक्री नही होती।

४—आयुर्वेद-सेवा-विभाग

इस विभाग मे आयुर्वेद की समुन्नति के कार्य सेवा-भाव से होते हैं।

(क) **आयुर्वेद विद्यालय**—श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का, विगत ६ वर्षो से, एक स्वतन्त्र आयुर्वेद-विद्यालय, सफलता के साथ चल रहा हे, जिसमे निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य और राजस्थान की आयुर्वेद-शास्त्री तक की शिक्षा दी जाती हे। इसके अतिरिक्त भारत के अन्य विभिन्न आयुर्वेद-विद्यालयो को भी आर्थिक सहायता दी जाती है।

(ख) **छात्रवृत्तियाँ**—जो छात्र आर्थिक अभाव के कारण आयुर्वेद पढने मे कठिनाई का अनुभव करते हैं, वैसे १५ योग्य छात्रों को प्रति वर्ष छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

(ग) **धर्मार्थ ओषधालय**—हमारे सभी धर्मार्थ औपधालयो मे सुयोग्य आयुर्वेदाचार्य पास वैद्यो द्वारा मुफ्त निदान होता हे ओर रोगी को अच्छी-से-अच्छी औपधियाँ दी जाती हैं। और भी वहुत-से अन्य आयुर्वेदीय धर्मार्थ औषधालयो को औपध मुफ्त दी जाती है तथा वहुतो को रियायती मूल्य पर दी जाती है।

(घ) **स्वास्थ्य-प्रचार**—भारतीय जनता को आयुर्वेदीय शिक्षा द्वारा स्वस्थ ओर सवल वनाना हमारा प्रधान लक्ष्य रहा हे। इसके लिये छोटे-छोटे ट्रैक्ट, पुस्तिका, हेण्डविल आदि प्रकाशित कर समय-समय पर प्रचारित किये जाते हैं।

(ङ) **धन्वन्तरि-जयन्ती**—यह जयन्ती, वैद्यो मे भ्रातृभाव और जनसेवा-भाव की वृद्धि के लिये हमारे निर्माण-केन्द्रो, विक्री-केन्द्रो तथा एजेन्सियो मे प्रति वर्ष मनाई जाती है। इसमे लगभग १० हजार रुपया प्रति वर्ष खर्च होता है।

५—प्रकाशन-विभाग

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का आरम्भ से ही यह सप्रयत्न रहा है, और रहेगा, कि आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तो के आधार पर सुयोग्य विद्वानो द्वारा निर्मित तथा अनुवादित प्रामाणिक ग्रन्थ सरल भापा ओर सुलभ मूल्य मे जनता को प्राप्त हो, जिससे आयुर्वेद का प्रचार और प्रसार वढे। हमारे यहाँ से अवतक दर्जनो ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है, जो आज आयुर्वेद-ग्रन्थ-भाण्डार के अमल्य रत्न समझे जाते हैं। 'सचित्र आयुर्वेद, नामक एक मासिक पत्र भी गत पाँच वर्षो से प्रकाशित हो रहा है।

६——दातव्य-विभाग

आयुर्वेदीय सेवा के अतिरिक्त श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड और भी बहुत-से जन-हितकारी कार्य कर रहा है। पाठशाला खोल कर नि शुल्क शिक्षा का प्रवन्ध, आश्रमो को सहायता देकर धार्मिक, नैतिक ओर चारित्रिक भावना तथा साहित्य का प्रचार, देवालय, कूप आदि का निर्माण, सार्वजनिक पुस्तकालय, चक्षुदान यज्ञ आदि ऐसे अनेको लोकोपकारी कार्य है, जो केवल हमारे ही खर्च से चल रहे है तथा अन्य सार्वजनिक कार्यो मे मुक्तहस्त से निरन्तर सहायता की जाती है।

———

वैद्यनाथ

आयुर्वेदीय-प्रकाशन

हमारा कारखाना केवल औषधि-निर्माता ही नही है। यह शुद्ध अर्थ मे आयुर्वेदीय सस्था है। इसका प्रथम उद्देश्य है भारतीय चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेद को प्रतिसस्कार कर उसके स्वाभाविक मानव-कल्याणकारी गुणो, उसकी विशेषताओ और चिकित्सको की जानकारी जनता को करा देना। औषधि और ग्रन्थ, दोनो इसके साधन है। इसलिये एक ओर जहाँ हम उत्तमोत्तम औषधि निर्माण-द्वारा आयुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा करते है, वहाँ दूसरी ओर इसके उत्तमोत्तम और प्रामाणिक ग्रन्थो के प्रकाशन का भी समुचित प्रवन्ध करते है। जिन ग्रन्थो का प्रकाशन कर हम आयुर्वेद का भाण्डार भर रहे है उनकी प्रशसा मुक्तकण्ठ से समस्त देश की विद्वन्मण्डली ने की है। राजकीय शिक्षा-सस्थाओ तथा विश्वविद्यालयो ने हमारे आयुर्वेदीय-प्रकाशन को पाठ्यक्रम-पुस्तको मे श्रेष्ठ स्थान दिया है। साथ-ही-साथ (कम-से-कम)—अपनी लागत-मात्र, मूल्य पर ऊँचे दर्जे के आयुर्वेदीय साहित्य का प्रचार-प्रसार करना वैद्यनाथ आयुर्वेदीय-प्रकाशन का मूल सिद्धान्त रहा है। यही कारण है कि वैद्यनाथ-प्रकाशन से निकली हुई उत्तम आयुर्वेदीय पुस्तको का आज घर-घर मे प्रचार है। हमारे "आरोग्यप्रकाश" को तो जनता ने इतना पसन्द किया है कि इसके नौ सस्करणो मे ८३००० प्रतियाँ छप कर विक चुकी है और दसवाँ सस्करण १५००० फिर छापा गया है। इसी प्रकार अन्य ग्रन्थो के भी कई-कई सस्करण छप चुके है।

आरोग्य प्रकाश—(आरोग्य, स्वच्छता और चिकित्सा पर सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ) भारत-प्रसिद्ध श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर वैद्यराज प० रामनारायण शर्मा, वैद्यशास्त्री ने ५-६ वर्ष मे वडी मेहनत से स्वय इस ग्रन्थ को लिखा है। ग्रन्थ का एक-एक वाक्य हजारो रुपयो का काम करता है। व्यायाम, ब्रह्मचर्य, भोजन, सदाचार उत्तम विचार आदि पूर्वार्द्ध के विषयो को पढ कर और तदनुसार चलकर सदा वीमार रहने वाला रोगी भी विना दवा के नीरोग (तन्दुरुस्त) हो जाता है। ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध मे शरीर मे पैदा होनेवाले सभी रोगो की उत्पत्ति, कारण, निदान, रोग के लक्षण, चिकित्सा, पथ्यापथ्य आदि वडी ही सरल भाषा मे लिखे है, जिनको पढकर विद्वान् से लेकर साधारण पढे-लिखे, दोनो, समानरूप से लाभ उठा सकते है। इसमे दवाओ के जो

नुस्खे लिखे गये है, वे बहुत बार के परीक्षित, कभी भी फेल न होने वाले और शास्त्रानुमोदित हे। शहर हो या देहात—सब जगह, इस पुस्तक के घर मे रहने से रोगी को तत्काल लाभ पहुँचाया जा सकता हे। औषध तैयार करने का विधान तो इस पुस्तक मे बहुत ही श्रेष्ठ हे, क्योंकि लेखक इस विषय के निर्णयात्मक ज्ञाता है। इसके नौ सस्करणो मे ८३००० प्रतियाँ छप कर बिक चुकी है और दसवाँ सस्करण १५ हजार का फिर छापा गया है। इससे इसकी लोकप्रियता और उपयोगिता स्पष्ट मालूम होती हे। हिन्दी मे ऐसी पुस्तक दूसरी नही है, यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। प्रचार की दृष्टि से मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। ४८० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य सिर्फ २), डाक खर्च ।।=), हमारी चार निर्माणशालाओ मे, १०१ बिक्री-केन्द्रो एव १५००० एजेसियो से प्रत्यक्ष खरीदने पर या एक साथ तीन प्रति लेने से डाक खर्च नही लगेगा।

आयुर्वेदीय क्रियाशारीर—(सचित्र रॉयल अठपेजी, विलायती पेपर) लेखक—वैद्य रणजितराय, वाइस प्रिन्सिपल, आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० द्वारा प्रकाशित "शरीर-क्रिया-विज्ञान" का देश मे सर्वत्र ही समादर हुआ था और प्राय समस्त हिन्दुस्तान के आयुर्वेदिक कॉलेजो के पाठ्य-क्रम मे पुस्तक नियत हो गयी थी। उसी ग्रन्थ का यह सशोधित और परिवर्द्धित तृतीय सस्करण है।

आयुर्वेद की इस पुनरुत्थान-वेला मे वैद्य रणजितराय, जो स्तुत्य और ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य कर रहे है, उसे आज हिन्दुस्तान मे कौन नही जानता? आयुर्वेद के सशोधन को दृष्टि मे रख कर उन्होने जो अनेक ग्रन्थ लिखे हे, उन्ही मे से एक ग्रन्थ **आयुर्वेदीय क्रिया-शारीर** हे।

प्रस्तुत सस्करण मे पाठ्य विषय मे तो पहले सस्करण की अपेक्षा बहुत परिवर्तन किये ही गये है, अनेक एकरगे चित्रो की भी सख्या मे वृद्धि कर विषय को अधिक सुबोध बनाकर पुस्तक की उपयोगिता मे और भी अधिक वृद्धि कर दी गयी है। मूल्य—११)

आयुर्वेद-सार-सग्रह—(दूसरा सस्करण) हिन्दी मे ऐसी आयुर्वेदीय पुस्तको की बहुत कमी थी जिनमे एकत्र-रोग-विचार के साथ चिकित्सा, औषध-निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य आदि का विवरण समझा कर, सरल भाषा मे, दिया गया हो। इससे सर्वसाधारण पाठको के सामने बहुत दिक्कते आती रहती थी। प्रस्तुत पुस्तक मे आयुर्वेदीय साहित्य की इसी कमी को दूर करने का सफल प्रयत्न किया गया हे। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० द्वारा बनायी जानेवाली सभी दवाओ की निर्माण-विधि तथा उनके गुण-धर्म और प्रयोग-विधि

के साथ सभी वैद्योपयोगी बातो का सविस्तार वर्णन सरल हिन्दी भाषा मे किया गया है। रस-रसायन, अर्क आदि बनाने के यन्त्रो के चित्र भी दिये गये है जिनके देखने से औषध-निर्माताओ को काफी सुविधा होगी। डिमाई साइज के ११०० पेज के ग्रन्थ का मूल्य—७) रु० मात्र है।

आयुर्वेदीय-पदार्थविज्ञान—लेखक वैद्य रणजितराय, वाइस प्रिन्सिपल, आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान मे अन्य दर्शन ग्रन्थो से क्या विशेषता है और क्यो है, इस पर प्रकाश डालते हुए आयुर्वेदीय-पदार्थ-विज्ञान के सभी विषय सरल भाषा मे समझाये गये है।

आधुनिक अन्वेषित मूल तत्त्वो के साथ आयुर्वेदोक्त तत्त्वो का समन्वय करने के लिए किस दृष्टि से प्रयास होना चाहिये, का यथास्थान विद्वान् लेखक ने स्वमत-प्रकाशित किया है। आयुर्वेदीय-पदार्थ विज्ञान अन्य सभी आयुर्वेदीय विषयो का आधारभूत है, अत उसका अध्यापन किस शैली से होना चाहिए, इस बात का विशद विवेचन करते हुए विषय को नया ही रूप देने का सफल प्रयास किया गया है। मूल्य—६)

उपचार-पद्धति—(पचम सस्करण) सर्व-साधारण गृहस्थ के सैकडो रुपये प्रति वर्ष बच सकते है, यदि उन्हे उपचार और पथ्य का साधारण ज्ञान भी हो जाय, इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर इस पुस्तक का प्रकाशन हमने किया है। इसमे रोगियो की परिचर्या का विवेचन दिया गया है। मूल्य—।=)

किशोर-रक्षा और ब्रह्मचर्य—किशोर बालको को हस्तमैथुन-रूपी सर्वस्व नाशकारी व्याधि से बचाने के लिए सफल उद्योग किया गया है। पृष्ठ सख्या ११०, मूल्य—।≡)

त्रिदोष-तत्व-विमर्श—लेखक-आयुर्वेद-बृहस्पति वैद्य रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य। इस ग्रन्थ मे आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोष-सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन विधिवत् किया गया है। मानव-शरीर के अनेकानेक द्रव्यो मे वात-पित्त-कफ प्रधान है, इसी तथ्य को केन्द्रित कर विद्वान् लेखक ने त्रिदोष-तत्त्व के विभिन्न स्वरूपो का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जिससे ग्रन्थ की शास्त्रीयता निखर गयी है। प्रस्तुत ग्रन्थ के अध्ययन के बाद त्रिदोषतत्त्व और पचमहाभूत का ज्ञान सरलता से हो जाता है। आयुर्वेद के जिज्ञासुओ के लिए यह पुस्तक उपादेय है। मूल्य—२॥=)

पदार्थ-विज्ञान—(देशभर की आयुर्वेदीय सस्थाओ एव परीक्षा-समिति के पाठ्यक्रम मे स्वीकृत) लेखक—आयुर्वेद-बृहस्पति प० रामरक्ष पाठक, प्रिन्सिपल अ० शि० आयुर्वेदिक कॉलेज, बेगूसराय। इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय मे पदार्थ का तुलनात्मक विवेचन किया गया है और द्वितीय अध्याय मे

स्वास्थ्य-सरक्षण तथा रोग के प्रतीकारार्थ उपयोग मे आनेवाले पदार्थो का विवेचन किया गया हे। तृतीय अध्याय मे आयुर्वेद के मूल-भूत त्रिदोप-सिद्धान्त की जननी प्रकृति तथा उससे उद्भूत-तत्त्वो की छानवीन की गयी है। चतुर्थ अध्याय मे आत्मतत्त्व का विवेचन किया गया हे और यह दर्शाया गया हे कि पूर्व जन्मकृत पापो का परिणाम भोगने लिये किस प्रकार आत्मा भिन्न-भिन्न योनि मे प्रवेश कर अपने कर्मो का भोग करती हे। मूल्य---३॥)

मानस-रोग-विज्ञान---इस ग्रन्थ के विद्वान् लेखक स्वर्गीय डॉ० वालकृष्ण-अमरजी पाठक ने वनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय के आयुर्वेदिक कॉलेज के अध्यक्ष एव प्रधानाध्यापक के रूप मे काफी कीर्ति प्राप्त की थी और एक उच्च कोटि के विचारक और उद्भट मनीपी के रूप मे आप सम्पूर्ण भारत मे सुप्रसिद्ध हो गये थे।

इस ग्रन्थ की रूप रेखा पूज्यपाद यादवजी ने तैयार की थी और इस विपय पर आयुर्वेदीय साहित्य मे खटकनेवाली जवर्दस्त कमी को पूरा करने के लिए डॉ० पाठक जैसे अनुभवी विद्वान् वैद्य को यह ग्रन्थ लिखने के लिए उत्साहित किया था।

आज के युग मे, जव कि काम, क्रोध आदि तथा मिरगी (अपस्मार), उन्माद, न्यूरेस्थीनिया, मानसिक अस्थिरता, पागलपन, हिस्टीरिया आदि मानमिक-रोग मनुप्य-जाति को वुरी तरह त्रस्त कर रहे है, यह पुस्तक एक नवीन सन्देश देनेवाली है। अग्रेजी-भापा के ज्ञाताओ का कहना है कि मानस-शास्त्र जैसा अग्रेजी मे हे वैसा अन्यत्र नही हे। किन्तु इस पुस्तक से उनके भ्रम का निवारण होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। मूल्य---५॥) मात्र।

यूनानी-सिद्धयोग-संग्रह---यूनानी चिकित्सा-पद्धति का महत्त्व सभी जानते है। यह आयुर्वेद के वहुत समीप है। इसके नुस्खे, आयुर्वेदीय नुस्खो की भाँति ही लाभदायक और तुरन्त फायदा करनेवाले तथा सस्ते होते है। एक अनुभवी चिकित्सक से आयुर्वेदीय ढग से सस्कृत के विद्वान् वैद्यो के लिए हिन्दी मे यह ग्रन्थ लिखवाया गया है। चिकित्सको तथा सर्वसाधारण दोनो के लिए वहूत उपयोगी पुस्तक है। कीमत---२॥)

सिद्धयोग-संग्रह---(तीसरा सस्करण) आयुर्वेदोद्धारक वैद्यवाचस्पति श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य के कर-कमलो से लिखा हुआ यह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ-रत्न के पढने से प्रत्येक वैद्य को लाभ होगा, इसमे रत्ती भर भी सन्देह नही है। डिमाई ८ पेजी २०० पेज के ग्रन्थ का मूल्य---२॥।)

वैद्यनाथ की विशेषता

—:o:—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० अपने स्थापन काल से ही जो अपनी विशेपता रखता आया है, वह विशेपता, जनता-जनार्दन की सेवा का उसका अधिकाधिक सत्प्रयत्न है। सस्था की वृद्धि के साथ-साथ, इसके सेवा-क्षेत्र भी वढते गये और भविष्य मे भी वढते रहेगे—इसमे रचक सन्देह नही। इस सस्था का प्रधान उद्देश्य—असली दवा तैयार करके सुलभ मूल्य मे जनता को देकर देशी दवाओ का महत्त्व प्रगट करना है। इस व्यापार से जो लाभ हो, वह व्यक्तिगत भोग-विलास के कार्य मे खर्च न होकर सर्वसाधारण के लाभ मे खर्च हो, इससे आयुर्वेद की उन्नति हो, देश सुखी, सम्पन्न और आरोग्ययुक्त हो—हमारा स्थापन-कालीय वह पवित्र उद्देश्य आज भी वना हुआ है।

देश स्वतन्त्र हो गया है। अव हमलोगो को अपने आचरण से यह सिद्ध करना होगा कि हम वास्तव मे स्वतन्त्रता के योग्य है। विदेशी लोगो ने व्यापारिक ईमानदारी द्वारा जो प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, वह अव हम भारतवासियो को भी अवश्य प्राप्त करनी होगी। नही तो फिर गुलामी मे पडना होगा। ईमानदारी के विना हम स्वतन्त्र नही रह सकते। हमारा उत्तरदायित्व वहुत वढ गया है।

जनतन्त्र मे जनता की इच्छा ही सर्वोपरि रहती है। हम राज्य को 'कर' देते है तो कोई कारण नही कि राज्य हमारी इच्छा (आयुर्वेदीय चिकित्सा की माँग) को पूरी न करे। हमलोगो को वहुत शीघ्र, दृढतापूर्वक, आयुवद को अग्रसर करना है। प्राचीन-विज्ञान-राशि को वर्तमान विज्ञान द्वारा अधिक उपयोगी वनाना है। हम भारतीयो की स्वास्थ्य-रक्षा तो आयुर्वेद द्वारा ही हुई है और आगे भी होगी। हमको यह सिद्ध करना हे कि आयुर्वेद के विना किसी का समूल नीरोग रहना नामुमकिन है। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का प्रयत्न, आयुर्वेद को समुन्नत करके, भारतीयो को स्वस्थ और सवल वनाना है। आज तक भारतीय जनता ने हमारे प्रयत्नो को प्रोत्साहन दिया हे। जव तक हमारा पवित्र उद्देश्य वना रहेगा, तव तक आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि सभी भारतवासी हमे प्रोत्साहन देते रहेगे। परम पिता से प्रार्थना है कि वह हमे आयुर्वेद द्वारा जनता की सेवा करने का और अधिक सुअवसर दे।

सर्वे च सुखिन सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।

———